अमूल्य शास्त्र दानदाता

जैन स्थम्भ दानवीर

स्व. राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी जौहरी

जैन प्रभावक धर्म धुरंधर

लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी

मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुध्धाचारी पूज्य श्री सुखा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बड़ा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धारादि महा कार्य हैद्राबाद में हुए इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे

बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषि

उपकारी महात्मा

परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्य पाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज!

आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आप के परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका इस लिये इन कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोद्धारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा

बाल ब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषि

अपनी छत्ती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें शिक्षा धारक बाल ब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानी श्री देव ऋषिजी वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाको बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोपचार का संयोग मिला दो प्रहर का व्याख्यान, प्रमगीसे वार्तालाप, कार्य दक्षता व स्थानिक कार्य में सहाय दिया जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण कर सके इस लिये इस कार्य पर उक्त मुनिवरों का भी बड़ा उपकार है

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहनलालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी, तपस्वीजी माणकचन्दजी, कवीवर श्री अमी ऋषिजी, स्वस्त्या श्री शान्त ऋषिजी व श्री नथमलजी व श्री जोरावरमलजी कविवर श्री नानचन्द्रजी प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी गुणज्ञ सतीजी श्री रंभाजी धागजी सर्वत्र शतारा, तीना सरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बाँठिया, लींबडी भंडार, कचेरा भंडार, स्थानिक की तरफ से शास्त्र व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं

आभारी महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता योगी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज!
इस शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री मार्मिक शुद्ध शास्त्र, छुडी गुटका और समय समय आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदद देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के अभारी होंगे.

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषी सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तले दबे हुअे हम आप के बडे अभारी हैं.

सबकी तर्फ से

जीवाभिगमजी सुत्र की प्रस्तावना

प्रणम्य ज्ञानविज्ञानदीक्षाशिक्षादि दायका । न्यायशास्त्रविशेषज्ञान् हितादिविजयान् गुरून् । १॥
सरस्वतीं नमस्कृत्य वृद्धिसिद्धि विधायिनिम् । जीवाभिगम सूत्रस्य,बालावबोधक्रियतेमया॥ २॥

जो ज्ञान विज्ञान और दीक्षा शिक्षा के दातार न्याय शास्त्र के विशारद गुरु महाराज हैं उन को नमस्कार करके और बुद्धिसिद्धी में वृद्धि करता जो सरस्वति (जिनवानी) है उस को नमस्कार करके इस जीवाभिगम शास्त्र का हिन्दी अनुवाद करता हूं ॥ २ ॥ इस का नाम जीवाभिगम है अर्थात् इस सूत्र में जीवों का अभिगम-उन के रहने के चौवीस्थान (दंडक) अवगाहना आयुष्य अल्पाबहुत तथा मुख्यता में अढाइ द्वीप का और गौणता में असख्यात द्वीप समुद्रों का कथन किया है यह सूत्र तृतीय अंग स्थानांगजी का उपांग कहा है स्थानांगजी के दश ठाणे में एक से दश वस्तुओं का कथन सक्षेप में किया गया है उस में की कितनेक गहन बातों का खुलासा इस सूत्र में किया है इस का ऊतारा मुख्यता में तोइटोला(गुजरात)के भंडार से प्राप्त हुइ प्रत परसे धनपतसिंह बाबू की छपाइ हुई प्रत पर से किया है और अर्थ शुद्धी धीवडी (काठीयावाड) के भंडार से प्राप्त हुइ प्रत से तथा एक मेरे पास की प्रत से किया है

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी धर्म में श्रेष्ठ मुवर्णा दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महा लाभके लोभी बन जैन साधुमार्गीय धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु २००००, का सर्वकर अमूल्य देना स्वीकार किया और युरोप युद्धारम्भ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नहीं होते भी आपने उस ही उत्साह से काय को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों की गौरव दर्शक व परमादरणीय है!

मोरवाडा (काठीयावाड) निवासी धर्म प्रेमी कार्यदक्ष कृतज्ञ मणिलाल शिवलाल सेठ! इनोंने जैन ट्रेनिंग कालेज रतलाम में संस्कृत प्राकृत व अंग्रेजी का अभ्यास कर तीन वर्ष उपदेशक रह अच्छी कौशल्यता प्राप्तकी इन से शास्त्रोद्धार का काय अच्छा होगा ऐसी सूचना गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज से मिलने से इन को बोलाये, इनोंने अन्य प्रेस में शुद्ध अच्छा और शीघ्र काम होता नहीं देख शास्त्रोद्धार प्रेस कायम किया और प्रेस के कर्मचारियों को उत्साही कार्य दक्ष बना काम लिया तैसे ही भाषानुवाद की प्रेसकोपी बनाइ, यद्यपि यह भाइ पगार से रहे थे तथापि इनोंने इस कार्य की सेवा वेतन के प्रमाण से अधिक की इस लिये इनको भी धन्यवाद देते हैं

जीवाभिगम सूत्र की विषयानुक्रमणिका

इति जीवाभिगम सूत्रस्य अनुक्रमणिका.

☞ परम पुज्य श्री कहानजी ऋषिमहाराज के सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलकऋषिजी ने सीर्फ तीन वर्ष में ३२ ही शास्त्रों का हिंदी भाषानुवाद किया, उन ३२ ही शास्त्रों की १०००–१००० प्रतों को सीर्फ पांच ही वर्ष में छपवाकर दक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादूरलाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी ने सब को अमूल्य लाभ दिया है।

तृतीय उपाङ्ग. जीवाभिगम सूत्रम्.

णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण णमो उसमादियाण चउवीसाए तित्थगराण ॥ १ ॥ इह खलु जिणमय जिणाणुमय जिणाणुलोम जिणप्पणीतं जिणपरूविय जिणक्खाय, जिणाणुचिन्न जिणपण्णत्त, जिणदेसिय, जिणप्पसत्थ, अणुवीतिय, त सद्दहमाणा त पत्तिय-

श्री अरिहत भगवत को नमस्कार होवो, श्री सिद्ध भगवत को नमस्कार होवो, श्री आचार्य भगवंत को नमस्कार होवो, श्री उपाध्याय भगवत को नमस्कार होवो, लोक में रहे हुवे सब साधु भगवत को नमस्कार होवो ऋषभादिक चौवीस तीर्थंकरों को नमस्कार होवो ॥ १ ॥ यहां पर श्री जिन प्रवचन द्वादशांग रूपवाणी जिन श्री महावीर स्वामी को संमत है, जिन श्री तीर्थंकर केवली प्रमुख को अनुकूल है, अतीत, अनागत व वर्तमान काल के सब तीर्थंकरों को सम्मत है, और जिन श्री महावीर स्वामीने कही हुई

खंधदेसा खधपएसा परमाणु पोग्गला ते समासओ पचविहा पन्नत्ता तंजहा—वण्णपरिणया, गंध-रस फास-संठाण परिणया, एवं ते जहा पण्णवणाए, सेत रूवि अजीवाभिगमे॥सेत अजीवाभिगमे ॥६॥ से किंतं जीवाभिगमे ? जीवाभिगमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा——संसारसमावण्णगजीवाभिगमेय असंसारसमावण्णगजीवाभिगमेय ॥ ७ ॥ से किं तं असंसार समावण्णग जीवाभिगमे ? असंसार समावण्णग जीवाभिगमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-अणंतरसिद्धा असंसार समावण्णग जीवाभिगमेय, परंपर सिद्धा

उत्तर—रूपी अजीव अभिगम के चार भेद कहे हैं १ पुद्गलास्तिकाया का स्कंध, २ पुद्गलास्तिकाया का देश, ३ पुद्गलास्तिकाया का प्रदेश और ४ परमाणु पुद्गल इन के संक्षेप से पांच भेद कहे हैं—१ वर्ण परिणत २ गंध परिणत ३ रस परिणत ४ स्पर्श परिणत और ५ संस्थान परिणत यों जैसे पन्नवणा सूत्र में कहा सो जानना यावत् यह रूपी अजीव अभिगम हुवा यह अजीव अभिगम हुवा ॥ ६ ॥ प्रश्न—जीवाभिगम किसे कहते हैं ? उत्तर—जीवाभिगम के दो भेद संसार समापन्नक जीवाभिगम और असंसार समापन्नक जीवाभिगम ॥ ७ ॥ प्रश्न—असंसार समापन्नक जीवाभिगम किसे कहते हैं ? उत्तर—असंसार समापन्नक जीवाभिगम के दो भेद—१ अनंतर सिद्ध असंसार समापन्नक जीवाभिगम और परंपरा सिद्ध असंसार समापन्नक जीवाभिगम प्रश्न—अनंतर सिद्ध असंसार समापन्नक जीवाभिगम

माणा, ते रोएमाणा, थेरा भगवंते जीवाजीवाभिगमं णामज्झयणं पण्णवइंसु ॥ २ ॥ से किंत जीवाजीवाभिगमे ? जीवाजीवाभिगमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा। जीवाभिगमेय अजीवाभिगमेय ॥ ३ ॥ सेकिंत अजीवाभिगमे ? अजीवाभिगमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—रूवि अजीवाभिगमेय, अरूवि अजीवाभिगमेय ॥ ४ ॥ से किंत अरूवि अजीवाभिगमे ? अरूवि अजीवाभिगमे दसविहे पण्णत्ते तंजहा—धम्मत्थिकाए एवं जहा पन्नवणाए जाव सेत्तं अरूवि अजीवाभिगमेय ॥ से किंत रूवि अजीवाभिगमे ? रूविअजीवाभिगमेय चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा—खंधा

अरूपी हुई, ज्ञानसे मानी हुई, प्रशस्ती हुई, उपदेशी हुई, और जिन भगवंतको प्रशस्त ऐसी वाणीका चिंतवन उस की श्रद्धा प्रतीति व रुचि करते हुवे स्थविर भगवंतने जीवा जीवाभिगम नाम का अध्ययन प्ररूपा है ॥ २ ॥ अब शिष्य प्रश्न करता है कि अहो स्वामिन् ! जीवाजीव का अभिगम—स्वरूप क्या है ? उत्तर—जीवाजीव अभिगम के दो भेद कहे हैं १ जीव का अभिगम व अजीव का अभिगम ॥ ३ ॥ इन दोनों में से प्रथम अजीव का स्वरूप कहते हैं प्रश्न—अजीव का अभिगम क्या है ? उत्तर—अजीव अभिगम के दो भेद तद्यथा रूपी अजीव अभिगम और अरूपी अजीव अभिगम ॥ ४ ॥ प्रश्न—अरूपी अजीव अभिगम क्या है ? उत्तर—अरूपी अजीव अभिगम के दश भेद कहे हैं धर्मास्तिकाया, यों जैसे पन्नवणा में कहा वहां तक अरूपी अजीव अभिगम हुवा ॥ ५ ॥ प्रश्न—रूपी अजीव अभिगम क्या है ?

अणंतरसिद्धा असंसार समावण्णग जीवाभिगमे ॥ ८ ॥ से किंत परंपरसिद्धा असंसारसमावण्णगजीवाभिगम ? परंपरसिद्धाअसंसारसमावण्णगजीवाभिगम अणगविहे पण्णत्ते तंजहा पढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा जाव अणेगसमयसिद्धा सेत परंपरसिद्धा असंसार समावण्णग जीवाभिगमे ॥ सेत्त असंसार समावण्णग जीवाभिगमे ॥ ९ ॥ से किं त संसार समावण्णग जीवाभिगमे संसार समावण्णएसुण जीवेसु इमाओ णवपडिवत्तीओ एवमाहिज्जति तंजहा-एगे एव माहंसु दुविहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, एगे एव माहंसु, तिविहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता एगेएव माहंसु चउव्विहा संसार समावण्णगा,

एक साथ अनेक सिद्ध होवे यह अनंतर सिद्ध असंसार समापन्नक जीवाभिगम हुवा ॥ ८ ॥ प्रश्न—परंपरा सिद्ध असंसार समापन्नक जीव क्या है ? उत्तर—परंपरा सिद्ध असंसार समापन्नक के अनेक भेद कहे हैं प्रथम समय का सिद्ध, द्वितीय समय का सिद्ध यावत् अनंत समय का सिद्ध यह परंपरा सिद्ध असंसार समापन्न जीवाभिगम जानना यह असंसार समापन्नक जीवाभिगम हुवा ॥ ९ ॥ प्रश्न—संसार समापन्नक जीव किसे कहते हैं ? उत्तर—संसार समापन्नक जीवों की नव प्रतिवृत्तियों कही है जिन में कितनेक कहते हैं कि दो प्रकार के संसार समापन्नक जीव हैं, २ कितनेक कहते हैं कि तीन प्रकार के

असंसार समावण्णग जीवाभिगमेय ॥ सेकिंत अणंतरसिद्धा असंसार समावण्णग जीवाभिगमे ? अणंतरसिद्धा असंसार समावण्णग जीवाभिगमे पण्णरसविहे पण्णत्ते तंजहा—तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा, तित्थगरसिद्धा, अतित्थगरसिद्धा, सयबुद्धासिद्धा, पत्तेयबुद्धसिद्धा, बुद्धबोहिय सिद्धा, इत्थिलिंगसिद्धा, पुरिसलिंगसिद्धा, नपुंसकलिंग सिद्धा, सलिंगसिद्धा, अन्नलिंगसिद्धा, गिहिलिंगसिद्धा, एगसिद्धा अणेगसिद्धा ॥ सेत्त

क्या है ? उत्तर—अनंतर सिद्ध असंसार समापन्न जीवाभिगम के पन्नरह भेद कहे हैं—१ तीर्थ सिद्ध तीर्थ की स्थापना हुए पीछे सिद्ध होवे, २ अतीर्थ सिद्ध-तीर्थ की स्थापना हुए पहिले सिद्ध होवे ३ तीर्थंकर सिद्ध तीर्थंकर पद प्राप्त करके सिद्ध होवे, ४ अतीर्थंकर सिद्ध-तीर्थंकर पद प्राप्त किये बिनाही सिद्ध होवे ५ गुरु के बोध बिना स्वयमेव ज्ञान प्राप्त करके सिद्ध होवे सो स्वयं बुद्ध सिद्ध ६ प्रत्येक बुद्ध सिद्ध-किसी वस्तु के संयोग से प्रतिबोध पाकर सिद्ध होवे ७ बुद्ध बोधित गुरु आदि के उपदेश से बोध पाकर सिद्ध होवे ८ स्त्रीलिंगसिद्ध स्त्री लिंग में सिद्ध होवे ९ पुरुष लिंग सिद्ध पुरुष लिंग में सिद्ध होवे, १० नपुंसक लिंग सिद्ध-नपुंसक लिंग में सिद्ध होवे, ११ स्वलिंग में सिद्ध होवे सो स्वलिंग सिद्ध १२ अन्य लिंग सिद्ध अन्य लिंग में सिद्ध होवे १३ गृह लिंग सिद्ध गृहस्थ के लिंग में सिद्ध होवे १४ एक सिद्ध एक समय में एक साथ एक ही सिद्ध होवे १५ अनेक सिद्ध एक समय में

पज्जत्तगाय, अपज्जत्तगाय, ॥ ११ ॥ संगहणीगाहा—सरीरोगाहण संघयणं, संठाण कसाय तहय होंति सण्णाओ, लेसिंदिय, समुग्घाए, सण्णी वेएय पज्जत्ती, ॥ १ ॥

पृथ्वीकाया व अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाया ॥ ११ ॥ अब तीनों स्थावरों को विवरण पूर्वक समजाने के लिये आगे द्वार की संग्रहणी गाथा कहते हैं १ शरीर, २ अवगाहना, ३ संघयन, ४ संस्थान, ५ कषाय, ६ संज्ञा, ७ लेश्या, ८ इन्द्रिय, ९ समुद्घात, १० संज्ञी, ११ वेद, १२ पर्याप्ति, १३ दृष्टि, १४ दर्शन, १५ ज्ञान, १६ योग, १७ उपयोग, १८ आहार, १९ उपपात २० स्थिति, २१ समोहाय, २२ चवण, २३ गति आगति इन द्वारों का खुलासा कहते हैं १ शरीर के पांच भेद कहे हैं तद्यथा—१ औदारीक शरीर २ वैक्रेय शरीर ३ आहारिक शरीर ४ तेजस शरीर और ५ कार्माण शरीर २ अवगाहना शरीर की ऊंचाई प्रमाण जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन से कुच्छ अधिक ३ संघयन छ १ वज्रऋषभ नाराच संघयन २ ऋषभ नाराच संघयन ३ नाराच संघयन ४ अर्ध नाराच संघयन ५ कीलका संघयन और ६ छेवट्ठ संघयन ४ संस्थान छ हैं १ सम चतुस्र संस्थान २ न्यग्रोध परिमंडल संस्थान ३ सादि संस्थान ४ वामन संस्थान ५ कुब्जक और ६ हुंडक संस्थान ५ कषाय चार क्रोध, मान, माया व लोभ ६ संज्ञा चार आहार संज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुन संज्ञा व परिग्रह संज्ञा ७ लेश्या छ कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, तेजो लेश्या, पद्म लेश्या व शुक्ल

जीवा पण्णत्ता, एग एव माहसु पचविहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, ते एएण अभिलावेण जाव दसविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ तत्थ ज ते एव माहसु दुविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, तेएव माहसु तजहा-तसाचेव, थावराचेव ॥ १० ॥ सेकिंत थावरा ? थावरा तिविहा पण्णत्ता तजहा पुढवीकाइया, आउक्काइया, वणस्सइ काइया सेकिंत पुढविकाइया ? पुढवि काइया दुविहा पण्णत्ता तजहा- सुहुम पुढवि काइया, बायर पुढवि काइया ॥ सकिंत सुहुम पुढवि काइया ? सुहुम पुढवि काइया दुविहा पण्णत्ता तजहा

ससार समापन्नक जीवों कहे हैं ३ कितनेक कहते हैं कि चार प्रकार के ससार समापन्नक जीवों कहे हैं, ४ कितनेक कहते हैं कि पांच प्रकार के ससार समापन्नक जीवों कहे हैं, ५ कितनेक कहते हैं कि छ प्रकार के ससार समापन्न जीवों हैं यों यावत् ९ कितनक कहते हैं कि दश प्रकार के ससार समापन्न जीवों कहे हैं उन में जो दो भेद बतलाते हैं वे त्रस व स्थावर कहते हैं ॥ १० ॥ प्रश्न—स्थावर किसे कहते हैं ? उत्तर—स्थावर के तीन भेद कहे हैं—१ पृथ्वीकाया २ अप्काया और ३ वनस्पतिकाया प्रश्न—इन में से पृथ्वीकाया किसे कहते हैं ? उत्तर—पृथ्वीकाया के दो भेद—सूक्ष्म पृथ्वीकाया और बादर पृथ्वी काया प्रश्न—सूक्ष्म पृथ्वीकाया किसे कहते हैं ? उत्तर—सूक्ष्म पृथ्वीकाया के दो भेद—पर्याप्त अपर्या

तउ सरीरा पण्णत्ता तजहा—ओरालिए तेयए कम्मए ॥ तेसिण भते ! जीवाण के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अगुलासखेज्जाति भागस्स असखज्जाति, उक्कोसेणवि अगुल असखेज्जइ भागस्स असखेज्जाति भाग ॥ तेसिण भते ! जीवाण सरीरा किं सघयणा पन्नत्ता ? गोयमा! छेवट्ठ सघयणा पन्नत्ता तेसिणं भते ! जीवाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता? गोयमा ! मसूर चद सठिया पण्णत्ता॥ तेसिण कति कसाया पण्णत्ता?गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता तजहा कोह कसाए,

जिन के नाम—उदारिक, तेजस व कार्माण प्रश्न—सूक्ष्म पृथ्वीकाया की क्या अवगाहना है ? उत्तर—सूक्ष्म पृथ्वीकाया की अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असख्यातवे भाग प्रश्न—अहो भगवन् ! उन जीवों को कितने सघयन कहे हैं? उत्तर उन को छेवट्ठ सघयन हैं उन का कौनसा सस्थान है?उत्तर—मसूर की दाल व अर्ध चद्रमा का सस्थान कहा है प्रश्न—उन को कितनी कषाय कही है ? उत्तर—क्रोधादि चारों कषाय उन को कही है प्रश्न—उन को कितनी सज्ञाओं हैं ? उत्तर—उन को आहार यावत् परिग्रह यों चारों सज्ञा कही है प्रश्न—उन जीवों को कितनी लेश्याओं कही है ? उत्तर—उन जीवों को कृष्ण, नील व कापोत ये तीन लेश्याओं कही हैं, प्रश्न—उन को कितनी इन्द्रियों कही है ? उत्तर—उन को एक स्पर्शेन्द्रिय है, प्रश्न—उन को कितनी समुद्घात कही है ? उत्तर—उन को वेदनी, कषाय व मार"

दीट्ठीदसण नाणे जोगु वउगे तहाकिमाहारे उववायाठिई समोहाय चवणगई रागई चेव ॥ २ ॥ १२ ॥ तेसिण मते ! जीवाण कति सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा !

लेश्या ८ इन्द्रिय पांच श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षु इन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय ९ समुद्घात सात वेद ।।प कषाय, मारणांतिक वैक्रेय, आहारिक, तेजस और कवली १० मन सहित होवे सो सन्नी व मन रहित होवे सो असन्नी ११ वेद तीन पुरुष वद, स्त्री वद व नपुसक वेद १२ पर्याप्ति ५ आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोश्वास व भाषा मन १३ दृष्टि तीन समदृष्टि मिथ्यादृष्टि व मिश्र दृष्टि १४ दर्शन चार चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन व केवल दर्शन १५ ज्ञान के आठ भेद मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व विभग ज्ञान १६ जोग तीन मन, वचन, काया १७ उपयोग दो साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त १८ आहार जघन्य तीन दिशी उत्कृष्ट छ दिशी का आहार करे १९ उपपात पांच गति में उत्पन्न होवे नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव व सिद्ध गति २० स्थिति-जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम २१ समोहय प्रदेशों की श्रेणिबध व विना श्रेणी से मृत्यु होवे २२ चवण आयुष्य पूर्ण होने पर एक गति से दूसरी गति में जाना। यों चार गति में से चवण होता है, २३ गति आगति गमनागमन ॥ १२ ॥ अब आगे पृथक जीवों आश्री कहते है-प्रश्न-सूक्ष्म पृथ्वीकाया में कितने शरीर पाते हैं ? उत्तर—सूक्ष्म पृथ्वीकाया में तीन शरीर पाते हैं

तंजहा—वेयणा समुग्घाते, कसाय समुग्घाते, मारणंतिय-समुग्घाते ॥ तेणं भंते ! जीवा किं सन्नी असन्नी ? गोयमा ! नो सन्नी, असन्नी ॥ तेणं भंते ! जीवा किं इत्थीवेया पुरिसवेया नपुंसगवेया ? गोयमा ! णो इत्थिवेया, णो पुरिसवेया णपुंसकवेया तेसिणं भंते ! जीवाणं कइपज्जत्तीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि पज्जत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—आहार पज्जत्ती, सरीर पज्जत्ती, इंदिय पज्जत्ती, आणुपाणु पज्जत्ती ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कति अपज्जत्तीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा !

जीवों चक्षु दर्शनी, अवधि दर्शनी व केवल दर्शनी नहीं है परंतु अचक्षु दर्शनी है प्रश्न-वे जीवों क्या ज्ञानी या अज्ञानी है ? उत्तर वे जीवों ज्ञानी नहीं है परंतु अज्ञानी है और इन में मति व श्रुत ऐसे दो ही अज्ञान पाते हैं प्रश्न—वे जीवों क्या मन योगी वचन या काय योगी है ? उत्तर—वे जीवों मन योगी व वचन योगी नहीं है परंतु काया योगी है प्रश्न-वे जीवों क्या साकारोपयुक्त है या अनाकारोपयुक्त है ? उत्तर-साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त है प्रश्न—वे जीवों क्या आहार करते हैं ? उत्तर—वे जीवों द्रव्य से अनंत प्रदेशी स्कंध का आहार करते हैं क्षेत्र से असंख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गलों का आहार करते हैं, काल से अन्यतर समय स्थिति वाले अर्थात् जघन्य स्थिति वाले मध्यम स्थिति वाले व उत्कृष्ट स्थिति वाले पुद्गलों का आहार करते हैं, भाव से वर्ण मय, गंधमय, रसमय व स्पर्शमय पुद्गलों का आहार करते

माण कसाए, माया कसाए, लोभकसाए, ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कति सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा- आहार सण्णा जाव परिग्गह सण्णा ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कतिलेसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ लेसाओ पण्णत्ताओ तंजहा—कण्हलेसा, नीललेसा काउलेसा ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कति इंदियाइं पण्णत्ताइं ? गोयमा ! एगे फासिंदिए पण्णत्ते तेसिणं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता

तद्यथा ऐसी तीन समुद्घात कही है प्रश्न—वे जीव क्या संज्ञी है या असंज्ञी हैं ? उत्तर—वे जीवों असंज्ञी हैं परंतु संज्ञी नहीं है प्रश्न—वे जीवों क्या स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी या नपुंसकवेदी हैं ? उत्तर—वे जीवों स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी नहीं है परन्तु नपुंसकवेदी है प्रश्न उन जीवों को कितनी पर्याप्तिओं कही है ? उत्तर—चार पर्याप्तिओं कही हैं जिन के नाम आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति व श्वासोश्वास पर्याप्ति प्रश्न—उन जीवों को कितनी अपर्याप्ति कही ? उत्तर—उन जीवों को चार अपर्याप्ति कही जिन के नाम—आहार अपर्याप्ति यावत् श्वासोश्वास अपर्याप्ति प्रश्न—वे जीवों क्या समदृष्टि हैं, मिथ्यादृष्टि है या सम मिथ्यादृष्टि है ? उत्तर—वे समदृष्टि व सम मिथ्यादृष्टि नहीं है परन्तु केवल मिथ्या दृष्टि हैं प्रश्न—वे जीवों क्या चक्षु दर्शनी, अचक्षु दर्शनी, अवधि दर्शनी व केवल दर्शनी है ? उत्तर—वे

जीवा किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी ? गोयमा ! णो मणजोगी णो वइजोगी कायजोगी । तेणं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ तेणं भंते ! जीवा किं आहारमाहारेंति ? गोयमा ! दव्वओ अणंत पदेसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असंखेज्जपदेसोगाढाइं कालओ अण्णयर समयठितियाइं, भावओ वण्णमंताइं, गंधमंताइं, रसमंताइं फासमंताइं। जाइं भावओ वण्णमंताइं आहारेंति ताइं किं एगवण्णाइं आहारेंति दुवण्णाइं आहारेंति तिवण्णाइं आहारेंति, चउवण्णाइं आहारेंति, पंचवण्णाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गण पडुच्च एग वण्णाइंपि दुवण्णाइंपि तिवण्णाइंपि चउवण्णाइंपि पंचवण्णाइंपि आहारेंति ।

पुद्गलों का आहार करते हैं प्रश्न—गंध गंध से सुरभि गंध का आहार करते हैं तब क्या एक गुण सुरभिगंध यावत् अनंत गुन सुरभिगंध वाले पुद्गलों का आहार करते हैं ? उत्तर—एकगुण सुरभिगंध वाले यावत् अनंतगुन सुरभिगंध वाले पुद्गलों का आहार करते हैं वैसे ही दुरभिगंध मय पुद्गलों का जानना रस का वर्ण जैसे जानना प्रश्न—भाव से स्पर्श का आहार करते हैं तब क्या एक स्पर्श यावत् आठ स्पर्श का आहार करते हैं ? अहो गौतम ! स्थान मार्ग आश्री एक स्पर्श, दो स्पर्श, व तीन स्पर्श का आहार नहीं

चत्तारि अपज्जत्तीओ पण्णत्ताओ तंजहा—आहार अपज्जत्ती जाव आणुपाणु अपज्जत्ती ॥ तेणं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! णो सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी ॥ तेण भंते ! जीवा किं चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिदंसणी केवलदंसणी? गोयमा! नो चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी, णोओहिदंसणी णोकेवलदंसणी, तेण भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी गोयमा! नो नाणी, अन्नाणी, नियमा दुअन्नाणी तंजहा—मति अन्नाणीय, सुयअन्नाणीय ॥ तेण भंते !

प्रश्न—जब भावसे वर्ण वाले पुद्गलों का आहार करते हैं तब क्या एक वर्ण वाले, दो वर्ण वाले तीन वर्ण वाले, चार वर्ण वाले व पांच वर्ण वाले पुद्गलों का आहार करते हैं ? उत्तर—सामान्यता से एक वर्ण, दो वर्ण यावत् पांचों वर्ण वाले पुद्गलों का आहार करते हैं और विशेषता से काला वर्ण का यावत् शुक्ल वर्ण वाले का आहार करते हैं प्रश्न—जब वर्ण से काला वर्ण वाले पुद्गलों का आहार करते हैं तब क्या एकगुण काला का आहार करते हैं यावत् अनंत गुन काला का आहार करते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकगुन काला का यावत् अनंत गुन काला का आहार करते हैं ऐसे ही शुक्ल वर्ण पर्यंत कहना प्रश्न भावसे गंध मय पुद्गलों का आहार करते हैं तब क्या एक गंध मय पुद्गलों का आहार करते हैं या दो गंधमय का आहार करते हैं और विधान मार्ग से सुरभि गंध वाले व दुरभि गंध वाले

गोयमा! एगगुण सुब्भिगधाइंपि आहारेंति जाव अणत गुण सुब्भिगधाइंपि आहारेंति॥ एव दुब्भिगंधाइंपि ॥ रसा जहा वण्णा ॥ जाइं भावतो फासमताइं आहारेंति ताइं किं एगफासाइं आहारेंति, जाव अट्ठ फासाइं आहारेंति ? गोयमा! ठाणमग्गण पडुच्च नो एगफासाइं आहारेंति नो दो फासाइं आहारेंति,नो तिफासाइं आहारेंति,चउफासाइं आहारेंति, पच फासाइंपि जाव अट्ठ फासाइंपि आहारेंति, विहाणमग्गण पडुच्च कक्खडाति आहारेंति जाव लुक्खाइंपि आहारेंति।जाइं फासओ कक्खडाइंपि आहारेंति ताइं किं एगगुण कक्खडाइंपि आहारेंति जाव अणतगुण कक्खडाइंपि आहारेंति ?गोयमा! एगगुणकक्ख-

अवगाहे हुए पुद्गलों का आहार करते हैं कि विना अवगाहे हुवे पुद्गलों का आहार करते हैं, ? उत्तर—आत्म प्रदेश की साथ अवगाहे हुवे पुद्गलों का आहार करते हैं परतु विना अवगाहे हुए पुद्गलों का आहार नहीं करते हैं प्रश्न—अब अवगाहे पुद्गलों का आहार करते हैं तब क्या अनतर अवगाहे हुए पुद्गलों का आहार करते हैं कि परपरा अवगाहे हुवे पुद्गलों का आहार करते हैं ? उत्तर—अनतर अवगाहे हुवे पुद्गलों का आहार करते हैं परतु परपरा अवगाहे पुद्गलों का आहार नहीं करते हैं प्रश्न वे जीवों क्या सूक्ष्म पुद्गलों का आहार करते हैं या बादर पुद्गलों का आहार

विहाणमग्गण पडुच्च कालाइंपि आहारेंति जाव सुक्किलाइंपि आहारेंति ॥ जाइं वण्णओ कालाइंपि आहारेंति, ताइं किं एगगुण कालाइंपि आहारेंति जाव अणंतगुण कालाइं आहारेंति, ? गोयमा ! एगगुणकालाइंपि आहारेंति जाव अनंत गुणकाला-इंपि आहारेंति ॥ एवं जाव सुक्किलाइं ॥ जाइं भावतो गंधमंताइं आहारेंति ताइं किं एगगंधाइं आहारेंति दुगंधाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गण पडुच्च एग गंधाइंपि आहारेंति दुगंधाइंपि आहारेंति विहाण मग्गण पडुच्च सुब्भिगंधाइंपि, आहारेंति, दुब्भिगंधाइंपि आहारेंति ॥जाइं गंधओ सुब्भिगंधाइं आहारेंति, ताइं किं एगगुण सुब्भिगंधाइं आहारेंति जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं आहारेंति ?

करते हैं परंतु चार स्पर्श पांच स्पर्श यावत् आठ स्पर्श का आहार करते हैं विधान मार्ग आश्री कर्कश यावत् रूक्ष का आहार करते हैं प्रश्न—वे क्या एक गुन कर्कश यावत् अनंत गुन कर्कश का आहार करते हैं ? उत्तर—एक गुन कर्कश यावत् अनंत गुन कर्कश का आहार करते हैं ऐसे ही रूक्ष पर्यंत सब का जानना प्रश्न—जब अनंत गुन रूक्ष का आहार करते हैं तब क्या स्पर्श कर आहार करते हैं कि बिना स्पर्श आहार करते है, ? उत्तर—स्पर्श कर आहार करते हैं परंतु बिना स्पर्श आहार नहीं करते हैं प्रश्न जब स्पर्शे हुवे द्रव्यों का आहार करते हैं तब क्या

गोयमा! एगगुण सुब्भिगंधाइपि आहारेंति जाव अणत गुण सुब्भिगंधाइपि आहारेंति॥ एव दुब्भिगंधाइपि ॥ रसा जहा वण्णा ॥ जाइ भावतो फासमताइ आहारेंति ताइ किं एगफासाइ आहारेंति, जाव अट्ठ फासाइ आहारेंति ? गोयमा! ठाणमग्गण पडुच्च नो एगफासाइ आहारेंति नो दो फासाइ आहारेंति, नो तिफासाइ आहारेंति, चउफासाइ आहारेंति, पंच फासाइपि जाव अट्ठ फासाइपि आहारेंति, विहाणमग्गणं पडुच्च कक्खडाति आहारेंति जाव लुक्खाइपि आहारेंति। जाइ फासओ कक्खडाइपि आहारेंति ताइ किं एगगुण कक्खडाइपि आहारेंति जाव अणतगुण कक्खडाइपि आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकक्ख-

अवगाहे हुवे पुद्गलों का आहार करते हैं कि विना अवगाहे हुवे पुद्गलों का आहार करते हैं, ? उत्तर—आत्म प्रदेश की साथ अवगाहे हुवे पुद्गलों का आहार करते हैं परतु विना अवगाहे हुए पुद्गलों का आहार नहीं करते हैं प्रश्न—जब अवगाहे पुद्गलों का आहार करते हैं तब क्या अनतर अवगाहे हुवे पुद्गलों का आहार करते हैं कि परपरा अवगाहे हुवे पुद्गलों का आहार करते है ? उत्तर—अनतर अवगाहे हुवे पुद्गलों का आहार करते हैं परतु परंपरा अवगाहे पुद्गलों का आहार नहीं करते हैं प्रश्न वे जीवों क्या सूक्ष्म पुद्गलों का आहार करते हैं या बादर पुद्गलों का आहार

डाइपि आहारेंति जाव अणतगुण कक्खडाइंपि आहारेंति॥एवं जाव लुक्खा नेयव्वा॥जाइंग भंते! अणतगुण लुक्खाइ आहारेंति ताइंकि पुट्ठाइ आहारेंति अपुट्ठाइ आहारेंति? गोयमा! पुट्ठाइ आहारेंति नो अपुट्ठाइ आहारेंति ॥ ताइं भंते ! किं ओगाढाइ आहारेंति अणोगाढाइ आहारेंति ? गोयमा ! ओगाढाइ आहारेंति नो अणोगाढाइ आहारेंति, ताइं भंते ! किं अणतरोगाढाइ आहारेंति परंपरागाढाइ आहारेंति ? गोयमा ! अणतरो- गाढाइ आहारेंति नो परंपरा गाढाइ आहारेंति ॥ ताइं भंते ! किं अणूइं आहारेंति, बायराइं आहारेंति ? गोयमा ! अणूइपि आहारेंति बायराइपि आहारेंति ॥ ताइं भंते ! किं उड्ढ आहारेंति अहे आहारेंति, तिरियं आहारेंति ? गोयमा ! उड्ढपि

करते हैं ? वे जीवों सूक्ष्म पुद्गलों का भी आहार करते हैं और बादर पुद्गलों का भी आहार करते हैं प्रश्न—वे जीवों क्या ऊर्ध्व, अधो व तीर्च्छी तीनों दिशाके पुद्गलों का आहार करते हैं ? उत्तर—वे जीवों तीनों दिशाके पुद्गलों का आहार करते हैं प्रश्न-वे जीवों क्या आदि, मध्य या पर्यवसानमें आहार करते हैं ? उत्तर-वे जीवों शरीर की आदि, मध्य व अंत में आहार करते हैं प्रश्न-वे जीवों क्या विषय (वाचित) पुद्गलों का आहार करते हैं या विषय रहित (अनुचित) पुद्गलों का आहार करते हैं ? उत्तर वे जीवों विषय सहित उचित पुद्गल का आहार करते हैं परंतु विषय रहित अनुचित पुद्गल का आहार नहीं करते हैं प्रश्न-वे जीवों क्या अनुक्रम से आहार करते हैं या अनुक्रम रहित आहार करते हैं ? उत्तर-वे जीवों अनुक्रम से

आहारेंति अहेवि आहारेंति, तिरियपि आहारेंति॥ ताइं भंते ! किं आदिं आहारेंति मज्झे आहारेंति पज्जवसाणे आहारेंति ? गोयमा ! आदिंपि आहारेंति मज्झेवि आहारेंति, पज्जवसाणेवि आहारेंति तइं भंते ! किं सविसए आहारेंति अविसए आहारेंति ? गोयमा ! सविसए आहारेंति नो अविसए आहारेंति ॥ ताइं भंते ! किं आणुपुव्विं आहारेंति अणाणुपुव्विं आहारेंति ? गोयमा ! आणुपुव्विं आहारेंति णो अणाणुपुव्विं आहारेंति ॥ताइं भंते ! कतिदिसिं आहारेंति ? गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं वाघातं पडुच्च सियातिदिसिं सियचउदिसिं सियपंचदिसिं, उसण्णं कारणं पडुच्च वण्णओ काल नील जाव सुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंधाइं दुब्भिगंधाइं, रसतो तित्त

आहार करते हैं परंतु अनुक्रम बिना आहार नहीं करते हैं प्रश्न वे कितनी दिशा का आहार करते हैं ? उत्तर-निर्व्याघात से छ दिशी का आहार करते हैं व्याघात से कदाचित् तीन, कदाचित् चार व कदाचित् पांच दिशी का आहार करते हैं स्वाभाविक कारण आश्री वर्ण से काला, नीला यावत् शुक्ल, गंध से सुरभिगंध व दुरभिगंध, रस से तिक्त यावत् मधुर, स्पर्श से कर्कश मृदु यावत् रूक्ष का आहार करते हैं वे जीवों के वर्ण गंध यावत् स्पर्श गुणों को परिणाम कर उस का विनाश कर अन्य अपूर्व

जाव मधुराइ फासओ कक्खड मउय जाव निद्ध लुक्खाइ,तेसिं पराणे वण्णगुणे जाव फासगुणेविपरिणामतित्ता, परिपीलइत्ता, परिसाडइत्ता, परिविद्धंसइत्ता, अन्ने अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे जाव फासगुणे उप्पाएत्ता आतसरीरत्तो गाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति॥ तेण भंते ! जीवा कतोहिंतो उववज्जति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति मणुस्सेहिंतो उववज्जति, देवेहिंतो उवव-ज्जति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति, मणुस्सेहिंतो उववज्जति नो देवेहिंतो उववज्जति ॥ तिरिक्खजोणियपज्जत्तापज्जत्तेहिंतो असंखेज्ज वासाउय वज्जेहिंतो मणुस्सेहिंतो अकम्मभूमिग असंखेज्जसाउवज्जहिंतो

वर्ण गुन यावत् गंध गुन उत्पन्न कर आत्म प्रदेश के अवगाहे हुवे पुद्गलों का सब आत्म प्रदेश से आहार करते हैं प्रश्न वे जीवों कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या नारकी में से उत्पन्न होते हैं, तिर्यंच में से, मनुष्य में से या देव में से उत्पन्न होते हैं ? उत्तर-नारकी व देव में से वे जीवों नहीं उत्पन्न होते हैं परन्तु तिर्यंच व मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं तिर्यंच में भी असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले पर्याप्त व अपर्याप्त जीवों इसमें नहीं उत्पन्न होते हैं वैसे ही असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले अकर्म भूमि के मनुष्य भी नहीं उत्पन्न होते हैं प्रश्न इन जीवों की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की स्थिति कही प्रश्न-वे जीवों

उववज्जति, उववातो भाणियव्वो । तेसिणं भंते! जीवाणं केवतियं कालाठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । तेण भंते! जीवा मारणांतिय समुग्घाएण किं समोहयामरति असमोहया मरति ? गोयमा! समोहयावि मरति असमोहयाविमरति तेणं भंते! जीवा अणंतर उव्वट्टिचा कहिं गच्छति कहिं उववज्जति किं नेरइएसु उववज्जति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति, मणुस्सेसु उववज्जति, देवेसु उववज्जति ? गोयमा! ना नेरइएसु उववज्जति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति, मणुस्सेसु उववज्जति, नो देवेसु उववज्जति ॥ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति किं एगिंदिएसु उववज्जति जाव पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ? गोयमा! एगिंदिएसु उववज्जति जाव

मारणांतिक समुद्घात से क्या समोहता मरण मरते हैं कि असमोहता मरण मरते हैं ? उत्तर-समोहता व असमोहता दोनों प्रकार के मरण मरते हैं प्रश्न-वे जीवों वहां से नीकलकर कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? क्या नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देव में उत्पन्न होते हैं ? उत्तर-नारकी व देव में नहीं उत्पन्न होते हैं परंतु तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं प्रश्न तिर्यंच में उत्पन्न होकर क्या एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं यावत् तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं ? उत्तर-एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं यावत् पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले अकर्म भूमि के

पंचेंदिय तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जंति ॥ असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जति ॥ मणुस्सेसु अकम्मभूमग अंतरदीवग असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्ता पज्जत्तएसु उववज्जति ॥ तेणं भंते ! जीवा कतिगतिया कति आगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुगतिया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ॥ सेतं सुहुम पुढविकाइया ॥ १३ ॥ सेकिंत बायर पुढविकाइया? बादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्ह बादर पुढविकाइया खरबादर पुढवि काइयां ॥ १ ॥ सेकिंत सण्ह बादर पुढविकाइया? सण्ह बादर पुढविकाइया सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा कण्हमट्टिया, भेदो जहा

मनुष्य में ये जीवों नहीं उत्पन्न होते हैं प्रश्न उन जीवों की कितनी गति व आगति है ? उत्तर इन जीवों की दो गति व दो आगति है अर्थात् तिर्यंच व मनुष्य इन दो गति में जाते हैं और इन दोनोंसे ही आते हैं सूक्ष्म पृथ्वीकाया के जीवों प्रत्येक शरीरी असंख्याते कहे हैं यह सूक्ष्म पृथ्वीकाया का स्वरूप हुवा ॥ १३ ॥ अब बादर पृथ्वी काया का कथन करते हैं प्रश्न-बादर पृथ्वीकाया क्या है ? बादर पृथ्वीकाया के दो भेद कहे हैं १ कोमल बादर पृथ्वीकाया और २ कठोर बादर पृथ्वीकाय प्रश्न कोमल बादर पृथ्वीकाया किसे कहते हैं ? उत्तर-कोमल बादर पृथ्वीकाया के सात भेद कहे हैं काली, हरी

पण्णवणाए जाव ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥-
तेसिणं भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता,
तंजहा-ओरालिए तेयए कम्मए, तचेव सव्वं णवरं चत्तारिलेसाओ, अवसेसं जहा
सुहुम पुढवीकाइयाणं ॥ आहारो जाव नियमा छद्दिसिं, उववातो तिरिक्खजोणिय
मणुस्से देवेहिंतो ॥ देवेहिंतो जाव सोधम्मीसाणेहिंतो ॥ ठीती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ॥ तेणं भंते ! जीवा मारणंतिय समुग्घाएणं
किं समोहया मरति असमोहया मरति ? गोयमा ! समोहयावि मरति असमोहयावि

लाल, पीली, श्वेत, पांडुर और पनक मृतिका इसका विस्तार पूर्वक विवेचन पन्नवणा में कहा है यावत् इस के संक्षेप से पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे दो भेद किये हैं प्रश्न उन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर उन जीवों को तीन शरीर कहे हैं उदारिक तेजस और कार्माण इसका सब कथन सूक्ष्म पृथ्वीकाया जैसे जानना विशेष में यहां चार लेश्याओं कहीं हैं जिनके नाम कृष्ण, नील, कापुत, व तेजो लेश्या बादर पृथ्वीकाया के जीवों छ ही दिशा का आहार करते हैं. इस में मनुष्य, तिर्यंच व देव में से आकर जीव उत्पन्न होते हैं, देव में से भवनपति से सौधर्म देवलोक में से आसकते हैं. इस की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बाइस हजार वर्षकी है

पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जति ॥ असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जति ॥ मणुस्सेसु अकम्मभूमग अतरदीवग असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्ता पज्जत्तएसु उववज्जति ॥ तेणं भंते ! जीवा कतिगतिया कति आगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुगतिया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ॥ सेतं सुहुम पुढविकाइया॥ १३॥सेकिंत बायर पुढविकाइया? बादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्ह बादर पुढविकाइया खरबादर पुढवि काइयां ॥ १ ॥ सेकिंत सण्ह बादर पुढविकाइया? सण्ह बादर पुढविकाइया सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा कण्हमाट्टिया, भेदो जहा

मनुष्य में ये जीवों नहीं उत्पन्न होते हैं प्रश्न इन जीवों की कितनी गति व आगति है ? उत्तर इन जीवों की दो गति व दो आगति है अर्थात् तिर्यंच व मनुष्य इन दो गति में जाते हैं और इन दोमेंसे ही आते हैं सूक्ष्म पृथ्वीकाया के जीवों प्रत्येक शरीरी असंख्याते कहे हैं यह सूक्ष्म पृथ्वीकाया का स्वरूप हुवा ॥ १३ ॥ अब बादर पृथ्वी काया का कथन करते हैं प्रश्न बादर पृथ्वीकाया क्या है ? बादर पृथ्वीकाया के दो भेद कहे हैं १ कोमल बादर पृथ्वीकाया और २ कठोर बादर पृथ्वीकाय प्रश्न कोमल बादर पृथ्वीकाया किसे कहते हैं ? उत्तर-कोमल बादर पृथ्वीकाया के सात भेद कहे हैं काली, हरी

काइया दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते! जीवाण कति सरीरया पण्णत्ता? गोयमा! तउ सरीरया पण्णत्ता तजहा—ओरालिए तेयए कम्मए॥जहेव सुहुम पुढवि काइयाणं, नवर थिवुग संठिया पण्णत्ता सेसं तं चेव जाव दुगतिया दुआगतिया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता॥सेत्तसुहुम आउकाइया॥ १५॥सेकिं त बायर आउकाइया? बायर आउकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा-उसा हिमे जाव जेयावण्णे तहप्पगारा

सूक्ष्म अपूकाया व बादर अपूकाया उनमें से सूक्ष्म अपूकाया के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन सूक्ष्म अपूकायिक जीवोंको कितने शरीर हैं? उत्तर-इन जीवोंको उदारिक तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर हैं इसका सब कथन सूक्ष्म पृथ्वीकाया का कहा वैसे ही जानना, परतु विशेषता यह कि इस का संस्थान पानी के बुदबुदे जैसे जानना शेष सब पूर्वोक्त जैसे जानना यावत् दो गति व दो आगति वाले हैं, प्रत्येक शरीर असंख्यात हैं ये सूक्ष्म अपूकाया के भेद हुए ॥ १८ ॥ प्रश्न-बादर अपूकाय के कितने भेद कहे हैं? उत्तर बादर अपकाया के ओस, हिम गले का पानी, आकाश का पानी, नदी आदिका पानी, तलाव का का पानी, खारा पानी, मीठा पानी, शीत, उष्ण पानी वगैरह अनेक प्रकार के पानी के भेद जानना इस के संक्षेप से दो भेद करे हैं, पर्याप्त व अपर्याप्त इस का सब कथन बादर पृथ्वी काया जैसे जानना

मरंति ॥ तेण भंते ! जीवा अणंतरे उव्वट्टित्ता कहिं गच्छइ कहिं उववजाति किं नेरइएसु उववजाति पुच्छा ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववजाति, तिरिक्ख जोणिएसु उववजाति, मणुस्सेसु उववजाति, नो देवेसु उववजाति संचेव जाव असंखेज्ज वासाउयवज्जेहिंतो उववजाति ॥ तेणं भंते ! जीवा कति गतिया कति आगतिया पण्णत्ता? गोयमा! दुगतियातिआगतिया पण्णत्ता परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो! सेत्त बायर पुढविकाइया सेत्तपुढविकाइया॥ १४॥ सेकिंत आउकाइया? आउकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—सुहुम आउकाइया बायर आउकाइया॥ सुहुम आउ-

प्रश्न—वे जीवों क्या समोहता मरण मरते हैं या असमोहता मरते हैं ? उत्तर—समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं प्रश्न-वे जीवों वहां से नीकलकर कहां जाते हैं उत्पन्न होते हैं ? उत्तर-नरक व देव में उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले अकर्मभूमि के मनुष्य छोडकर तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं प्रश्न-इन जीवों की कितनी गति व आगति है ? इन जीवों की मनुष्य व तिर्यंच यों दो गति और देव मनुष्य व तिर्यंच यों तीन की आगति है बादर पृथ्वीकाया प्रत्येक शरीरी असंख्यात है यह बादर पृथ्वी काया हुई यह पृथ्वी काया का कथन हुआ ॥ १४ ॥ प्रश्न अप्काया किसे कहते हैं ? उत्तर—अप्काया के दो भेद कहे हैं सूक्ष्म

नयर्र अणित्थत्थ साठिया दुगतिया दुआगतिया, अपरित्ता अणता अवसेस जेहा पुढविक्काइयाण ॥ सेत सुहुम वणस्सइ काइया ॥ १७ ॥ से किंत वायर वणस्सइ काइया? बादर वणस्सइ काइया दुविहा पन्नत्ता तजहा पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ, साहारण सरीर बायर वणस्सइ काइया॥ से किंत पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ काइया? पत्तेय सरीर बादर वणस्सइ काइया दुवालसविहा पण्णत्ता तजहा रूक्खा, गुच्छा, गुम्मा, लताय, वल्लीय, पव्वगा चेव तण वलय हरित उसहि जलरूह कुहणाय बोधव्वा ॥ से किंत रुक्खा?

पृथ्वीकाया जैसे जानना विशेषता यह है कि इस का संस्थान अनवस्थित है यावत् इस की दो गति व दो आगति है यह साधारण अनंत काया है, यह सूक्ष्म वनस्पतिकाया का भेद कहा ॥ १७ ॥ प्रश्न बादर वनस्पतिकाया किस को कहते हैं ? उत्तर बादर वनस्पतिकाया के दो भेद कहे हैं तद्यथा-प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया व साधारण शरीरी बादर वनस्पतिकाया प्रश्न-प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के बारह भेद कहे हैं तद्यथा १ आम्र प्रमुख वृक्ष, २ रिंगनी प्रमुख गुच्छे, ३ नवमालती प्रमुख गुल्म ४ चम्पकादि लता, ५ खरबूज प्रमुख वल्लि, ६ इक्षु प्रमुख पर्व, ७ तृण ८ केवड़ा प्रमुख वलय, ९ हरितकाय की भाजी प्रमुख हरितकाय, १० शाली प्रमुख अनाज औषधि, ११ कमल प्रमुख जलवृक्ष और १२ भूमि फोड़ कर निकलने वाले वगैरह

ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय-अपज्जत्ताय, तं चेव सव्व, णवर थिवुग संठिया, चत्तारि लेसाओ, आहारो णियमाछद्दिसिं उववाओ तिरिक्खजोणिय मणुस्स देवेहिं ॥ ठिती जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सत्तवास सहस्साइं, सेस तं चेव ॥ जहा बायर पुढवि काइयाण जाव दुगतिआ तिआगतिया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो । सेत बायर आउक्काइया ॥ सेत आउक्काइया ॥ १६ ॥ से किंत वणस्सइ काइया ? वणस्सइ काइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—सुहुम वणस्सइ काइया बायर वणस्सइ काइया ॥ से किंतं त सुहुम वणस्सइ काइया ? सुहुम वणस्सइ काइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तहेव

परंतु इस में इतनी विशेषता है इस का संस्थान पानी के परपोटे जैसे जानना, कृष्ण, नील, कापोत व तेजो ऐसी चार लेश्याओं जानना आहार नियमा छ दिशी का, तिर्यंच मनुष्य व देव में से उत्पन्न होवे, इन की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की, यावत् इन को दो गति व दो आगति है ये प्रत्येक शरीरी असंख्यात हैं यों बादर अप्काय के भेद हुए यह अप्काय का कथन हुआ ॥ १६ ॥ प्रश्न-वनस्पतिकाया किस को कहते हैं? उत्तर-वनस्पतिकाया के दो भेद कहे हैं सूक्ष्म वनस्पतिकाया व बादर वनस्पतिकाया प्रश्न-सूक्ष्म वनस्पतिकाया किसे कहते हैं? उत्तर-सूक्ष्म वनस्पति के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त

फला बहुबीयका ॥ सेत रुक्खा ॥ एव जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्व जाव जेया वण्णे तहप्पगारा सेत कूहणा ॥ णाणाविह सठाणा रुक्खाण एगजीविया पण्णत्ता खधोवि एगजीवा ताल सरल नालियरीणं जह सगल सरिसवाण पत्तेयसरीराण ॥ गाहा—जह वातिलस कुलिया गाहा-सत्त पत्तेयसरीर बायरवणस्सइ- काइया ॥ सेकित साहारण सरीर बादरवणस्सइकाइया ? साहारण सरीर बायर वणस्सइकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा आलुए मूलते सिंगबेरे हिरिलि सिरिलि सिस्सिरिलि किट्ठिया छिरिया, छिरविरालिया, कण्हकदा, वज्जकदो, सूरणकदो, खल्लूडो, किमिरासि, भद्दमोत्था,

वृक्ष का अधिकार कहा यह वृक्ष का अधिकार हुवा इस का विशेष खुलासा पन्नवणा सूत्र से जानना यहां कूहणा पर्यंत सब अधिकार कह देना प्रश्न वृक्षमें रहे हुवे जीवोंका सस्थान कैसा कहा? उत्तर वृक्ष में रहे हुवे जीवों का सस्थान अनेक प्रकार का कहा है वृक्ष में एक जीव कहा और स्कंध में भी एक जीव कहा, वैसे वृक्षों ताल, सरल, नालियेरी प्रमुख हैं प्रश्न-वृक्षादिक में पृथक् २ अनेक प्रत्येक शरीरी जीवों कैसे रहे हुवे हैं ? उत्तर-जैसे अनेक सरसव के दाने को गुड में मीलाकर उस का लड्डु बनावे वह लड्डु एक पिंड रूप रहता है इस में सब सरिसव प्रतिपूर्ण रूप से रहे हुए हैं अपनी २ अवगाहना से अलग २ है, ऐसे ही प्रत्येक शरीरी जीवों का समुह है वह अलग २ अपनी २ अवगाहना से रहे हैं ऐसे ही तिलों की बनी हुई तिल पपडी एक ही कहलाती है, परंतु उस में तिल के दाने पृथक् २ रहे हुवे हैं, वैसे ही प्रत्येक

रुक्खा दुविहि पन्नत्ता तंजहा एगट्ठियाय बहुबीयाय से किंत एगट्ठिया? एगट्ठिया अनेक विहा पण्णत्ता तंजहा-निंबु जंबु जाव पुन्नाग रूक्खे सीवन्नि तहा असोगेय, जेयावन्ने तहप्पगारा एतेसिण मूलावि असंखेज्ज जीविया एव कंदा खंधा तया साला पवाला पत्ता पत्तेय जीवा, पुप्फाइ अणेगजीवाइ फला एगट्ठिया सेत्त एगट्ठिया॥ सेकिंत बहुबीयगा? बहुबीयगा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा अत्थिय तिंदुय उंबर कविट्ठे आमलक फणस दाडिम नग्गोह काउंबरीय तिलय लउय लोद्देधते जेयावन्न तहप्पगारा, एतेसिण मूलावि असंखेज्जजीविया जाव

कुहाण प्रश्न-वृक्ष के कितने भेद कहे हैं? उत्तर-वृक्ष के दो भेद कहे हैं तद्यथा एक बीजवाले व बहुत बीजवाले प्रश्न एक बीजवाले के कितने भेद कहे हैं? एक बीजवाले के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-निंबु, जाम्बु यावत् पुन्नाग वृक्ष, सीवनी वृक्ष तथा अशोक वृक्ष और अन्य भी इस प्रकार के वृक्ष इन के मूल में असंख्यात जीवों कहे हैं ऐसेही कंद, स्कंध, त्वचा, शाल, प्रवाल, पत्र, में प्रत्येक जीवों हैं, पुष्प में अनेक जीवों हैं और फल एक बीजवाला होता है यह एक बीजवाले वृक्ष का वर्णन हुआ प्रश्न बहुबीजवाले वृक्ष के कितने भेद कहे हैं? बहु बीजवाले के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-अस्थिक, तिंदुक, उंबर, कपित्थ, आमला, फणस दाडिम, कदम्ब, न्यग्रोध, (वड) तिलक, लोध्र, और अन्य भी इस प्रकार के बहुत बीजवाले वृक्षों हैं इन के मूल में असंख्यात जीवों कहे हुवे हैं यावत् फल बहुत बीजवाले हैं यह बहुबीजवाले

सरीरगा, अणित्थत्थ सठिया, ठिती जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दसवास सहस्साई जाव दुगतिया, तिआगतिया, परित्ता अणता पण्णत्ता ॥ सेत्त वणस्सइकाइया ॥ सेत थावरा ॥ १८ ॥ से किंत तसा ? तसा तिविहा पण्णत्ता तजहा तेउकाइया वाउकाइया उराला तसा पाणा॥सेकिंत तेउकाइया? तेउकाइया दुविहा पण्णत्ता तजहा सुहुमतेउकाइयाय बायर तेउकाइयाय ॥ से किंत सुहुम तेउकाइया ? सुहुम तेउकाइया जहा सुहुम पुढविकाइया, णवर सरीरगा सूयकलाव सठिया, एकगातिया, दुयागतिया, परित्ता, असखेज्जा, पण्णत्ता सेस

संस्थान विविध प्रकार का, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की यावत् दो गति व तीन आगति है इस में अनंत जीवों कहे हैं यह बादर वनस्पतिकाया का कथन हुवा यों स्थावर के भेद संपूर्ण हुए ॥ १८ ॥ प्रश्न त्रस के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर त्रस के तीन भेद कहे हैं तद्यथा तेउकाया, वायुकाया व औदारिक त्रस प्रश्न तेउकाया किसे कहते हैं ? उत्तर-तेउकाया के दो भेद कहे हैं, सूक्ष्म तेउकाया व बादर तेउकाया प्रश्न सूक्ष्म तेउकाया किसे कहते हैं ? सूक्ष्म तेउकाया का सूक्ष्म पृथ्वीकाय जैसे जानना परंतु विशेषता यह है कि इस का संस्थान सूचिकलाप का है, तेउकायावाले एक तिर्यंच में जाते हैं और मनुष्य व तिर्यंच यों दो गति में से आते हैं इस में असंख्यात जीवों कहे हैं

पिंडहलिद्दा, लोहारिणी हुटे, हुत्थिभु, अस्सकन्नी, सिंहकन्नी, सिउंढी मुसुंढी, जयावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तकाय अपज्जत्तकाय॥ तेसिंण भंते ! जीवाण कइ सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा ओरालिते, तेयते, कम्मते, तहेव जहा बायरपुढविकाइयाण णवर सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जाति भाग, उक्कोसेण साइरेग जोयणसहस्सं

शरीरी जीव वृक्षों में अलग २ रहे हुवे हैं बाह्य में एक ही रूप दीखने पर जीवों पृथक् २ रहे हुवे हैं यह प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के भेद हुए अब साधारन वनस्पतिकाया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर साधारन वनस्पतिकाया के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा मालू, मूले, अदरख, हिरली, सिरली सिसरली, किट्टिया, छिरिया, छिरविरालिया, कृष्णकंद, वज्रकंद, सूरणकंद, खल्लुडा किमिराशी, भीडमोथ, पिंडहलदी, लोहारिनी, थोहरी, हस्तिभुजा, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, सिहकुंटी, व मुसंढी और इस प्रकार की अन्य वनस्पतिकाया कही हुई है इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन वनस्पतिकायिक जीवों के कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इन को उदारिक, तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर कहे हैं एसे ही सब बादर पृथ्वीकाया जैसे जानना परंतु विशेषता यह है कि इन की शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग में उत्कृष्ट साधिक एक हजार योजन,

सेसं तचेत्र जाव एगगतिया, दुयाअगितया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता॥सेत तेउक्काइया ॥१९॥ सेकित वाउकाइया?वाउकाइया दुविहा पण्णत्ता तजहा सुहुम वाउकाइया, बायर वाउकाइया ॥ सुहुम वाउकाइया जहा सुहुम तेउकाइया,णवर सरीर पडाग सठिया, एगगतिया दुयागतिया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता,सेत्त सुहुम वाउकाइया ॥ सेकित बायर वाउकाइया?बायर वाउकाइया अणगविहा पण्णत्ता तजहा-पातीणवाते,पडीणवाते, एव जयावण्णे तहप्पगारा, तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तसिण भते!जीवाण कति सरीरगा पन्नत्ता?गोयमा!चत्तारि सरीरगा पन्नत्ता तजहा

तेउकाया का स्वरूप हुवा ॥ १० ॥ प्रश्न-वायुकाया के कितने भेद कहे हैं? उत्तर वायुकाया के दो भेद कहे हैं तद्यथा-सूक्ष्म वायुकाया व बादर वायुकाया सूक्ष्म वायुकाया का सूक्ष्म तेउकाया जैसे जानना परंतु सूक्ष्म वायुकाया का सस्थान पताका का है यावत् एक गति व दो आगति है और इस में असख्यात जीवों कहे हुवे हैं यह सूक्ष्म वायुकाया का स्वरूप हुवा प्रश्न बादर वायुकाया किसे कहते हैं? उत्तर-बादर वायुकाया के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-पूर्व का वायु, पश्चिमका वायु, यों सब वायुकाया के भेद जानना इस का कथन पन्नवणा सूत्र में कहा हुवा है इस के सक्षेप से दो भेद कहे हैं तद्यथा-पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं? उत्तर-इन जीवों को उदारिक, वैक्रेय,

तंचर ॥ सेत्त सुहुम तेउक्काइया ॥ सेकिंत बायर तेउक्काइया ? बायर तेउकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा-इगाल, जाल, मुम्मुरे, जाव सूर,कतमाणि, निस्सिते जेया वण्णे तहप्पगारा त समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तजहा—ओरालिते,तेयते,कम्मते, सेस तचेव, सरीरगा सूयिकलावसठिया, तिन्निलेसा ॥ ठिति जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि राइदियाइ॥तिरियमणुस्सेहिंतो उववाउओ,

यह सूक्ष्म तेउकाया का स्वरूप हुवा,प्रश्न-बादर तेउकाया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर बादर तेउकाया के अनेक भेद कहे हैं अंगार, ज्वाला, मुमुरे यावत् सूर्यकांत मणि और वैसे ही अन्य प्रकार के तेउकाया के जीवों हैं इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं तद्यथा पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर-इन जीवों को उदारिक, तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर कहे हैं शेष सब बादर पृथ्वीकाया जैसे जानना परंतु विशेषता यह है कि इस का संस्थान सूई के समुह का है, इन जीवों को तीन लेश्या कही है, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन रात्रि दिन की, तिर्यंच व मनुष्य में से उत्पन्न है, शेष वैसे ही जानना यावत् एक गति व दो आगति है इस में असंख्यात जीवों कहे हुए हैं यह

से किंतं बेइंदिया? बेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-पुलाकिमिया जाव समुद्दलिक्खा, जेयावण्णे तहप्पगारे, ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तउ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा—ओरालिते तेयते कम्मते॥ तेसिणं भंते! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं, छेवट्ठ संघयणी, हुंडसंठिया, चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि लेसातो, दोइंदिया, तओ समुग्घाया वेयणा कसाया मारणंतिया॥ नो सण्णी असण्णी॥ नपुंसक

उत्तर उदार त्रस प्राणियों के चार भेद कहे हैं तद्यथा बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय ॥ २१ ॥ प्रश्न-बेइन्द्रिय किस को कहते हैं ? उत्तर-बेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-कृमी, कीड़े, गिंडोल, शंख, कोड, जलो, चन्दनक, अलसिया, ईल्ट, फूआरा इत्यादि अनेक प्रकार के कहे हैं इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न इन बेइन्द्रिय जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इन को तीन शरीर कहे हैं उदारिक, तेजस व कार्माण प्रश्न इन जीवों के शरीर की अवगाहना कितनी कही है ? उत्तर-जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट बारह योजन की, संघयन छेवट्ट, संस्थान हुंडक, चार कषाय, चार संज्ञा, तीन लेश्या, दो इन्द्रिय, वेदना, कषाय व मारणांतिक यों तीन समुद्घात हैं ये जीवों

उरालिने, वउव्वेते, तेयते, कम्मए, सरीरगा पडागसठिया, चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता तजहा—वेयणा समुग्घ ते, कसाय समुग्घाते, मारणतिय समुग्घाते, वेउव्विय समुग्घ ते, ॥ आहारो णिव्वाघाएण छ द्दिसिं, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पचद्दिसिं॥ उवव ते देवमणुया, नेरइतेसु णत्थि॥ठिती जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णिवाससहस्साइ, सेस तचेव एगगतिया, दुआगातिया, परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ? सेत्त बायर वाउकाइया ॥ सेत वाउकाइया ॥२०॥ से किंत उराला तसा पाणा ? उराला तसपाणा चउव्विहा पण्णत्ता तजहा—बेइदिया तेइदिया चउरिंदिया पर्चेदिया ॥२१॥

तजस व कार्माण यों चार शरीर कहे हैं इन का सस्थान पताका का है चार समुद्घात-वेदना, कषाय, मारणांतिक व वैक्रेय आहार निर्व्याघात से छ दिशि का और व्याघात आश्री क्वचित् तीन दिशी, कदाचित् चार दिशी व कदाचित् पांच दिशी का आहार करे नरक, मनुष्य व देव में से उत्पन्न नहीं होता है परंतु एक तिर्यंच में से उत्पन्न होता है स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष शेष सब वैसे ही जानना यावत् एक गति व एक आगति इस में असंख्यात जीवों कहे हुए हैं यह बादर वायुकाया का भेद हुआ यह वायुकाया का स्वरूप हुआ ॥ २२ ॥ प्रश्न-उदार त्रस प्राणियों के कितने भेद कहे हैं ?

तिरियमणुस्सेसु णेरइयदेव असखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिती—जहण्णेण अतोमुहुत्त-उक्कोसेणं बारससमवच्छराणि, समोहयावि मरति असमोहयावि मरति, कहिं गच्छति ? नेरइय देवअसखेज्जवासाउअवज्जेसु गच्छति, दुगतिया, दुआगतिया, परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता, सेत्त बेइंदिया ॥ २२ ॥ सेकित तेइंदिया ? तेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा—उवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा जेयावण्ण तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय,तहेव जहा बेइंदियाण णवर सरीरोगाहणा उक्कोसेण तिन्निगाउयाइ ठिति जहण्णेण अतो मुहुत्तउक्कोसेण एक्कूणपण्ण राइंदियाइ सेस तहेव

स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष, समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं वे कहां जाते हैं ? नारकी देव व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले मनुष्य तिर्यंच छोडकर शेष मनुष्य में तिर्यंच में जाते हैं दो गति व दो आगति है वे असंख्यात जीवों हैं यों बेइन्द्रिय का अधिकार हुवा ॥२२॥ प्रश्न—तेइन्द्रिय के कितने भेद हैं ? उत्तर—तेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा उदाइ रोहिणिये, धनेरीये, कान खजुरे, पट्मल, यूका पीपिलोका, मकोडा, इहाल, दूली, गधइया, विष्टा के कीडे, कुंथवे, इत्यादि अनेक प्रकार के तेइन्द्रिय जीव जानना इन के दो भेद कहे पर्याप्त व अपर्याप्त यों सब बेइन्द्रिय जैसे जानना परंतु इन में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट तीन गाउ की, इन्द्रियों तीन, स्थिति जघन्य अंत

वेस्का, पचपज्जत्तीओ पचअपज्जत्तीओ, सम्मद्दिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि,नो.सम्मामिच्छदिट्ठी॥ नो चक्खुदसणी अचक्खुदसणी नो ओहिदसणी नो केवलदसणी ॥ तेण भते ! जीवा किंणाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि ॥ जे णाणी ते नियमा दुणाणी तजहा—अभिणिबोहियणाणीय सुयणाणीय ॥ ज अण्णाणी तेनियमा दुअण्णाणी मतिअण्णाणी, सुयअण्णाणीय ॥ नो मनजोगी, वइजोगी कायजोगीवि, सागरोवउत्तावि, अणागारोवउत्तावि, ॥ आहारो नियमा छद्दिसी, उववातो

सज्ञी नहीं परन्तु असंज्ञी है, उन को एक नपुंसक वेद है, पांच पर्याप्ति व पांच अपर्याप्ति है वे जीवों समदृष्टी व मिथ्यादृष्टी भी हैं, चक्षुदर्शन अवधि दर्शन व केवल दर्शन उन को नहीं है परन्तु एक अचक्षु दर्शन है प्रश्न-वे जीवों क्या ज्ञानी है या अज्ञानी है ? उत्तर ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं ज्ञान में आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान यों दोनों प्रकार के ज्ञान है और अज्ञान में मति व श्रुत अज्ञान है मन योग नहीं है परन्तु वचन योग व काया योग है, वे साकारोपयोगी व अनाकारोपयोगी दोनों हैं आहार छ दिशी का ही लेते हैं, मनुष्य व तिर्यंच में से उत्पन्न होते हैं परन्तु नारकी देव से नहीं उत्पन्न होवे हैं और असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य व तिर्यंच भी नहीं उत्पन्न होवे हैं

तिरियमणुस्सेसु णेरइयदेव असंखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिती—जहण्णेण अंतोमुहुत्तं-उक्कोसेण बारससंवच्छराणि, समोहयावि मरति असमोहयावि मरति, कहिं गच्छति ? नेरइय देवअसंखेज्जवासाउअवज्जेसु गच्छति, दुगतिया, दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता, सेत्त बेइंदिया ॥ २२ ॥ सेकिंत तेइंदिया ? तेइंदिया अणगविहा पण्णत्ता तंजहा—उवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा जेयावण्ण तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय, तहेव जहा बेइंदियाण णवर सरीरोगाहणा उक्कोसेण तिन्निगाउयाइं ठिति-जहण्णेण अंतो मुहुत्तउक्कोसेण एक्कूणपण्ण राइंदियाइं सेस तहेव

स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष, समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं वे कहां जाते हैं ? नारकी देव व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले मनुष्य तिर्यंच छोडकर शेष मनुष्य में तिर्यंच में जाते हैं दो गति व दो आगति है ये असंख्यात जीवों हैं यों बेइन्द्रिय का अधिकार हुवा ॥२२॥ प्रश्न—तेइन्द्रिय के कितने भेद हैं ? उत्तर—तेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा जूवा रोहिणिये, धनेरीये, कान खजुरे, खट्मल, यूका पीपिलीका, मकोडा, इहाल, दूली, गधइया, विष्टा के कीडे, कुंथवे, इत्यादि अनेक प्रकार के तेइन्द्रिय जीव जानना इन के दो भेद कहे पर्याप्त व अपर्याप्त यों सब बेइन्द्रिय जैसे जानना परंतु इन में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट तीन गाउ की, इन्द्रियों तीन, स्थिति जघन्य अंत

दुगातिया दुआगतिया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत तेइंदिया ॥ २३ ॥ सेकिंत चउरिंदिया ? चउरिंदिया अणेग विहा पण्णत्ता तजहा—अधिया पत्तिया जाव गोमयकीडा, जेयावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्ता अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भते ! जीवाण कतिसरीरगाय पण्णत्ता ? गोयमा ! तओसरीरगा पण्णत्ता तहेव, णवर सरीरोगाहणा उक्कोसण चत्तारि गाउयाइ, इंदिया चत्तारि, चक्खुदसणीवि अचक्खु दसणीवि, ठिई—उक्कोसेण छ

म्मासे उत्कृष्ट ४९ दिन, शेष सब वैसे ही यावत् दो गति व दो आगति प्रत्येक शरीरी असंख्यात हैं यों त्रीन्द्रिय का कथन हुवा ॥ २३ ॥ प्रश्न—चतुरेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुरिन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं ? जिन के नाम—अंधिका पोतिका बिच्छू, बग मकडी, भ्रमरी, तीड मक्षिका, दंश, मच्छर कसारी यावत् गोमय कीट और भी चतुरिन्द्रिय जीवों कहे हैं इन के दो भेद कहे हैं, पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न ? इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इन जीवों को तीन शरीर कहे हैं, इसका कथन पूर्वोक्त जैसे जानना, परंतु इस में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट चार गाउ, चार इन्द्रियों, चक्षु दर्शन व अचक्षु दर्शन दोनों, स्थिति उत्कृष्ट छ मास की शेष सब बेइन्द्रिय जैसे कहना यावत् असंख्यात कहे हैं. यह

मामा, सेस जहा बेइंदियाण जाव असंखिज्जा पण्णत्ता, सेत चउरिंदिया ॥ २४ ॥ से किंत पचेंदिय ? पचेंदिया चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-नेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्स देवा ॥ २५ ॥ से किंत नेरइया ? नेरइया सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा-रयणप्पभा पुढवि नेरइया, जाव अहे सत्तम पुढवी नेरइया ॥ तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता, तंजहा-वेउव्विते, तेयते, कम्मए ॥ तेसिण भंते ! जीवाण

चतुरेन्द्रिय का स्वरूप हुवा ॥ २४ ॥ प्रश्न पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर पंचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं तद्यथा-नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता ॥ २५ ॥ प्रश्न-नारकी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-नारकी के सात भेद कहे हैं तद्यथा रत्नप्रभा नारकी यावत् सातवी तमतम प्रभा नारकी इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे है ? उत्तर—इन जीवों को वैक्रय, तेजस व कार्माण यह तीन शरीर कहे हैं २ इन जीवों की कितनी शरीर की अवगाहना है ? उत्तर—इन के शरीर की अवगाहना के दो भेद कहे हैं जैसे भवधारनीय सो जन्म से शरीर होवे और २ उत्तर वैक्रेय सो अन्य रूप बनावें, इन में से भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की और उत्तर वैक्रेय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के

के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता तंजहा भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थणं जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं॥तत्थणं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जति भाग उक्कोसेणं धणुसहस्सं ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं सरीरा किं संघयणी पण्णत्ता ? गोयमा!छण्हं संघयणाणं असंघयणी, णेवट्ठी णेवछिरा, णेवण्हारु णेवसंघयणमत्थि जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा

संख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार धनुष्य की, ३ प्रश्न—इन जीवों के शरीर कौनसे संघयनवाले हैं ? उत्तर—इन जीवों को छ संघयन में से एक भी संघयन नहीं है क्यों कि इन को हड्डियों, स्नायु, नाड वगैरह कुच्छ भी नहीं है परंतु जो अनिष्ट, अकांत, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ व अमणाम पुद्गलों हैं वे इन के संघातनपने परिणमते हैं ४ प्रश्न—इन जीवों को कौनसा संस्थान है ? उत्तर—इन जीवों के शरीर दो प्रकार के संस्थानवाले हैं भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों के हुण्डक संस्थान है, (जैसे पक्षि पांख, गरदन के रोम वगैरह नीकालने से कुरूप दीखता है इस से भी विशेष भयकर उन नेरियों के शरीर दीखाते हैं) उत्तर वैक्रेय को बहुत सुन्दर रूप बनावे तथापि अशुभ नाम कर्मोदय से अत्यंत अशुभ ही होते हैं. ५ कषाय चार हैं ६ संज्ञा चार हैं, ७ लेश्या तीन हैं (पहिली दूसरी में

अमणुण्णा अमणामा एतेसिं सघातत्ताए परिणमति ॥ तेसिण भते ! जीवाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय तत्थण जेते भवधारणिज्जा तेहुड सठिया, तत्थण जेते उत्तरविउव्विया तेवि हुडसठिया पण्णत्ता ॥ चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णातो, तिण्णिलेसातो पचइदिया, चत्तारि समुग्घाया आइल्ला, सण्णीवि असण्णीवि, नपुसकवेदका, छपज्जत्तीओ, तिविहा दिट्ठिओ, तिन्निदसणा ॥ णाणीवि अन्नाणीवि जेणाणी तेनियमा तिन्नाणी पण्णत्ता तजहा—आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी ओहिणाणी, जे

कापोत लेश्या तीसरी में कापुत व नील, चौथी में नील, पांचवी में नील व कृष्ण और छठी सातवी में कृष्ण लेश्या)८इन्द्रियों पांच,९समुद्घात चार वेदनीय,कषाय,मारणांतिक और वैक्रेय१०नरकमे सज्ञी असज्ञी दोनों हैं (प्रथम नरकमें असंज्ञी पचेन्द्रिय भी उत्पन्न होते हैं,इसलिये वहां असज्ञी होते हैं)११वेद नपुसक१२पर्याप्ति छ,१३दृष्टि तीन१४दर्शन तीन केवल दर्शनपावे नहीं१५ज्ञानी भी हैं अज्ञानी भी है ज्ञानमें मति, श्रुति व अवधि यों तीनज्ञानहै और अज्ञानमें मति व श्रुति ज्ञान हैं, दो अज्ञान हैं जो असज्ञी प्रथम नरक में उत्पन्न होतेहैं उनको अपर्याप्तावस्था में मति व श्रुति ऐसे दो अज्ञान ही पाते हैं तथा मति श्रुति व विभंग ज्ञान यों तीन अज्ञान भी हैं १६ योग तीन १७ उपयोग दो १८ आहार छ ही दिशी का लेते हैं, स्वाभाविक कारण से

अन्नाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी अत्थेगत्तिया तिअन्नाणी, जे दुअन्नाणी ते णियमा मतिअन्नाणी, सुत अन्नाणी जे ति अन्नाणी ते नियम मइअन्नाणीय, सुत अन्नाणीय विभंगणाणीय ॥ तिविधो जोगो, दुविहो उवओगो, छदिस आहारो, उसण्णकारणं पडुच्च वण्णतो कालाइ जाव आहार माहारंति, उववाओ तिरिय मणुस्सेसु, ठिती जहण्णेण दसवास सहस्साइ उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइ ॥ दुविधा मरंति उवट्टणा भाणियव्वा जातो आगता णवर समुच्छिमेसु पडिसेहो, दुगतिआ दुआगतिया, परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत नेरइया ॥ २६ ॥ सेकिंत पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ? पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा—समुच्छिम पचिंदिय

काले वर्ण के पुद्गल यावत् अन्य भी वर्ण के पुद्गलों का भी आहार करते हैं, १० नेरीये मनुष्य व तिर्यंच में से उत्पन्न होते हैं २० स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की २१ समोहया व असमोहया दोनों प्रकार के मरण मरते हैं २२ मनुष्य तिर्यंच दोनों गति में आते हैं परंतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य तिर्यंच व समूर्च्छिम मनुष्य में नहीं उत्पन्न होते हैं दो गति व दो आगति है वे असंख्यात जीवों कहे हुवे हैं यह नारकी का दंडक हुवा॥ २६॥ प्रश्न—तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं, समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय व गर्भज

तिरिक्खजाणियाय गब्भवक्कतिय पचिंदिय तिरिक्खजोणियाय ॥ से किंत समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जाणिया? समुच्छिम पचिंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा पचविधा पण्णत्ता तंजहा—मच्छगा, कच्छगा, मगरा, गाहा, सुसमारा,॥ सेकिंत मच्छा? मच्छा एव जहा पण्णवणाए जाव जेयावण्णे तहप्पगारा, ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरया पण्णत्ता तंजहा—ओरालिए तेयए कम्मए ॥ सरीरोगाहणा

तिर्यंच पंचेन्द्रिय प्रश्न—समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के तीन भेद कहे हैं १ जलचर २ स्थलचर और ३ खेचर प्रश्न-इसमें से जलचर किसे कहते हैं ? उत्तर—जलचर के पांच भेद कहे हैं मत्स्य, कच्छ मगर, गाहा, सुसमारा प्रश्न—मत्स्य किसे कहते हैं ? उत्तर—मत्स्य के अनेक भेद कहे हैं इस का वर्णन श्री पन्नवणा सूत्र में कहा हुवा है, इस के सामान्य से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों को तीन शरीर कहे हैं—उदारिक, तेजस व कार्माण, शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा

जहण्णेण अगुलस्स असंखेज्जति भागे, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, छेवट्ट संघयणी, हुंडसंठिता, चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णाओ, तओ लेसाओ इंदियापंच, समुग्घाता तिण्णि, णो सण्णी असण्णी, णपुंसकवेदा, पज्जत्तीय अपज्जत्तीओय पंचिंदिओ, दो दिट्ठिओ दो दंसणा, दोणाणा दो अण्णाणा दुविहे जोगे दुविहे उवओगे, आहारो छद्दिसिं, उववातो तिरिय मणुस्सेहिंतो, नो देवेहिंतो, नो नरइएहिंतो तिरिएहिंतो असंखेज्जवासाउय वज्जेसु मणुस्सेसु अकम्मभूमिग अंतरदीवग असंखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिति जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, मारणंतिय समुग्घातेण दुविहावि मरंति,

भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन संघयन एक छेवटा, संस्थान एक हुंडक, कषाय चार, संज्ञा चार, लेश्या तीन, इन्द्रिय पांचों, पहिली तीन समुद्घात, संज्ञी नहीं परंतु असंज्ञी, वेद एक नपुंसक पांच पर्याप्ति व पांच अपर्याप्ति, दो दृष्टि, दो दर्शन दो, ज्ञान, व अज्ञान दो, योग दो, उपयोग दो, आहार छ दिशी का, तिर्यंच व मनुष्य में से उत्पन्न होवे परंतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच व अकर्म-भूमि व अंतरद्वीप के मनुष्य में से यहां नहीं उत्पन्न होते हैं, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, मारणांतिक समुद्घात से दोनों मरण मरते हैं, प्रश्न—यहां से नीकलकर कहां उत्पन्न होवे ? उत्तर—असंज्ञी मत्स्य में से नीकलकर नरक, तिर्यंच मनुष्य व देव यों चारों गति में उत्पन्न होते हैं नारकी में

अणतरं उन्वट्टिता कहिं उववज्जेज्जा ? नेरइएसुवि तिरिक्खजोणिएसुवि, मणुस्सेसुवि, देवेसुवि ॥ नेरइएसु रयणप्पहाए सेसेसु परिसेधो, तिरिएसु सव्वेसु उववज्जति, संखेज्ज-वासाउएसुवि असंखज्जवासाउएसुवि चउप्पएसवि, पक्खीएवि, माणुस्सेसु सव्वेसु कम्मभू-मिएसु नो अकम्मभूमिएसु, अतरदीवेसुवि, संखेज्जवासउएवि, असंखेज्जवासाउएसुवि, देवेसु जाव वाणमतरा, चउगतिया, दुआगतिया, परित्ता असंखिज्जा पण्णत्ता ॥ सेतं जल-यर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥२७॥ से किंत थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ? थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता

उत्पन्न होवे तो रत्नप्रभा में उत्पन्न होवे शेष नारकी में उत्पन्न होवे नहीं, तिर्यंच में उत्पन्न होवे तो संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले सब में उत्पन्न होवे, मनुष्य में उत्पन्न होवे तो कर्मभूमि, अकर्मभूमि अंतर्द्वीप व समूर्च्छिम मनुष्य संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले सब में उत्पन्न होवे देव में उत्पन्न होवे तो भवनपति व वाणव्यन्तर में उत्पन्न होवे क्यों कि असन्नी वहां तक ही उत्पन्न होते हैं इस से चार की गति व दो की आगति है ये असंख्यात हैं यह जलचर संमूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥२७॥ प्रश्न—स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं चतुष्पद स्थलचर समूर्च्छिम

तजहा—चउप्पद थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया, परिसप्प थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत थलयर चउप्पय समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? थलयर चउप्पय समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा—एकखुरा, दुखुरा, गंडीपदा, सण्णपदा जाव जेयावण्णे तहप्पगारा तेसमासतो दुविहा पन्नत्ता तजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तओ सरीरा, सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेण गाउय पुहुत्त, ठिति जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण चतुरासीति वाससहस्साइ, सेस जहा जलयराण जाव चउगतिया

तिर्यंच पचेन्द्रिय व परिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं यथा १ एक खुरवाले अश्वादि, २ दो खुरवाले गवादि, ३ गंडीपद गोल पांववाले हस्ति आदि और ४ सन्निपद सो पजे व नखवाले सिंह व्याघ्रादि इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं इन को तीन शरीर अवगाहना जघन्य अगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक गाउ, (कोस) स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चौरासी हजार वर्ष, शेष सब जलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय जैसे जानना यावत् चन की चार की

दुआगतिया,परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत्तं थलयर चउप्पद समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २८ ॥ सेकिंत थलयर परिसप्प समुच्छिमा ? थलयर परिसप्प समुच्छिमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा–उरपरिसप्प समुच्छिमा भुयगपरिसप्प समुच्छिमा॥ सेकिंत उरगपरिसप्प समुच्छिमा? उरगपरिसप्प समुच्छिमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा- अही अयगरा आसालिया, महोरगा ॥ से किंत अही? अही दुविहा पण्णत्ता तंजहा– दव्वीकरा, मउलिणोय ॥ से किंत दव्वीकरा,? दव्वीकरा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा आसीविसा, जाव सेत्तं दव्वीकरा ॥ सेकिंत मउलिणो ? मउलिणो अणेगविहा

गति व दो की आगति है वे परित्त असंख्यात हैं यह स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥ २८ ॥ प्रश्न—स्थलचर परिसर्प संमूर्च्छिम के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर परिसर्प समूर्च्छिम के दो भेद कहे हैं १ उरपरिसर्प व भुज परिसर्प समूर्च्छिम प्रश्न—उर परिसर्प संमूर्च्छिम तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—उर परिसर्प समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं तद्यथा १ अहि, २ अजगर, ३ असालिया, और ४ महोरग प्रश्न—अहि के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अही के दो भेद कहे तद्यथा—१ दर्विकर अर्थात् फणा करनेवाला और फण नहीं करने वाला प्रश्न—दर्वीकर के कितने भेद है ? उत्तर-दर्वीकर के अनेक भेद कहे हैं १ आशीविष,

पण्णत्ता तंजहा—दिव्वा, गोणसा जाव सेत मउलिणो ॥ सेत्तं अही ॥ सेकिंत अयगरा ? अयगरा एगागारा पण्णत्ता सेत अयगरा ॥ सेकिंत आसालिया ? आसालिया जहा पण्णवणाए ॥ सेत्तं आसालिया ॥ सेकिंत महोरगा ? महोरगा जहा पण्णवणाए ॥ सेत्त महोरगा ॥जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा

दृष्टिविष, उग्रविष, भोगविष त्वचाविष, लालाविष, श्वासविष, काला सर्प ऐसे अनेक भेद कहे हैं प्रश्न—अजगर के कितने भेद हैं ? उत्तर—अजगर का एक ही भेद है प्रश्न—आसालिया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—इस का कथन पन्नवणा में है वहां ऐसा कहा है कि आसालिया सर्प मनुष्य क्षेत्रमें उत्पन्न होवे परंतु इस से बाहिर उत्पन्न होता नहीं है कर्म भूमि क्षेत्र में कर्म भूमि पना प्रवर्तता होवे वहां उत्पन्न होता है चक्रवर्ती, वासुदेव या मडलिक राजा के पुण्य क्षीण हो गये होवे और उन के नामादिक का विनाश होने का होवे तब वहां आसालिया समूर्च्छिमपने उत्पन्न होता है उत्पत्ति समय उस की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग में होती है परंतु बढते २ बारह योजन की अवगाहना हो जाती है वह जमीन नीचे उत्पन्न होता है जब वह उलटता है तब वहां बडा खड्डा होता है जिस से चक्रवर्ति आदि नगर व सेना सहित नष्ट होजाते हैं इस की स्थिति अंत मुहूर्त की है प्रश्न—महोरग किसे कहते हैं ? उत्तर इस का विवेचन भी पन्नवणा सूत्र में है महोरग अढाइ द्वीप से बाहिर उत्पन्न होता है

पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तचेव णवर सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग, उक्कोसेण जोयण पहुत्त ॥ ठिति उक्कोसेण तेवण्ण वास सहस्साइं, सेसं जहा जलयराण, जाव चउगातिया, दुयागातिया, परिता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत उरपरिसप्पा ॥ २९ ॥ सेकिंत भुयपरिसप्प समुच्छिम थलयरा ? भुयपरिसप्प समुच्छिम थलयरा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा—गोहा, नउला, जेयावण्णे तहप्पगारा तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेणं धणु पुहुत्त ठिति उक्कोसेण

इस का शरीर उत्सेध अंगुल प्रमाण होता है यह जल स्थल सर्व स्थान में गमन कर सकता है इन चारों प्रकार के उरपरिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं इन का कथन जल चर समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे जानना शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक योजन, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेपन हजार वर्ष की शेष सब जलचर जैसे यावत् चार की गति व दो की आगति जानना वे परित असंख्याते कहे हैं यह उरपरिसर्प का कथनहुवा ॥२९॥ प्रश्न—भुजपरिसर्प समूर्च्छिम स्थलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—भुजपरिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-गो, नकुल, घुस चूहे, गिलहरी और इस

चोयालीस वाससहस्साइ सेस जहा जलयराणं जाव चउगतिया दुयागतिया, परित्ता असं-खेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत्त भुयपरिसप्प समुच्छिमा॥सेत थलयरा ॥२०॥ सेकिंत खहयरा? खहयरा चउव्विहा पण्णत्ता तजहा चम्मपक्खी,लोमपक्खी,समुग्गपक्खी विततपक्खी ॥ से किंत चम्मपक्खी ? चम्मपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता तजहा वग्गुलि जाव जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्त चम्मपक्खी ॥ से किंत लोमपक्खी ? लोमपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता तजहा—ढका कंका जाव जेयावण्णे तहप्पगारा, सेत्त लोमपक्खी ॥ सेकिंत समुग्गपक्खी ? समुग्गपक्खी एगागारा पण्णत्ता जहा पण्णवणाए ॥ एव

प्रकार के अन्य सब भुज परिसर्प स्थलचर हैं इन के दो भेद कहे हैं-पर्याप्त व अपर्याप्त इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ४२हजारवर्ष की, शेष सब जलचर जैसे जानना यावत् चार गति व दो आगति यह परित्त असंख्यात हैं यह भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥२॥ प्रश्न—खेचर के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—खेचर के चार भेद कहे हैं तद्यथा १ चर्म पक्षी चर्मकी पांखवाले, २रोम पक्षी राम(बाल)की पांखवाले, समुद्रपक्षी मीडी हुई पांखवाले और वितत पक्षी खुली पांखवाले प्रश्न—चर्म पक्षी किस को कहते हैं? उत्तर—१ चर्म पक्षी के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा चमचाडी वग्गुली व इसप्रकार के अन्य भी होते हैं२ रोम पक्षी के भी

वीततपक्खी, जाव जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा-- पज्जत्ताय अपज्जत्ताय, णाणत्त सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेजइ भाग उक्कोसेण धणु पुहुत्त, ठिति उक्कोसेण बावत्तरि वाससहस्साइ सेस जहा जलयराण जाव चउगतिया दुयागतिया ॥ परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेत्त खहयरा समुच्छिमा पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेतं समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २० ॥ सेकिंतं गब्भवक्कंतिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? गब्भवक्कंतिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा थलयरा खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा?

अनेक भेद कहे हैं—ढेंक, केक, और इस प्रकार के अन्य पक्षी, प्रश्न—१ समुद्र पक्षी किसे कहते हैं ? उत्तर—समुद्र पक्षी का एक ही प्रकार है यह पक्षी अढाइद्वीप की बाहिर होता है इस का कथन पन्नवणा सूत्र में कहा हुवा है और वितत पक्षी का अधिकार भी पन्नवणा सूत्र में कहा है इस के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त विशेष में इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट ७२ हजार वर्ष शेष सब जलचर जैसे कहना यावत् चार गति व दो आगति मानना यह परित्त असंख्यात हैं यह खेचर समूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय

जलयरा पंचविहा पण्णत्ता तजहा—मच्छा कच्छभा मगरा गाहा सुसुमारा, सव्वेसिं भेदो भाणियव्वो तहेव जहा पण्णवणाए जाव जेयावण्णे, तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पण्णत्ता तजहा—उरालिए, वेउव्विते, तेयए, कम्मए ॥ सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेणं जोयण सहस्स, छव्विह संघयणी पण्णत्ता तजहा वइरोसभणाराय संघयणी, उसभनाराय संघयणी, नाराय संघयणी, अद्धनाराय

का अधिकार हुवा यह समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥१०॥ प्रश्न—गर्भ में उत्पन्न होने वाले तिर्यंच के कितने भेद हैं ? उत्तर-गर्भज के तीन भेद कहे हैं तद्यथा-१ जलचर २ स्थलचर ३ खेचर प्रश्न—जलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर जलचर के पांच भेद कहे हैं मत्स्य, कच्छ, मगर, गाह व सुसुमार यों सब भेद पन्नवणा में कहा वैसे ही जानना यावत् इनके दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों चार शरीर कहे हैं तद्यथा १ औदारिक, २ वैक्रेय, ३ तेजस व ४ कार्मण इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग में उत्कृष्ट एक

सघयणी, कीलिया सघयणी, सेवट्ट सघयणी ॥ छव्विह सठणीया पण्णत्ता तजहा— समचउरस संठिया, नग्गोह परिमडले, साति, खुज्ज, वामणे, हुडे,॥ चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णातो, छलेसातो, पंच इदिया, पंच समुग्घाया आइल्ला,सन्नी नो असण्णी, तिविहावेदावि,पज्जत्तीतो अपज्जत्तीतो,दिट्ठि तिविहा, तिण्णि-दंसणा णाणीवि अण्णावि, जेणाणी ते अत्थेगतिया दुणाणी अत्थगतिया तिणाणी, जे दुणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी जे तिण्णाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणीय ॥ एव अण्णाणीवि ॥ जोगेतिविहे, उवआगे दुविहे, आहारो छदिसिं,

हजार योजन, वज्र ऋषभ नाराच वगैरह छ संघयन, समचतुस्रादि छे सस्थान, चार कषाय, चार संज्ञा, छ लेश्या, पांचों इन्द्रियों पहिली, पांच समुद्घात, संज्ञी है परतु असंज्ञी नहीं है, तीनों वेद, छ पर्याप्ति, छ अपर्याप्ति, दृष्टि तीन, केवल दर्शन सिवाय दर्शन तीन, ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं ज्ञानी में कितनेक दो ज्ञानवाले व कितनेक तीन ज्ञानवाले हैं जिन को दो ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान है और जिन के तीन ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुत ज्ञान व अवधि ज्ञान ऐसे तीन ज्ञान हैं, ऐसे ही तीन अज्ञान का जानना, मन वचन व काया ऐसे तीनों योग हैं, दोनों प्रकारके उपयोग हैं, छ दिशी का आहार करते हैं प्रथम नारकी में यावत् सातवी नारकी में से, असंख्यात वर्ष के

उव्वातो नेरइतेहिं जाव अहेसत्तमा,पुढवीसु, तिरिक्खजोणिएसु सव्वेसु, असंखे-
ज्जवासाउयवज्जेसु, मणुस्सेसु अकम्मभूमग अंतरदीवग, असंखेज्ज वासाउयवज्जेसु,
देवेसु जाव सहस्सारा ठिती—जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसण पुव्वकोडी,दुविहावि मरंति
अणंतर उव्वट्टित्ता, नेरइतेसु जाव अहे सत्तमा तिरिक्ख जोणिएसु मणुस्सेसु, सव्वेसु
देवेसु जाव सहस्सारो॥चउगतिया चउआगतिया,परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत जलयरा
॥२१॥से किंतं थलयरा? थलयरा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—चउप्पया, परिसप्पया ॥ से
किंतं चउप्पया ? चउप्पया ! चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—एगखुरा, सोचव भेदो जाव

आयुष्यवाले तिर्यंच छोडकर शेष सब तिर्यंच अकर्मभूमि, अंतर द्वीप व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य छोडकर सब मनुष्य और सहस्रार देवलोक पर्यंत के सब देवों में से आकर उत्पन्न होते हैं स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड दोनों प्रकार मरते हैं, वहां से नीकलकर प्रथम नारकी से सातवी नारकी, सब तिर्यंच, सब मनुष्य व सहस्रार देवलोक के पर्यंत सब देवलोक में जाते हैं, चार गति व चार आगति प्रत्येक असंख्याते हैं यह जलचरका स्वरूप हुवा ॥ २१ ॥ प्रश्न—स्थलचर किसे कहते हैं ? उत्तर—स्थलचर के दो भेद कहे हैं चतुष्पद व परपरिसर्प प्रश्न—चतुष्पद के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुष्पद के चार भेद वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे जानना, यावत् इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे

जेयाव्वण्णे तहप्पगारे ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ चत्तारि सरीरगा ॥ ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेण छ गाउयाइ,ठिति उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ ॥ णवर उव्वट्टित्ता नेरइएसु चउत्थ पुढवि, ताव गच्छति सेस जहा जलयराण जाव चउगतिया चउ आगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सत्त चउप्पया ॥ से किंत परिसप्पा ? परिसप्प ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—उरपरिसप्पाय भुजपरिसप्पाय ॥ से किंत उरपरिसप्पाय ? उरपरिसप्पाय च आसालिया चउो भेदो भाणियव्वो ॥ चउ सरीरा सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स

के भेद कहे हैं इन को चार शरीर, अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट छ गाउ की, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम स्थलचर मरकर चौथी नारकी तक उत्पन्न हो सकते हैं शेष सब जलचर जैसे जानना यावत् चार गति व चार आगति जानना परित्त असंख्यात कहे हुए हैं यह चतुष्पद का कथन हुआ प्रश्न—परिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—परिसर्प के दो भेद कहे हैं उरपरिसर्प व भुज परिसर्प, इन में से उर परिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उर परिसर्प में आसालिया पर्यंत सब भेद जानना, इन को चार शरीर, इन की अवगाहना जघन्य अंगुल का

असंखेज्जइ भाग उक्कोसेण जोयण सहस्स, ठिति—जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं; उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उव्वट्टिता नेरइएसु जाव पचमि पुढवि ताव गच्छति, तिरिक्खमणुस्सेसु सव्वसु देवेसु जाव सहस्सारा, सेस जहा जलयराण, जाव चउगतिया, चउ आगतिया, परित्ता असंखेज्जा सेत उरपरिसप्पा ॥ ३२ ॥ से किंत भुयपरिसप्पा ? भुयपरिसप्पा भेदो तहेव चत्तारि सरीरगा सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेण गाउयपुहुत्त, ठिति—जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी, सेसेसु ठाणेसु जहा उरपरिसप्पा, णवर दोच्च पुढविं ताव गच्छति ॥ सेत भुयपरिसप्पा ॥

असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट क्रोड पूर्व, उर परिसर्प का नीकला हुवा पांचवी नारकी तक जा सकता है, शेष सब जलचर जैसे यावत् चार गति व चार आगति वाले हैं, वे परित्त असंख्याते हैं यह उरपरिसर्प का कथन हुवा ॥ ३२ ॥ प्रश्न—भुजपरिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? भुज परिसर्प के भेद वगैरह सब पूर्वोक्त भनजी जैसे जानना, यावत् इन के पर्याप्त व अपर्याप्त वैसे दो भेद कहे हैं, इन को चार शरीर, शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, भुजपरिसर्प मरकर दूसरी नारकी तक जाते हैं शेष उर परिसर्प जैसे कहना यावत् चार गति में से आवे व चार गति में

सेंत थलयर ॥३३॥ सेकिंत खहयरा ? खहचरा चउव्विहा पण्णत्ता तजहा चम्मपक्खी तहेव, भेदो भाणियव्वो ॥ ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेण धणुपुहुत्त, ठिति जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जति भागो, सेस जहा जलयराण णवरं जाव तच्च पुढविं गच्छति जाव सेत खहयर गब्भवक्कतिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, सेत्त तिरिक्खजोणिया ॥ ३४ ॥ सेकिंत मणुस्सा ? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता तजहा—समुच्छिम मणुस्सा, गब्भवक्कतिय मणुस्सा भेदो

जाने वे परिसर्प असख्याते हैं यह भुजपरिसर्प का कथन हुवा ये स्थलचर के भेद हुए ॥ ३३ ॥ प्रश्न—खचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर खेचर के चार भेद कहे हैं जिन के नाम-चर्म पक्षी, २ रोमपक्षी, ३ समुद्र पक्षी व ४ वितत पक्षी वगैरह सब कथन पूर्वोक्त जैसे जानना अवगाहना जघन्य अगुलका असख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपमका असख्यातवा भाग शेष सब जलचर जैसे जानना, परतु खेचर में से मरकर जीव तीसरी पृथ्वी तक ही जा सकता है, यह गर्भज खेचर तिर्यंच पचेन्द्रियका कथन हुवा यह तिर्यंच पंचेन्द्रियका अधिकार हुवा॥३४॥प्रश्न-मनुष्यके कितने भेद कहे हैं? उत्तर मनुष्य के दो भेद कहे हैं, तद्यथा १ समूर्च्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य, इन का सब भेद जैसे पन्नवणा में कहे वैसे ही यहां

जहा पण्णवणा ते तहा निरवसेसं भाणियव्व जाव छउमत्थाए केवलीया॥तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते जीवाणं कतिसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचसरीरा पण्णत्ता तंजहा-ओरालिते जाव कम्मते ॥ सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिण्णि-गाउयाइं, छव्विह संघयणी, छव्विह संठिया ॥ तेणं भंते ! जीवा किं कोहकसायी जाव लोभकसायी अकसायी ? गोयमा ! सव्वेवि ॥ तेणं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव णो सण्णोवउत्ता ? गोयमा ! सव्वेवि तेणं भंते ! जीवा किं

मानना, यावत् छद्मस्थ केवली पर्यंत कहना, इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों को पांच शरीर कहे हैं, औदारिक, वैक्रेय, आहारक, तेजस व कार्मण इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट तीन गाउ की, छ संघयन, छ संस्थान, प्रश्न—वे जीवों क्या क्रोध कषायी यावत् लोभ कषायी व अकषायी है ? उत्तर वे जीवों क्रोध कषायी भी हैं यावत् अकषायी भी हैं, प्रश्न-वे जीवों क्या आहार संज्ञी यावत् नो संज्ञी हैं ? उत्तर व जीवों आहार संज्ञी भी है यावत् नो संज्ञावाले भी हैं, प्रश्न-वे जीवों क्या कृष्ण लेशी यावत् अलेशी है ? उत्तर—वे जीवों कृष्ण लेशी यावत् अलेशी भी है, प्रश्न—वे जीवों क्या सम्मदृष्टि यावत् अने-

किण्हलेसा जाव अलेसा ? गोयमा ! सव्वेवि ॥ सइंदिओवउत्ता जाव नो इंदिओ वउत्तावि ॥ सत्तसमुग्घाया पण्णत्ता तंजहा-वेयणा समुग्घाते जाव केवलीसमुग्घाते, सण्णीवि नो सण्णी नो असण्णीवि ॥ इत्थिवेदावि जाव अवेदावि ॥ पंचपज्जत्ती पंचअपज्जत्ती, तिविहा दिट्ठी, चत्तारिदंसणा ॥ णाणीवि अण्णाणीवि, जेणाणी अत्थेगतिया दुणाणी, अत्थेगतिया तिणाणी, अत्थगतिया चउणाणी, अत्थगतिया एगणाणी जे दुणाणी ते नियमा अभिणिबोहियणाणीय, सुयणाणीय; जे तिणाणी ते अभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणीय, अहवा अभिणिबोहियणाणी सुयणाणी

न्द्रिय है ? उत्तर-वे जीवों सइन्द्रिय भी हैं यावत् अनेन्द्रिय भी है, उन जीवों को वेदनीय से केवली पर्यंत सातों समुद्घात कहे हैं अर्थ असंज्ञी व नो संज्ञी नो असंज्ञी हैं, वे जीवों स्त्री वेदी भी हैं यावत् अवेद भी हैं, तीनों दृष्टि हैं, चार दर्शन हैं वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं जो ज्ञानी हैं उन में से कितनेक को दो ज्ञान, कितनेक को तीन ज्ञान, कितनेक को चार ज्ञान और कितनेक एक ज्ञान है जिन को दो ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक व श्रुत ज्ञान है तीन ज्ञानवाले को आभिनिबोधिक, श्रुत व अवधि ज्ञान अथवा आभिनिबोधिक श्रुत व मनःपर्यव ज्ञान हैं, चार ज्ञानवाले को आभिनिबोधिक, श्रुत, अवधि व मनःपर्यव ज्ञान है और एक ज्ञानवाले को केवल ज्ञान है. ऐसे ही अज्ञानी में कितनेक दो अज्ञानवाले व कितनेक तीन

मणपज्जवणाणीय,जे चउणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणीय,जे एगणाणी ते नियमा केवलणाणी ॥ एव अण्णाणीवि दुअण्णाणी तिअण्णाणी ॥ मण जोगीवि वइजोगीवि कायजोगीवि अजोगीवि, दुविहो उवओगो आहारोछदिसिं, उववातो नेरइएहिं अहसत्तम वज्जेहिं, तिरिक्खजोणिएहिं, तेउवाउ असंखेज्ज वासाउअवज्जेहिं, मणुस्सेहिं अकम्म भूमिग अतरदीवग, असंखेज्जवासा-उयवज्जेहिं, देवेहिं सव्वेहिं, ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओ-वमाइ, दुविहा विमरति उव्वट्टित्ता नेरइयाइसु जाव अणुत्तरोववाईएसु, अत्थेगतिया

अज्ञानवाले हैं योग में मन योग,वचन योग,काया योग तीनो योग वाले भी हैं व अयोगी भी है उपयोग दोनों प्रकार का, आहार छही दिशि का, उपपात-सातवी नारकी छोडकर शेष सब नारकी में से,तेउ,वायु व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय छोडकर शेष सब तिर्यंच, अकर्मभूमि, अंतर द्वीप व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य छोडकर सब मनुष्य में और सब देव में से नीकलकर मनुष्य होते हैं स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की, दोनों प्रकार के मरण मरते हैं, यहां से नीकलकर नारकी यावत् अनुत्तरोपपातिक देव में उत्पन्न होवे हैं और कितनेक सीझते हैं, बुझते हैं यावत् सब दुःखों का

सिज्झति जाव अतकरेंति ॥ तेण भते ! जीवा कतिगइया कातिआगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पचगतिया.चउआगतिया परित्तासखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत मणुस्सा ॥३५॥ सेकिंत देवा ? देवा ! चउव्विहा पण्णत्ता ,तजहा—भवणवासी वाणमतरा जोइसा वेमाणिया,सेकिंत भवणवासी?भवणवासी दसविहा पण्णत्ता तजहा-असुरकुमारा जाव थणिय कुमारा ॥ सेत भवणवासी ॥ सेकिंत वाणमंतरा ? वाणमतरा देवभेदो सव्वो भाणियव्वो, जावते समासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥

अंत करते हैं, प्रश्न—इन जीवों की कितनी गति व कितनी आगति कही ? उत्तर—इन जीवों को पांच गति व चार आगति है, मनुष्य संख्याते कहे हैं यह मनुष्य का कथन हुवा ॥ ३५ ॥ प्रश्न—देव के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—देव के चार भेद कहे हैं भवनवासी, वाणव्यतर, ज्योतिषी व वैमानिक प्रश्न-भवनवासी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-भवनवासी के दश भेद कहे हैं असुर कुमार यावत् स्तनित कुमार, प्रश्न—वाणव्यतर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—वाणव्यतर ज्योतिषी व वैमानिक सब देव का कथन करना यावत् इन के दो भेद पर्याप्त व अप-पर्याप्त प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इनजीवों को वैक्रेय, तेजस व कार्माण एसे तीन

तेसिण भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा-वेउव्विये, तेयते, कम्मए ॥ उगाहणा दुविहा-भवधारणिज्जाय, उत्तरवेउव्वियाय, तत्थण जासा भवधारणिज्जासा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जभाग उक्कोसेणं सत्तरयणी, उत्तर वेउव्विया जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जति भाग उक्कोसेण जोयण सतसहस्सं ॥ सरीरगा छण्हं संघयण असंघयणा, णेवट्ठि णेवछिरा णेवण्हारू नेव

शरीर कहे हैं अवगाहना के दो भेद भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय, इस में से भवधारनीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात हाथ उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक लाख योजन इन को छ संघयन में से एक भी संघयन नहीं है क्यों कि इस को हड्डी, शिरा नसे व संघयन नहीं हैं परंतु जो इष्ट कंत वगैरह पुद्गलों हैं वे संघयनपने परिणमते हैं प्रश्न—उन जीवों को कौनसा संस्थान है ? उत्तर—उन जीवों के संस्थान के दो भेद कहे हैं भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय उस में भवधारनीय को समचतस्र संस्थान है और उत्तर वैक्रेय का संस्थान विविध प्रकार का है, इन को चार कषाय, चार संज्ञा, छ लेश्या, पांच इन्द्रियों, पांच समुद्घात है भवनपति वाणव्यंतर में संज्ञी असंज्ञी दोनों और ज्योतिषी वैमानिक में संज्ञी, वेद दो स्त्रीवेद व पुरुष वेद भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व

ण मत्थि, जे पोग्गला इट्ठा कता जीव तेसिं सघायताये परिणमति ॥ तेसिणं भते ! जीवाणं किं सठिया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय॥तत्थणं जेते भवधारणिज्जा तेणं समचउरस सठिया पण्णत्ता, तत्थणं जेते वेउव्विया तेणं णाणा सठाण सठिया पण्णत्ता चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णा छ-लेसाओ, पचइंदिया, पंचसमुग्घाया, सण्णीवि असण्णीवि, इत्थिवेदावि पुरिसवेदावि, नो नपुंसगवेदा, पज्जत्तापज्जत्तीओ पच, दिट्ठि तिविहा, तिन्निदसणे॥नाणीवि अन्नाणीवि जे नाणी ते नियमा तिनाणी, अन्नाणी भयणाए, दुविहा उवओगे, तिविहा जोगे आहारो नियमाछद्दिसिं, उसण्णकारण पडुच्च वण्णओ हालिद्द सुक्किलाइ जाव आहार

पहिला दूसरा देवलोक पर्यंत दोनों वेद, आगे एक वेद पांच पर्याप्ति, दृष्टि तीन, केवल दर्शन वर्ज कर तीन दर्शन, ये जीवों ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं, जो ज्ञानी है वे आभिनिबोधिक, श्रुत व अवधि ज्ञानी है, और अज्ञानी हैं उनको मति, श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान की भजना (क्योंकि असंज्ञी उत्पन्न होते हैं जब लग पर्याय पूर्ण नहीं करते हैं तब लग मात्र दो अज्ञान ही होते हैं,) दोनों प्रकार के उपयोग, तीनों योग हैं, नियमा छ दिशी का आहार करे, स्वाभाविक कारन से वर्ण से पीला शुक्ल का यावत् प्रहार करे तिर्यंच व मनुष्य में ये आठवे देवलोक तक उत्पन्न होवे, उपर एक मनुष्य ही उत्पन्न होवे,

माहारंति, उववातो तिरियमणुस्सेसु, ठिति जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ दुविहावि मरंति, उव्वट्टिया णो णरइएसु गच्छंति तिरियमणुस्सेसु जहा संभवं नो देवेसु गच्छति, दुगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेतं देवा ॥ सेत्त पंचेंदिया ॥ सेत्त उराला तसापाणा ॥ २६ ॥ तस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ थावरस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसवाससहस्साइं ठिति

स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम दोनों प्रकार के मरण मरते हैं वहां से नीकलकर नारकी व देवमें नहीं उत्पन्न होते हैं, परंतु तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं आठवा देवलोक में से नीकलकर तिर्यंच होते हैं इन की दो गति व दो आगति है वे असंख्याते हैं यह देवका भेद हुवा यों पंचेन्द्रिय का कथन हुवा और यह उदारिक त्रस प्राणियों का कथन संपूर्ण हुवा ॥ २६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! त्रस जीवों की कितनी स्थिति कही? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही यह एक भव आश्री ग्रहण की है प्रश्न स्थावर की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-स्थावर

पण्णत्ता ॥ २७ ॥ तस्सणं भंते ! तस्सत्ति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण असंखेज्जकाल असंखेज्जाओ उसप्पणि उसप्पिणिओ कालतो, खेत्तो असंखेज्जा लोगा ॥ थावराण भंते! थावरेत्ति कालतो केवच्चिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण अणतकाल अणताओ उस्सप्पिणीओव सप्पिणीओ, कालतो खेत्तता अणता लोगा, असंखेज्जा पोग्गल परियट्टा, तेण पुग्गल परियट्टा आवलियाए असंखेज्जति भागे ॥ २८ ॥ तसस्सण भंते ! केवति काल

की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की स्थिति है ॥२७॥प्रश्न-अहो भगवन्! त्रस त्रसपने में कितना कालतक रहे ? उत्तर अहो गौतम ! त्रस त्रस में जघन्य अंत मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल, असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी, क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश प्रमाण रहे प्रश्न-अहो भगवन् ! स्थावर, स्थावर में कितना काल तक रहे ? उत्तर अहो गौतम ! स्थावर, स्थावर में जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल, अनंत अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी, क्षेत्र से अनंत लोकाकाश, असंख्यात पुद्गल परावर्त ये पुद्गल परावर्त आवलिका के असंख्यातवे भाग के समय जितने जानना ॥ २८ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! काल से त्रस का अंतर कितना कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना प्रश्न-

माहारंति, छम्मासो तिरियमणुस्सेसु, ठिति जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ दुविहावि मरंति, उव्वट्टिया णो णेरइएसु गच्छंति तिरियमणुस्सेसु जहा संभवं नो देवेसु गच्छंति, दुगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेत्तं एवं ॥ सेत्तं पंचेंदिया ॥ सेत्तं उराला तसापाणा ॥ २६ ॥ तस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ थावरस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसवाससहस्साइं ठिति

स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम दोनों प्रकार के मरण मरते हैं वहां से नीकलकर नारकी व देवमें नहीं उत्पन्न होते हैं, परंतु तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं आठवा देवलोक में से नीकलकर तिर्यंच होते हैं इन की दो गति व दो आगति है वे असंख्याते हैं यह देवका भेद हुआ यों पंचेन्द्रिय का कथन हुआ और यह उदारिक त्रस प्राणियों का कथन संपूर्ण हुआ ॥ २६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् त्रस जीवों की कितनी स्थिति कही? उत्तर अहो गौतम! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही यह एक भव आश्री ग्रहण की है प्रश्न-स्थावर की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-स्थावर

॥ द्वितीया प्रतिपत्ति. ॥

तत्थ जेते एव माहसु तिविधाससार -समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, ते एव माहसु इत्थी पुरिसा णपुसगा ॥ १ ॥ सेकिंत इत्थीओ ? इत्थीओ तिविहा पण्णत्ताओ तजहा तिरिक्खजोणित्थीओ, मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ ॥२॥ सेकिंत तिरिक्खजोणित्थीओ ? तिरिक्खजोणित्थीओ ति विधाओ पण्णत्ताओ तजहा जलयरीओ, थलयरीओ, खहयरीओ, सेकिंत जलयरीओ ? जलयरीओ पंचविहाओ पण्णत्ताओ तजहाओ मच्छीओ जाव सुसुमारीओ, सेत जलयरीओ॥३॥सेकिंत थलयरीओ? थलयरीओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा चउप्पदीओ परिसप्पिणीओय॥ सेकिंत चउप्पदीओ? चउप्पदीओ चउव्विहाओ

जो आचार्य ऐसा कहते हैं कि तीन प्रकार के संसार समापन्नक जीव हैं वे इस प्रकार कहते हैं तद्यथा-स्त्री, पुरुष व नपुंसक ॥ १ ॥ प्रश्न-स्त्री के कितने भेद् कहे हैं ? उत्तर स्त्री के तीन भेद कहे हैं तिर्यंच स्त्री, मनुष्य स्त्री व देव स्त्री ॥ २ ॥ प्रश्न-तिर्यंच स्त्री के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर तिर्यंचणी के तीन भेद कहे हैं जलचरी, स्थलचरी व खेचरी प्रश्न जलचरी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-जलचरी के पांच भेद कहे हैं मच्छी यावत् सुसुमारी यह जलचरी के भेद हुए ॥ ३ ॥ प्रश्न स्थलचरी किसे कहते हैं? उत्तर स्थलचरी के दो भेद कहे हैं तद्यथा चतुष्पदी व परिसर्पिणी प्रश्न चतुष्पदी किसे कहते हैं? उत्तर

अतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो ॥ थावर-स्सण भते ! केवतिय काल अतर होति ? जहा तस्स संचिट्ठणाए ॥ ३९ ॥ एतेसिण भते! तसाणं थावर णय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसा, थावरा अणंतगुणा ॥ सेत्त दुविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता दुविहा पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ १ ॥ () () ()

अहो भगवन् ! स्थावर का कितना अतर कहा ? उत्तर अहो गौतम ! स्थावर का अतर त्रस की स्थिति जितना है ॥ ३९ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इन त्रस व स्थावर में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे त्रस हैं उस से स्थावर अनंतगुने अधिक है यह दो प्रकार के संसार समापन्नक जीवों का वर्णन हुवा यह दो प्रकार के जीव की पहिली प्रतिपत्ति कही ॥ १ ॥

खहयरीओ? खहयरीओ चउव्विह पण्णत्ताओ तजहा-चम्म पक्खीओ जाव सेत्त खहयरीओ॥ सेत्त तिरिक्खजोणित्थीयाओ॥५॥ सेकिंतं मणुस्सत्थियाओ ? मणुस्सत्थियाओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तजहा-कम्मभूमियाओ, अकम्मभूमियाओ, अतरदीविया ओ ॥ सेकिंत अतर दीवियाओ? अंतरदीवियाओ अट्ठावीसतिविहाओ पण्णत्ताओ तजहा-एगरुईओ, आभा-सीओ जाव सुद्धदंताओ सेत्तं अतरदीवे॥सेकिंत अकम्मभूमियाओ?अकम्मभूमियाओ ती-सति विधाओ पण्णत्ताओ तजहा-पचसु हेमवएसु,पचसु एरण्णवएसु,पचसुहरीवासेसु, पचसु रम्मगवासेसु पचसु देवाकुरुसु पचसु उत्तरकुरुसु, सेत्त अकम्मभूमग, मणुस्सीओ ॥ सेकिंतं

इत्यादि यह भुज परिसर्प के भेद जानना ॥४॥प्रश्न-खेचरी किसे कहते हैं? उत्तर-खेचरी के चार भेद कहे हैं, तद्यथा१-चर्म पक्षिणी, २रोम पक्षिणी, ३समुद्ग पक्षिणी व ४ वितत पक्षिणी यों यह खेचरी के भेद हुए॥५॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री किसे कहते हैं ! उत्तर-मनुष्य स्त्री के तीन भेद कहे हैं कर्म भूमि की, अकर्म भूमि की व अंतर द्वीप की उत्पन्न हुई प्रश्न-अंतर द्वीप की स्त्रियों किसे कहते हैं ! उत्तर अंतर द्वीप की स्त्रियों के अट्ठाइस भेद कहे हैं तद्यथा-एक रूप द्वीप की स्त्रियों यावत् शुद्ध दंत द्वीप की स्त्रियों, यह अंतर द्वीप की स्त्रियों का कथन हुआ प्रश्न अकर्म भूमि की स्त्रियों किसे कहते हैं ! उत्तर-अकर्म भूमि की स्त्रियों के तीस भेद कहे हैं तद्यथा पांच हेमवय,पांच एरणवय, पांच हरिवास,पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु व पांच

पण्णत्ताओ तंजहा एगखुरीओ जाव सणप्फइओ। सेकिंतं परिसप्पीओ? परिसप्पीओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-उरगपरिसप्पिणीओय भुयपरिसप्पीणीओय सेकिंत उरगपरिसप्पिणीओ उरग परिसप्पिणीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-अहीओ आयगरीओ महोरगीओ, सेत्तं उरपरिसप्पिणी ॥ सेकिंतं भुजपरिसप्पिणीओ? भुजपरिसप्पिणीओ अणगविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-गोहीओ, णउलीओ, सेधाओ, सेल्लाओ, सेरडीओ, सेरिंधीओ, सावाओ, खराओ, पंचलोइयाओ, चउप्पइयाओ, मूसियाओ, सुसुसियाओ, घरोलियाओ, गोहियाओ, जोहियाओ, थिरावलियाओ सेत्तं भुयपरिसप्पीओ॥४॥ सेकिंतं

चतुष्पदी के चार भेद कहे हैं १ एक खुरवाली घोडी इत्यादि २ दो खुरवाली गाय भैंस इत्यादि ३ गंडीपदी गोल पाँववाली हथनी इत्यादि और सनखपदी नखवाली सिंहनी इत्यादि प्रश्न परिसर्पिनी किसे कहते हैं? उत्तर परिसर्पिनी के दो भेद कहे हैं उरपरिसर्पिनी व भुजपरिसर्पिनी प्रश्न-उर परिसर्पिनी किसे कहते हैं? उत्तर उर परिसर्पिनी के तीन भेद कहे हैं सर्पिणी, अजगरी व महोरगी यह उर परिसर्पिनी हुई, प्रश्न-भुजपरिसर्पिनी किसे कहते हैं? उत्तर भुज परिसर्पिनी के अनेक भेद कहे हैं गोही, नकुली, रोहिनी, सल्ल यनी, कावरीयों, सेरंधियों, साविचों, खारेचों, चतकेई, छरती, चतोली

वाणमतर देवित्थियाओ अट्ठविहाओ पण्णत्ताओ तजहा पिसाय वाणमतर देवित्थियाओ जाव सेत्त वाणमतर देवित्थियाओ॥सेकित जोतिसिय देवित्थियाओ? जोतिसियदेवित्थियाओ पचविहाओ पण्णत्ताओ तजहा—चद विमाणजातिसिदेवित्थियाओ, सूरविमाण देवित्थियाओ, गहविमाण देवित्थियाओ, णक्खत्तविमाण देवित्थियाओ, ताराविमाण जोतिसिय देवित्थियाओ, सेत्त जोतिसिय देवित्थियाओ ॥ सेकित वेमाणिय देवित्थियाओ ? वेमाणिय देवित्थियाओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तजहा—सोहम्मकप्प वेमाणिय देवित्थियाओ, ईसाणकप्प वेमाणिय देवित्थियाओ, सेत्त विमाणित्थिओ ॥७॥ इत्थीण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एगेण आएसेण जहन्नेण अतोमुहुत्त

देव की स्त्रियों यह वाणव्यतर के भेद हुए प्रश्न-ज्योतिषी देव स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-ज्योतिषी देव स्त्रियों के पांच भेद कहे हैं तद्यथा १ चंद्र विमान ज्योतिषीकी स्त्री २ सूर्य विमान ज्योतिषीकी स्त्री, ३ ग्रह विमान ज्योतिषी की स्त्री, ४ नक्षत्र विमान ज्योतिषीका स्त्री, ५ व तारा विमान ज्योतिषीकी स्त्री प्रश्न वैमानिक देवकी स्त्रियों किसे कहते हैं? उत्तर-वैमानिक देव स्त्रियोंके दो भेद कहे हैं तद्यथा-१ सौधर्म देवलोक के वैमानिक देवकी व २ ईशान देवलोक के वैमानिक देवकी स्त्री यह वैमानिक देवकी स्त्री का कथन हुआ॥७॥प्रश्न अहो भगवन्! स्त्री वेदकी कितने कालकी स्थिति कही? उत्तर-अहो गौतम! जघन्य अन्तर्मुहूर्तकी तिर्यंच व मनुष्य स्त्री आश्री उत्कृष्ट पचावन

कम्मभूमियाओ ? कम्मभूमियाओ पण्णरसविहाओ पण्णत्ताओ तजहा—पचसुभरहेसु, पचसुएरवएसु, पचसुमहाविदेहेसु, सेतं कम्मभूमगमणुस्सीओ ॥ सेत्त मणुस्सीओ ॥५॥ सेकिंत देवित्थियाओ? देवित्थियाओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ तजहा—भवनवासिदेवित्थियाओ,वाणमतर देवित्थियाओ जोतिसि देवित्थियाओ,वेमाणिय देवित्थियाओ सेकिंत भवणवासि देवित्थियाओ ? भवणवासि देवित्थियाओ दसविधाओ पण्णत्ताओ तजहा—असुरकुमार भवणवासि देवित्थियाओ जाव थणितकुमार भवणवासिदेवित्थियाओ सेत भवणवासिदेवित्थियाओ ॥ सेकिंत वाणमतर देवित्थियाओ?

उत्तर कुरु की स्त्रियों यह अकर्म भूमि की स्त्रियों का कथन हुवा प्रश्न-कर्म भूमि की स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर कर्म भूमि की स्त्रियों के पनरह भेद कहे हैं पांच भरत, पांच एरवत व पांच महा विदेह यह कर्म भूमि की स्त्रियों का कथन हुवा यह मनुष्यणी का भेद हुवा ॥५॥ प्रश्न-देव स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-देव स्त्रियोंके चार भेद कहे हैं तद्यथा १ भवनवासी,२ वाणव्यतर,३ ज्योतिषी व ४ वैमानिक स्त्रियों प्रश्न भवनवासीनी किसे कहते हैं ? उत्तर भवनवासीनी देव स्त्रियों के दश भेद कहे हैं, असुर कुमार भवनवासी की स्त्री यावत् स्तनित कुमार भवनवासी की स्त्री प्रश्न वाणव्यतर देव की स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-वाणव्यतर देव की स्त्रियों के आठ भेद कहे हैं पिशाच वाणव्यतर देव की स्त्रियों यावत् गंधर्व वाणव्यतर

भते ! केवइयं कालं ठिइपण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी एवं भुयपरिसप्पि ॥ खहयर तिरिक्ख जोणित्थीण जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जति भागो ॥ ९ ॥ मणुस्सित्थीण भंते ! केवतिय कालं ठिती पण्णत्ता ? खेत्तं पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्त, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, कम्मभूमग मणुस्सित्थीणं भंते ! केवतिय कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त

तिर्यंचनी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-चतुष्पद स्थलचर तिर्यंचनी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की प्रश्न-उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंचनी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही भुज परिसर्प तिर्यंचनी की जानना खेचर तिर्यंचनी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग ॥ ९ ॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम क्रोड पूर्व प्रश्न-कर्म भूमि मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही है ? उत्तर क्षेत्र आश्री जघन्य

उक्कोसेण पणपन्न पलिओवमाई एकेण आदेसेणं जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेणं णवपलि-
ओवमाइं, एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण सत्तपलिओवमाइं, ॥
एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतमुहुत्त उक्कोसेणं पण्णास पलिओवमाइ ॥ ८ ॥
तिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवतियं काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण
अंतोमुहुत्त उक्कोस तिण्णिपलिओवमाइं ॥ जलयर तिरिक्खजोणित्थीण भंते! केवइय
कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा!जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी॥ चउपदथलयर
तिरिक्खजोणित्थिणं भंते ! केवतियकाल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो

पल्योपमकी स्थिति ईशान देवलोककी अपरिग्रही देवी आश्री एक आदेशसे जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पचास पल्योपम सौधर्म देवलोक की अपरिग्रही देवी आश्री, एक आदेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट नव पल्योपम ईशान देवलोक की परिग्रही देवी आश्री एक आदेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सात पल्योपम सौधर्म देवलोक की परिग्रही देवी आश्री ॥ ८ ॥ अहो भगवन् तिर्यंचणी की स्थिति कितनी कही है ? अहो गौतम ! तिर्यंचणी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की अहो भगवन्-जलचर तिर्यंचणी की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जलचर तिर्यंचणी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड अहो भगवन् चतुष्पद स्थलचर

मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ, उरपरिसप्प थलयरा तिरिक्ख जोणित्थिण भंते ! केवइयं कालं ठिरपण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं भुयपरिसप्पि ॥ खहयर तिरिक्ख जोणित्थीण जहण्णेणं अंतो मुहुत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जति भागो ॥ ९ ॥ मणुस्सित्थीण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिउवमाइ ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त, उक्कोसेण देसणा पूव्वकोडी, कम्मभूमग मणुस्सियीणं भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त

तिर्यंचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-चतुष्पद स्थलचर तिर्यंचणी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की प्रश्न-उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही भुज परिसर्प तिर्यंचणी की जानना खेचर तिर्यंचणी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग ॥ ९ ॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम क्रोड पूर्व प्रश्न-कर्म भूमि मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही है ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य

पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिउवमाइ,धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ भरहेरवय कम्मभूमग मणुस्सित्थीण भंते! केवतिय काल ठीती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ, धम्म चरण पडुच्च जहण्णण अंतो मुहुत्त उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सित्थीण भंते ! केवतियं काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतामुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ धम्मचर पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण देसूणा

अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड भरत व एरवत कर्म भूमि के मनुष्य की स्त्री की कितनी स्थिति कही? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम धर्माचरण आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छकम(आठवर्षकम)क्रोड पूर्व, प्रश्न-पूर्वविदेह व अपर विदेह कर्मभूमिवाले मनुष्यणी की कितनी स्थिति है ? उत्तर क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोड पूर्व अकर्म भूमि की मनुष्यणी की कितनी स्थिति कही ? उत्तर जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम

पुव्वकोडि ॥ अकम्मभूमगमणुस्सित्थीण भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिउवम पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण, ऊणग उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं ॥ सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ हेमवए एरन्नवए जहण्णेण देसूण पलिओवम, पलिउवमस्स असंखज्जइ भागे ऊणग, उक्कोसेण पलिउवम, सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूणाइ दोपलिओवमाइ, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेऊणाइ, उक्कोसेण दोपलिउवमाइं, सहरण पडुच्च

साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड, हेमवय एरणवयके क्षेत्रकी मनुष्यणीकी स्थिति जघन्य पल्योपमका असंख्यातवा भाग कम एक पल्योपम, उत्कृष्ट, एक पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड प्रश्न हरिवर्ष रम्यक वर्ष अकर्मभूमि मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम दो पल्योपम उत्कृष्ट दो पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछकम पूर्वक्रोड प्रश्न-देवकुरु उत्तरकुरुकी मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही? उत्तर-जन्म आश्री पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम तीन पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री

जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म-भूमगमणुस्सित्थीणं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहन्नेणं देसूणाइं तिण्णि पलिओवमाइं, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणगाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं, संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी॥ अंतरदीवग अकम्मभूमग मणुस्सित्थीणं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं देसूणं पलिओवमं, पलिओवमस्स, असंखेज्जतिभागेणऊणयं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं, संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥१०॥ देवित्थीणं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमाइं, भवणवासि देवित्थीणं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणअद्ध पंचमाइं पलिओवमाइं

जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोड पूर्व प्रश्न अंतर द्वीपकी मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही? उत्तर जन्म आश्री पल्योपम के असंख्यातवे भाग में कुछकम और उत्कृष्ट पल्योपमका असंख्यातवा भाग संहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछकम पूर्व क्रोड ॥१०॥ प्रश्न देवी की कितनी स्थिति कही? उत्तर जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ५५ पल्य की प्रश्न भवनवासी देवी की कितनी स्थिति कही? उत्तर जघन्य दश हजार वर्ष

एव असुर कुमार भवणवासि देवत्थीयाएवि ॥ नागकुमार भवणवासी देविरिथयाए जहण्णेण दसवास सहस्साइ उक्कोसेण देसूण पलिओवम, एव सेसाणवि जाव थणिय कुमाराण ॥ वाणमतरीण जहण्णेण दसवास सहस्साइ, उक्कोसेणं अद्ध पलिओवम ॥ जोतिसीणं जहण्णेण अट्ठभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्धपलिओवम पण्णासाए वास सहस्सेहिं अब्भहिय, चदविमाण जोतिसिय देविरिथयाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण तचेव, सूरविमाण जोतिसिय देविरिथयाए, जहण्णेण चउभाग पलिओवम, उक्कोसेण अद्ध पलिओवम, पचहिं वाससतेहिं, मब्भहिय, गहविमाण

उत्कृष्ट स ढे चार पल्योपम की ऐसे ही असुर कुमार भवनवासी की देवी की जानना नाग कुमार भवन वासी देवी की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट कुछकम पल्योपम की, ऐसे ही स्तनित कुमार पर्यंत शेष सब भुवनपति की देवी की स्थिति कहना ॥ वाणव्यतर देवी की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आधा पल्योपम ज्योतिषी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष अधिक, चद्र विमान देवी की जघन्य एक पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष अधिक सूर्य विमान ज्योतिषी देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पांच सो वर्ष अधिक, ग्रह विमान ज्योतिषी की देवी की जघन्य पल्योपम का

जोतिसिय देवित्थिण जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्ध पलिओवम णक्खत्त-
विमाण जोतिसिदेवित्थियाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण साहिय
चउभाग पलिओवम, ॥ तारा विमाण जोतिसिय देवित्थियाए जहण्णेणं अट्ठभाग
पलिओवम, उक्कोसेण सातिरेग अट्ठभाग पलिओवम वेमाणिय देवित्थियाए जहण्णेण
पलिओवम, उक्कोसेण पणपण्णं पलिओवमाइं, सोहम्म कप्पवेमाणिय देवित्थीण
भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमं
उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं ॥ ईसाण देवित्थीण जहण्णेण सातिरेग
पलिओवणं उक्कोसेम णवपलिओवमाइं ॥ ११ ॥ इत्थीण भंते !

चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम, नक्षत्र विमान की देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम के चौथे भाग से कुच्छ अधिक तारा विमान वासिनी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट अधिक पल्योपम का आठवा भाग वैमानिक देवी की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम सौधर्म देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की परिग्रही देवी आश्री ईशान देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट नव पल्योपम की और अपरिग्रही देवी की स्थिति पचपन पल्योपम की है आगे स्त्रियों की उत्पत्ति नहीं है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! एक जीव स्त्रीवेद का स्त्री वेद पने रहे तो कितना काल तक रहे ?

इत्थिवेदे कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! एकादेसेणं जहण्णेणं एक्कसमयं, उक्कोसेण देसुत्तरं पलिओवमसतं पुव्वकोडी पुहुत्त मब्भहियं ॥ एकेणादेसेणं जहण्णेण एक्कसमय उक्कोसेण अट्ठारस पलिओवमाइं, पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइं ॥ एकेणा-देसेण जहण्णेण एक्कसमयं उक्कोसेण चोद्दसपलिओवमाइं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइं॥ एक्कणादेसेण जहण्णेण एक्कसमय उक्कोसेण पलिओवमसयं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियं॥

उत्तर अहो गौतम ! एक आदेश से जघन्य एक समय (उपशम श्रेणी से पीछे पडता हुवा स्त्रीवेदी जीव काल करे इस अपेक्षा) उत्कृष्ट ११० पल्योपम, प्रत्येक पूर्व क्रोड अधिक, कोई स्त्री वेदी जीव दो भव दूसरे देवलोक की अपरिग्रही देवीपने करे तो इस के ११० पल्योपम होवे और बीच में मनुष्यणी का भव कर सो अधिक जानना (देवी वहां से चवकर असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाली स्त्री में नहीं उत्पन्न होती है) दूसरे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट अठारह पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक यहां दूसरे देव लोक की परिग्रही देवी के दो भव और अन्य तिर्यंचणी या मनुष्यणी के भव आश्री जानना तीसरे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौदह पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक, पहिले देवलोक की परिग्रही देवी आश्री चौथे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट सो पल्योपम प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक पहिले देवलोक की अपरिग्रही देवी आश्री, पांचवे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट प्रत्येक पल्योपम व प्रत्येक पूर्व

जातिसिय देवित्थिण जहण्णण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्ध पलिओवम पक्खचाविमाण जोतिसिदेवित्थियाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण साहिय चउभाग पलिओवम, ॥ तारा विमाण जोतिसिय देवित्थियाए जहण्णेण अट्ठभाग पलितोवम, उक्कोसेण सातिरेग अट्ठभाग पलिओवम वेमाणिय देवित्थियाए जहण्णेण पलितोवम, उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइ, सोहम्म कप्पवेमाणिय देवित्थीण भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं ॥ ईसाण देवित्थीण जहण्णेण सातिरेग पलिओवण उक्कोसेम णवपलितोवमाइ ॥ ११ ॥ इत्थीण भंते !

चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम, नक्षत्र विमान की देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम के चौथे भाग से कुछ अधिक तारा विमान वासिहनी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट आधिक पल्योपम का आठवा भाग वैमानिक देवी की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम सौधर्म देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की परिग्रही देवी आश्री ईशान देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट नव पल्योपम की और अपरिग्रही देवी की स्थिति पचपन पल्योपम की है आगे स्त्रियों की पल्योपम नहीं है ॥ ११ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! एक जीव स्त्रीवेद का स्त्री वेद पने रहे तो कितना काल तक रहे ?

मणुस्सित्थीण भंते ! मणुस्सित्थीति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइं॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूण पुव्वकोडी ॥ एव कम्मभूमियावि भरहेरवियावि, णवर खेत्तं पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइं, देसूणा पुव्वकोडी अब्भहियाइं ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सखेत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण

भन् ! मनुष्यणी मनुष्यणीपने कितना काल तक रहती है ? अहो गौतम ! क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम व पूर्व क्रोड अधिक, धर्माचरण आश्री, जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम पूर्वक्रोड ऐसे ही कर्मभूमि व भरत एरवत का जानना परंतु क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व देशऊना क्रोड पूर्व अधिक धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छकम पूर्व क्रोड पूर्व विदेह व अपर विदेह मनुष्यणी की क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड अकर्मभूमि की मनुष्यणी अकर्मभूमि में कितना काल तक

णेणं आदेसेणं जहण्णेणं एक्कंसमय उक्कोसेणं पलिओवमपुहुत्तं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहिय॥१२॥तिरिक्खजोणिण भंते! तिरिक्खजोणित्थित्ति कालतो केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइं, जेल चराए जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहिय॥चउप्पदथलयरातिरिक्ख जहा ओहिता, तिरिक्खीउरगपरिसप्पि भुयगपरिसप्पित्थिण जहा जलयराण॥ खहयरी जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पलितोवमस्स असंखेज्जतिभाग पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहिय

क्रोड अधिक सात भव तिर्यंचणी के पूर्व कोडी आयुष्य के और आठवे भव में देवकुरु उत्तर कुरु में तीन पल्योपम के आयुष्य वाली युगलनी होकर सौधर्म देवलोक में जघन्य स्थिति वाली देवी होवे ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! तिर्यंचणी तिर्यंचणीपने कितना काल तक रहती है? उत्तर अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक सात भव पूर्व क्रोड की स्थिति के करे आठवा भव तीन पल्योपम की स्थिति का करे और नवमा भव पूर्व क्रोड की स्थिति का करे जलचरी जलचरीपने रहे तो जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड, चतुष्पद स्थलचरी का औधिक जैसे मानना, उर परिसर्प व भुज परिसर्प का जलचरी जैसे मानना खेचरी का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक जानना॥१३॥ प्रश्न-अहो भग-

मणुस्सित्थीण भंते ! मणुस्सित्थित्ति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइं ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूण पुव्वकोडी ॥ एव कम्मभूमियावि भरहेरवतियावि, णवर खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइं, देसूणा पुव्वकोडी अब्भहियाइं ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सखेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण

भन् ! मनुष्यणी मनुष्यणीपने कितना काल तक रहती है ? अहो गौतम ! क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम व पूर्व क्रोड अधिक, धर्माचरण आश्री, जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम पूर्वक्रोड ऐसे ही कर्मभूमि व भरत एरवत का जानना परंतु क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व देशऊना क्रोड पूर्व अधिक धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छकम पूर्व क्रोड पूर्व विदेह व अपर विदेह मनुष्यणी की क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड अकर्मभूमि की मनुष्यणी अकर्मभूमि में कितना काल तक

एक समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ अकम्मभूमिक मणुस्सित्थिण, अकम्मभूमए कालओ केवच्चिर होति? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम पलिओवमस्स असखज्जतिभागेणऊण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ॥ सहरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाए पुव्वकोडिए अब्भहियाइ ॥ हेमवतरण्णवे अकम्मभूमिमणुस्सित्थिण भते! हेमवतरण्णवे कालतो केवच्चिर होइ? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम पलिओवमस्स असखेज्जति भागेण ऊणग उक्कोसेण पलिओवमग, साहारण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण

रहती है? उत्तर जन्म आश्री पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व कुच्छ कम क्रोड पूर्व अधिक, प्रश्न—हेमवय एरणवय की मनुष्यणी हेमवय एरणवय में कितने काल तक रहती है? उत्तर—जन्म आश्री पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट एक पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक पल्योपम व कुच्छ कम पूर्व क्रोड अधिक कोई देव कर्मभूमि की स्त्री को हेमवय एरणवय क्षेत्र में साहरन करके लावे वह वहां कुच्छ कम पूर्व क्रोड का आयुष्य भोगव कर काल कर जावे और उस ही क्षेत्र में

पलिओवम देसूण। पुव्वकोडीए अब्भहिय ॥हरिवास रम्मवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण भंते! कालओ केवचर होई? गोयमा! जम्मण प-ुच्च जहण्णेण देसूणाइ दो पलितोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जतिभागेणं ऊणगाइ, उक्कोसेण दोपलितोवमाइ ॥ साहरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दो पलिओवमाइ देसुणाइ पुव्वकोडि अब्भहियाइ ॥ देवकुरु उत्तरकुरु जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूणाइ तिन्नि पलिओवमाइ पलितोवमस्स असखेज्जइ भागेणं ऊ गाइ उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइ, सहरण पडुच्च जहण्णण अतोमुहुत्तउक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइ ॥अतरदीवा कम्मभूमगमणुस्सि २ जम्मणपडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम पलितोवमस्स असखेज्जाति भागेण ऊण

युगलनीपने उत्पन्न होवे उस आश्री हरिवर्ष रम्यक् वर्ष अकर्मभूमि मनुष्यणीकी जन्म आश्री पल्प का असंख्यातवा भाग दो पल्योपम उत्कृष्ट दो पल्योपम की साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो पल्योपम व कुच्छ कम क्रोड पूर्व अधिक जानना देवकुरु उत्तरकुरु की जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम तीन पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व कुच्छ कम क्रोडपूर्व अधिक अंतर द्वीप की देवीका जन्मय आश्री जघन्य पल्योपम के

उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग, सहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग देसूणाए पुव्व कोडीए अब्भहिय ॥१४॥ देवित्थीण (देवीणं) भंते! देवित्थित्ति कालओ केवच्चिरहोइ? गोयमा! जच्चेव संचिट्ठणा ॥१५॥ इत्थीण (इत्थीएण) भंते! केवतिय काल अंतर होति? गोयमा! जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण अनंतकाल वणस्सति कालो एवं सव्वासिं तिरिक्खित्थीण ॥ मणु-

असंख्यात वे भाग मे कुच्छकम उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपमका असंख्यातवा भाग व कुच्छकम क्रोड पूर्व अधिक॥१४॥ प्रश्न अहो भगवन्! देवता की स्त्री देवी पने कितने काल तक रहती है? उत्तर-अहो गौतम! जैसे देवी की स्थिति कही वैसे ही जानना क्यों की देवी मरकर पुनः देवीपने नहीं उत्पन्न होती है ॥ १५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन्? स्त्री को स्त्रीपने कितना अन्तर होता है? अर्थात् स्त्री वेद में से नीकला पुनः कितने समय में स्त्रीपना प्राप्त करे? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति आश्री इतना स्त्री वेद का अंतर मानना एसे ही तिर्यंचणी व मनुष्यणी का जानना मनुष्य में क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल, धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट अर्ध पुद्गल परावर्त में कुच्छ कम ऐसे ही पूर्व महाविदेह व अपर महाविदेह क्षेत्र आश्री जानना अकर्मभूमि की मनुष्यणी का कितना अंतर

स्सित्थीण मणुस्सित्थिए खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त,उक्कोसेण वणस्सइ कालो॥ धम्म चरण पडुच्च जहण्णेण समउ उक्कोसेण अणत काल जाव अवड्ढ पोग्गलपरि यट्ट देसूण, एव जाव पुव्व विदेह अवर विदेहियाओ ॥ अकम्म भूमगमणुस्सित्थिण भंते ! केवतिय काल अतर होइ ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण दसवास सहस्साति अतोमुहुत्त मब्भहियाइ उक्कोसेण वणस्सइकालो, सहरणं पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइकालो एव जाव अतरदीवियाओ ॥

कहा ! उत्तर—जन्म आश्री जघन्य दश हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त अधिक क्यों कि अकर्मभूमि की स्त्री मरकर जघन्य स्थितिवाले देवतापने उत्पन्न होवे वह दशहजारवर्ष का आयुष्य भोगवकर कर्मभूमि मनुष्यकी स्त्रीपन उत्पन्न होवे वहां से मरकर अकर्म भूमि में स्त्रीपने उत्पन्न होवे उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अनत काल का अंतर पड़े साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल एमे ही अतर द्वीप पर्यंत कहना प्रश्न अहो भगवन ! देवता की स्त्री मरकर पुनः देवता की स्त्रीपने उत्पन्न होवे तो कितना काल का अंतर होवे ? उत्तर-अहो गौतम !,जघन्य अंतर मुहूर्त क्योंकि देवी मरकर कर्म भूमि में उत्पन्न होवे वहां पूर्ण पर्याय बांध कर पुनः देवी पने उत्पन्न होवे उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना अनत काल जानना- एमे ही असुरकुमार भवन पति की देवी से ईशान देवलोक की देवी पर्यंत सबका कहना ॥

देवित्थिण सव्वेसिं जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सतिकालो ॥ १६॥ एतासिण भंते! तिरिक्खजोणियाण मणुस्सित्थियाण देवित्थियाण कयरा २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ? सव्वत्थोवाओ मणुस्सित्थीयाओ, तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, ॥ एतासिण भंते ! तिरिक्खजोणित्थियाण जलयरीण थलयरीणं खहयरीणय कयरा२ हिंतो अप्पाओवा बहुयाओवा तुल्लाओवा विसेसाहियाओवा? गोयमा! सव्वत्थोवाओ खहयरि तिरिक्खजोणियाओ थल तिरिक्खजोणियाओ संखेज्ज गुणाओ, जलयर तिरिक्ख संखेज्जगुणाओ ॥ एतासिण भंते ! मणुस्सित्थिय कम्म भूमियाण अकम्मभूमियाण, अंतरदीवियाणय कयरा २

॥ १६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंचणी, मनुष्यणी, व देवी में कौन किस से अल्प, बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी मनुष्य की स्त्री क्यों कि वे संख्यात क्रोडाक्रोड है, इस से तिर्यंच की स्त्री असंख्यातगुनी, इस से देवियों असंख्यातगुनी प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंचणी में जलचरी स्थलचरी व खचरी में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडी खेचरी तिर्यंचणी, उस से स्थलचरी तिर्यंचणी संख्यात गुनी, उस से जलचरी तिर्यंचणी संख्यात गुनी प्रश्न—अहो भगवन् ! कर्मभूमि की स्त्रियों, अकर्मभूमि व अंतर द्वीप की स्त्रियों में कौन किस से

हितो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ अतरदीवग अकम्म भूमग मणुस्सित्थियाओ, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि-तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ,हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवितुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, हेमवय हेरण्णवयवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ भरहेरवयवास कम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ, दोवि तुल्लाओ संखेज्ज-गुणाओ,पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ॥

अल्प बहुत तल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी अन्तर द्वीप की स्त्री, इस से देवकुरु उत्तरकुरु की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी, इस से हरिवर्ष रम्यक् वर्ष की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी इस से हेमवय एरणवय की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी, इस से भरत एरवत क्षेत्र की मनुष्य स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी, इस से पूर्व विदेह व अपर विदेह क्षेत्र की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी प्रश्न—अहो भगवन् ! देवियों में भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक की देवियों में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडी वैमानिक की देवियों, क्यों की अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशि का दूसरा वर्ग मूल को तीसरे वर्ग मूल से गुनने से जितनी राशि होवे उतने प्रमाण घन की हुई लोक की

एताणिण भंते ! देवित्थियाणं भवणवासीणं वाणमंतरीणं जोइसियाणं वेमाणिणीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ वेमाणियाओ देवित्थियाओ, भवणवासी देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, वाणमंतर देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ॥ एतासिण भंते ! तिरिक्ख-जोणियाण जलयरीण थलयरीण खहयरीण मणुस्सित्थीयाण कम्मभूमियाण अकम्म भूमियाण, अंतरदीवियाणं, देवित्थियाणं, भवणवासिणीण, वाणमंतरीण, जोतिसि-

प्रदेश पंक्ति में जितने आकाश प्रदेश हैं उसे बत्तीससे भाग देनेसे उतने प्रमाण में है, इससे सौधर्म ईशान देवलोक की देवियों असंख्यात गुनी क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशिका प्रथम वर्ग मूल उसे दूसरे वर्ग मूलसे गुणने से जितनी प्रदेश राशि होवे इतने प्रमाण की श्रेणी में जितने प्रदेशराशि होवे, उसे बत्तीसका भाग देनेसे जो प्रमाण आवे उतनी है, इससे भवनपति देवकी देवियों असंख्यातगुनी क्यों कि असंख्यात योजन प्रमाण एक प्रदेशिक श्रेणीरूप जितने खण्ड एक प्रतर में हैं उस को भी बत्तीस का भाग देने से जो आवे उतनी व्यन्तर की स्त्रियों हैं उस से ज्योतिषी की स्त्रियों संख्यातगुनी क्यों कि २५६ अंगुल प्रमाण एक प्रदेश की श्रेणी मात्र खंड जितने एक प्रतर में होवे उस में से बत्तीसवा भाग रहित करने से जितनी प्रदेश राशि होवे उतनी है. अब—अहो भगवन् ! तिर्यंच स्त्रियों में जलचरी, स्थलचरी, खेचरी, मनुष्य स्त्रियों में कर्म-

याणं वेमाणिणीणय कयरा २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अतरदीवग अकम्म भूमग मणुस्सित्थियाओ देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवितुल्ला संखेज्जगुणाओ, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीयाओ संखेज्जगुणाओ, हेमवतेरण्णवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि संखेज्जगुणाओ, भरहेरवयवास कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि संखेज्जगुणाओ, पुव्वविदेह अवरविदेहवास कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि संखेज्जगुणाओ वेमाणिय

मृ वि की, अकर्मभूमि व अतर द्वीप की स्त्रियों व देव स्त्रियों में भवनवासिनी, वाणव्यंतरी, ज्योतिषीनी व वैमानिकिनी देव की स्त्रियों में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी अंतरद्वीप अकर्मभूमिवाले मनुष्य की स्त्रियों हैं इस से देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र के मनुष्य की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी, इस से हरिवर्ष रम्यक वर्ष के मनुष्य की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी इस से हेमवय एरण्यवय की मनुष्यणीयों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी, इन से भरत एरवत की मनुष्यणियों संख्यातगुनी, इस से पूर्व विदह व पश्चिम विदह की स्त्रियों संख्यातगुनी, इस से वैमानिक देवता की स्त्रियों असंख्यातगुनी, आकाश प्रदेश राशि प्रमाण होने से, इस से भवनपति देवों की स्त्रियों असंख्यातगुनी, इस से खेचर तिर्यचनी असंख्यातगुनी. प्रतर के असंख्यातवे भाग में रही हुई आकाश श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है, इस से स्थलचर तिर्यचणी संख्यातगुनी, व विशेष नदी

पंचिंदियाओ असखेज्जगुणाओ, भवणवासि देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ असखेज्जगुणाओ, थलचर तिरिक्खजोणित्थियाओ सखेज्जगुणाओ जलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ सखेज्जगुणाओ वाणमंतरदेवित्थियाओ सखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवित्थियाओ सखेज्जगुणाओ ॥ १७ ॥ इत्थिवेदस्सणं भंते ! कम्मस्स केवतिय काल बंध ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढो सत्तभागाओ पलिओवमस्स असखेज्जतिभागेण ऊणं, उक्कोसेणं पण्णरस

प्रतर का असंख्यातवा भाग उस में रही हुई असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है इस से जलचर तिर्यंचणी संख्यातगुनी आतिक्षय वदा प्रतर का असंख्यातवा भाग में रही हुई असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है इस से वाणव्यंतर देव की देवियों संख्यातगुनी, संख्यात योजन कोटा कोटी प्रमान एक प्रदेश श्रेणि मात्र खंड जितने एक प्रतर में होवे उस में से १ पचासवा भाग कम करने से जितनी राशी रहे उतनी है इससे ज्योतिषी की देवियों संख्यातगुनी पूर्वोक्त प्रकार ॥ १७ ॥ अब स्त्री वेद की स्थिति कहते हैं प्रश्न—अहो भगवन् ! स्त्री वेद कर्म की कितने काल पर्यंत स्थिति होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम व एक सागरोपमका सातवा भाग में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम क्यों कि स्त्री वेदादिक कर्म की अपनी ? उत्कृष्ट स्थिति बंध से मिथ्यात्व की उत्कृष्ट स्थिति का सित्तर क्रोडाक्रोड सागरोपम की प्रमाण से भाग

सागरोवम कोडाकोडीओ, पण्णरस वास सयाइ, अवाधा, अवाहुणिया कम्माठिती कम्मणिसेओ ॥ १८ ॥ इत्थिवेदेण भते ! किंपकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! फुफ अग्गि समाणे पण्णत्ते ॥ सेत्त इत्थियाओ ॥ १९ ॥ सेकिंत पुरिसा ? पुरिसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा-तिरिक्खजोणिय पुरिसा, मणुस्स पुरिसा, देवपुरिसा ॥ २० ॥ सेकिंत तिरिक्खजोणिय पुरिसा ? तिरिक्खजोणिय पुरिसा तिविहा पण्णत्ता तजहा-जलचरा थलचरा खहचरा ॥ इत्थि भदो भ णियव्वो जाव खहयरा॥सेत्त खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा ॥ २१ ॥ सेकिंत मणुस्स पुरिसा ? मणुस्स पुरिसा

करने से इतनी होती है उत्कृष्ट पन्नरह क्रोडाक्रोड सागरोपम अबाधाकाल पन्नरह हजार वर्ष का कहा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! स्त्रियों का विषय कैसे कहा है ? उत्तर—जैसे बकरी की मींगनियों की अग्नि जाज्वल्यमान होती है और छेडने से विशेष दीप्यमान होती है, वैसे ही, तथा काष्ट की धगधगती अग्नि समान कामाग्नि है यह स्त्री वेद का अधिकार सपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ प्रश्न—पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—पुरुष के तीन भेद कहे हैं तद्यथा तिर्यंच पुरुष, मनुष्य पुरुष व देव पुरुष ॥२०॥ प्रश्न—तिर्यंच पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच पुरुष के तीन भेद कहे हैं—जलचर, स्थलचर, व खेचर यो स्त्री भेद में जैसा कहा वैसे ही यहां जानना यह तिर्यंच का कथन हुवा ॥ २१ ॥ प्रश्न—मनुष्य

तिविहा पण्णत्ता तंजहा-कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा सेत्त मणुस्स पुरिसा ॥ २२ ॥ सेकिंत देव पुरिसा ? देवपुरिसा चउव्विहा इत्थिभेदो भाणियव्वो जाव सव्वट्ठसिद्धा ॥ २३ ॥ पुरिसस्सणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा !

प्रश्न के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—मनुष्य पुरुष के तीन भेद कहे हैं—कर्मभूमि, अकर्मभूमि व अंतरद्वीप यह मनुष्य पुरुष के भेद हुवे ॥ २२ ॥ प्रश्न—देव पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—देव पुरुष के चार भेद कहे हैं यों जैसे स्त्री भेद में कहा वैसे ही जानना यावत् सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत कहना ॥ २३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुष की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंच पुरुष व मनुष्य पुरुष का से जैसे कहना देव पुरुष की यावत् सर्वार्थ सिद्ध देवों की स्थिति पन्नवणा से जानना विशेष में—भवनपति में असुरकुमार देव की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक सागरोपम से कुछ अधिक, नागकुमार दि नवजाति के भुवनपति देव की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट कुछ कम दो पल्योपम की वाणव्यन्तर देव की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की, ज्योतिषी देव की भांय मे जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, चन्द्रमा की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, सूर्य की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक हजार वर्ष की

जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं मणुस्स पुरिसाण जचव इत्थिय ठिती साचेव भाणियव्वा ॥ देव पुरिसाणवि जाव

ग्रह की, जघन्य पाव पल्योपम की, उत्कृष्ट एक पल्योपम की, नक्षत्र की, जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधा पल्योपम की, तारा की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट पाव पल्योपम से कुछ अधिक जानना वैमानिक की ओघ से जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की, विशेष से— १ सौधर्म देवलोक के देव की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट दो सागरोपम की, २ ईशान देवलोक के देव की जघन्य एक पल्योपमसे कुछ अधिक उत्कृष्ट दो सागरोपम कुछ अधिक, ३ सनत्कुमार देवलोक के देवता की जघन्य दो सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम, ४ माहेन्द्र देवलोक के देवों की जघन्य दो सागर कुछ अधिक उत्कृष्ट सात सागरोपम कुछ अधिक, ५ ब्रह्मदेवलोकके देवता की जघन्य सात सागरोपम की उत्कृष्ट दश सागरोपम की, ६ लातक देवलोक के देवता की जघन्य दश सागरोपम की उत्कृष्ट चौदह सागरोपम की, ७ महाशुक्र देवलोकके देव की जघन्य चौदह सागरोपमकी उत्कृष्ट सतरह सागरोपम की, ८ सहस्रार देवलोक के देव की जघन्य सतरह सागरोपम की उत्कृष्ट अठारह सागरोपम की ९ आणत देवलोक की जघन्य अठारह सागरोपम की उत्कृष्ट उन्नीस सागरोपम की, १० प्राणत देवलोक की जघन्य उन्नीस सागरोपम की उत्कृष्ट बीस सागरोपम की, ११ आरण देवलोक के देव की जघन्य

सव्वट्ठसिद्धाण ताव ठिती‌ए जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्वा ॥ २४ ॥ पुरिसेणं भंते ! पुरिसात्ति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण

ीस सागरोपम की उत्कृष्ट इक्कीस सागरोपम की, १२ अच्युत देवलोक की जघन्य इक्कीस सागरोपम की त्कृष्ट बावीस सागरोपम की (यह कल्पोत्पन्न देव की स्थिति कही) १ भद्र ग्रैवेयक के देव की जघन्य बावीस सागरोपम की उत्कृष्ट तेवीस सागरोपम की, २ सुभद्र ग्रैवेयक के देव की जघन्य तेवीस सागरोपम की उत्कृष्ट चौवीस सागरोपम की, ३ सुजात ग्रैवेयक के देव की जघन्य चौवीस सागरोपम की उत्कृष्ट पच्चीस सागरोपम की, ४ सुमनस ग्रैवेयक के देव की जघन्य पच्चीस सागरोपम की उत्कृष्ट छब्बीस सागरोपम की, ५ सुदर्शन ग्रैवेयक के देव की जघन्य छब्बीस सागरोपम की उत्कृष्ट सत्तावीस सागरोपम की, ६ प्रिय [illegible]क के देव की जघन्य सत्तावीस सागरोपम की उत्कृष्ट अट्ठावीस सागरोपम की, ७ आ [illegible]क देव की जघन्य अठावीस सागरोपम की उत्कृष्ट गुनतीस सागरोपम की, ८ सुमतिभद्र ग्रैवेयक के [ज]घन्य उनतीस सागरोपम की और उत्कृष्ट तीस सागरोपम की और ९ यशोधर ग्रैवेयक के देव की जघन्य [तीस] सागरोपम की उत्कृष्ट एकतीस सागरोपम की ॥ विजय वैजयंत जयंत और अपराजित विमान वासी [दे]व की जघन्य एकतीस मध्यम बत्तीस उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की और सर्वार्थ सिद्ध विमान वासी देवताओं की स्थिति जघन्योत्कृष्ट तेतीस ही सागरोपम की ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुषका [स्व]रूप पने निरंतर रहतो कितने काल तक रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो

सागरोवमसयपुहुत्त सातिरेगं ॥ तिरिक्खजोणिय पुरिसाण भंते ! कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिन्निपलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइ ॥ एव तहेव सचिट्ठणा जहा इत्थीण जाव खहयरतिरिक्खजोणिय पुरिसस्स सचिट्ठणा ॥ मणुस्स पुरिस्साण भंते ! कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ पुव्वकोडिपुहुत्त

सागरोपम कुछ अधिक फिर पुरुष वेद का अवश्य पलटा होवे प्रश्न-अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक पुरुष तिर्यंच पुरुषपने रहे तो कितने काल रहे ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम ऊपर पूर्व कोटी पृथक्त्व अधिक (सात भव पूर्व कोटी आयुष्य वाले तिर्यंच के कर्मभूमि के क्षेत्र आश्रिय और एक भव युगल तिर्यंच का तीन पल्योपम का मानना] यों जिस प्रकार तिर्यंचनी स्त्री का सचिठन काल कहा वैसा ही जलचर स्थलचर पुरुष का भी सचिठना काल जानना अर्थात् जलचर की जघन्य अतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व, चतुष्पद स्थलचर की जघन्य अतर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक, उरपरि सर्प की तथा भुजपर की जघन्य अतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व, खचर पुरुषकी जघन्य अतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व कोटी पृथक्त्व उपर के पल्योपम का असंख्यात भाग पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक सात कर्मभूमी के भवकरे आठवा अन्तर्द्वीपका भवकरे) प्रश्न-मनुष्य का पुरुषपना

मस्सट्ठियाइ ॥ धम्मचरणं पडुच जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडि, एवं सव्वत्थ जाव पुव्वविदेह अवरविदेह अकम्मभूमक मणुस्स पुरिसाण जहा अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण जाव अन्तर दीवगाण ॥ देवपुरिसाण जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणा जाव सव्वट्ठसिद्धगाण ॥ २५ ॥ पुरिसाण भंते ! केवतीयं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो ॥

कितने काल तक रहे? उत्तर—अहो गौतम! क्षेत्र की अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक उक्त प्रकार ही जानना, और चारित्र धर्माचरण आश्रित जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्ष यावत् पूर्व महा विदेह का तथा अकर्मभूमि के मनुष्य पुरुष का जैसा अकर्मभूमि की स्त्री का कहा यावत् अंतरद्वीप का पुरुष का भी अंतरद्वीप की स्त्री जैसा ही कहना और देव पुरुषों का पुरुषपने का काल तो देवता की स्थिति कही उतना ही कहना क्यों कि उन का पुनः (दूसरा) भव होता नहीं है इस लिये सर्वार्थ सिद्ध तक का पुरुष वेद का काल उन की स्थिति जैसा ही कहना ॥ २६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुष वेद को प्राप्त करने का कितना अन्तर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक समय का (उपशम श्रेणी में वेद का उपशम कर पडवाइ हो पुनः पुरुष वद को

तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइ कालो ॥ एवं जाव खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसाण ॥ मणुस्स पुरिसाण भते ! केवतिय काल अंतर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेणं एक्क समय उक्कोसेणं अणतकाल अणता

समय मार्ग हार्थकर तुर्त मृत्यु पावे उस आश्रिय) और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जानना (प्रश्न—स्त्री और नपुंसक दोनों श्रेणि करते हैं उन का एक समय का अन्तर क्यों न हो ? उत्तर—श्रेणिगत मृत्यु पाकर नियमा से पुरुष दवपने ही उत्पन्न होता है परतु देवीपने या अन्य गति में नहीं जाता है इस लिये) तिर्यंच योनिक पुरुष में विशेषता बताते हैं तिर्यंच योनिक पुरुष का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जलचर स्थलचर खेचर पुरुष का भी इतना ही अंतर जानना प्रश्न अहो भगवन् ! मनुष्य पुरुष मरकर पीछा पुरुष होवे तो कितना अंतर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! पुरुष का जघन्य से क्षेत्र आश्रिय अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना और चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य एक समय [परिणाम के पलटे आश्रिय] उत्कृष्ट देश ऊन अर्ध पुद्गल परावर्तन, इस ही प्रकार भरत एरावत के मनुष्य पुरुष, पूर्व विदेह पश्चिम विदेह पुरुष का जन्म आश्रिय

उरसप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढं पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां से मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और सहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने से पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा सहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष बोल... रा सब स्त्री के जैसा जानना यावत् अतर्द्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाण भंते ! केवतिय कालं अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेणं वास पुहुत्तं

उक्कोसेण वणस्सति कालो एवं जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ?
उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर
अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही
असुरकुमार जाती के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो
भगवन् ! नववे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का
कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य
गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस
आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट
वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के
देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर
होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस
करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

उस्सप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढ पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां मे मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और सहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने मे पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा सहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष बीदा रहा वह भी के जैसा जानना यावत् अतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाण भंते ! केवतिय कालं अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो मुहुत्तं

उक्कोसेण वणस्सति कालो एव जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न-अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार जाती के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नववे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य मास पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव माहिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

उरसप्पिणी सप्पिणी जाव अवट्ठ पोंगले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां से मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने से पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा संहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष बीस रहा यह भी के जैसा जानना यावत् अंतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना

पुरिसाण भते ! केवतिय काल अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णण काल मुहुत्त
उक्कोसेण वणस्सति कालो एव जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ?
उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर
अतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही
असुरकुमार आदी के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो
भगवन् ! नववें प्राणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे प्राणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का
कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अतर जघन्य वर्ष मास पृथक्त्व (कर्मभूमी मनुष्य
गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस
आश्रिय इतने आयुष्य बिना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट
वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के
देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर
होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस
करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवें] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

उस्सप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढं पोंग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस "जहित्थीण जावं अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतामुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिमाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां से मरकर कर्म-भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने से पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा सहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष बीका रहा सब स्त्री के जैसा जानना यावत् अंतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाण भंते ! केवतिय कालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण वास पुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो एव जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार आदी के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नवमे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष मास पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

पुरिसस्स जहण्णेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइ सागरोवमाइं, अणुत्तराण अंतरे - एक्को आलावओ ॥ २६ ॥ अप्पाबहुयाणि जहेव इत्थीण ॥ एतेसिणं भंते ?

मानना [अनुत्तर विमान के देव मरकर मनुष्य होकर अन्य विमानिक देवके तथा मनुष्य के भवकरे उस आश्रिय मानना और सर्वार्थ सिद्ध के देवकी उत्पत्ति तो एक ही वक्त होती है वे मनुष्य हो निश्चय से मोक्ष जाते हैं, इस लिये वहां का अन्तर नहीं कहा है + ॥२६॥ अब पुरुषों की अल्पाबहुत्व पांच प्रकारसे कहते हैं (१) सब से थोडे मनुष्य, क्यों कि संख्यात कोटा-कोटी प्रमाण है, उस से तिर्यंच योनिक पुरुष असंख्यातगुना, क्यों कि प्रतर के असंख्यातवे भाग में रहकर असंख्यात श्रेणि में रही हुई जो आकाश प्रदेश की राशि उस प्रमाण है, उस से देव पुरुष असंख्यातगुना, क्यों कि अतिशय बडा प्रतर के असंख्यातवे भाग में रही जो असंख्यात श्रेणि की आकाश प्रदेशकी राशी हैं उतने हैं तिर्यंच योनिक पुरुष की अल्पाबहुत्व तिर्यंच योनिक स्त्रीके जैसा ही कहना और मनुष्य पुरुष की अल्पाबहुत्व मनुष्य की स्त्रियों जैसे कहना (४) देव पुरुष की

+ यहां कितनेक भवनपति देव से ईशान देवलोक तक जघन्य अन्तर्मुहूर्त का, सनत्कुमार से सहस्त्रार पर्यन्त नव दिन का, आनत देवलोक से अच्युत देवलोकतक नव महीने का, नव ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान तक नवकर्ष का पुरुष वेद का अन्तर कहते हैं.

देवपुरिसाण भवणवासिण वाणमतराण जोतिसियाणं वेमाणियाण कयरे २ हिंतो

अल्पाबहुत्व सब से थोडे अनुत्तर विमान के पुरुष क्योंकि जो क्षत्र पल्योपम के असंख्यातवे भागमें है उस में जो आकाश प्रदेश की राशी है उस प्रमाने हैं, २ उस से ऊपर की ग्रैवेयक के देव संख्यातगुने क्यों की जो बहुत बडा क्षेत्र पल्योपम उस के असंख्यातवे भाग में रहे, जो आकाश प्रदेश उस की राशि जितने हैं, विमान की बहुल्यता कर अनुत्तर विमान पांच ही है और ऊपर के त्रिक में सो विमान है, उस में प्रत्येक विमान में अलग २ असंख्यात देवता हैं, (ऐसे ही आगे में भी २ नीचे २ विमान आगए हैं उन में देवता भी ज्यादा २ है ऐसी कल्पना आगे भी करना,) ३ उस से मध्य की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुना, ४ उस से नीचे की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ५ उस से बारवे अच्युत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ६ उस से इग्यारवे आरण देवलोक के देवता संख्यातगुने, +७ उस से प्राणत देव लोक के देवता संख्यातगुना, ८ उस से आनत देवलोक के देवता संख्यातगुने, उक्त प्रकार से ही इन को भी कहना ९ उन से सहस्रार कल्पवासी देव असंख्यातगुना, [क्यों कि घनाकार लोक उस की

+ यद्यपि आरण और अच्युत कल्प बराबरी से हैं और उन की विमान की संख्या भी एकसी है तथापि उत्तर दिशा से दक्षिण में कृष्ण पक्षिक जीव अधिक उत्पन्न होते हैं इस आश्रिय जानना जिन का अर्द्ध पुद्गल परावर्त से अधिक संसार भ्रमण होता है वे कृष्ण पक्षी कहे जाते हैं और कमी संसारवाले शुक्लपक्षी कहे जाते हैं।

अप्पाता बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवपुरिसा

एक प्रदेश की श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में जितने आकाश प्रदेश होते हैं उतने यह रहते हैं] १० उस से महाशुक्र देवलोक के देवता असंख्यातगुने क्यों कि जो बहुत बडी ऐसी जो श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में जो आकाश प्रदेश की राशी है उस प्रमान जानना और सहस्रार कल्प में छ हजार विमान है, महा शुक्र में चालीस हजार विमान है इस लिये, ११ उस से लंतक देवलोक के देवता असंख्यातगुन क्यों कि उस से भी बडी जो श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में उसका प्रमान है १२ उस से ब्रह्मदेवलोक के देवता असंख्यातगुने, उक्त प्रकार से भी बहुत बडी श्रेणि उस के असंख्यातवे भागमें रहे जो आकाश प्रदेशकी १३ उस से माहेन्द्र कल्प के देवता असंख्यात गुने, १४ उस से सनत्कुमार के देवता असंख्यात गुने, सनत्कुमार में बारहलाख विमान है और माहेन्द्र देवलोक में आठलाख विमान हैं इस आश्रिय तथा दक्षिण में कृष्ण पक्षी जीव अधिक उत्पन्न होवे उस आश्रिय [सनत्कुमार से लगाकर सहस्रार देवलोक तक अलग २ अपने २ स्थान में विचारने से घन कर लोककी एक श्रेणिके असंख्यात वे भाग में आकाश प्रदेश की राशी है उस के प्रमान इन का प्रमान जानना एक श्रेणिकेही असंख्यात भाग किये हैं वह इस लिये कि उस के असंख्यात भेद है इस लिये इस प्रकार ज्यादा बहुत कहा है] १५ उस से ईशान देवलोक के देवता असंख्यात

भवणवाति देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, वाणमंतर देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, जोतिसिय

गुने (क्योंकि प्रमाण मात्र क्षेत्र प्रदेश की राशी का दूसरा वर्ग मूल उसे तीसरे वर्ग मूल के वर्ग से गुना करने से जितनी प्रदेश की राशि हो उतनी संख्यावाली घन करे लोक की एक प्रदेश श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश होवे उस का जो बत्तीसवा भाग उस प्रमान उन का प्रमान) १६ उस से सौधर्म देवलोक के देवता संख्यात गुन (विमान के अधिक पने से सौधर्म में बत्तीस लाख और ईशान देवलोक में अठ्ठाईस लाख विमान हैं, तथा सौधर्म देवलोक दक्षिण दिशा में होने से वहां कृष्ण पक्षीक जीव अधिक उत्पन्न होते हैं और ऊपर के सब देवलोक में असंख्यात गुना कह कर यहां संख्यात गुने ही कहे यह वस्तु स्वभाव जानना) १७ उन से भवनपति देवता असंख्यात गुन) क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशि का प्रथम वर्ग मूल दूसरे वर्ग मूल से गिनते हुवे जितनी प्रदेश राशी होवे उतनी संख्या वाली घन करे लोक की एक प्रदेश श्रेणि उस में जितने आकाश प्रदेश होवे उस का जो बत्तीसवा भाग उस प्रमान उन का प्रमान जानना) १८ उन से वाणव्यन्तर देव पुरुष संख्यात गुने (क्यों कि संख्यात योजन कोटा कोटी प्रमाण की जो एक प्रदेश श्रेणी मात्र जो टुकडे के एक प्रतर में जितने होवे उनका ही बत्तीस भाग उस प्रमान उन का प्रमान है) और १७ उन से ज्योतिषी देवता संख्यात गुना क्यों कि जो दो सो छप्पन अंगुल प्रमान का एक प्रदेश श्रेणि मात्र टुकडा उस एक प्रतर में जितने होवे उस के

दवपुरिसा संखेज्जगुणा ॥ २७ ॥ एतेसिणं भंते! तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं मणुस्स पुरिसाणं कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं, देव पुरिसाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोतिसियाणं वेमाणियाणं सोधम्माणं जाव सव्वट्ठसिद्धगाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अंतरदीवग मणुस्स पुरिसा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि तुल्ला संखेज्ज-गुणा, हरिवास रम्मवास अकम्मभूमग पुरिसा दोवि तुल्ला संखेज्जगुणा, हेमवय हेरण-वएवास अकम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि संखेज्जगुणा, भरहएरवयवास कम्मभूमग

सर्वार्थ सिद्ध के देव पुरुष वैसे ही सब से संख्यातगुने हैं॥२७॥ प्रश्न अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक के पुरुष तथा जलचर खेचर पुरुष तथा कर्मभूमि के पुरुष में कर्मभूमि के पुरुष अकर्मभूमि के पुरुष, अंतरद्वीप के, तथा देव पुरुष में भवनपतिदेव, वाणव्यंतरदेव ज्योतिषी देव, वैमानिक देव सौधर्म देव का पुरुष यावत् सर्वार्थ सिद्ध के देव इन में कौन २ किस से ज्यादा यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे अंतरद्वीप के पुरुष, २ उन से देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ३ उन से हरीवास रम्यक्वास के पुरुष परस्पर तुल्य संख्यातगुना, ४ उस से हेमवय एरणवय के पुरुष परस्पर तुल्य संख्यातगुना, ५ उन से भरत क्षेत्र एरवत क्षेत्र के पुरुष संख्यातगुने, ६ उन से पूर्व महा विदेह पश्चिम महा विदेह के पुरुष

मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि सखज्जगुणा, अणुत्तरोववाति देव पुरिसा असखेज्जगुणा, उवरिमगेवेज्जग देव पुरिसा सखज्जगुणा, मज्झिम गेवेज्ज देव पुरिसा सखेज्जगुणा, हिट्ठिमगेवेज्ज देव पुरिसा सखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देव पुरिसा सखेजगुणा, आरणकप्पेदेव पुरिसा सखज्जगुणा, पाणयकप्प देव पुरिसा सखेज्जगुणा, आणतकप्पे देव पुरिसा सखेज्जगुणा, सहस्सार कप्पेदव पुरिसा असखेज्जगुणा, महसुक्ककप्पेदेव पुरिसा असखेज्जगुणा, जाव माहिंद कप्पे देव पुरिसा असखज्जगुणा, सणकुमार कप्पे देव पुरिसा असखेज्जगुणा, ईसाणकप्पे देव

सख्यातगुने, ७ उन से अनुत्तर विमान के देवता असंख्यातगुने, ८ उन से ऊपर के ग्रैवेयक के देवता सख्यातगुने, ९ उन से मध्यम ग्रैवेयक के देव संख्यातगुने, १० उन से नीचे के ग्रैवेयक के देवता सख्यातगुने, ११ उन से अच्युत देवलोक के देव सख्यातगुने, १२ उन से आरण देवलोक के देव सख्यातगुने, १३ उन से प्राणत कल्प के देव संख्यातगुने, १४ उनसे आणत कल्प क देव संख्यातगुने, १५ उन से सहस्रार देवलोक के देव असख्यातगुने, १६ उन से महाशुक्र कल्प के देव असंख्यातगुने, १७ उन से लांतक देवलोक के देव असंख्यातगुना, १८ उन से माहेन्द्र देवलोक के देव असंख्यातगुना, १९ उन से सनत्कुमार देवलोक के देव असख्यातगुना, २० उन से ईशान देवलोक के देव असख्यातगुने,

पुरिसा असखेज्जगुणा, सोधम्मकप्पे देव पुरिसा सखेज्जगुणा, भवणवासि देव पुरिसा असखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा असखेज्जगुणा, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा, वाणमतर देव पुरिसा सखेज्जगुणा, जोतिसिय देव पुरिसा सखेज्जगुणा ॥ २८ ॥ पुरिस वेदस्सण भते! कम्मस्स केवइय काल बंधठिती पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णेण अट्ठ सवच्छराणि, उक्कोसेण दस सागरोवम कोडाकोडीओ दस वाससयाइ अवाहा अवाधूणिया, कम्मट्ठिती कम्मणिसेओ ॥ २९ ॥ पुरिस वेदस्सण भते ! किं पगारे पण्णत्ते ?

२१ उस से सौधर्म देवलोक के देव असंख्यातगुने, २२ उन से भवनपति के देव पुरुष असंख्यातगुना, २३ उन से खेचर तिर्यंच पुरुष असंख्यातगुना, २४ उन से स्थलचर तिर्यंच पुरुष संख्यातगुना, २५ उन से जलचर तिर्यंच पुरुष संख्यातगुना, २६ उन से वाणव्यंतर देव पुरुष संख्यातगुना, २७ उन से ज्योतिषी देव पुरुष संख्यातगुना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! पुरुष वेद कर्म बन्ध की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य से आठ वर्ष (इस से कमी अच्छे बुरे अध्यवसाय का अभाव है) उत्कृष्ट दश सागरोपम कोडाकोडी उस में से एक वर्ष का जो इस का अबाधा काल है उतना कम मानना, इतनी कर्म बन्ध की स्थिति जानना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! पुरुष वेद

गोयमा ! वणदवग्गिजाल समाणे पण्णत्ते ॥ सेत पुरिसा ॥ ३० ॥ से किंतं णपुसगा २ तिविहा पण्णत्ता तंजहा—णेरइय णपुसका, तिरिक्खजोणिय णपुसका, मणुस्स णपुसका ॥३१॥ से किंत णेरइय णपुंसका २ सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा-रतणप्पमा पुढवि णेरइय णपुसका जाव अहे सत्तमा पुढवि णेरइय णपुसका ॥ सेत णेरइय णपुसका॥से किंत तिरिक्खजोणिय णपुसका? तिरिक्खजोणिय णपुसका पंचविहा पण्णत्ता तंजहा एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका,बेइंदिय, तेइंदिय चउरिंदिय तिरिक्ख-

का विषय किस प्रकार का होता है ? उत्तर—अहो गौतम ! दावानल की ज्वाला समान अर्थात् आरम काल में तीव्र कामाग्नि दाह होता है और फिर कभी पड़जावे ॥ ३० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक कितने प्रकार के कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ नारकी नपुंसक, २ तिर्यंच नपुंसक, और ३ मनुष्य नपुंसक ॥ ३१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक के कितने प्रकार कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! नरक नपुंसक के सात प्रकार कहे हैं, वे यथा रत्नप्रभा पृथ्वी यावत् तमस्तम पृथ्वी यह नरक नपुंसक के भेद जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! पांच प्रकार कहे हैं वे यथा—१ एकेन्द्रिय नपुंसक, २ बेइन्द्रिय नपुंसक, ३ तेइन्द्रिय नपुंसक, ४ चौरिन्द्रिय नपुंसक, और ५ तिर्यंच पंचेन्द्रिय

जोणिय णपुसका, पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजो-णिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका? बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका अणेगविहा पण्णत्ता सेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका॥एव तेइंदिया वि॥चउरिंदिया वि सेकिंत पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसगा ? पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका तिविहा पण्णत्ता तजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा साचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पंचिदिय

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—वे पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक इन नपुंसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह नपुंसकी होता है उस में एक ही भेद है वह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकिंत मणुस्स णपुंसका ? मणुस्स णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवका भेदो भाणियव्वो ॥ ३२ ॥ णपुंसकस्सणं भंते ! केवतियं कालंठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ नेरइय णपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं सव्वेसिं ठिती भाणियव्वा जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ तिरिक्खजोणिय नपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—अहो गौतम! मनुष्य नपुंसक के तीन प्रकार कहे हैं १ कर्मभूमी नपुंसक, २ अकर्मभूमी नपुंसक और ३ अन्तर द्वीप के मनुष्य नपुंसक ॥ ३२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन ! नपुंसक वेद की कितने काल की स्थिति कही है? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की सातवी नरक की अपेक्षा जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेंतीस सागर की यों अलग २ सब नारकी की स्थिति अलग २ कहदेना प्रश्न—अहो भगवन ! तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त

जोणिय णपुसका, पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका?बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका अणेगविहा पण्णत्तामेव बइंदिय तिरिक्खजोणियाणपुसका॥एव तेइंदियावि॥चउरिंदियावि सेकिंत पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसगा ? पचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका तिविहा पण्णत्ता तजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा साचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पचिंदिय

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक. इन नपुसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह नपुंसकी होता है उस में एक ही भेद है वह तिर्यंच पचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥ सेकिंत मणुस्स णपुमका ? मणुस्स णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अतरदीवका भेदो भाणियव्वो ॥ ३२ ॥ णपुसकस्सण भते ! केवतिय कालठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं ॥ नेरइय णपुसकस्सणं भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ सव्वेसिं ठिती भाणियव्वा जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ तिरिक्खजोणिय नपुसकस्सण भते । केवइयं काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त

प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—अहो गौतम! मनुष्य नपुंसक के तीन प्रकार कहे हैं १ कर्मभूमी नपुंसक, २ अकर्मभूमी नपुंसक और ३ अन्तर द्वीप के मनुष्य नपुंसक ॥ ३२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन ! नपुंसक वेद की कितने काल की स्थिति कही है? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की सातवी नरक की अपेक्षा जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेंतीस सागर की यों अलग २ सब नारकी की स्थिति अलग २ कहदेना प्रश्न—अहो भगवन ! तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त

जोणिय णपुसका, पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका? बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका अणेगविहा पण्णत्ता सेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका ॥ एवं तेइंदियावि ॥ चउरिंदियावि सेकिंतं पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसगा ? पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा सोचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पंचिंदिय

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—१ पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक इन नपुंसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह नपुंसक होता है उस में एक ही भेद है वह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्ख सव्वेसिं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ मणुस्स णपुसगस्सणं भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ कम्मभूमग भरहेरवय पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सणपुसकस्सवि तहेव, अकम्मभूमक मणुस्सणपुसकस्सण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अंतोमुहुत्त, साहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एवं जाव अन्तरदीवकाण ॥ ३३ ॥ णपुसएण भंते ! णपुसएति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण

भगवन् ! मनुष्य नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! क्षेत्र आश्रिय जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व कोटी वर्ष की और चारित्र धर्माचरन आश्रिय जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्षकी युगल नपुंसक नहीं होते हैं; परंतु युगल मनुष्यके उच्चार प्रस्रवणादि चवदह स्थान में जो समूच्छिम मनुष्य होते हैं उन में नपुंसक वेद पाता है उन की स्थिति अन्तरमुहूर्त की ही होती है और संहरण आश्रिय भी जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्ष की ही मानना ऐसे ही अंतरद्वीप मनुष्य तक कहदेना ॥ ३३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक का नपुंसक

उक्कोसेण पुव्वकोडी एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकस्सण भते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकस्सण भते केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीस वाससहस्साइ सव्वेसिं एगिंदिय णपुंसकाण ठिती भाणियव्वा ॥ बेइदिय तेइदिय चउरिंदिय णपुसकाण ठिती भाणियव्वा ॥ पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्सणं भते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥ एव जलयर तिरिक्ख, चउप्पद थलयर, उरगपरिसप्प, भुयगपरिसप्प, खहयर

की उत्कृष्ट पूर्व कोटि की प्रश्न- अहो भगवन्! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर-अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की, पृथ्वीकाय की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष, अप्काय की सात हजार वर्ष, तेउकाय की तीन अहोरात्रि, वायुकाय की तीन हजार वर्ष की, वनस्पतिकाय की दश हजार वर्ष की, बेइन्द्रिय की बारा वर्ष की, तेइन्द्रिय की ४९ दिन की, चौरिन्द्रिय की छ महीने की, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनी की क्रोड पूर्व की युगल तिर्यंच नपुंसक नहीं होते हैं इसलिये, और इन तिर्यंच की जघन्य स्थिति अन्तरमुहूर्त की जानना प्रश्न—अहो

काणय जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जकाल पण्णत्ता; पचेंदिय तिरिक्खजोणिय नपुसएण भते ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी पुहुत्त, एव जलयर तिरियचउप्पद थलयर उरपरिसप्प, महोयरगाणवि । मणुस्स णपुसकस्सण भते ? गोयमा! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडिय पुहुत्त, धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एव कम्म भूमभरहेरवय पुव्वविदह अवरविदेहेसुवि भाणियव्व, अकम्मभूमक मणुस्सणपुसएण भते !

जानना विशेष में पृथव्यादि चारों स्थावर की असंख्यात काल की, वनस्पति की अनंत काल की, तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटी वर्ष पृथक्त्व की (आठ भव पूर्व कोटी का जानना) इस प्रकार ही जलचर, स्थलचर, उरपरकी, भुजपरकी तथा महोरग तिर्यंच नपुंसक की स्थिति जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक की कायास्थिति कितने काल की है ? उत्तर—अहो गौतम ! क्षेत्र आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटी पृथक्त्व जानना. धर्माचरण आश्रिय जघन्य एक समय की उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व कोटी वर्ष की जानना इस ही प्रकार भरत एरवत क्षेत्र में तथा पूर्व पश्चिम महा विदेह के मनुष्य नपुसक की स्थिति जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुसक की स्थिति कितनी है ! उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य भी अंतर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट भी अंत-

एक समय॰ उक्कोसेण तरुकालो ॥ नेरइय णपुंसएण भंतेत्ति ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं, एवं पुढवीओ ठिती भाणियव्वा ॥ तिरिक्खजोणिय णपुंसएण भंतेत्ति ? गोयमा ! तिरिक्खजोणिय नपुंसएण जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो, एव एगिंदियनपुंसकस्स, वणस्सइ कायस्सवि एवमेव सेसाण जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण असंखेज्ज काल असंखेज्जाओ उस्सप्पिणिओ कालतो, खेत्तो असंखेज्जा लोया ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय नपुंस-

पने रहे तो कितने काल तक रहता है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक समय (उपशम श्रेणि से पडवाइ आश्रिय एक समय वेद को स्पर्श मनुष्य पूर्ण करे देव होवे इस आश्रिय) और उत्कृष्ट वनस्पति का काल मानना (आवलिका के असंख्यातवे भाग में जो समय की राशी है उस प्रमाण पुद्गल परावर्तन को वनस्पति का काल कहते हैं) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक का जीव नपुंसक नरक के नपुंसकपने रहे तो कितना काल रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम (नरक मरकर पुनः नरक का भव नहीं करता है इस आश्रिय मानना) ऐसे ही भवस्थिति जैसे सातों नरक का कहना प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक नपुंसकपने रहे तो कितने काल तक रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के जितना काल

एव सव्वासि जाव अहे सत्तमा तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्स जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेणं सागरोवम सतपुहुत्त सातिरगा॥एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकस्स जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दोसागरोवम सहस्साइ सखज्जवास मब्भहियाइ,पुढवि आउतेउ वाऊण जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सति कालो, वणस्सति काइयाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्को॰ सण असखेज्ज कालं जाव असखज्जालोया, सेसाण बेंदियादीण जाव खहयराण

मुहूर्त का उत्कृष्ट कुछ अधिक प्रत्येक सो सागरोपम ॥ एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक का जघन्य अन्तर मुहूर्त का उत्कृष्ट संख्यात वर्ष अधिक दो हजार सागरोपम का [त्रस काय की कायस्थिति इतने काल ही है इस लिये एकेन्द्रिय का इतना अन्तर पडे] पृथ्वी, पानी, तेऊ, वायु इन चार स्थावरों का जघन्य अन्तरमहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जानना वनस्पति काय का जघन्य अन्तर मुहूर्त का उत्कृष्ट असंख्यात काल का, और क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश प्रदेशों का समय २ एकेक प्रदेश एकेक समय में हरन करते उस में जितनी उत्सर्पिनी अवसर्पिनी होवे उतना वनस्पति के भव से मरकर दूसरे में उत्कृष्ट इतने काल रहने का समय है, फिर संसारी जीव नियमा से वनस्पति में अवतरे बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय तिर्यंच नपुंसक का तथा जलचर स्थलचर खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक का

गोयमा! जम्मणं पडुच जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त (अंतोमुहुत्तपुहुत्त) सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एवं सव्वेसिं जाव अंतरदीवगाण ॥ २४ ॥ णपुंसगस्सणं भंते! केवतियं काल अंतर होति? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सतपुहुत्त सातिरेग ॥ नेरइय णपुंसकस्सण भंते! केवतिय काल अंतरं होति? गो॰ जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तरुकालो ॥ रयणप्पमा पुढवि नेरइय णपुंसकस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तरुकालो ॥

मुहूर्त पृथक्त्व की, सहरन आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटि वर्ष की ऐसे ही हेमवय एरणवय हरीवास रम्यक्वास देवकुरु उत्तरकुरु में संमूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य की स्थिति मानना ॥२४॥ प्रश्न—अहो भगवन्! नपुंसक नपुंसकपने को छोडकर पीछा नपुंसक होवे उसके बीच में कितना अंतर पडे? उत्तर—अहो गौतम! जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट कुछ अधिक प्रत्येक सो सागरोपम का प्रश्न—अहो भगवन्! नारकी नपुंसक मरकर पीछा नारकी नपुंसक होवे उन के बीच में कितना अंतर पडे? उत्तर—अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त (नारकी पर तिर्यंच या मनुष्य का भव अन्तर्मुहूर्त की स्थिति का कर पीछा नरक में उत्पन्न होवे उस आश्रिय,) उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना अन्तर जानना इस ही प्रकार रत्नप्रभा आदि सातों ही नरक का अन्तर जानना ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक का जघन्य अन्तर

वणस्सतिकालो, सहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो; एवं जाव अंतरदीवगाति ॥ ३५॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय नपुंसकाणं तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं मणुस्स णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स णपुंसका, नरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय णपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढवि नेरइयं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

कुरु उत्तर कुरु तथा अंतरद्वीप के मनुष्य नपुंसक का अंतर मानना, तथा साहरन आश्रिय भी जघन्य उत्कृष्ट अंतर कहना ॥ ३५ ॥ अब पांच प्रकार से अल्पाबहुत कहते हैं (१) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक, २ तिर्यंच नपुंसक, और ३ मनुष्य नपुंसक इन में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य नपुंसक, क्यों कि श्रेणि के असंख्यातवे भाग में वर्तती जो आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाण है, २ उन से नरक नपुंसक असंख्यातगुना क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशी उस में रहा जो वर्ग मूल उस से गुनाकार करने से जितनी प्रदेश राशी होवे उतने प्रमान में घनाकार लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश हैं उतनी प्रमाणे हैं इस लिये और ३ उन से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने हैं क्यों कि निगोद के जीव अनंत हैं

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वनस्सतिकालो मणुस्स णपुंसकस्स खेत्तं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं, देसूणं एवं कम्मभूमगस्सवि भरहेरवयस्स पुव्वविदेह अवरविदेहकस्सवि ॥ अकम्मभूमक मणुस्स णपुंसकस्सणं भंते! केवतिय कालं अंतरं होति? गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

तथा सामान्य से मनुष्य नपुंसक का इन सब के नपुंसक वेद का अंतर जघन्य अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट अनंत काल का—वनस्पति काल जितना ॥ कर्मभूमि नपुंसक का क्षेत्र आश्रिय अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना धर्माचरन आश्रिय जघन्य एक समय [पश्चात् आश्रिय] उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति के काल जितना, यावत् देश कम आधा पुद्गल परावर्तन का, ऐसे ही भरत एरवत क्षेत्र, पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के कर्मभूमि मनुष्य नपुंसक का कहना प्रश्न—अहो भगवन्! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुंसक का कितना अंतर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! जन्म आश्रिय जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, क्षेत्र आश्रिय—जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना; ऐसे ही [illegible]

वणस्सतिकालो, सहरणं पडुच जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सतिकालो, एवं जाव अतरदीवगाचि ॥ ३५॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय नपुंसकाण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण मणुस्स णपुंसकाणय कयरे२ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स णपुंसका, नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय णपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढवि नेरइयं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

कुरु उत्तर कुरु तथा अंतरद्वीप के मनुष्य नपुंसक का अंतर मानना, तथा साहरन आश्रिय भी जघन्य उत्कृष्ट अंतर कहना ॥ ३९ ॥ अब पांच प्रकार से अल्पाबहुत कहते हैं (१) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक, २ तिर्यंच नपुंसक, और ३ मनुष्य नपुंसक इन में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य नपुंसक, क्यों कि श्रेणि के असंख्यातवे भाग में वर्तती जो आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाण है, २ उन से नरक नपुंसक असंख्यातगुना क्यों कि अगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशी उस में रहा जो वर्ग मूल उस से गुनाकार करने से जितनी प्रदेश राशी होवे उतने प्रमाण में घनाकार लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश हैं उतनी प्रमाण हैं इस लिये और ३ उन से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने हैं क्यों कि निगोद के जीव अनंत हैं

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वनस्सतिकालो मणुस्स णपुंसकस्स खेत्तं पडुच्च जहण्णाण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एग समय उक्कोसेण अणतकाल जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट, देसूण एवं कम्मभूमगस्सवि भरहेरवयस्स पुव्वविदेह अवरविदेहकस्सवि ॥ अकम्मभूमक मणुस्स णपुंसकस्सण भंते! केवतिय काल अतर होति? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण

तथा सामान्य मे मनुष्य नपुंसक का इन सब के नपुंसक वेद का अंतर जघन्य अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट अनंत काल का—वनस्पति काल जितना ॥ कर्मभूमि नपुंसक का क्षेत्र आश्रिय अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना धर्माचरन आश्रिय जघन्य एक समय [पश्चात् आश्रिय] उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति के काल जितना, यावत् देश ऊन आधा पुद्गल परावर्तन का, ऐसे ही भरत एरवत क्षेत्र, पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के कर्मभूमि मनुष्य नपुंसक का कहना प्रश्न—अहो भगवन्! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुंसक का कितना अंतर पडे? उत्तर—अहो गौतम! जन्म आश्रिय जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, संहरन आश्रिय—जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना, ऐसे ही हेमवंत हिरण्यवंत हरीवर्ष रम्यक्वर्ष देव-

जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा खहयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका, थलयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा, जलचर तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा, चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका विसेसाहिय तेइंदिय विसेसाहिया, बेइंदिय विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा पुढविकाइय एगेंदिय तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया, एवं आउ वाउ वणस्सति काइया एगेंदिय तिरिक्खजोणिय

चौरिन्द्रिय में पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक में व जलचर स्थलचर खेचर नपुंसक इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे खेचर नपुंसक, २ उस से स्थलचर नपुंसक संख्यातगुने, ३ उससे जलचर नपुंसक संख्यात गुने, ४ उस से चउरिन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक ५ उस से तेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ६ उस से बेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ७ उस से तेउकायिक एकेन्द्रिय नपुंसक असंख्यातगुने, ८ उस से पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ८ उस से अप्काय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ९ उस से वायुकाय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, और १० उस से वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने हैं प्रश्न-अहो भगवन् ! कर्मभूमि मनुष्य के नपुंसक, अकर्मभूमि मनुष्य नपुंसक, और अंतरद्वीप के नपुंसक में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे अंतरद्वीप के संमूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक, २ उस से देव कुरु

अहेसत्तमपुढवि नेरइय णपुंसका, छट्टपुढवि णेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, जाव दोच्च पुढवि नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, ॥ एतेसिणं भंते ! तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं पुढविकाइय एगिंदिय णपुंसकाणं जाव वणस्सकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं, बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं जलयर थलयर खहयराणय कयरे २ हिंतो

प्रश्न अहो भगवन् ! नरक के नपुंसक में रत्नप्रभा से लगाकर तमस्तम प्रभा तक परस्पर कौन २ अल्पबहुत, यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे नीचे की सातवी नरक के नपुंसक क्यों कि वे अति थोडी श्रेणि के असंख्यात भाग में रहे हुवे जो आकाश प्रदेश राशी होवे उस प्रमाण हैं २ उस से छठी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असंख्यात गुने, ४ उस से चौथी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने ५ उस से तीसरी नरक के नपुंसक असंख्यात गुने और उस से दूसरी नरक के नपुंसक असंख्यात गुने, ७ उस से प्रथम नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, इन सातों नरक में पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नेरीये से दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यात गुने हैं, क्यों कि कृष्ण पक्षी जीव दक्षिण दिशा में अधिक उत्पन्न होते हैं १ प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय

क्खजोणिय णपुसकाण जाव वणस्सति काइय एगिंदिय णपुसगाण, बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकाण जलयराण थलयराण खहयराणं मणुस्स णपुंसकाणं कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतर दीविकाणय कयरे२ जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा अहेसत्तम पुढवि नेरइय नपुसका, छट्ठ पुढवि नेरइय नपुसका असखेज्जगुणा जाव दोच्चा पुढवि नेरइय णपुसका असखेज्जगुणा, अतरदीवग मणुस्स णपुसका असखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिक दोवि सखेज्जगुणा, जाव पुव्वविदेह

भु मे अंतरद्वीप इन सब में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? उत्तर-अहो गौतम! १ सब से थोडे सातवी नरक के नपुसक, २ उस से छट्ठी के असख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असख्यातगुने, ४ उस से चौथी नरक के असंख्यातगुन ५ उस से तीसरी नरक के नपुसक असख्यातगुणा, ६ उस से दूसरी नरक के नपुसक असंख्यातगुने, ७ उस से अंतरद्वीप के नपुसक असख्यातगुने, ८ उस से देवकुरु उत्तरकुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य असख्यातगुने, ९ उस से हरिवास रम्यकवास के समूर्च्छिम नपुसक मनुष्य परस्पर तुल्य सख्यातगुने, १० उस से हेमवत एरणवय के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य पीछे से संख्यातगुने, ११ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य

णपुंसका अणतगुणा, ॥ एतेसिणं भंते ! मणुस्स णपुंसकाण कम्मभूमिकाण अकम्म-
भूमिक णपुंसकाण अतर दीवकाणय कतरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा
अंतरदीवगा अकम्मभूमग मणुस्स णपुंसका देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म
भूमगा दोवितुल्ला संखेज्जगुणा, एव जाव पुव्वविदह अवरविदेह कम्म
भूमग मणुस्सणपुंसगा दोवी संखेज्जगुणा ॥ ३९ ॥ एतेसिण भंते! नेरइय णपुंसकाणं
रयणप्पभा पुढवी नेरइय णपुंसकाण जाव अहे सत्तमपुढवि नेरइय णपुंसकाण
तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणियाण पुढविकाइय एगिंदिय तिरि-

उत्तर कुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य सख्यातगुने, ३ उस से हरिवास रम्यकवास के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुन, ४ उस से हेमवय एरणवय के समूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक परस्पर तुल्य सख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ६ उस से पूर्व महाविदेह के और पश्चिम महा विदेह के मनुष्य परस्पर तुल्य और भरत एरवत से सख्यातगुने अधिक ॥ ३९ ॥ (८) प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक रत्नप्रभा से सातवी नरक तक, तथा तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रिय यानिक पृथ्वीकाया से आरम कर यावत् वनस्पतिकाया तक; तथा बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिंद्रिय, पचेन्द्रिय में जलचर स्थलचर खेचर, और मनुष्य नपुंसक में कर्मभूमि अकर्म-

क्खजोणिय णपुसकाण जाव वणस्सति काइय एगिंदिय णपुसगाण, वेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकाण जलयराण थलयराण खहयराणं मणुस्स णपुंसकाण कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतर दीविकाणय कयरे२ जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा अहेसत्तम पुढवि नेरइय नपुसका, छट्ठ पुढवि नेरइय नपुसका असखेज्जगुणा जाव दोच्चा पुढवि नेरइय णपुसका असखेज्जगुणा, अतरदीवग मणुस्स णपुसका असखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिक दोवि सखेज्जगुणा, जाव पुव्वविदेह

मुखे अंतरद्वीप इन सब में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? उत्तर-अहो गौतम! १ सब से थोडे सातवी नरक के नपुसक, २ उस से छठी के असख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असख्यातगुने, ४ उस से चौथी नरक के असंख्यातगुन ५ उस से तीसरी नरक के नपुसक असख्यातगुणा, ६ उस से दूसरी नरक के नपुसक असख्यातगुने, ७ उस से अंतरद्वीप के नपुसक सख्यातगुने, ८ उस से देवकुरु उत्तरकुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य असख्यातगुने, ९ उस से हरिवास रम्यकवास के समूर्च्छिम नपुसक मनुष्य परस्पर तुल्य सख्यातगुने, १० उस से हेमवत एरणवय के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य पीछे से संख्यातगुने, ११ उस से भरतएरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य

णपुंसका अणतगुणा, ॥ एतेसिण भते ! मणुस्स णपुंसकाण कम्मभूमिकाण अकम्म-
भूमिक णपुंसकाण अंतर दीवकाणय कतरे२जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा
अतरदीवगा अकम्मभूमग मणुस्स णपुंसका देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म
भूमगा दोवितुल्ला सखेज्जगुणा, एव जाव पुव्वविदह अवरविदेह कम्म
भूमग मणुस्सणपुंसगा दोवी सखेज्जगुणा ॥ ३६ ॥ एतेसिणं भते! नेरइय णपुंसकाणं
रयणप्पभा पुढवी नेरइय णपुंसकाण जाव अहे सत्तमपुढवि नेरइय णपुंसकाण
तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुढविकाइय एगिंदिय तिरि-

उत्तर कुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य सख्यातगुने, ३ उस से हरिवास रम्यकवास के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य सख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के समूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ६ उस से पूर्व महाविदेह के और पश्चिम महा विदेह के मनुष्य परस्पर तुल्य और भरत एरवत से सख्यातगुने अधिक ॥ ३६ ॥ (८) प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक रत्न प्रभा से सातवी नरक तक, तथा तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रिय यानिक पृथ्वीकाया से आरंभ कर यावत् वनस्पतिकाया तक; तथा बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिंद्रिय, पंचेन्द्रिय में जलचर स्थलचर खेचर, और मनुष्य नपुंसक में कर्मभूमि अकर्म-

वेदस्सणं भंते ! केवइकाल ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागेण ऊणगा, उक्कोसेण वीस सागरोवम कोडाकोडीओ, दोन्निय वाससहस्साइं, अबाधा अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेगो ॥ ३८ ॥ णपुंसकवेदेण भंते ! किं पकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! महाणगरदाह समाणे पण्णत्ते समणाउसो ! सेत्त णपुंसगा ॥ ३९ ॥ एतेसिण भंते ! इत्थीण पुरिसाणं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहिया ? गोयमा !

उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम के सात भाग करे उस में के दो भाग उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम जितनी और उत्कृष्ट वीस क्रोडाक्रोड सागरोपम प्रमाण अबाधा काल दो हजार वर्ष का अर्थात् नपुंसक वेद मोहनीय कर्म का बन्ध किये बाद उत्कृष्ट दो हजार वर्ष पीछे यह नपुंसक भाव को प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक वेद का विषय (वेदोदय का विकार) किस प्रकार का कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! जिस प्रकार बहुत बडा नगर अग्नि कर प्रज्वलित हुवा बहुत काल तक प्रज्वलित रहता है, वैसे ही नपुंसक का वेदोदय सदैव प्रज्वलित रहता है, प्रश्न अहो श्रमण आयुष्मन्तो ! ऐसा नपुंसक वेदोदय कहा है इति नपुंसक वेदाधिकार ॥ ३९ ॥ अब तीनों वेद के आश्रिय आठ प्रकार से अल्पाबहुत्व कहते हैं इन आठों में प्रथम सामान्य प्रश्न अहो भगवन् ! स्त्री पुरुष और नपुंसक इन में

अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्स णपुंसका दोवि संखेज्जगुणा, रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, खहयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, थलयर संखेज्जगुणा जलयर संखेज्जगुणा, चतुरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिया, बेइंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइय एगिंदिय णपुंसगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया एगिंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, आउकाइया णपुंसगा विसेसाहिया, वाउकाइय विसेसाहिया वणस्सइकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ २७ ॥ णपुंसक

पीछे वैसे संख्यातगुने, १२ उस से पूर्व विदेह पश्चिम विदेह के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १३ उस से प्रथम नरक के नेरीये नपुंसक असंख्यातगुने, १४ उस से खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक असंख्यातगुने, १५ उस से स्थलचर तिर्यंच नपुंसक संख्यातगुने, १६ उस से जलचर तिर्यंच नपुंसक असंख्यातगुने, १७ उस से चौरिन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, १८ उस से तेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक १९ उस से बेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक. २० उस से तेउकाय असंख्यातगुने, २१ उस से पृथ्वीकाय नपुंसक विशेषाधिक, २२ उससे अपकाय नपुंसक विशेषाधिक, २३ उससे वायुकाय नपुंसक विशेषाधिक और २४ उससे वनस्पतिकाय नपुंसक अनंतगुने ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! नपुंसक वेद कर्मकी स्थिति

वेदस्सणं भंते ! केवइकाल ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागाण ऊणगा, उक्कोसेण वीस सागरोवम कोडाकोडीओ, दोण्णिय वाससहस्साइं, अबाधा अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेगो ॥ ३८ ॥ णपुंसकवेदेण भंते ! किं पकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! महाणगरदाह समाणे पण्णत्ते समणाउसो ! सेत्त णपुंसगा ॥ ३९ ॥ एतेसिणं भंते ! इत्थीणं पुरिसाणं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहिया ? गोयमा !

उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम के सात भाग करे उस में के दो भाग उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम जितनी और उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम प्रमाण अबाधा काल दो हजार वर्ष का अर्थात् नपुंसक वेद मोहनीय कर्म का बन्ध किये बाद उत्कृष्ट दो हजार वर्ष पीछे यह नपुंसक भाव को प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक वेद का विषय (वेदोदय का विकार) किस प्रकार का कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! जिस प्रकार बहुत बड़ा नगर अग्नि कर प्रज्वलित हुवा बहुत काल तक प्रज्वलित रहता है, वैसे ही नपुंसक का वेदोदय सदैव प्रज्वलित रहता है, प्रश्न अहो श्रमण आयुष्मन्तो ! ऐसा नपुंसक वेदोदय कहा है इति नपुंसक वेदाधिकार ॥ ३९ ॥ अब तीनों वेद के आश्रिय आठ प्रकार से अल्पाबहुत्व कहते हैं इन आठों में प्रथम सामान्य प्रश्न अहो भगवन् ! स्त्री पुरुष और नपुंसक इन में

सव्वत्थोवा पुरिसा, इत्थीओ संखेज्जगुणाओ, णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीण तिरिक्खजोणिय, पुरिसाण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिय पुरिसा, तिरिक्खजोणिइत्थीओ संखेज्जगुणाओ, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! मणुस्सित्थीण मणुस्स पुरिसाण मणुस्स णपुंसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स पुरिसा मणुस्सित्थीओ

कौन २ अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे पुरुष वेदी, उस से स्त्री वेदी संख्यातगुन हैं, उस से नपुंसक वेदी अनंतगुने हैं (२) अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक स्त्री पुरुष और नपुंसक में कौन २ कमी ज्यादा विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे तिर्यंच योनिक पुरुष, २ उस से तिर्यंचनी स्त्रीयों संख्यातगुनी और ३ उस से तिर्यंच नपुंसक अनंतगुने (३) प्रश्न अहो भगवन् ! मनुष्य की स्त्री पुरुष और नपुंसक में कौन २ ज्यादा कमी विशेषाधिक है ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे पुरुष हैं, २ उस से मनुष्य की स्त्री संख्यातगुनी, सत्तावीसगुनी है ३ उस से मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुन, संमूर्च्छिम आश्रिय (४) प्रश्न—अहो भगवन् ! देवकी स्त्रीयों पुरुष और (देवता में नपुंसक वेद नहीं पाता है एकान्त नरक विकाकी है) नारकी के नपुंसक इन में अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक कौन २ हैं ?

सखेज्जगुणाओ, मणुस्स णपुसका असखेज्जगुणा ॥ एतेसिण भते ! देवित्थीण देव पुरिसाण- नेरइय नपुसकाणय, कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थे वा नेरइय नपुसगा, देव पुरिसा असखज्जगुणा, देवित्थीओ सखेज्जगुणीओ ॥ एतेसिण भते तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणिय पुरिसाण तिरिक्खजोणिय नपुसगाणं, मणुस्सित्थीण मणुस्स पुरिसाण मणुस्सनपुसगाण, देवित्थीण देव पुरिसाण, नेरइय नपुसकाण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स पुरिसा,

उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे नरक के नपुंसक (नरक में स्त्री वेद पुरुष वेद का अभाव है) क्यों के अगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशी का प्रथम वर्ग मूल का गुना करने से जितने प्रदेश की राशी होवे उस का घन किया जो लोक उस की प्रदेश श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश होवे उतने प्रमाण में उन का प्रमाण है, २ उन से देव पुरुष असख्यात गुने, क्यों कि असख्यात योजन की क्रोडाक्रोडी प्रमान सूची में जितने आकाश प्रदेश होवें उतने घनकरे हुवे लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश होवे उस प्रमाण में उन का प्रमान है, और उस से देवता की स्त्री सख्यातगनी, क्यों कि बत्तीस गुनी, है (४) प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक स्त्रीयों पुरुषो तथा नपुंसक वैसे ही मनुष्य योनिक स्त्री पुरुष तथा नपुंसको, वैसे ही देवकी स्त्री तथा पुरुषों और वैसे ही नारकी के नपुंसको इन में कौन २ कमी ज्यादा

मणुस्सित्थीओ संखेज्जगुणाओ, मणुस्स णपुंसका असंखेज्जगुणा, नरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय पुरिसा असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणित्थीयाओ संखेज्जगुणाओ, देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतासिणं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीणं जलयरीणं, थलयरीणं खहयरीण तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं पुढवि काइय एगिंदिय तिरिक्ख-

तथा विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे मनुष्य पुरुष, २ उस से मनुष्य स्त्रियों संख्यात गुनी, ३ उस से मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुन, ४ उस से नारकी नपुंसक असंख्यातगुने, क्योंकि संख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश की राशी प्रमाण है ५ उस से तिर्यंच योनिक पुरुष असंख्यातगुने, क्यों कि प्रतर के असंख्यातवे भाग वर्तती जो असंख्यात श्रेणि प्रदेश की राशी उस प्रमाण हैं, ६ उससे तिर्यंच योनिक स्त्री संख्यातगुनी क्यों कि तीन गुनी हैं, ७ उस से देव पुरुष असंख्यातगुने क्यों कि वृहत् बडी प्रतर के असंख्यातवे भाग वर्तती जो असंख्यात श्रेणि प्रदेश आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाणे हैं, ८ उस से देवीयों संख्यातगुनी क्यों कि बत्तीसगुनी है, ९ उस से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने, निगोद आश्रिय (५) प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक जीवों जलचर की

जोणिय णपुंसकाण जाव वणस्सतिकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय नपुंसगाणं, बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण, तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण जलयराण थलयराण खहयराण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्ज गुणाओ, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखज्जगुणा थलयर तिरिक्खजोणित्थीओ संखेज्जगुणाओ, जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा, जलयर तिरिक्ख-

स्थलचर की तथा खेचर की स्त्रियों, तैसे ही तिर्यंच पचेंद्रिय जलचर स्थलचर तथा खेचर पुरुषों, तैसे ही तिर्यंच नपुंसक एकेन्द्रिय पृथ्वीकाया यावत् वनस्पतिकाया, बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय नपुंसक, जलचर स्थलचर खेचर नपुंसक, इन सब में कौन २ अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक है? उत्तर—अहो गौतम! १ सब से थोडे खेचर पुरुष, २ उस से खेचरनी संख्यातगुनी, ३ उस से स्थलचर पुरुष संख्यातगुने, ४ उस से स्थलचरनी संख्यातगुनी, ५ उस से जलचर पुरुष संख्यातगुने, ६ उस से जलचरनी संख्यातगुनी, ७ उस से खेचर नपुंसक संख्यातगुने, ८ उस से स्थलचर नपुंसक संख्यातगुने, ९ उस से जलचर नपुंसक संख्यातगुने, १० उस से चउरिन्द्रिय विशेषाधिक, ११ उस से तेइन्द्रिय विशेषाधिक, १२ उस से बेइन्द्रिय विशेषाधिक, १३ उस से तेउकाया असंख्यातगुनी, १४ उस से पृथ्वीकाया विशे

जोणित्थीयाओ संखेज्जगुणाओ खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा, थलयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय नपुसगा संखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय णपुसका पंचेंदिया सखेज्जगुणा चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुसका विसेसाहिय, बेइंदिय णपुसगा विसेसाहिया, तउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका असंखेज्जगुणा, पुढवि णपुसका विसेसाहिया आउ नपुसका विसेसाहिया, वाउनपुसका विसेसाहिया वणप्फइ एगिंदिय णपुसका

पाधिक, १६ उस से अपूकाया विशेषाधिक, १८ उस से वायुकाया विशेषाधिक, १७ उस से वनस्पति-काया एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने (३) प्रश्न—अहो भगवन् ! कर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अकर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अंतरद्वीप मनुष्य पुरुषों, सामान्यपने नपुंसकों, कर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अकर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अंतरद्वीप मनुष्य नपुंसकों, इन में कौन २ अल्प बहुत यावत् विशेष है ? उत्तर—अहो गौतम ! अंतरद्वीप के मनुष्य स्त्रीयों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और सब से थोडे हैं क्यों कि युगलिये हैं, २ उससे देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य अंतरद्वीप से संख्यातगुने अधिक, ३ उस से हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य स्त्री पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत के मनुष्य पुरुषों संख्यातगुने,

अणंतगुणा ॥ एतासिणं भंते ! मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाणं मणुस्स पुरिसाणं कम्मभूमिकाणं अकम्मभूमिकाणं अंतरदीविकाणं मणुस्स णपुंसकाणं कम्मभूमगाणं, अकम्मभूमगाणं अंतरदीविकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! अंतरदीवक अकम्मभूमक मणुस्सित्थीयाओ मणुस्स पुरिसाए एतेसिणं दोण्णि तुल्ला सव्वत्थोवा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमक मणुस्सित्थीयाओ मणुस्स पुरिसाओ एतेसिणं दोण्णावि तुल्ला संखज्जगुणा, हरिवास रम्मकवास अकम्म-

६ उस से भरत एरवत क्षेत्र की स्त्रीयों परस्पर तुल्य और संख्यातगुनी क्यों कि सत्तावीस गुनी है ७ उस से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के पुरुषों परस्पर तुल्य भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक, ८ उस से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह स्त्रीयों परस्पर तुल्य उस से संख्यातगुनी अधिक हैं क्योंकि सत्ताइस गुनी है, ९ उस में अकर्मभूमि के मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुने, १० उस से देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य नपुंसक दोनों असंख्यातगुने अधिक, ११ उस से हरीवास रम्यक वास के मनुष्य नपुंसकों दोनों परस्पर तुल्य संख्यातगुने अधिक, १२ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य नपुंसकों दोनों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १३ उस से भरतैरावत के मनुष्य नपुंसको परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १४ उन से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के मनुष्य नपुंसको परस्पर तुल्य भरतएरावत से संख्यातगुने अधिक [७] प्रश्न—अहो भगवन् ! देवता की स्त्रीयों सामान्य

जोणित्थीयाओ सखेज्जगुणओ खहयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका, संखेज्जगुणा, थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिय नपुंसगा संखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका पचेंदिया संखेज्जगुणा चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिय, बेइंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, पुढवि णपुंसका विसेसाहिया आउ नपुंसका विसेसाहिया, वाउनपुंसका विसेसाहिया वणप्फइ एगिंदिय णपुंसका

पाधिक, १५ उस से अप्काया विशेषाधिक, १६ उस से वायुकाया विशेषाधिक, १७ उस से वनस्पति-काया एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने (६) प्रश्न—अहो भगवन् ! कर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अकर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अंतरद्वीप मनुष्य पुरुषों, सामान्यपने नपुंसकों, कर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अकर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अंतरद्वीप मनुष्य नपुंसकों, इन में कौन २ अल्प बहुत यावत् विशेष है ? उत्तर—अहो गौतम ! अंतरद्वीप के मनुष्य स्त्रियों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और सब से थोडे हैं क्यों कि युगलिये हैं, २ उससे देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य अंतरद्वीप से संख्यातगुने अधिक, ३ उस से हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य स्त्री पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत के मनुष्य पुरुषों संख्यातगुने,

असखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्स णपुसका दोवि सखेज्जगुणा, एव तहेव जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमक मणुस्स णपुसका दोवि सखेज्जगुणा ॥ एतासिण भते ! देवित्थीण भवणवासीण वाणमतरीण जोइसिण वेमाणिणीण देवपुरिसाण भवणवासीण जाव वेमाणियाण सोधम्मकाण जाव गेविज्जकाण अणुत्तरोववाइयाण, नेरइय णपुसकाण रयणप्पभा पुढवि नेरइय

नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १२ उस से आठवे सहस्रार देवलोक के देवता असख्यातगुने, १३ उस से सातव महाशुक्र देवलोक के देवता असख्यातगुने, १४ उस से पांचवी नरके नेरीये असख्यातगुने, १५ उस से छठे लांतक देवलोक के देव असख्यातगुने, १६ उस से चौथी नरक के नेरीये असख्यातगुने १७ उस से पांचव देवलोक क देवता असख्यातगुने, १८ उस से तीसरी नरक के नेरीये असख्यातगुन, १९ उस से चौथे महेन्द्र देवलोक के देवता असख्यातगुने, २० उस से तीसरे सनत्कुमार देवलोक के देवता असख्यातगुने, २१ उस से दूसरी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २२ उस से दूसरे देवलोक के देवता असख्यातगुने, २३ उस से दूसरे देवलोक की देवी सख्यातगुनी, २४ उस से प्रथम देवलोक के देवता सख्यात गुने, २५ उस से प्रथम देवलोक की देवी संख्यातगुनी, २६ उस से भवनपति देवता असख्यात

भूमक मणुस्सित्थीयाओ मणुस्स पुरिसाय एतेण दोण्णिवि तुल्ला सखेज्जगुणा, हमवते हेरण्णवते अकम्मभूमक मणुस्सित्थीओ मणुस्स पुरिसाय दोवितुल्ला सखेज्जगुणा, भरहेरवत कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा, भरहेरवय मणुस्सित्थीयाओ दोवि सखेज्जगुणा, पुव्वविदेह अवरविदह कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा, पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि सखेज्जगुणा, अतरदीवग अकम्मभूमग मणुस्स णपुसका

पने, भवनपति की स्त्रीयों वाणव्यन्तर की स्त्रीयों ज्योतिषी की स्त्रीयों तथा वैमानिक की स्त्रीयों तथा देवता पुरुषो भवनपति से वैमानिक तक तथा सौधर्म देवलोक से लगाकर सर्वार्थसिद्ध तक, तथा नारकी नपुसकों रत्नप्रभा से सातवी नरक तक इन सब में कौन २ कम ज्यादा बराबर विशेषाधिक हैं ? उत्तर अहो गौतम ! १ सब से थोडे अनुत्तर विमान वासी देव पुरुषों, २ उन से ऊपर की ग्रैवेयक के देवता सख्यातगुने, ३ उस से मध्य की ग्रैवेयक के देवता सख्यातगुने, ४ उस से नीचे के ग्रैवेयक के देवता सख्यातगुने, ५ उस से बारवे अच्युत देवलोक के देवता सख्यातगुने, ६ उस से इग्यारवे आरन देवलोक के देवता सख्यातगुने, ७ उस से दशवे प्राणत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ८ उस से नववे आनत देवलोक के देवता संख्यातगुना, ९ उस से सातवी नारकी के नेरीये नपुसक असख्यातगुना, १० उस से छठी

असंखेज्जगुणा, बभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, तच्चाए पुढवीए नेरइया असं-
खेज्जगुणा महिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, सणकुमारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा
दोच्चा पुढविनेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देव पुरिसा असंखेज्जगुणा ईसाणे,
कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणीओ सोधम्मे कप्पे देवपुरिसा, संखेज्जगुणा, सोधम्मे कप्पे देवि-
त्थियाओ संखेज्जगुणाओ भवनवासि देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, भवणवासि देवित्थियाओ
संखेज्जगुणीओ, इमीसे रयणप्पभा पुढवि नेरइया असंखेज्जगुणा, वाणमंतर देवपुरिसा असं-

मनुष्य की स्त्रीयों तथा मनुष्य पुरुषों, कर्मभूमी अकर्मभूमी अंतर्द्वीप के पुरुषों, देवता की स्त्रीयों भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी तथा प्रथम दूसरे देवलोक की स्त्रीयों, तथा देव पुरुषों भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी सौधर्म देवलोक यावत् सर्वार्थ सिद्ध तक के देवता नरक के नपुंसकों तथा रत्नप्रभा से यावत् तमस्तमः प्रभा नरक के नेरीये, इन में कौन २ किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! १ सब से थोडे अंतर्द्वीप के मनुष्य और स्त्रीयों परस्पर तुल्य है, २ देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्रीयों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और अंतर्द्वीप से संख्यातगुने अधिक हैं, ३ हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्रीयों और मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और कुरु क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ४ हेमवय

-णपुंसकाण जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइय णपुंसगाण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववातिया देवपुरिसा, उवरिमगेवेज्जा देवपुरिसा संखेज्जगुणा, तहेव जाव आणतकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा, अहे सत्तमाए पुढविए नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, छट्ठीए पुढवीए नेरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा, सहस्सारेकप्पे देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पेदेवा असंखेज्जगुणा, पंचमाए पुढवीए नरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा, लंतएकप्पे देवा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पुढवीए नेरइय णपुंसका

गुने, २७ उस से भवनपति की देवीयों संख्यातगुनी, २८ उस से पहिली नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २९ उस से वाणव्यन्तर देवता असंख्यातगुने, ३० उस से वाणव्यन्तर की देवीयों संख्यातगुनी, ३१ उस से ज्योतिषी देवता संख्यातगुने, ३२ उस से ज्योतिषी की देवी संख्यातगुनी (८) प्रश्न—अहो भगवन्! तिर्यंच योनिकी स्त्रीयों जलचर स्थलचर और खेचर की स्त्रीयों, तिर्यंच योनिक पुरुष, जलचर स्थलचर और खेचर पुरुष, तिर्यंच योनिक नपुंसक पृथ्वीकाय—अपकाय—तेउकाय—वायुकाय वनस्पतिकाया तिर्यंच योनिक नपुंसक, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय नपुंसक, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक जलचर स्थलचर और खेचर नपुंसक, कर्मभूमी मनुष्य की अकर्मभूमी मनुष्य की चार अन्तर्द्वी-

संहयराण मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाण अंतरदीवयाण मणुस्स णपुंसकाण, पुरिसाण कम्मभूमकाण अकम्मभूमकाणं अनरदीवकाण मणुस्स णपुंसकाण, कर्मभूमिकाण अकर्मभूमिकाण अंतरदीवकाण, देवित्थीण भवणवासिणीण वाण- मंतरीणं जोतिसीण वेमाणिणीण, देवपुरिसाण भवणवासीण वाणमंतराण जोतिसि- याण वेमाणियाणं, सोधम्मकाणं जाव गेविज्जकाणं, अणुत्तरोववाइयाण, नरइय णपुंसकाणं रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुंसकाण जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइय णपुंसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! अंतरदीवक अकम्मभूमिक मणुस्सित्थीओ मणुसपुरिसय एतेण दोवितुल्ला

सख्यातगुने, १३ उन से बारवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १४ उन से इग्यारहवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १५ उन से दशवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १६ उन से नववे देवलोक के देवता सख्यातगुने, १७ उन से सातवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १८ उन से छठी नरक के नेरीये असं- ख्यातगुने, १९ उन से आठवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २० उन से सातवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २१ उन से पांचवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २२ उन से छठी देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २३ उन से चौथी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २४ उन से पांचवे देवलोक के देवता

सेज्जगुणा वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवपुरिसा संखेज्जगुणा, जोतिसिय देवित्थीओ संखेज्जगुणाओ॥एतेसिणं भंते! तिरिक्खजोणित्थिणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं जाव वणस्सइकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसकाणं बेइंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं तेइंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसकाणं चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं, पंचेंदिय णपुंसकाणं, जलयराणं थलयराणं

एरणवय क्षेत्र के मनुष्य स्त्रीयों और मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और वास क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ६ भरत एरवत क्षेत्र के मनुष्य के पुरुषों परस्पर तुल्य है और वर्ष क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ६ भरत एरवत क्षेत्र के मनुष्य की स्त्रीयों परस्पर तुल्य है और पुरुषों से संख्यातगुनी अधिक हैं, ७ पूर्व विदेह पश्चिम विदेह के पुरुषों परस्पर तुल्य है और भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक है, ८ पूर्व विदेह पश्चिम विदेह की मनुष्य स्त्रीयों परस्पर तुल्य है और पुरुषों से संख्यातगुनी अधिक है, ९ उन से अनुत्तर विमान के देवता संख्यातगुने, १० उन से ऊपर की त्रिक के देवता संख्यातगुने, ११ उन से मध्य की त्रिक के देवता संख्यातगुने, १२ उन से नीचे की त्रिक के देवता

खहयराण मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाण अतरदीवयाण मणुस्स पुरिसाणं कम्मभूमकाणं अकम्मभूमकाण अनरदीवकाण मणुस्स णपुसकाण, कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाणे अतरदीवकाण, देवित्थीण भवणवासिणीण वाण-मंतरीणं जोतिसीण वेमाणिणीणं, देवपुरिसाण भवणवासीण वाणमंतराण जोतिसि-याण वेमाणियाण, सोधम्मकाण जाव गेविज्जकाणं, अणुत्तरोववाइयाण, नरइय णपुसकाण रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुसकाण जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइय णपुसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! अतरदीवक अकम्मभूमिक मणुस्सित्थीओ मणुसपुरिसय एतेण दोवितुल्ला

संख्यातगुने, १३ उन से बारवे देवलोक के देवता सख्यातगुने, १४ उन से इग्यारवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १५ उन से दशवे देवलोक के देवता सख्यातगुने, १६ उन से नववे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १७ उन से सातवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १८ उन से छठी नरक के नेरीये असं-ख्यातगुने, १९ उन से आठवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २० उन से सातवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २१ उन से पांचवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २२ उन से छठी देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २३ उन से चौथी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २४ उन से पांचवे देवलोक के देवता

भवणवासि देविस्थियाओ संखेज्जगुणाओ, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा असंखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा, थलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा, जलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, वाणमंतर देवपुरिसा संखेज्जगुणा, वाणमंतर देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, जोइसिय देवपुरिसा संखेज्जगुणा जोइसिय देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा

४४ उन से स्थलचर पुरुष संख्यातगुने, ४५ उन से स्थलचरनी संख्यातगुनी, ४६ उन से जलचर पुरुष असंख्यातगुना, ४७ उन से जलचरनी संख्यातगुनी, ४८ उन से वाणव्यन्तरदेव संख्यातगुना, ४९ उन से वाणव्यन्तर की देवी संख्यातगुनी, ५० उन से ज्योतिषी देव संख्यातगुने, ५१ उन से ज्योतिषी की देवी संख्यातगुनी, ५२ उन से खेचर तिर्यंच नपुंसक संख्यातगुना, ५३ उन से स्थलचर तिर्यंच नपुंसक संख्यातगुना, ५४ उन से जलचर नपुंसक संख्यातगुना, ५५ उन से चौरिन्द्रिय विशेषाधिक, ५६ उन से तेइन्द्रिय विशेषाधिक, ५७ उन से बेइन्द्रिय विशेषाधिक, ५८ उन से तेउकाया असंख्यातगुना,

थलयर णपुसका सखेज्जगुणा जलयर णपुंसका संखेज्जगुणा, चउरिंदिय णपुंसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिया, बेइंदिया णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असखेज्जगुणा, पुढविकाइया णपुंसगा विसेसाहिय, आउकाइया णपुंसगा विसेसाहिया, वाउकाइया णपुंसका विसेसाहिया, वणस्सइकाइया एगिंदिए तिरिक्खजोणिय णपुंसका अनंतगुणा ॥ ४० ॥ इत्थीणं भंते ! केवतिय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! एगेणं आदेसेणं जहा पुव्विं भाणिय, एवं पुरिसस्सवि णपुंसकस्सवि संचिट्ठणा पुणरवि तिण्हपि जहा पुव्विं भाणिया अंतर तिण्हपि जहा पुव्विं भणिय, तिरिक्खजोणित्थियाओ तिरिक्खजोणिय पुरिसेहिंतो तिगुणाओ तिरुवाहियाओ, मणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसेहिंतो सत्तावीसइगुणाओ

५१ उस से पृथ्वीकाया विशेषाधिक, ६० उस से अप्काया विशेषाधिक, ६१ उस से वायुकाया विशेषाधिक, ६२ उस से वनस्पतिकाया एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! स्त्री वेद की कितने काल की स्थिति है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार पहिले एकादेश आदेशक कही वैसे ही यहां भी स्त्री पुरुष नपुंसक वेद की अलग २ स्थिति कह देना वैसे ही अंतर भी कह देना ॥४२॥

स वत्तीसइरूत्ताहियाओ देविस्थियाओ देवपुरिसेहितो, मणुस्सीओ सत्तावीसगुणाओ सत्तावीसइरूत्ताहियाओ तिविहस्स होइ भेदो ठिई सचिट्ठणंतरप्पाबहु वेयाण बंधठिई वेदेतहाकिंपगारय ॥ सेत्त तिविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता॥इति जीवाभिगम वितिओ पडिवत्तीओ सम्मत्त॥ २॥ *

तिर्यंचणी तिर्यंच से तिगुनी, मनुष्यणी मनुष्य से सत्तावीसगुनी, और देवांगना देवता से बत्तीसगुनी जानना यह १ वेद के भेद, २ स्थिति, ३ संचिट्ठन, ४ अंतर, ५ अल्पाबहुत, ६ बन्ध स्थिति, ७ और विषय यह सात द्वार कर वेद नामक जीवाभिगम शास्त्र की दूसरी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥ २ ॥ ० ०

॥ तृतिया पडिवत्ति ॥

तत्थ जे ते एव माहसु चउविधा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, ते एव माहसु तजहा—नेरतिया, तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा, देवा ॥ १ ॥ से कित नेरइया ? नरइया सत्तविधा पण्णत्ता तजहा—पढम पुढवि नेरइया, दोच्चा पुढवि नेरइया, तच्चा पुढवि नेरइया, चउत्था पुढवि नेरइया, पचमा पुढवि नेरइया, छट्ठा पुढवि नेरइया, सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ २ ॥ पढमेण भते ! पुढवी किं नामा किं गोत्ता

अब तीसरी प्रतिपत्ति कहते हैं जो ऐसा कहते हैं कि चार प्रकार के ससारी जीवों हैं वे ऐसा कहते हैं कि नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता ये चार प्रकार के जीवों हैं ॥ १ ॥ प्रश्न—नारकी किसे कहते हैं ? उत्तर—नारकी के सात भेद कहे हैं जिन के नाम प्रथम पृथ्वी के नारकी, दूसरी पृथ्वी के नारकी, तीसरी पृथ्वी के नारकी, चौथी पृथ्वी के नारकी, पांचवी पृथ्वी के नारकी, छठी, पृथ्वीके नारकी व सातवी पृथ्वी के नारकी ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! प्रथम पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! प्रथम पृथ्वी का नाम घम्मा और गोत्र रत्नप्रभा है + प्रश्न—अहो भगवन् !

+ जो अनादि काल से अर्थ रहित प्रसिद्धिमें आये हैं उसे नाम कहना और अर्थ सहित होवे सो गोत्र है

पण्णत्ता ? गोयमा ! घंमा नामेण रयणप्पभा गोत्तेणं ॥ दोच्चाण भंते ! पुढवी किं नाम किं गोत्ता ? गोयमा ! वंसा नामेण सक्करप्पभा गोत्तेण ॥ एवं एतेण अभिलावेण सव्वासिं पुच्छा नामाणि इमाणि सेला तच्चा, अंजणा चउत्था, रिट्ठा पंचमा, मघा छट्ठा, माघवती सत्तमा, तमतमा गोत्तेण पण्णत्ता ॥ २ ॥ इमाणं रयणप्पभा पुढवी केवतिया बाहल्लेण पण्णत्ता ? गोयमा ! इमाणं रयणप्पभा पुढवी असीउत्तरं जोयण सयसहस्स

दूसरी पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! दूसरी पृथ्वी का वंशा नाम व शर्कर प्रभा गोत्र है यों इस अभिलाप से सब का कहना तीसरी पृथ्वी का सेला नाम व बालु प्रभा गोत्र है चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र, पांचवी पृथ्वी का रिष्टा नाम व धूमप्रभा गोत्र है छठी पृथ्वी का मघा नाम व तम प्रभा गोत्र है और सातवी पृथ्वी का माघवती नाम व तमस्तमः प्रभा गोत्र है ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड कितनी जाडाइ में है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख अस्सी हजार योजन का जाडा है ऐसे प्रभाकर आगे भी जानना अर्थात् शर्कर प्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का जाडपना है, बालुक प्रभा का एक लाख अठाइस हजार योजन का जाड पना है, पंकप्रभा का एक लाख वीस हजार योजन का जाडपना है, धूमप्रभा का एक लाख अठारह हजार

बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥ एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाथा—अणुगतव्वा आसीत बत्तीस अट्ठावीसं-सहेव वीसच अट्ठारस सोलसग अट्ठुत्तरमेव हेट्ठिमया ॥४॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभा पुढवी कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! तिविधा पण्णत्ता तंजहा—खरकंडे, पंकब-हुले कंडे, आव बहुलेकंडे ॥५॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते तंजहा—रयण, वइरे, वेरुलिए लोहितक्खे, मसारगल्ले हंसगब्भे पुलाए, सोगंधिए, जोतिरसे, अंजणे, अंजणपुलये, रयते, जात

योजन का जाडपना है, तमःप्रभा का एक लाख सोलह हजार योजन का जाडपना है और सातवी तमस्तमःप्रभा का एक लाख आठ हजार योजन का पृथ्वीपिंड है ॥ ४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भेद कहे हैं खरकाण्ड, अर्थात् कठिन काण्ड यह जो भवन रहते हैं सो अच्छा सुंदर पृथ्वी का भूमि भाग है यही खरकाण्ड है, तत्पश्चात् दूसरा पंक बहुल काण्ड अर्थात् इस में कीचड व कचरा बहुत होता है और तीसरा अप्बहुल काण्ड अर्थात् इस में पानी की बहुलता विशेष है ॥ ५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के खरकाण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस के सोलह भेद कहे हैं तद्यथा—१ रत्न काण्ड, वज्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! घंमा नामेण रयणप्पभा गोत्तेणं॥दोच्चाण भंते ! पुढवी किं नाम किं गोत्ता ? गोयमा ! वंसा नामेणं सक्करप्पभा गोत्तेणं ॥ एवं एतेणं अभिलावेणं सव्वासिं पुच्छा नामाणि इमाणि सेला तच्चा, अंजणा चउत्था, रिट्ठा पंचमा, मघा छट्ठा, माघवती सत्तमा, तमतमा गोत्तेणं पण्णत्ता॥ २ ॥इमाणं रयणप्पभा पुढवी केवतिया बाहल्लेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! इमाणं रयणप्पभा पुढवी असीउत्तरं जोयण सयसहस्स

दूसरी पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! दूसरी पृथ्वी का वंशा नाम व शर्कर प्रभा गोत्र है यों इस अभिलाप से सब का कहना तीसरी पृथ्वी का सेला नाम व वालु प्रभा गोत्र है चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र, पांचवी पृथ्वी का रिष्ठा नाम व धूमप्रभा गोत्र है छठी पृथ्वी का मघा नाम व तम प्रभा गोत्र है और सातवी पृथ्वी का माघवती नाम व तमस्तम प्रभा गोत्र है ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड कितनी जाडाइ में है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख अस्सी हजार योजन का जाडा है ऐसे प्रभाकर आगे भी जानना अर्थात् शर्कर प्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का जाडपना है, वालुक प्रभा का एक लाख अठाइस हजार योजन का जाडपना है, पंकप्रभा का एक लाख बीस हजार योजन का जाडपना है, धूमप्रभा का एक लाख अठारह हजार

बाहल्लेण पण्णत्ता ॥ एव एतेणं अभिलावेणं इमा गाथा—अणुगतव्वा आसीत बत्तीस अट्ठावीस-तहेव वीसच अट्ठारस सोलसग अट्ठुत्तरमेव हेट्ठिमया ॥४॥ इमाण भंते ! रयणप्पभा पुढवी कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! तिविधा पण्णत्ता तंजहा—खरकडे, पकबहुले कडे, आव बहुलेकडे ॥५॥ इमीसेण भते! रयणप्पभाए पुढवीए खरकडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते तजहा—रयण, वइरे, वेरुलिए लोहितक्खे, मसारगल्ले हंसगब्भे पुलाए, सोइंधिए, जोतिरसे, अजणे, अजणपुलये, रयते, जात

योजन का जाडपना है, तमःप्रभा का एक लाख सोलह हजार योजन का जाडपना है और सातवी तमस्तमःप्रभा का एक लाख आठ हजार योजन का पृथ्वी पिंड है ॥ ४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भेद कहे हैं खरकाण्ड, अर्थात् कठिन काण्ड यह जो अपन रहते है सो अच्छा सुंदर पृथ्वी का भूमि भाग है यही खरकाण्ड है, तत्पश्चात् दूसरा पंक बहुल काण्ड अर्थात् इस में कीचड व कचरा बहुत होता है और तीसरा अप्बहुल काण्ड अर्थात् इस में पानी की बहुलता विशेष है ॥ ५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के खरकाण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! इस के सोलह भेद कहे हैं तद्यथा—१ रत्न काण्ड, वज्र

रूत्ते, अके फलिहे, रिट्ठेकन्डे ॥ ६ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते, एव जाव रिट्ठे ॥ ७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पंकबहुले कन्डे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥ आव बहुले कन्डे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एकागारे पण्णत्ते ॥ ८ ॥ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवी कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ता, एव

काण्ड, ३ वैडूर्य काण्ड, ४ लोहिताक्ष काण्ड, ५ मसारगल्ल काण्ड, ६ हंसगर्भ काण्ड, ७ पुलाक काण्ड, ८ सौगंधिक काण्ड, ९ ज्योतिरत्न काण्ड, १० अंजन काण्ड, ११ अंजन पुलाक काण्ड, १२ रजत काण्ड, १३ जातरूप काण्ड, १४ अंक काण्ड और १६ रिष्ट काण्ड यह सोलह भेद खर काण्ड के हुए ॥ ६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में पहिला रत्न काण्ड कितने प्रकार का है ? उत्तर—अहो गौतम ! रत्न काण्ड का एकही आकार कहा है, यों रिष्ट काण्ड पर्यंत सब का जानना ॥ ७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के पंकबहुल काण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! वह एकही प्रकार का है प्रश्न—अहो भगवन् ! अप्बहुल काण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! उस का भी एकही भेद कहा है ॥ ८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी के कितने

जाव अहेसत्तमा ॥ ९ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावास सतसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! तीसं निरयावास सतसहस्सा पण्णत्ता, एव एतेण अभिलावेणं सव्वासिं पुच्छा ? ॥ इमा गाहा अणुगन्तव्वा—तीसाय पण्णवीसा पण्णरस दसेव तिण्णिय हवति पचूण सतसहस्सं पचेव अणुत्तरा णरगा जाव अहेसत्तमाए पच अणुत्तरा महति महालया महाणरगा पण्णत्ता तजहा-काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपतिट्ठाणे ॥ १० ॥ अत्थिण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अह

भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! शर्कर प्रभा पृथ्वी एक प्रकार की है यों नीचे की सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ९ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नरकावास कहे हैं यों शर्कर प्रभा में पच्चीस लाख, वालुकप्रभा में पन्नरह लाख, पंक प्रभा में दश लाख, धूम्रप्रभा में तीन लाख, तमःप्रभा में एक लाख, नरकावास में पांच कम और तमस्तमःप्रभा में पांच नरकावास हैं ये अनुत्तर, महालय व महा नरकावास हैं इन के नाम—काल, महा काल, रौरव, महा रौरव और अप्रतिष्ठान ॥ १० ॥ प्रत्येक पृथ्वी नीचे घनोदधि आदि का सद्भाव है या नहीं इस का प्रश्न करते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे पिण्डभूत पानी का समूह रूप घनोदधि, पिण्डभूत वायु का समूह रूप घनवात, विरल परिणाम को

घनोदधितिवा घणवातेतिवा तणुवातेतिवा, उवासंतरेतिवा ? हंता अत्थि, एवं जाव अहे सत्तमा ॥ ११ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ? इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! एकंजोयण सहस्स बाहल्लेण पण्णत्ते ? एवं जाव रिट्ठे ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पंकबहुले कंडे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! चउरासीति जोयण सहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ इमीसेण भंते ! रयण-

घन वायु के समूह रूप तनुवात और शुद्ध आकाश रूप अवकाशांतर है क्या ? उत्तर—हाँ गौतम ! ऐसे ही है यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी संबंधी जो खरकाण्ड है उस का जाडपना कितना है ? उत्तर—अहो गौतम ! इस का जाडपना सोलह हजार योजन का है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का रत्नकांड कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक हजार योजन का जाडपना है यों रिष्ट पर्यंत कहना प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी का पंक बहुल काण्ड की कितनी जाडाइ है ? उत्तर—अहो गौतम ! इस का चौरासी हजार योजन का जाडपना है प्रश्न—अहो भगवन् ! अप्बहुल काण्ड की जाडाइ कितनी है ? उत्तर—

प्पभाए पुढवीए आयबहुले कंडे केवतिय बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! असीति जोयण सहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! वीस जोयण सहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ? इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवात केवइय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! असखेज्जाइं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं, एव तणुवातेति उवासतरेवि ॥१२॥ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए घणोदधि केवतिय बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! वीस जोयणसहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं ॥ सक्करप्पभाए पुढवीए, घणवाते केवइए पण्णत्ते ?

अहो गौतम ! अस्सी हजार योजन का जाडपना है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वीस हजार योजन का घनोदधि जाडा है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! असंख्यात हजार योजन का जाडा है, ऐसे ही तनुवात व आकाशांतर का जानना ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करा प्रभा पृथ्वी का घनोदधि कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वीस हजार योजन का जाडा है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी का घनवात कितना जाडा कहा ? उत्तर—अहो गौतम !

गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं, एवं तणुवाएवि उवासंतरेवि जहा सक्करप्पभाए पुढवीए, एवं जाव अहेसत्तमा ॥ १२ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए खेतछिंदेणं छिज्जमाणाए अत्थि दव्वाइं वण्णओ काल नील लोहित हालिद्द सुक्किलाइं, गंधतो—सुब्भिगंधाइं दुब्भिगंधाइं, रसतो—तित्त कडुय कसाय अंबिल महुराइं, फासओ—कक्खड मउय गरुय लहुय सीत उसिण निद्ध लुक्खाइं, संठाणतो परिमंडल वट्ट तंस चउरंस आययसंठाण परिणयाइं, अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णउगाढाइं

असंख्यात हजार योजन का है, ऐसे ही तनुवात व आकाशांतर का जानना और ऐसे ही सातवी तमस्तमःपृथ्वी पर्यंत कहना ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिंड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस के विभाग करते हुवे उन के द्रव्य क्या वर्ण से काले, नीले, लाल, पीले व शुक्ल हैं, गंध से सुरभिगंधवाले व दुरभिगंधवाले हैं, रस से तिक्त, कटुक, कषाय, आम्बिल व मधुर हैं, स्पर्श से कर्कश, मृदु, गुरु, लघु शीत, ऊष्ण, स्निग्ध व रुक्ष स्पर्शवाले हैं, संस्थान से और परिमंडल, वर्तुल, त्र्यस, चोरंस व लम्बगोल है ? और क्या वे परस्पर बंधे हुवे, परस्पर स्पर्शे हुवे, परस्पर अवगाहे हुवे, परस्पर स्नेह से बंधे

अण्णमण्णासिणेह पडिबद्धाइ अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ? हता अत्थि ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरस्स कडस्स सोलस जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त छिएण छिज्ज तचेव जाव ? हता अत्थि एव जाव रिट्ठस्स ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए पकबहुलस्स कडस्स चउरासिति जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त तचेव ॥ एव आउबहुलस्सवि असीति जोयणसहस्स बाहल्लस्स ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिस्स वीस जोयणस्ससहस्स बाहल्लस्स खेत्तछेदे त व एव घणवातस्स असखेज्ज जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त तचेव ॥ सक्करप्पभाए ण भते ! पुढवीए बत्तीसुत्तर जोयणसतसहस्स बाहल्लए खेत्तछेदेण छिज्जमाणाए

हुवे व परस्पर संबंध करके क्या रहे हुवे हैं ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही हैं ऐसे ही खर काण्ड सोलह हजार योजन का है उस का प्रश्न करना और उस के द्रव्य भी वैसे ही यावत् परस्पर बंधे हुए हैं ऐसेही रिष्ट काण्ड पर्यंत कहना इसी तरह रत्नप्रभा पृथ्वीका चौरासी हजार योजनका पंक बहुल काण्ड का जानना और अस्सी हजार योजन का अप्बहुल काण्ड का भी जानना रत्नप्रभा पृथ्वी का बीस हजार योजन का घनोदधि असख्यात हजार योजन का घनवात तनुवात व आकाशांतर जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का पृथ्वी पिण्ड है उस क

अत्थि दव्वाइं वण्णतो जाव घडत्ताए चिट्ठति ? हंता अत्थि एवं वणोदहिस्स, वीसजोयणसहस्स बाहल्लस्स, घणवातस्स असंखेज्ज जोयणसहस्स बाहल्लस्स, एवं तनुवातस्स जहा सक्करप्पभाए एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभापुढवी किं संठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! झल्लरि संठिया पण्णत्ता॥इमीसेणं भंते!रयणप्पभा पुढवि खरकंड किं संठिते पण्णत्ता? गोयमा ! झल्लरिसंठिते पण्णत्ते। इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे किं संठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिते पण्णत्त, एवं जाव रिट्ठं, एवं पंकबहुले

विभाग करते हुवे उन के द्रव्य वर्ण से काले, नीले, पीले, लाल व सुफेद यावत् परस्पर संबंध करके क्या रहे हुवे हैं ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही रहे हुवे हैं ऐसे ही शर्कर प्रभा पृथ्वी के वीस हजार योजन का घनोदधि, असंख्यात हजार योजन का घनवात, तनुवात व आकाशांतर का जानना और ऐसे ही सातवी तमस्तमः पृथ्वी पर्यंत कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का संस्थान कैसा है? उत्तर—अहो गौतम! इसका संस्थान झालर के आकार है अर्थात् विस्तीर्ण वलयाकार है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का खर काण्ड का संस्थान कौनसा है ? उत्तर—अहो गौतम ! झालर का संस्थान है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का संस्थान कैसा है ?

आठबहुलेवि घणोदधिवि घणवाएवि उवासतरेवि, सव्वे झल्लरिसंठिया पण्णत्ता, सक्करप्पभाएण भते ! पुढवी किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! झल्लरिसंठिया पण्णत्ता ॥ सक्करप्पभाएण भते ! पुढवी घणोदधि किं संठिये पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिये पण्णत्ते एव जाव उवासतरे जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वता, एव जाव अहे सत्तमाएवि ॥ १५ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ केवतिय अबाधाए लोयते पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालसहिं जोयणेहिं

उत्तर—अहो गौतम ! झालर का है, एसे ही रिष्ठ पर्यंत सोलह प्रकार के रत्नों का, पक बहुल, अप-बहुल काण्ड का, घनोदधि घनवात, तनुवात व आकाशांतर सब का झालर का संस्थान जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्कराप्रभा पृथ्वी का क्या संस्थान कहा है? उत्तर—अहो गौतम ! झालर का संस्थान कहा, ऐसे ही शर्करप्रभा पृथ्वी के घनोदधि यावत् आकाशांतर पर्यंत कहना जैसे शर्करप्रभा की वक्तव्यता कही वैसे ही सातवी तमस्तमः प्रभा पर्यंत सब का कहना ॥ १५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के अन्त से कितना दूर लोक का अन्त (अलोक) कहा है? उत्तर अहो गौतम! बारह योजन का अन्तर कहा हुवा है ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर दिशा से अलोक दूर

अबाधाए लोयते पण्णत्ते एव दाहिणिल्लातो पुरत्थिमिल्लातो, उत्तरिल्लाओ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए पुरत्थिमिल्लातो चरिमतातो केवतिय अबाधाए लोयते पण्णत्ते ? गोयमा ! तिभागूणेहिं तेरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, एव चतुद्दिसिं॥ वालुयप्पभाएण भंते ! पुढवीए पुरत्थिमिल्लाओ पुच्छा ? गोयमा ! सतिभागेहिं तेरसेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, एव चउदिसिंपि एव सव्वासिं चउसुविदिसासु पुच्छियव्व, पकप्पभाए चोद्दसहिं जोयणहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, धूमप्पभाए तिभागूणेहिं पण्णरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, छट्ठी सतिभागेहिं पण्णरसहिं

जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्कराप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के चरिमांत से कितने दूर लोकांत कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक योजन के तीन भाग करे वैसा एक भाग कम तेरह योजन लोकांत कहा है ऐसे ही चारों दिशा का जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! वालुप्रभा की पूर्व दिशा से लोकांत कितना दूर कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! तेरह योजन व एक योजन का तीसरा भाग इतना दूर लोकांत रहा हुवा है ऐसे ही वालुप्रभा नारकी की शेष तीनों दिशा का जानना पंकप्रभा की चारों दिशाओं से चौदह योजन पर लोकांत रहा हुवा है, धूम्रप्रभा की चारों दिशाओं से पन्नरह योजन में एक योजन का तीसरा भाग कम का लोकांत रहा हुवा है, तमःप्रभा की चारों दिशाओं से

जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते सत्तमाए सोलसएहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते एव जाव उत्तारिल्लातो॥१६॥ इमीसेण भते! रयणप्पमाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तजहा—घणोदधिवलये, घणवायवलये, तणुवाय वलये, ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए दाहिणिल्ले चरिमते कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तजहा—एव चेव जाव उत्तारिल्ले एव सव्वासिं जाव अहेसत्तमाए उत्तरिल्ले ॥ १७ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलए केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! छज्जोयणाणि बाहल्लेण पण्णत्ते ॥

ग्यारह योजन व एक योजन का तीसरा भाग लोकांत रहा हुआ है और सातवी तमस्तमःप्रभा से सोलह योजन पर लोकांत रहा हुआ है ॥ १६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की पूर्व दिशा के चरमांत के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस के तीन भेद कहे हैं घनोदधि वलय, घनवात वलय, व तनुवात वलय प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी की दक्षिण दिशा के चरिमांत के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! तीन भेद कहे हैं घनोदधि, घनवात व तनुवात ऐसे ही सब पृथ्वी की चारों दिशाओं में तीन २ वलय रहे हुवे हैं यों सातवी पृथ्वी का जानना ॥ १७ ॥ प्रश्न— अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय की जाडाइ कितनी कही है ? उत्तर—

सक्करप्पमाएण भंते ! पुढवीए घणोदधिवलए केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सतिभागाइं छजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ वालुयप्पमाए पुच्छा ? गोयमा ! तिभागूणाइं सत्तजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, एवं एतेणं अभिलावेणं पंकप्पमाए सत्तजोयणाइं बाहल्लेण, धूमप्पमाए सतिभागाइं, सत्तजोयणाइं पण्णत्ते, तमप्पमाए तिभागूणाइं अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, अहेसत्तमाए अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, ॥ १८ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पमाए पुढवीए घणवातवलए केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! अद्धपंचमाइं जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं ॥ सक्कर-

अहो गौतम ! छ योजन की जाडाइ कही है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय की कितनी जाडाइ कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ योजन व एक योजन का तीसरा भाग की जाडाइ कही है वालुक प्रभा की पृच्छा ? सात योजन में तीसरा भाग कम की जाडाइ है पंक प्रभा की सात योजन की है धूम्रप्रभा की सात योजन व तीसरा भाग अधिक की, तमःप्रभा की तीसरा भाग कम आठ योजन की व तमस्तम प्रभा की घनोदधि की आठ योजन की जाडाइ है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनवात वलय की कितनी जाडाइ कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! चार

प्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! कोसूणाइं पंच जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं, एवं एएणं अभिलावेणं वालुयप्पभाए पंच जोयणाइं बाहल्लेणं प० पंकप्पभाए सक्कोसाइं पंच जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं धूमप्पभाए अद्धछट्ठाइं जोयणाइं, बाहल्लेण, पण्णत्ताइं, तमप्पभाए कोसूणाइं छजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं अहेसत्तमाए छ जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं ॥ १९ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तणुवायवलये केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! छक्कोसेणं बाहल्लेणं पण्णत्ते एवं एतेणं अभिलावेणं सक्करप्पभाए सतिभाग छक्कोसे बाहल्लेणं पण्णत्ते वालुप्पभाए तिभागूणे सत्तक्कोसे बाहल्लेणं पण्णत्ते, पंकप्पभाए पुढवीए सत्तक्कोसे बाहल्लेणं

योजन की जाडाइ है, शर्कर प्रभा की पृच्छा, पांच योजन में एक कोश कम की जाडाइ है, ऐसे ही वालुकप्रभा की पांच योजन की, पंक प्रभा की पांच योजन व एक कोश, धूम्रप्रभा की पांच योजन दो कोश (साढे पांच योजन,) तमःप्रभा की एक कोश कम छ योजन और तमस्तम प्रभा की छ योजन की जाडाइ कही है ॥ १९ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तनुवात वलयाकार की कितनी जाडाइ कही ? उत्तर-अहो गौतम ! रत्न प्रभा के तनुवात की छ कोश की जाडाइ है, ऐसे ही शर्कर प्रभा के तनुवात की छ कोश तीसरा भाग, वालुकप्रभा में तीसरा भाग कम सात कोश, पंक प्रभा के

पण्णत्ते, धूमप्पभाए सतिभागे सत्तकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते, तमाए तिभागूणे अट्ठकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते, अहे सत्तमाए पुढवीए अट्ठकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ २० ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि बलयस्स छजोयण बाहल्लस्स खेत्त छेएण छिज्जमाणस्स अत्थिदव्वाइ वणउ काल जाव ? हंता अत्थि॥ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए घणोदधि वलयस्स सतिभाग छजोयण बाहल्लस्स खेत्तछेएण छिज्जमाणस्स जाव हंता अत्थि॥एव जाव अहे सत्तमाए ज जस्स बाहल्ल॥

तनुवात की सात कोश की जाडाइ, धूम्रप्रभा में सात कोश व तीसरा भाग, तम:प्रभा में तीसरा भाग कम आठ कोश और तमस्तम प्रभा में आठ कोश की जाडाइ जानना ॥ २० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी क घनोदधि वलय छ योजन का जाडा है उस को क्षेत्र छेद से छेद देने से उन के द्रव्यों से वर्ण काले यावत् परस्पर संबंधवाले क्या हैं? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी का वलय की जाडाइ छ योजन व एक योजन के तीसरा भाग अधिक की है इस का छेद देने से इस के द्रव्य वर्ण से काले यावत् परस्पर संबंधवाले क्या है ? उत्तर-हां गौतम ! वैसे ही हैं यों सातवी नरक तक सब का कहना, इस में जहां २ जितना जाडपना है उतना जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात साडेचार योजन का जाडा है

इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवायवलयस्स अद्ध पंचजोयण बाहिल्लस्स खेत्त छेदेण छिन्न जाव हंता अत्थि, एवं जाव अहे सत्तमाए जजस्स बाहल्लेण, एवं तणुवात वलयस्सवि जाव अहे सत्तमा जजस्स बाहल्लं ॥ २१ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलये किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टवलयागार संठाण संठित पण्णत्ते, जेण इमं रयणप्पभं पुढविं सव्वतो समं ताओ परिक्खिवित्ताण चिट्ठति एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए घणोदधि वलये णवर अप्पाणं पुढविं सपरिक्खिवित्ताण चिट्ठति ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवात वलए किं संठिते पण्णत्ते गोयमा ! वट्टवलयागारे तहेव जाव जेण इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि-वात

उस का छेद करने से उस के द्रव्य वर्ण से काल वर्णवाले यावत् परस्पर संबंधवाले हैं क्या ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही हैं यों सातवी नारकी के घनवात का कहना, परंतु जितना जितना जाडपना है उन को उतना जाडपना कहना ऐसे ही तनुवात वलय का सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि का संस्थान कैसा है ? उत्तर अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार (चूडी जैसा) संस्थान है यह घनोदधि रत्नप्रभा पृथ्वी के चारों तरफ घेर कर रहा हुवा है ऐसे ही सातों पृथ्वी के घनोदधि का जानना प्रश्न—इस रत्नप्रभा पृथ्वी का

छिवलय सव्वतो सम तास परिक्खिविताण चिट्ठइ, एव जाव अहे सत्तमाए घणवातवलय ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए तणुवातवलये किं सठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टवलयागार सठाण सठिए जाव जेण इमीसेण भते ! रयण-प्पभाए पुढवीए घणवातवलय सव्वतो सम तास परिखिवित्ताण चिट्ठति, एव जाव अहेसत्तमाए तणुवात वलय ॥ २२ ॥ इमाण भते ! रयणप्पभा पुढवी केवतिय आयामविक्खभेण पण्णत्ता ? गोयमा ! असखेज्जाइ जोयण सहस्साइ आयामविक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ता एव जाव

घनवात का सस्थान कौनसा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है इस से रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि चारों तरफ घेराया हुवा रहा है यों सातों पृथ्वी के घनवात का जानना प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का तनुवात वलय का क्या सस्थान कहा है ! उत्तर—अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार सस्थान कहा है इस से रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात चारों तरफ से घेराया हुवा है यों सातों पृथ्वी के तनुवात का जानना ॥ २२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की लम्बाइ चौडाइ कितनी कही है? अहो गौतम ! असख्यात योजन की लम्बाइ चौडाइ कही प्रश्न—अहो भगवन् ! इसकी परिधि कितनी कही ? उत्तर अहो गौतम! असख्यात योजन की परिधि कही

अहे सत्तमा ॥ २३ ॥ इमाण भंते ! रयणप्पभा पुढवी अंतेय मज्झेय सव्वत्थ समा बाहल्लेण पण्णत्ता ? हंता गोयमा ! इमाणं रयणप्पभा पुढवी अंतेय मज्झेय सव्वत्थसमा बाहल्लेण, एव जाव अधो सत्तमा ॥ २४ ॥ इमीसेण भंते ! रयप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववन्नपुव्वा सव्वजीवा उववन्ना ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववण्णपुव्वा, नो चेवण सव्वजीवा उववण्णा, एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए॥इमाण भंते! रयणप्पभा पुढवीए सव्वजीवेहिं विजढ पुव्वा सव्व

सातवी पृथ्वीतक सब का जानना ॥ २३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अंत में, मध्य में वगैरह सब स्थान जाडाइ में क्या समान है ? उत्तर—हां गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अंत में, मध्य में वगैरह सब स्थान जाडाइ में समान है ऐसे ही सातों पृथ्वी का जानना ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में सब जीवों सामान्यपना स काल के अनुक्रम से पहिले उत्पन्न हुवे अथवा अथवा सब जीवों समकाल में उत्पन्न हुवे ? उत्तर—अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वीमें काल के अनुक्रम से सब जीवों उत्पन्न हुए परंतु समकाल में सब जीवों नहीं उत्पन्न हुवे हैं क्यों कि सब जीव एक ही काल में रत्नप्रभा नारकी में उत्पन्न होजावे तो अन्य देव नारकी के भेद का अभाव होवे यों सातवी नारकी तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का सब जीवने काल के अनुक्रम

नीवेहिं विजढा? गोयमा! इमाण भंते! रयणप्पभा पुढवीए सव्वजीवेहिं विजढपुव्वा नो चेवण सव्वजीवेहिं विजढा, एव जाव अहेसत्तमा॥ २५॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठ पुव्वा सव्व पोग्गला पविट्ठा? गोयमा! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठपुव्वा, नो चेवण सव्वपोग्गला पविट्ठा, एव जाव अहेसत्तमाए॥ इमाणं भंते! रयणप्पभाए पुढवी सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा नो चेवण सव्व पोग्गला विजढा? गोयमा! इमाण रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा नो

स पहिले परित्याग किया अथवा समकाल में क्या परित्याग किया? उत्तर-अहो गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का कालक्रम से सब जीवोंने परित्याग किया परंतु एक समय में सब जीवोंने परित्याग नहीं किया, ऐसे ही सातवी पृथ्वी तक जानना॥ २५॥ प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कालानुक्रम से क्या सब पुद्गलोंने प्रवेश किया अथवा समकाल में सब पुद्गलोंने प्रवेश किया? उत्तर-अहो गौतम! कालानुक्रम से रत्नप्रभा पृथ्वी में पुद्गलोंने प्रवेश किया परंतु एक काल में सब पुद्गलोंने प्रवेश नहीं किया यों सातवी पृथ्वी तक कहना प्रश्न-अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का कालानुक्रम से सब पुद्गलोंने क्या त्याग किया अथवा एककाल में सब पुद्गलोंने त्याग किया? उत्तर—अहो गौतम! इस रत्नप्रभा का कालानुक्रम से पहिले सब पुद्गलोंने त्याग किया परंतु एक

चेवण सव्वपोग्गलेहिं विजढा एव जाव अहेसत्तमा ॥ २६ ॥ इमाण भते ! रयण-
प्पमा पुढवी किं सासता असासता ? गोयमा ! सिय सासता सिय असासता ॥
से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ सिय सासता सिय असासता? गोयमा! दव्वट्ठयाए सासता वण्ण
पज्जवेहिं, गधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं फास पज्जवेहिं असासता, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ
तचेव जाव सिय सासया सिय असासया, एव जाव अहेसत्तमा ॥ २७ ॥ इमाण
भते ! रयणप्पभा पुढवी कालओ केवचिर होइ? गोयमा! ण कयाथि ण आसि, ण कयाथि

समय में सब पुद्गलों का त्याग किया नहीं, यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ २६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्!
यह रत्नप्रभा पृथ्वी क्या शाश्वत है या अशाश्वत है ? उत्तर—अहो गौतम ! स्यात् शाश्वत है स्यात्
अशाश्वत है प्रश्न—अहो भगवन् ! ऐसा कैसे होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! द्रव्य आश्री शाश्वत
है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव आश्री अशाश्वत है इस से अहो गौतम ! ऐसा कहा कि रत्न
प्रभा पृथ्वी स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २७ ॥ प्रश्न—अहो
भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी काल से कितनी है ? उत्तर—अहो गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अतीत
काल में नहीं थी वैसा नहीं, वर्तमान काल में नहीं है वैसा नहीं और भविष्य काल में नहीं होगी वैसा

णत्थि, णकयाइ णभविस्सइ, भुविंच भवतिय भविस्सइय, धुवा णितया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिता णिच्चा, एव जाव अहे सत्तमाए॥२८॥इमीसेण भंते रयण-प्पभाए पुढवीए उवरिल्लातो चरिमताओ हेट्ठिल्ले चरिमते एसण केवतिय अबाधाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असिउत्तर जोयण सतसहस्स अबाधाए अतरं पण्णत्ते ॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमताओ खरकंडस्स हेट्ठिल्ले चारिमते एसण केवतिय अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइ अबाधाए अतरे पण्णत्ते ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाओ

भी नहीं परंतु यह अतीत काल में थी, वर्तमान काल में है और भविष्य काल में होगी यह ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित है, यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २८ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से नीचे के चरिमांत तक अबाधा से कितना अंतर कहा? उत्तर-अहो गौतम! एक लाख अस्सी हजार योजन का अंतर कहा प्रश्न-अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से खर कांड के नीचे के चरिमांत तक कितना अंतर कहा? अहो गौतम ! सोलह हजार योजन का अंतर कहा प्रश्न-अहो भगवन ! रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से

चरिमताओ रयणस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते एसण केवइय अबाधाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्क जोयणसहस्स अबाधाए अतरे पण्णत्ते ॥ इमीसेण भत ! रयणप्पमाए पुढवीए उवरिल्लाउ चरिमताओ वइरस्स कडस्स उवरिल्ल चारिमते, एसण केवइय अबाधाए अतर पण्णत्ते ?गोयमा! एक्क जोयण सहस्स अबाधाए अतरे पण्णते। इमीसेण भत ! रयणप्पमाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमताओ वइरस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते एसण केवइय अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दो जोयणसहस्साइ अबाधाए अतरे पण्णत्ते एव जाव रिट्ठस्स ॥ उवरिल्ले पण्णरस जोयणसहस्साइ हेट्ठिल्ल चारिमते सोलस जोयणसहस्साइ ॥ इमीसेण भते !

रत्नकाण्ड के नीचे के चरिमांत तक में कितना अतर कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक हजार योजन का अतर कहा है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के उपर के चरिमांत से वज्र रत्न काण्ड के उपर के चरिमांत तक में कितना अतर कहा ? उत्तर-अहो गौतम ! एक हजार योजन का अतर कहा प्रश्न अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के उपर के चरमांत से वज्र रत्न काण्ड के नीचे के चरमांत तक में कितना अतर कहा ? उत्तर अहो गौतम ! दो हजार योजन का अतर कहा यों रिष्ट पर्यंत सब कहना रिष्ट के ऊपर के चरिमांत तक में पन्नरह हजार योजन, नीचे के चरमांत में सोलह हजार योजन

रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमंताओ पंकबहुलस्स कंडस्स उवरिल्ले चरिमंते एसणं अबाहाए केवतियं अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते हेट्ठिल्ले चरिमंते एक्कं जोयणसयसहस्सं आवबहुलस्स उवरिं एक्कं जोयणसयसहस्सं हेट्ठिल्ले चरिमंते असीउत्तरं जोयणसयसहस्सं घणोदधिस्स उवरिल्ले असीउत्तरं जोयणसयसहस्सं हेट्ठिल्ले चरिमंते दो जोयणसयसहस्साइं ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवातस्स उवरिल्ले चरिमंते दो जोयण सयसहस्साइं हेट्ठिल्ले चरिमंते असंखेज्जाइं जोयण सयसहस्साइं ॥ इमीसेणं भंते ! रयण-

का अंतर कहा प्रश्न इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से पंकबहुल काण्ड के ऊपर के चरमांत पर्यंत में अबाधा से कितना अंतर कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! सोलह हजार योजन का अंतर कहा है इसके नीचे के चरमांत तक में एक लाख योजन का अबाधा से अंतर कहा है अपबहुल काण्ड के ऊपर के चरमांत तक में एक लाख योजन का अंतर कहा है और इस के नीचे के चरमांत तक में एक लाख अस्सी हजार योजन का अंतर कहा है घनोदधि के ऊपर के चरमांत तक एक लाख अस्सी हजार योजन का अंतर और घनोदधि के नीचेका चरमांत तक दो लाख योजनका अंतर कहा है रत्नप्रभा पृथ्वी के

प्पभाए पुढवीए तणुवायस्स उवरिल्ले चारिमते असखेज्जाइ जोयण सयसहस्साइ अवा-धाए अतर पण्णत्ते ॥ होट्ठिले चारिमते असखेज्जाइ जोयण सयसहस्साइ, एव, उवास-तरेवि ॥ सक्करप्पभाएण भते ! पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमताओ हेट्ठिल्ल, चरिमते एसण केवतिए अवाधाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! बत्तीसुत्तर जोयण सयसहस्स अवाहाए अतरे पण्णत्त सक्करप्पभाएण भते ! पुढवीए उवरि घणोदधिस्स होट्ठिल्ले चारिमते बावण्णुत्तर जोयण सयसहस्स अवाधाए घणवायस्स असखेज्जाइ जोयणसय सहस्साइ पण्णत्ताइ, एव जाव उवासतरस्सवि जाव अहे सत्तमाए, णवर जीसे ज

ऊपर के चरमांत से घनवात के ऊपर के चरमांत तक लाख योजन का अतर होता है और इस के नीचे के चरमांत तक असख्यात लाख योजन का अतर जानना रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से तनुवात के ऊपर के चरमांत तक असख्यात लाख योजन का अतर है और नीचे के चरमांत तक भी असख्यात लाख योजन का अंतर है ऐसे ही आकाशांतर का जानना प्रश्न-अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से नीचे के चरमांत तक कितना अतर कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख बत्तीस हजार योजन का अतर कहा प्रश्न अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से घनोदधि के नीचे के चरमांत तक कितना अंतर कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख

कइण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असी उत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए उवरिकेवइय ओगाहित्ता हेट्ठा केवइय वज्जेत्ता, मज्झे केवइय केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एग जोयण सहस्स

प्रश्न—अहो भगवन् ! पृथ्विओं कितनी कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! सात पृथ्विओं कही है तद्यथा—रत्नप्रभा यावत् सातवी तमस्तमः प्रभा ॥ १ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से ऊपर कितना अवगाहा हुवा है, नीच कितना वर्जा हुवा है बीच में कितना रहा हुवा है और कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से एक हजार योजन ऊपर छोड कर एक हजार योजन नीच छोडकर शेष एक लाख अठ्योत्तर हजार योजन की बीच में पोलार है इस में तीस लाख नरकावास कहे है, वे नरकावास अन्दर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकून यावत् नरक में अशुभ वेदना रही हुई है सब पीठकी अपेक्षा से आवलिकागत गोल, त्रिकोन, चौरस व पुष्पावकीर्ण अर्थात्

उगाहिचा, हेट्ठावि एग जोयण सहस्स वज्जेचा मज्झे अट्ठुत्तरे जोयण सय सहस्से एत्थण रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण तीस णिरयावास सयसहस्सा भवीतित्ति मक्खाया तेण नरगा अतो वट्टा बाहिं चउरसा जाव असुभा णरयेसु वेयणा, एव एएण अभिलावेण उववाजिऊण भाणियव्व ठाणप्पयाणुसारेण जत्थ ज बाहल्ल जत्थिया वा नेरइयावास सयसहस्सा जाव अहे सत्तमाए पुढवीए अहे सत्तमाए मज्झे

विविध प्रकार के सस्थानवाले हैं नीचे का पृथ्वी तल क्षुर जैसा कठोर है, वहां सदैव अधकार है, मात्र तीर्थंकर के जन्म व दीक्षा काल में प्रकाश होता है, तीर्थंकर के कल्याण समय में प्रकाश होता है वहां चन्द्र सूर्यादि ज्योतिषी का प्रकाश नहीं है, रुधिर, मांस, राध वगैरह के कीचड से नरक का भूमितल लींपा हुवा है, नरकावास बहुत बीभत्स है, अत्यत दुर्गंधमय है, मृत पशु के कलेवर से भी अधिक दुर्गंधमय है काली अग्नि की ज्वालायों नीकलती है, धगधगती कपोत वर्ण जैसे अग्नि की कांति है, वहां का गध रस व स्पर्श अति दु सह व अशुभ है यह असाता वेदना सब नरक में रहा हुई है सब पृथ्वी में एक हजार ऊपर व एक हजार नीचे उन के जाडपने में स नीकालकर शेष रहे सो पोलार समजना और पहिले कहे सो नरकावास मानना यों नीचे की सातवी पृथ्वी में पांच स्थानवाले नरकावास

कइण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असी उत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए उवरिकेवइय ओगाहित्ता हेट्ठा केवइय वज्जेत्ता, मज्झे केवइय केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एग जोयण सहस्स

प्रश्न—अहो भगवन् ! पृथ्विओं कितनी कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! सात पृथ्विओं कही है तद्यथा—रत्नप्रभा यावत् सातवी तमस्तम, प्रभा ॥ १ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से ऊपर कितना अवगाहा हुवा है, नीचे कितना वर्जा हुवा है बीच में कितना रहा हुवा है और कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से एक हजार योजन ऊपर छोड कर एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख अठत्तर हजार योजन की बीच में पोलार है इस में तीस लाख नरकावास कहे है, वे नरकावास अंदर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकून यावत् नरक में अशुभ वेदना रही हुई है सब पीठकी अपेक्षा से आवलिकागत गोल, त्रिकोन, चौरस व पुष्पावकीर्ण अर्थात्

पिहडगसठिया किण्णपुडएसठिया, मुखसंठिया, मुइगसंठिया, णदिमुइंगसंठिया, आलिंगसठिया, सुग्घोससठिया, ददरसठिया, पणवसठिया, पडहसठिया, भेरीसठिया, झल्लरिसंठिया- कतुबकसठिया, नालिसठिया, एव जाव तमाए अहे सत्तमाएण भंते ! पुढवीए नरगा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा-वट्टेय तसाय ॥ २ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरया केवइय बाहल्लेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि जोयणसहस्साइ

काष्ठा कुटज (तापस लोगों को रहने का स्थान) मुरज [मृदंग विशेष] मृदगं, नंदीमुख मृदग, सुघोष (देवलोक की घंटा विशेष) दर्दर वादिंत्र, पणव-चमड का वादिंत्र, पडह, भेरी, झल्लरी, कुतुंबक व घटिका इत्यादि अनेक प्रकार के सस्थानवाले हैं यों छठी तमःप्रभा पृथ्वी पर्यंत कहना प्रश्न—तमस्तम.प्रभा पृथ्वी में नरकावास के सस्थान कौनसे कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! दो प्रकार के कहे हैं वर्तुलाकार व त्रिकूनाकार है सातवी पृथ्वी में पांच नरकावास आवलिकागत है जिस में अप्रतिष्ठान नरकावास गोल है और शेष चार नरकावास त्रिकून आकारवाले हैं ॥ २ ॥ अब नरकावास का जाडपना कहते हैं

१ मृदंग दो प्रकार की है १ मुकुंद व २ मर्दल जो उपर से संकुचित व नीचे से विस्तार वाली है उसे मुकुन्द कहना और उपर नीचे जो समान है वह मर्दल है. इस स्थान मुकुद मृदम गृहण करना

केवइए कइ अणुत्तरा महति महालया महाणिरया पण्णत्ता, एव पुच्छियव्वं वागरयव्वंपि तहेव छट्ठी सत्तमासु काऊ अगणिवण्णा भाणियव्वा॥ २॥ इमीसेण भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरका किं सठिया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-आवलियप्पविट्ठाय आवलिय बाहिराय॥तत्थण जे ते आवलियपविट्ठा ते तिविहा पण्णत्ता तंजहा-वट्टा तसा चउरसा तत्थण जे ते आवलियबाहिरा ते णाणा संठाण संठिया पण्णत्ता तंजहा अयकोट्ठ संठिया पिंठ पयणग संठिया, कंडूसंठिया लोहीसंठिया, कडाहसंठिया, थालीसंठिया

हैं सब में प्रश्नोत्तर रत्नप्रभा जैसे ही कहना यावत् छठी सातवी पृथ्वी में कापोत वर्ण जैसा अग्नि जानना ॥ २ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे तीस लाख नरकावास का कौनसा संस्थान कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! नरकावास दो प्रकार के कहे हैं-१ आवलिकागत अर्थात् श्रेणी में रहे हुवे और २ आवलिका से बाहिर उस में आठों दिशि में श्रेणि से रहे हुवे नरकावास के तीन भेद कहे हैं १ वर्तुलाकार २ त्रिकून व ३ चोकून और जो आवलिका से बाहिर आठों दिशासे पृथक् रहे उन के संस्थान विविध प्रकारके कहे हैं जिनके नाम-कहते हैं, अयकोष्ट-लोहका गोला जैसे, रिष्टपचनक (मदिरा पकाने के लिये जिस भाजन में आग पकाया जावे वैसा) जैसा, पाक स्थान, रसोइ गृह के आकार से, कडाइ, कडाह बडा कडाइया, स्थाली, पकाने की हंडी, पिहडग जिस में बहुत मनुष्यों के लिये धान्य पकाया जावे,

अहे सत्तमाएण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—संखेज्जवित्थडेय, असंखेज्जवित्थडाय ॥ तत्थण जे से संखेज्जवित्थडे, सेण एक्कं जोयणसहस्सं आयाम विक्खंभेण, तिन्नि जोयण सयसहस्साइं, सोलस सहस्साइं दोण्णिय सत्तावीस जोयणसये तिण्णिकोसे अट्ठावीस धणुसयाइं तेरसय अंगुलाइं अद्धंगुलयं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥ तत्थण जे ते असंखेज्जवित्थडा तेण असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं आयाम विक्खंभेण असंखेज्जाइं जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ता ॥ ४ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए

के लम्बे चौडे हैं उनकी परिधि असंख्यात योजनकी है यों तम पृथ्वी पर्यंत कहना सातवी पृथ्वीकी पृच्छा, अहो गौतम ! इसके दो भेद कहे हैं कितनेक संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं और कितनेक असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं उस में संख्यात योजन का विस्तार व संख्यात योजन की परिधिवाला एक अप्रतिष्ठान नरकावास है उसकी लम्बाइ चौडाइ एकलाख योजनकी है और तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्तावीस योजन, तीनगाउ, एकसो अट्ठाइस धनुष्य, साढे तेरह अंगुल से कुच्छ अधिक की परिधि है और जो असंख्यात योजन के विस्तारवाले चार नरकावास हैं वे असंख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं और असंख्यात योजन की परिधि है ॥४॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावास कैसे वर्णवाले

बाहल्लेण पण्णत्ता तंजहा हेट्ठिल्ले चरिमत घणसहस्स मज्झ झुसिरासहस्स उर्दि सकुइया सहस्स॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नरगा केवइयं आयाम विक्खभेण केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संखेज्जवित्थडाय, असंखेज्जवित्थडाय । तत्थण जे ते संखेज्जवित्थडा तेण संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयमाविक्खभेणं, संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण पण्णत्ता, तत्थण जे ते असंखेज्जवित्थडा तेण असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयाम विक्खभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण पण्णत्ता, एवं जाव तमाए ॥

प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावास का जाडपना कितना कहा ? उत्तर अहो गौतम ! तीन हजार योजन का जाडपना है उस में एक हजार योजन की नीचे की पीठिका है, एक हजार योजन की पोलार है और एक हजार योजन का ऊपर का मुख संकुचित होता हुवा रहा है यों सब मिलकर तीन हजार योजन का जानना यों सातवी पृथ्वी तक के नरकावास का जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास लम्बे, चौडाई व परिधि में कितने कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! कितनेक संख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं और कितनेक असंख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं जो संख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं उन की परिधि संख्यात योजन की है और जो असंख्यात योजन

सूत्र

एयारूवे ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतरा चेव अकततराचेव जाव अमणामतराचेव ॥ गधेण पण्णत्ता ॥ एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ ६ ॥ इमीसण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरया केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए असिपत्तेइवा, खुरपत्तेइवा, कलबचीरियापत्तेइवा, कुतग्गेवा, तोमरग्गेइवा, नारायग्गेइवा, सूलग्गेइवा, लउडग्गेइवा, भिंडिमालग्गेतिवा सूचिकलाएतिवा, कवियच्छूइवा, विच्छुयकटइवा, इगालेइवा जालाइवा, मुम्मुरेतिवा, अच्चेइवा, आलाएतिवा, सुद्धाग-

अर्थ

बीभत्स देखाववाला होवे उस की दुर्गंध जैसी क्या नारकी की दुर्गंध है ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो गौतम ! नरकावास में इस से भी अधिक अनिष्ट, अकत यावत् अमनामकारी दुर्गंध है यों सातवी पृथ्वी तक कह देना ॥ ६ ॥ अब स्पर्श का प्रश्न करते हैं प्रश्न—अहो भगवन् ! नरकावास का स्पर्श कैसा है ? अहो गौतम ! जैसे असिपत्र, क्षुरपत्र, कद व चीरिका (तृण विशेष) भाले की अणी तीर का अग्रभाग, सूल का अग्रभाग, व सोटे का अग्रभाग, सूई का अग्रभाग, भिंडमाल का अग्रभाग, सूई के समूह का अग्रभाग, कवच की

नरया केरिसया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालावभासा, गंभीरा लोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा, वण्णेणं पण्णत्ता, एवं जाव अहे सत्तमा ॥ ५ ॥ इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णरका केरिसया गंधेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए अहिमडेतिवा, गोमडेतिवा, सुणगमडेतिवा, मज्जारमडेतिवा, मणुस्समडेतिवा, महिसमडेतिवा, मूसगमडेतिवा, आसमडेइवा, हत्थिमडेइवा, सीहमडेइवा वग्घमडेइवा, विगमडेइवा दीवयमडेइवा, मयकुहिय चिरविणट्ठे, कुणिमवावण्ण दुब्भिगंध किमिजालाउलससत्ते, असुयचिलीणविगय बीभत्स दरिसणिज्जे, भवे

करे हैं ! उत्तर—अहो गौतम ! काले, कालामासवाले, गंभीर लोमहर्षवाले, भयकर, त्रास उत्पन्न करनेवाले व परम कृष्णवर्ण वाले कहे हैं यों सातवी नरक तक सब का कहना ॥५॥ प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास कैसे गंधवाले कहे हैं ? उत्तर—जैसे सर्प का मृत कलेवर, गाय का, कुत्ते का, मार्जार का, मनुष्य, का भैंस का, चूहे का, घोडे का, हाथी का, सिंह का व्याघ्र का, विगद का, व चित्त का मृत कलेवर कि जो बहुत काल से पडा हुवा होवे, विनष्ट होवे, जिस का मांस सडकर विगड गया होवे, जिस में बहुत कीडे पड गये होवे, अशुचि वस्त्र के क्लेश परिणाम का कारनवाला

देवेण महिड्ढीए जाव महाणुभावे जाव इणामेव इणामेवत्तिकट्टु इम केवलकप्प जबुदीव दीव तिहिं अच्छराणिवातेहिं तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ताण हव्वमागच्छेज्जा, सेण देवे ताए उक्किट्ठाये तुरिताए चवलाए चडाए सिग्घाए उद्धूयाए ताए जइणाए दिव्वाए देवगइये वीईवयमाणे २ जहण्णेण एगाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेण छमास वीतिवएज्जा, अत्थेगइए णरगे वीइवएज्जा, अत्थगइये णरगे नो वीइवएज्जा ए महालयाण गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए नरगा पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए अत्थेगतिय नरग विइवएज्जा अत्थगइए नरग

कुच्छ अधिक परिधिवाला यह जम्बूद्वीप है ऐसा जम्बूद्वीप को कोई महर्धिक यावत् महानुभाव देवता तीन चपुटि बजावे उतने समय में इक्कीसवार परिभ्रमण करके आजावे ऐसी त्वरित, चपल, प्रचण्ड, शीघ्र, तथा उद्धृत जयवंत दीव्य देवगति से जाते हुए जघन्य एक दिन, दो दिन तीन दिन उत्कृष्ट छ मास में कितनेक नरकावास का उल्लंघन कर सकते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं अहो गौतम ! नरकावास इतने बडे कहे हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना उस में कितनेक नरकावास का उल्लंघन करते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं करते हैं अप्रतिष्ठान नरकावास एक लक्ष योजन का है इस से उस का उल्लंघन होवे, परंतु अन्य चार असख्यात योजन के हैं जिस का उल्लंघन

फोएत्रा, भंते एतारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे। गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतराचेव जाव अमणामतराचेव फासेण पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ ७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरका क महालया पण्णत्ता ? गोयमा ! अयण जबूदीव दीव सव्वदीव समुद्दाण सव्वब्भतराए सव्वखुड्डाए वट्टे, तल्लपूत सठाण सठिय वट्ट पुक्खरकण्णिया सठाण सठिये वट्ट, पडिपुण्ण चद सठाण सठिए, वट्टे रहचक्कवाल सठाण सठिए एक्क जोयणसयसहस्स आयाम विक्खभेण जाव किंचि विसेसाहिय परिक्खवेण

फलों का अग्रभाग वृश्चिक का डंक धूम्ररहित अग्नि, अग्नि की ज्वाला, अग्नि के कन, अग्नि से भिन्न बनी हुई ज्वाला, जला हुवा कोयला और शुद्धाग्नि इस प्रकार का क्या नरक का स्पर्श है ? अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टकर यावत् अमनापतर स्पर्श नरकावास का कहा है ॥ ७ ॥ पहिले नरकावास का विस्तार बतलाया था, इस का विशेष विवरण के लिये पुनः उपमा से जानने के लिये प्रश्न करते हैं प्रश्न-अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास कितने बडे कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! सब द्वीप समुद्र के मध्य में रहा हुवा सब से छोटा, तेल से तला हुवा पुआ समान रथ चक्र जैसा गोल अथवा कमल की कर्णिका अथवा प्रतिपूर्ण चंद्र के आकार जैसा गोल, एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा यावत् तीन लक्ष योजन से

उरगेहिंतो उववज्जाति, इत्थियाहिंतो उववज्जति, मच्छमणुएहिंतो उववज्जाति ? गोयमा ! असण्णिहिंतो उववज्जाति जाव मच्छमणुएहिंतो उववज्जाति एव एतेण अभिलावेण इमा गाहा घोसेयव्वा असण्णी खलु पढम दोच्च चसिरीसिवा, तत्तियपक्खी सीहा जंति चउत्थी उरगा पुण पचमीजाति, छट्ठी च इत्थियाओ, मच्छा मणुयाय सत्त मिजति जाव अह सत्तमा पुढवी णेरइया णो असण्णीहिंतो उववज्जाते जाव णो इत्थियाहिंतो उववज्जाते मच्छमणुएहिंता उववज्जाति ॥ १० ॥ इमीसण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया एक समएण केवइया उववज्जाति ? गोयमा !

आकर उत्पन्न होते हैं, मत्स्य में से उत्पन्न होते हैं अथवा मनुष्यों से उत्पन्न होते हैं ? उत्तर असंज्ञी से यावत् मत्स्य व मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं इस का खुलासा निम्नोक्त गाथा कर करते हैं असंज्ञी पचेन्द्रिय पहिली नरक में आवे, सरिसर्प से गोधा, नकुल प्रमुख दूसरी नरक तक आवे, पक्षी तीसरी तक जाते हैं सिंह व्याघ्रादि चतुष्पद चौथी नरक तक जाते हैं, उरपरिसर्प पांचवी तक जाते हैं, स्त्री छठी में है, और मत्स्य व मनुष्य सातवी में जाते हैं यावत् सातवी पृथ्वी में असंज्ञी तिर्यंच पचेन्द्रिय यावत् स्त्री उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु मत्स्य व मनुष्य उत्पन्न होते हैं ॥ १० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! एक समय में रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक दो

मो वीइवएज्जा ॥ ८ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरगा किमया पण्णत्ता ? गोयमा ! सव्ववइरामया पण्णत्ता, तत्थण नरएसु बहवे जीवाय पोग्गलाय अवक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति सासताण ते नरगा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं, गंधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं, फासपज्जवेहिं असासया, एवं जाव अहे सत्तमा ॥ ९ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया कतो हिंतो उववज्जंति? उववातो सव्वो भाणिऊण, ततो पुच्छा किं असण्णीहिंतो उववज्जंति, सिरिसवेहिंतो उववज्जंति, पक्खीहिंतो उववज्जंति, चउप्पएहिंतो उववज्जंति,

नहीं कर सकते हैं ॥ ८ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास किस वस्तु मय हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! सब वज्र रत्नमय है उस में बहुत खर बादर पृथ्वी काया के जीव व पुद्गल आते हैं और जाते हैं परंतु उनका संस्थान एकही रूप सदैव रहता है, इससे द्रव्य से शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वत है यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ९ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या असंज्ञी में से उत्पन्न होते हैं परिसर्प अर्थात् गोघा, नकुलादि में से उत्पन्न होते हैं, पक्षी में से आकर उत्पन्न होते हैं चतुष्पद में से आकर उत्पन्न होवे स्त्री में से

पुढवीए नेरइयाण के महालिया सरीरागाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरो-
गाहणा पण्णत्ता तंजहा-भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थेण जासा भवधा-
रणिज्जा सा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेण सत्तधणूइ, तिण्णिरयणीओ
छच्च अंगुलाइ, तत्थणं जस उत्तरवेउव्विए से जहण्णेण अंगुलस्स संखेज्जइभाग
उक्कोसेण पण्णरस धणूइ अड्डाइज्जाउरयणीओ दोच्चाए भवधारणिज्जे जहण्णए

की भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पन्नरह धनुष्य अढाइ हाथ की है और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग उत्कृष्ट एकतीस धनुष्य एक हाथ तीसरी वालुकप्रभा की भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एकतीस धनुष्य एक हाथ की उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग उत्कृष्ट बासठ धनुष्य दो हाथ ऐसे ही सातवी नरक पर्यंत सब की भव धारनीय जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग व उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग और उत्कृष्ट पंकप्रभा की भवधारनीय ६२ धनुष्य २ हाथ उत्तर वैक्रेय १२५ धनुष्य, धूम्र प्रभा की भव धारनीय १२५ धनुष्य उत्तर वैक्रेय २५० धनुष्य तमःप्रभा की भव धारणीय २५० धनुष्य व उत्तर वैक्रेय ५०० धनुष्य तमस्तमःप्रभा की भव धारनीय ५०० धनुष्य व उत्तर वैक्रेय १००० धनुष्य की भव पाथड की संख्या कहते हैं पहिली नरक के १३, दूसरी में ११, तीसरी में ९, चौथी में ७, पांचवी

जहण्णेण एक्कोवा दोत्रा तिण्णिवा उक्कोसेण सखेज्जावा असखेज्जावा उववज्जति, एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ ११ ॥ इमीसेण भते ! रयप्पणमाए पुढवीए नेरइया समय समय अवहीर माणा २ केवइय कालेण अवहिता सिया ? गोयमा ! तेण असखेज्जा समए समए अवहीरमाणा २ असखेज्जाहिं उसप्पिणि ओसप्पिणीहिं अवहीरति, नो चेवण अवहिता सिया जाव अहे सत्तमा ॥ ११ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए

तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात उत्पन्न होते हैं ऐसे ही सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ११ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी असंख्यात कहे हैं उस में से समय २ में एक २ नीकालते कितने समय में सब नारकी पूर्ण हो जावे ? उत्तर—अहो गौतम ! नारकी असंख्यात कहे हैं उस में से प्रति समय एक २ नीकालते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी पर्यंत नीकाले तथापि नारकी के जीव कमी होवे नहीं, होते नहीं व होवेंगे भी नहीं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ११ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी की शरीर अवगाहना कितनी बडी कही ? उत्तर—अहो गौतम ! उस के शरीर की अवगाहना दो प्रकार की कही, भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय उस में जो भवधारनीय अवगाहना है, वह जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात धनुष्य तीन हाथ व छ अंगुल की है, और उत्तर वैक्रय जघन्य अंगुलका संख्यातवा भाग उत्कृष्ट पन्नरह धनुष्य व अढाइ हाथकी है शर्करप्रभा पृथ्वी

धणुसयं, उत्तरवेउव्विया अड्डाइज्जाइ धणुसयाइ, छट्ठीए भवधारणिज्जे अड्डाइज्जाइ धणुसयाइ उत्तरविउव्विया पचधणुसयाइ, सत्तमाए भवधारणिज्जे, पचधणुसयाइ उत्तरवेउव्विया धणुसहस्स ॥१२॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए नेरइयाण सरीरया किं

अगुल और तेरवे पाथडेमें ७ धनुष्य, तीन हाथ ६ अगुलकी यह उत्कृष्ट भवधारनीय अवगाहना हुइ उत्तर वैक्रेय स्थान से दुगुनी जानना इसी तरह आगे नरक में पाथडे के नारकी की अवगाहना जानना जिस नरक मे जितनी अवगाहना का अधिकपना होवे उसका उस नरक के पाथडे से भाग देना जो भाग आवे वह प्रत्येक पात्थडे में बढाना ॥१२॥प्रश्न-अहो भगवन् ! नारकी के शरीरका संघयन क्या

१ रत्नप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
धनुष्य	०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	७
हाथ	३	१	३	२	०	२	१	३	१	०	२	०	३
अगुल	०	८॥	१७	१॥	१०	१८॥	३	११॥	२०	४॥	१३	२१॥	६

अगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण पण्णरस धणूइ अड्ढाइज्जातो रयणीओ, उत्तर वेउव्विया जहण्णेण अगुलस्ससंखेयभाग उक्कोसेण एक्कतीसधणूइ एक्कारयणी ॥ तच्चाए भवधारणिज्जे, एक्कतीस धणूइ एक्का रयणी, उत्तर वेउव्विया बासट्ठिधणूइ दोण्णियरयणीओ ॥ चउत्थीए भवधारणिज्जे बावट्ठि धणूइ दोण्णिरयणीओ, उत्तरवेउव्विया पण्णवीस धणुसय, पचमीए भवधारणिज्जे पणवीस

में ५ छठी में तीन व सातवी में एक पाथडा है यों सब मीलाकर४९पाथडे हुवे इन में सब की भवधारणीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का सख्यातवा भाग इस में पहिली नरक के प्रथम पाथडे की उत्कृष्ट अवगाहना तीन हाथ की इस के आगे प्रत्यक पाथडे में ५६॥ बढते जाना जिस से दुसरे पाथडे में एक धनुष्य एक हाथ व सारे आठ अंगुल की हुई, तीसरे में एक धनुष्य तीन हाथ व १७ अंगुल की चौथे पाथडे में दो धनुष्य दो हाथ १॥ अंगुल की,पांचवे पाथडे में तीन धनुष्य दश अंगुल की, छठे पाथडे में तीन धनुष्य दो हाथ १८॥ अंगुल की, सातवे में चार धनुष्य एक हाथ व तीन अंगुल की, आठवे पाथडे में चार धनुष्य तीन हाथ व ११॥ अंगुल की नववे पाथडे में पांच धनुष्य एक हाथ २० अंगल की, दशवे पाथडे में ६ धनुष्य ४॥ अंगुल का, अग्यारवे पाथडे ६ धनुष्य २ हाथ १३ अंगुल की बारहवे पाथडे में ७ धनुष्य २१॥

सघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणी, णेवट्ठी णेवच्छिरा, णेवण्हारु, णेव सघयण मत्थि, जे पोग्गला अणिट्ठा जाव अमणामा ते तेसिं सरीर सघायत्ताए परिणमति, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १३ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जा, उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थण जेते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पण्णत्ता ॥ तत्थण जेते उत्तरवेउव्विया तेवि हुड सठिया पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमीसेण भते रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरगा केरिसया वण्णेण पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालोभासा जाव परम कण्हावण्णेण पण्णत्ता ॥

कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ सघयण में से एक भी सघयण नहीं है, क्यों की उन के शरीर में हड्डियों, शिरा व स्नायु नहीं है परतु जो पुद्गल अनिष्ट, अकांतकारी यावत् अमनोज्ञ होते हैं वे रूप से भयंकर शरीरपने परिणमते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी को कौनसा सस्थान कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! सस्थान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—भवधारनीक व उत्तर वैक्रेय दोनों शरीर का हुड सस्थान कहा है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे नारकी का कैसा वर्ण कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! काला, कालाभास

२ शर्कराप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
धनुष्य	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५
हाथ	३	२	१	०	३	२	२	१	०	३	२
अंगुल	६	९	१२	१५	१८	२१	०	३	६	९	१२

३ वालुकप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
धनुष्य	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१
हाथ	२	२	२	१	१	१	१	१	१
अंगुल	१२	७॥	३	२२॥	१८	१३॥	९	४॥	०

४ पंकप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७
धनुष्य	३१	३६	४१	४६	५२	५७	६२
हाथ	१	१	२	३	०	१	२
अंगुल	०	२०	१६	१२	८	४	०

७ तमस्तम प्रभा

पाथडा	१
धनुष्य	५००
हाथ	०
अंगुल	०

५ धूम्रप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५
धनुष्य	६२	७८	९३	१०९	१२५
हाथ	२	०	३	१	०
अंगुल	०	१२	०	१२	०

६ तम प्रभा

पाथडा	१	२	३
धनुष्य	१२५	१८७	२५०
हाथ	०	२	०
अंगुल	०	०	०

सघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणी, णेवट्ठी णेवच्छिरा, णेवण्हारु, णेव सघयण मत्थि, जे पोग्गला अणिट्ठा जाव अमणामा ते तेसिं सरीर सघायत्ताए परिणमति, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १३ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा— भवधारणिज्जा, उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थण जेते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पण्णत्ता ॥ तत्थण जेत उत्तरवेउव्विया तेवि हुड सठिया पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमीसण भते रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरगा केरिसया वण्णेण पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालोभासा जाव परम कण्हावण्णेण पण्णत्ता ॥

कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ सघयण में से एक भी सघयण नहीं है, क्यों की उन के शरीर में हड्डियों, शिरा व स्नायु नहीं है परंतु जो पुद्गल अनिष्ट, अकांतकारी यावत् अमनोज्ञ होते हैं वे रूप से भयकर शरीरपने परिणमते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी को कौनसा सस्थान कहा है ? उत्तर-अहो गौतम! सस्थान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों शरीर का हुड सस्थान कहा है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे नारकी का कैसा वर्ण कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! काला, कालाभास

एव जाव अहेसत्तमा ॥ १५ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण सरीरया केरिसया गंधेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए अहिमडेतिवा तंचेव जाव अहे सत्तमा ॥ १६ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं सरीरया केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! फुडितच्छविविच्छविया, खरफरुसा ज्झाम झुसिरा फासेण पण्णत्ता एव जाव अहे सत्तमा॥ १७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण केरिसया पोग्गला ऊसासत्ताए परिणमंति ? गोयमा !

वाला, यावत् परम कृष्ण वर्ण कहा है यों सातों पृथ्वी के नारकी का जानना ॥१५॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी के शरीर की कैसी गंध कही ? उत्तर—अहो गौतम ! जैसे मृत सर्प का कलेवर वगैरह जैसा पहिले नरक स्थान की गंध कही वैसे ही जानना यों सातों पृथ्वी के नारकी का जानना ॥ १६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इन रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी का कैसा स्पर्श कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! फटी हुई कांति रहित, अति कठिन दग्ध छाया व बहुत छिद्रवाली चमडी उन नेरियों की कही है ॥ १७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसे पुद्गलों उश्वासपने ग्रहण करते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जो अनिष्ट, यावत् अमनाप पुद्गलों हैं उन को उच्छ्वासपने ग्रहण करते हैं

सूत्र

गाउयाइं उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं, सक्करप्पभाए पुढवीए जहण्णेण तिण्णिगाउयाइं उक्कोसेण अद्धुट्ठाइं गाउयाइं एव अद्धगाउयाइं २ परिहायति जाव अहे सत्तमाए, जहण्णेण अद्धगाउय उक्कोसेण गाउय ॥ २४ ॥ इमीसेण भते! रयणप्पभाए पुढवीए नरतियाण कति समुग्घाता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि समुग्घाता पण्णत्ता तंजहा-वेदणा समुग्घाए कसाय समुग्घाए, मरणातिय समुग्घाए, वेउव्विय समुग्घाए ॥ एव जाव अहे सत्तमाए ॥२५॥ इमीसेण भते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया केरिसय खुह-पिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरति? गोयमा ! एकमेकस्सण रयणप्पभा पुढवी निरइयस्स

अर्थ

साढे तीन गाउ, वालुक प्रभा के नारकी जघन्य अढाइ गाउ उत्कृष्ट तीन गाउ पंक प्रभा के नारकी जघन्य दो गाउ उत्कृष्ट अढाइ गाउ, धूम्रप्रभा के नारकी जघन्य देढ गाउ उत्कृष्ट दो गाउ, तम प्रभा के नारकी जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट देढ गाउ और तमस्तमःप्रभा के नारकी जघन्य आधा गाउ उत्कृष्ट एक गाउ ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी को कितनी समुद्घात कही है ? उत्तर-अहो गौतम ! चार समुद्घात कही हैं जिन का नाम वेदना कषाय, मारणांतिक व वैक्रय यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ २५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसी क्षुधा पिपासा

असब्भाव पथवणाए सव्वोदधीवा सव्व पोग्गलेवा आसयसि पक्खिवज्जा णो चेवण से रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए त्रितिचे वासिया वा तण्हे वासिया, एरिसियेण गोयमा! रयण-प्पभाए जे णेरइया खुहप्पिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरति एव जाव अहे सत्तमाए ॥२६॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया किं एकत्त पभू विउव्विचए पुहुत्तपि पभू विउव्विचए ? गोयमा ! एकत्तपि पभू विउव्विचए पुहुत्तपि पभू विउव्विचए, एगत्त विउव्वेमाणा एगमह मोग्गररूवेवा, मुसुढरूववा, एव मोग्गर मुसुढि करकत्त असि

अनुभवते हुवे विचरते हैं। उत्तर—अहो गौतम! असत्य कल्पना से सब समुद्र का पानी अथवा सब पुद्गल उन के मुख में डाल देने से वे तृप्त नहीं होते है, तृषा रहित नहीं होते हैं अहो गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी ऐसी क्षुधा पिपासा का अनुभव करते हुवे विचरते हैं यों सातों पृथ्वी तक जानना ॥ २६ ॥ अब वैक्रेय शरीर की वक्तव्यता कहते हैं प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी क्या एक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है या अनेक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक रूप की विकुर्वणा करने में भी समर्थ हैं और अनेक रूप की विकुर्वणा करने भी में समर्थ हैं जब एक रूप की विकुर्वणा करते हैं तब एक बडा मुद्गर, मुसण्डी, करवत, खड्ग, शक्ति, हल, गदा, मुशल

सत्ती हल गया मुसल चक्क णाराय कुंत तोमर सूल लउड भिंडिमालाय जाव भिंडमाल रूववा जाव पुहुत्तपि विउव्वेमाणा मोग्गर रूवाणिवा जाव भिंडमालरूवाणिवा ताइं सखेज्जाइं नो असखेज्जाइं सबद्धाइं नो असबद्धाइं,सरिसाइं नो असरिसाइं विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स काय अभिहणमाणा वेदण उदीरिति उज्जल विउल पगाढ कक्कस कडुय, परुस णिट्ठुर चड तिव्व दुक्ख दुग्ग दुरहियास एव जाव धूमप्पभाए पुढवीए छट्ठ सत्तमासुण पुढवीसु नेरइया पभू महंताइं लोहिय कुंथुरूवाइं वयरामयतुंडाइं गोमय

चक्र, बाण, भाला, तोमर, त्रिशूल, लकुट, भिंडिमाल के रूप बनाने में समर्थ हैं और बहुत रूप वैक्रेय करते हुवे बहुत मुद्गर यावत् बहुत भिंडिमाल के रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है वे सख्यात रूप बना सकते हैं,परतु असख्यात नहीं बना सकते हैं, अपने शरीर की साथ सबंधवाले बना सकते हैं परतु सबंध बिना के नहीं बना सकते हैं, अपने रूप जैसे रूप बनावे परतु असदृश रूप बनावे नहीं, एसे रूप की विकुर्वणा करके परस्पर काया की घात करते हुए वेदना की उदीरणा करे उज्ज्वल, विपुल, प्रगाढ, कर्कश, कटुक, कठोर, निष्ठुर, चंड, तीव्र, दुःखकारी, विषम व असुरप सहन नहीं होसके वैसी वेदना अनुभवते हुवे विचरते हैं एसे ही पांचवी धूम्रप्रभा पृथ्वी तक जानना छठी व सातवी पृथ्वी में नारकी लाल कुंथुरूप वज्रमय,

कीडसमाणाइं विउव्वति कीड समाणाइं विउव्विचा अन्नमन्नस्सकाय समतुरगेमाणा २ खायमाणा २ सयपोरगाकिमियाइ चालेमाणे २ अतो २ अणुप्पाविगमाणा २ वेयण उदीरयति उज्जल जाव दुरहियास ॥२७॥ इमीसेण भते! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइया किं सीय वेयण वयति, उसिण वेयण वेयाति, सिउसिण वेयण वेयति? गोयमा! णोसीय वेयण वेयति उसिणवेयण वेयाति, नो सीउसिण वेयण वेयति अप्पयरा उण्ह-जोणिया एव जाव वालुप्पभाए, ॥ पकप्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! सीयवेयण वेयति उसिणवेयण वेयति नो सीउसिण वयण वेयति, ते बहुयरगा, जे

चांचवाले गोमय के कीडे समान रूप की विकुर्वणा करके परस्पर एक दूसरे के शरीर में प्रवेश करे, नीकले, आरोहण करे, समान घोडे जैसे आक्रमण करे, एक२ के शरीर का भक्षण करते हुए पूर्वोक्त उज्वल यावत् नहीं सहन हो सके वैसी वेदना प्रगट भोगवते हुवे विचरते हैं ॥२७॥ प्रश्न—अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी क्या शीत वेदना वेदते हैं, ऊष्ण वेदना वेदते हैं या शीतोष्ण वेदना वेदते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! शीत व शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं परंतु उष्ण वेदना वेदते हैं ऐसे ही शर्करप्रभा तथा वालुक प्रभा का जानना पंकप्रभा की पृच्छा, अहो गौतम ! शीत वेदना व ऊष्ण वेदना यों दो प्रकारकी वेदते हैं परंतु शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं इसमें ऊष्ण वेदना वेदनेवाले बहुत हैं और शीत वेदना वेदनेवाले थोडे हैं

उसिणवेयण वेयति ते थोवयरगा, जे सीयवेयण वेयति ॥ धूमप्पभाए पुच्छा? गोयमा! सीयपि वेयण वेयति उसणपि वेयण वेयति, नो सीउसिण वेयण वेयति ॥ ते वहुयरगा जे सिय वेयण वेयति ते थोवयरका जे उसिण वेयण वेयति ॥ तमाए पुच्छा? गोयमा! सीय वेयणा वेयति, नो उसिण वेयण वेयति, नो सीउसिण वेयणा वेयति एव अह सत्तमाए, णवर परमसीय ॥२८॥ इमीसेण भते! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइए केरिसय निरयभव पच्चणुब्भवमाणा विहरति? गोयमा! तेण तत्थ निच्च भीया निच्चवहिया निच्चतासिया निच्च तत्था निच्चउव्विग्गा निच्चउद्दुया निच्चपरमसुभमतुल-

धूम्रप्रभा की पृच्छा, अहो गौतम! शीत व उष्ण वेदना वेदते हैं परंतु शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं इस में शीत वेदना वेदनवाले बहुत जीव हैं और उष्ण वेदना वेदनेवाले थोडे जीव हैं तम प्रभा की पृच्छा? अहो गौतम! शीत वेदना वेदते हैं परंतु उष्ण व शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं, ऐसे ही सातवी पृथ्वी में कहना परंतु इस में परम शीत वेदना का कहना ॥ २८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसा नरक भव का अनुभव करते हैं? उत्तर—अहो गौतम! वे वहां सदैव भय भीत बने हुवे, निरंतर भयाक्रांत, स्वतः ही त्रास पाते हुए परमाधामी से निरंतर त्रास पाये हुवे निरंतर उद्वेगवाले, निरंतर उपद्रवाले, किंचिन्मात्र सुख को नहीं प्राप्त करते हुवे अशुभ, अतुल व अनुबद्ध

भणुभवर निरयभवं पच्चणुब्भवमाणा विहराति एव जाव अहे सत्तमाएण पुढवीए ॥२९॥ अहे सत्तमाएण पुढवीए पंच अणुत्तरा महति महालया महाणरगा पण्णत्ता तंजहा-काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे ॥ तत्थ इमे पंच महापुरिसा अणुत्तरेहिं दंड समादाणेहिं कालमासे कालकिच्चा अप्पइट्ठाणे निरए नेरइएत्ताए उववन्नाए तंजहा—रामे जमदग्गिपुत्ते, दढाऊले छइपुत्ते, वसू उवरिचरे, सुभूमे कोरव्वे, बंभदत्ते चुलणीसुए, तेण तत्थ णेरइया जाया, काला काले जाव परमकिण्हा वण्णेण पण्णत्ता, तेण तत्थ वेयण वेयति

भव का अनुभव करते हुवे विचरते हैं ऐसे ही सातवी नरक पर्यंत जानना ॥ २९ ॥ सातवी पृथ्वी में अनुत्तर महान बडा आलयवाले पांच नरकावास कहे हैं जिन के नाम—काल, महाकाल, रोरुप, महा रोरुप व अप्रतिष्ठान इन पांच नरकावास में पांच महान पुरुषों, अनुत्तर, प्राणी हिंसा करने वाले, क्रूर अध्यवसाय स काल के अवसर में काल कर के उत्पन्न हुए जिन के नाम—१ जमदग्नि का पुत्र राम जिस को परशुराम कहते हैं, २ छाया पुत्र दाढाल ३ वसुराजा उपरिचर ४ कौरवा सुभूम चक्रवर्ती और ५ बारहवा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती चूलणी का पुत्र ये पांचों वहां कृष्ण वर्णवाले यावत् परम कृष्ण वर्णवाले नारकीपने उत्पन्न हुए वे वहां

उज्जल विउल जाव दुरहियासं ॥ ३० ॥ उसिण वेयणिज्जेसुणं भंते ! नेरइया केरिसयं उसिणवेयणं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति? गोयमा! से जहा नामए कम्मारदारए सिया तरुणे बलवं जुगवं अप्पायंके थिरग्ग हत्थे दढपाणिपायपासपिट्ठंतरो परिणए लवणपवणजइण (वायामण) पमद्दण समत्थे तल जमल जुयल बाहु (फलिह-निभबाहु) घणणिचित वलिय वट्ट खंधे चम्मेट्ठग दुघण मुट्ठिय समाहय निचिय गायगत्ते (कायगुत्ते) उरस्स बलसमन्नागए छेए दक्खे पट्ठे कुसले मेहावि णिउण, सिप्पोवगए एगं महं अयपिंड उदगवारसमाणं गहाय तं ताविय कोट्टिय२ उब्भिदिय२

सब्जह पापह नहीं सहन हो सके वैसी वेदना का अनुभव करते हैं ॥ ३० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी कैसी उष्ण वेदना वेदते हैं ? उत्तर अहो गौतम ! जैसे कोई तरुण बलवंत, युवान, अल्प रोगवाला, हाथ का अग्रभाग जिस का स्थिर है, हाथ, पांव, पीठ, पार्श्व व जंघा जिस की दृढ है, अतिशय गोल रूपवाला, चमडे के गोटिके पन मुष्ट्यादिक से भरे हुवे गात्रोंवाला, अंतरिक उत्साह वीर्य से युक्त, दृढ हृदयवाला, वेतालवृक्ष का युगल होवे वैसा समान सरल, लम्बे पुष्ट दो हाथवाला, अति शीघ्र गति व परिश्रम में समर्थ, किसी वस्तु के मर्दन करने में समर्थ, बहत्तर कला में निपुण, विलंब रहित कार्य का करनेवाला, अच्छी तरह क्रिया का करनेवाला, अनुसंधान करने में निपुण ऐसा लोहकार का पुत्र, एक

मुणिय २ जाव एगाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेण अद्धमास साहणेज्जा, सेण त सीयभूय आउमयेण सडासएण गहाय असब्भाव पट्ठवणाए उसिण वेयणिज्जेसुय नरएसु पक्खिवेज्जा, सेण त उम्मिसिय णिमिसिएण णिमिसियतरेण पुणरवि पच्चुद्धरिस्सामि तिकट्टु पविरायमेव फासेज्जा पविलीणमेव फासेज्जा पविद्धत्थमेव फासेज्जा (पासेज्जा) नो चेवण संचाएइ अविरायवा अविलीणवा अविद्धत्थवा पुणरवि पच्चुद्धरित्तए से जहा वा मत्तमातंगे दुवाए कुंजरे सट्ठिहायणे पढम सरय काल समयसिवा चरिम

छोटे घडे जैसा लोहे का गोला अग्नि में तपाकर उसे घन से कूटकर वारवार बनावे यों एक दिन, दो दिन यावत् पन्नरह दिन तक उस लोहे के गोले को अग्नि में तपाकर घन से घडे पीछे अच्छी तरह उसे ठंडा किये बाद उसे सडासी से पकड कर उष्ण वेदनावाले नारकी के शरीर में रखे रखते समय ऐसा विचार करे कि मैं चाव भेषोन्मेष (पलक) में उस गोलेको शरीरमें से नीकालूंगा परंतु इतने में उस गोलेको उस शरीरकी अग्निसे मक्खन जैसे गलता पिगलता हुवा भस्म होता हुवा देखे परंतु उसे ऐसाही नीकाल सके नहीं नरकमें ऐसी उष्ण वेदना कही है यह दृष्टान्त असद्भाव (काल्पित)है इसके विशेष खुलासाके लिये दूसरा दृष्टान्त कहते हैं जैसे साठ वर्षकी वयवाला तरुण प्रथम शरत्कालमें अथवा चरिम ग्रीष्म-ऋतु(ज्येष्ठ मास)में

निदाहकाल समयसिवा, उण्हाभिहए सण्हाभिहए दवाग्गिजालाभिहए आउरे जुसिए (झुसिए) पिवासिए दुब्बले किलंते एक्कं महं पुक्खरिणिं पासिज्जा चाउक्कोण समतीर अणुपुव्वसुजाय वप्पगंभीर सीतल जल संछन्न (पउम) पत्तभिसमुणाल बहुउप्पलकुमुय णलिण सुभग सोगंधिय पुंडरीय (महापुंडरीय) सयपत्त सहस्स-पत्त केसर फुल्लोवचिय छप्पयपरिभुज्जमाण कमल अच्छ विमल सलिल पुण्ण परिहत्थ भमंत मच्छकच्छभ अणेग सउणगण मिहुण विचरिय (विरइय) सदुन्नइ महुर सरनाइय (तं पासइ) पासित्ता तं उगाहइ उग्गाहित्ता, सेणं तत्थ उण्हंपि पविणेज्जा तिण्हंपि

ऊष्णता से व्याप्त बना हुआ, तृषा से पीडित बना हुआ, दावाग्नि की ज्वाला से हनाया हुआ, आतुर अवस्था दुर्बल, व थका हुआ, मदोन्मत्त, सूंडादंड से पानी पीने का इच्छित ऐसा हस्ती एक चार कोनावाली, विषमपना रहित, अनुक्रम से नीचा गई अच्छा, गंभीर व शीतल जलवाला पानी से ढकाये हुवे कमलपत्रों व कमलनालवाली (किसी मत में पद्मलता) बहुत सूर्य विकासी, चंद्र विकासी, वैसे ही अन्य कमल, पुंडरिक कमल, महा कमल शत कमल, सहस्र कमल, सो पांखडी का कमल, केसर समान कमल, भ्रमर जिन के पास होवे वैसे कमलवाली, स्वच्छ स्फटिक समान निर्मल पानी से परिपूर्ण, अविरत मत्स्य कच्छ से भरी हुई, अनेक पक्षियों के मधुर व शब्द के गुंजारव से गुंजायमान बनी हुई बावड़ी को देखकर

पाविणज्जा, खुहंपि पविणेज्जा जरंपि पविणेज्जा दाहंपि पविणेज्जा णिद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा सुतिंवा रतिंवा धितिंवा उवलभेज्जा, सीए सीयभूए संकममाणे २ सायासुक्ख बहुले-यावि विहरिज्जा एवामेव गोयमा ! असब्भावपट्ठवणाए उसिण वेयणिज्जेहिंतो नरएहिंतो नेरइए उव्वट्टिए समाणे जाइं इमाइं मणुस्सलोयंसि भवंति तंजहा-अयागराणिवा, तंबागराणिवा, तउगराणिवा, सीसागराणिवा, रुप्पागराणिवा, हिरण्णागराणिवा, सुवण्णागराणिवा, कुंभागराणिवा, [कुंभारागरागणीवा कुंभारागिणीवा] तंवागिणीवा, इट्टयागिणीवा, कवेलुयागिणीवा, लोहारंबरीसेवा, जंतवाडचुल्लीवा, हंडियालिच्छाणिवा, सोंडियलिच्छाणिवा, णलागणीतिवा, तिलागणीतिवा, कुसागणीतिवा

उन में बैठे उस में अपनी दाह तृषा शांत करे, वहां रहे हुवे सछिद्र मयुक्त तृण विशेष उस मे अपनी क्षुधा शांत करे, जलपान से परिताप भी शांत करे, क्षुधा तृषा शांत होने से सुखपूर्वक निद्रा लेवे, प्रचला करे और उस में शरीर स्वस्थ करे, उद्वेग करने रूप धृति प्राप्त करे, शीत व अंतर से शीतल होवे, निवृत्ति में साता सुख की प्राप्ति कर, प्राप्ति से उत्पन्न हुवा जो दाह उस रहित बन सुख भोगवता हुवा विचरे अहो गौतम ! ऐसे ही असद्भाव कल्पना से उष्ण वेदना भोगवते हुए नरक के नेरियों को नरक से निकालकर इस मनुष्य लोक में लोह को गालने का महा भट्टा नामक पात्र, ताम्बा गालने का पात्र, सीसा गालने का पात्र, चांदी गालने का पात्र, सुवर्ण गालने का पात्र, कुंभकार का निभाड़,

तत्ताइ समजोइभूयाई फुल्लकिंसुयसमाणाइ उक्का सहस्साइं विणिमुयमाणाइ जाला सहस्साइ, मुच्चमाणाइ, इंगाल सहस्साइ पविक्खरमाणाइ अतो२ हुहूयमाणाइ चिट्ठति ताइ पासति ताइ पासित्ता ताइ उगाहइ ताइ उगाहित्ता सेण तत्थ उण्हंपि पविणिज्जा तण्हंपि पविणिज्जा, खुहंपि पविणिज्जा, जरंपि पविणिज्जा दाहंपि पविणिज्जा, णिदाएज्जवा पयलाएज्जवा सइवा रइवा धिइवा मतिवा उवलभेज्जा सीए सीयभूए सकममाणे२ सायसुक्ख बहुलेयावि विहरेज्जा, भवे एयारूवो सिया? णोइणट्ठे समट्ठे गोयमा! उसिणवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइया एत्तो अणिट्ठतरियचेव उसिण वेयण पच्चणुभव

इटों पकाने का स्थान, कुंभकार की अग्नि, तुषा की अग्नि, इटपकाने की अग्नि, कवेलु पकाने की अग्नि, लोहा तपाने की अग्नि, इक्षुरस का गुड बनाने की अग्नि, हटों की अग्नि, सोंटक अग्नि, नटाग्नि, तिल की अग्नि तीरूसरों की अग्नि, इत्यादि सब ज्योतिभूत बनी हुई किंशुक पुष्प समान रक्त बनी हुई, हजारों म्रुछे जिस में से नीकलती हावे वैसी हजारों ज्वालायों नीकालती हुई, हजारों अंगार फेलाती हुई एसी धगधगायमान अग्नि देखकर उस में नरक के जीव प्रवेश करे तो वे जीवों वहां उष्णता, तृषा, क्षुधा, ज्वर, दाह शांत करे और इस से वहां निद्रा लेवे, साता प्राप्त करे, रति, धृति, मति प्राप्त करे उस का शीत, शीतभूत मानते हुवे सुख पूर्वक रहे अहो गौतम! इस से भी अनिष्टतर उष्ण वेदना

माणा विहरति ॥३१॥ सीय वेयणिज्जेसुण भंते! नरएसु नेरइया केरिसय सीयवेयण पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! से जहा नामए कम्मारदारएसिया तरुणे जुगव बलव जाव सिप्पोवगए एक महं अयपिंड दगवारसमाण गहाय ताविय २ कुट्टिय २ जाव एगाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेण मास हणिज्जा सेण त उसिण उसिणब्भूय आयामएण सडासएण गहाय असब्भावपट्ठवणाए सीयवेयणिज्जेसु नरएसु पक्खिविज्जा सेय ओम्मिसियनिम्मिसिएण पुणरवि पच्चुद्धारिस्सामि तिकट्टु पविरायमेव पासिज्जा त चेवण जाव णो सचाएज्जा पुणरवि पच्चुद्धारित्तए॥से जहा नामए मत मायगेवा तहेव जाव सुक्खबहुलयावि विहरेज्जा एवामेव गोयमा! असब्भाव पट्ठवणाए सीयवेयणेहिंतो णेरइए उवट्टिएसमाणे जाइ इमाइ इहमणुस्स लोए हवति तजहा

नारकी के जीव वेदते हैं ॥ ३१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शीत वेदना वेदते हुवे नारकी कैसी शीत वेदना वेदते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जैसे कोई युवावस्थावाला, बलवंत यावत् सब कला में निपुण लोहकार एक लोहे का गोला को अग्नि में डालकर कुटे. यों एक दिन, दो दिन, तीन दिन यावत् एक मास पर्यंत कूटे, फीर उसे लोह की सडासी से पकडकर शीत वेदना वाले नारकी के शरीर पर इस विचार से रख कि पेपोन्मेप (पल) मात्र में पीछा ले लेऊगा, परंतु वह तत्काल विखर जाने से उसे पीछा लेने को समर्थ नहीं हो

हिमाणिवा हिमपुंजाणिवा हिमपडलाणिवा हिमपडलपुंजाणिवा तुसाराणिवा, तुसार पुंजाणिवा हिमकूडाणिवा हिमकूडपुंजाणिवा सीयाणिवा ताइं पासाइ पासित्ता ताइं उग्गाहइ उग्गाहित्ता से तत्थ सीयंपि पविणिज्जा तण्हंपि पविणिज्जा खुहंपि पविणिज्जा जरंपि पविणिज्जा निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा जाव उसिणे उसिणब्भूए संकसमाणे२ साय सुक्ख बहुले तावि विहरेज्जा गोयमा ! सीयवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइयातो अणिट्ठतरियं चेव सियवेयणं पच्चणुब्भवमाणा विहरति ॥२२॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णणवि उक्कोसेणवि ठिई भाणि-

सकता है अथवा जैसे साठ वर्षवाला हस्ती यावत् बावड़ी की पास आकर सुख पूर्वक रहे वैसे ही शीत वेदनावाले नारकी को वहां से उठा कर इस मनुष्य लोक में हिम, हिम का समुह, हिम के पटल, तुषार, तुषारपुंज, हिम के कूट व हिमकूट के समुह में प्रवेश करावे तो वहां उस को शीत, तृषा, क्षुधा व ज्वर शांत होवे इस से वह वहां निद्रा व प्रचला करे यावत् उष्ण उष्णभूत बनकर सुख भोगता हुवा विचरे अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टतर शीत वेदना नारकी के जीव वेदते हुवे विचरते हैं ॥ २२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा में नारकी की कितनी स्थिति कही ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक सागरोपम की, शर्कर प्रभा में जघन्य एक सागरोपम उत्कृष्ट तीन सागरोपम

याव्वा जाव अहे सत्तमाए ॥ ३३ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पहाए नेरइया अणतर

वालुक प्रभा में जघन्य तीन सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम, पंकप्रभा में जघन्य सात सागरोपम उत्कृष्ट दश सागरोपम, धूम्रप्रभा में जघन्य दश सागरोपम उत्कृष्ट सत्तरह सागरोपम, तमःप्रभा में जघन्य सत्तरह सागरोपम उत्कृष्ट बावीस सागरोपम और तमस्तमःप्रभा में जघन्य बावीस सागरोपम उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम अब सातों नरक के ४९ पाथडे की पृथक् २ स्थिति कहते हैं रत्नप्रभा पृथ्वी के पहिले पाथडे की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ९० हजार वर्ष की दूसरे में जघन्य दश लाख वर्ष उत्कृष्ट ९० लाख वर्ष, तीसरे में जघन्य ९० लाख वर्षकी उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्षकी, चौथे में जघन्य पूर्व क्रोड वर्ष उत्कृष्ट एक सागर के दश भाग कर वैसा एक भाग की, पांचवे में जघन्य सागरोपम का दशवा भाग उत्कृष्ट दो दशवा भाग, छठे में जघन्य सागरोपम का दो दशवा भाग उत्कृष्ट तीन दशवा भाग, सातवे में जघन्य तीन दशवा भाग उत्कृष्ट चार दशवा भाग, आठवे में जघन्य चार दशवा भाग उत्कृष्ट पांच दशवा भाग, नववे में जघन्य पांच दशवाभाग उत्कृष्ट छ दशवा भाग, दशवे में जघन्य छ दशवाभाग उत्कृष्ट सात दशवा भाग, इग्यारहवे में जघन्य सातदश भाग उत्कृष्ट आठदश भाग बारहवे में जघन्य आठदश भाग उत्कृष्ट नवदश भाग और तेरहवे पाथडेमें जघन्य एक सागरोपम के९दशवे भाग, उत्कृष्ट एक सागरोपमकी स्थिति है ऐसेही अन्यनरक में जितनी स्थिति होवे उसे जितने पाथडे होवे उतने से भागकर फिर प्रत्येक पाथडे में एक २भाग बढाते हुवे सब पाथड स्थिति कहना यों सब पृथ्वी में जानना जिस का पत्र ॥ ३३ ॥ भह्

१														
रत्नप्रभा १३ पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	सागर	१० हजार	१० लाख	९० लाख	क्रोड									
	विभाग	वर्ष	वर्ष	वर्ष	पूर्व	१/१	१/२	१/३	१/४	१/५	१/६	३/७	१/८	१/९
उत्कृष्ट	सागर	९० हजार	९० लाख	क्रोड पूर्व	०									
	विभाग	वर्ष	वर्ष		० १/१	१/२	१/३	१/४	१/५	१/६	१/७	१/८	१/९	१

२												
शर्करप्रभा ११ पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
जघन्य	सागर	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
	विभाग	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९
उत्कृष्ट	सागर	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	विभाग	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०

३

वालुक प्रभा ९ पाथड		१	२	३	४	५	६	७	८	९
	सागर	३	३	३	४	४	५	५	६	६
जघन्य	विभाग	०	४/९	[illegible]/९	३/[illegible]	७/९	२/९	६/९	१/९	५/९
	सागर	३	३	४	४	५	५	६	६	७
उत्कृष्ट	विभाग	४/९	[illegible]/९	३/९	७/९	२/[illegible]	६/९	१/९	५/९	

४

पंक प्रभा ७ पाथडे		१	२	३	४	५	६	७
	सागर	७	७	७	८	८	९	९
जघन्य	विभाग	-	३/७	६/७	२/७	५/७	१/७	४/७
	सागर	७	७	८	८	९	९	१०
उत्कृष्ट	विभाग	३/७	६/७	२/७	५/७	१/७	४/७	

५

धूम्रप्रभा ५ पाथडे		१	२	३	४	५
जघन्य	सागर	१०	११	१२	१४	१५
	विभाग	०	२/५	४/५	१/५	३/५
उत्कृष्ट	सागर	११	१२	१४	१५	१७
	विभाग	[illegible]/५	४/५	१	३/५	०

६

तमःप्रभा ३ पाथडे		१	२	३
जघन्य	सागर	१७	१८	२०
	विभाग	०	२/३	१/३
उत्कृष्ट	सागर	१८	२०	२२
	विभाग	२/३	१/३	०

७

तमस्तमःप्रभा १ पा०

जघन्य सागर २२

उत्कृष्ट सागर ३३

उव्वहिय कहिं गच्छति कहिं उववज्जति किं नेरइएसु उववज्जति किं तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जति एवं उव्वट्टणा भाणियव्वा जहा वक्कंतिए तहा इहवि जाव अहे सत्तमाए ॥ २४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसय पुढवी फास पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणाम एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ २५ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसय आउफास पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! अनिट्ठं जाव अमणाम एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ २६ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभा एवं जाव वणस्सई फास अहे सत्तमाए पुढवीए ॥

भगवन् ! रत्नप्रभा नरक में से नारकी नीकलकर कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ! उत्तर—अहो गौतम ! जैसे वक्कंतिका व्युत्क्रांति (पन्नवणा) में कही, वैसे ही उद्वर्तना यहां कहना यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसा स्पर्शका अनुभव करते हुए विचरते हैं ! अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमणाम स्पर्श का अनुभव करते हुए विचरते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसा अप्काया के स्पर्श का अनुभव करते हैं ! उत्तर—अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमनाम अप्काया का स्पर्श करते हैं यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना ऐसे ही वनस्पतिकाया के स्पर्श पर्यंत सातवी नरकी तक सब पृथ्वीयों में कहना ॥ २६ ॥ अहो भगवन् !

पुढवीए दोच्च पुढविं पणिहाय सव्व महतिया बाहल्लेण सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु ? हंता गोयमा ! इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए दोच्चपुढविं पणिहाए जाव सव्व खुड्डिय सव्वंतेसु ? हंता गोयमा ! दोच्चाण भंते ! पुढवी तच्च पुढवी पणिहाय सव्व महतिया बाहल्लेण पुच्छा ? हंता गोयमा ! दोच्चाण पुढवी जाव खुड्डिया सव्वंतेसु ॥ एव एएण अभिलावेण जाव छट्ठिया पुढवी ॥ अहे सत्तमि पुढविं पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु ॥ २७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु जे पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया तेण भंते ! जीवा महाकम्मतरा चेव महा आसवतरा चेव महावेयण तरा चेव ? हंता गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए णिरयपरिसामंतेसु तहेव

यह रत्नप्रभा पृथ्वी दूसरी शर्कर प्रभा से जाडाइ में क्या बडी है व चौडाइ में क्या छोटी है ? हां गौतम ! वैसे ही है, क्यों कि रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है, और शर्कर-प्रभा का एक लाख बत्तीस हजार योजन का पृथ्वी पिंड है और रत्नप्रभा पृथ्वी एक रज्जु की लम्बी चौडी है और शर्करप्रभा पृथ्वी दो रज्जु की लम्बी चौडी है यों इस अभिलाप से छठी पृथ्वी तक कहना यावत् सातवी पृथ्वी की अपेक्षा छठी पृथ्वी लम्बाइ चौडाइ में सब से छोटी है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में जो पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पति कायिक जीवों हैं वे क्या महा कर्म महा आश्रव

जाव महाकम्मतरा चेव महा आसवतरा-चेव एव जाव अहेसत्तमाए ॥ २८ ॥- इमीसेण भंते ! रयणप्पमाए पुढवीए तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु एक्कमेक्कंसि निरयावासंसि सव्वेपाणा सव्वेभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइ काइयत्ताए नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वा ? हता गोयमा ! असइ अदुवा अणत खुत्तो, एव जाव अहे सत्तमाए पुढवी णवर जत्थ जत्तिया णरक ॥ गाहा ॥ पुढवी उगाहित्ता नरगा सठाणमेव बाहल्ले विक्खभ परिक्खेवो वन्नो गधोय फासोय ॥ १ ॥ तेसिं महालयाए

व महा वेदनावाले क्या है ? हां गौतम ! वे जीवों वैसे ही है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में के एक २ नरकावास में सब प्राण, भूत, जीव व सत्व पृथ्वीकायापने यावत् वनस्पतिकायापने क्या पहिले उत्पन्न हुए ? हां गौतम ! अनेक वार अथवा अनंतवार वे जीवों उत्पन्न हुए यों सातवी पृथ्वी तक के पृथ्वीकाया यावत् वनस्पतिकाया का जानना विशेष में जहां जितने नरकावास हैं वहां उतने कहना. अब गाथा का अर्थ कहते हैं पृथ्वियों कितनी, पृथ्वी में अवगाह कर जो नरक स्थान हैं सो बतलाया, नरक का संस्थान, उस का जाडपना, चौडाइ, परिधि, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, नरक कितनी बडी है सो उपमा से बतलाइ, जीव व पुद्गल

उवमा; देवेण होइ कायव्वा जीवाय पोग्गलावक्कमाति, तहसासया निरया ॥ २ ॥ उववाय परिमाण, अवहारुच्चत्तमेव संघयण ॥ संठाण वण्ण गंधे फासे ऊसास आहारे ॥३॥ लेस्सा दिट्ठी णाणे जोगुवओगे तहा समुग्घाए ॥ तत्तोय खुप्पिवासा विउव्वणा वेयणायभए ॥ ४ ॥ उववाओ पुरिसाण ओवम्मं वेयणाय दुविहाय ॥ ठिई उवट्टणा पुढवी उववाओ सव्व जीवाण ॥ ५ ॥ एयाओ संगहणिगाहाओ ॥ बीउद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥ २ ॥ * * * * *

इमीसेणं भंते ! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइया केरिसयं पुग्गल परिणामं पच्चणुभव

नरक में उत्पन्न होते हैं, शाश्वत नरकावास, उपपात—एक समय में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं और व वहां से उद्वर्तते हैं, नरकावास की ऊंचाइ, नारकी का संघयन, संस्थान, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श, श्वासोश्वास, आहार,-लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, योग, उपयोग, समुद्घात, क्षुधा, तृषा, विकुर्वणा, वेदना, भय, पांच पुरुषों नीचे सातवी नरक में उत्पन्न हुए उन के दृष्टान्त, दो प्रकार की वेदना, स्थिति, उद्वर्तना, पृथ्व्यादिक के स्पर्श और सब जीवों का उत्पन्न होना इतना कथन इस उद्देशे में कहा है॥ इस तरह नरक के अधिकारका दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ५ ॥ २-॥

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसे पुद्गल परिणाम का अनुभव करते हुए विचरते हैं ?

माणा विहरति ? गोयमा अणिट्ठा जाव अमणामे ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए, एवं णेयव्वं पुग्गल परिणाम ॥गाहा॥ वेयणाय लेसाय णाम गोएय अरई॥भएय सोगे खुहा पिवासाय वाहीय ॥ १ ॥ उस्सासे अणुभावे कोहे माणेय माया लोभेय ॥ चत्तारिय सण्णाओ णेरइयाण तु परिणामा ॥ २ ॥ एत्थ किर अतिवतती नर वसभा केसवा जलयराय । रायाणो मंडलिया जेय महारमकोडुंबी ॥ ३ ॥ भिन्नमुहुत्तो नरएसु तिरिय मणुएसु होइ चत्तारि ॥ देवेसु अद्धमासो उक्कोस विउव्वणा भणिया ॥ ४ ॥ असुभा विउव्वणा, खलु नेरइयाणतु होइ सव्वेसिं ॥ सठाणं पिय तेसिं नियमा

अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमणाम पुद्गल का अनुभव करते हुए विचर रहे हैं यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना इस तरह वेदना, लेश्या, नामकर्म, गोत्र कर्म, अरति, भय, शोक, क्षुधा, तृषा, व्याधि, उश्वास, अनुताप, क्रोध, मान, माया, लोभ, आहार, मैथुन, परिग्रह, ये सब स्थान में जानना अब सातवा नरक में जो जीव उत्पन्न होते हैं उनका कथन करते हैं इस नरक में नरवृषभ केशव (वासुदेव) जलचर मत्स्य महाऋद्धि राजा कि जो महाआरम करनेवाले हैं, सौकरिक, (कसाई) कौटुम्बिक, ऐसे पुरुषों नरक में जाते हैं ॥३॥ अब उत्तर वैक्रेय का कालमान कहते हैं नेरीये का वैक्रेय किया अंतर्मुहूर्त तक रहे तिर्यंच मनुष्य का वैक्रेय किया चार अंतर्मुहूर्त तक रहे, और देवका उत्तर जिनका उत्तर वैक्रेय रहने का काल है॥४॥

हंडं तु णायव्वं ॥ ५ ॥ जे पोग्गला अणिट्ठा, णियमा सो तेसिं होइ अहारो ॥ वेउव्विय सरीर असंघयण हुंडसठाण ॥ ६ ॥ असाओ (उप्पाओ) उववन्ना असाओ चेव जहइ निरयभव ॥ सव्वपुढवीसु जीवा, सव्वेसु ठिईविसेसेसु ॥ ७ ॥ उववाएण व सातो, नरइओ देवकम्मुणावावि ॥ अज्झवसाणा निमित्त, अहवाकम्माणु भावेण ॥ ८ ॥ तेया कम्मसरीरा, सुहुमसरीराय जे अपज्जत्ता ॥ जीवेण विप्पमुक्का, वचंति सहस्ससाभेद ॥ ९ ॥ नरइयाणुप्पाओ, उक्कोस पचजोयण सयाइं ॥ दुक्खेण

सब नारकी को अशुभ विकुर्वणा करी है और उन का सस्थान भी हुंडक जानना ॥ ५ ॥ जो अनिष्ट पुद्गलों हैं उन का आहार नारकी का होता है वैक्रय शरीर होने से संघयन नहीं है और सस्थान हुंडक जानना ॥ ६ ॥ सब नारकी स्थिती में जीव असाता से उत्पन्न होवे और असाता से नरक भव का त्याग करे ॥ ७ ॥ कोइक नारकी का जीव अपने पूर्व भव के परिचित देव के प्रसंग से सुख पावे अथवा सम्यक्त्व होवे तो अध्यवसाय से भी सुख की प्राप्ति करे, अथवा कर्म के अनुभव से अर्थात् तीर्थंकर के जन्म दीक्षा, केवल ज्ञान इत्यादि कल्याण में प्रकाश होने से नारकी सुख का अनुभव करते हैं ॥ ८ ॥ नरीये के मृत्युकालमें तेजस और कार्माण शरीर बिना जो वैक्रय शरीर है वह सूक्ष्म नामकर्म के उदय से बिखर कर हजारों भेद (टुकडे) रूपवत बिखर जाता है ॥ ९ ॥ नारकी जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट पांच सो गाउ पर्यंत ऊंचे उछलते हैं नारकी दुःख से भयभीत बने हुए हैं व उत्कृष्ट

मिरइयाण, वेयण सततमगाढाण ॥ १० ॥ अच्छिनमीलियमेत्त, नत्थिसुहं दुक्खमेव अणुबद्ध ॥ नरए नेरइयाण, अहोनिस पच्चमाणाण ॥ ११ ॥ अतिसीय अतिउण्ह, अइतण्हा अइखुहा अइभयच ॥ नरए नेरइयाण, दुक्खसताति अविस्साम ॥ १२ ॥ एएय भिन्नमुहुत्तो, पुग्गल असुभायहोइ अस्साओ॥ उववाओउपाओ, अत्थि सरीराय नायव्वा (बोधव्वा) ॥१३॥ सेत नेरइया॥तइओ नारय उद्देसओ सम्मत्तो ॥४॥३॥ से किंत तिरिक्खजोणिया ? तिरिक्खजोणिया पंचविहा पण्णत्ता तजहा-एगिंदिय तिरिक्खजोणिया, बेइंदिय तिरिक्खजोणिया, तेइंदिय तिरिक्ख जोणिया, चउरिंदिय

वेदना सहित है ॥ १० ॥ नरक के जीवों को चक्षु टमकावे जितना भी सुख नहीं है वे दुःख में ही रहे हुवे अहर्निश पचते रहते हैं ॥ ११ ॥ अति शीत, अति उष्णता, अति तृषा, अति क्षुधा, अति भय, ये सब प्रकार के दुःख नारकी को सदैव रहते हैं ॥ १२ ॥ उक्त सब गाथा का संक्षेप में अर्थ बताने के लिये संग्रहणी गाथा कहते हैं भिन्न मुहूर्त पुद्गल, अशुभ, वैक्रय, असाता, उपपात और आंख का टमकाना, यों इस उद्देशे के द्वारों जानना॥१३॥यह नारकी का तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा॥४॥३॥

प्रश्न—तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच के पांच भेद कहे हैं यथा—एकेन्द्रिय तिर्यंच

तिरिक्ख जोणिया पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ १ ॥ से किंत एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया? एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया पचविहा पण्णत्ता तजहा-पुढविकाइएगिंदिय तिरिक्ख जोणिया जाव वणस्सइ काइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया? पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा-सुहुम पुढविकाइया एगिंदिया तिरिक्ख जोणिया, बादर पुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया। से किं त सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया? सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ता सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय

बेइन्द्रिय तिर्यंच, तेइन्द्रिय तिर्यंच चतुरेन्द्रिय तिर्यंच व पचेन्द्रिय तिर्यंच ॥ १ ॥ प्रश्न एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—एकेन्द्रिय तिर्यंच के पांच भेद कहे पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच यावत् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच प्रश्न—पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर— पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के दो भेद कहे हैं सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच व बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच, प्रश्न—सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच व अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक

तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्ता सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त सुहुम पुढविकाइया ॥ सेकिंत बादरपुढविकाइया ? बादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ता बादरपुढविकाइया अपज्जत्ता बादरपुढविकाइया ॥ से त्त बादरपुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत पुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २ ॥ सेकिंत आउकाइया एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया ? आउकाइयाएगिंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पन्नत्ता एवं जहेव पुढविकाइयाण तहेव चउभेदो ॥ एवं जाव वणस्सइकाइया, सेत्त वणस्सइ काइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २ ॥ सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिया?

एकेन्द्रिय तिर्यंच यह सूक्ष्म पृथ्वीकाया के भेद हुए प्रश्न—बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उन के दो भेद कहे हैं—पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय व अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय यह बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय का कथन हुवा यह पृथ्वीकाया एकेन्द्रिय का वर्णन हुवा ॥ २ ॥ प्रश्न—अप्काया एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उस के दो भेद कहे हैं जैसे पृथ्वीकाया के चार भेद कहे वैसे ही अप्काया के चार भेद कहना ऐसे ही तेउकाया, वायुकाया व वनस्पतिकाया के भेद जानना ॥ ३ ॥ प्रश्न—बेइन्द्रिय तिर्यंच के कितने

बेइंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया अपज्जत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ एव जाव चउरिंदिया ॥ ४ ॥ सेकिंत पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, थलयर पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया, खहयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणियाय, गब्भवक्कतिय जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणियाय ॥ से किंत समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? समुच्छिम जलचर पचेंदिय

भेद कहे हैं ? उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त बेइन्द्रिय तिर्यंच और अपर्याप्त बेइन्द्रिय तिर्यंच ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत दो २ भेद कहना ॥ ४ ॥ प्रश्न—तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! तिर्यंच पचेन्द्रिय के तीन भेद कहे हैं तद्यथा—जलचर, स्थलचर व खेचर प्रश्न—जलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—जलचर के दो भेद कहे हैं समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय व गर्भज जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा, उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय व अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—गर्भज जलचर

तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्तग समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्तग समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त समुच्छिम पचइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किंत गब्भवक्कतिया जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? गब्भवक्कतिय जलयर पचेंइंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तग गब्भवक्कतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया अपज्जत्त गब्भवक्कतिय जलयर तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? थलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय ॥ सेकिंत चउप्पय थलयर पचें-

तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर दो भेद—पर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय व अपर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय यह जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रियका कथन हुआ प्रश्न—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं तथा—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय व परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं, संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय और गर्भज स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय समूर्छिम स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद—पर्याप्त

दिय तिरिक्खजोणिया ? चउप्पय थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम चउप्पय थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया,जहेव जलयराण तहेव चउक्कओ भेदो,सेत्त चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किं त परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख-जोणिया ? परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरि-क्खजोणिया ॥ से किं त उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? उर-परिसप्पा दुविहा पण्णत्ता जहेव जलयराण तहेव चउक्कओ भेओ,एवं भुयपरिसप्पाणवि भाणियव्वा ॥ सेत्त भुयगपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, सेत्त

व भपर्याप्त ऐसे ही गर्भज के दो भेद मीलाकर चार भेद जानना यह चतुष्पद स्थलचर का कथन हुआ प्रश्न—परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उस के दो भेद कहे हैं—उर-परिसर्प स्थलचर और भुज परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचे न्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं—समू-

थलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ? खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया, गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किंत समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ? समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तग समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्त समुच्छिम खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिया ॥ एव गब्भवक्कंतियावि जाव पज्जत्तग गब्भवक्कंतिया अपज्जत्तग गब्भवक्कंतियावि ॥ ४ ॥ खहयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाण भंते !

च्छिम व गर्भज इन दोनों के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे चार भेद मानना ऐसे ही भुजपरिसर्प का कहना यों स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा॥ प्रश्न—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं-समूर्च्छिम व गर्भज प्रश्न—संमूर्च्छिम खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उस के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे ही गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का जानना॥ ४ ॥ प्रश्न—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कितने प्रकार का योनि संग्रह कहा है ?

कइविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते तंजहा अंडया पोयया समुच्छिमा ॥ अंडया तिविहा पण्णत्ता तंजहा-इत्थी पुरिसा नपुंसका। पोयया तिविहा प० त० इत्थी पुरिसा णपुंसया ॥ तत्थणं जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कइलेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छलेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा-कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ तेणं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठि मिच्छदिट्ठि सम्ममिच्छदिट्ठि ? गोयमा ! सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठिवि सम्मामिच्छदिट्ठीवि॥तेणं भंते!जीवा किं नाणि अन्नाणि?गोयमा!नाणीवि अन्नाणीवि, तिन्नि

उत्तर—तीन प्रकार का योनि संग्रह कहा है १ अंडज अंड में से उत्पन्न होवे २ पोतज थैली से उत्पन्न होवे और ३ समूर्च्छिम उन में से अंडज के तीन भेद, स्त्री, पुरुष व नपुंसक पोतज के तीन भेद स्त्री, पुरुष व नपुंसक और जो समूर्च्छिम होते हैं वे नपुंसक ही होते हैं अहो भगवन् ! उन जीवों को कितनी लेश्याओं कही है ? अहो गौतम ! छ लेश्याओं कही हैं कृष्ण, नील यावत् शुक्ल लेश्या अहो भगवन् ! वे जीवों क्या समदृष्टि हैं मिथ्यादृष्टि है या समामिथ्यादृष्टि हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! समदृष्टि व समामिथ्या दृष्टि हैं अहो भगवन् ! वे जीवों क्या ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं ? अहो गौतम ! वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी

णाणाइ तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए जहा दुविहेसु गब्भवक्कंतियाणं ॥ तेणं भंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ? गोयमा ! तिविहावि ॥ तेणं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ तेणं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति किं नेरइएहिंतो उववज्जति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमग अंतरदीवग वज्जेहिं उववज्जति ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं केवइयं कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागं ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं

होते हैं ज्ञान में तीन ज्ञान व अज्ञान में तीन अज्ञान की भजना है अहो भगवन् ! वे जीवों क्या मन योगी, वचन योगी व काया योगी हैं ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार के योग कहे हैं अहो भगवन् ! वे जीवों क्या साकारोपयुक्त है या अनाकारोपयुक्त है ? अहो गौतम ! साकार व अनाकार दोनों उपयोगयुक्त हैं अहो भगवन् ! वे जीवों कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या नरक में से, तिर्यंच में से वगैरह पृच्छा, अहो गौतम ! असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले युगलिये व अंतरद्वीप के युगलिये वर्जकर अन्य सब गति के जीव उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! उन जीवों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! उनकी जघन्य

कइ समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचसमुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणा समुग्घाए जाव तेया समुग्घाए ॥ तेण भंते ! जीवा मारणंतिय समुग्घाएणं किं समोहता मरंति असमोहता मरंति ? गोयमा ! समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति ॥ तेण भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टिता कहिं गच्छंति किं नरइएसु उववज्जंति पुच्छा ? गोयमा ! एवं उवट्टणा भाणियव्वा जहा वक्कंतिए तहेव ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कइ जाई कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! बारसजाइ कुलकोडि जोणिपमुह सयसहस्साइं ॥ ५ ॥ भुयगपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरि-

अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग की स्थिति कही अहो भगवन् ! उन जीवों को कितनी समुद्घात कही ? अहो गौतम ! पांच समुद्घात कहीं तद्यथा-वेदना, कषाय, मारणांति, वैक्रेय व तेजस अहो भगवन् ! वे क्या समोहता मरण मरते हैं या असमोहता मरण मरते हैं ? अहो गौतम ! वे समोहता व असमोहता ऐसे दोनों प्रकार के मरण मरते हैं अहो भगवन् ! वे वहां से नीकलकर कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! उत्पत्ति जैसे उद्वर्तना कहना अहो भगवन् ! उन जीवों की कितनी कुलकोडी कही है ? अहो गौतम ! उन की बारह लाख योनि प्रमुख कुल कोडी कही हैं ॥ ५ ॥

क्खजोणियाण भंते ! कइविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते तजहा- अंडया पोयया संमुच्छिमा ॥ एवं जहा खहयराण तहेव णाणत्तं जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी, उव्वट्टित्ता दोच्चं पुढविं गच्छइ, णवजाइ कुलकोडी जोणिप्पमुह सयसहस्सा भवंतितिमक्खाया, सेसं तहेव ॥ ६ ॥ उरग परिसप्प थलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! पुच्छा ? जहेव भुयग परि-सप्पाणं तहेव णवरं ठिई जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पुव्वकोडी उव्वट्टित्ता जाव पंचमिं पुढविं गच्छइ, दसजाई कुलकोडी ॥ ७ ॥ चउप्पय थलयर पंचिदिय

अहो भगवन् ! भुजपरिसर्प चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच की कितने प्रकार का योनिसंग्रह कहा है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार का योनि संग्रह कहा है, अंडज, पोतज व संमूर्छिम इस का सब कथन खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे कहना विशेष में स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष वहां से नीकलकर दूसरी नरक तक जाते हैं इस की नव लाख कुल कोडी कही है ॥ ६ ॥ उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय जैसे कहना परतु स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष, वहां से नीकलकर पांचवी नरक तक जाते हैं इस की दश लाख कुल क्रोडी कही है ॥ ७ ॥

तिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा जराओया संमुच्छिमया ॥ जराओया तिविहा पण्णत्ता तजहा-इत्थी पुरिसा नपुसका ॥ तत्थण ज ते समुच्छिमा ते सव्वे णपुसका ॥ तेसिण भते ! जीवाण कइ लेस्साओ पन्नत्ताओ? सेस जहा पक्खीण, णाणत्त ठिई जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ उव्वट्टिता, चउत्थ पुढवि गच्छति, दस जाई कुलकोडी ॥८॥ जलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाण भते ! पुच्छा ? जहा भुयगपरिसप्पाण,णवर उव्वट्टित्ता जाव अहेसत्तमिं, पुढविं अद्ध तेरसजाइ कुलकोडी जोणिय पमुह जाव पण्णत्ता

चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय की पृच्छा, ? अहो गौतम ! दो प्रकार का योनि संग्रह कहा है १ जरायुज गर्भ से उत्पन्न होवे और २ संमूर्छिम इस में से जरायुज के तीन भेद स्त्री, पुरुष व नपुसक और समूर्छिम सब नपुसक हैं अहो भगवन् ! उन को कितनी लेश्याओं कही है ? अहो गौतम ! जैसे खेचर का कहा वैसे ही जानना विशेष में स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम, वहां से नीकलकर चौथी नारकी तक उत्पन्न होवे हैं इस की कुल कोडी दश लाख है ॥ ८ ॥ जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भुजपरिसर्प जैसे जानना विशेष में इन में से नीकला हुआ नीचे सातवी पृथ्वी तक जाते हैं साढे बारह लाख कुल कोडी है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! चउरेन्द्रिय की कितनी कुल कोडी कही

॥ ९ ॥ चउरिंदियाणं भंते ! कइजाइ कुलकोडी जोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! नवजाई कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा जाव समक्खाया ॥ तेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अट्ठजाइकुल जाव समक्खाया ॥ बेइंदियाणं भंते ! केइ जाइ पुच्छा ? गोयमा ! सत्तजाइ कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा ॥ १० ॥ कइणं भंते ! गधंगा पण्णत्ता, कइणं भंते ! गधसया ? गोयमा ! सत्तगधंगा सत्तगधसया

है ? अहो गौतम ! नव लाख कुल कोडी कही है तेइन्द्रिय की पृच्छा, ? अहो गौतम ! आठ लाख कुल क्रोड, बेइन्द्रिय की कितनी कुल कोड कही है ? अहो गौतम ! सात लाख कुल क्रोड कही है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! गधांग [गंध के अंग] कितने कहे हैं व गधांग शत कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! सात गधांग व सात गधांगशत कहे हैं अब गधांग जाति के भेद कहते हैं १ मूल, २ त्वचा, ३ काष्ट, निर्यास, ४ रस, ५ पत्र, ६ पुष्प, ७ फल इस में मूल, अर्थात् मोथवाला, २ त्वचा अर्थात् सुवर्णछाल ३ काष्ट अर्थात् चंदन अगुरु ४ निर्यास अर्थात् कपुर प्रमुख ज नना ५ पत्र अर्थात् जाति का तमल पत्र, ६ पुष्प सो प्रियंगु वगैरह, और ७ फल सो जाति फल ककोलादि इन सब को काला प्रमुख पांच वर्ण से गुणा करने से ३५ होवे, इसे एक गंध से गुणने से ३५ ही रहे इसे पांच रस से गुणने से १७५ होवे फीर इसे मृदु, लघु, शीत व रूक्ष ऐसे चार

पण्णत्ता ॥ ११ ॥ कइण भंते ! पुष्फ जाई कुलकोडी जोणिपमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! सोलस पुष्फ जाइ कुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा पण्णत्ता तजहा चत्तारिजलयराण, चत्तारिथलयराण, चत्तारि महारुक्खाण, चत्तारि महा गुम्मियाण ॥ १२ ॥ कइण भंते ! वल्लीउ कइवल्लीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारिवल्लीउ चत्तारिवल्लिसया पण्णत्ता ॥ १३ ॥ कइण भंते ! लयाउ कइलयसय. पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठलयाउ अट्ठलयसया पण्णत्ता ॥ १४ ॥ कइण भंते !

स्पर्श से गुणने से ७०० होवे हैं यों सात सो गंधांग हुवे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! पुष्प जाति की कुल क्रोड कितनी कही ? अहो गौतम ! सोलह लाख कुल क्रोड कही जिस में चार लाख जल में उत्पन्न होवे सो, चार लाख स्थल में उत्पन्न होवे सो, चार लाख मचुंद प्रमुख महा वृक्ष के और चार लाख जाइ प्रमुख महा गुल्म के ॥१२॥ अहो भगवन् ! वल्लियों की कितनी जाति कही और वल्लीशत कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! चार जाति की वल्ली चार वल्लीशत ॥१३॥ अहो भगवन् ! कितनी लताओं व कितनी लताशत कहे हैं ? अहो गौतम ! आठ लता व आठ लताशत कही ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! कितनी हरिकाय व कितनी हरिकाय शत कही है ? अहो गौतम ! तीन हरितकाय व तीन हरितकायशत जानना एक २ के अवांतर सो २ भेद से तीन के तीन सो भेद होते हैं वृत से बंधे हुए के हजारों फल तुंबक प्रमुख और नाल स

वीईवइज्जा अत्थेगइय विमाण नो वीईवइज्जा ए महालयाण ? गोयमा ! ते विमाणा पन्नत्ता ॥ १६ ॥ अत्थिण भंते ! विमाणाइ अच्चीणि अच्चिरावत्ताइं तहेव जाव अच्चुत्तर वडिंसकाइ ? हंता अत्थि ॥ तेविमाणा के महालया पण्णत्ता ? गोयमा ! एव जहा सोत्थिणी णवर एव इयाइ पंचउवासतराइ अत्थेगइयस्स देवस्स एके विक्कमे सिया सेस तचेव ॥ १७ ॥ अत्थिण भंते ! विमाणाइ कामाइ कामवत्ताइ जाव कामुत्तर विडंसगाइ ? हंता अत्थि ॥ तेण भंते ! विमाणा के महालया पण्णत्ता?

एक दिन, दो दिन तीन दिन उत्कृष्ट छ मास में कितनेक विमान को वे उल्लंघ सकते हैं और कितनेक विमान को नहीं उल्लंघ सकते हैं अहो गौतम ! इतने बडे विमान कहे हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! अर्चि, अर्चिआवर्त यावत् अर्चिरावतंस विमान हैं ? अहो गौतम ! वैसे हैं अहो भगवन् ! य विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! वे विमान स्वस्तिक विमान जैसे जानना परंतु इस में पांच आकाशांतर जितना क्रम बनाना ऐसा एक देवता का विक्रम होवे ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! काम, कामावर्त यावत् कामोत्तरावतंसक नामक विमान क्या हैं ? अहो गौतम ! वैसे ही विमानों हैं अहो भगवन् ! वे विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसें स्वस्तिक विमान का कहे वैसे ही जानना परंतु इस में सात

गोयमा ! जहा सोत्थीणि नवर सचउवासतराइ विक्कमे सेस तहेव ॥ १८ ॥ अत्थिण भंते ! विमाणाइ विजयाइ वेजयताइ जयताइ अपराइयाइ ? हता अत्थि ॥ तण भते ! विमाणा के महालया ? गोयमा ! जावतिय सूरिए उदेइ, एवइयांइ नव उवासतराई सेस तचेव, नो चेवण ते विमाणा वीईवइज्जा एमहालयाण विमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! तिरिक्खजोणिय पढमो उद्देसउ सम्मत्तो ॥ ४ ॥ १ ॥ कइविहाण भंत ! ससार समावन्नगा जीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! छविहा ससार समावन्नगा जीवा पण्णत्ता तजहा—पुढवी काइय्वया, जाव तसकाइय्वया ॥१॥ सेकिं

अवकाशांतर करना इतना देवता का विक्रम यहां जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! विजय, वैजयंत जयंत, अपराजित क्या विमानों हैं ? अहो गौतम ! वे विमानों हैं अहो भगवन् ! वे कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! स्वास्तिक विमान जैसे जानना परंतु इस में नव अवकाशांतर जितना क्षेत्र बनाना इतना देवता का विक्रम जानना परंतु किसी भी विमान को उल्लंघ नहीं कर सकते हैं + यह तिर्यंच योनीक जीवों का पहिला उद्देशा हुवा ॥ ४ ॥ १ ॥

अहो भगवन् ! ससार समापन्नक जीव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! छ प्रकार के संसार,

+ विमानों पृथ्वीकाया के बने हुए हैं इस से इन का कथन भी इस उद्देशे में किया है

पुढवी, खरपुढवी ॥ ४ ॥ सण्हपुढवीण भंते ! केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एगं वाससहस्सं ॥ सुद्धपुढवी पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारसवाससहस्सा ! वालुयापुढवी पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउदसवास सहस्सा ॥ मणोसिलापुढवीए-पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सोलसवास सहस्साइं ॥ सक्करा-पुढवी पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण अट्ठारस वास सहस्साइं ॥ खर पुढवि पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वास सहस्साइं

२ शुद्ध पृथ्वी, ३ वालुक पृथ्वी, ४ मनःशिला पृथ्वी, ५ शर्कर पृथ्वी और ६ खर पृथ्वी ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सूक्ष्म पृथ्वी की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष की, शुद्ध पृथ्वी की पृच्छा ? जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह हजार वर्ष वालुक पृथ्वी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चउदह हजार वर्ष, मन शिला पृथ्वी की पृच्छा, ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सोलह हजार वर्ष शर्कर पृथ्वी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अठारह हजार वर्ष की, खर पृथ्वी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की

॥ ५ ॥ नेरइयाण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई, एव सव्व भाणियव्व जाव सव्वट्ठसिद्ध देवति ॥ ६ ॥ जीवेण भंते ! जीवेति कालओ केवच्चिर होति? गोयमा ! सव्वद्धा ॥ ७ ॥ पुढविकाइएण भंते ! पुढविकाइएत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा! सव्वद्ध एव जाव तसकाइए॥८॥पडुप्पन्न पुढविकाइयाण भंते! केवति कालस्स निल्लेवा-सिया? गोयमा! जहण्णपदे असखेज्जाहिं उसप्पिणि ओसप्पिणीहिं उक्कोसपए असखेज्जाहिं ओसप्पिणि साप्पिणिहिं,जहण्णपदातो उक्कोसपद असखेज्जगुणा,एव जाव पडुप्पन्न वाउक्का-

है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही है यों सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत सब की स्थिति कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जीव जीवपने कितना काल तक रहता है ? अहो गौतम ! जीव जीवपने सदैव रहता है ॥ ७॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया पृथ्वीकायापने कितने काल तक रहती है ? अहो, गौतम ! सदैव रहता है यों त्रस काया पर्यंत जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! तत्काल को उत्पन्न हुवा पृथ्वीकायिक सार कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! समय २ में एक २ नीकाले जघन्य तथा उत्कृष्ट पदसे असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे तो भी उन जीवोंका अंत नहीं होता है ऐसेही अप्

इया॥पडुप्पन्न वणस्सति काइयाण भंते! केवति कालस्स निल्लेवा सिता?गोयमा! पडुप्पण्ण वणस्सइकाइया जहण्णपदे अपदा उक्कोसपदे अपदा, पडुप्पण्ण वणस्सति काइयाण नत्थि निल्लेवणा ॥ पडुप्पन्न तसकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णपए सागरोपम सहस्स पुहुत्तस्स उक्कोसपदे सागरोपमस्स पुहुत्तस्स जहन्नपया उक्कोसपए विसेसाहिया ॥ १ ॥ अविसुद्ध लस्सेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेसेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारं जाणइ

काया तेउकाया व वायुकाया का जानना अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए वनस्पतिकाया कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! वे कदापि निर्लेप नहीं होते हैं क्योंकि वे अनंत हैं अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए त्रस काया के जीवों कितने काल में निर्लेप होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य पद से प्रत्येक हजार सागरोपम उत्कृष्ट पद से दश सो सागरोपम पृथक्त्व में निर्लेप होवे ॥ १ ॥ यह भाव के ज्ञान अनगार होने से अनगार का प्रश्न करते हैं ? अहो भगवन् ! अशुद्ध लेश्या (कृष्ण, नील व कापोत) वाला अनगार वेदनादि समुद्घात से रहित अपने ज्ञान से अशुद्ध लेश्यावाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं २ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात

पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेणं भंते ! अणगारे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवंदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेणं भंते ! अणगारे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवंदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेणं भंते ! अणगारे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवंदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेणं भंते ! अणगारे समोहयासमोहएणं विसुद्धलेस्सं देवंदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा !

रहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार विशुद्ध लेश्यावाला देव तथा देवी को अपने ज्ञान से क्या जाने देखे? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ३ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात सहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार अविशुद्ध लेश्यावाला देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, ४ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात सहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार अपने ज्ञान से विशुद्ध लेश्या-वाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ५ अहो भगवन् ! अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार वेदनादि समुद्घात से सहित अथवा रहित अविशुद्ध लेश्या वाले देव अथवा देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ६ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात रहित

इया॥पडुप्पन्न वणस्सति काइयाण भंते! केवति कालस्स निल्लेवा सिता? गोयमा! पडुप्पण्ण वणप्फइकाइया जहण्णपदे अपदा उक्कोसपदे अपदा, पडुप्पण्ण वणस्सति काइयाण नत्थि निल्लेवणा ॥ पडुप्पन्न तसकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णपए सागरोपम सहस्स पुहुत्तस्स उक्कोसपदे सागरोपमस्स पुहुत्तस्स जहण्णपया उक्कोसपए विसेसाहिया ॥ १ ॥ अविसुद्ध लेस्सेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारे जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेसेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारे जाणइ

काया तेउकाया व वायुकाया का जानना अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए वनस्पतिकाया कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! वे कदापि निर्लेप नहीं होते हैं क्योंकि वे अनंत हैं अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए त्रस काया के जीवों कितने काल में निर्लेप होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य पद से प्रत्येक हजार सागरोपम उत्कृष्ट पद से दस सो सागरोपम पृथक्त्व में निर्लेप होवे ॥ १ ॥ पर भाव के ज्ञान अनगार होने से अनगार का प्रश्न करते हैं १ अहो भगवन् ! अशुद्ध लेश्या (कृष्ण, नील व कापोत) वाला अनगार वेदनादि समुद्घात से रहित अपने ज्ञान से अशुद्ध लेश्यावाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं २ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात

किरिय पकरेइ, सम्मत्तकिरिया पकरेणताए मिच्छत्त किरिय पकरेइ, मिच्छत्त किरिया पकरेणताए सम्मत्त किरिय पकरेइ एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दोकिरियाओ पकरेइ तंजहा-सम्मत्त किरिय मिच्छत्त किरिय, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अन्नउत्थिया एवं माइक्खति एवं भासति एवं पन्नवेंति एवं परूवेंति एवं खलु एगेण समएण दोकिरियाओ पकरेइ तहेव जाव सम्मत्त किरियंच मिच्छत्त किरियंच जेतेएवं माहंसु तण्णमिच्छा, अहं पुण गोयमा ! एवं माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण एगं किरियं पकरेइ तंजहा-सम्मत्ताकिरियंवा मिच्छत्त-

क्रिया करता है उस समय में मिथ्यात्व की क्रिया करता है, और जिस समय में मिथ्यात्व की क्रिया करता है उस समय में सम्यक्त्व की क्रिया करता है सम्यक्त्व की क्रिया करते हुवे, मिथ्यात्व की क्रिया करता है और मिथ्यात्व की क्रिया करते हुए सम्यक्त्व की क्रिया करता है इस तरह एक समय में एक जीव दो क्रिया करता है सो अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि एक समय में एक जीव सम्यक् व मिथ्या ऐसी दो क्रिया करता है उन का कथन मिथ्या है अहो गौतम ! उस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक समय में एक जीव एक ही क्रिया करता है यथा-सम्यक् क्रिया अथवा मिथ्या क्रिया जिस समय

नो इणट्ठे समट्ठे ॥ विसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे असमोहतेण अप्पाणेण अविसुद्ध लेस्स देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ, जहा अविसुद्धलेस्सेण छ आलावगा एवं विसुद्धलेस्सेणवि छ आलावगा भाणियव्वा जाव विसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ १० ॥ अन्नउत्थियाण भंते ! एवमाइक्खइ एवं भासेइ, एवं पन्नवेइ, एवं परूवेइ, एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेइ तंजहा सम्मत्त किरियंच मिच्छत्त किरियंच, जं समयं सम्मत्त किरियं पकरेइ तं समयं मिच्छत्त किरियं पकरेइ, जं समयं मिच्छत्त किरियं पकरेइ तं समयं सम्मत्त

भगवन् ! क्या अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार विशुद्ध लेश्यावाले देव अथवा देवी को क्या जाने अथवा देखे? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अब विशुद्ध लेश्या (तेजो पद्म व शुक्ल) का कहते हैं. अहो भगवन् ! विशुद्ध लेश्यावाला अनगार वेदना आदि समुद्घात रहित अपने ज्ञान से विशुद्ध लेश्यावाले देव अथवा देवी को क्या जाने देखे? हां गौतम ! वैसे जाने व देखे यों जैसे अविशुद्ध लेश्या के छ आलापक कहे वैसे विशुद्ध लेश्या के छ आलापक जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कितनेक अन्यतीर्थी ऐसा कहते हैं, यावत् प्ररूपते हैं कि एक जीव एक समय में दो क्रिया करता है यथा—सम्यक् क्रिया व मिथ्या क्रिया, जिस समय में सम्यक्त्व की

॥ १ ॥ कहिण भंते ! समुच्छिम मणुस्सा समुच्छंति ? गोयमा ! अंतो मणुयखेत्ते जहा पण्णवणाए जाव सेत्त समुच्छिम मणुस्सा॥२॥ से किं त गब्भवक्कंतिय मणुस्सा ? गब्भवक्कंतिय मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता तंजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा ॥ ३ ॥ सेकिंत अंतरदीवगा ? अंतरदीवगा अट्ठावीसविहा पण्णत्ता तंजहा एगरुआ, आभासिया, वसाणिया, णागोली, हयकण्णगा, आयसमुहा, आसमुहा, आसकन्नगा, उक्कामुहा, घणदंता, जाव सुद्धदंता ॥ ४ ॥ कहिण्णं भंते !

कहे हैं ? संमूर्छिम मनुष्य एक रूप ही है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! समूर्छिम मनुष्य कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसे पन्नवणा में समूर्छिम मनुष्य का अधिकार कहा वैसा ही यहां जानना यावत् यह समूर्छिम मनुष्य का कथन हुआ ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! गर्भज मनुष्य के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! गर्भज मनुष्य के तीन भेद कहे हैं कर्मभूमि के, अकर्मभूमि के व अंतरद्वीप के ॥ ३ ॥ उस में अंतरद्वीप के कितने भेद कहे हैं ? अंतरद्वीप के अट्ठाइस भेद कहे हैं १ एक रूक, २ आभासिक, ३ वैमाणिक, ४ नांगोलिक, ५ हयकर्ण, ६ अयसमुख, ७ आमकर्ण, ८ उल्कामुख, ९ घनदंत यावत् शुद्धदंत ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के एक रूक मनुष्य का एक रूक द्वीप कहां कहा है ?

किरियत्ता, ज समय सम्मत्तकिरिय पकरेइ णो त समयमिच्छत्तकिरिय पकरेइ, ज समय मिच्छत्तकिरिय पकरेइ नो त समय सम्मत्ताकिरिय पकरेइ, सम्मत्तकिरिया पकरणत्ताए नो मिच्छत्त किरिय पकरेति, मिच्छत्तकिरिया पकरणत्ताए नो सम्मत्त किरिय पकरेति, एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग किरिय पकरेइ तजहा-सम्मत्तकिरिय वा मिच्छत्तकिरियवा ॥ सेत्त तिरिक्खजोणी तठदेसउधीओ ॥ ४ ॥ २ ॥ सेकित मणुस्सा? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता तजहा—समुच्छिम मणुस्साय गब्भवक्कतिय मणुस्साय ॥ सेकित समुच्छिम मणुस्सा ? समुच्छिम मणुस्सा एगागारा पण्णत्ता

सम्यक् क्रिया करता है उस समय मिथ्या क्रिया नहीं करता है और जिस समय मिथ्या क्रिया करता है उस समय सम्यक् क्रिया नहीं करता है सम्यक् क्रिया करने में मिथ्या क्रिया का अभाव है और मिथ्या क्रिया करने में सम्यक् क्रिया का अभाव है इस तरह एक जीव एक समय में एक ही क्रिया करता है यथा—सम्यक् क्रिया अथवा मिथ्या क्रिया यह तिर्यंच का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा॥४॥२॥ अब मनुष्य का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! मनुष्य के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य के दो भेद कहे हैं समूर्च्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य इस में समूर्च्छिम मनुष्य के कितने भेद

वणसडण सव्वओ समता सपरिक्खित्ता ॥ सेणं वणसडे देसूणाइ दो जोयणाइ चक्कवाल विक्खभेण वेइया समए परिक्खेवेण पन्नत्ते ॥ सेण वणसडे किण्हे किण्हो भासे एव जहा रायपसेणइज्जे, वणसडवन्नउ तहेव निरविसेस भाणियव्वं ॥ तणाणय वन्नगधफासो सद्दो, तणाण वावीओप्पाय पव्वयगा, पुढविसिला पट्टगाय भाणियव्वा जाव तत्थण बहवे वाणमतरा देवाय देवीओय आसयति जाव विहरति ॥ ४ ॥ एगुरुय दीवस्सण दीवस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते—से जहा नामए आलिंगपुक्खरेइवा, एव सयणीए भाणियव्वे जाव पुढवि सिलापट्टगाति तत्थण

वर्णन रायप्रसेणी सूत्र से जानना इस प्रकार वेदिका को चारों तरफ जो वनखण्ड रहा हुवा है वह दो योजन में कुच्छ कम गोलाकार चौडाइ में है यह वनखण्ड कृष्ण वर्णवाला कृष्णाभासवाला यों इस का सब कथन रायप्रसेणी सूत्र से जानना तृण व मणिकातृण, गंध, रस व स्पर्श वैसे ही बावडियें, पर्वत, व पृथ्वी शिलापट्ट सब कहना वहां अनेक वाणव्यंतर देव व देवियों बैठते हैं यावत् विचरते हैं ॥४॥ एक रूप द्वीप की अंदर बहुत सम रमणीय भूमि भाग रहा हुवा है जैसे मृदंग का तल, यों वैसा का कहना यावत् पृथ्वीशिलापट्ट का कहना उस में अनेक एकरूक द्वीप के मनुष्य व मनु-

दाहिणिल्लाण एगरूयमणुस्साण एगुरुयदीवेणाम दीवे पन्नत्ते ? गोयमा ! जंबूदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द तिण्णि जोयण सयाइं उगाहित्ता, एत्थणं दाहिणिल्लाण एगुरुय मणुस्साण एगुरुय दीवे नामदीवे पण्णत्त,तिण्णिजोयण सयाइं आयाम विक्खंभेणं णवएकूणपण्णे जोयणसए किंचि विसेसूण परिक्खेवेण ॥ सेणं एगाए पउमवरं वेइयाए एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता ॥ सेणं पउमवर वेइया अद्धजोयणं उड्ढंउच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं विक्खंभेण, एगुरूय दीवं समंता परिक्खेवेणं पन्नत्ता तीसेणं पउमवर वेइयाए अयमेया रूवेवन्नवासे पन्नत्ते तंजहा-वइरामयानिम्मा, एवं वेतिया, वन्नओ जहा रायपसेणइए जहा भाणियव्वा, सेणं पउमवर वेइया एगेणं

अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण में चुल्लहिमवंत वर्षधर पर्वत की ईशानकून के चरिमांत से तीन सो योजन लवण समुद्र में जावे वहां एकरूक नाम द्वीप रहा है यह तीन सो योजन का लम्बा चौडा है ९४९ योजन में कुच्छ कम की परिधि है उस की चारों तरफ एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है यह पद्मवर वेदिका आधा योजन की ऊंची है, पांच सो धनुष्य की चौडी है और एकरूक द्वीप को चारों तरफ घेर कर रही हुई है यह पद्मवर वेदि का वज्र रत्नमय है इत्यादि सब

खज्जूरीवणा णालिएरवणा कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ ७ ॥ एगरुय दीवेण तत्थ २ बहवे तिलयालयआ नग्गोहा जाव रायरुक्खा णदिरुक्खा कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ एगरुय दीवेण दीवे तत्थ बहुओ पउमलयाओ, नागलयाओ जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ एवं लयावन्नओ जहा उववाइए जाव पडिरूवाओ ॥ एगुरुय दीवेण दीवे तत्थ बहवे सिरियगुम्मा जाव महा जाइगुम्मा तणगुम्मा दसद्धवन्न कुसुम कुसुमेंति जेण वायविहुलग्ग साला एगुरुयदीवस्स बहुसमरमणिज्ज भूमिभाग मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति, एगुरुयदीवेण तत्थ २ बहुओ वणराईओ पन्नत्ताओ

व नालीयेरी के वन, पुष्प फलवाले यावत् रहे हुवे हैं ॥ ७ ॥ उस एकरुक द्वीप में बहुत तिलक वृक्ष के वन यावत् रायण नंदीवृक्ष प्रमुख डाभादिक से रहित पुष्प फल वाले, यावत् रहे हुवे हैं और भी वहां पद्मलता यावत् श्यामलता पुष्प फल वाली रही हुई है इस का वर्णन उववाइ सूत्र में कहा वैसे जानना यावत् प्रतिरूप है, और भी वहां बहुत सिरिक वृक्ष के गुल्म यावत् महाजाति के गुल्म पांचों वर्ण के पुष्पों व फलों से फलित हुए हैं, वहां मंद वायु चलता है जिस से उस निर्मल वृक्ष की शाखा कंपायमान होती है उस से एकरुक द्वीप के बहुत मनोहर समभूमि भाग में पुष्प के समूह (ढग) होते हैं, और भी

बहवे एगुरूय दीवया मणुस्साय मणुस्सीओय आसयति जाव विहरति ॥ ५ ॥ एगरूय दीवेण दीवे तस्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे उद्दालका मोद्दालका कोद्दालका कतमाला नतमाला नट्टमाला सिंगमाला सखमाला दतमाला सेलमाला णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ कुसविकुस विसुद्धरुक्खमूला मूलमतो कदमतो जाव बीयमतो, पत्तेहिय पुप्फेहिय अच्छन्न पडिछन्ना सिरिए अईव २ सोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥६॥ एगुरूय दीवेण दीवे तस्थ बहवे हेरुयालवणा, भेरुयालवणा मेरुयालवणा, सेरुयालवणा, सालवणा, सरलवणा, सत्तपण्णवणा पूयफलिवणा,

च्यणी बैठते हैं यावत् विचरते हैं ॥ ५ ॥ उस एकरूक द्वीप में बहुत उद्दालक मोद्दालक, कोद्दालक, कतमाल, नतमाल, नट्टमाल, सिंगमाल, शखमाल, दतमाल व सेलमाल नामक वृक्षों कहे हुवे हैं वे वृक्षों फल फुल से सहित हैं, उन के मूल शुद्ध हैं, दर्भादिक से रहित हैं, मूल, कद यावत् बीज सहित हैं, पत्र पुष्प से आच्छादित बने हुए हैं, विशेष वृक्ष की शोभासे अती २ शोभते हुवे रहते हैं ॥ ६ ॥ उस एकरूप द्वीप में हेरुवाल वनस्पति के वन, भरुवाल वनस्पति के वन, मेरुवाल वनस्पति के वन, सेरुवाल वनस्पति के वन, चाली के वरक के वन, सरसवा के वन, सोपारी के वन, आम्र के वन, खजुरी के वन

विसायण सुपक्क खोयरसथरसुरा वण्णरसगंधफासजुत्त...

मज्जविधीय बहुप्पगारा, तहेव तेमत्तंगयावि दुमगणा अणेगा बहुविविह वीससा परिणयाए मज्जविहीए उववेया फलेहि पुण्णावित्र विसट्टुति, कुसविकुसविशुद्ध रुक्खमूला जाव चिट्ठति ॥ १ ॥ एगुरुय दीवे तत्थ बहवे भिंगंगाणामदुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से वारगघडकरग कलस कक्करि पायकंचणि उदंकवद्धणि सुपइट्ठकविट्ठा पारीचसगा भिंगारकरोडि सरग परंगपत्ती थालणिल्लग चवलिय अयपलगवाल विचित्तवट्टकमणि

प्रकार से भरा रहते हैं. ऐसा मत्तंगक वृक्ष का समुह है, ये अनेक प्रकार के भेद स्वभाव से ही होते हैं, परिपाकपने परिणमते हैं, फल से परिपूर्ण रहते हैं अथवा फल पक्व होकर फूटे हो जाते हैं तब उस में से मद झरता है बहुत विस्तारवाले श्रेष्ठ व शुद्ध उस के मूल रहे हैं ऐसे वृक्षों वहां रहे हुए हैं यह पहिला मातंग कल्पवृक्ष का वर्णन हुआ ॥२॥ अहो आयुष्मन् श्रमणो! वहां बहुत प्रकार के भृंगारक नाम कल्प वृक्षों (भाजन के वृक्षों) हैं जैसे घट, कलश, कक्करी, कांचनीका, उदकवर्धनी, सुप्रतिष्ठक, विष्टर, पारिचपक, भृंगार लोटा, करोटिक, सरक, सरक गाशी, थाल, पलक, चपलक, अपर, दकवारक, मणिपट्टक, शुक्तिक, थोरापिरका, कंचनमणि भाजन इत्यादिक मनोहर भाजनों होते हैं वे भाजनों सुवर्ण मणि रत्नों से विचित्र हैं वैसे इस क्षेत्र में पूर्वोक्त

फदिया तिट्ठाणकरणसुद्धा, तहेव ते तुडियगावि दुमगणा अणेग वहुविह वीससा परिणताए ततवितत घण झूसिराए चउव्विहाए आतोज्जविहाए उववेया फलेहिं पुण्णाविव विसट्टंति, कुसविकुस विसुद्ध रुक्खमूलाओ जाव चिट्ठंति ॥ ११ ॥ एगरुय दीवे तत्थ बहवे दीवसिहाणाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से मज्झाविराग समए नवनिहिपतिणो वेदीविया चक्कवालचद पभूय वट्टिपलितज्झणहिं विउज्जालिय तिमिर मद्दए कणगनिकर कसुमिय पारिजाय घणप्पगासे कचण मणिरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जलविचित्त दडाहिं दीवियाहिं सहसा पज्जा-

वादित्र की प्राप्ति को प्राप्त करते हैं वैसे ही त्रुटितांग नामक कल्प वृक्षों तत, वितत, घन व झुषिर यों चारों प्रकार के वादित्र के गुणों मे सहित हैं वे पूर्वोक्त वृक्ष पत्र पुष्प सहित परिपूर्ण हैं, उन के मूल शुद्ध हैं यह तीसरा त्रुटितांग नामक कल्प वृक्ष कहा ॥ ११ ॥ अहो आयुष्मन्त श्रमणो ! एकरूक द्वीप में अनेक प्रकार के दीपशिखा नामक वृक्षों कहे हुए हैं जैसे सध्या समय में नव निधान के स्वामी चक्रवर्ती राजा के यहां एक दीपक का चक्रवाल प्रकट करे कि जिस से अंधकार नष्ट हो जावे, उस की बत्ती बहुत जाडी व तेल से परिपूर्ण होती है शिखा का वर्ण कनक जैसा होता है, उस दीवी को बहु मूल्यवाले मणिरत्नों से जडित सुवर्ण का दंड होता है, ऐसी दीवी उत्तम होती है सदैव प्रकाश करती रहती है, रात्रि में तेजस्वी मनोहर

तद्धकुक्षिप्पिसारापिणय, कचगमणिग्यणभत्ति विचित्तविमायणविहि बहुप्पगारा, तहेव तेसि भिगंगयावि दुमगणा अणेगा बहुविविह वीससा परियणत्ताए भायण विहीए उववेया फलेहिं पुण्णा विवधिमट्टति, कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ १० ॥ एगरुय दीवेण तत्थ बहवे तुडियगानाम दुमगणा पन्नत्ता समणाउसो ! जहा से आलिंग पणव दद्दर पडह डिडिमा भभा तहोरम्भ किणिय खरमुहि मूयंग सखिय पीरिछए पव्वगा परिवायणिच्च मंजुवीणो सुघोसगानंदीच महतिकच्छ तिरिक्खमत कलौला कसाल तालक संसपरोड आले घावेधीये णिउणा गंधव्व समय कुसलेहिं

भाजन होते हैं वैसे ही भृंगार वृक्ष के समुह अनेक प्रकार के भाजन सहित हैं स्वभाव से परिणामित हैं, पुष्प फल से परिपूर्ण हैं, य वृक्ष पत्र पुष्पवाले यावत् मनोहर हैं यह दूसरा भृंगारक वृक्ष का वर्णन हुवा ॥ १० ॥ अहो आयुष्मन् श्रमणो ! उस एकरूक द्वीप में त्रुटितांग नामक वृक्ष के समुह हैं, जैसे आलिंगक नामक वाद्य, मादिंग, लघुमादल, पणव, पडह, दद्दर करटी, डींडिम, भेरी, बडा भेरी, कनिका खरमुखी, मुरज, संख, परिलिय, परिवादप, सप्ततन्त्री, वीणा, धर्व, विपुंचय, विभेच, सुघोषा, नंदीघोषा, वीणावंसी, वीणा विशेष शततन्त्री वीणा, रगसीका नामक वाद्य, हस्तताल, कांस्यताल इत्यादि वाजिंत्र के भेद कहे हैं —जैसे गायन विद्या में प्रवीण वाजिंत्र बजाने आदि मध्य व अंतर विस्तार करे

फदिया तिट्ठाणकरणसुद्धा, तहेव ते तुडियगावि दुमगणा अणेग बहुविह वीससा परिणताए ततवितत वधण झूसिराए चउव्विहाए आतोज्जविहाए उववेया फलेहिं पुण्णाविव विसट्टति। कुसविकुस विसुद्ध रुक्खमूलाओ जाव चिट्ठति ॥ ११ ॥ एगरुय दीवे तत्थ बहवे दीवसिहाणाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से सञ्झविराग समए नवनिहिपतिणो वेदीविया चक्कवालवद - पभूय वट्टिपलि-तञ्झणाहिं विउज्जालिय तिमिर मदए कणगनिकर कसुमिय पारिजाय घणप्पगासे कचण मणिरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जलविचित्त दडाहिं दीवियाहिं सहसा पज्जा-

वादिंत्र की ध्वनि को प्राप्त करते हैं वैसे ही तृटितांग नामक कल्प वृक्षों तत, वितत, ताल व शुषिर यों चारों प्रकार के वादिंत्र के गुणों से सहित हैं वे पूर्वोक्त वृक्ष पत्र पुष्प सहित परिपूर्ण हैं, उन के मूल शुद्ध हैं यह तीसरा तृटितांग नामक कल्प वृक्ष कहा ॥ ११ ॥ अहो आयुष्मन्त श्रमणो ! एकरूक द्वीप में अनेक प्रकार के दीपशिखा नामक वृक्षों कहे हुए हैं जैसे संध्या समय में नव निधान के स्वामी चक्रवर्ती राजा के वहां एक दीपक का चक्रवाल प्रकट करे कि जिस से अधकार नष्ट हो जावे, उस की बत्ती बहुत चाटी व तेल से परिपूर्ण होती है शिखा का वर्ण फूल जैसा होता है, उस दीपी को बहु मूल्यवाले मणिरत्नों से खचित सुवर्ण का दंड होता है, ऐसी दीवी उत्पन्न होती है सदैव प्रकाश करती रहती है, रात्रि में तेजस्वी मनोहर

सोगन्धासुपण कुसुमविमउलिपपुञ्ज भणिरयणकिरण जयहिंगुलय तिरयकवाइरेगरुवा, तहेव तजातिसिद्दाविदुमगणा अणगबहु विविह वीससा परिणयाए उज्जोयविहाए उववेया, सुहलेसा मदलेसा मदातवलेसा कूडाट्ठाणट्ठिया, अण्णोण्णसमोगाढाहिं लेसाहिं सएरभाए तेएएमे सव्वओसमताओ भासति उज्जोवाति पभासति कुसविकुसवि जाव चिट्ठति ॥ १२ ॥एगुरुयदीवे तत्थ २ बहवे चित्तगानामए दुमगणा पण्णत्ता समणा- उसो ! जहा से पेच्छाघरेव्व चितरामेव कुसुमदाममाला कुज्जलछेसा भासत मुक्कपुप्फ पुञ्जावयार किलिए विरल्लिय विचित्तमल्लसिरि समुदप्पगाब्भे गथिम वेढिम पूरिम

पुष्प, विकसित पुष्पों का समूह, मणिरत्न के किरण, जातवंत हिंगुल का समूह इन सब के रूप से अधिक रूप वाले ज्योतिष वृक्ष के समूह अनेक विविधवाले उद्योत सहित शुभ व मद लेश्या वाले कहे हैं इन का स्थान कूटाकार है परस्पर लेश्या के भेद रहे हुवे हैं. लेश्या के प्रदेश से सब दिशि में शोभते हैं उद्योत करते हैं कांति बढाते हैं, यावत् पुष्प फल से शोभनिक व मनोहर हैं यह ज्योतिष कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥ १२ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! एक रुक द्वीप में बहुत प्रकार के चित्रांगक नामक कल्पवृक्षों के समुह हैं जैसे प्रेक्षागृह विचित्र मनोहर उत्तम पुष्प की मालाओं से संयुक्त, देदीप्यमान, व सम्यक है, विकसित पांच वर्ण के पुष्पों के पुंज सहित हैं, विविध पुष्प व माला से सहित है, प्रदीप, वहिप्,

सघयमेण मझण कंथसिप्पिय विभागरइएण सव्वओसमता चेव समणुषद्धे पत्रिरल लबत विप्पइट्ठहिं पचवन्नेहिं कुसुमदामहिं सोभमाणा वनमालकतग्गए चेव दिप्पमाणे, तहेव ते चित्तगयावि दुमगणा, अणेगबहुविविहवीससा परिणयाए मल्लविहीए उववेया कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला जाव चिट्ठंति ॥१४॥ एगरुयदीवे तत्थ २ बहवे चित्तरसानाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो जहा से सुगंधवरकलमसालितंदुलविसिट्ठणिरुवहयदुद्धरद्धे सारयघय गुडखंडमहुमेलिए अइरसे परमन्ने होज्ज उत्तमवण्णगंधमंतेरणो जहा वा त्रि

पूरीम, व सघातीम यों चार प्रकार से निष्पन्न सब दिशाओं में विभाग करके अविरलपने लंबमान अमर रहित पांच वर्ण के पुष्पों की माला से भी शोभायमान है व वनमालाओं से उस के द्वारा शोभनीक बन हुवे हैं, वैसे ही यह चित्रांग वृक्ष का समुह अनेक प्रकार के स्वभाव से परिणमा हुवा है पुष्प व पुष्पमाला के गुणों से सहित हैं, वे वृक्ष यावत् फल फूल वाले रहते हैं यह चित्रांग कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥ १४ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणो ! इस एकरुक द्वीप में चित्ररस नामक कल्प वृक्ष कहे हुवे हैं जैसे इस क्षेत्र में उत्तम शालि धान्य के चांवल को गाय के दुध में पकाकर उस में घृत, व शक्कर डालने से वह क्षीर वर्ण, गंध व रस से रसवत बनती है, पसे ही ७ खण्ड का स्वामी चक्रवर्ती के लिये रसोई बनाने में निपुण पुरुषों रस

चकअट्टिसहोज्जा निउणेहिं सूरयपुरिसेहिं, सज्जिए चाउरकप्प-सेयासितेव उदणे कलमसालि णिव्वत्तिए विप्पक्के सेवप्फसित- विसय सगलसित्थे अणेगसालणग संजुत्ते अहवा पडिपुण्ण दव्वुवक्खड-सुसक्कए वण्णगंधरसफारसजुत्त बलविरिय परिणामे इंदियबलवद्धणे खुप्पिवासा महण पहाणगुलकढिय खडमच्छडिउवणीयव्वमोयगे, सण्हसमितिगब्भ हवेज्जा, परमइट्ठगसंजुत्ते, तहेव ते चित्तरसा वि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए भोयणविहीए उववेया कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ १५ ॥ एगुरुयदीवेणं तत्थ २ बहवे मणियंगा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से हारद्धहार वट्टणग

युक्त चार फलिक अनेक मसाले सहित बनावे जैसे मोदक अथवा परिपूर्ण सब द्रव्य सहित, यथायोग्य अग्नि में पका हुवा, उत्तम वर्ण गंध रस व स्पर्श युक्त बल वीर्य को बढाने वाले शरीर की पुष्टि करने वाले, क्षुधा तृषा मिटाने वाले मोदक प्रधान रस में उत्तमगुड अथवा शक्कर डाले वैसा सिंह केसरी नामक मोदक स्पर्श में सुकुमाल व सूक्ष्म दल वाले व अच्छे स्वाद वाले होते हैं वैसे ही चित्र रस वृक्ष अनेक प्रकार के स्वभाव से परिणमित भोजन देते हैं वे भोजन विधिवाले कल्प वृक्ष पुष्पफल सहित रहते हैं यह चित्र रसात्मक कल्प वृक्ष हुवा ॥ १२ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों! एकरुक द्वीप में मणिवंग नाम कल्प वृक्ष समुह कहे हैं- जैसे, हार, अर्धहार, वत्सरा, मुकुट, कुण्डल, वामोत्तक, हेमजाल

मउड कुंडलवासुत्तग हेमजाल मणिजाल कणग जालग सुत्तग उच्चितियकडग खुड्डयएगा
वली कंठसुत्त मगर उरत्थगेवेज्ज सोणिसुत्त मचूलामणि कणग तिलग फुल्लग सिद्धत्थिय
कण्णवालि ससिसूरउसभ चक्कगतल भंगेय तुडिय हत्थमालगवलक्ख दीनारमालिया
चंदसूरमालिया हरिसय केयूर वलिय पालंब अंगुलिज्जग कंचीमेहला कलाव पयर
कपाय जाल घंटिय खिंखिणि रयणोरुजालछड्डियवरनेउर चलणमालिया कणगणिगल-
मालिया कंचणमणिरयण भत्तिचित्तरूव भूसण विही बहुप्पगारा तहेव ते मणियगा
दुमगणा अणेग बहुविविहा वीससा परिणयाए भूसणविहीए उववेया कुसविकुसवि

मणिमाल, कनकमाल, सूत्रक, रूची, कटक, त्रुटि, एकावली, कंठसूत्रक, मकरीका, उरस्थ, ग्रैवेयक, श्रोणीसूत्रक, चूडामणि आभरण, कनकतिलक, पुष्प, सरसव कनकावली, चंद्र चक्र, सूर्य चक्र, वृषभ चक्र, तलभंगक, तुटित, हस्तमालक, विक्षप, दीनारमालिका, चंद्र मालिका, सूर्य मालिका, हर्षक, केयूर, वीरवलय, प्रलंब भूषण अंगुठी कटिमेखला, कलाप, प्रतरक, पादोजाल, घंटिका, घुघुरमाल रत्नमाल, पांव के झांझर चरणमालिका, सुवर्ण समुह की माला, ये सर्व सुवर्ण मणिरत्नके विचित्र प्रकारके हाव हैं जैसे ये यहां मनुष्यादि पहनते हैं वैसे ही वहां मणिकांग वृक्ष समुह अनेक प्रकार के अनेक आभूषणों से सुशोभित होते हैं. स्वभाव से आभूषण की विधि कहते हैं वे वृक्ष पत्र फल फूल वाले

आव त्थिद्वात ॥ १९ ॥ एगुरुपदीवे २ तत्थ बहवे गेहागारा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से पागारट्टालग चरिया गोपुर पासायागास तलगमडव एगसालग बाउसालग गब्भघर माहणघर वलभिघर चित्तसालग मालिय भत्तिघर वट्टतस नंदियावत्तसंठियायत्तपंडुरतल मुंडमाल हम्मिय अहवण धवलहर अद्धमागह विब्भमसेलद्धसेलसंठिय कूडागार सुविहि कोट्ठग अणेगघरसरणलेण आवण विडंग जालवंद निज्जूह अपवरक करोतालि चंदसालिरूव भत्तिकलिया

रहते हैं यों मत्तंगांग कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥ १९ ॥ अहो आयुष्यवन्त श्रमणों वहां एकरुकद्वीप में बहुत गृहाकार वृक्षों रहे हुए हैं. जैसे प्राकार अट्टालक, चरिकाद्वार, प्रासाद, आकाशतल (चांदनी) मंडप, एकशालिया, दो शालिया, तीन शालिया, चार शालिया, गर्भगृह, वल्लभीगृह, चित्रशालि, मालिक, भूमिगृह वर्तुलाकार गृह, तीन कूनेवाले, चारकूने वाले नंदावर्त, पंडुरतल वाले, मुंडमाल, धवल गृह, अर्ध मागध गृह, विभ्रम गृह, शैल आकार गृह, शिखर के आकारवाले गृह, अच्छा कोठे के आकारवाले, अनेक गृह, शरण, लयन, दुकान, विडंग, चंद्र निर्जुंह गृह, ओरडा, चंद्रशालीगृह, एसे अनेक प्रकार के विचित्र मनोहर गृह हैं जैसे गृह यहां भरत क्षेत्र में अनेक प्रकारे होते हैं वैसे ही गृहाकार वृक्ष के समुह भी अनेक प्रकार के हैं अनेक प्रकार के गृह के गुणों से विश्रेष स्वभाव से यावत् परिणमते हैं वह वृक्ष पर सुख पूर्वक चढ सकते हैं व उतर सकते हैं, उस वृक्ष में सुख से प्रवेश कर सकते हैं

नलिण सेतुमय भत्तिचित्ता तत्थ ग्रिहि बहुप्पगारा इक्खजत्तर पट्टणुग्गता वण्णराग कलिया तहेव ते अणियाणात्रि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए तत्थ विहीए उववेया कुसाविकुसवि जाव चिट्ठति ॥ १८ ॥ एगरुयदीवेण भंते दीवे मणुयाण करिसए आगारभावए पडायारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तेण मणुया अणतिवर सोमचारुरूवा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा, भोगसस्सिरिया सुजाय सव्वंगसुंदरंगा सुपइठिय कुम्मचारुचलणा, रत्तुप्पलपत्तमउय सुकुमाल कोमलतला नग णगर मगर

ऐसे ही अवग्रक नामक वृक्षों के समुह भी अनेक प्रकार के परिणमे हुवे वस्त्र विधि सहित फल फुलवाले पावत् रहे हुवे हैं यह दशवा अणियगण नामक कल्प वृक्ष का कथन हुवा यह दश जाति के कल्प वृक्ष का कथन किया ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में मनुष्य का आकार कैसा है ? अहो गौतम ! उन मनुष्यों को अत्यंत सौम्यकारी मनोहर रूप है, भोग में उत्तम, भोग के लक्षण धारण करनेवाले, व भोग में मनोहर हैं, उन के अंग सब अवयव से सुंदर मनोहर हैं, मनोहर सुस्थित काचबे जैसे पांव हैं रक्त कमल जैसे सुकोमल पांव के तले हैं, उन के पगतल में पर्वत, नगर, समुद्र, मगरमच्छ, चक्र मृग इत्यादि लक्षणों हैं, अनुक्रम से अंतर रहित पांव की अंगुलियां है, पांव की पानी ऊंची है, ताम्रवर्ण अम

सागर चक्कंकहरंक लक्खणंकियचलणा, अणुगुव्वसु साहयंगुलिया उण्णय, तणुय तंबणिद्धणक्खा, संट्ठिय सुसलिट्ठ गूढगुप्फएणी कुरुविंदावत्त वट्टाणुपुव्वजंघा, सामुग्ग निमुग्ग गूढजाणू, गतससण सुजात सण्णिभोरु, वरवारणमत्त तुल्लविक्कम विलासितगती सुजात वरतुरग गुज्झदेसा आइण्णहतोव्व णिरुवलेवा पमुइय वर तुरग सीह अइरेग वट्टियकडी, साहयसोणिंद मुसलदप्पणणिगरित वरकणगच्छरुसरिस वर वइरवलितमज्झा उज्जुअसम सहित सुजाय जच्चतणुकसिणणिद्ध आदेज्जलडह सुकुमाल मउय

नख हैं, अच्छे आकारवाली पुष्ट नहीं दीख सके वैसी पांव की घुंटी है, हरिणी के शरीर जैसे वर्तुलाकार जंघाओं हैं, डब्बे के ढक्कन जैसे गाढ घुटने हैं, हस्ती समान विलास विलासवंत गति है, जातिवंत अश्व समान गुप्त देश गुप्त रहा हुवा है, जैसे जातिवंत अश्वों के गुह्य भाग लीद करते हुए खराब होते नहीं वैसे ही युगलिये का गुह्य प्रदेश मल करते हुए खराब होता नहीं, प्रमुदित अश्व अथवा सिंह उस का कटि से अधिक वर्तुलाकार कटि भाग है, वज्र मुशल, आरिसा, निर्मल सुवर्ण तथा खड्ग की मूठ समान उन के कटि भाग है, उदर में त्रिवली पड़ती है, मृदु परिणाम सहित, उत्तम जातिवंत, सूक्ष्म, कृष्ण, स्निग्ध, सौभाग्यवन्त मनोहर, सुकुमार, कामक मनोरमणिक उनके शरीरकी रोमराजी है, गंगावर्त, प्रदक्षिणावर्त व सूर्य के उदय होने से

रमणिज्ज रोमराइ, गंगावत्तय पयाहिणावत्त तरंग भंगुर रविकिरण तरुण बोधिय अकोसा तच पउम गंभीर विगडणाभी झस विहग सुजाय पीणकुच्छी ज्झसोदरा सुइकरणी पम्ह विगडणाभी, सुन्नतपासा, संगतपासा, सुंदरपासा सुजातपासा, मितमाइत्त पीणरइत पासा, अकरंडुय कणगरुयग निम्मल सुजाय निरुवहय देहधारी, पसत्थछेत्तास लक्खणधारा, कणगसिलातलुज्जल पसत्थ समतल उवचिय विच्छिन्न पिहुलवच्छा, सिरिवच्छांकित वच्छा, पुरवरफलिह वट्टिभुया, भुयगी सरविपुलभोग, आयाण फलिह

जैसे कमल विकसित होता है वैसी नाभी है, मच्छ व पक्षी जैसी सुजात कुक्षि है, झस मत्स्य समान उदर है, शुचि पवित्र शरीर है, पद्म समान विकट नाभी है, किंचित् नीचे नमते हुए, मनोहर, गुण सहित, प्रमाण सहित, यथोक्त प्रमाण मांस से पुष्ट रचित पास है, पसली नहीं दीख सके वैसा कनक समान निर्मल शरीर है, उत्तम छत्तीस लक्षण धारण करनेवाले हैं, मनशीलतल समान उज्ज्वल, प्रशस्त, समतल विस्तीर्ण उन के हृदय हैं, नगर पाल की भोगल समान गोल प्रलम्ब दो भुजाओं हैं, कपाट के भोगल समान लम्बी दो बाहाओं हैं, वे भुजंग समान प्रमाण अच्छे संस्थानवाली हैं उन के हस्ततल की संधी शुभी छाप मनोहर विशिष्ट निकट है मांस सहित पुष्ट, पष्ट ले मध उत्तम लक्षणों सहित छिद्र रहित उन के

उच्छुढंहव हु,जुगसन्निभ पीणरइय पीवरपउट्ठ संठिय उवचिय घणथिर सुबद्ध सुसंलिट्ठ पव्वसंधी, रत्ततलोवइत मउय मंसल पसत्थ लक्खण सुजाय अछिद्द जालपाणी, पीवर वट्टिय सुजाय कोमल वरंगुलीआ, तंबतलिण सुतिरंतिल (रुचिर) निद्ध लुक्खा नक्खा, चंदपाणिलेहा, सूरपाणिलेहा, संखपाणिलेहा, चक्कपाणिलेहा, दिसासोवत्थियपाणिलेहा, चंद सूर संख चक्क दिसा सोवत्थिय पाणिलेह, अणेगवर लक्खणुत्तम पसत्थ सुविरइयपाणीलेहा, वर महिस वराहसीह सद्दल उसभ णागवर विउल उत्तम इदखंधा, चउरंगुलसुप्पमाण कंबुवरसारिस गीवा, अवट्ठित सुविभत्त सुजातचित्तमंसु

उपस्तम हैं, पुष्ट वर्तुलाकार मत्स्य समान अंगुलियों हैं, ताम्बे के वर्ण समान स्वच्छ पवित्र देदीप्यमान हाथ के नख हैं, हथेली में चंद्र, सूर्य, दक्षिणावर्त शंख, चक्रवर्ती का चक्र, शुभ सीधा स्वस्तिक, इन का आकार रहा हुआ है और अन्य लक्षणों से संपूर्ण रचित उन की हथेलियों रही हुई हैं, अच्छा महिष, वराह, सूअर, सिंह, शार्दूल, अष्टापद, वृषभ, हस्ती समान घन के बड़े स्कंध हैं, चार अंगुल प्रमाण शंख जैसी गरदन है, यथास्थित विभाग समान मूच्छों हैं, मांस सहित सिंह समान हडची (दाढी) है, परवाल अथवा बिंबफल समान घन के रक्त ओष्ठ हैं, पांडुर चंद्र समान निर्मल व दक्षिणावर्त शंख, गोक्षीर, कुन्द पुष्प, मचकुंद का पुष्प, वायु से फेन अथवा कमल समान उज्वलश्वेत उनके दांत की श्रेणी है

मसल सट्ठिय पसत्थ सद्दूल विउल हणुयाओ सवितसिलप्पवाल बिंबफल सन्निभाधरोट्ठा, पंडूर ससि सगल विमल निम्मल संख दधिघण गोक्खीर फेण दगरय मुणालिया धवलदंतसेढी अखंडदंता, अफुडियदंता, अविरलदंता, सुसिणिद्धदंता, सुजायदंता, एग-दंतसेढीव्व अणेगदंता, हुतवहनिद्धंत धोत तत्त तवणिज्जरत्त तलतालुजीहा, गरुलायत उज्जुतुंगणासा, अवदालिय पोंडरीयणयणा, कोकासित धवलपत्तलच्छा, आणामिय चावरुइल किण्हब्भराइय संठिय संगत आयत सुजात तणुकसिण निद्धभमुया, अल्लीणपमाण जुत्त सवणा, सुस्सवणा, पीणमंसल कवोलदेसभागा, अइरुग्गय बालचंद

वन के दांत अखंड, फटे व अंतर रहित चीकने, व अच्छी तरह रहे हुवे हैं दो सने में जैसा एक दांत है वैसे अनेक दांत रहे हुवे हैं, अग्नि से तपाया हुवा निर्मल सुवर्ण जैसा लाल तालु व जीभा है, गरुड पक्षी जैसी नासिका है, विकसित पुंडरीक कमल समान चक्षुओं हैं, विकसित कमल की कर्णिका समान मधुर है, किंचित् नमाये हुए धनुष्य के आकार में काले वर्णवाली बरल समान अच्छे संस्थानवाली मनोहर लम्बी उत्तर पतली कालीं भ्रमर वाले हैं, प्रमाण युक्त कर्ण हैं, मांस से पुष्ट ऐसे कपोल हैं, तत्काल का उदित हुवा बाल सूर्य जैसा ललाट है प्रतिपूर्ण पूर्णिमा के चंद्र समान मुख है, छत्र के आकार में मस्तक है, निघट नाडियों से बंधा हुवा अच्छे लक्षणों युक्त ऊंचे शिखर समान नम पीठाग्र शिखर होवे वैसा

मद्दिय पसत्थ विछिन्न समणिहाला, उण्णय पाडपत्त सामवयणा, छत्तागारुत्तमंगदेसा, घण निचिय सुबद्ध लक्खणुन्नय कुडागारणिभ पिंडियसिरा, हुतवह निद्धतधोय तत्त- तवणिज्ज रत्तकसतकेसभूमि, सामलि पोंडघणणिचिय छोडिय मिउविसय पसत्थ सुहुम लक्खण सुगंध सुंदर भयमोयग भिंग णीलकज्जल पहट्ठभमरगणणिद्ध णिकुरंब णिचिय कुंचिय पयाहिणावत्त मुद्धसिरिया, लक्खण वंजण गुणोववेया, सुजायसुविभत्त सुरूवा पासाइया दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा, तेणं मणुया ओहस्सरा हंसस्सरा कोंचस्सरा णंदिघोसा सीहस्सरा सीहघोसा मंजुस्सरा मंजुघोसा, सुस्सरा निग्घोसा

मस्तक है, शाल्मिल के पुष्प अथवा रुई जैसी लाम्ब टट है, सामली वृक्ष के पुष्प समान बहुत मांस से उपचित सुकोमल विशद प्रशस्त सूक्ष्म, लक्षणवंत, सुगंध से मनोहर कृष्ण वर्ण जैसा, काजल का संपुट भ्रमरा भ्रमरके समुह समान श्याम चीकने दक्षिणावर्तवाले बहुत घट्ट नहीं ऐसे मस्तक के बाल हैं, उनका सब शरीर सर्वांग लक्षण से संपन्न है, उन के अंग उपांग अच्छे हैं स्वरूपवन्त देखने योग्य है, अभिरूप व प्रतिरूप है और भी उन का स्वर हंस क्रौंच पक्षी, वीणा व सिंह के स्वर समान है सिंह समान घोष (गर्जना) है, मधुर स्वर मधुर घोष है, सुस्वर सुघोष है, कांति से देदीप्यमान उन का शरीर है, वज्रऋषभ नाराच संघयण- वाले हैं, समचतुरस्र संस्थानवाले हैं, उन की चमडी झिकली व राग रहित है, उत्तम प्रशस्तनीय है, जिस को

छाया उज्जोइयगमणा, वज्जरिसह नारायसंघयणा समचउरस - संठाण संठिया, सिणिद्धछवी, निरायंका उत्तमपसत्थ अइसेसनिरुवम तणू जल्ल मल कलंक सेयरय दोसवित्ताज्जय सरीरा, निरुवमलेवा, अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणी कपोतपरिणामा, सउणिपोस पिट्ठंतरोरुपरिणया विग्गहिय उन्नयकुच्छी पउमप्पल सरिसगंध निस्सास सुरहिवयणा, अट्ठधणुसय ऊसिया तेसिं मणुयाणं चउसट्ठिपिट्ठि करंडगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ तेणं मणुया पगइभद्दया पगइविणीया, पगइउवसंता पगइपयणु कोहमाणमायालोभा मिउमद्दवसंपन्ना अल्लीण भद्दगा विणीया अप्पिच्छा असंणिहि

अन्य उपमा नहीं देसके वैसा शरीर है, लघु नीत वडी नीतसे ऐ पाये नहीं व प्रस्वेद रहित शरीर है, मल प्रमुख उन के शरीर पर नहीं है, अनुकूल वायु वेग उनके शरीर का है, कंक पक्षी समान आहार ग्रहण करते हैं पारावत समान पाचन होता है, शकुन पक्षी समान विहार करते हैं, रोग रहित ऊंचा उदर भाग है पद्म अथवा कमल की गंध समान श्वासोश्वास है उन का वदन मनोहर है आठसो धनुष्य की ऊंची काया है, उन को ६४ पांसलियों होती हैं, अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्यों स्वभाव से भद्रिक, विनीत उपशांत हैं क्रोध मान माया व लोभ को पतले किये हैं, कोमलता व विनीत भाव सहित हैं, माया रहित भद्रिक स्वभावी विनीत प्रेम बंधन रहित, धनादिक संचय रहित वृक्षके घरोंमें रहने वाले, वांच्छित वस्तुकी

सचया अचइा त्रिडिमतरपत्रिसमा जहिच्छिय कामगामिणोय तेमणुयग्गा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ १९ ॥ तेसिण भंते ! मणुयाण केवति कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! चउत्थभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ २० ॥ एगुरुयमणुईण भंते ! केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! ताओण मणुइआ सुजायसव्वंग सुंदरिआ, पहाणमहिलागुणेहिजुत्ता, अच्चंत विसप्पमाण पउमसूमाल कुम्मसंठिय विसिठचलणा, उज्जमउयपीवरनिरंतर सुसाहतचलणंगुलीओ, अब्भुण्णय रतियसालिण तंबणुसिणिद्धणक्खा, • रोमरहिय वट्टलठसंठिय

प्राप्ति करने वाले युगलनी से मनो वांछित काम भोग भोगते हुवे विचरते हैं अहो आयुष्मंत श्रमणों! वैसे मनुष्य के समूह कहे हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! उन मनुष्यों को आहार की इच्छा कितने काल में होती है? अहो गौतम! एकांतर दिनमें आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है ॥२०॥ अहो भगवन्! एकरूक द्वीपमें स्त्रियों का आकार भाव कैसा कहा ? अहो गौतम ! उन स्त्रियों का आकार अच्छा व मनोहर है उन के सब अंग मनोहर है, प्रधान उत्तम स्त्री गुणों सहित है, अत्यंत मनोहर कमल नाल व कांचवे जैसे पांव हैं सरल, कोमल पुष्ट अंतर रहित व मांस सहित पांव की अंगुलियों हैं, ऊंचे सुखदायी कमेष्ठ के आकार व लाल वर्ण के पवित्र चिकने नख हैं, रोम रहित वृत्ताकार से उत्तम प्रशंसनीय लक्षण सहित अंकाथ युगल

अणुहुम पसत्थ लक्खण अकोप्पजघजुयला, सुणिमियसुगूढजाणु, मसलसुवद्ध सधा कयलिक्खभातिरेग संठिया णिव्वणसुमाल मउय कोमल अविरल समसहत सुजातवट्ट पीवर निरतर रोरुआमट्ठावयवीचिपट्टसंठिया, पसत्थ विच्छिण्ण पिहुल सोणि वदणायामप्पमाण दगुणिय विसाल मसल सुबद्ध जहण्णवरधारिणिउत्ता विराइय पसत्थ लक्खण णिरोदरा, तिवलिय तणुणमियमज्झियाउ उज्जुय समसहिय जच्चतणु कसिणणिद्ध आदेज्जलडह सुविभत्त कन सुजाय सोभत रुइल रमणिज्ज रोमराई, गगावत्तकपयाहिणावत्तर। भगुर रविकिरण तरुण बोधिय अकोसायत

है, मच्छों तरह नमते हुए दो घुटने हैं, मांस से भरी तरह बनाई हुई घन की रुपी है केलस्तम से अधिक आकारवाली व्रण रहित सुकुमार मृदु, परस्पर मीजी हुई, पुष्ट वर्तुलाकार जघा है, अष्टापद नामक पत्थरों समान प्रशस्त लम्बी चौड़ी श्रोणि (कटी का पूर्वभाग—स्त्रीचिन्ह) है मुख का जो प्रमाण बारह अंगुलका होता है उस से दुगुनी करते जो होय उतनी मांसल सहित व शिथिलता रहित घन की जघन है, रस विकार रहित उदर है, जिसकी वलय कुच्छ नमे हुए है सरल समतल, पतली काली, चिकनी मनोहर अंतराल रहित रमणिक, सुविभक्त रोमराजी है, गंगावर्त, दक्षिणावर्त शख कल्लोल जैसे गंभीर, उदित होते सूर्य समान तेज व विकसित कमल समान गंभीर विकट नाभी है उत्तम मांस वाली कुक्षि है,

पउम गंभीर वियडणाभा, अणूब्भड पसत्थ पीण कुच्छी, संनयपासा संगयपासा सुजायपासा मियमाइय पीणरइयपासा, अकरंडुय कणगरुयग निम्मल सुजाय णिरुवहय गायलट्ठी, कंचण कलस पमाण सममहिय सुजायलट्ठ चुचुय आमेल जमल जुगल वट्टिय अब्भुण्णय रतिय संठिय पयोधराओ भुजंग अणुपुव्वतणुय गोपुच्छवट्ट समसंहिय णमिय आएज्ज ललिय बाहाओ, तंबणहा, मंसलग्ग हत्था, पीवर कोमल वरंगुलीओ, णिद्ध पाणिलेहा, रविससि संख चक्क सोत्थिय विभत्त सुविरातिय पाणिलेहा, पीणुण्णय कक्खवत्थिय पदेसा पडिपुण्णगलकवोला, चउरंगुल सुप्पमाण कंबुवर सरिसगीवा,

नम हुए धनुष्य समान मर्यादा सहित मनोहर दो पास हैं, उनकी हड्डियों नहीं दीखती हैं, सुवर्ण की कांति समान निर्मल रोग रहित काया है सुवर्ण कलश समान प्रमाण सहित दोनों सख्त कठिन स्तन हैं, उन्नत समश्रेणि में साथ दोनों गोलाकार में स्तन हैं, सर्प समान अनुक्रम से पतली होती गोपुच्छ के आकार से पतली नमती हुई गोलाकार बाहु है ताम्र समान नख हैं, मांस सहित पुष्ट सुकोमल शोभनीक अंगुलियों हाथ की रेखा हैं, चंद्र, सूर्य, दक्षिणावर्त शंख, चक्र, स्वस्तिक, प्रमुख की हाथ में रेखाओं हैं, बगल, कंधे, कुक्षि हृदय व वक्षस्थल प्रदेश मांसपूर्ण है मांस से पुष्ट गरदन व कपोल हैं, चार अंगुल प्रमाण शंख जैसी ग्रीवा है, मांस सहित अच्छे आकारवाली ठुड्डी (दाढी) है,

असलसठिय पसत्थहणुगा, दालिम पुप्फ पगासपीवर पलंब कुंचिय वराधरा सुदरोत्तरोट्ठा दधि दगरय चद कुद वासति मउल अछिद्द विमल दसणा रत्तुप्पल रत्तमउय सूमालतालु जीहा, कणयर मउल अकुडिल अब्भुग्गय उज्जुतुगणासा, सारयनव कमल कुमुद कुवलय विमुक्क मउलदलनिगर सरिस लक्खण अंकिय कंत नयणा, पत्तलधवलायततंबलोयणाओ, आणमित चावरुइल किण्हभराइ संठिय संगय आयय सुजायतणकसिण निद्धभुमया अल्लीण पमाणजुत्त सवणा, सुस्सवणा, पीणमट्ठरमणिज्जगंडलेहा चउरंसपसत्थसमणिडाला, कोमुतिरयणिकरविमल

दाडिम के पुष्प समान लाल वर्ण के सुंदर ओष्ठ है, दधि, पानी, चांदी, चंद्र, मचकुंद के पुष्प, मालती के पुष्प, अशोक वृक्ष के पुष्प समान श्वेत वर्णवाले छिद्र रहित, निर्मल दांत आणे है रक्त कमल व रक्त पद्म समान रक्त वर्णवाले मृदु जिव्हा व तालु है कणर अथवा अशोक वृक्ष समान ... है सरल सन्मुख नासिका है, शरदकाल के उत्पन्न हुए कमल, चंद्र विकासी कमल, नीलोत्पल अहो गौतम ! कर्णिका समान लक्षण युक्त मनोहर नयन है, लावण्य सहित नयन के कोने ताम्र और आहार करती है ? धनुष्य समान मनोहर काले केश सहित लगत, सुजात कृष्ण वर्णवाली भृकुटी है अमणों ! यह मनुष्य पुष्ट मनोहर कपोल है, चार अंगुल प्रमाण विशाल ललाट है, कार्तिक पूर्णिमा चन्द्र कहा ? अहो गौतम !

विलाससल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसला, सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयण लावण्ण-वण्णरूवजोवणविलासकलिया, नंदणवणविवर चारिणीउव्व अच्छराओ अच्छेरग पेच्छणिज्जा, पासाईयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ २१ ॥ तासिणं भंते! मणुईणं केवति कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! चउत्थ भत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ २२ ॥ तेणं भंते मणुया किं आहारेंति ? गोयमा ! पुढवी पुप्फफलाहारा ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २४ ॥ तीसेणं भंते !

सोलह शृंगार व आचार से मनोहर है, बोलना, बैठना, हसना व विलासवार्ता करना यह सब क्रिया युक्त है, मनोहर नितंब पृष्ठ है, सुंदर स्तन, जघन, वदन, हाथ, पाँव चक्षु, लावण्य, रूप व यौवन विलास सहित है, नंद वन में रहनेवाली अप्सरा समान रूप से देखने योग्य, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! युगल की स्त्री को कितने काल में आहार की इच्छा होती है ? अहो गौतम ! एकांतर दिनमें आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है ॥२२॥ अहो भगवन्! वे किस वस्तु का आहार करती हैं ? अहो गौतम ! वे पृथ्वी पर के फल पुष्प का आहार करती हैं अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! यह मनुष्य गण का कथन हुवा ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! वहां पृथ्वी का कैसा आस्वाद कहा ? अहो गौतम !

पुढवीए केरिसए अस्साए पण्णत्ते ? गोयम ! से जहा नामए गुलइवा खंडइवा सक्कराइवा मच्छंडियाइवा, भिसकंदेइवा, पप्पडमोतगेतिवा, पुप्फतराइवा, पउमतराइवा अकामियातिवा, विजयातिवा महाविजयाइवा पायसोवमाइवा उवमाइवा अण्णोवमाइवा चाउरक्कगोक्खीरे चउट्ठाणेपरिणए गुडखंडमच्छंडिउवणीए मंदग्गिकढिए वण्णेण उववेए जाव फासेण मवेए एतारूवे सिता? नो इणट्ठे समट्ठे, तीसेण पुढवीए एतो इट्ठतराए चेव जाव मणामतरा चेव ॥ २५ ॥ आसाएणं भंते ! पुप्फफलाण केरिसए अस्साए पण्णत्ते ?

जैसे गुड, शक्कर, मिश्री, मुरकंद, मोदक, पुष्पोत्तर अथवा पद्मोत्तर, आकाशिका, विजयापाक, महाविजयापाक, त्रिक व त्रिवेण, मनुष्य गोक्षीर चार गाय को पीलाना, फीर उन चारों गायों का दुध तीन गायों को पीलाने, फीर तीन गायों का दुध दो गायों को पीलावे और दो गायों का दुध एक गाय को पीलावे और इस एक गाय का जो दुध होवे उस में गुड शक्कर वगैरह डालकर मंद अग्नि से पकावे वह जैसा वर्ण से पर्यंत स्पर्श वाला स्पर्श से पर्यंत योग्य होवे वैसा एकरूक द्वीप के पृथ्वी का स्वाद क्या होता है? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस इस से भी इष्ट व मनापकार उस का स्वाद है ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! वहांके पुष्प फल का स्वाद कैसा कहा ? अहो गौतम ! जैसे चारों दिशा का

गोयमा ! से जहा नामए रण्णोचाउरंत चक्कवट्टिस्स कल्लाणपवरभोयणे सयसहस्स निप्फन्ने वण्णेण उववेए गंधेण उववेए रसेणं उववेए फासेणं उववेए आसायणिज्जे वीसायणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे बीहणिज्जे मयणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे भवे तारूवेसिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, तेसिणं पुप्फफलाणं इतो इट्ठतराए चेव जाव अस्साएणं पन्नत्ते ॥२६॥ तेणं भंते! मणुया तमाहारेत्ता कहिंवसहिं उवेंति ? गोयमा! रुक्खगेहालया णं ते मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ॥ २७ ॥ तेणं भंते ! रुक्खा किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! कूडागार संठिया, पेच्छाघरसंठिया छत्तागार

भव करनेवाले चक्रवर्ती राजा का परम कल्याणकारी लाखों वस्तुओं के संयोग से बनाया हुवा, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श से वर्णन योग्य, खाने योग्य, दीप्यमान, दर्प योग्य, मद इन्द्रियों व गात्रोंको सुख कर्ता व आनंद कर्ता, ऐसा भोजन जैसा क्या होता है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी इष्टतर यावत् आस्वादनीय उन पुष्प व फल का आस्वाद कहा है ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! वे मनुष्य आहार करके कहां रहते हैं ! अहो गौतम ! वे मनुष्य वृक्ष रूप गृह में रहते हैं अहो आयुष्मन्त श्रमणों ! ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! वहां के वृक्षों कैसे आकारवाले कहे हैं ? अहो गौतम ! कूटाकार, प्रेक्षागृह, छत्राकार, ध्वजाकार,

सठिया, झयसठिया, थूमसठिया, तोरणसठिया, गोपुरसंठिया, पगारसंठिया, अट्टालग सठिया, पासायसठिया, हम्मितलसठिया, गवक्खसंठिया, वालग्गपोतियसठिया, वलभी सठिया, अण्णे तत्थ बहवे वरभवणसयणासण विसिट्ठ संठाण सठिया, सुभसीतल छायाणं ते दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २७ ॥ अत्थिण भंते ! ते एगुरुय दीवे दीवे गेहाणिवा गेहावणाणिवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, रुक्खगेहालयाणं मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २८ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुय दीव २ गामाइवा नगराइवा जाव सन्निवेसाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, जहत्थिय कामगामिणोण ते मणुयगणा पण्णत्ता

स्तूप के आकार, तोरण का आकार, गोपुर का आकार, प्रकार का आकार, अट्टालक का आकार, प्रासाद के आकार, हर्म्यतल के आकार, गवाक्ष के आकार, वालाग्रपोत के आकार, वलभि घर के आकार, रसोई बनाने के गृह के आकारवाले हैं, और अन्य अनेक वृक्ष भवन, शैय्या, आसन के संस्थानवाले हैं उन की छाया अति शीतल है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में गृह वृक्ष अथवा गृह हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वहां के मनुष्यों का वृक्ष ही गृहरूप बतलाये हैं ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में ग्राम नगर, यावत् सन्निवेश हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे

समणाउसो! ॥ २९ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुय दीवे असीइवा मसीइवा किसीइवा विवणीइवा पणीइवा वाणिज्जाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय असि मसि कसि विवाणिपणियवज्जाण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ॥ ३० ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ हिरण्णेइवा सुवण्णेइवा कंसेइवा दूसइवा मणीइवा मुत्तिएइवा विपुल-धण कणग रयण मणि मोत्तिय-संख सिलप्पवाल संतसार सावएज्जेवा ? हंता अत्थि, णोचेवणं तेसिं मणुयाणं तिव्वममत्तिभावे समुप्पज्जइ ॥ ३१ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ रायाइवा जुवरायाइवा, ईसरेइवा तलवरेइवा माडंबिएइवा कोडुंबिएइवा

मनुष्यों स्वेच्छा पूर्वक विचरनेवाले हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! एकरूप द्वीप में असी (शस्त्र का व्यापार) मसि (स्याही कलम का व्यापार) और कृषि (खेती का व्यापार) अथवा लेन देन का व्यापार है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! वे मनुष्यों असि, मसि, कृषि व लेन देन के व्यापार से रहित हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में हिरण्य, सुवर्ण, कांस्य, दूष्य, मणि मौक्तिक, व विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख, शिरप, व प्रधान स्वापतेय है क्या ? हां गौतम ! वे सब हैं, परंतु उन मनुष्यों को उस पर तीव्र ममत्वभाव नहीं होता है ॥ ३१ ॥ अहो भग वन् ! एकरूक द्वीप में राजा, युवराज, ईश्वर, तलवर, मडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठि, सेनापति,

इब्भेइवा, सेट्ठीइवा, सेणावइइवा, सत्थवाहिइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय इड्ढि सक्काराएण ते मणुयगणा पण्णत्ता ? समणाउसो ! ॥ ३२ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे दासाइवा, पेसाइवा, सिस्साइवा भयगतिवा भाइल्लगाइवा कम्मगाराइवा भोगपुरिसाइवा ? णो इणट्ठसमट्ठे, ववगय आभोगियाय तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३३ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ मातातिवा पियाइवा भाया इवा भयणीइवा भज्जाइवा पुत्ताइवा धूयाइवा सुण्हाइवा ? हंता अत्थि, णोचेवण तासिण मणुयाण तिव्वपेज्जबंधणे समुप्पज्जइ, पयणुपज्जबंधणाण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३४ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुय दीवे २ अरीइवा वेरियइवा घायगा-

व सार्थवाह है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है क्यों कि आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्य ऋद्धि सत्कार समुदाय से रहित हैं ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में दास प्रेषक, शिष्य, भाजक, (भाग लेनेवाला) भाइल्ला [मित्र, कर्मकर, (नोकर) व भोग पुरुष है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है क्योंकर समुस रहित वे मनुष्यों है ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में माता, पिता, भ्राता, भगिनी, भार्या, पुत्र, पुत्री, पुत्रवधू है क्या ? हां गौतम ! हैं परंतु उन में उनका प्रेम बंधन नहीं होता है स्वभाव से ही उन का प्रेम बंधन पतला होता है ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में अरि, वैरी, घातक, वधक, प्रत्यनीक

इत्था वद्दगाइत्ता पदणीइवा पच्चामित्ताइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय वेरा-णुबंधाण ते मणुयागणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३५ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीव २ मित्ताइवा वयंसाइवा घाडियातिवा सुहीतिवा, सुहीयाइवा, महाभागातिवा, संगतियातिवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ववगय पेमाणुरागाणं तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३६ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ आवाहाइवा विवाहाइवा जण्णाइवा सड्ढाइवा थालिपागाइवा चोलोवणतणाइवा सीमंतोवणतणाइवा, पितिपिंडनिवेयनाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ववगय आवाहविवाह

व शत्रु है क्या ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वैर के अनुबंध रहित वे मनुष्य कहे हैं ॥ ३५ ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में वयस्य, मित्र, समान बने हुए, सदैव साथ रहनेवाले सखा, महा भागवाले व संगतिक है क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! व मनुष्य प्रेमानुराग में रक्त नहीं हैं ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में आवाह (स्वजनों को आमंत्रण) विवाह (लग्न क्रिया) यज्ञ विधि, श्राद्ध क्रिया, स्थालीपाक, (पकाने की क्रिया) बालक को वस्त्र पहिना, चूडामहन संस्कार, उपनयन, मस्तक मुंडन का उत्सव, श्रीमंत, पितृपिंड व नैवेद्यादिक क्रियाओं

जन्नरुक्ख्यालयगि चोलावण सीमतोवणतणपितिपिंडनिवेदणाण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३७ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ इंदमहाइवा रुद्दमहाइवा खंदमहाइवा सिवमहाइवा वेसमणमहाइवा मुगुंदमहातिवा नागमहातिवा जक्खमहाइवा भूतमहाइवा कूवमहाइवा तलागमहाइवा नदिमहाइवा दहमहाइवा, पव्वयमहाइवा रुक्खमहाइवा, चेतियमहाइवा, थूभमहाइवा ? णो इणट्ठेसमट्ठे, ववगयमहामहिमाण तमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥३८॥ अत्थिणं भंते! एगुरुयदीवे २ नडपिच्छाइवा णट्टपेच्छातिवा मल्लपेच्छातिवा मुट्ठियपेच्छाइवा विडंबगपेच्छातिवा कहगपेच्छातिवा

है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य पूर्वोक्त सब क्रियाओं से रहित हैं ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में इन्द्र महोत्सव, रुद्र महोत्सव, स्कंद महोत्सव, शिव महोत्सव वैश्रमण महोत्सव, मुकुंद महोत्सव, नाग महोत्सव, यक्ष महोत्सव, भूत महोत्सव, कूप महोत्सव, तलाव महोत्सव, नदि महोत्सव, द्रह महोत्सव पर्वत महोत्सव, वृक्ष महोत्सव, चैत्य महोत्सव व स्तूप महोत्सव है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है पूर्वोक्त सब प्रकार के महोत्सव रहित वे पुरुषों हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में नट के खेल, नृत्य क्रीडा, मल्ल क्रीडा, मुष्टि युद्ध, बहुरूप कथा करनेवाले, वार्ता करनेवाले, आख्यान कर

पवगपेच्छातिवा अक्खवाइगपेच्छातिवा लासगपेच्छातिवा लखपेच्छातिवा मखपेच्छातिवा तणइल्लपेच्छातिवा,तुम्बवीणपेच्छातिवा, कीवपेच्छातिवा मागहपेच्छातिवा,जल्लपेच्छातिवा, कहयापेच्छाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ववगय कोऊहल्लाण तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३९ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ सगडाइवा रहाइवा जाणाइवा जुग्गाइवा गिल्लीतिवा पल्लीतिवा थिल्लीतिवा पवहणाइवा सायाइवा सदमाणियाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे पादचार विहारणोण तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ४० ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे आसाइवा हत्थिइवा उट्टातिवा

नेवाले, कुवा बावडी में कूदनेवाले, हास्य वचन कहनेवाले, अच्छा बुरा गानेवाले, बांस पर चढकर खेलने वाले, विविध मत से भिक्षा मांगनेवाले, वीणा बजानेवाले, ढफी बजानेवाले, क्षीर की क्रीडा, मागधा सो मगलोक वीणा बजानेवाले, कावड उठानेवाले, और स्तोत्र करनेवाले ये पूर्वोक्त सब नाटक वहां हैं क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है क्यों कि उन को कौतुक नाच नहीं होता है ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में गाडे, रथ यान, पालखी, गिल्ली, पल्ली, थिल्ली महाज, शीबिका व सदमाण है क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्यों पांव से ही चलते हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में

गोणाइवा महिसाइवा खराइवा अयाइवा एलगाइवा ? हता अत्थि, नो चेवण तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४१ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ गावीइवा महिसीइवा, उट्टिवा अयाइवा एलगाइवा ? हता अत्थि, नो चेवण तेसिं मणुयाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४२ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ सीहाइवा वग्घाइवा दीवियाइवा अच्छाइवा परस्सराइवा सियालाइवा विडालाइवा सुणगाइवा कोलसुणगातिवा कोकंतियइवा ससगाइवा चित्तलाइवा चिल्लगाइवा? हता अत्थि, णो चेवण अन्नमन्नस्स तेसिंवा मणुयाण किंचि आबाहंवा वाबाहंवा उप्पायंति छविच्छेयंवा करेंतिवा, पगइभद्दगाणं ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

हाथी, घोडे, ऊंट, बैल, महिष, खर, अजा व गाडर प्रमुख है क्या ? हां गौतम ! वे हैं परंतु वे वहां रहने वाले मनुष्यों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में गाय, भैंस, ऊंट, अजा (बकरी) व [illegible] प्रमुख है क्या ? हां वैसे ही हैं परंतु वे वहां के मनुष्यों को उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में सिंह, व्याघ्र, दीपिका, अच्छ (रीछ) परस्सर, शृगाल, बिलाड, श्वान, कोलश्वा, कोकंतिक, ससला, चित्ता, चिल्लक आदि के रूप है क्या ? हां वैसे ही हैं परंतु वे [illegible] एक दूसरे को अथवा मनुष्य को किसी प्रकार की बाधा, पीडा

॥ ४३ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सालीइवा वीहीइवा गोहुमाइवा इक्खुइवा तिलाइवा ? हंता अत्थि नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४४ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गत्ताइवा दरिइवा घाइवा घसीइवा भिगूइवा उवाएइवा विसमेइवा विजलइवा धूलाइवा रेणुतिवा पंकेइवा चलणीइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे एगुरुयदीवेण दीवे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४५ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ खाणुइवा कंटाएइवा हीरएइवा सक्कराइवा तणकयराइवा पत्तकयराइवा असुइइवा पूईयाइवा दुब्भिगंधाइवा

उत्पात व पराभव नहीं करते हैं क्यों कि वहां जीवों भद्रिक स्वभाववाले हैं ॥ ४३ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में शाली, व्रीहि, गाधुम, इक्षु व तिल हैं क्या ? हां वे हैं परंतु उन जीवों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में खड्डा, गुफा, भयंकर स्थान, उपपात का स्थान, विषम स्थान, मल रहित स्थान, धूल, रेणु, कचरा व रज विशेष हैं क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि एकरूक द्वीप में बहुत सम रमणीय भूमिभाग है ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में खीला कंटक, रजमुस, कंकर, तृण, कचरा, पान का कचरा, अपवित्र राप अमुस, दुर्गंध व अन्य अशुचिवासी

गोणाइवा महिसाइवा खराइवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४१ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गावीइवा महिसीइवा, उट्टीवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४२ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सीहाइवा वग्घाइवा दीवियाइवा अच्छाइवा परस्सराइवा सियालाइवा बिडालाइवा सुणगाइवा कोलसुणगातिवा कोकतियइवा ससगाइवा चित्तचित्तलाइवा चिल्ललगाइवा? हंता अत्थि, णो चेवणं अण्णमण्णस्स तेसिंवा मणुयाणं किंचि आबाहंवा विबाहंवा उप्पायंति छविच्छेयंवा करेंतिवा, पगइभद्दगाणं ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

हाथी, घोड़े, ऊंट, बैल, महिष, खर, अजा व गाडर प्रमुख है क्या ? हां गौतम ! वे हैं परन्तु वे वहां रहने वाले मनुष्यों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में गाय, महिषी, ऊंटनी, अजा (बकरी) व गाडरी प्रमुख है क्या ? हां वैसे ही हैं परन्तु वे वहां के मनुष्यों को उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४२ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में सिंह, व्याघ्र, दीपिका, अच्छ (रीछ) परस्सर, शृगाल, बिडाल, श्वान, कोल, कोकन्तिक, शशक, चित्ता चित्ता व चिल्लल आदि के रूप हैं क्या ? हां वैसे ही हैं परन्तु वे परस्पर एक दूसरे को अथवा मनुष्य का किसी प्रकार की बाधा विबाधा

॥ ४३ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ सालीइवा वीहीइवा गोहुमाइवा इक्खुइवा तिलाइवा ? हता अत्थि नो चेवण तेसिं मणुयाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४४ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ गत्ताइवा दरिइवा घाइवा घसीइवा भिगूइवा उवाएइवा विसमेइवा विज्जलइवा धूलाइवा रेणुतिवा पंकेइवा चलणीइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, एगुरुयदीवेण दीवे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४५ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ खाणुइवा कटाएइवा हीरएइवा सक्कराइवा तणकयराइवा पत्तकयराइवा असुइइवा पूईयाइवा दुब्भिगंधाइवा

उत्पात व पर्यटन नहीं करते हैं क्यों कि वहां जीवों भद्रिक स्वभाववाले हैं ॥ ४३ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में शाली, व्रीहि, गोधुम, इक्षु व तिल हैं क्या ? हां वे हैं परंतु उन जीवों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में खड्डा, गुफा, भयंकर स्थान, उपपात का स्थान, विषम स्थान, जल रहित स्थान, धूल, रेणु, कचरा व रज विशेष हैं क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है. क्यों कि एकरुक द्वीप में बहुत सम रमणीय भूमिभाग है ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में कंटक, रणमुस, कंकर, तृण, कचरा, पान का कचरा, अपवित्र राध प्रमुख

अणोक्खाइत्ता ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय खाणुकण्टक हीरसक्करतण कयवर असुइपूईय दुब्भिगन्ध मचोक्खवज्जिएण एगुरुयदीवे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४६ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ दंसाइवा मसगाइवा पिसुगाइवा जूयाइवा लिक्खाइवा ढिंकुणाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय दंसमसग पिसुत जुवा लिक्ख ढिंकुण परिवज्जिएण एगुरुयदीवे पन्नत्ते समणाउसो ! ॥ ४७ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ अहीइवा अयगराइवा महोरगाइवा ? हंता अत्थि नो चेवण ते अन्नमन्नस्स तेसिं वा मणुयाण किंचि आबाहंवा विवाहंवा छविच्छेयंवा पकरेंति पगइ भद्दगाण ते वालगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥४८॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीव २

वस्तु है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है क्यों की वहां की भूमि खीला कंटक वगैरह सब अशुचिमय वस्तु से रहित है ॥ ४६ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में दंश मशक, पिस्सू, यूका, लीख, मथवा दंकुण (खटमल) प्रमुख है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वह द्वीप पूर्वोक्त दंश मशकादि रहित है ॥ ४७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में अहि, अजगर व महोरग है क्या ? हां गौतम ! वे हैं परंतु वे परस्पर एक दूसरे को अथवा वहां के मनुष्यों को किसी प्रकार से बाधा पीड़ा अथवा शरीरछेद नहीं करते हैं वे व्याल जीवों प्रकृति के भद्रिक होते हैं ॥ ४८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक

गहदंडातिवा गहमुसलाइवा गहगज्जियाइवा, गहजुद्धाइवा गहसंघाडाइवा गहअ
सव्वा अब्भाइवा अब्भरुक्खाइवा संझाइवा, गंधव्वणगराइवा, गज्जियाइ
विज्जुयाइवा उक्कापयाइवा दिसादाहाइवा णिग्घाइवा पंसुविट्ठीइवा जूवइवा जक्खालि
त्ताइवा धूमियाइवा महियातिवा रउग्घायाइवा चंदोवरागाइवा सूरोवरागाइव
चंदपरिवेसाइवा सूरपरिवेसाइवा पडिचंदाइवा पडिसूराइवा, इंदधणूआइवा उदगमच्छा
इवा अमोहाइवा कविहसीयाइवा पाईणवायाइवा, पडीणवायाइवा जाव सुद्धवायाइव

द्वीप में ग्रह दंड (शिखावाला ग्रह का उदय होना) ग्रह मुशल [पूछवाला ग्रह] ग्रह संबंधी गर्जारव, ग्रह युद्ध, ग्रह संघाटक, ग्रह अपसव्य [ग्रह का वक्रमार्ग में उदय होना] बद्दल समुह, वृक्षाकार से बद्दल होना, पांचवर्ण संध्या, गंधर्व नगर सो आकाश में नगरों का होना, देवों के प्रासाद, गर्जारव, विद्युत, उल्कापात, दिशादाह, (किसी दिशी में विना मूल से अग्नि की ज्वालाओं दीखे) निर्घात, रजावृष्टि भूमिकंप यक्ष मनुष्य का कोप, धूम, धूंधर रजोघात, चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण चंद्र परिवेष [चंद्र पीछे मंडलाकार होवे सो] सूर्य परिवेश (सूर्य पीछे मंडलाकार होवे सो) प्रतिचन्द्र दो चंद्र दीखे, प्रतिसूर्य दो सूर्य दीखे, इन्द्र धनुष्य, उदक मत्स्य [वर्षा में मत्स्य का गिरना] पूर्व दिशी का प्रतिकूल वायु, पश्चिम दिशी का प्रतिकूल वायु य यत् शुद्ध वायु, ग्राम दाह, नगर दाह यावत् संनिवेश दाह, प्राणियों का क्षय,

गामदाहाइवा नगरदाहाइवा जाव सन्निवेसदाहाइवा पाणक्खय जणक्खय कुलक्खय धणक्खय वसणभूतमणारियाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ४९ ॥ अत्थिणं भंते ! एगरुयदीवे डिंबाइवा डमराइवा कलहाइवा बोलाइवा खाराइवा वेराइवा विरुद्धरज्जाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ववगय डिंबडमर कलह बोलखार वेरविरुद्धरज्जविवज्जियाणं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५० ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ महाजुद्धाइवा महासंगामाइवा महासत्थपडणाइवा महापुरिसपडणाइवा महारुधिरपडणाइवा, नागवाणातिवा, खलवाणातिवा, तामसवाणातिवा, दुब्भूइयाइवा कुलरोगाइवा गामरोगाइवा, नगररोगाइवा मंडलरोगाइवा

मनुष्य का क्षय, कुल का क्षय, धन क्षय, व्यसन कष्टभूत ऐसे दुष्ट उत्पात हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् उक्त कुच्छ भी नहीं है ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में डिम्ब—स्वदेश का नाश डमर-मण्डलों की तरफ से हुआ उपद्रव, क्लेश, दुःखियों का कलकलाट पारस्पर ईर्षा परस्पर हिंसक भाव व राज्य विरुद्ध कर्तव्य है क्या ? यह समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य उक्त सब बातों से रहित हैं ॥ ५० ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में बडा युद्ध बडा संग्राम बडा शस्त्र पतन, बडा पुरुष का मरण बहुत रुधिर का पडना नागपाश बाण ... (आकाश में चलनेवाला)

सीसवेयणाइवा, अत्थिवेयणाइवा कण्णवेयणाइवा नक्कवेयणाइवा, दंतवेयणाइवा, कासाइवा, सासाइवा, जराइवा दाह इवा कत्थूइवा, खसराइवा, कोट्टाइवा, कुडातिवा, दगोयराइवा, अरिसाइवा, अजिरगाइवा, भगंदलाइवा इंदग्गहाइवा, खंदग्गहाइवा कुमारग्गाहाइवा, नागग्गहाइवा अक्खग्गहाइवा भूयग्गहाइवा, उव्वेवगाहाइवा धणुग्गहाइवा एगाहियाइवा, वेयाहियाइवा, तेयाहिय इवा, चउत्थगाहियावा हियसूलाइवा, मत्थगसूलाइवा, पाससूलाइवा कुच्छिसूलाइवा, जोणिसूलाइवा, गाममारीवा जाव सन्निवेसमारीवा, पाणक्खय जाव वसणभूतमणायरि यवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय रोगायकाण तेमणुयगणा पण्णत्ता

व्याधि क्या है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन् ! वहां दुर्भूत, कुल रोग, ग्राम रोग, नगर रोग, मंडल रोग, मस्तक वेदना, आंखों की वेदना, कान की वेदना, नासिका की वेदना, दांत की वेदना खांसी, श्वास, ज्वर, दाह, खुजली, खसर, कोढ डमरुवाय, मसा, अजीर्ण, भगंदर, इन्द्रग्रह, स्कंध ग्रह, कुमार ग्रह, नाग ग्रह, यक्ष ग्रह, भूत ग्रह, उद्वेग ग्रह, धनुर्वायु एकांतर ज्वर, दो दिन के अंतर से ज्वर, तीन दिन के अंतर से ज्वर, चार दिन के अंतर से ज्वर, हृदय शूल, मस्तक शूल, पार्श्व शूल, कुक्षिशूल, योनि शूल, ग्राम में मरकी यावत् सन्निवेश में मरकी कि जिस से प्राणियों का क्षय यावत् व्यसन भूत

समणाउसो ! ॥ ५१ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ अइवासाइवा मंदवासाइवा सुवुट्ठीइवा, मंदवुट्ठीइवा उदवाहीइवा पवाहाइवा, दगुब्भेयाइवा, दगुप्पीलाइवा, गामवहाइवा जाव सन्निवेसवहाइवा, पाणक्खय जाव वसणभूतमणारियाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय रोगायंका णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥५२॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीवे २ आयागराइवा तंबागराइवा सीसागराइवा सुवण्णागराइवा, रयणागराइवा वइरागराइवा, वसुहाराइवा हिरण्णवासाइवा, सुवण्णवासाइवा, रयणवासाइवा, वइरवासाइवा, आभरणवासाइवा, पत्तवास पुप्फवास फलवास बीयवास गंधवास

कष्टरूप अनार्य दोष है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है यहां के मनुष्य रोग रहित हैं ॥५१॥ अहो भगवन् ! एकरुद्वीप में अतिवृष्टि मंद वृष्टि, उत्तम वृष्टि, अल्प वृष्टि, पानी का प्रवाह, (गांवडूबे वैसा) यावत् सन्निवेश प्रवाह कि जिस से प्राणियों का क्षय यावत् व्यसनभूत दुष्ट अनार्य दोष है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है यहां मनुष्यों पानीके उपद्रव रहित है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुद्वीप में लोहे के आगर, ताम्बे के आगर, सीसे के आगर, सुवर्ण के आगर, रत्न के आगर, हीरे के आगर, वसुधारा धन की वर्षा, चांदी की वर्षा, सुवर्ण की वर्षा, रत्न की वर्षा वज्र हीरे की वर्षा, आभरण की वर्षा, पत्र की वर्षा, बीज की वर्षा, पुष्प, फल, माल्य, गंध, चूर्ण, धोवा, की वर्षा, रत्नकी

मल्लवास वन्नवास चुन्नवास खीरवुट्ठीइ रयणवुट्ठीइवा हिरण्णवुट्ठीइवा, सुवण्ण तहेव जाव चुन्नवुट्ठ इवा सुकालाइवा उकालाइवा सुभिक्खाइवा दुभिक्खाइवा अप्पग्घाइवा महग्घाइवा कयाइवा विक्कयाइवा, सणिहीइवा, सचयाइवा, निधिइवा, निहाणाइवा, चिरपोराणाइवा, पहीणसामियाइवा, पहीणसेउयाइवा, पहीणगोत्तागाइ जाइ इम इ गामागर नगर खेड कब्बड मडब दोणमुह पट्टणासम सवाह सन्निवेसेसु सिंघाडग तिग चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह महेसु नगरनिद्धमणेसु सुसाण गिरिकंदर संति सेलो-वट्ठाण भवणगिहेसु सन्निखित्ता चिट्ठति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥ ५२ ॥ एगुरुय दीवेण

वृष्टि, चांदी की वृष्टि, सुवर्ण की वृष्टि यावत् चूर्ण की वृष्टि, सुकाल, दुष्काल, सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, अल्प मूल्य वाली व बहु मूल्य वाली वस्तु, लेना व देना संग्रह करना अथवा संग्रह कर बेचना, धन समुह निधान समुह ऐसे धन के भोगने वाले का नाश हुवा होवे उन के गोत्र का भी विच्छेद होवे वैसे धन ग्राम नगर, खेट, कर्बट, मडप द्रोण मुख, पाटण संबाह व सन्निवेश के शृंगाटक के स्थान, तीन रास्ते मीले वैसा स्थान, चार रास्ते मीले वैसे स्थान, चच्चर, चतुर्मुख, राज्य मार्ग नगर की खाल, स्मशान पर्वत की शीला, गुफा व भवन में गडे हुवे धन इत्यादि सब है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है उक्त सब वस्तुओं वहां नहीं है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! एकोरुक द्वीप में मनुष्य की कितनी स्थिति कही

भंते ! दीवे मणुयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं असंखेज्जतिभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं ॥ ५४ ॥ तेणं भंते ! मणुया कालमासे कालंकिच्चा कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति ? गोयमा ! तेणं मणुया छम्मासा सेसाउआ मिहुणाइं पसवंति अउणासीइं राइंदियाइं मिहुणाइं सारक्खंति संगोवंति सारक्खित्ता उस्ससित्ता णिस्ससित्ता कासित्ता छिंतित्ता अक्किट्ठा अव्वहिया अपरियाविया सुहंसुहेणं कालमासे कालंकिच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, देवलोग परिग्गहियाणं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

है ? अहो गौतम ! जघन्य पल्योपम के असंख्यातवे भाग में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवा भाग ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! वे मनुष्यों काल के अवसर में काल करके कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जब उन का छ मास आयुष्य शेष रहता है तब उनका मिथुनक (पुत्र व पुत्री) का जोडा प्रसव होता है ७९ दिन पर्यंत उनकी प्रतिपालना करते हैं, अच्छी तरह रखते हैं यों अच्छी तरह रक्षते हुए व युगल युगलनी श्वासोश्वास लेते हुए खांस व छींक खाते हुए किंचित्मात्र भी बाधा पीडा बिनासुख पूर्वक काल के अवसर में काल करके भुवनपति वाणव्यंतर देव में उत्पन्न होते हैं अहो आयुष्यवंत श्रमणों !

॥ ५५ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण आभासिय मणुयाण आभासिय दीवे नाम दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुद्दीवे २ तहेव चेव चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लातो चरिमताओ लवणसमुद्द तिन्नि जोयण सेस जहा एगुरुयाण निरवसेस सव्व ॥ ५६ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण वेसाणिय मणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जबुद्दीवे २ मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणपच्चच्छिमिल्लाओ चरिमताओ लवणसमुद्दति तिन्निजोयणा सेसे जहा एगुरुयाण

द्वीपों में उत्पन्न होने का यह मनुष्य समुदाय कहा ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के आभासिक मनुष्यका आभासिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में चुल्लहिमवन्त पर्वत रहा हुवा है, उस के दक्षिणपूर्व ईशानकून के चरमांत से लवण समुद्र में तीन सो योजन जावे वहां आभासिक द्वीप कहा है सब अधिकार सब एकरुक द्वीप जैसे जानना ॥ ५६ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के वेषाणिक मनुष्यों का वेषाणिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! मेरु पर्वत से दक्षिणदिशा में चुल्लहिमवन्त वर्षधर पर्वत से दक्षिणपश्चिम नैऋत्यकून के चरिमांत से तीनसो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां वेषाणिक द्वीप रहा हुवा है इस का शेष सब अधिकार एकरुक द्वीप

॥ ५७ ॥ कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं नंगोलियमणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तर पच्चच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द तिन्निजोयण सयाइं सेसं जहा एगुरुय मणुस्साणं ॥ ५८ ॥ कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं हयकण्णमणुस्साणं हयकन्नदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगुरुयदीवस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवण समुद्द चत्तारि जोयणसयाइं उगाहित्ता एत्थणं दाहिणिल्लाणं हयकन्नमणुस्साणं हयकन्न दीवे नामं दीवे पण्णत्ते, चत्तारि जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं बारससया पन्नट्ठा किंचि

जैसे जानना ॥५७॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के नांगोलिक मनुष्य का नांगोलिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! मेरुपर्वत की दक्षिण में चुल्लहिमवंत पर्वत की उत्तर पश्चिम चरमांत से तीन सो जोजन समुद्र में जावे वो यहां नांगोलीक द्वीप कहा हुवा है इस का कथन एकरुक द्वीप जैसे जानना ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के हय कर्ण मनुष्य का हय कर्ण द्वीप कहां है ? अहो गौतम ! एकरुक द्वीप के चरिमांत से लवण समुद्र में चार सो योजन जावे तब वहां हयकर्ण द्वीप चार सो योजन का लम्बा चौडा है बारह सो पैंसठ योजन में कुच्छ कम की परिधि कही है, एक पद्मवर वेदिका व

विसेसूणाइ परिक्खेवेण एगाए पउमवर वेइयाए अवसेस जहा एगुरुयाण ॥ ५९ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण गयकन्नमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! आभासियदीवस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द चत्तारि जोयणसयाइ, सेस जहा हयकन्नाण ॥ ६० ॥ एव गोकन्नमणुस्साण पुच्छा ? वेसालिय दीवस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द चत्तारि जोयणसयाइ सेस जहा हयकन्नाण ॥ ६१ ॥ सुकुलिकन्नाण पुच्छा ? गोयमा ! नंगोलियदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ

वनखण्ड सहित है शेष अधिकार एकरूकद्वीप जैसे जानना ॥ ५९ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के गजकर्ण मनुष्य का गजकर्ण द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! आभासिकद्वीप के अग्निकून के चरिमांत से लवण समुद्र में चार सो योजन जावे वो वहां गजकर्ण नामक द्वीप रहा हुवा है इस का कथन हयकर्ण जैसे जानना ॥ ६० ॥ अहो भगवन् ! गोकर्ण द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! वैशालिक द्वीप के नैऋत्यकूने के चरिमांत से चार सो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां गोकर्ण द्वीप रहा हुवा है इस का कथन हयकर्ण जैसे जानना ॥ ६१ ॥ सकुलिकर्ण द्वीप की पृच्छा, अहो गौतम ! नांगोलिक द्वीप के वायव्यकून के चरिमांत से चार सो योजन लवण

चरिमताओ लवण समुद्द चत्तारि जोयणसयाइ सेस जहा॰ हयकन्नाण ॥ ६२ ॥ आयसमुहाण पुच्छा ? हयकन्नदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पचजोयण सयाइ उगाहित्ता इत्थण दाहिणिल्लाण आयसमुह मणुस्साण आयसमुह दीवेनाम दीवे पण्णत्त, पचजोयणसयाइ आयामविक्खमण आसमुहाईण छसया, आसकन्नाईण सत्त, उक्कामुहाईण अट्ठ घणदताईण जाव नवजोयणसयाइ, ॥ एगुरुय परिक्खवो नवचेव सयाइ, अउणपन्नाइ वारसवनट्ठ इ हयकन्नाण॰ आमकन्नाईण परिक्खेवो आयसमुहाईण

समुद्र में जावे तो वहां शकुलीकर्ण द्वीप कहा है इस का कथन हय कर्ण द्वीप जैसे जानना ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! आदर्श मुख द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! हय कर्ण द्वीप की ईशानकून के चरिमांत से लवण समुद्र में पांच सो योजन जावे वहां दक्षिण दिशा के आदर्श मुख मनुष्य का आदर्श मुख द्वीप कहा हुवा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है आदर्शमुख, मेघमुख, अजो मुख व गोमुख ये चार द्वीप पांचसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वमुख, हस्तीमुख, सिंहमुख व व्याघ्र मुख ये चारों छ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, हयकर्ण, व कर्णप्रावरण, ये चार द्वीप सातसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, उल्का मुख, मेघ मुख, विद्युन्मुख व विद्युद्दंत ये चार द्वीप

पन्नरसेकासिए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खवेण,एवं एतेण कमेण उवउज्जय२ णेयव्वा,चत्तारि२एगप्पमाणा णाणत्त, उगाह विक्खभे परिक्खवे पढमबिति ततिय चउक्काण उग्गाहो विक्खमो परिक्खेवोय भाणिओ, चउत्थे चउक्के छ जोयण सयाइ, आयाम विक्खभेण, अट्ठारमत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेण ॥ पचम चउक्के सत जोयण सयाइ आयामविक्खभेण, बावीसतेरसुत्तरे जोयणसए परिक्खवेण ॥ छट्ठ चउक्क अट्ठ जोयण आयाम विक्खभेण पणतीस अगुणचीसे

आठ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, घणदंत, लष्टदंत, गूढदंत व शुद्धदंत, ये चार द्वीप नव सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं अब इन की परिधि कहते हैं एकरुकादि चारों द्वीप की नव सो गुनपचास योजन की परिधि कही, दूसरा हयकर्णादि चारों द्वीप की बारहसो पैंसठ योजन की परिधि है तीसरा आदर्श मुखादिक चारों द्वीप की पन्दरह सो इक्यासी योजन स कुच्छ अधिक की परिधि है, चौथा चौक अश्व मुखादिक चारों द्वीप में अठारहसो सत्ताणव योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है, पांचवा चौक अश्वकर्णादिक द्वीप की बावीस सो तेरह योजन की परिधि है, छट्ठा चौक उल्कमुखादिक अन्तर्द्वीप की पचीस सो उनतीस योजन की परिधि है सातवा चौक घनदंतादिक चार अंतरद्वीप की नव सो योजनका लम्बा चौडा व दो हजार आठसो पैंतालीस योजन की परिधि है, और भी द्वीप की जितनी चौडाइ है उतने योजन की

चरिमताओ लवण समुद्द चत्तारि जोयणसयाइं सेसं जहा हयकन्नाणं ॥ ६२ ॥ आयसमुहाणं पुच्छा ? हयकन्नदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पंचजोयण सयाइं उगाहित्ता इत्थणं दाहिणिल्लाणं आयसमुहं मणुस्साणं आयसमुहं दीवेनामं दीवे पण्णत्ते, पंचजोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं आसमुहाईणं छसया, आसकन्नाईणं सत्त, उक्कामुहाईणं अट्ठ घणदंताईणं जाव नवजोयणसयाइं, ॥ एगुरुय परिक्खवो नवचेव सयाइं, अउणपन्नाइं बारसवनट्ठ इ हयकन्ना० आसकन्नाईणं परिक्खेवो आयसमुहाईणं

समुद्र में जावे तो वहां शष्कुलीकर्ण द्वीप कहा है इस का कथन हय कर्ण द्वीप जैसे जानना ॥ ६७ ॥ अहो भगवन् ! आदर्श मुख द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! हय कर्ण द्वीप की ईशानकून के चरिमांत से लवण समुद्र में पांच सो योजन जावे वहां दक्षिण दिशा के आदर्श मुख मनुष्य का आदर्श मुख द्वीप कहा हुवा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है आदर्शमुख, मेषमुख, अजो मुख व गोमुख ये चार द्वीप पांचसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वमुख, हस्तीमुख, सिंहमुख व व्याघ्र मुख ये चारों छ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, हयकर्ण, व कर्णप्रावरण, ये चार द्वीप सातसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, उल्का मुख, घन मुख, विद्युन्मुख व विद्युद्दंत ये चार द्वीप

पव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द तिन्नि जोयणसयाइ उगाहित्ता एत्थ जहा दाहिणिल्लाण तहा उत्तरिल्लाण भाणियव्व, णवर सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स विदिसासु, एव जाव सुद्धदत दीवेति जाव सेत अतरदीवका ॥ ६४ ॥ सेकित अकम्मभूमगा ? अकम्मभूमगा तिसतिविहा पण्णत्ता तजहा-पचहिं हेमवएहिं एव जहा पन्नवणापदे जाव पचहिं उत्तरकुराहिं ॥ सेत्त अकम्मभूमगा ॥ ६५ ॥ से किं त कम्मभूमगा? कम्मभूमगा पण्णरसविहा पण्णत्ता तजहा पचहिं भरहेहिं पचहिं एरवएहिं पचहिं महाविदेहेहिं । ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा आयरिया मिलच्छा, एव

पर्वत की ईशानकून के चरिमांत से तीन सो योजन लवण समुद्र में जावे सो वहां एकरुकद्वीप कहा हुवा है यों जैसे दक्षिण दिशा के एकरुकद्वीप का अधिकार कहा वैसे ही उत्तर दिशा के एकरुकद्वीप का जानना परंतु यहां शिखरी पर्वत का कथन करना यावत् शुद्धदंत पर्यंत कहना यह अंतरद्वीप का कथन हुवा ॥ ६४ ॥ अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अकर्मभूमि के तीस भेद कहे हैं तद्यथा पांच हेमवय, पांच एरणवय, पांच हरिवास, पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु व पांच उत्तरकुरु यह अकर्म भूमि का कथन हुवा ॥ ६५ ॥ अहो भगवन् ! कर्मभूमि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कर्म-भूमि के पन्नरह भेद कहे हैं तद्यथा पांच भरत, पांच एरवत व पांच महाविदेह इन के संक्षेप से दो भेद कहे

जोयणसते परिक्खेवेण ॥ सत्तमचउक्के णव जोयण सयइ आयामविक्खंभेण दो जोयण सहस्साइ अट्ठपणताले जोयणसए परिक्खेवेण, जस्सय जो विक्खंभो उग्गाहो तस्स तत्तिओचेव पढम बीताण परिरतो ऊणो, सेसाण अहिउउ, सेसाजहा एगुरुय दीवस्स जाव सुद्धदंत दीव, देवलोग परिग्गहाण ते मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ॥ ६२ ॥ कहिण भंते ! उत्तरिल्लाण एगुरुय मणुस्साण एगुरुयदीवे नामदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जम्बूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण सिहरिस्स वासहर

लवण समुद्र में अवगाहे हुवे हैं जैसे जगती से तीनसो योजन लवण समुद्र में प्रथम चौक का अंतरद्वीप तीनसो योजन के लम्बे चौडे हैं, उस से चारसो योजन लवण समुद्र में जावे तो दूसरा चौक के अंतरद्वीप चारसो योजन के लम्बे चौडे है यों यावत् छठे चौक से नवसो योजन लवण समुद्र में जावे तब सातवा चौक के अंतरद्वीप नवसो योजन के लम्बे चौडे हैं प्रथम चौक की लम्बाइ चौडाइ से दूसरे चौक की लम्बाइ चौडाइ सो योजन का अधिक, इस से तीसरे चौक की सो योजन की अधिक यों अधिक २ सब चौक की जानना यह सब अधिकार एकरुक द्वीप जैसे जानना ये मनुष्य देवलोकगामी कहे हुवे हैं अर्थात् मरकर देवता में उत्पन्न होते हैं ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! उत्तरदिशा के एकरुक मनुष्य का

कहिण भंते ! भवणवासी देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए एवं जहा पन्नवणाए जाव भवणा पासाइया॥ तत्थण भवणवासीण देवाणं सत्तभवण कोडीओ बावत्तरिं भवणवाससयसहस्सा भवंति तिमक्खया ॥ तत्थण बहवे भवणवासी देवा परिवसंति, असुरा नाग सुवन्नाय जहापन्नवणाए जाव विहरंति ॥ कहिण भंते! असुरकुमाराणं देवाणं भवणा पण्णत्ता पुच्छा ? गोयमा ! एवं जहा पन्नवणा ठाणपदे जाव विहरंति ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराण देवाणं भवणा पुच्छा ? एवं जहा ठाणपदे जाव चमरे तत्थ

अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड कहा है वहां से लगाकर यावत् भवनपति के भवन उन को रहने योग्य कहे हैं वहां तक सब पन्नवणा सूत्र अनुसार जानना वहां सात क्रोड बहत्तर लाख भवन कहे हैं इन सब भवनों में असुरकुमार नागकुमार वगैरह दश जाति के भवनवासी देव रहते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार देव के भवन कहां कहे हैं ! अहो गौतम ! पन्नवणा के स्थान पद में जैसा कथन किया वह सब यहां जानना अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के असुरकुमार के भवन कहां कहे हैं ! अहो गौतम ! इसका कथन पन्नवणा सूत्र के स्थानपद जैसा जानना

जहा पण्णवणापद जाव सेत्त गब्भवक्कंतिया ॥ सेत्त मणुस्सा ॥ ४ ॥ ५ ॥ सेकिंत देवा? देवा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा भवणवासी, वाणमंतर, जोइसिया वेमाणिया ॥ १ ॥ सेकिंत भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता तंजहा-असुरकुमारा जहा पन्नवणापदे देवाण भेओ तहा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववातिया पंचविहा प० तंजहा—विजया वेजयंता जाव सव्वट्ठसिद्धगा ॥ सेत्त अणुत्तरोववाइया ॥ २ ॥ कहिणं भंते ! भवनवासि देवाण भवणा पण्णत्ता ?

हैं आर्य व म्लेच्छ यों जैसे पन्नवणा पद में कथन किया वैसे ही यहां जानना यह गर्भज मनुष्य का कथन हुआ यह मनुष्य का कथन हुआ ॥ ४ ॥ ? ॥

अहो भगवन् ! देव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! देव के चार भेद कहे हैं भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भवनवासी देव किस को कहते हैं ? अहो गौतम ! भवनवासी देव के दश भेद कहे हैं तद्यथा—असुरकुमार यावत् स्थनित कुमार वगैरह सब पन्नवणा पद में जैसे देवता का भेद कहा वैसे ही सब अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक के पांच भेद कहे हैं विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित व सर्वार्थ सिद्ध यह अनुत्तरोपपातिक का भेद हुआ ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! भवनवासी देवों के भवन कहां कहे हैं ? और भवनवासी देव कहां रहते हैं ?

बत्तीस देवसाहस्सीतो पण्णत्ताओ ॥ ५ ॥ चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो अब्भिंतरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए अद्धुट्ठादेवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए तिण्णि देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए अड्ढाइज्जा देवीसया पण्णत्ता ॥ ६ ॥ चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता? मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? अब्भिंतरियाए

हजारदेव व बाह्य परिषदा में बत्तीस हजारदेव कहे हैं॥५॥ अहो भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र की आभ्यतर परिषदा में कितनी देवियों, मध्य परिषदा में कितनी देवियों व बाह्य परिषदा में कितनी देवियों कही हुई है? अहो गौतम !, उनकी आभ्यंतर परिषदा में ३५० देवी, मध्य परिषदा में ३०० देवी और बाह्य परिषदा में २५० देवियों कही है ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र की आभ्यतर परिषदा के देवताओं की कितनी स्थिति कही है? मध्य परिषदा के देवों कितने काल की स्थिति कही और बाह्य परिषदा के देवों कितने काल की स्थिति कही ? आभ्यंतर परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही, मध्य परिषदा की देवी

असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ जाव विहरइ ॥३॥ असुरिंदस्स असुररन्नो कति-परिसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा समिया चंडा, जाया अब्भिंतरिया समिया, मज्झचंडा, बाहिं जाया ॥ ४ ॥ चमरस्सणं भंते ! असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भंतर परिसाए कतिदेवसाहस्सीतो पण्णत्ताओ, मज्झिम परिसाए कतिदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिर परिसाए कतिदेव साहस्सीतो पण्णत्ताओ ? गोयमा! चमरस्सणं असुरिंदस्स अब्भिंतर परिसाए चउवीस देव साहस्सीतो पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए अट्ठावीस देव साहस्सीतो पण्णत्ताओ, बाहिरयाए परिसाए

यावत् यहां असुरकुमार का चमर नामक इन्द्र रहता है यावत् विचरता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुर का इन्द्र व असुर का राजा को कितनी परिषदा कही है ? अहो गौतम ! तीन परिषदा कही है तद्यथा—समिता, चण्डा व जाया आभ्यंतर परिषदा समिता, मध्य परिषदा चंडा व बाह्य परिषदा जाया ॥४॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा की आभ्यंतर परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं मध्य परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं व बाह्य परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं ? अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा में चउवीस हजार देव, मध्य परिषदा में अट्ठाईस

तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा-समिया चडा जाया, अब्भितरिया समिया मज्झिमिया चडा, बाहिरिया जाया ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स असुर रन्नो अब्भितर परिसा देवाण वाहिता हव्वमागच्छति णो अव्वाहिता,मज्झिम परिसाए देवा वाहिता हव्वमागच्छति अव्वाहितावि, बाहिर परिसादेवा अव्वाहिता हव्वमागच्छति॥ अब्भतरचण गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया अण्णयरेसु उच्चवएसु कज्जे कोडुंबेसु समुप्पन्नेसु अब्भितरियाए सद्धि समइ सपुच्छणा बहुले विहरइ, मज्झिमियाए परिसाए सद्धिंमपय एवंचमाण विहराति, बाहिरयाए परिसाए सार्द्ध पय पचंडेमाणे २ विहरइ,

परिषदा किस लिये कही जिस में आभ्यतर समिता, मध्य की चडा व बाह्य की जाया ? अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा के आभ्यतर परिषदा के देव बोलाये हुवे आते हैं परन्तु विना बोलाये हुवे नहीं आते हैं, मध्य परिषदावाले बोलाये हुवे व विना बोलाये हुवे दोनों तरह आते हैं और बाह्य परिषदावाले विना बोलाये हुए आते हैं, दूसरा कारन यह है कि चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा को उत्तम, मध्यम कार्य, अपनी राज्यधानी का कार्य, कुटुम्ब सबंधी कार्य इत्यादि कार्य होने पर वे आभ्यतर परिषदा के देवों साथ समति मीलाते हुवे और उनको पूछते हुवे रहते हैं, मध्य परिषदावाले देवों को सक्षेप में कह देते हैं और बाह्य परिषदा वाले देवों को बात कह कर कार्य करने का आदेश

पारिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण अड्डाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता, अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण पलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥ ७ ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स

की कितनी स्थिति कही, व बाह्य परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र की आभ्यंतर परिषदा के देवों की अढाइ पल्योपम की स्थिति कही, मध्य परिषदा के देवों की दो पल्योपम की स्थिति कही व बाह्य परिषदा के देवों की देढ पल्योपम की स्थिति कही आभ्यंतर परिषदा की देवी की देढ पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी की एक पल्योपम व बाह्य परिषदा की देवी की आधे पल्योपम की स्थिति कही है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र की तीन

ताओ चेव जहा चमरस्स ॥ १३ ॥ धरणस्सण भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए सट्ठिं देवसहस्सा पण्णत्ता, मज्झिमियाए सत्तरिदेवसहस्सा पण्णत्ता, बाहिरियाए असिति देवसहस्सा पण्णत्ता, अब्भिंतर परिसाए पण्णतर देवीसय पण्णत्त मज्झिमियाए परिसाए पन्नास देवीसय पण्णत्त बाहिरियाए परिसाए पणवीस देवीसय पण्णत्त ॥ १४ ॥ धरणस्सण रन्नो अब्भित रियाए परिसाए देवाण कवइय काल ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण कवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता? अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए

अहो गौतम ! तीन परिषदा कही है इस का सब कथन चमरेन्द्र जैसे जानना ॥ १३ ॥ धरणेन्द्र को आभ्यतर परिषदा में ६० हजार देव, मध्य परिषदा में ७० हजार देव व बाह्य परिषदा में ८० हजारदेव आभ्यतर परिषदा में १७५ मध्य परिषदा में १५० व बाह्य परिषदा में १२५ देवियों कही है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! धरणेन्द्र की आभ्यतर परिषदा के देवों की कितनी स्थिति कही, मध्य परिषदा की कितनी स्थिति कही व बाह्य परिषदा की कितनी स्थिति कही ? आभ्यतर परिषदा के देवी की कितनी स्थिति कही मध्य परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही व बाह्य परिषदा की देवीकी कितनी

मज्झिमाए परिसाए तिन्नि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, बाहिरयाए परिसाए अड्ढाइज्जाइ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीण अड्ढाइज्जाइ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण दोपलि-ओवमाइ ठिई पण्णत्ता, बाहिरयाए परिसाए देवीण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता॥ सेस जहा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार रन्नो ॥ ११॥ कहिण भंते! नागकुमाराण देवाण भवणा पण्णत्ता ? जहा ठाणपदे जाव दाहिल्लावि पुच्छिया वा जाव धरण नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ जाव विहरइ ॥ १२ ॥ धरणस्सण भंते ! णागकुमारिंदस्स णागकुमार रन्नो कइपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! तिन्निपरिसाओ

व बाहिर की परिषदा के देवों की अढाइ पल्योपम की आभ्यंतर परिषदा की देवी की अढाइ पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी की दो पल्योपम व बाहिर की परिषदा की देवी की देढ पल्योपम की स्थिति कही शेष चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा जैसे जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार देवता के भवनों कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा में स्थान पद में जैसा कहा वैसा यहां सब जानना यावत् दक्षिण दिशा की भी पृच्छा करना यहां धरण नामक नागकुमार का इन्द्र व नागकुमार का राजा रहता है यावत् विचरता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! धरण नामक नागकुमारेन्द्र को कितनी परिषदा कही हैं ?

कइदेव साहस्सियाओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए कइदेव सहस्सियाओ पण्णत्ताओ, अब्भिंतरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए कइदेवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! भूयाणिंदस्सण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए पन्नास देव सहस्सा पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए सट्ठिंदेव सहस्सा पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए सत्तरि देवसहस्सा पण्णत्ता, अब्भिंतरियाए परिसाए दो पणवीस देवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए दो देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए पण्णत्तरि देविसय पण्णत्त ॥ १६ ॥ भुयाणदस्सण भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमार

कहा वैसे ही यहां जानना यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! भूतान नामक नाग कुमार का इन्द्र व नाग कुमार का राजा को आभ्यतर परिषदा में कितने देव, मध्य परिषदा में कितने देव व बाह्य परिषदा में कितने देव कहे हैं आभ्यतर परिषदा में कितनी देवियों, मध्य परिषदा में कितनी देवियों व बाह्य परिषदा में कितनी देवियों कही हैं ? अहो गौतम ! भूतानेन्द्र को आभ्यतर परिषदा में ५० हजार मध्य में ६० हजार व बाह्य परिषदा में ७० हजार देव कहे हैं आभ्यतर परिषदा में २२५, मध्य परिषदा में २०० व बाह्य परिषदा में १७५ देवियों कही हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! भूतानेन्द्र के

देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! धरणस्सरन्नो अब्भितरियाए परिसाए देवाण साइरेग अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता। अब्भितरियाए परिसाए देवीण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता मज्झिमाए परिसाए देवीण साइरेग चउब्भागपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहरियाए परिसाए देवीण चउभागपलिओवम ठिई अट्ठो जहाचमरस्स, ॥ १५ ॥ कहिण भते ! उत्तरिल्लाण नागकुमाराण जहा ठाणपदे, जाव विहरइ॥भूयाणदस्सण भते।नागकुमारस्स णागकुमाररन्नो अब्भितरियाए परिसाए

स्थिति कही ? अहो गौतम ! धरणेन्द्र के आभ्यतर परिषदा के देवों की साधिक आधा पल्योपम, मध्य परिषदा के देवों की आधा पल्योपम व बाह्य परिषदा के देवों की कुच्छ कम आधा पल्योपम आभ्यतर परिषदा की देवी की कुच्छ कम आधा पल्योपम मध्य परिषदा की देवी की साधिक पल्योपम का चौथा भाग व बाहिर की परिषदा की चौथा भाग की स्थिति कही शेष सब चमरेन्द्र जैसे जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर दिशा के नाग कुमार देव कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! जैसे स्थान पद में

चउब्भाग पलिओवम ठिई पण्णत्ता, अट्ठो जहा चमरस्स, ॥ १७ ॥ अवसेसाण वेणुदेवादीण महाघोस पज्जवसाणाण ठाणपय वत्तव्वयाणिरवसेस भाणियव्वा, परिसाओ जहा धरणभूयाणदाण दाहिणिल्लाण जहा धरणस्स उत्तरिल्लाण जहा भूयाणदस्स परिमाणवि ठितीवि ॥ १८ ॥ कहिण भंते ! वाणमंतराण देवाण भवण पण्णत्ता जहा ठाणपदे जाव विहरति ॥ कहिण भंते ! पिसायकुमाराण भवणा पण्णत्ता? जहा ठाणपद जाव विहरति ॥ काल माहाकालाय तत्थ दुवे पिसाय कुमार रायाणो परिवसति जाव विहरति ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण पिसाय कुमाराण जाव विहरति ॥ काले यत्थ पिसाय कुमारिंदे पिसाय कुमार राया परिवसति महिड्ढिए जाव

देवी की साधिक पल्योपम का चौथा भाग कार्य सब चमरेन्द्र जैसे कहना ॥ १७ ॥ शेष वेणुदेवेन्द्र से महाघोषेन्द्र पर्यंत सब वक्तव्यता स्थानपद जैसे जानना परिषदा का अधिकार दक्षिण दिशा का धरणेन्द्र व उत्तर दिशा का भूतानेन्द्र जैसे जानना यह भवनपति का अधिकार हुवा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! वाणव्यंतर देवों के भवन कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा सूत्र के स्थानपद में जैसा अधिकार है वह सब यहां जानना यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! पिशाच कुमार के भवनों कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! इस का कथन भी पन्नवणा सूत्र के स्थानपद से जानना यावत् काल व महा काल ऐसे

रुणो अभिंतरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, अभिंतरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! भूयाणदस्सण्ण अभिंतरियाए परिसाए देवाण सातिरेग अद्ध पलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण देसूण पलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता अभिंतरियाए परिसाए देवीण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवीण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण सातिरेग

आभ्यंतर परिषदा के देवों की, मध्य परिषदा के देवों की, बाह्य परिषदा के देवों की, आभ्यंतर परिषदा की देवियों की, मध्य परिषदा की देवियों की व बाह्य परिषदा की देवियों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! भूतानेन्द्र के आभ्यंतर परिषदा के देवों की कुछ कम एक पल्योपम की, मध्य परिषदा-वाले की साधिक आधा पल्योपम व बाह्य परिषदावाले की आधा पल्योपम की स्थिति कही है आभ्यंतर परिषदा की देवी की आधा पल्योपम, मध्य परिषदा की कुछ कम आधा पल्योपम व बाह्य परिषदा की

अब्भिंतरियाए परिसाए एक देवीसय पण्णत्त, मज्झिमियाए परिसाए एक्कदेवीसयं पण्णत्त बाहिरियाए परिसाए एक देवीसय पन्नत्त ॥ कालस्सण भंते ! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररन्नो अब्भिंतर परिसाए देवाण कवतिय कालठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता बाहिरियाए परिसाए देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! कालस्सण पिसाय कुमारिंदस्स पिसाय कुमाररण्णो अब्भिंतर परिसाए देवाण अद्ध पलिओवम ठिती पण्णत्ता, मज्झिमाए देवाण देसूण अद्ध पलिओवम ठिती पण्णत्ता,

कही है ? अहो गौतम ! कालेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा के आठ हजार देव, मध्य परिषदा के दश हजार देव व बाह्य परिषदा के बारह हजार देव कहे हैं और तीनों परिषदा में बाह्य एकसो २ देवियों कही हैं अहो भगवन् ! काल नामक पिशाच राजा को आभ्यंतर परिषदा के देवों की, मध्य परिषदा के देवों की व बाह्य परिषदा के देवों की, आभ्यंतर परिषदा की देवीयों की, मध्य परिषदा की देवीयों की व बाह्य परिषदा की देवीयों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! आभ्यंतर परिषदा के देवों की आध

विहरंति। कालस्सण भंते! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा ईसा तुडिआ दढरहा अब्भितरिया ईसा, मज्झिमिया तुडिया बाहिरिया दढरहा। कालस्सण भंते! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए कतिदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ जाव बाहिरिया परिसाए कतिदेवीसया पण्णत्ता? गोयमा! कालस्सण पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमार रायस्स अब्भितर परिसाए अट्ठदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमाए परिसाए दस देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ,

दो पिशाच कुमार के राजा कहे हुवे हैं यावत् विचरते हैं अहो भगवन्! दक्षिण दिशा के पिशाच कुमार के वास कहां कहे हैं? स्थानपद जैसे कहना यावत् विचरते हैं, यहां काल नामक पिशाचकुमारेन्द्र व पिशाचकुमार राजा है, वह महर्द्धिक यावत् विचरता है अहो भगवन्! काल नामक पिशाच कुमारेन्द्र पिशाच राजा को कितनी परिषदा कही है? अहो गौतम! तीन परिषदा कही हैं ईसा, त्रुटिता व दृढरथा जिन में आभ्यन्तर ईसा, मध्य त्रुटिता व बाह्य दृढरथा अहो भगवन्! काल नामक पिशाचेन्द्र को आभ्यन्तर परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं यावत् बाह्य परिषदा की कितनी देवियों

सउद उप्पित्ता दसुत्तरे जोयणसए बाहल्लेण एत्थण जोतिसियाण देवाण तिरियमस-खिज्जा जातिसिय विमाणावास सयसहस्सा भवतीति, मक्खाय, तेण विमाणा अद्ध कविट्ठ सठाण सठिया एव जाव जहाठाणपदे जाव चदिम सूरिया तत्थ जोतिसिंदा जोइसरायाणो परिवसति महिड्डिया जाव विहराति ॥ सूरस्सण भते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ तजहा-तुबा तुडिया पव्वा, अब्भतरिया तुबा, मज्झिमिया तुडिया, बाहिरिया, पव्वा, सेस जहा कालस्स परिमाण, ठितीवि अठो जहा चमरस्स चदस्सवि एवचेव ॥ २० ॥ कहिण भते दीव समुद्दा के महालयाण भते ! दीवसमुद्दा किं सठियाण भते ! दीवसमुद्दा किमाकार भाव

कविठ के सस्थानवाले हैं यावत् इस का सब कथन स्थानपद जैसे कहना यावत् उन के चद्र व सूर्य दो इन्द्र हैं वे यहां रहते हैं यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र ज्योतिषी के राजा सूर्य को कितनी परिषदाओं कही है ? अहो गौतम ! तीन परिषदाओं कही है तुम्बा, तुडिया व पर्वा आभ्यन्तर तुम्बा, मध्य तुडिया व बाह्य पर्वा, शेष सब काल इन्द्र जैसे जानना कार्य सब चमरेन्द्र जैसे जानना जैसे सूर्य का कहा वैसे ही चद्र का कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! द्वीप समुद्र कहां है, द्वीप समुद्र

बाहिरियाए परिसाए देवाण सातिरेग चउब्भाग पलिउवम ठिती पण्णत्ता, अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण सातिरेग चउब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता मज्झिम परिसाए देवीण चउब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता बाहिर परिसाए देवीण देसूण चउब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता, अट्ठो जाव चमरस्स एव उत्तरिल्लस्सवि एव निरंतर जाव गीयजसस्स ॥ १९ ॥ कहिण्ण भंते ! जोतिसियाण देवाण विमाणा पण्णत्ता, कहिण जोतिसिया देवा परिवसंति ? गोयमा ! उप्पिंदिव समुद्दाण, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमि भागातो सत्तणउतेजोयण

पल्योपम, मध्य परिषदा के देवों को कुच्छ कम आधा पल्योपम, व बाह्य परिषदा के देवों की साधिक पल्योपम का चौथा भाग आभ्यंतर परिषदा की देवीयों की साधिक पल्योपम का व चौथा भाग, मध्य परिषदा की देवीयों की चौथा भाग व बाह्य परिषदा की देवीयोंकी पल्योपम के चौथे भागमें कुच्छ कमकी स्थिति है अर्थ सब चमरेन्द्र जैसे कहना ऐसे ही उत्तर दिशा के इन्द्रका कहना यों गीतयश पर्यंत सब इन्द्रों का कहना॥१९॥ अहो भगवन्! ज्योतिषी देव के विमान कहां कहे हैं व ज्योतिषी देव कहां रहते हैं? अहो गौतम ! द्वीप समुद्र की उपर इस रत्नप्रभा पृथ्वी के समभूमि भाग से ७९० योजन ऊपर जावे तब वहां ११० योजन के जाडपन में तीर्च्छे असंख्यात असंख्य ज्योतिषी के विमान कहे हुए हैं वे विमानों सर्व

॥ २१ ॥ तत्थणं अय जंबुद्दीवेणाम दीवे सव्वदीव समुद्दाणं अब्भितरए सव्व खुड्डाए वट्टे तेल्लापूय संठाण संठिये वट्टे रहचक्कवाल संठाण संठिये, वट्टे, पुक्खर कण्णिया संठाण संठिये वट्टे पडिपुन्नचंद संठाण संठिये, एक्कं जोयणसयसहस्सं आयाम विक्खभेणं, तिण्णिजोयण सयसहस्साइं सोलसहस्साइं दोण्णियसया सत्तावीसे जोयणसते तिण्णियकोसे अट्ठावीसंच धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धं अंगुलंच किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता॥ सेणं एकाए जगतीए सव्वतो समता संपरिक्खित्ते, साणं जगती अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले बारस जोयणाइं विक्खभेणं, मज्झे अट्ठजोयणाइं विक्खभेणं, उप्पिं चत्तारि जोयणाइं विक्खभेणं, मूलेविच्छिण्णा, मज्झे

पद्मवर वेदिका और एक२ वनखण्ड वेष्टित है लोक में स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत असंख्यात द्वीप व समुद्र है ॥२१॥इन सबकी बीच में सब से छोटा जम्बूद्वीप नामक द्वीप कहा है, यह तेल पूढे के संस्थानवाला है, रथ चक्र जैसा गोलाकार, पुष्कर की कर्णिका जैसा, प्रति पूर्ण चंद्र जैसा संस्थानवाला है एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा है तीन लक्ष सोलह हजार दो सत्तावीस योजन तीन कोश, एकसो अठ्ठाइस धनुष्य व १३॥ अंगुल से कुच्छ अधिक उस की परिधि है इस की चारों तरफ एक जगती है यह जगति आधा योजन की ऊंची है, मूल में बारह योजन की चौडी, मध्य में आठ योजन की चौडी व ऊपर चार

पडोयाराण भंते ! दीव समुद्दा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवा लवणादियासमुद्दा सठाणया ता एकविहिविहाणा वित्थारतो अणेगाविहिविहाणा दुगुणादुगुण पडुप्पाए माणा २ पवित्थरमाणा २ ओभासमाणा वीयीया, बहुउप्पल पउम कुमुद णलिण सुभगा सोगंधिया पोंडरीया महापोंडरीय सतपत्त सहस्सपत्तय फुल्लकेसरोवचिता, पत्तेय २ पउमवर वेइया परिक्खित्ता पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता, अब्भिंतरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा सयंभुरमण पज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो

कितने कहे हैं ? द्वीप समुद्र कैसे संस्थानवाले हैं, ? और उन का कैसा आकार भाव (स्वरूप) कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप व लवण समुद्र आदि असंख्यात समुद्र हैं वे सब एक संस्थानवाले हैं और विस्तार में अनेक प्रकार के हैं विस्तार में प्रथम द्वीप से प्रथम समुद्र दुगुना, प्रथम समुद्र से दूसरा द्वीप दुगुना, उस से दूसरा समुद्र दुगुना यों एक द्वीप से दूसरा समुद्र दुगुना और समुद्र से द्वीप दुगुना विस्तार में रहे हुवे हैं उन में जो समुद्र हैं वे कल्लोल से सुशोभित हैं और द्वीप में अनेक द्रह प्रमुख रहे हुवे हैं उन में उत्पल पद्म, चन्द्र विकासी, सूर्य विकासी, कमल, नलिन, सुभग, सोगंधिक, पुंडरीक, महा पुंडरीक, शतपत्र, सहस्रपत्र, वगैरह कमल, पुष्प केसरा सहित हैं प्रत्येक द्वीप को एक २

पउमवर वेदिया अद्ध जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण,पचधणुसायाइं विक्खभेण,सव्वरयणामई जगती समिया परिक्खेवेण तीसेणं पउमवरवेदियाए इमेवारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—वयरामया नम्मा रिट्ठामयापतिाणट्ठा वरुलिया मया खंभा, सुवण्ण रूप्पमया फलगा, वइरामयी संधी, लोहितक्खमइओ सूईओ नाणामया कलवरा, कलेवरसंघाडा, णाणा मणिमया रूवा, रूवसंघाडा अंकामया पक्खा पक्खवाहाओ, जोतिरसामयावंसा वंसकवेल्लुयाओ, रययामयी पट्टिया, जातरूवमयी ओहाडणी, वईरामयी उवरिं पुच्छणी, सव्वसेयरययामतेछादणे ॥ २४ ॥ साण पउमवरवेदिया

जगती के चारों तरफ घीरत हैं,अथात् जगती जितनी ही घेरावमें है इस पद्मवर वेदिका का वर्णन करते हैं इस की वज्र रत्नमय नीव है, आरिष्ट रत्नमय नीव का ऊपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय स्तंभ हैं, सोने चांदी के पाटिये हैं, उस की संधी वज्ररत्न से पूरी हुई है लोहिताक्ष रत्न की उन पटियों की बीच में सूइयों है, विविध प्रकार के कलेवर व कलेवर के साथे हैं, विविध प्रकार के मणिमय रूप व रूप संघात है, अंक रत्नमय पक्ष (देश) व पक्ष बाहा है, ज्योतिषी रत्नमय वंश व वंशवालिका (खुटियों) हैं, उस पर चांदी की पटडी है, उस पर सुवर्ण का ढक्कन है, उस पर वज्र रत्न का निबड ढक्कन है, उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है ऐसी पद्मवर वेदिका है ॥ २५ ॥ यह पद्मवर वेदिका एक

संक्षित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छ सठाण संठिया,सव्ववइरामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका णिक्ककडछाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ २२ ॥ साण जगती एकेण जालकडएण सव्वतो समता संपरिक्खित्ता, सेण जालकडएण अट्ठजोयण उड्ढ उच्चत्तेण पचधणुसयाइ विक्खभेण,सव्वरयणामए, अच्छ सण्हे घट्ठे मट्ठे नीरये निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे ससिरीए सउज्जोए पासादीये दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥ २३ ॥ तीसेण जगतीए उप्पिं बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगा महं पउमवर वेदिया पण्णत्ता, साण

योजन की चौडी है मूल में विस्तारवाली, मध्य में संक्षिप्त बनी हुई व ऊपर संकुचित बनी हुई है,सब वज्र रत्नमय, सुकुमाल, घटारी, मठारी, रज रहित, निर्मल, रज रहित, कांति की व्याघात रहित, प्रभा सहित, शोभा व उद्योत सहित,प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २२ ॥ उस जगती की चारों तरफ एक जाल कटक (गवाक्ष) है यह अर्ध योजन का ऊंचा पांच सो धनुष्य का चौडा व सब रत्नमय, स्वच्छ, मृदु, घटारा, मठारा, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांतिवाला, प्रभा शोभा व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २३ ॥ उस जगती की मध्य बीच में एक पद्मवर वेदिका है यह पद्मवर वेदिका आधा योजन की ऊंची व पांच सो धनुष्य की चौडी है, सब रत्न मय है

पउमवर वेदिया अद्ध जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं, सव्वरयणामई जगती समिया परिक्खेवेणं तीसेणं पउमवरवेदियाए इमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—वयरामया नम्मा रिट्ठामयापतिट्ठाणा वेरुलिया मया खंभा, सुवण्ण रूप्पमया फलगा, वइरामयी संधी, लोहितक्खमईओ सूईओ नाणामया कलेवरा, कलेवरसंघाडा, णाणा मणिमया रूवा, रूवसंघाडा अंकामया पक्खा पक्खवाहाओ, जोतिरसामयावंसा वंसकवेल्लुयाओ, रययामयी पट्टिया, जातरूवमयी ओहाडणी, वईरामयी उवरिं पुच्छणी, सव्वसेयरययामतेछादणे ॥ २४ ॥ साणं पउमवरवेदिया

जगती के चारों तरफ वेष्टित हैं, अर्थात् जगती जितनी ही घेरावमें है इस पद्मवर वेदिका का वर्णन करते हैं इस की वज्र रत्नमय नींव है, अरिष्ट रत्नमय नींव का ऊपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय स्तंभ हैं, सोने चांदी के पाटिये हैं, उस की संधी वज्ररत्न से पूरी हुई है लोहिताक्ष रत्न की उन पटियों की बीच में सूइयों है, विविध प्रकार के कलेवर व कलेवर के सांचे हैं, विविध प्रकार के मणिमय रूप व रूप संघात है, अंक रत्नमय पक्ष (देश) व पक्ष बाहा है, ज्योतिषी रत्नमय वंश व वंशवालिका (खुंटियों) हैं, उस पर चांदी की पटडी है, उस पर सुवर्ण का ढक्कन है, उस पर वज्र रत्न का निबिड ढक्कन है, उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है ऐसी पद्मवर वेदिका है ॥ २४ ॥ यह पद्मवर वेदिका एक

एगमेगेणं हेमजालेण एगमेगेण खिंखिणिजालेण, एव घंटाजालेण जाव मणिजालेण, एगमेगेण पउमवर जालेण सव्वरयणामएण सव्वतो समता सपरिक्खित्ता ॥ तेण जाल तवणिज्जलंबूसगा सुवण्ण पयरगमंडिया णाणा मणिरयण विविधहार सोहित समुदया, ईसिं अण्णमण्णमसपत्ता पुव्वावर दाहिण उत्तरा गतेहिं वाएहिं मदाय मदाय एतिया चतिया कपिता खोभिता चालिया फंदिया घट्टिया उदीरिया एतेसिं उरालेणं मणुन्नेण कण्णमन निव्वुत्ति करेण सद्देण सव्वतो समता आपूरेमाणा २ सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥ २५ ॥ तीसेण पउमवर

सुवर्ण की माला, घुघरे की माला, यावत् मोतियों की माला, व कमल की माला से परिवेष्टित है ये मालाओं सब रत्नमय हैं उन मालाओं का रक्त सुवर्ण के भूपसे है, सुवर्ण का मकरक [सूत्र] है, विविध प्रकार के मणि, रत्नों के विविध प्रकार के हार व अर्ध हार से शोभित है किंचित् परस्पर अलग २ है, पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण के मंद वायु से कंपायमान होती हुई, क्षुब्ध होती हुई, चलित होती हुई, किंचित् चलती हुई, व उदीरणा करती हुई वे मालाओं उदार मनोज्ञ कर्ण व मन को प्रियकारी शब्द से चारों तरफ पूरती हुई अतीव २ शोभती है ॥ २५ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत

वेइयाए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे हयसघाडा गयसघाडा, नरसघाडा किण्णरसघाडा किंपुरिससघाडा महोरगसघाडा गंधव्वसघाडा उसभसघाडा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा ॥ २६ ॥ तीसेण पउमवर वेदियाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे हयपंतीओ तहेव जाव पडिरूवाओ ॥ एवं हयवीहीओ जाव पडिरूवाओ ॥ एवं हयमिहुणाइं जाव पडिरूवाइं ॥ २७ ॥ तीसेण पउमवर वेइयाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे पउमलयाओ नागलयाओ एवं असोग चंपग चूय वाण वसंतिय अतिमुत्तग-कुंद-सामलयाओ णिच्चकुसुमियाओ जाव सुविभत्त

घोडे के युगल, गज के युगल, नर के युगल, किन्नर के युगल, किंपुरुष के युगल, महोरग के युगल, गन्धर्व के युगल, व वृषभ के युगल रहे हुवे हैं व सब रत्नमय स्वच्छ, मृदु, घटारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत छायावाले प्रभा शोभा व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ २६ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत हय की पंक्तियों यावत् प्रतिरूप हैं ऐसे ही हय वीथि यावत् प्रतिरूप है सो कहना ऐसे ही हय मिथुन यावत् प्रतिरूप हैं सो कहना ॥ २७ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत पद्मलता, नागलता, ऐसे ही अशोक, चंपक, आम्र, लता, छण नामक वृक्ष,

पिंडमजरीवडेंमक धरीओ सव्वरयणामतीओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णीरयाआ णिम्मलाओ निप्पकाओ निक्ककम छायाओ सप्पभाओ ससिरियाउ सउज्जायाओ पासादिआओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ २८ ॥ तीसेण पउमवर वेदियाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे अक्खया सोत्थिया पण्णत्ता, सव्वरयणामया अच्छा ॥ २९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ पउमवर वेइया ? गोयमा ! पउमवर वेइयाए तत्थ २ देसे २ तहिं वेदियासु वातियवाहासु वेतियासीसफलएसु वेतिया पुडंतरेसु खंभेसु खंभवाहासु खंभसीसेसु खंभपुड-

वासति, मति पुष्प कुरलता व श्यामलता हैं व सब कुसुमित (पुष्पवाली) यावत् सुविभक्त व पिंड मंजरीरूप शिखर धारन करनेवाली हैं सब रत्नमय, स्वच्छ कोमल, घटारी, मठारी, रज रहित, निर्मल, कर्दम रहित निरुपहत छायावाली, प्रभा, शोभा व उद्योत सहित प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ २८ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर अक्षय (चावल के) स्वस्तिक कहे हुए हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका क्यों कहा ? अहो गौतम ! पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर वेदिका के पार्श्व में, वेदिका के पटिए के शीर्ष में वेदिका के पुटांतर में, स्तंभ में, स्तंभ पार्श्व में स्तंभ शीर्ष में, स्तंभ पुटांतर में, सीलों में, सीलों के मुख में, सीलों के पटिए में, सीलों के पुटांतर में,

तरेसु, सूर्यासु सूयीमुहेसु सूयिफलएसु सूयिपुडतरेसु, पक्खेसु पक्खवाहासु पक्खपरतरेसु बहुय उप्पलाइ पउमाइ जाव सयसहस्सपत्ताइ सव्वरयणामयाइ अच्छाइ सण्हाइ लण्हाइ घट्ठाइ मट्ठाइ नीरयाइ निप्पकाइ निक्ककडछायाइ सप्पभाइ सस्सिरियाइ सउज्जोयाइ, पासादीयाइ दरिसणिज्जाइ, अभिरूवाइ पडिरूवाइ, महया २ वासिक्कच्छत्त समासाइ पण्णत्ताइ समणाउसो ! से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ पउमवरवेदिया २ ॥ अदुत्तरंच गोयमा ! पउमवरवेदिया २, सासते नामधेज्ज पण्णत्ते, ज णकयावि णासि जाव णिच्चे ॥ ३० ॥ पउमवर वेदियाण भंते ! किं सासता असासता ? गोयमा !

पक्ष में, पक्षबाहा में, व पक्ष के पातर में बहुत उत्पल पद्म यावत् लक्ष पांखडी वाले पुष्प रहे हुवे हैं वे सब रत्नमय, अच्छे, श्लक्ष्ण, घट्टारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांतिवाले, प्रभा, शोभा व उद्योत सहित प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे वर्षाकाल में पानी रखने का बडा पात्र अथवा छत्र समान हैं अहो गौतम ! इस लिये पद्मवर वेदिका शब्द की प्राप्ति हुई है अथवा तो पद्मवर वेदिका का नाम शाश्वत है यह अतीत काल में नहीं थी ऐसा नहीं यावत् नित्य है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका क्या शाश्वत है

सिय सासता सिय असासता ॥ केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सिय सासता सिय असासता ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसप-ज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सिय सासता सिय असासता ॥ २१ ॥ पउमवर वेइयाणं भंते ! कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! णकयावि णासि नकयातिणत्थि नकयाति नभविस्सति । भूविंच भवतिय भविस्सतिय धूवा णितिया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा पउमवर वेदिया ॥२२॥ तीसेणं जगतीए उप्पिं बाहिं पउमवर वेइयाए एत्थणं एगे महं वणसंडे पण्णत्ते

या अशाश्वत है ? अहो गौतम ! स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है अहो भगवन् ! किस लिये ऐसा कहा कि स्यात् शाश्वत स्यात् अशाश्वत है ? अहो गौतम ! द्रव्य आश्रिय शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्याय से अशाश्वत है अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा कि पद्मवर वेदिका स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका का कितना काल तक रहने का कहा ? अहो गौतम ! पहिले नहीं थी वैसा नहीं, वर्तमान नहीं है वैसा नहीं व भविष्य काल में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में थी, वर्तमान में है व भविष्य काल में होगी वैसी ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय अव्यय अवस्थित, व नित्य पद्मवर वेदिका है ॥ २२ ॥ उस जगती की ऊपर व पद्मवर वेदिका से बाहिर

देसूणाइ दो जोयणाइ चक्कवाल विक्खभेणं जगतिसमये परिक्खेवेण किण्हे किण्हो भास जाव अणेग सगड रहजाण जुग्ग परिमोयण सूरम्मे पासादिये सण्हे लण्णे, घट्ठे मट्ठे नीरए निम्मले निप्पंकच्छाए सप्पभाए ससिरिए सउज्जोवे पासादीये दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥२३॥ तस्सण वणसंडस्स अंतो बहु समरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए अलिंगपुक्खरेतिवा मुइंग पुक्खरेइवा सरतलेतिवा करयलेतिवा आयसमंडलेतिवा चंदमंडलेतिवा सूरमंडलेतिवा उरब्भचम्मेतिवा उसभचम्मेतिवा, वराह चम्मेतिवा, सीहचम्मेतिवा वग्घचम्मेतिवा, विचम्मेतिवा, दीवियचम्मेतिवा, अणेगसकुकीलग सहस्सवितते आवड पच्चावड सेढी सोढिथय सोवत्थिय

एक बड़ा वनखण्ड कहा हुवा यह वनखण्ड कुच्छ कम दो योजन का चक्रवाल में चौड़ा है जगती जितना, ही गोलाकार में हैं यह कृष्ण वर्ण वाला यावत् कृष्णाभास है यावत् अनेक शकट रथ पालखी प्रमुख रहने का स्थान है रमणिक,प्रासादिक,दर्शनीय,अभिरूप व प्रतिरूप है ॥२३॥ उस वनखण्ड में एक बड़ा रमणीय भूमिभाग है जैसे मुरजका तल (वाद्य विशेष) मृदंगकातल, तलावकातल, करतल, काच का तल, चंद्र मंडल सूर्य मंडल, मेंढे का चर्म, वृषभ का चर्म, वराहका चर्म, सिंहका चर्म, व्याघ्र का चर्म, छागका चर्म व चित्तेका चर्म समान तल है एक आकार वाले सहस्र खीलाओं को तपाकर टीपने से जैसे समतल भाग होता है वैसे ही आवर्त,प्रत्यावर्त, श्रेणि प्रश्रेणि स्वस्तिक, पुष्पमान वर्धमान, मत्स्य,

पुस्समाण वद्धमाण मच्छडक मकरडक जारामरा पुप्फवेलि पउमपत्ता सागरतरंग वासंति पउमलय भत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सस्सिरिएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह पंचवण्णेहिं तणेहिय मणिहिय उवसोभिये तंजहा-किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३३ ॥ तत्थ जे ते किण्हा तणाय मणीय तीसेणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए जीमूतेतिवा अंजणेतिवा खंजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलियातिवा गवलेतिवा गवलगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा आगासथिग्गलेइवा कण्हा सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबंधुजीवयेतिवा भवेतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिणं किण्हाणं तणाणं मणीणय

कच्छ, मगरमगर, पुष्पवेली, पद्म, पद्म, समुद्र तरंग, वासंतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों ये सब प्रकार की श्री व उद्योत सहित, विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व मणि से शोभनिक है ॥ ३३ ॥ इन में कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन करा है जैसे मेघ, घटा, अंजन, खंजन काजल, मसी, मसी की गोली, नील, नील की गुटका, कृष्ण सर्प, कृष्ण शाल कृष्ण आकाश तल, कृष्ण अशोक वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बंधु जीव क्या क्या इसका कृष्ण वर्ण होता है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक प्रधान, इष्ट मनोहर, कंत

एतो इट्ठयराएचेव कंततराएचेव मणामतराएचेव वण्णेणं पण्णत्ते ॥ ३९ ॥ तत्थणं जे ते णीलगा तणाय मणीय तेसिणं इमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते से जहानामए भिंगेतिवा भिंगपत्तेतिवा चासेतिवा चासपिच्छेतिवा सुयेतिवा सुयपिच्छेतिवा णीलीतिवा, णीलीभेदेतिवा णीलीगुलियातिवा, सामाएतिवा उच्चंतएतिवा, वणराईतिवा हलधरवसणेतिवा, मोरग्गीवातिवा, पारेवयग्गीवातिवा, अयसी कुसुमेतिवा, वाणकुसुमेतिवा, अंजणकेसिया कुसुमेतिवा, णीलुप्पलेतिवा णीलासो तेतिवा णीलकणवीरेतिवा, णीलबंधुजीवेतिवा, भवेयारूवेसिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिणं निलगाणं तणाणय मणीणय एतो इट्ठयराचेव कंततराएचेव जाव वण्णेणं पण्णत्ते

व मनाप है ॥ ३९ ॥ नील वर्ण वाले तृण व मणि का ऐसा स्वरूप कहा? जैसे भृंग, भृंग की पांख नील चास, नील चास की पांख, तोता, तोता की पांख, नील, नील वस्तु का भेद, नील वस्तु का समूह, सामा (धान्य विशेष) दांत का काला वर्ण, वनकी घटा समूह, बलदेव के वस्त्र, मयूर ग्रीवा, पारापत ग्रीवा, अलसी के पुष्प, सणवृक्ष के पुष्प, अंजनकेसिका (वृक्ष विशेष) उस के पुष्प, नीला कमल, नीला अशोक वृक्ष, नीली कनेर नीला बंधु जीव, इत्यादि वस्तु समान क्या उसका नीलावर्ण है? यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी अधिकतर

पुस्समाण वद्धमाण मच्छडक मकरडक जारमार पुष्पावलि पउमपत्ता सागरतरंग वासंति पउमलय भत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरिएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह पंचवण्णेहिं तणेहिय मणिहिय उवसोभिये तंजहा किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ २३ ॥ तत्थ जे ते किण्हा तणाय मणीय तेसिण अयमयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए जीमूतेतिवा अंजणेतिवा खंजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलियातिवा गवलेतिवा गवलगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा आगासथिग्गलेइवा कण्हा सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबंधुजीवयेतिवा भवेतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिण किण्हाणं तणाणं मणीणय

कच्छ, मगरमच्छ, जारमार, पुष्पवेली, पद्म, पत्र, समुद्र तरंग, वासंतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों ये सब प्रकार की श्री व उद्योत सहित, विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व मणि से शोभनिक है ॥ २३ ॥ इन में कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन कहा है जैसे मेघ, घटा, अंजन, खंजन, काजल, मसी, मसी की गोली, नील, नील, की गुटका, कृष्ण सर्प, कृष्ण शक्ल कृष्ण आकाश तल, कृष्ण अशोक वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बंधु जीव एसा क्या इसका कृष्ण वर्ण होता है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक श्याम, इष्ट मनोहर, कंत

॥ २५ ॥ तत्थण जे ते लोहियकरडक जरामरा पुक्खेलि पउमपत्ता सागरतरग वासति पण्णत्त से जहा नामए एहिं सस्सिरिएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह पचवण्णेहिं णरुहिरातिवा, वराहरुहिरेतिवा ये तजहा-किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३३ ॥ तत्थ तिवा जातिहिंगुलएतिवा रितीसेण अयमयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए मणितिवा, लक्खारसएतिवा खजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलितिवा, जासुयणकुसुमेइवा, लगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा रत्तासोगेतिवा, रत्तकणीयारो सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबधुजीवयेतिवा समट्ठ, तेसिण लोहियगाण तणाणट्ठे समट्ठ, तेसिण किण्हाण तणाण मणीणय

नीला यावत् मनोहर है॥२५॥ अब यह समुद्र तरग, वासतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों शशक का रुधिर, मेंढे का रुधिर, मा , विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व इन्द्रगोप जीव, माल (उदय होता) , र कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन करा है अकुर, लोहिताक्ष मणि, लाख का र , मसी, मसी की गोली, नील, नील की गुटका, कृष्ण सर्प, कृष्ण पुष्प, सिंदुरु पुष्प, प दम के पुष्प, वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बधु जीव एसा क्या इसका कृष्ण वर्ण क्या है ? यह अर्थ समर्थ नहीं, कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक श्याम, इष्ट मनोहर, कंत

पोंडरीयदलेतिवा, सिंदुवार वरमल्लदामेतिवा, सेतासोएतिवा सेयकणवीरेतिवा, सय
वधुजीवातिवा, भवे एयारूवेसिया ? णोतिणट्ठे समट्ठे, तेसिण सुक्किलाण तणाण
मणीणय एतो इट्ठतराएचेव जाव वण्णेण पण्णत्ते ॥३८॥ तेसिण भते! तणाणय मणीणय
केरिसये गधे पण्णत्ते से जहा नामए—कोट्ठापुडाणवा पत्तपुडाणवा, चोयपुडाणवा,
तगरपुडाणवा, एलापुडाणवा, हिरमेवपुडाणवा, चदणपुडाणवा, कुकुमपुडाणवा, उसीर
पुडाणवा, चवयपुडाणवा, मरुयगपुडाणवा, दमणगपुडाणवा, जातिपुडाणवा जुहिय
पुडाणवा, मल्लियपुडाणवा णो मल्लियपुडाणवा, वासतियपुडाणवा, केतियपुडाणवा

पद्म, वर्षा का मल, जात पुष्प की माला, श्वेत आशोक वृक्ष, श्वेत कर्णिका व श्वेत बधु जीव ऐसा क्या उन का वर्ण है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से अधिक इष्ट यावत् मनामतर उन मणि तृण का श्वेत वर्ण जानना अहो भगवन् ! उन तृण व मणि की गध कैसी कही है ? अहो गौतम ! जैसे कोइ पुडा, सुगंधि पान का पुडा, चोयक (गध द्रव्य विशेष) का पुडा, एलायची का पुडा, तगर का पुडा, वाल्ल खसखस का पुडा, चदन का पुडा कुंकुम का पुडा, उशीर का पुडा, चपक का पुडा मरुयका का पुडा, दमण का पुडा, जाई का पुडा, जूई का पुडा, मल्लिका का पुडा, नव मल्लिका का पुडा, वासंतिका का पुडा, केतकी का पुडा, कर्पूर का पुडा, व पाटल का पुडा इत्यादि में से मद वायु वाते

तिवा, पीयासोएत्तिवा पीयकणवीरेतिवा पीयबधुजीएतिवा, भवेएयारूवे सिया? णो इणट्ठे समट्ठे, तेण हालिद्दा तणायमणीय एत्तो इट्ठयरा चेव जाव वण्णेण पण्णत्ते ॥ २७ ॥ तत्थण जे ते सुक्किलगा तणायमणीय तेसिण अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते-से जहा नामए अकेतिवा संखेतिवा चंदेतिवा कुंदेतिवा दगरयेतिवा हंसावलीतिवा कोंचावलीतिवा हारावलीतिवा बलयावलीतिवा चंदावलीतिवा सारतियबलाहयेतिवा धंतधोय रूप्पपट्टेतिवा, सालि पिट्ठरासीतिवा कुंदपुप्फ रासीतिवा, कुमुदरासीतिवा, सुक्कछिवाडीतिवा, पेहुणमिंजाइवा, भिसितिवा, मुणालियातिवा, गयदंतेतिवा, लवंगदलेतिवा,

बधु जीव समान क्या है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है इन का वर्ण उक्त सब वस्तुओं से भी इष्टतर यावत् मनामतर पीले वर्ण में कहा है ॥ २७ ॥ शुक्ल तृण व मणि का कैसा वर्ण वास कहा है जैसे अंकरत्न, दक्षिणावर्त शंख, चंद्र, मुचकुंद के पुष्प, पानी के कन, हंसपंक्ति की श्रेणी, क्रौंच की श्रेणि, मोती के हारकी श्रेणी, बगले की श्रेणी, चंद्रावलि [पानि में चंद्र प्रतिबिंब की श्रेणी] शरद काल में होते हुवे श्वेत बद्दल, अग्नि से धमा हुवा चांदी का पट्ट, तुष रहित चांवल, मचकुंद पुष्प का पुंज, मोरपींछ का गर्भ, श्वेत कमल का पुंज, शुष्क छिवाडी वृक्ष के पुष्प, पद्मनीकंद, हस्ती के दांत, लवंग पत्र पौंडरीक

अकेसुपइट्ठियाए चदणासार कोणानक्खपरिघट्टियाए कुसलणरनारि सपग्ग हिताए, पदोसपच्चूसकालसमयसि मदाय २ एईयाए वेईयाए खोभियाए फदियाए घट्टियाए उदीरियाए उरालामणुन्ना कण्ण मणनिव्वुत्तिकरा सव्वतो समता सद्दा अभिणिस्सवति भवेतारूवेसिया ? नोतिणट्ठे समट्ठे ॥ से जहानामए किण्ण-राणवा किंपुरिसाणवा महोरगाणवा गधव्वाणवा भद्दसालवणगयाणवा नदणवणगयाण वा सोमणसवणगयाणवा पडगवणगयाणवा हिमवत मलय मदरगिरिगुहा समण्णा गयाणवा एगोसहिताण समुहागयाण सन्निसन्नाण सन्निविट्ठाण पमुदिय पक्कीलियाण

नहीं है तीसरा दृष्टांत कहते हैं—किन्नर, किंपुरुष, महोरग व गधर्व भद्रशालवन, नदन वन, सोमनस वन व पडग वन में अथवा हिमवत पर्वत पर, मलयाचल पर्वतपर, मेरुपर्वतकी गुफा में एकत्रित मीलकर वहां सम्यक् प्रकारसे प्रमुदित व क्रीडावत बनकर गीतरति नायक गधर्व हर्ष सहित गद्य, पद्य, कथ्य, पदबंद, व प्रवर्तक को मद २ स्वर से सप्तस्वर व आठ रस सहित, छ दोष रहित, अग्यारह अलकार गुण सहित व

१ प्रथम से ही दीर्घ स्वर से गाना, २ मध्य भाग में मद २ स्वर से गाना, ३ १ षड्ज, २ रिषभ ३गधार ४ मध्यम ५ पचम ६ धैवत और निषध यह सप्तस्वर ४ शृगार प्रमुख आठ रस हैं ५ १ भीति-अधिक त्रासित मन से भयभीत बनते हुए गाना २द्रुत दोष-त्वरा से गाना, ३उप्पिच्छ दोष आकुल व्याकुल बनकर गाना ४उत्ताल दोष-तालस्थानको अतिक्रम करके गाना, ५ काक स्वर दोष-सानुनासिक गाना ६ अनुनासिक दोष-नाक म स स्वर नीकालकर गाना यह सप्तदोष

अत्तकम्मस्स आइण्ण वरतुरग सुसपयुत्तस्स कुसल नरत्थेय साराहि सुसपगहितस्स सरसय वत्तीसतोण परिमंडियस्स सककडवहेंसगस्स सव्वावसर पहरणावरण भरिय जोहवुद्ध सज्जस्स रायगणसिवा अंतठरसिवा रम्मसिवा मणिकोट्टिमतलसिवा अभिक्खण अइट्टिज्जमाणस्सवा णियट्टिज्जमाणस्सवा पल्लवरतुरगस्स चडवेगाइ दढस्स उरालामणुन्ना कण्णमणाणिवुतिकरा सव्वतोसमता अभिणिस्सवति भवेतारूवेसिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे ॥ से जहा नामए वेयालियाए वीणाए उत्तरमदामुच्छियाए

प्रकार के आयुध, ढाल प्रमुख प्रहरण और योधा को वध करने योग्य ऐसा युद्ध रथ है उसे राजा के अंगन में अंत पुर में, महेल में, मनोहर मणिबद्ध भूमितल में, वारंवार अति वेग से फीरावे इसप्रकार उत्तम लक्षणवाले अश्वों से फिराते हुवे उस रथ में से मनोज्ञ व सुखकारी सब दिशी में स्पर्शता हुवा शब्द नीकलता है वो अहो भगवन् ' ऐसा शब्द उस तृण में से नीकलता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वह दूसरा दृष्टांत कहते हैं जैसे प्रभात में वैताल की वीणा, गधार स्वर की मूर्च्छा सहित अपने अंक में अच्छे तरह रखी हुई चंदन की वीणा, कोई कुशल पुरुष या स्त्री प्रभात काल में मदस्वर से बजावे इस तरह मूर्च्छा प्राप्त करते हुए, व उदीरते हुए उदार मनोज्ञ सुख उत्पन्न करनेवाला शब्द सब दिशाओंमें स्पर्शता हुवा नीकलता है अहो भगवन् ' उस तृण का क्या ऐसा शब्द होता है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ

खुड्खुड्डियाओ वावीओ पुक्खरिणीओ गुंजालियाओ दीहियाओ सरपंताओ सरसर त्रिलपंतीओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकुलाओ वइरामय पासाणाओ वेरुलि-मणिफालिय पडलपच्चोयडाउ नवणीयतलाओ सुवण्णसुज्झरयमणि वालुयाओ सुहोयार मुउत्ताराओ णाणामणि तित्थसुबद्धाओ चाउक्कोणाओ समतीराओ अणुपुव्व सुजायवप्प गंभीर सीयलजलाओ, सच्छण्णपत्तभिसमुणालाओ बहुउपल कुमुय णीलण सुभग सोगंधित पोंडरिया महापोंडरिय सतपत्त सहस्सपत्तफुल्ल कसरावइयाओ छापदपरिभुज्ज-

स्थान २ पर बहुत छोटी बावडियों, पुष्करणियों, गुंजालिकाओं, दीर्घिकाओं, सरपंक्तिओं, बिलपंक्तिओं रही हुई है व निर्मल स्फटिक रत्न जैसी सुकुमाल है उन के किनारे रत्नमय है, वज्ररत्नमय पाषाण है जिस से उन के दोनों भाग बने हुवे हैं, सुवर्णमय तल हैं, वैडूर्य व स्फटिक रत्नमय तट है, सुवर्ण व चांदी मय बालु है, उन में सुख पूर्वक प्रवेश कर सकते हैं व बाहिर नीकल सकते हैं, विविध प्रकार की मणियों से चारों कूने बांधे हुए हैं, समान तीर हैं, जल स्थान गंभीर है, उन का जल शीतल है, वहां जल में आच्छादित कमल पत्र, कमलकंद व कमल नाल हैं, उत्पल कमल, चंद्र विकासी कमल, नलिन कमल, सुभग, सौगंधिक, पुंडरीक, महा पुंडरीक, शतपत्र, सहस्र पत्र, पुष्प व केसरा सहित है वे कमल भ्रमर से भोगवे हुवे हैं स्वच्छ निर्मल जल से परिपूर्ण है, अनेक प्रकार के मत्स्य कच्छ उन में परिभ्र

गीयरतिगंधव्व हरिसियमणाणं गज्ज पज्ज कत्थ गेय पेय दंय पायवद्ध उक्खित्तय पवत्तय मदाय रोचियवेसाण सत्तसरसमण्णागाय अट्ठरससुसंपउत्त छद्दोसविप्पमुक्क एक्कारस गुणालंकार अट्ठगुणोववेय गुंजत वंस कुहरोवगुढ रत्ततिट्ठाण करणसुद्ध मधुर सम सललिय सकुहरवंसतती तलताल लयगह सुसंपउत्त मणोहर रमउयरि-भिय पयसंचार दरभिसमइ अणतिरिय चारुरूव दिव्व नट्ट सज्जगेय गीयाण भवेया रूवेसिया ? हंतासिया ॥ ४१ ॥ तस्सण वणखंडस्स तत्थ तत्थ देसे २ तहिं २ बहवे

आठ गुण सहित गुणावमान, वांसली समान पूर्वोक्त स्वरूपवाला उर:शुद्ध, कंठ शुद्ध व शिर शुद्ध ये तीन प्रकार से शुद्ध मधुर स्वर से ललित, मनोहर मृदु स्वर सहित, मनोहर पद के गीत सहित, मनोहर सुनने को आनंद होवे वैसा उत्तम मनोहर रूप, बाला देवता संबंधी नाटक व सुनने योग्य गायन करे ऐसा उस तृण का स्वर है क्या ? हां गौतम ! ऐसा उस तृण का शब्द है ॥ ४१ ॥ उस वनखण्ड में

---

१ पूर्ण गुन-स्वर कला से पूर्ण गाना, २ रक्तगुन-गायन करने योग्य राग से अनुरक्तपने गाना, ३ अलंकृत गुन अन्योन्य स्वर विशेष से अलंकार जैसे सामता हुवा गाना, ४ व्यक्त गुन-अक्षर स्वर स्फुट कर के प्रगटपने गाना, ५ अवि-घुष्ट गुन-विपरीत स्वर से बकवाद रहित गाना, ६ मधुर गुन-जैसे वसंतमास में कोकिला का मधुर स्वर होवे वैसा गाना, ७ समगुन-ताल वंश स्वरादिक को अनुकूल गाना, ८ सुललित गुन-स्वरघोलणा से ललित कला सहित गाना

निम्मा, रिट्ठामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवन्नरुप्पमया फलगा, वइरामयासंधी लोहितक्खमइउ सूईंआ नाणामणिमया अवलंबणा अवलंबणबाहाओ, तेसिणं तिसो वाणं पडिरूवगाणं पुरतो पत्तेयं२ तोरणा पण्णत्ता, तेणं तोरणा णाणामणिमया णाणा मणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठ सन्निविट्ठ विविहमुत्तंतरोवइत्ता, विविहतारारूवोवइत्ता, ईहा- मिय उसभ तुरग नर मगर विहग वालग किण्णर रुरुसभ चमर कुंजर वणलय पउमलय भत्तिचित्ता खंभुग्गय वइरवेदियाइ, परिगताभिरामा, विज्जाहर जमल जूयलजंत जुत्ताविव, अच्चिसहस्स मालणीया रूवसहस्सकलिया भिसमीणा भिब्भिसमीणा चक्खुल्लोयणलेसा

विविध प्रकार के अवलम्बनबाहा हैं, उन त्रिसोपान के आगे प्रत्येक पंक्तियों पर तोरण हैं वे विचित्र प्रकार के मणि रत्नों के हैं, मणिमय स्तंभ पर रहे हुवे हैं, विविध प्रकार के मुक्त फल से वेष्टित हैं, विविध प्रकार के ताराओं सहित हैं, ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, पक्षी, मगर, मत्स्य, सर्प, किन्नर रूरू, शरभ, चमर, कुंजर, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक मनोहर चित्रों से चित्रे हुवे हैं स्तंभ पर वज्रमय वेदिका है, जिस से मनोहर तोरण दीखाता है स्तंभ में सूर्य के तेज से अधिक तेजस्वी विद्याधर के युगल हैं सहस्र कीरणवाला सूर्य समान है उन से देदीप्यमान है, विशेष तेज से देदीप्यमान

माण कमलाओ अच्छ विमल सलिल पुण्णाओ, पडिहत्थ भमत मच्छ कच्छभ अणेग सउणगण मिहुण परिवरिताओ पत्तेय२ पउमवर वेदिया परिक्खित्ताओ पत्तेय२ वणसंड परिक्खित्ताओ, अप्पेगतियाओ आसवोदाओ अप्पेगतियाओ वरुणोदाओ, अप्पगतियाओ खीरोदाओ, अप्पगतीआ घओदाओ अप्पगइयाओ इक्खुदाओ, अप्पेगतियाओ पगयातीआ दगरसेण पण्णत्ताओ, पासादियाओ ॥४२॥ तासिण खुड्डा खुड्डियाण वावीण जाव बिलपंतीयाण तत्थ २ देसे २ तहिं २ जाव तिसोवाण पडिरूवगा पण्णत्ता ॥ तेसिण तिसोपाण पडिरूवगाण अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते, तंजहा-वयरामया

मण करते हैं, अनेक पक्षीयों के समुह वहां रहते हैं प्रत्येक वावडी को एक २ पद्मवर वेदिका है, और प्रत्येक को एक २ वनखण्ड है किसनीक वावडियों का पानी चन्द्रहासादिक मदिरा जैसा है, कितनीक का वारुणी समुद्र जैसा है कितनीक का क्षीर समुद्र जैसा है, कितनीक का घृत जैसा है, कितनीक का पानी इक्षु रस जैसा है, कितनीक का पानी अमृत जैसा है, ये प्रासादिक दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ ४२ ॥ उन छोटी वावडीयों यावत् बिलपंक्तियों में स्थान २ पर त्रिसोपान [छोटे २ पंक्ति] है इन का इस तरह वर्णन कहा है उन पंक्ति की भूमि वज्ररत्नमय है, आरिष्ट रत्न का मूल है, वैडूर्य रत्न के स्तम्भ है, सोने व चांदी के पटिये हैं, वज्ररत्न की संधी है, लोहिताक्ष रत्न के खीले हैं,

निप्पका निक्ककडछाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४६ ॥ तेसिणं खुड्डियाणं वावीणं जाव बिलपंतियाणं तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे उप्पाय पव्वयगा, णियति पव्वयगा, जगति पव्वयगा, दारुपव्वयगा, दगमंडवगा, दगमंचगा, दगमालगा, दगपासगा, उसमरदगा, खडहरदगा आंदोलगा पक्खंदोलगा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला निप्पंका णिक्ककडछाया सप्पभा सस्सिरिया सज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४७ ॥ तेसुणं उप्पायपव्वतेसु जाव पक्खंदोलगेसु बहवे

स्वच्छ सुकुमाल, घटारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरावरण कांतिवाले, प्रभा, व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ ४६ ॥ उन वावडी यावत् बिलपंक्तियों में उस देश विभाग में उत्पात पर्वत हैं वहांपर व्यंतर देव व देवियों वैक्रय रूप बनाकर क्रीडा करते हैं वैसे ही नियति पर्वत, जगति पर्वत, दारुक पर्वत स्फटिक रत्न के मंडप, स्फटिक के मांचे दगमाल, दग प्रासाद हैं वे ऊंचे हैं परंतु लम्बाई व चौडाई में छोटे हैं, वहां मनुष्यों का मन आंदोलन होजावे वैसे होने से आंदोलक हैं पक्षियों वहां झूलते हैं इस से वह पक्षी का आंदोलक हैं वे सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥४७॥ वहां उत्पात पर्वतपर यावत् पक्षांदोलक पर बहुत हंस के आकार वाले आसन, गरुडासन,

सुहफासा समिरियरूवा पासादिया॥४३॥तेसिण तोरणाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलगा पन्नत्ता सोत्थिय सिरिवच्छ नंदियावत्त वद्धमाण भद्दासण कलस मच्छ दप्पण सव्वरतनामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ ४४ ॥ तेसिण तोरणाण उप्पिं बहवे कण्हचामरज्झया नीलचामरज्झया जाव सुक्किलचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टा वइरदंडा जालयामलगंधिया सुरूवा पासादिया ॥ ४५ ॥ तेसिण तोरणाण उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला, उप्पलहत्थगा जाव सयसहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला

है, चक्षु को देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्शवाला सश्रीक व चित्तको प्रसन्नकारी है ॥४३॥ उन तोरणों पर आठ २ मंगलिक कहे हैं, तद्यथा १ स्वस्तिक, २ श्रीवत्स, ३ नंदावर्त ४ वर्धमान ५ भद्रासन ६ कलश ७ मत्स्य युग्म व ८ दर्पण ये सब रत्नमय स्वच्छ, सुकुमाल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४४ ॥ उन तोरण पर बहुत प्रकार की कृष्ण चमर की ध्वजा, नील चमर की ध्वजा, लाल चमर की ध्वजा, पीले चमर की ध्वजा, श्वेत चमर की ध्वजा हैं वे स्वच्छ, सुकुमाल, चांदी का पट्ट वज्र रत्न का दंड वाली हैं कमल समान गंध वाली सुरूप व प्रासादिक हैं ॥ ४५ ॥ उन तोरणोंपर छत्रपर छत्र ध्वजापर ध्वजा, घंटा युगल, चमर, युगल, अनेक, उत्पल कमल, यावत् लक्ष पत्र कमल रहे हैं वे सब रत्नमय

ईया दरिसणिज्ञा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव आयघरएसु बहूइ हसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइ सव्वरयणामयाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ दसे २ तहिं २ बहवे जाइमडवगा जूहिया-मडवगा मल्लिया मडवगा णोमालियामडवगा वासातिमडवगा दहिवासुया मडवगा सूरिल्लि मडवगा, तबोली मडवगा, मुद्दिया मडवगा, णागलया मडवगा, अतिमुत्त मडवगा, अफोया मडवगा, अमेत्ता मडवगा, मालुया मडवगा, सामलया मडवगा, निच्च कुसमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमडवएस जाव सामलया

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइके मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लिके मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अमित्ता वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हंस के

हंसासणाइ गरुलासणाइ कोंचासणाइ उण्णयासणाइ पणयासणाइ दीहासणाइ भद्दासणाइ पक्खासणाइ मयूरासणाइ, उसभासणाइ सीहासणाइ पउमासणाइ दिसासोवत्थियासणाइ, सव्वरयणामयाइ, अच्छाइ सण्हाइ लण्हाइ घट्ठाइ मट्ठाइ णीरयाइ निम्मलाइ निप्पंकयाइ, जाव सस्सिरीयाइ, सउज्जोयाइ, पासादियाइ दरिसणिज्जाइ अभिरूवाइ, पडिरूवाइ ॥ ४८ ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ देसे तहिं २ बहवे आलिघरा मालियाघरा कयलिघरगा, लयघरगा, अच्छणघरगा, पेच्छणघरगा, मज्जणघरगा, पसाहणघरगा, गब्भघरगा, मोहणघरगा सालयघरगा जालय घरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गंधव्वघरगा आयसघरगा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला, णिप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा-

क्रौंचासन, उन्नतासन, नम्रासन, दीर्घासन, भद्रासन, पक्षासन, मयूरासन, वृषभासन, सिंहासन, पद्मासन, दिशास्वस्तिकासन बिछे हुवे हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ, कोमल, घसारे, मठारे, रज रहित निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांति वाले, प्रभा, श्री व उद्योत सहित प्रसन्नकारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं॥४८॥ उस वनखण्ड में स्थान २ पर बहुत आलिनामक वनस्पतिगृह, मालिगृह, कदलीगृह, लतागृह, आस्थानगृह, प्रेक्षणगृह, मज्जनगृह, प्रसाधनगृह, गर्भगृह मोहनगृह, पट्टशालगृह, जालगृह, कुसुमगृह, चित्रगृह,

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव आयघरएसु बहूइ हंसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइ सव्वरयणामयाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सणं वणसंडस्स तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे जाइमंडवगा जूहिया-मंडवगा मल्लिया मंडवगा णोमालियामंडवगा वासंतिमंडवगा दहिवासुया मंडवगा सूरिल्लि मंडवगा, तंबोली मंडवगा, मुद्दिया मंडवगा, णागलया मंडवगा, अतिमुत्त मंडवगा, अफोया मंडवगा, अमेचा मंडवगा, मालुया मंडवगा, सामलया मंडवगा, निच्च कुसमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमंडवएसु जाव सामलया

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइ के मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासंति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लि के मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अमिचा वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हंस के

हंसासणाइं गरुलासणाइं कोंचासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं भद्दासणाइं पक्खासणाइं मयूरासणाइं, उसभासणाइं सीहासणाइं पउमासणाइं दिसासोवत्थियासणाइं, सव्वरयणामयाइं, अच्छाइं सण्हाइं लण्हाइं घट्ठाइं मट्ठाइं णीरयाइं निम्मलाइं निप्पंकयाइं, जाव ससिरीयाइं, सउज्जोयाइं पासादियाइं दरिसणिज्जाइं अभिरूवाइं, पडिरूवाइं ॥ ४८ ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ देसे तहिं २ बहवे आलिघरा मालियाघरा कयलिघरगा, लयघरगा, अच्छणघरगा, पेच्छणघरगा, मज्जणघरगा, पसाहणघरगा, गब्भघरगा, मोहणघरगा सालयघरगा जालय घरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गंधव्वघरगा आयंसघरगा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला, णिप्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा-

क्रौंचासन, उन्नतासन, नम्रासन, दीर्घासन, भद्रासन, पक्षासन, मयूरासन, वृषभासन, सिंहासन, पद्मासन, दिशास्वस्तिकासन बिछे हुवे हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ, कोमल, घटारे, मटारे, रज रहित निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांति वाले, प्रभा, श्रीय उद्योत सहित प्रसन्नकारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥४८॥ उस वनखण्ड में स्थान २ पर बहुत आलिनामक वनस्पतिगृह, मालिगृह, कदलीगृह, लतागृह, आस्थानगृह, प्रेक्षणगृह, मज्जनगृह, प्रसाधनगृह, गर्भगृह, मोहनगृह, पटशालगृह, जाल गृह, कुसुमगृह, चित्रगृह,

दीया दरिसणिज्ञा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव मायघरएसु बहूइ हंसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइ सव्वरयणामयाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ दसे २ तहिं २ बहवे जाइमंडवगा जूहिया-मंडवगा मल्लिया मंडवगा णोमालियामंडवगा वासंतिमंडवगा दहिवासुया मंडवगा सूरिल्लि मंडवगा, तंबोली मंडवगा, मुद्दिया मंडवगा, णागलया मंडवगा, अतिमुत्त मंडवगा, अफाया मंडवगा, अमेचा मंडवगा, मालुया मंडवगा, सामलया मंडवगा, निच्च कुसमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमंडवएसु जाव सामलया

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइ के मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासंति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लि के मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अमित्ता वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हस के

मद्धेयप्पु बहवे पुढवी सिलापट्टगा पण्णत्ता तंजहा-हंसासणा संठिता कोंचासणसंठिता गरुडासणा संठिता उण्णयासण संठिता पणगासण संठिता, पीतासण संठिया, दीहासण संठिया, भद्दासण संठिता, पक्खासण संठिया, मगरासणसंठिया, सीहासणसंठिया, पउमासणसंठिया दिसासोवत्थियासणसंठिया पण्णत्ता ॥ तत्थ बहवे वरसयणासणविसिट्ठ संठाण संठिया पण्णत्ता समणाउसो ? आईणगरुय बूर णवणीत तूलफास मउया सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ५२ ॥ तत्थणं बहवे

संस्थान वाले, गरुडासन के संस्थान वाले, उन्नतासन के संस्थान वाले, नम्रासन के संस्थानवाले, दीर्घासन संस्थान वाले दीर्घासन के संस्थान वाले, भद्रासन के संस्थान वाले, पक्षासन के संस्थान वाले, मकरासन वाले, वृषभासन के संस्थान वाले, सिंहासन के संस्थान वाले, पद्मासन के संस्थानवाले व दिशा स्वस्तिकासन के संस्थानवाले हैं अहो आयुष्मन् श्रमणों ! वे सब वरासन विशिष्ट संस्थान वाले को कहे हैं उन का स्पर्श मृगचर्म, रूई, वनस्पति, मक्खन, व अर्कतूल जैसा सुकुमाल है वे सब रत्नमय बने हैं, यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५२ ॥ वहां बहुत वाणव्यंतर

वाणमंतरा देवा देवीओय आसयति सयातय चिट्ठति निसीदति तुयट्टति रमाति ललति कीलयाति मोहयाति पुरापोराण सुचिन्नाण सुपरक्कताण सुभाण कताण कल्लाण कम्माण फलवित्तिविसेस पच्चणुब्भवमाणा विहराति ॥ ५२ ॥ तीसेण जगतीये उप्पि अतो पउमवरवेदियाण एत्थण एगे महं वणसंडे पण्णत्ते, देसूणाइं दो जोयणाइं विक्खंभेण वेइयासमएण परिक्खेवेण किण्हे किण्होभास वणसंडवन्नओ तणसद्दविहूणो णेयव्वो तत्थण बहवे वाणमंतरा देवा देवीओय आसयाति सयति चिट्ठति निसीयति तुयट्टति रमाति ललति कीडति पुरापोराणाण सुचिन्नाण सुपरिक्कताण सुभाण कताण कम्माण कल्लाण फलवित्तिविसेस पच्चणुब्भवमाणा विहराति ॥ ५४ ॥ जंबुद्दी-

देव व देवियों आते हैं बैठते हैं, सोते हैं खेलते हैं, क्रीडा करते हैं, मोहित होते हैं और पूर्व भव में अच्छी तरह आचरण किये हुए कल्याणकारी कर्मों का फल भोगते हुवे विचरते हैं ॥ ५७ ॥ उस जगती के ऊपर व पद्मवर वेदिका की अंदर एक बडा वनखण्ड है यह कुच्छ कम दो योजन का चौडा है और वेदिका समान परिधिवाला है यह कृष्ण वर्णवाला व कृष्णाभास वगैरह वनखण्ड का वर्णन तृण शब्द रहित सब कहना यहां बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों बैठते हैं सोते हैं, खेलते हैं व क्रीडा करते हैं पूर्व भव में आचरण किये हुए कल्याणकारी शुभ कर्मों का फल भोगते हुवे विचरते हैं ॥ ५८ ॥ अथ

घस्सण भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा– विजये वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ ५५ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स विजयेणाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण पणयालीसं जोयणसहस्साइं आबाहाए जंबुद्दीवे २ पुरत्थिमपेरंते लवणसमुद्द पुरिच्छिमद्धस्स पच्चत्थिमेण सीताए महाणदीए उप्पिं एत्थण जंबुद्दीवस्स २ विजयेनाम दारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण, तावतियं चेव पवेसेण

जम्बूद्वीप के द्वार का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप को कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप को विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ऐसे चार द्वार कहे हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अवगाह कर आवे वहां जम्बूद्वीप के पूर्व के अंत में लवण समुद्र से पूर्व दिशा के पश्चिम विभाग में सीता महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहा है वह आठ योजन का ऊंचा व चार योजन का चौडा है चार योजन का प्रवेश है श्वेत वर्ण का है प्रधान कनकमय शिखर है वहां ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य मगर, पक्षी, सर्प, किन्नर नामक व्यंतरदेव,

सेता वरकणगथूभियाए ईहामिय उसभ तुरग नर मगर विहग वालग किंनर रुरु सरभ चमर कुंजर वणलयपउमलयभत्तिचित्ते खंभुग्गतवइरवेदियाए परिगताभिरामे विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तेइव अच्चिसहस्स मालिणीए रूवगसहस्स कलिते भिसमीणे भिब्भिसमीणे चक्खुलोयणलेसे सुहफासे सस्सिरियरूवे वण्णओ दारस्स तंजहा—वयरामयाणिम्मा, रिट्ठामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खंभा जायरूवोवचिता पाईर पंचवण्ण मणिरयण कोट्टिमतले हंसगब्भमये एलुए, गोमेज्जमते इंदखीले, लोहित

रुरु, सरभ, चवरी गाय, अष्टापद वनलता व पद्मलता, इत्यादिक चित्रों से चित्रित हैं स्थंभपर उत्तम वेदिका है यह मनोहर है वे स्थंभ विद्याधर के युगल के आकार सहित हैं सूर्य के हजारों किरणों के तेज से उस का तेज अधिक है हजारों प्रकार के रूप सहित हैं, विशेष तेजसे देदीप्यमान चक्षु को देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्श है सश्रीक रूप है वज्ररत्न की उस की नीव है अरिष्टरत्नमय प्रतिस्थान है वैडूर्य रत्नमय स्थंभ है सुवर्ण वृद्धि उत्तम प्रकार के पांच वर्ण वाले मणिरत्नों से भूमितल बना है हंसगर्भ रत्नमय देहली है गोमेद्य रत्नमय मनोहर इन्द्र कील-आगलका भाग है लोहिताक्ष रत्नमय बारसाख है ज्योतिष रत्नमय द्वार के उपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय कमाड है वज्ररत्नमय संधी है लोहिताक्ष

घस्सण भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तजहा— विजये वेजयते जयते अपराजिए ॥ ५५ ॥ कहिण भंते ! जबुद्दीवस्स दीवस्स विजयेणाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबूद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण पणयालीस जोयणसहस्साइ आबाहाए जम्बूद्दीवे २ पुरत्थिमापरते लवणसमुद्द पुरिच्छिमद्धस्स पच्चत्थिमेण सीताए महाणदीया उप्पि एत्थण जबुदीवस्स २ विजयेनाम दारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण, तावतिय चेव पवेसेण

जम्बूद्वीप के द्वार का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप को कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप को विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ऐसे चार द्वार कहे हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां जम्बूद्वीप के पूर्व के अंत में लवण समुद्र से पूर्व दिशा के पश्चिम विभाग में सीता महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहा है वह आठ योजन का ऊंचा व चार योजन का चौड़ा है चार योजन का प्रवेश है, श्वेत वर्ण का है प्रधान कनकमय शिखर है वहां ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य मगर, पक्षी, सर्प, किन्नर नामक व्यन्तरदेव,

ल्लुयाओ, रययामयी पट्टिका, जातरूवमयी उद्धाहणी, वइरामयी उवरि पुछणी सव्वसेत रययामयेच्छायणे, अकामए कणगकूड तवणिज्जथूभियाए, से ते सखतल विमल णिम्मल दधिपण गोखीर फणरययणिकरप्पगासे तिलगरयणद्धचंदचित्ते णाणामणिमयदामाल-किए, अंतो बहिंवसण्हे, तवणिज्ज रुइल वालुया पत्थडे, सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासादीये ॥५६॥ विजयस्सण दारस्स उभतोपासिं दुहतो णिसिहताए दोदो चंदणकलस परिवाडीओ पण्णत्ताओ, तण चंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा, चंदण

शाच्छादन है उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है, अकरत्नमय पक्षवाहा है, सुवर्ण का शिखर है, उस पर सुवर्णमय भूमिका है, श्वेत दक्षिणावर्त शंख का ऊपर भाग, निर्मल दधि का पिंड, गाय का दूध, समुद्र फेन, चांदी का पुंज समान उस का श्वेत प्रकाश है, तिलक रत्न व अर्ध चंद्र सहित अनेक प्रकार के चित्र हैं, विविध प्रकार के रत्न की माला से द्वार का मुख शोभित है, आभ्यंतर व बाह्य सुकोमल है, उस द्वार में सुवर्णमय वालु है शुभ स्पर्श है सश्रीक रूपवाला है प्रसन्नकारी, देखने योग्य यावत् प्रति रूप है ॥ ५६ ॥ उस विजय द्वार की दोनों बाजु दो २ चबुतरे हैं उस पर चंदन से लेपन कराये हुवे दो २ कलश हैं वे कलश उत्तम कमल पर स्थापन किये हुवे हैं, सुगंधी उत्तम पानी से परिपूर्ण भरे

सव्वमईउ दारविंडाओ जोतिरसामता उंबरा वेरु लियामया कवाडा, वइरामया लाधीसधी लोहितक्खमइ सूयीओ मानामाणिमया समुग्गया वइरामइ अग्गला अग्गलपासाया वइ- रमती आवत्तणपेढिया अकुतर पासके निरतरित घणकवाडे भित्तीसुचव भित्तीगुलिया छप्प- ण्णा तिण्णि होंति गोमाणसीततिया णाणामणिरयण बालरूवग लीलट्ठिय सालभंजियाए, वइरामया कूडा रययामए उस्सेह सव्वतवणिज्जमये उल्लोये णाणामणि रयणजाल पजरमणि वंसग लोहितक्ख पडिवंसरयत भोम्मे अंकामया पक्खवाहाउ, जोतिरसामयावंसा वंसकवे

रत्नमय खीले हैं विविध प्रकार के मणिमय समुद्गक हैं वज्ररत्नमय अर्गला है अर्गला का स्थानभी वज्र रत्नमय है वज्ररत्नमय आवर्तन है अंकरूपमय रत्न के दो पासे हैं अंतर रहित निबिड अखंड कमाड है, १६८ सोने के चबुतरे हैं, उन पर १६८ सिके हैं विविध प्रकार के मणिमय बालरूप लीला सहित पुतलियों हैं, वज्ररत्नमय शिखर है, चांदीमय ऊपर की पीठिका है सब सुवर्णमय है विविध प्रकार के मणिमय रत्न की जाल का गवाक्ष है, मणिमय ऊपर का वंश है, लोहिताक्षरत्नमय प्रतिवंश हैं, चांदीमय भूमिका है अंकरत्नमय पक्ष बाहु है और अन्य भी स्तंभ हैं, ज्योतिष रत्नमय वंश है, ज्योतिष रत्नमय कवलु है, चांदी की पट्टी है, सुवर्णमय पतली लकडियों हैं, वज्ररत्नमय तृण ढपान,

गघारितमल्लदामकलावा जाव सुक्किलसुत्तवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा तेण दामा तव णिजलबूसगा सुवण्णपतरगमंडिता णाणामणिरयण विविहहार जाव सिरीये अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठति, तेसिण नागदंतकाण उवर अण्णाओ दो दोनागदंत परिवाडीओ पण्णत्ताओ एतोमेण नागदंतगाण मुत्ताजालंत मूसिगा तहेव जाव समणाउसो तेसुण नागदंतएसु बहवे रयआमया सिक्कया पण्णत्ता तेसुण रयणामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलिया मइओ धूवघडीओ पण्णत्ताओ ताओण धूवघडीओ कालागुरु पवरकुंदुरुक्क तुरुक्कधूव मघमघतगंधद्धताभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ

उन नागदंत में बहुत कृष्ण वर्णवाले यावत् शुक्ल वर्णवाले सूत्र से बंधी हुई लम्बी पुष्पकी मालाओं के समूह लगाये हुवे हैं, उन मालाओं को सुवर्ण के लुम्बक हैं, वे सुवर्णकी पत्री से मंडित है, वे विविध प्रकार के मणि रत्नमय व विविध प्रकार के हार से यावत् शोभा में अतीव २ शोभते हुवे रहते हैं ॥ ५९ ॥ उन नागदंत पर दूसरे दो २ नागदंत की परिपाटी कही है वे मोतियों की माला से सुशोभित है वगैरह पूर्ववत् उस का वर्णन जानना उन नागदंत को बहुत रत्नमय सिके हैं, उन सिके में आति शोभनिक वैडूर्य रत्नमय धूप के कुरछे हैं वे कृष्णागुर कुंदरुक्क वगैरह उत्तम धूप से मघमघायमान व उत्कृष्ट

कयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा रत्तुप्पलपिहाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा, महया महिंद कुंभसमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५७ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहतो णिसीहियाते सोला णागदंत परिवाडीओ, तेण णागदंतगा मुत्ताजालंतरूसिया हेमजालगवक्ख जालखिखि णिजाल घंटाजाल परिक्खि-त्ता, अब्भुग्गता अभिणिसिट्ठा तिरियसु सपरिग्गहिता अहेपण्णगद्धरूवा पण्णगसंठाण संठिया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, महता २ गजदंत समाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५८ ॥ तेसुण णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तवट्टव

हुवे हैं, कलश पर बावने चंदन के छींटे डाले हुवे हैं, उस के कंठ में सूत के धागे बंधे हुवे हैं, उन को कमल के ढक्कन है, ये सब रत्नमय स्वच्छ सुकोमल यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! ये बडे महेन्द्र कुंभ समान है ॥ ५७ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं उन पर दो २ गजदंत समान खीले हैं. उन में बहुत मोतियों की माला, लम्बायमान सुवर्ण की माला, गवाक्ष के आकार से रत्न की माला व घुघरमाल प्रमुख लगाइ हैं, ये गजदंत किंचिन्मात्र ऊंचे हैं सन्मुख नीकले हुवे हैं, तीर्च्छे भिंत प्रदेश में अच्छी तरह रहे हुवे हैं, नीचे अर्ध सर्प के आकारवाले हैं, वे सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वैसे नागदंत हाथी के दांत समान कहे हैं ॥ ५८ ॥

हत्थग्गहितग्गसालाओ, वेल्लितग्गासिरयाओ पसत्थलक्खणसंवेल्लितग्गासिरया, ईसिं अद्धच्छिकडक्खचिट्ठितेहिं, लूसेमाणीतोइव चक्खूलोयणलेस्साहिं अण्णमण्ण खिज्ज-माणीओइव पुढवि परिणामाओ सासय भावमुवगताओ चंदाणाओ चंदविला-सिणीओ चंदद्ध समनिडालाओ चंदाहियसोमदंसणीओ उक्काइवउज्जोएमाणीओ विज्जुघणमरीचि सूरदिप्पनते अहियरसंनिकासाओ सिंगारागार चारुवेसाओ पासाइया तेयसा अतीव २ उवसोभेमाणीओ २ चिट्ठंति ॥ ६१ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहतो निसीहिताए दो दो जालकडगा पण्णत्ता, तेण

क्रमप युक्त वेणि वाले केश हैं, अशोक वृक्ष को किंचित् मीलता हुवा शरीर है बाये हाथ से अशोक वृक्ष की शाखा ग्रहण की है, किंचित् कटाक्ष से देव मनुष्य के मन हरण करती हुई व देखने से हास्य करती होवे वैसी पुतलियों पृथ्वीमय शाश्वत भाव में प्राप्त है अर्थात् शाश्वती हैं उन का मुख चंद्र समान है चंद्र समान विलास है, चंद्र समान ललाट है, चंद्र से भी अधिक सौम्य दर्शन वाली है, उल्कापात जैसे उद्योत करने वाली है, मेघविद्युत से देदीप्यमान है, सूर्य से भी देदीप्यमान प्रकाश वाली है सोलह शृंगार व आकार से मनोहर वेष वाली है देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है व तेज से

उरालेण मणुण्णाण घाण मण णिव्वुइकरेण गंधेण, तेपएसु सव्वओ समता आपूरेमाणीओ २ अतीव २ सिरीए जाव चिट्ठंति ॥ ६० ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पासिं दुहतो णिसीहियाए, दो दो सालभंजिया परिवाडीओ पण्णत्ताओ, ताओण सालभंजियाओ लीलट्ठियाओ सुपतिट्ठियाओ सुअलंकियाओ णाणाराग वसणाओ णाणामल्लपिणिद्धाओ मुट्ठीगेज्झसु मज्झियाओ आमेलग जमल जुयल वट्टिय, अब्भुणयपीणरतितसंठियपओहराओ रत्तावंकाओ असियकेसीओ मिदुविसय पसत्थलक्खण संवेल्लितग्गसिरयाओ ईसिं असोगवर पायव समुट्ठिताओ वाम-

गंध से मनोहर हैं, श्रेष्ठ सुगंध वाले हैं गंधवर्ती भूत हैं उदार मनोज्ञ घाण व मन को आनंद करने वाली गंध से सब दिशी में चारों तरफ पूर्ती हुइ यावत् अत्यंत शोभती है ॥ ६० ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं उनपर दो पूतलियों की पाक्ती है ये पूतलियों अपनी लीला में रही हुई है अच्छी तरह स्थापन की हुई है अच्छी तरह अलंकृत बनाइ हैं विविध प्रकार के वस्त्र पहिनाये हुए है, विविध प्रकार की मालाओं कण्ठ में पहिनाइ है, मुष्टिमें ग्रहण करे प्रदेश पतला हुवा है, शिखर समान गोल तथा दृढ पीन युक्त पयोधर हैं, नेत्र का अर्ध भाग रक्त है, श्याम वर्ण के काले केश है, कोमल निर्मल अच्छे

साओ सुस्सराओ सुस्सरणिघोसाओ ते पदेसे उरालेण मणुण्णेण कण्णमणनिव्वुइकरेण सद्देण जाव चिट्ठंति ॥६३॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहओ निसीहियाए दो दो वणमाला परिवाडीओ पण्णत्ताओ, ताओण वणमालाओ नाणादुमलय किसलय पल्लव समाउलाओ छप्पय परिभुज्जमाण कमलसोभत सस्सिरीयाओ पासाइयाओ ४ ॥ तिपदेसे उराले जाव गधेण आपूरेमाणीओ २ जाव चिट्ठंति ॥ ६४ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पासिं दुहतो निसीहिताए दो दो पगठगा पण्णत्ता, तेण पगठगा चत्तारि जोयणाइ आयामविक्खभेण दो जोयणाइ बाहल्लेण सव्ववइरामता अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ६५ ॥ तेसिण एय ओगाण उवरिं पत्तेय २

विमाग उदार मनोज्ञ व कर्ण को सुख उत्पन्न करे वैसा शब्द से यावत् रहा हुवा है ॥ ६३ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे पर दो २ वनमाला की परिपाटी कही है वे वन लता विविध प्रकार के वृक्षलता व अकूरों सहित हैं उनको भ्रमर भोगते है जिस से मनोहर व देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है वहां का प्रदेश भी उपर यावत् गंध से पूरता हुवा यावत् रहता है ॥ ६४ ॥ विजयद्वार के दोनों बाजु दो चबुतरे पर दो २ बारकने वाले चबुतरे हैं वे चार योजन के लम्बे चौडे व दो योजन के जाडे हैं सब वज्ररत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥ ६५ ॥ उन प्रत्येक बारकने

जाल कडगा सव्वरयणामया अच्छासण्हा लण्हा घट्ठा नीरया निम्मल णिक्कपा निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासदीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ६२ ॥ विजयस्सण दारस्स उभतोपासिं दुहओ निसीहियाए दोदो घटा परिवाडीओ पण्णत्ताओ, तासिण घंटाण अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा— जंबूणतामती घंटाओ वइरामतीउलालाओ, णाणामणिमया घंटा पासगा तवणि ज्जमतीओ संकलाओ रययामइउरज्जूओ ताउण घंटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ हंसस्सराओ, कोंचस्सराओ, णंदिस्सराओ, णंदिघोसाओ, सीहस्सराओ सीहघोसाओ मजुस्सराओ मजुघो

वस्तुव २ सुशोभित बनी हुई रहती हैं ॥ ६१ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं जिनपर दो जालि कटक-कडा के समुह हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ६२ ॥ विजयद्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं उनपर दो घंटा हैं इन का इस तरह वर्णन है जम्बूनद रत्न की घंटा है वज्र रत्नमय लोलक है, विविध प्रकार के मणियों के पासे करे हैं सुवर्ण की सांकल है, चांदी की रस्सी है, इस घंटा का ओघस्वर है, मेघ समान स्वर है हंस समान स्वर है, क्रौंच समान स्वर है, नंदी जैसा घोष है, सिंह जैसा घोष है, सिंहस्वर है, सिंह घोष है, सुस्वर है. सुघोष है. यहां का

पासतीया ॥ ६६ ॥ तेसिण पासायवडेंसगाण पत्तेय २ अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते सेजहा नामए आलिंगपुक्खरेतिवा जाव मणीहिं उवसोभिए मणीण गधोवण्णो फासोय णेयव्वो ॥ तेसिण पासायवडेंसगाण उल्लोया पउमलया जाव सामलया भत्तिचित्ता सव्वतवणिज्जमता अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ६७ ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ताओण मणिपेढियाओ जोयण आयाम विक्खभेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्व रयणामईओ जाव पडिरूवाओ॥ ६८ ॥ तासिण मणिपेढियाण उवरि पत्तेय २

मनोहर रूप वाले, दर्शनीय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ६६ ॥ उन प्रत्येक प्रासादावतंसकमें बहुत सम रमणीय भूमि भाग है यथा दृष्टांत आलिंग पुष्करनामक वादित्र के तल समान यावत् मणि से सुशोभित भूमि भाग है इन का वर्ण गंध स्पर्श पूर्ववत् जानना वहां प्रासादावतंसक में पद्मलता यावत् श्यामलता नामक वनस्पति के चित्रों है वे सब सुवर्णमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ६७ ॥ उस रमणीय भूमि भाग के मध्य बीच में मणिपीठिका रही हुई है वे एक योजन की लम्बी चौडी आधा योजन की जाडी है वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है, ॥ ६८ ॥ प्रत्येक मणि पीठिका उपर एक २ सिंहासन हैं इस का वर्णन

पासाय वर्डिसगा पण्णत्ता, तेण पासायवडेंसगा चत्तारि जोयणाइं उड्ढ उच्चत्तेण, दो जोयणाइं आयामविक्खंभेण अब्भुग्गयमूसित पहसिताविव विविहमणिरयण भत्तिचित्ता, वाउद्धयविजयवेजयंती पडाग छत्ताइछत्तकलिता तुंगा गगणतल मभिलंघमाणसिहरा, जालंतर रयणपंजर मिलियव्व मणि कणय थूभियग्गा वियसिय सयवत्तपोंडरीय तिलकरयणद्ध चंदचित्ता णाणामणिमयदामालंकिया अतोय बाहिंच सण्हा तवणिज्जरुइल वालुया पत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा

पाल चबुतरे पर एक २ प्रासादावतंसक है, वे चार योजन के ऊंचे हैं, दो योजन के लम्बे चौडे हैं सब दिशा में पसरी हुई कांति युक्त है, विविध प्रकार के चन्द्रकांतादि मणि व कर्केतनादि रत्न की रचना से आश्चर्यकारी हैं, वायु से कंपित विजय वैजयंत नामक ध्वजा है, व छत्र उसपर छत्र इस से सोहित हैं, आकाश उल्लंघन करते होवे इतने ऊंचे उस के शिखर हैं, मीतों की जालियों में शोभा निमित्त रत्न स्थापन किये हैं पंजर में से बाहिर निकाले जैसा अर्थात् जैसे किसी ढकी हुई वस्तु को खोलने से प्रकाश वाली दीखती है वैसे प्रकाशमय है मणि कनकमय शिखर है विकासित शतपत्र व पुंडरीक तिलक रत्न व अर्धचंद्र वगैरह से वे आश्चर्यकारी हैं विविध प्रकार के मणिमय माला से अलंकृत हैं, अदर बाहिर का प्रासाद का द्वार सुकोमल है, इस में लाल सुवर्ण की वालु बिछाई हुई है, सुखकारी स्पर्श सश्रीक

पासाईया ॥ ६८ ॥ तेसिणं सीहासणाणं उप्पिं पत्तेयं २ विजयदूसे पण्णत्ते, तेणं विजयदूसा सेया संख कुंद दगरय अमत महियफेण पुंजसण्णिकासा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ६९ ॥ तेसिणं विजयदूसाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ वइरामया अंकुसा पण्णत्ता, तेसुणं वइरामएसु अंकुसेसु पत्तेयं पत्तेयं कुंभिक्का मुत्तादामा पण्णत्ता, तेणं कुंभिक्का मुत्तादामा अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमित्तेहिं अद्ध कुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं सव्वतो समता संपरिक्खित्ता, तेणं दामा तवणिज्ज लंबूसगा सुवण्ण पयरमंडिता जाव

रस का स्पर्श देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है ॥ ६८ ॥ उस सिंहासन पर अलग २ विजय दूष्य (छत में बांधने का) है यह विजय दूष्य श्वेत शंख, मुचकुंद, पानी के कन, अमृत, समुद्र फेन इत्यादिक समान श्वेत वर्ण का है सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप है ॥ ६९ ॥ उस विजय दूष्य वस्त्र के मध्य भाग में अलग २ वज्ररत्नमय अंकुश कहे हुए हैं उन अंकुशों में कुंभ प्रमाण मोति की मालाओं कही है, कुंभ प्रमाण मोती की मालाओं की पास अन्य अर्ध कुंभ प्रमाण मोती की मालाओं है, चारों तरफ वींटी हुई हैं ये मालाओं सुवर्ण के लुंबके वाली, सुवर्ण के प्रतर से मंडित यावत् रही

सीहासण पण्णत्ते,तेसिण सीहासणाण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तजहा-तवणिज्जमया चक्कला,रययामया, सीहा सोवण्णियापादा णाणामणिमयाइ पायपीढगाइ, जबूणयामयाइ गत्ताइ वइरामयासधी, नाणामणिमये वेच्चे ॥ तेण सीहासणा ईहामिय उसभ जाव पउलय भत्तिचित्ता सुसारसारोवइतविविहमणिरयणपादपीठा अच्छरगमलयमउगमसुरग नवतयकुसत लिव्वसीहकेसरपच्चुत्थाभिरामा उयचियक्खामदुगुल्लपट्टपडिच्छणया सुविरति तरयत्ताणा रत्त सुयसवुता सुरम्मा आतीणगरुयबूरणवणीततूलमउफासा,

कहते हैं सिंहासन के चक्रवाल (पाये) के नीचे का प्रदेश सुवर्णमय है, चांदी का सिंहासन है, मणिमय पाये हैं, विविध प्रकार के रत्नमय पाये का बंधन है, जम्बूनद रत्नमय गात्र हैं, वज्र रत्नमय संधी पूरी हुई है, विविध रत्नमय सिंहासन का तला है यह सिंहासन ईहामृग यावत् पद्मलता के चित्रों से चित्रित हैं प्रधान प्रकार के श्रेष्ठ विविध मणिरत्नों की पाद पीठिका है, कोमल मसुरमय, मखमल दर्भ तथा सिंह की केसरी समान सुकोमल वस्त्र के आच्छादन से मनोहर दीखता है सुंदर अलसी का वस्त्र, कपास का वृक्ष व रेशम के वस्त्र का रजस्त्राण (आच्छादन) हैं और भी रत्न का अलसीमय वर्णमय वृक्ष से सिंहासन अच्छी तरह ढका हुवा है, वे पुष्प मखमल, अर्क, बूर, रूइ समान कोमल है

तोरणाणं पुरतो दो दो हयसंघाडगा जाव उसभसंघाडगा पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा,॥एवं पतीउ वीहीओ मिहुणा दो दो पउमलयाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तेसिणं तोरणाणं पुरओ दो दो अक्खय सोवत्थिया पण्णत्ता तेणं अक्खय सोवत्थिया सव्व रयणामया जाव पडिरूवा तेसिणं तोरणाणं दो दो दो चंदणकलसा पण्णत्ता तेणं चंदणकलसा वरकमल पतिट्ठाणा जाव सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा समणाउसो! तेसिणं तोरणाणं दो दो भिंगारगा प० वरकमल पइट्ठाणा जाव सव्वरयणामया, पण्णत्ता अच्छा जाव पडिरूवा महया २ मत्तगय महामुहागिई ते समाणा पण्णत्ता समणाउसो!॥७२॥तेसिणं तोरणाणं पुरतो दो दो आतंसगा पण्णत्ता,तेसिणं आदंसगाणं

आगे दो दो घोडे के समुह यावत् वृषभ के समुह कहे हैं वे सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं यों सब पूर्ववत् पंक्तियों, दो २ वीथियों, दो मिथुन (स्त्री पुरुष के) यावत् दो पद्म लताओं हैं यहां पर्यंत कहना वे सब वज्ररत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं, उन तोरणों के आगे अक्षत स्वस्तिक कहे हैं वे रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं उन तोरणों के आगे दो कलश कहे हुवे हैं वे चंदन कलश श्रेष्ठ प्रधान कमल में रहे हुवे यावत् सब वज्ररत्नमय, स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों! वे कलश मदोन्मत्त हस्ती की मुखाकृति समान हैं ॥ ७२ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ काच के आरीसे हैं

चिट्ठंति ॥ ७० ॥ तेसिणं पासायवडिंसगाणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलगा पण्णत्ता– सोत्थियसीहे तहेव जाव छत्ता ॥ ७१ ॥ विजयस्सणं दारस्स उभओ पासिं दुहओ निसीहियाए दो दो तोरणा पण्णत्ता, तेणं तोरणा णाणामणिमया तहेव जाव अट्ठट्ठ मंगलगाधया छत्तातिछत्ता ॥ तेसिणं तोरणाणं पुरओ दो दो सालिभंजियाओ पण्णत्ताओ जहेव हेट्ठा तहेव ॥ तेसिणं तोरणाणं पुरतो दो दो णागदंतगा पण्णत्ता, तेणं णागदंतगा मुत्ता जालंत भूसिया, तहेव ॥ तेसुणं णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्त वट्टवग्घारित मल्ल दामकलावा जाव चिट्ठति ॥ तेसिणं

हुई हैं ॥ ७० ॥ उन प्रासादावतंसक पर बहुत प्रकार के आठ २ मंगल कहे हैं स्वस्तिक, सिंहासन यावत् छत्र ॥ ७१ ॥ उन, विजयद्वार की दोनों बाजु दो २ चबुतरे कहे हैं उनपर दो २ तोरण हैं वगैरह यावत् आठ २ मंगल में छत्र पर छत्र पर्यंत कहना उन तोरणों की आगे दो २ पुतलियों कहा है इन का वर्णन जैसे पूर्वोक्त पुतलियों का कहा वैसे ही जानना उन तोरणों के आगे दो २ नागदंत कहे हैं वे मोतियों की मालाओं से अलंकृत बने हुए हैं वगैरह पूर्वोक्त जैसे सब जानना उन नागदंत को बहुत कृष्ण वर्ण के सूत्र से बंधी हुई पुष्प की मालाओं के समुह यावत् रहे हुवे हैं उन तोरणों के

अच्छोदयपडिहत्थाओ णाणाविह पचवण्णस्स फलहरितगस्स बहु पडिपुण्णाओ विवि-
चिट्ठति सव्वरयणामईओ जाव पडिरूवाओ महया २ गोलिंगचक्क समाणाओ पण्णत्ता
समणाउसो! ॥ ७६ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो सुपइट्ठगा पण्णत्ता, तेण
सुपतिट्ठगा णाणाविह पसाहणगभडविरतियाए सव्वोसहिपा पडिपुण्णा सव्वरयणामया
अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ७६ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो मणगुलियाउ
पण्णत्ताओ, तासुण मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता, तेसुण
सुवण्णरुप्पमयेसु फलयेसु बहवे वइरामया णागदतगा पण्णत्ता, तेण नागदतगाणं

पानी से भरी हुई हैं अनेक प्रकार के पांच वर्ण के फल से प्रतिपूर्ण है वे पात्री सर्व रत्नमय यावत्
प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवत्त श्रमणों वे पात्रियों गाय भमस्त को चांटा देने के टापछे जित ी बडी है
॥ ७५ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ सुप्रतिष्ठक भाजन विशेष हैं वे अनेक प्रकार के आभरण से भरे
हुवे हैं सब ओषधि से प्रतिपूर्ण है सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७६ ॥ उन तोरणों के
आगे दो मनोगुलिका है उन में बहुत सुवर्णमय रजतमय पटियें है उन पटियों में बहुत वज्र
रत्नमय नागदंत हैं. उन का कथन पूर्ववत् जानना उन नागदंतों में बहुत चांदी के सिके हैं उन चांदी

अपमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते ,तंजहा-तवणिज्जमता पयपगा वेरुलियमया च्छदहा, वइरामयावारगा, णाणामणिमया वलक्खा अकामता मंडला अणोग्घसिय निम्मलाए छायाए सततोचित्र समणुबद्धा चंदमंडल पडिणिगासा महत्ता २ अद्धकाय समाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ७३ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो वइरणामथाला पण्णत्ता,तेणं थाला अच्छातिच्छडिय सालि तंदुलणह सदट्ठबहु पडिपुण्णा, त्रिवचिट्ठति सव्वजंबूणयामया अच्छा जाव पडिरूवा, महता २ रहचक्क समणा पण्णत्ता समणा-उसो ! ॥ ७४ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दोदो पातीओ पण्णत्ताओ, ताओण पातीओ

इस का वर्णन करते हैं सुवर्ण रत्नमय मंकठक पीठ विशेष है, वैडूर्य रत्नमय प्रतिबपन है, वज्ररत्नमय द्वार,विविध मणि रत्नमय श्रृंखला आदि रूप अवलम्बन, अंक रत्नमय काच है जिस की बिना मांजे ही स्वच्छ कांति है, इस से सब दिशों में अनुबंध सहित है चंद्रमंडल समान व अर्धकाया समान वे आरीसे कहे हैं ॥ ७३ ॥ उन तोरणों को आगे वज्र की नामी समान दो थाल कहे हैं उन में शुद्ध स्फटिक समान तीनवार शुद्ध किये हुवे चावल भरे हुवे हैं वे चावल व थाल सब जम्बूनद रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं. वे बडे २ रथ के चक्र समान हैं ॥ ७४ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ पात्रि है वे निर्मल

तोरणाण पुरतो दो दो हय कठगा जाव दो दो उसम कठगा पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ७८ ॥ तेसुण हयकठएसु दो दो पुप्फचगेरीओ एव मल्लच गेरीओ गध–वण्ण–चुण्ण–वत्थ–आभरण–चगेरीओ सिद्धत्थचगेरीओ लोमहत्थ चगेरीओ सव्वरयणामयाओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो पुप्फ पडलाइ जाव लोमहत्थ पडलाइ सव्वरयणामयाइ अच्छाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ७८ ॥ तेसिण तोरणाण पुरता दो दो सीहासणाइ पण्णत्ता तेसिण सीहासणाण अयमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तहेव जाव पासादिया ॥ ८० ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो रूपछत्ताइछत्ता पण्णत्ता ॥ तेणछत्ता वेरुलियाभिसत

आगे दो घोड़े के आकार वाले यावत् वृषभ के आकार वाले पोहले हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७८ ॥ हयकठ यावत् वृषभ कठ में दो २ पुष्प की चंगेरी ऐसे ही माला, गंध, वर्ण, चूर्ण, वस्त्र, आभरण, सरसु की चगेरी, पुजनी की चंगेरी हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७८ ॥ उन तोरणों के आगे दो पुष्प के पुंज यावत् पुजनी के पुंज रहे हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७९ ॥ उन तोरणों के आगे दो सिंहासन हैं जिन का कथन पूर्ववत् जानना यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८० ॥ उन तोरणों के आगे दो चांदी के छत्र हैं उन को वैदूर्य रत्न निर्मल दण्ड है, जम्बूनद

मुया जालतरूसिता हेम जाव गयदंत समाणा पण्णत्ता ॥ तेसुण वइरामएसु णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता, तेसुण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वायकरगा पण्णत्ता, तेण वायकरगा किण्हसुत्त सिक्कागवच्छिया जाव सुकिल सुत्तसिक्कागवच्छिता बहवे वायकरगा पण्णत्ता सव्ववेरुलियामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥७६॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो चित्तारयण करडा पण्णत्ता से जहा नामए चाउरत चक्कवट्टिस्स चित्तेरयणकरडे वरुलिय मणिफालिय पडलत्थाय डेताए पभाए त पदेसे सव्वतो समताओ भासइ उज्जोवेइ पभासेइ एवामेव तिविचित्त रयणकरडगा वेरुलियपडल पच्छायडा साए पभाए ते पदेसे सव्वतो समताओ भासेति जाव पभासेति॥७७॥ तेसिण

के सिके में पवन डालने के पत्ते हैं, वे पत्ते कृष्ण यावत् श्वेत वर्ण के सूत्र से ढके हुवे हैं वे सब वैडूर्य रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७६ ॥ उन तोरणों के आगे २ दो २ आश्चर्यकारी रत्न के करंडिये हैं जैसे चारों दिशा को विजय करने वाले चक्रवर्ती राजाको आश्चर्यकारी रत्नका करंडिया होता है और उस को वैडूर्य व स्फटिक रत्न का ढक्कन होता है, वह अपनी आसपास चारों दिशी में प्रकाश करता है, वैसे ही यहां आश्चर्यकारी रत्नों के करंडिये हैं उनको भी वैडूर्य व स्फटिक रत्न का ढक्कन है और वे यहां चारों तरफ उद्योत करते हैं, प्रकाश करते हैं यावत् तपते हैं ॥ ७७ ॥ उन तोरणों के

समुग्गा हिंगुलसमुग्गा मणोसिलासमुग्गा अंजणसमुग्गा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ८३ ॥ विजयेण दारेण अट्ठसय चक्कज्झयाण अट्ठसय मगरज्झयाण अट्ठसयगरुलज्झयाण, अट्ठसयजुगज्झयाण, अट्ठसयछत्तज्झयाण अट्ठसयपिच्छ ज्झयाण, अट्ठसयसउणीज्झयाण, अट्ठसयसीहज्झयाण, अट्ठसयउसभज्झयाण अट्ठसयसेयाण, चउविसाणाण नागवरकेऊण एवमेव सपुव्वावरेण विजयदारे आसीयकेउसहस्स भवतित्তि मक्खाय ॥ ८४ ॥ विजयदारे नव भोम्मा पण्णत्ता

(तेल के सीसे) कोष्ट के सीसे, पत्र के सीसे, तगर के सीसे, पलास के सीसे, हरताल के सीसे, हिंगुलक के सीसे, मनःशिला के सीसे व अंजन के सीसे हैं ये सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८३ ॥ विजय द्वार पर एक सो आठ ध्वजा चक्र के चिन्हवाली है, मगर के चिन्हवाली १०८ ध्वजा हैं, गरुड के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, धूसरे के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, छत्र के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, पीछ के आकार की १०८ ध्वजाओं हैं, शकुनी पक्षी के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, सिंह के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, वृषभ के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, और श्वेत चार दंतवाले हस्ती के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं यों सब मिलकर विजय द्वार पर एक हजार अस्सी ध्वजाओं हैं ऐसा अनन्त तीर्थंकरोंने कहा है ॥ ८४ ॥ विजय द्वार में नव भूमि कही हैं उन की

विमलदंडा जंबूणय कनिका वइरसंधी मुंचा जालपरिगता अट्ठसहस्स वर कंचणस-लागा दद्दरमलयसुगंधी सव्वउय सुरभीसीयल छाया मंगल भत्तिचित्ता चंदागारोवमा छत्ता ॥ ८१ ॥ तेसिं तोरणाणं पुरतो दो दो चामराओ पण्णत्ताओ ताओणं चामराओ णाणामणि कणगरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जल विचित्तदंडाओ चिल्लियाओ संखककुंदगरय अमयमहियफेण पुंजसण्णिगासाओ सुहुमरययदीहवालाओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥८२॥ तेसिणं तोरणाणं पुरओ दो दो तेल्लसमुग्गा कोट्ठसमुग्गा पत्तसमुग्गा चोयसमुग्गा तगरसमुग्गा पलाससमुग्गा हरियाल-

रत्न की कर्णिका है, वज्र रत्नमय संधी है, मोतियों की माला से चारों तरफ व्याप्त हैं, एक हजार आठ सुवर्ण शलाका से बने हुवे हैं, दर्दर चंदन अथवा मलय चंदन जैसा सुगंधित है, सब ऋतु के सुगंध वाली शीतल छाया है, आठ मंगलिक के चिन्ह चित्रित किये हैं, और चंद्र जैसे वर्तुलाकार हैं ॥ ८१ ॥ उन तोरण की आगे दो चमर कहे हैं उन चमरों को विविध मणि रत्न वाला निर्मल व बहु मूल्य सुवर्ण का आश्चर्य कारी दंड व भेद है, कांबरू, शंखरत्न, मुचकुंद के पुष्प, पानी के कन, अमृत व समुद्र के फेन जैसी कान्तीवाले बहुत सूक्ष्म चांदी के बाल रहे हैं, वे सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८२ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ तेल समुद्ग

पुरत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चउण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण चत्तारि भद्दासणा पन्नत्ता॥ तस्सण सीहासणस्स दाहिणपुरत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स अब्भिंतरियाए परिसाए अट्ठण्ह देवस्स साहस्सीएण अट्ठभद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ तस्सण सीहासणस्स दाहिणाण एत्थण विजयस्स देवस्स मज्झिमियाए परिसाए दसण्ह देवसाहस्सीण दसभद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तस्सण सीहासणस्स दाहिणपच्चच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स बाहिरियाए परिसाए बारसण्ह देवसाहस्सीण बारस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तस्सण सीहासणस्स पच्चच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स सत्तण्ह अणियाहिवईण सत्त भद्दासणा पण्णत्ता, तस्सण सीहासणस्स पुरत्थिमेण दाहिणेण पच्चत्थिमेण उत्तरेण एत्थण विजयस्स देवस्स सोलस आयरक्खदेव साहस्सीण सोलसभद्दासणसाहस्सीओ, पण्णत्ताओ तजहा पुरच्छिमेण

आभ्यन्तर परिषदा के देवों के आठ हजार भद्रासन कहे हैं, दक्षिणदिशा में मध्य परिषदा के दश हजार देवों के दश हजार भद्रासन कहे हैं, नैऋत्यकोन में बाह्य परिषदा के बारह हजार देव के बारह हजार भद्रासन कहे हुवे हैं उस बडे सिंहासन की पश्चिम दिशा में विजयदेव के सात अनिकाधिपति के सात भद्रासन कहे हुवे हैं, उसका पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर यों चार दिशाओं में विजयदेव के सोलह हजार आत्मरक्षक देव के सोलह हजार भद्रासन कहे हुवे हैं पूर्व में — हजार, दक्षिण में चार हजार, पश्चिम में चार

तेसिण भोम्माण अतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता जाव मणीण फासो ॥ तेसिं भोम्माण उप्पिं उल्लोया पउमलया भत्तिचित्ता जाव सव्वतवणिज्जमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ८५ ॥ तेसिण भोम्माण बहुमज्झदेसभाए जे से पचमे भोम्मे तस्सण भोम्मस्स बहुमज्झ देसभाए तत्थण एगे महं सीहासणे पण्णत्ते, सीहासण वण्णओ विजयदूसे जाव अकुसे जाव दामाचिट्ठति ॥ ८६ ॥ तस्सण सीहासणस्स अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चउण्ह सामाणिक साहस्सीण, चत्तारि भद्दासण साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ तस्सण सीहासणस्स

बीच में सम रमणीय भूमिभाग है यावत् मणि स्पर्श है यह चपकलता, पद्मलता यावत् श्यामलता के विविध प्रकार के चित्र युक्त यावत् सुवर्णमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥ ८५ ॥ उन नव भूमि के मध्य भाग में जो पांचवी भूमि है उस के मध्य भाग में एक सिंहासन है उस का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् विजय दूष्य से ढका हुवा यावत् अकुश यावत् पुष्प की माला वगैरह सब पूर्ववत् जानना ॥ ८६ ॥ उस सिंहासन से वायव्यकून, उत्तरदिशा व ईशानकून में विजय नामकदेव के चार हजार सामानिक देव के चार हजार भद्रासन कहे हुवे हैं, उस सिंहासनसे पूर्वमें चार अग्रमहिषियों के परिवार सहित चार भद्रासन कहे हुवे हैं, उस की अग्निकून में विजय देवता के

…ऐण दारे ? विजेएणदारे गोयमा ! विजएणामं देवेमहिड्डीए जाव महज्जुचाए जाव महाणुभावे पलिओमाठितीये परिवसाति ॥ सेण तत्थ चउण्ह सामाणियसाहस्सणीण चउण्ह अग्गमहिसीण, सपरिवाराण तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह आनियाण, सत्तण्ह …णीयाहिवईण, सोलसण्ह आयरक्खदेव साहस्सणी॥विजयस्सण दारस्स विजयाएराय-हाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयाए रायहाणि वत्थव्वगाण देवाण देवीणय आहेवच्च जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरति, से तेणेट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चाति विजएदारे, अदुत्तर चण गोयमा ! विजयस्स दारस्स सासए नामधिज्जे पण्णत्ते जण्ण

अहो गौतम ! विजय द्वार का विजय नामक देव अधिपति है वह महर्द्धिक महा द्युतिवंत यावत् महा प्रभाववाला व पल्योपम की स्थितिवाला है वह चार हजार सामानिक, परिवार सहित, चार अग्रमहिषी, तीन परिषदा, सात आनिक, सात आनिक के अधिपति व सोलह हजार आत्म रक्षक देव, विजय द्वार, विजय राज्यधानी और विजय राज्यधानी में रहनेवाले अन्य बहुत देवों व देवियों का अधिपतिपना करता यावत् दीव्य भोग उपभोग भोगता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये विजय द्वार कहा है और दूसरा कारन यह भी है कि विजय द्वार का शाश्वत नाम है यह कदापि नहीं था वैसा नहीं

चत्तारि साहस्सीओ पण्णत्ताओ एवं चउसुवि जाव उत्तरेण चत्तारि साहस्सीओ अवसेसेसु भामेसु पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता ॥ ८७ ॥ विजयस्स उत्तरिमागारो सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया तंजहा-रयणेहिं वइरेहिं, वेरुलिएहिं, जाव रिट्ठेहिं॥ विजयस्सणं दारस्स उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता तंजहा-सोत्थियय सिरिवच्छ जाव दप्पणा, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ विजयस्सणं दारस्स उप्पिं बहवे कण्हचामरज्झया जाव सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ विजयस्सणं दारस्स उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता तहेव ॥ ८८ ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति

हजार व उत्तर में चार हजार, शेष आठ भूमि में एक २ भद्रासन कहा है ॥ ८७ ॥ विजय द्वार के उपर का भाग सोले प्रकार के रत्नों से सुशोभित है तद्यथा—कर्केतरत्न २ वज्र, ३ वैडूर्य, ४ लोहिताक्ष, ५ मसाल गर्भ, ६ हंसगर्भ, ७ पुलक, ८ सोगंधिक, ९ ज्योतिष रत्न, १० अंक, ११ अंजन, १२ रजत, १३ जातरूप, १४ अंजन पुलक, १५ स्फटिक और १६ रिष्ट विजय द्वार पर आठ २ मंगल हैं स्वस्तिक, श्रीवत्स यावत् आदर्श ये सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं विजय द्वार पर कृष्ण चामर की ध्वजा यावत् रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है विजय द्वार पर बहुत छत्र पर छत्र प्रमुख रहे हुवे हैं, यह सब पूर्ववत् जानना ॥ ८८ ॥ अहो भगवन् ! विजयद्वार ऐसा नाम क्यों कहा?

विजएण दारे ? विजएणदारे गोयमा ! विजएणं ...
जाव महाणुभावे पलिओमाठितीये परिवसाति ॥ सेण तत्थ चउण्ह सामाणियसाह-
स्सणीण चउण्ह अग्गमहिसीण, सपरिवाराण तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह आनियाण, सत्तण्ह
अणियाहिवईण, सोलसण्ह आयरक्खदेव साहस्सणि॥विजयस्सण दारस्स विजयाएराय-
हाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयाए रायहाणि वत्थव्वगाण देवाण देवीणय आहेवच्च
जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चाति
विजएदारे, अदुत्तर चण गोयमा ! विजयस्स दारस्स सासए नामधिज्जे पण्णत्ते जण्ण

अहो गौतम ! विजय द्वार का विजय नामक देव अधिपति है वह महर्द्धिक महा द्युतिवंत यावत् महा
प्रभाववाला व पल्योपम की स्थितिवाला है वह चार हजार सामानिक, परिवार सहित, चार अग्रमहिषी,
तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति व सोलह हजार आत्म रक्षक देव, विजय द्वार,
विजय राज्यधानी और विजय राज्यधानी में रहनेवाले अन्य बहुत देवों व देवियों का अधिपतिपना करता यावत्
दीव्य भोग उपभोग भोगता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये विजय द्वार कहा है और
दूसरा कारन यह भी है कि विजय द्वार का शाश्वत नाम है यह कदापि नहीं था वैसा नहीं

कयाइ णासि णकयाइ णरिय, णकयाइण भविस्सइ जाव अवट्ठिये णिच्चे विजयद्दारो ॥ १९ ॥ कहिण भंते ! विजयस्सण देवस्स विजया नाम रायहाणी पण्णत्ता? गोयमा! विजयस्स दारस्स पुरच्छिमेणं तिरियमसंखिज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता, अण्णंमि जबूद्दीवे २ बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता, एत्थण विजयस्स देवस्स विजयाणाम रायहाणी पण्णत्ता बारस जोयण सहस्साइ आयामविक्खंभेण सत्ततीस जोयण सहस्साइ णवय अडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता ॥ साण एगेणं पगारेण सव्वतो समता सपरिक्खित्ता, सेण पगारे सत्ततीस जोयणाइ अद्ध

कदापि नहीं है वैसा नहीं कदापि व नहीं होगा वैसा नहीं यावत् अवस्थित नित्य शाश्वत विजय द्वार है॥ १९ ॥ अब विजय देवता की विजया राजधानी का कथन करते हैं अहो भगवन्! विजय देव की विजया राजधानी कहां है? अहो गौतम ! विजय द्वार से पूर्व में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां दूसरा जम्बूद्वीप नामक द्वीप कहा है उस में बारह हजार योजन जावे तब विजय देवता की विजया राज्यधानी है यह बारह योजन की लम्बी चौडी है, और सैंतीस हजार नव सो अडतीस योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है उस के चारों तरफ एक प्राकार (कोट) रहा हुवा है, यह ३७॥योजन का ऊंचा है,मूल में १२॥योजन का

जोयण चउद उच्चतेण, मूले अद्धतरस जोयणाइ विक्खभेण, मज्झे छजोयणाइ सक्कोसाइ विक्खभेण, मूलविच्छिण्णे,मज्झेसखित्त,उप्पि तणुए, बाहिं वट्टे, अतो चउरसे गोपुच्छ सठाण सठिते, सव्वकणगमये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ १००॥ सेण पागारेण णाणाविह पचवण्णेहिं कविसीसएहिं उवसोभिते तजहा—किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं, तेण कविसीसगा अद्धकोस आयामेण, पचधणुसयाइ विक्खभेण, देसूण अद्धकोस उड्ढ उच्चत्तण,सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥१०१॥ विजयाएण रायहाणीए एगमेगाय बाहाए पणुवीस२दारसत भवति तिमक्खाय॥ तेण दारा बीवट्ठी जोयणाइ

चौडा है, मध्य में ६। योजन का चौडा है, और ऊपर तीन योजन आधा गाउ का चौडा है मूल में विस्तारवाला, मध्य में संकुचित व ऊपर पतला है बाहिर गोल व अदर चौकूना है गाय पुच्छ के आकारवाला है, सब सुवर्णमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है ॥ १०० ॥ यह प्राकार विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल यों पांच वर्णवाले कपिशीर्ष (कंगूरे) से सुशोभित है वे कंगूरे आधा कोश के लम्बे पांच सो धनुष्य के चौडे, आधा कोश में कुच्छ कम के ऊंचे, सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १०१ ॥ विजया राजधानी की एक २ बाजु में १२५ द्वार हैं वे द्वार ६२॥ योजन के ऊंचे, ३१। योजन के

भोम्मा तेसिणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओजाव दामा जहा हेट्ठा ॥ एत्थण अवसेसेसु भोमेसु पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता, तेसिण दाराण उत्तिमगागारा सोलस विहहिं रयणेहिं उवसोभिता तचेव जाव छत्ताइछत्ता, एवामेव सपुव्वावरेण विजयाए रायहाणीए पचदारसता भवति तिमक्खाया ॥१०६॥ विजयाएण रायहाणीए चउद्दिसिं पच जोयण सताइ अबाहाए एत्थण चत्तारि वणसडा पण्णत्ता तजहा—असोयवणे, सत्तवण्णवणे, चपगवणे, चूतवणे ॥ पुरच्छिमेण असोगवण, दाहिणेण सत्तवन्नवणे, पच्चत्थिमेण चपगवणे, उत्तरेण चूयवणे ॥ तेण

मानना यहां शेष सब भवनों में पृथक् २ भद्रासन कहे हैं उस द्वार पर का भाग सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनीक है यह सब कथन पूर्ववत् जानना यावत् छत्रपर छत्र हैं यों सब मीलकर विजया राज्यधानी के पांचसोद्वार कहे हैं ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने कहा हैं ॥ १०६ ॥ विजया राज्यधानी के चारों दिशी में पांचसो२ योजन दूर चार वनखण्ड कहे है जिन के नाम १ अशोकवन २ सप्तपर्ण वन, ३ चंपकवन, और ४ आम्रवन है, पूर्वदिशा में अशोकवन, दक्षिण दिशा में सप्तपर्णवन, पश्चिमदिशा में चंपकवन और उत्तरदिशा में आम्रवन है ये वनखण्ड बारह हजार योजन से कुच्छ

वणसडा साइरेगाइ दुवालस जोयण सहस्साइ आयामेण, पच २ जोयण सताइ विक्खभणं पण्णत्ता, पत्तेय २ पागार परिक्खित्ता, किण्हा किण्होभासा, वणसडवण्णओ भाणियव्वो जाव बहवे वाणमतरा देवा देवीओय आसयति सयति चिट्ठति णिसीदति तुयट्टति रमति ललति कीलति कोडति मोहेंति पुरपोराणाण सुचिण्णाण सुपरक्कताण सुभाण कडाण कम्माण फलवित्ति विसेस पच्चणुब्भवमाण विहराति ॥१०७॥ तेसिण वणसडाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ पासायवडिंसया पण्णत्ता, तेण पासाय वडिंसगा बावट्ठि २ जोयणाइ अद्ध जोयण च उड्ढ उच्चत्तेण, एकतीस जोयणाइ कोसच्च आयामविक्खंभेण, अब्भूग्गयमूसिया तहेव जाव अतो बहु समरमणिज्जा

अधिक लम्बे हैं, पांचसो योजन के चौडे हैं प्रत्येक को पृथक् २ प्राकार (कोट) है, वे कृष्ण वर्ण वाले कृष्ण भास वगैरह वनखण्ड का वर्णन जानना वहांपर बहुत देव देवियों बैठते हैं, सोते हैं, खडे रहते हैं, खेलते हैं क्रीडा करते हैं, सुख होते हैं व अपने पूर्वभव के संचित किये हुए शुभ कर्म के फल का अनुभव करते हुवे विचरते हैं ॥ १०७ ॥ उन वनखण्डों के बीच में प्रासादावतंसक कहे हुए हैं व ६२॥ योजन के ऊंचे ३१। योजन के लम्बे चौडे, किंचित् नमे हुए वैसे ही यावत् अंदर बहुत रमणीय

भोम्मा तेसिण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओ जाव दामा जहा हेट्ठा ॥ एत्थण अवसेसेसु भोमेसु पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता, तेसिण दाराण उत्तिमगागारा सोलस विहहिं रयणेहिं उवसोभिता तचेव जाव छत्ताइछत्ता, एवामेव सपुव्वावरेण विजयाए रायहाणीए पचदारसता भवति तिमक्खाया ॥१०६॥ विजयाएण रायहाणीए चउद्दिसिं पच जोयण सताइ अबाहाए एत्थण चत्तारि वणसडा पण्णत्ता तजहा—असोयवणे, सत्तवण्णवणे, चपगवणे, चूतवणे ॥ पुरच्छिमेण असोगवणे, दाहिणेण सत्तवन्नवणे, पच्चत्थिमेण चपगवणे, उत्तरेण चूयवणे ॥ तेण

मानना यहां शेष सब भवनों में पृथक् २ भद्रासन कहे हैं उस द्वार पर का भाग सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनीक हैं यह सब कथन पूर्ववत् जानना यावत् छत्रपर छत्र हैं यों सब मीलकर विजया राज्यधानी के पांचसो द्वार कहे हैं ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने कहा हैं ॥ १०६ ॥ विजया राज्यधानी के चारों दिशी में पांचसो२ योजन दूर चार वनखण्ड कहे हैं जिन के नाम १ अशोकवन २ सप्तपर्णवन, ३ चंपकवन, और ४ आम्रवन है, पूर्वदिशा में अशोकवन, दक्षिण दिशा में सप्तपर्णवन, पश्चिमदिशा में चंपकवन और उत्तरदिशा में आम्रवन है ये वनखण्ड बारह हजार योजन से कुछ

बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव पचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए ॥ तणसद्दाविहुणे जाव देवाय देविओय आसयति जाव विहरति ॥ ११० ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्ज भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगमहं उवारियलणे पण्णत्ते बारस जोयणसयाइं आयामविक्खभेण, तिण्णिजोयणसहस्साइं सत्तयपचाणउतेजोयणसते किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण, अद्धकोस वाहल्लेण सव्वजबूणयामये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ १११ ॥ सेण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसंडेण सव्वतोसमता सपरिक्खित्ते पउमवरवेतियाए वण्णओ, लणसमियापरिक्खेवेण वणसंड वण्णओ जाव विहरति ॥ सेण वणसंडे दसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवाल विक्खभेण उवरितलेण

पांच प्रकार के मणिरत्नों से सुशोभित है, यहां तृण शब्द छोडकर सब वर्णन करना वहां देवता देवियों विश्राम करते हैं यावत् विचरते हैं ॥ ११० ॥ उस बहुत सम रमणीय भूमि भाग के मध्य में एक बडा उपकारिक लयन (राज्यसभा) कहा है यह बारह सो योजन का लम्बा चौडा है तीन हजार सात सो पचाणवे योजन से कुच्छ अधिक की परिधि कही है, आधा कोस की जाडाइ है वे सब जम्बूनद रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है, उस की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है वह उस पद्मवर वेदिका व उस राजसभा को परिवेष्टित रहा हुवा वनखण्ड का वर्णन पूर्ववत् जानना यह वनखण्ड कुच्छ

भूमिभागा पण्णत्ता उल्लोया पउमभत्तिचित्ता भाणियव्वा ॥ १०८ ॥ तेसिण पासाय वडिंसगाण बहुमज्झदसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता वण्णावासा सपरिवारा ॥ तेसिण पासाय वडिंसगाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मगलज्झया छत्ताइछत्ता ॥ तत्थण चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसति तजहा असोए सत्तिवण्णे चपए चूए, तेण साण २ वणसडाण साण २ पासाय वडिंसगाण साण सामाणियाण, साण २ अग्गमहिसीण, २ साण २ परिसाण, साण २ आयरक्खदेवाण आहेवच्च जाव विहरति ॥ १०९ ॥ विजयाएण रायहाणीए अतो

भागवाले कहे हुए हैं उस में चद्रवा पद्मलता वगैरह चिन्हों कहे हुए हैं ॥ १०८ ॥ उन प्रासादावतसक के मध्य भाग में पृथक् २ सिंहासन कहे हुवे हैं, उन का परिवार सहित सब वर्णन कहना उन प्रासादाव तसक पर आठ २ मगलध्वजा व छत्रातिछत्र कहे हुवे हैं वहां चार महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं जिन के नाम-अशोक, सप्तपर्ण, चंपक व चूत वे अपने २ वनखण्डके अपने २ प्रासादावतसक में, अपने २ सामानिक, अग्रमहिषी, परिषदा व आत्मरक्षक देवों का आधिपतिपना करते हुए विचरते हैं ॥ १०९ ॥ विजया राज्यधानी की अदर बहुत सम रमणीय भूमिभाग कहा हुवा है यावत्

॥ ११३ ॥ तस्सणं पासायवडेंसगस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणि फासा, उल्लोया ॥ तस्सण बहु समरमणिज्जे भूमिभागस्स बहु मज्झदेसभाए एका मह मणिपेढिया पण्णत्ता, दो जोयणाइ आयाम विक्खभेण जोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमह सीहासणे पण्णत्ते एव सीहासण वण्णओ सपरिवारो ॥ तस्सण पासाय वडेंसगस्स उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मगलज्झया छत्तातिछत्ता, सेण पासाय वडेंसए अन्नेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समतासपरिक्खित्ते, तेण पासाय

॥ ११३ ॥ उस प्रासादावतसक के मध्य में बहुत समरमणीय भूमिभाग कहा है यावत् मणिस्पर्शवाला है उस के मध्य भाग में एक मणिपीठिका है वह दो योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी है सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणि पीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का परिवार सहित वर्णन करना उस प्रासादावतसक पर आठ २ मंगलिक ध्वजा, छत्रपरछत्र हैं उस प्रासादावतसक की आसपास अन्य उससे आधी उचाइ के प्रमाण वाले चार प्रासादावतसक कहे हैं वे ३१ ॥ योजन के ऊंचे व पनरह योजन अढाइ कोस के लम्बे चौडे व गगन तलको अवलम्बन

समे परिक्खेवेण ॥ १११ ॥ तस्सण उवरियालेणस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाण पडिरूवगा पण्णत्ता वण्णओ ॥ तेसिण तिसोवाण पडिरूवगाण पुरत्थ पत्तेय २ तोरणा पण्णत्ता छत्ताइछत्ता ॥ ११२ ॥ तस्सण उवरियलेणस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जेभूमिभागे पण्णत्ते जाव मणिहिं उवसोभिते मणिवण्णओ गधोभासो ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए तत्थण एगेमहं मूलपासायवडेंसए पण्णत्ते सेण पासायवडेंसए बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणच उड्ढं उच्चत्तेण, एक्कतीस जोयणाइ कोसच आयामविक्खंभेण अब्भुग्गय मूसिय पहसिते तहेव

कम दो योजन के चक्रवाल में चबुतरा समान है ॥ १११ ॥ उस उपकारिका लयन को चारों तरफ चार पांवथे हैं, वे वर्णन करने योग्य है, उन प्रत्येक पांवथे के आगे पृथक् २ तोरण यावत् छत्राति छत्र है ॥ ११२ ॥ उस उपकारिका लयन के ऊपर बहुत समरमणीय भूमि भाग है यावत् मणि से शोभित हैं यहां मणि का वर्णन पूर्ववत् जानना गंधवास पर्यंत कहना उस रमणीय भूमिभाग के मध्य बीच में एक बडा मूल प्रासादावतंसक कहा है वह साढी बासठ योजन का ऊंचा, सवा एकतीस योजन का लम्बा चौडा और गगनतल के अवलम्बन करता होवे वैसा सब अधिकार पूर्ववत् जानना

तेसिण पासायवडिंसगाण अतो बहु समरमणिज्जाणं भूमिभाग उल्लोया ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ पउमासणा पण्णत्ता ॥ तेसिण पासायाण अट्ठट्ठमगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेण पासायवडेंसका अण्णेहिं चउहिं २ तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता ॥ तेण पासायवडिंसका देसूणाइ अट्ठजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण देसूणाइ चत्तारि जोयणाइ आयामविक्खभेण अब्भुगत भूमिभागा उल्लोया भद्दासणाउवरि मगल ज्झया छत्तातिछत्ता ॥११४॥ तस्सण मूलपासायवडिंसगस्स उत्तरपुरच्छिमेण एत्थेण

ध्वजा व छत्रपर छत्र हैं इन प्रासादावतसक के आगे पृथक् २ इस से आधी ऊचाइ के प्रमान वाले अन्य चार २ प्रासादावतसक कहे हैं ये कुच्छकम आठ योजन के ऊंचे व कुच्छ कम चार योजन के लम्बे चौडे हैं, गगन तल को अवलम्बन करके रहे हुवे होवे वैसे दीखते हैं उन मे पृथक्२ भद्रासन कहे हैं उन पर आठ २ मगल, ध्वजा व छत्रपरछत्र हैं यों सब मीलकर ८५ प्रासादावतसक की पंक्ति होती है मूल अंदर का एक, उस की आस पास चार, इन चार की आसपास १६ सो इन की आसपास ६४ यों सब मीलकर ८५ हुए ॥ ११५ ॥ उस मूल प्रासादावतसक से ईशान कून में विजय देव

वडेंसका एक्कतीस जोयणाइ कोसच उड्ढ उच्चत्तेण अद्ध सोलरस जोयणाइ अद्ध कोसच आयाम विक्खंभेण अब्भुग्गय तहेव ॥ तेसिण पासाय वडेंसगाण अतो बहु समरमणिज्ज भूमिभागा उल्लोता ॥ तेसिण बहु समरमणिज्ज भूमिभागाण बहुमज्झ देसभागे पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता ॥ तासिण अट्ठट्ठ मगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेण पासाय वडेंसका अण्णाहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासाय वडेंसएहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता, तेण पासायवडेंसगा अद्ध सोलस जोयणाइ अद्ध कोसच उड्ढ उच्चत्तेण, देसूणाइ अट्ठजोयणाइ आयामविक्खंभेण अब्भुगय तहेव

करते होवे वैसे हैं इन प्रासादावतसक के अदर बहुत समरमणीय भूमिभाग है उस के मध्य भाग में पृथक् २ [illegible] में प्रत्येक भद्रासन कहे हैं उन को आठ २ मगल, ध्वजा छत्रातिछत्र कहे हैं इन चार प्रासादावतसक मदार [illegible] के आगे इन से अर्ध ऊंचाइवाले चार २ प्रासादावतसक कहे हैं वह पनरह योजन व गगन [illegible] कोश के ऊंचे हैं और कुच्छकम आठ योजन अर्थात् सात योजन सवा तीन कोश के लम्बे चौड़े भूमि [illegible] बल को अवलम्बन कर के रहे होवे वैसे दीखाइरते हैं उन प्रासादावतंसक में बहुत समरमणीय भाग कहा है इस के मध्य बीच में पृथक् २ पद्मासन कहे हुए हैं. इन प्रासादोंपर आठ २ मगल,

रूवग सहस्स कलिया भिसमाणी भिब्भिसमाणि चक्खुलोयण लेसा सुहफासा सस्सिरिय रुवा कचणमणिरयणथूमियागा (थूमियागा) नाणाविह पचवण्ण घटा पडाग पडिमडितग्ग सिहरा धवला मिरीइकवय विणिमुयती लाउल्लोइय महिया गोसीस-सरसरत्तचदण दद्दरदिन्न पचगुलियतला उवचियचदणकलसा चदणघडसुकयतोरण पडि दुवारेदसभागा आसत्तोसत्तविउल वट्टवग्घारिय मल्लदामकलावा पचवरण सरससुरभिमुक्क पुप्फपुजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदरुक्कधूव मघमघत गधुद्धुयाभिरामा सुगध वरगध गधवट्टिभूता अच्छरगणसघसविकिण्णा दिव्वतुडिय मधुरसद्द सपइआ,

सुशोभित है, हजारों रूप के भेद से सहित है, तेजसे देदीप्यमान है, विशेष देदीप्यमान है, चक्षु से देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्श है, शोभनिक रूप है, सुवर्ण, मणि व रत्न के उस के शिखर हैं, विविध प्रकारके पांच वर्ण की घंटा पताका स शोभनीक उस का शिखर है, प्रकाश करनेवाले श्वेत कीरणों उस में से नीकलते हैं, गोमय (गोबर) से उस का भाग लींपा हुवा है, गोशीर्ष चदन, रक्त चदन व दर्दर चदन से पांचों अंगुलियों के छापे लगाये हैं, वहां चदन कलश स्थापन किये हैं, प्रतिद्वार के आगे चदन के घट का तोरण अच्छी तरह स्थापन किया है, नीचे भूमि पर विस्तीर्ण वर्तुलाकार लम्बी लटकती हुई पुष्पमालाओं का समुह है, पांच वर्णवाले सुगंधित पुष्प का पुंज है, कृष्ण चदन, श्रेष्ठ कुंदरुक धूप से

विजयस्स देवस्स सभासुधम्मा पण्णत्ता, अद्धतेरस जोयणाइं आयामेणं सक्का साइं छ जोयणाइं विक्खंभेणं णवजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेग खंभसतसंनिविट्ठा अब्भुग्गय सुकय वइरवेदिया, तोरणवर रतिय सालिभंजिया, सुसिलिट्ठ विसिट्ठ लट्ठ संठियपसत्थवेरुलियविमलखंभा णाणामणिकणगरयणखइयउज्जल बहुसम सुविभत्तचित्त रमणिज्ज कुट्टिमतला, ईहामिय उसभ तुरगणर विहग वालग किण्णर रुरु सरभ चमर कुंजर वणलय पउमलय भत्तिचित्ता खंभुग्गय- वइरवेइया परिगयाभिरामा विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तंपिव अच्चीसहस्समालणीया

की सुधर्मा सभा है वह १२॥ योजन की लम्बी है और ६। योजन की चौडी है, नव योजन की ऊंची है अनेक स्तंभ उस में रहे हुवे हैं अति रमणीय देखनेवाले को सन्मुख दीखसके वैसी वज्रमय वेदिका है, वहां अच्छी तरह बनाए हुए तोरण व पूतलियों हैं, सुबद्ध मनोहर संस्थानवाली हैं, प्रशस्त वैडूर्य रत्नमय स्तंभ हैं, उस सभाका विविध प्रकार के मणि, कनक, रत्न व वज्ररत्नसे उज्वल, समान, निबड आश्चर्य- कारी व मनोहर कुट्टिम भूमि तल है ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, मगरमच्छ, पक्षी, सर्प, किन्नर नामक व्यंतर देव, रुरु, सरभ, चमर, हाथी, वनलता व पद्मलता के विविध प्रकार के चित्रों हैं स्तंभ पर रही हुई वज्रमय वेदिका से चारों दिशि में मनोहर है, विद्याधरों के युगल जैसे हजारों कांति की मालाओं से

भूमिभाग वण्णओ ॥ तेसिण मुहमडवाण उवरिं पत्तेय २ अट्ठट्ठ मगलगा पण्णत्ता तंजहा सात्थिय जाव मच्छा ॥ तेसिण मुहमडवाण पुरओ पत्तय २ पेच्छाघर मडवगा पण्णत्ता, तेण पेच्छाघर मडवगा अद्धतेरस जोयणाइ आयामेण जाव दोजोयणाइ उड्ढु उच्चत्तेण जाव मणिफासा ॥ ११७ ॥ तेसिण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ वइरामया अक्खाडगा पण्णत्ता, तेसिण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ मणिपेढिया पण्णत्ता, ताओण मणिपेढियाओ जोयणमेग आयाम विक्खभेण अद्ध जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमइओ जाव पडिरूवा ॥ ११८ ॥

साधिक दो योजन के ऊचे हैं इन मुख मडप में अनेक स्थम रहे हुवे हैं यावत सब भूमिभाग का वर्णन करना इन मुख मडप पर स्वास्तिक यावत् मत्स्य के आठ २ मगल कहे हैं इन प्रत्येक मुख मडप के आगे पृथक् प्रेक्षाघर मडप कहे हैं ये प्रेक्षाघर मडप १२॥ योजन के लम्बे दो योजन के ऊचे यावत् मणिस्पर्श वाले कहे हैं ॥ ११७ ॥ इन के मध्य में पृथक् वज्ररत्न के अखाड कहे हैं इन की बीच में पृथक मणिपीठिका कही हैं ये मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी आधा योजन की जाडी है, सब मणिमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ११८ ॥ इन मणिपीठिका पर पृथक्

सव्वरयणामता अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ११५ ॥ तीसेणं साहम्माए सभाए तिदिसिं तओदारा पण्णत्ता तंजहा पुरच्छिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं तेणं दारा पत्तेयं २ दो दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं एगजोयणं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेयावर कणगथूभियागा जाव वणमालादारवण्णओ, तेसिणं दाराणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलज्झया छत्ताइ छत्ता ॥११६॥ तेसिणं दाराणं पुरओ तिदिसिं ततो मुहमंडवा पण्णत्ता, तेणं मुहमंडवा अद्ध तेरस जोयणाइं आयामेणं छजोयणाइं सकोसाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तेणं मुहमंडवा अणेग खंभसय सन्निविट्ठा जाव उल्लोया

मघमघायमान गंध वाली है, सुगंधमय श्रेष्ठ गंध वाली है, गंधवर्तीभूत है, अप्सराओं के समुदाय सहित है, दीव्य त्रुटितादि वाजिंत्र के मधुर शब्द सहित है, यह सभा सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ११८ ॥ इस सुधर्मा सभा की तीन दिशा में तीन द्वार कहे हैं पूर्व दक्षिण व उत्तर में ये द्वार दो योजन के ऊंचे एक योजन के चौडे व एक योजन के प्रवेश वाले हैं श्वेत श्रेष्ठ कनक के स्तम हैं यावत् वनमाला युक्त हैं इन द्वार पर बहुत आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपरछत्र कहे हैं ॥ ११९ ॥ इन द्वार के आगे तीन दिशा में तीन मुख मंडप कहे हैं ये मुख मंडप १२॥ योजन के लम्बे हैं छ योजन व एक कोस के चौडे हैं

सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तेसिण चेइय थूमाण उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा बहुकिण्हा चामरज्झया पण्णत्ता छत्तातिछत्ता ॥ तेसिण चेतियथूमाण चउद्दिसिं पत्तेय २ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ताओण मणिपेढियाओ जोयण आयाम-विक्खमेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्वमणिमया जाव तासिण मणिपेढियाण उप्पिं पत्तेय २ चत्तारि जिणपडिमाओ जिणुस्सेह पमाणमित्ताओ पलियंक णिसण्णाओ थूमाभिमुहीओ सन्निविक्खित्ताओ चिट्ठति तजहा उसभ वद्धमाण चंदाणण वारिसेण॥१२०॥ तेसिण चेतिय थूमाण पुरतो तिदिसिं पत्तेय २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ, ताओण मणिपेढियाओ दो जोयणाइं आयामविक्खंभेण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमईओ अच्छाओ

कहे हुवे हैं उन चैत्यस्तूप की चार दिशा में चार मणिपीठिकाओं हैं यह मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी, आधा योजनकी जाड, सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है उन प्रत्येक मणिपीठिका पर पृथक् २ जिन प्रतिमा हैं ये जिन के शरीर प्रमान ऊंची, स्तूप के सन्मुख मुख रख रही हुई हैं इन जिन प्रतिमा के नाम वृषभ, वर्धमा, चन्द्रानन, व वारीसेन ॥ १२० ॥ चैत्यस्तुप के आगे तीन दिशाओं में पृथक् २ मणिपीठिकाओं कही है ये दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी है

तासिण मणिपेढियाए उप्पिं पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओ जाव दामा ओपरिवारा ॥ ११९ ॥ तेसिण पेच्छाघर मडवाण उप्पिं अट्ठट्ठमगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेसिण पच्छाघर मडवाण पुरतो तिदिसिं तओ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ॥ताओण मणिपेढियाओ दो जोयणाइ आयामविक्खमेण, जोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमइओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिण मणिपेढियाण उप्पिं पत्तेय २ चेइय थूभा पण्णत्ता तेण चेइयथूभा दो जोयणाइ आयामविक्खमेण साइरेगाइ दो जोयणाइ उड्ढु उच्चत्तेण सेया सख ककुदद्गरयअमतमहित फेणपुज सन्निकासा

अर्थ

सिंहासन कहे हैं यहां पूर्ववत् सिंहासन का वर्णन कहदेना यावत् पुष्प की मालाओं कही हुई है ॥११९॥ उन प्रेक्षाघर मण्डप पर आठ २ मंगल, ध्वजा व छत्रातिछत्र कहे हैं इन की आगे तीन दिशाओं में तीन मणिपीठिका हैं ये दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी है सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं, इन पर पृथक् २ चैत्यस्तूप कहे हैं, ये दो योजन के लम्बे चौडे और साधिक दो योजन के ऊंचे हैं श्वेत शंख, कुन्दरक, पानी के कन, अमृत व समुद्र के फेन समान स्वच्छ निर्मल उज्ज्वल यावत् प्रतिरूप हैं उन चैत्यस्तूप पर आठ २ मंगल हैं बहुत कृष्ण वर्ण वाले चामर, ध्वजा व छत्रातिछत्र

विविहसाहप्पसाहवरुलिय पत्त, तवणिज्ज पत्तवेंटा, जंबुणयरयमउय पल्लव सुकुमाल पवाल सोभत वरकुहरग्ग सिहारा, विचित्त मणिरयणसुरभि कुसमफल भरियणमियसाला सच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया अमयरससमरसफला अहियणयण मणणिवुत्तिकरा पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥१२३॥ तेसिणं चेइयरुक्खा अन्नेहिं बहूहिं तिलयलवय छत्तोवग सिरीस सत्तवण्ण दहिवण्ण लोद्धव चदण निंब कुडय कयंब पणस तालतमाल पियाल पियगु पारावयरायरुक्ख नंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता सपरिक्खित्ता तेणं तिलय जाव नंदिरुक्खा मूलवंतो कंदवंतो जाव सुरम्मा, तेणं तिलया जाव

पत्र हैं, सुवर्णमय पत्र के बींट हैं, जम्बूनद रत्नमय लालवर्णवाले मृदु मनोज्ञ पल्लव हैं, सुकोमल प्रवाल से सुशोभित प्रधान अंकुर के अग्रशिखर हैं, विचित्र प्रकार के मणि रत्नमय सुगंधित पुष्प फल से उन की शाखा नम्न बनी हुई हैं, छाया युक्त, क्रांति सहित, सश्रीक, उद्योत सहित, अमृत रस समान फलवाले मन व नयन को आनंद करनेवाले, प्रसन्नकारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥१२३॥ इन वृक्षों की चारों तरफ अन्य अनेक तिलक वृक्ष, छत्रोपगाय, सिरीष वृक्ष, सप्तसदा के वृक्ष दधिपर्ण के वृक्ष, लोध्र वृक्ष, धव वृक्ष, चंदन वृक्ष, कुटज वृक्ष, कदंब वृक्ष, फणस वृक्ष, ताड वृक्ष, तमाल वृक्ष, पियाल वृक्ष, पियगु वृक्ष, पारावत वृक्ष, नंदीवृक्ष व इत्यादि वृक्ष रहे हुवे हैं वे तिलक वृक्ष यावत्

लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ निप्पंकाओ णीरइयाओ जाव पडिरूवाओ॥ १२१ ॥तासिण मणि पेढियाण उप्पिं पत्तेय २ चेतियरुक्खा पण्णत्ता,तेसिण चेतियरुक्खा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण,अद्ध जोयणाइ उव्वेहेण,दो जोयणाइ खंधो अद्ध जोयणाइ विक्खंभेण छज्जोयणाइ विडमा,बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइ आयाम विक्खंभेण, सातिरेगाइ अट्ठ जोयणाइ सव्वग्गेण पण्णत्ताइ ॥ १२२ ॥ तेसिण चेतियरुक्खाण अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा-वइरामयमूल रययसुपइट्ठिया सुविडिमा, रिट्ठामय विपुलकंदा, वेरुलियरुचिलक्खंधासु जाय वरजाय रूव पढमगविसालसाला, णाणामणिरयण

सब मणिमय स्वच्छ, श्लक्ष्ण, घठारी, मठारी, पंक रहित रज रहित यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२१ ॥ प्रत्येक मणि पीठिकापर चैत्य वृक्ष हैं ये चैत्य वृक्ष आठ योजन के ऊंचे हैं आधा योजन जमीन अंदर हैं दो योजन का स्कंध हैं, आधा योजन का स्कंध जाडपनेमें हैं, छ योजन की शाखा है, वह शाखा बीच में आधा योजन की चौडी है और वे वृक्ष सब मीलकर आठ योजन से कुच्छ अधिक कहे हैं ॥ १२० ॥ इन चैत्य वृक्षों का ऐसी वर्णन कहा है इन का वज्ररत्नमय मूल है, चांदी की शाखा है रिष्ट रत्न के स्कंध है, वैडूर्य रत्नमय कंद है, अच्छी तरह निष्पन्न हुई मूल से विस्तार युक्त सुवर्णमय शाखा है, विविध प्रकार के मणि व रत्नमय विविध प्रकार की शाखा व प्रति शाखा है, वैडूर्य रत्नमय

मट्ठ सुपतिट्ठिया विसिट्ठा अणेगवर पचवण्ण कुडभिसहस्स परिमाडियाभिरामा वाउद्धुय विजय वेजयती पडाग छत्तातिछत्त कालिया, तुगागगणतल ममिलघमाण-सिहरा पासादीया जाव पडिरूवा ॥ १२६॥ तेसिं महिंदज्झयाण उप्पि अट्ठट्ठ मगल ज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १२७ ॥ तेसिण महिंदज्झयाण पुरतो तिदिसिं तओ णदा-पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, ताओण पुक्खरिणीओ अद्धतेरस जोयणाइ आयामेण, सक्कोसाइ छ जोयणाइ विक्खभेण दस जोयणाइ उव्वेहेण अच्छाओ सण्हाओ पुक्खरिणी वण्णओ पत्तेय २ पउमवरवेतियाओ परिक्खित्ताओ, पत्तेय २ वणसड परिक्खित्ताओ वण्णओ जाव पडिरूवाओ ॥ १२८ ॥ तेसिण णदाण पुक्खरिणीण

सुशोभित हैं मनोहर हैं, वायु से उडती हुई, विजय, वैजयन्ती नामक पताका और छत्र पर छत्र से युक्त हैं गगन तल को उल्लंघन करती होवे इतने उन के शिखर ऊंचे हैं प्रसन्नकारी यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२६ ॥ इस महेन्द्र ध्वजा पर आठ २ मगल ध्वजा व छत्र पर छत्र है ॥ १२७ ॥ महेन्द्र ध्वजा के आगे तीन दिशा में तीन नदा पुष्करणी हैं ये साढी बारह योजन की लम्बी सवा छे योजन की चौडी व दश योजन की ऊंडी है यह स्वच्छ, सुकोमल वगैरह सब पुष्करणीका वर्णन पूर्ववत् जानना प्रत्येक वावडिको एक २ पद्मवर वेदिका वेष्टित है और प्रत्येक वेदिका को एक २ वनखण्ड है यावत् वह प्रतिरूप है

नदिरुक्खा अण्णेहिं बहुहिं पउमलयाहिं जाव सामलयाहिं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता, ताओण पउमलयाओ जाव सामलयाओ निच्च कुसुमियाओ जाव पडिरूवाओ तेसिण चेइयरुक्खाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलकाझया छत्तातिछत्ता ॥ १२४ ॥ तेसिण चेतियरुक्खाण पुरओ तिदिसिं तओ मणिपेढियाओ जोयण आयाम विक्खंभेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्वमणिमयीओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥१२५॥ तेसिण मणिपेढियाण उप्पिं पत्तेय २ महिंदज्झया अट्ठमाइं जोयणाइं उड्ढ उच्चत्तेण अद्धकोस उव्वेहेण अद्धकोस विक्खंभेण वइरामय वट्टलट्ठ संठिय सुसिलट्ठ पारघट्ठ

नंदी वृक्ष मूल वाले यावत् सुरम्य हैं इन तिलक वृक्ष यावत् नंदि वृक्ष की आसपास बहुत पद्मलता यावत् श्यामलता विंटी हुई रही हैं, वे पद्म लता यावत् श्यामलता सदैव पुष्प वाली यावत् प्रतिरूप हैं चैत्य वृक्ष पर आठ मंगल, ध्वजा व छत्रपरछत्र है ॥ १२४ ॥ इन चैत्यवृक्षों के आगे तीन दिशाओं में तीन मणिपीठिकाओं हैं वे एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२५ ॥ इन प्रत्येक मणिपीठिका पर पृथक् महेन्द्र ध्वजा है, वह साढे सात योजन ऊंची आधा कोस ऊंडी व आधा कोस की चौडी हैं वज्र रत्नमय वर्तुलाकार हैं, अच्छी तरह से सी हुई, मसालित की हुई, समविह व विशिष्ट है, और भी वह महेन्द्र ध्वजा अन्य सहस्र ध्वजाओं से

सुधम्माए छगोमाणसीय साहस्सीओ पण्णत्ताओ तंजहा पुरत्थिमेण दो साहस्सीओ एव पच्चत्थिमेणवि दो साहस्सीओ, दाहिणेण एग सहस्स एव उत्तरेणवि॥तासुण गोमाणसीसु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता जाव तेसुण वइरामएसु नागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता तेसूण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीयाओ पण्णत्ताओ,ताओण धूवघडीयाओ कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्क जाव घाणमण णिव्वुइ करेण गंधेण सव्वओ समता आपूरेमाणीओ चिट्ठति ॥ १३१ ॥ सभाएण सुधम्माए अंतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासा उल्लोया पउम-

प्रतिरूप हैं ॥ १३० ॥ सुधर्मा सभा में छ गोमानसीका—शैय्या रूप स्थानक हैं जिन में पूर्व में दो हजार, पश्चिम में दो हजार, दक्षिण में एक हजार व उत्तर में एक हजार इन गोमानसीका में सा चांदी क पटिये हैं यावत् उन वज्ररत्न के नागदंत पर चांदी के [illegible] हैं उस चांदी के सिके पर वैडूर्य रत्न की धूपघटी कही है उस में प्रधान कृष्णागर, कुंदरुक्क प्रमुख रख हुवे हैं यावत् नासिका व मन को सुख उत्पन्न करे वैसा गंध से सब स्थान पुरा हुवा है ॥ १३१ ॥ सुधर्मा सभा में बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यावत् मणिका स्पर्श है, चन्द्रमा व पद्मलता के चित्रों हैं यावत् सब सुवर्णमय स्वच्छ

पत्तेय २ तिदिसिं तओ तिसोमाण पडिरूवगा पण्णत्ता ॥ तेसिण तिसोमाण पडि-रूवगाण वण्णतो तोरण वन्नओ भाणियव्वो जाव छत्ताइछत्ता ॥ १२९ ॥ सभाएण सुधम्माए छमणगुलिया साहस्सीओ पण्णत्ताओ तंजहा—पुरत्थिमेण दो साहस्सीओ पच्चत्थिमेण दो साहस्सीओ दाहिणेण एग साहस्सीओ उत्तरेण एग साहस्सीओ, तासुण मणगुलियासु बहवे सुवण्ण रुप्पमया फलगा पण्णत्ता, तेसुण सुवण्ण-रुप्पामएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता, तेसुण वइरामएसु नागद-तएसु बहवे किण्हसुत्तवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा जाव सुक्किलवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा जाव तेणदामा तवणिज्ज लंबूसगा जाव चिट्ठंति ॥ १३० ॥ समाएण

॥ १२८ ॥ उन प्रत्येक नंदा पुष्करणी से तीन दिशा में तीन २ त्रिसोपान हैं वे यावत् प्रतिरूप हैं त्रिसोपान व तोरण का वर्णन पूर्ववत् करना यावत् छत्रातिछत्र है ॥ १२९ ॥ सुधर्मा सभा में छ मनो गुलिका नामक पीठिका (बैठने के चबूतरे) कही हैं जिस में पूर्व दिशा में दो हजार, पश्चिम दिशा में दो हजार, दक्षिण दिशा में एक हजार व उत्तर दिशा में एक हजार है उन पीठिका पर सोने चांदी के बहुत पाटिये हैं, उन पाटियों पर वज्रमय नागदंत कहे हैं इन वज्रमय नाग दांत में कृष्ण वर्णवाले यावत् शुक्ल वर्णवाले सूत्र से गुंथी हुई पुष्पों की माला के समुदाय हैं उन को लाल सुवर्ण के झूमके हैं यावत्

सुधम्माए छगोमाणसीय साहस्सीओ पण्णत्ताओ तंजहा पुरत्थिमेण दो साहस्सीओ एव पच्चत्थिमेणवि दो साहस्सीओ, दाहिणेण एग सहस्स एव उत्तरेणवि॥तासुण गोमाणसीसु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता जाव तेसुण वइरामएसु नागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता तेसूण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीयाओ पण्णत्ताओ,ताओण धूवघडीयाओ कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्क जाव घाणमण णिव्वुइ करेण गंधेण सव्वओ समंता आपूरेमाणीओ चिट्ठति ॥ १३१ ॥ सभाएण सुधम्माए अंतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासा उल्लोया पउम-

प्रतिरूप है ॥ १३० ॥ सुधर्मा सभा में छ गोमानसीका-शैय्या रूप स्थानक हैं जिन में पूर्व में दो हजार, पश्चिम में दो हजार, दक्षिण में एक हजार व उत्तर में एक हजार इन गोमानसीका में सो चांदी के पटिये हैं यावत् उन वज्ररत्न के नागदांत पर चांदी के [illegible] हैं उस चांदी के सिके पर वैडूर्य रत्न की धूपघटी कही है उस में प्रधान कृष्णागर, कुंदरुक प्रमुख रख हुवे हैं यावत् नासिका व मन को सुख उत्पन्न करे वैसी गंध से सब स्थान पूरा हुवा है ॥ १३१ ॥ सुधर्मा सभा में बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यावत् मणिका स्पर्श है, चन्द्रमा व पद्मलता के चित्रों हैं यावत् सब सुवर्णमय स्वच्छ

लप माचिचिओ जाव सव्व तवणिज्जमए अच्छे जाव पडिरूवे ॥ तस्सण बहुसमरम-
णिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता, साण
मणिपाढिया दो जोयणाइ आयामविक्खभेण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई ॥१३२॥
तीसेण मणिपेढियाए उप्पि एत्थण माणवए णाम चेतिय खभे पण्णत्ते अट्ठट्ठमाइ
दो जोयणाइ उड्ढ उच्चतेण अद्धकोस जाव उव्वेहेण अद्धकोस विक्खभेण
छकोडिएछलंसे छसुविग्गाहिए वइरामयवट्टलट्ठि सठिते, एव जहा महिंद-
ज्झयस्स वण्णओ जाव पासादीए ॥ १३३ ॥ तस्सण माणवकस्स चेतियखभस्स
उवरिं छक्कोसे उगाहित्ता हेट्ठावि छक्कोस वज्जित्ता मज्झे अद्धपचमेसु जोयणे सुवण्ण

यावत् प्रतिरूप है उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में एक मणि पीठिका कही है यह दो योजन की
लम्बी चौडी, एक योजन की जाडी यावत् मणिमय है ॥ १३२ ॥ उस मणिपीठिका पर एक माणवक
नामक चैत्य स्तभ है यह साडेसात योजन का ऊंचा, आधा कोश का ऊंडा, आधा कोश का चौडा है
इस को छ कोटि-कूने हैं, छ हांस व छ सधि, हैं व छ स्थानक से सुशोभित है वज्ररत्नमय वर्तुलाकार
यावत् वगैरा महेन्द्र ध्वजा जैसा वर्णन जानना यावत् मनप्रकारी है ॥ १३३ ॥ इस माणवक चैत्य
स्थम को छ कोश ऊपर व छ कोश नीचे छोडकर बीच के साडे चार योजन में सोने चांदी के पटिये में

रुप्पमयफलगेसु बहवे वइरामयाणाग दंता पण्णत्ता, तेसुण वइरामएसु नागदंतएसु रययामयासिक्कगा पण्णत्ता, तेसुण रययामयसिक्कएसु बहवे वयरामयगोलवट्ट समुग्गका पण्णत्ता, तेसुण वइरामए गोलवट्ट समुग्गए बहवे जिणस्स कहाओ सनिक्खित्ताओ चिट्ठति, जेण विजयस्स देवस्स अण्णेसिंच बहूण वाणमंतराण देवाण देवीणय अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाण मंगल देवय चइय पज्जुवासणिज्जाओ ॥ माणवकस्सण चेतियस्सखंभस्स उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १२४ ॥ तस्सण माणवकस्स

बहुत वज्ररत्न के नागदंत (खूटे) कहे हैं इन नागदंत में चांदी के सिके कहे हैं उन रुपामय सिके में समुद्गक (डब्बे) रखे हैं उस में अच्छी तरह से जिनदाढों रखी हुई हैं विजय देवता, अन्य बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों को ये दाढा अर्चना, वंदना व पूजा करने योग्य हैं, सत्कार करने योग्य हैं, सन्मान देने योग्य है, उन को यह कल्याणकारी, मंगलकारी, देव समान, चैत्य समान व पर्युपासना करने योग्य है × उस माणवक चैत्य स्तंभ पर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपरछत्र कहे हैं ॥१२४॥ उस माणवक

× यह दाढारूप शाश्वत पुद्गल वस्तु जानना परंतु तीर्थंकर की दाढा नहीं है

जैसे इस मनुष्य लोक में ऐहिक सुख के लिये देवतादिक की सेवा करते हैं वैसे ही देवताओं को इन दाढा की

चेतियखभस्स पुरत्थिमेण एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता सा ण मणिपेढिया दो जोयणाइ आयामविक्खभेण, जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पि एत्थण एगेमह सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ॥ तस्सण माणवगस्स चेतियखभस्स पुच्चत्थिमेण एत्थण एगामह मणिपेढिया पन्नत्ता, साण मणिपेढि एग जोयण आयामविक्खभेण अद्ध जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ १२५ ॥ तीसेण मणिपढियाए उप्पि एत्थण एगेमह देवसयणिज्जे पण्णत्ते, तस्सण

चैत्य स्तभ से पूर्व में एक बडी मणिपीठिका कही है वह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणिपीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का वर्णन पूर्ववत् जानना उस माणवक चैत्य स्तभ से पश्चिम में एक बडी मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी व सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है ॥ १ ॥ उस मणिपीठिका पर एक बडा देव शयन (देवशैय्या) कहा है इस का इस तरह वर्णन करते हैं, विविध मणिमय प्रतिपाद हैं

सब केवल ससार निमित्त है देवताओं का यह जीत व्यवहार है भव्य, अभव्य, समदृष्टि मिथ्यात्वी सब इन का पूजन करते हैं यहां पर दाढा मात्र देवता को ही पूजने योग्य ग्रहण की है

देवसयणिज्जस्स अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा—नाणामणिमया पेढीपादा, सोवण्णियापादा, नाणामणिमया पायसीया, जबूणदमया तिगत्ताइ, वइरामया सधी, नाणामणिमयेवेच्चे, रययामयातूली, लोहियक्खमया विव्वायणा, तवणिज्जमयी गडोवहाणीया ॥ सेण देवसयणिज्जे सालिंगणवट्टिए दुहओविव्वोयणे दुहओउण्णये मज्झणये गभीरे गगापुलिणवालुउद्दालसालिसये, उवचियखोमदुगुल्लपट्ट पडिच्छयणे, सुविरइरयत्ताणे रत्तसुयसवुड सुरम्म आइणगरुत बूर णवणीय तूलफासे मउए पासादीए ॥ १३६ ॥

सुवर्णमय पाद, विविध मणिमय पांव के ऊपर के भाग, जम्बूनद रत्नमय चस के अग [ईस ऊपले] वज्र रत्नमय सधी, अनेक प्रकार के मणिमय निवार, रत्नमय तलाइ, लोहिताक्ष रत्नमय तकिये, और सुवर्णमय गालमसूर है यह देव शैय्या शरीर प्रमाण हैं, मस्तक व पाव की पास दो तकिये रखे हैं, मस्तक व पांव की पास कुच्छ ऊंची है, और बीच में गंभीर है, गगा नदी की वालु में पांव रखने से जैसे अधो गमन होवे वैसे ही है विचित्र क्षौमदुगुल वस्त्र, कपासका वस्त्र दुकल, पटुकुल से बनाया हुआ वस्त्र देव दुष्य से वह आच्छादित हुई है, अच्छी तरह बनाये हुवे रजस्त्राण व वस्त्र साहित है, लाल वस्त्र से वह पलग ढका हुवा है, मनोहर है, मृगचर्म, बूर, मक्खन, अर्कतूल जैसा स्पर्श है देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है ॥१३६॥

चेतियखभस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता। साणं मणिपेढिया दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई जाव पडिरूवा॥ तीसेणं मणिपेढियाए उप्पिं एत्थणं एगेमहं सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ॥तस्सणं माणवगस्स चेतियखंभस्स पच्चत्थिमेणं एत्थणं एगामहं मणिपेढिया पन्नत्ता, साणं मणिपेढि एगं जोयणं आयामविक्खंभेणं अद्ध जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा॥ १३५॥ तीसेणं मणिपेढियाए उप्पिं एत्थणं एगेमहं देवसयणिज्जे पण्णत्ते, तस्सणं

चैत्य स्तंभ से पूर्व में एक बडी मणिपीठिका कही है वह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणिपीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का वर्णन पूर्ववत् जानना उस माणवक चैत्य स्थंभ से पश्चिम में एक बडी मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी व सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है॥ १॥ उस मणिपीठिका पर एक बडा देव शयन (देवशैय्या) कही है इस का इस तरह वर्णन करते हैं, विविध मणिमय प्रतिपाद हैं

सदा केवल संसार निमित्त है देवताओं का यह जीत व्यवहार है भव्य, अभव्य, समदृष्टि मिथ्यात्वी सब इन का पूजन करते हैं यहां पर दाढा मात्र देवता को ही पूजने योग्य ग्रहण की है

पासादिया ॥ सभाएण सुधम्माए उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १३८ ॥ सभाए सुधम्माए उत्तरपुरच्छिमेण एत्थणं एगेमहं सिद्धायतणे पण्णत्ते अद्धतेरस जोयणाइं आयामेण छ जोयणाइं सकोसाइं विक्खंभेण नवजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण जाव गोमाणसिया वत्तव्वया जाचेव सभाए सुहम्माए वत्तव्वया साचेव निरवसेसा भाणियव्वा तहेव दारा,मुहमंडवा, पेच्छा घरमंडवा, थूभा,चेइयरुक्खा, महिंदज्झया, णंदाउयपुक्खरिणीओ सुधम्मा सरिसप्पमाण, मणगुलिया सुदामा गोमाणसी धूवघडियाओ तहेव भूमिभागे उल्लोयण जाव मणिफास ॥ १३९ ॥ तस्सण सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता दो जोयणाइं

सभा पर आठ मंगल २ ध्वजा व छत्रपरछत्र हैं ॥ १३८ ॥ सुधर्मा सभा की ईशान कून में एक बडा सिद्धायतन कहा हुवा है वह साढे बारह योजन का लम्बा सवा छे योजन का चौडा, नव योजन का ऊंचा यावत् गोमानसीक की वक्तव्यता कहना जैसी सुधर्मा सभा की वक्तव्यता कही वह सब निरवशेष यहां कहना द्वार, मुखमंडप प्रेक्षाघर मंडप, स्तूप, चैत्य वृक्ष, महेन्द्र ध्वजा, नंदा पुष्करणी, सुवर्ण समान पीठिका, पुष्पदाम, शैय्या, धुपादे सब वैसे ही जानना वैसे ही भूमिभाग में यावत् ऊपर के भाग में यावत् मणिस्पर्श पर्यंत कहना ॥ १३९ ॥ उस सिद्धायतन के मध्य भाग में एक बडी मणिपीठिका कही

तस्सण देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरत्थिमेण मणिपेढिया पण्णत्ता, तेण मणिपेढिया जोयणमेग आयामविक्खंभेण, अद्धजोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमयी जाव अच्छा ॥ तीसेण मणिपाढयाए उप्पिं एगे मह खुड्डमाहिंदज्झये पण्णत्ते अट्ठट्ठमाइ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तण अद्धकोस उव्वेहेण अद्धकोस विक्खभण वइरामयवट्ट लट्ठसठिते तहेव जाव मगलरुया छत्तातिछत्ता ॥ १३७ ॥ तस्सण खुड्डमाहिंदरुयस्स पच्चत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चुप्पालये नाम पहरणकोसे पण्णत्त, तत्थण विजयस्स देवस्स फलिहरयणपमोक्खा बहवे पहरणरयणा सण्णिक्खित्ता चिट्ठति, उज्जलसुणीसिय सुतिक्खधारा

उस देव शैय्या की ईशानकून में एक मणिपीठिका है यह मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी है आधा योजन की जाडी है सब मणिमय यावत् स्वच्छ है उस मणिपीठिका पर एक बडी क्षुल्लक नाम महा ध्वजा है, यह साडेसात योजन ऊंची, आधा कोश ऊंडी व आधा कोश चौडी है वज्ररत्नमय, वर्तुलाकार अच्छा तरह घोसी हुइ वगैरह सब पूर्ववत् जानना यावत् मंगल रूप व छत्रातिछत्र है ॥ १३७ ॥ उस क्षुल्लक मान्द्र ध्वजा से पश्चिम दिशा में विजयदेव का चौपाल नामक प्रहरण कोष [शस्त्रभंडार] है वहां विजयदेवता के स्फटिक प्रमुख बहुत शस्त्ररत्न रखे हैं, वे उज्ज्वल, तेजवंत व तीक्ष्णधार वाले हैं मनमकारी हैं सुवर्ण

अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—तवणिज्जमती हत्थतला, पायतला, अकामयाइ णहाइ अतोलोहियक्खपरिसयाइ, कणगामयापादा, कणगामयागोफा, कणगमईओ जघाओ, कणगामयाजाणु, कणगामयाउरु, कणगमईओ, गायलट्ठीओ तवणिज्जमईउ णाभीओ, रिट्ठमईओ रामराजीओ, तवणिज्जमया चुचुया, तवणिज्जमया सिरिवच्छा, कणगमईओ गीवाओ, रिट्ठामयमसू सिलप्पवालमयाओट्ठा, फलिहमयादता, तवणिज्जमईओ जिहाओ, तवणिज्जमया, तालुया, कणगमईओ नासाओ, अतो लोहितक्ख परिसेयाओ, अकामयाइ अत्थीणि, अतो लोहितक्ख परिसेताति, पुला,

उस में लोहिताक्ष रत्नमय रखा है, सुवर्णमय पांव, घूटण, जघा, जानु, उरु, गात्र हैं तपनीय की नाभि हैं, रिष्ट रत्नमय रोमराजी है तपनीयमय स्तनके (चुचु) अग्रभाग हैं रक्त सुवर्णमय हृदय है, कनकमय ग्रीवा रिष्ट रत्नमय दाढी, प्रवालमय ओष्ट, स्फटिक रत्नमय दांत, रक्त सुवर्णमय तालूआ, कनकमय नासिका उस में लोहिताक्ष रत्न की रेखा है अंक रत्नमय चक्षु जिन में लोहिताक्ष रत्नमय रेखा हैं पुलाक रत्नमय दृष्टी, रिष्ट रत्नमय ताराओं, भांपण व भ्रमर है कनकमय कपाल, कर्ण व ललाट है, वज्र रत्नमय मस्तक है, रक्त सुवर्णमय केश की भूमि (मस्तक की टट) है, रिष्ट रत्नमय मस्तक के केश हैं प्रत्येक जिन प्रतिमा पीछे छत्र धारण करने वाली प्रतिमा कही हैं, वे प्रतिमा हिम, चांदी, मुचकुंद के पुष्प समान

आयामविक्खमेण, जोयणाइ बाहल्लेण सव्वमणियाए अच्छा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पि एत्थण एगेमह देव छदए पण्णत्ते, दो जोयणाइ आयाम विक्खमेण साइरेगाइ दो जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण सव्वरयणामए अच्छे ॥ तत्थण देवछदए अठसत जिण पडिमाण जिणुस्सेहप्पमाणमेत्ताण सनिक्खित्त चिट्ठइ ॥१४०॥ तेसिण जिणपडिमाण

है यह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी सब मणिमय व स्वच्छ है, उस मणिपीठिका पर एक बडा देव छदक कहा है यह दो योजन का लम्बा चौडा है साधिक दो योजन ऊचा है, सब रत्नमय स्वच्छ है उस में एकसो आठ जिन प्रतिमा जिन शरीर प्रमाण ऊची रही हुइ है +॥१४०॥ उन जिन प्रतिमा का ऐसा वर्णन कहा है रक्त सुवर्णमय हाथ व पाव के तल है, अक रत्नमय नख है,

+ श्लोक—अरिहंवापि जिनो चेव, जिनो सामान्य केवली ॥ कदर्पोपि जिनाश्चेव, जिनो नारायणो हरि ॥ १ ॥

अर्थ—हेमचन्द्राचार्यकृत हेम नाममाला में–१ अर्हन्त २ केवली ३ कामदेव व ४ नारायण इन चार को जिन कहे हैं इस से यह प्रतिमा कामदेव की मानी जाती है, तथा स्थानागजी सूत्र में–१ अवधि ज्ञानी, २ मन पर्यव ज्ञानी व ३ केवल ज्ञानी, तीन प्रकार के जिन कहे हैं जिस से यह प्रतिमा अवधि ज्ञानी जिन की मानी जाती है

उववाइजी सूत्र में श्रीमहावीर भगवान के शरीर के वर्णन में चूचू का कथन नहीं आया है और यहा चुचु का कथन आया जिस से यह तीर्थंकर की प्रतिमा नहीं है

पुज सण्णिकासाओ सुहमरयतदीहवालाओ धवलाओ चामराओ सलील उहारमाणीओ २ चिट्ठति॥तासिण जिणपडिमाण पुरतो दो दो नागपडिमाओ जक्खपडिमाओ भूतपडिमाओ कुडधारपडिमाओ विणउणयाओ, जलिउढाओ, सणिक्खित्ताओ चिट्ठति, सव्वरययामईआ अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णिरयाओ णिप्पकाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिण जिणपडिमाण पुरतो अट्ठसत घटाण, अट्ठसत चदणकलसाण, एव भिंगारगाण आयसाण थालाण, पातीण, सुपतिट्ठकाण, मणगुलियाण, वायकरगाण, वितारयण करडगाण, हयकठाण जाव उसभकठाण, पुप्फचगरीण, जाव लोमहत्थचगेरीण, पुप्फपडलगाण, अट्ठसय तेलसमुग्गाण, जाव धूवकडुच्छुयाण सण्णिक्खित्त चिट्ठति ॥ सिद्धायतणस्सण उप्पि बहवे अट्ठ मगलगा ज्झया छत्तातिछत्ता, उत्तिमागारा, सालसविहेहिंरयणेहिं उवसो-

मठारी, रन व पक राहित यावत् प्रतिरूप है उन जिन प्रतिमा आगे १०८ घंटे १०८ चदनकलश, १०८ भृगार, १०८ आरिसा, १०८ स्थाल, १०८ पात्री, १०८ सुप्रतिष्ठक व १०८ मनोगुलिका १०८ पंखे १०८ मनोहर रत्न करंड १०८ हयकंठ यावत् १०८ वृषभकंठ १०८ पुष्पकी चगरी, १०८ पुष्प के पटल, १०८ तेल समुद्र, यावत् १०८ धूप के कुडछे रहे हुवे हैं सिद्धायतन के उपर बहुत आठ २ मंगल ध्वज व छत्रपर छत्र है उत्तम आकार वाले व सोलह प्रकार के रत्नों से शोभानिक हैं तद्यथा-रत्न

कामइओ दिट्ठीओ रिट्ठामईओ तारगाओ, रिट्ठामयाइ अच्छिपत्ताइ, रिठामइओ भमूहाओ, कणगामयाकवोला, कणगामयासवणा, कणगामयानिडाला, वइरामईओ सीसघडीओ, तवणिज्जमईओ केसत केसभूमिओ रिट्ठामया उवरिमुद्धया ॥ तासिण जिणपडिमाण पाच्छितो पत्तेय२ छत्ताधारपडिमाओ पण्णत्ताओ तओण छत्ताधार पडिमाओ हिमरयत कुंदकुप्पगासाइ कोरिंटमल्लदामाइ धवलाइ आयवत्ताति सलील उहारेमाणीओ २ चिट्ठति ॥ तासिण जिणपडिमाण उभओपासिं पत्तेय २ चामर धारपडिमाओ पण्णत्ताओ ताओण चामरधारपडिमाओ चदप्पहवेरुलियणाणामणिकणगरयण विमल महरिहतवणिज्जुज्जल विचित्तदडाओ, चिल्लीयाओ सखककुदद्गरय महितफेण

कोरंट वृक्ष के श्वेत पुष्पों वाला छत्र धारण कर लीला सहित खडी रही है उन प्रत्येक जिन प्रतिमाओं के दोनों बाजु पृथक् चामर धारन करने वाली प्रतिमा हैं वे प्रतिमा चद्रप्रभा वैडूर्य रत्न, विविध प्रकार के मणि व कनक रत्न वाले निर्मल महा मूल्य वाले सुवर्णमय उत्तम दड वाले शख, अकरत्न, मुचकुंद, पानी के कन, अमृत व समुद्र फेन समान उज्वल सुखकारी चांदी के बाल वाले श्वेत चामरों लेकर लीला करती हुइ रही है, इन प्रत्येक प्रतिमा के आगे दो२ नाग प्रतिमा दो२ भूत प्रतिमा, और दो२ कुंडधार प्रतिमा विनय से नमती हुई हाथ जोडती हुई रही है वे सब रत्नमय, स्वच्छ, लक्ष्ण सुक्ष्म, पकारी,

सेण हरए अद्ध तेरस जोयणाइ आयामेण सक्कोसाइ छ जोयणाइ विक्खंभेण, दस जोयणाइ उव्वहेण, अच्छे सण्हे वण्णओ जहेव णदापुक्खरिणीण जाव तोरण वण्णओ ॥ १४३ ॥ तस्सण हरतस्स उत्तरपुरत्थिमेण एत्थण एगामह अभिसेय सभा पण्णत्ता जहा सभासुधम्मा तचेव निरवसेस जाव गोमाणसीओ भूमिभाए उल्लोए, तत्थेव तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता, जोयण आयामविक्खंभेण सव्वमणिमया अच्छा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण मह सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ, अपरिवारो, तत्थण विजयस्स देवस्स सुबहुअभिसेक्क भंडेसण्णिक्खित्ते चिट्ठति ॥

द्रह कहा है वह साढी बारह योजन का लम्बा, सवा छे योजन का चौडा, दश योजन का ऊंचा स्वच्छ वगैरह वर्णन योग्य है इस का वर्णन नंदा पुष्करणी जैसे जानना यावत तोरण का वर्णन कहना ॥१४३॥ उस द्रह से ईशानकून में एक बडी अभिषेक सभा है, इस का वर्णन सुधर्मासभा जैसे गोमानसी भूमि भाग पर्यंत कहना उस भूमि भाग के मध्य में एक मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी यावत् सब मणिमय स्वच्छ है उस मणिपीठिका ऊपर एक बडा सिंहासन कहा है वह परिवार रहित है ऐसा वर्णन जानना वहां विजय देव के अभिषेक कराने के भंड उपकरण कलशादि रखे हुवे हैं

रिट्ठेहिं ॥ १४१ ॥ तस्सण सिद्धायतण [illegible]

मिया तजहा—रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं ॥ १४१ ॥ तस्सण सिद्धायतण [illegible] जाव गोमा-
णसीओ उववातसभाएवि दारा मुहमंडवा समभूमिभाग तथेव जाव मणिफासा॥तस्सण
बहुसमरमणिज्जस्स भूमभागस्स बहुमज्झदेसमाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता
जायण आयमविक्खमण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा ॥ तीसेण
मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमह देवसयणिज्जे पण्णत्ते तस्सण देवसयणिज्जस्स वण्णउ,
उववाए सभाएण उप्पिं अट्ठट्ठमगलज्झया छत्तातिछत्ता जाव उत्तिमागारा
॥ १४२ ॥ तीसेण उववाय सभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगेमह हरए पण्णत्ते

यावत् रिष्ट ॥ १४१ ॥ उस सिद्धायतन से ईशान कून में एक बडी उपपात सभा है, इस का कथन सुधर्मासभा जैसे यावत् गोमाणसीका पर्यंत कहना उपपातसभा, द्वार, मुखमंडप, समभूमिभाग यावत् मणि स्पर्श पर्यंत कहना उस रमणीय भूमि भाग के मध्य भाग में एक बडी मणिपीठिका है यह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी है सब मणिमय व स्वच्छ है उस मणिपीठिका ऊपर एक बडी देव शैय्या है इस का वर्णन पूर्ववत् जानना उपपात सभा पर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपर छत्र कहे हैं, यावत् उत्तम आकार वाले हैं, ॥ १४२ ॥ उस उपपात सभा से ईशानकून में एक बडा

तत्थ विजयस्स देवस्स एगेमहं पोत्थयरयणे सनिक्खित्ते चिट्ठति ॥ तत्थण पोत्थर यणस्स अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—रिट्ठामईओ कंठियाओ, रययामयाइं पत्ताकाइं, रिट्ठामयाइं अक्खराइं, तवणिज्जमये दोरे, णाणामणिमयेगंठी, वेरुलियमय लिव्वासणे, तवणीज्जमई संकला, रिट्ठामये छदणे, रिट्ठामई-मसी, वइरामई लेहिणीधम्मिये सत्थे ॥ ववसियसभाएणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा-ज्झया छत्तातिछत्ता, उतिमागाराति ॥ १४६ ॥ तीसेणं ववसाय सभाएणं उत्तर पुरत्थिमेणं, एत्थणं एगामहं नंदा पुक्खरिणी पण्णत्ता, जं चेव पमाणं हरयस्स तंचेव सव्वं ॥ १४७ ॥ तीसेणं नंदाए पुक्खरिणीए उत्तरपुत्थिमेणं, एत्थणं एगे

देव का एक पुस्तक रत्न रहा हुवा है उस पुस्तक रत्न का इस तरह वर्णन है—रिष्ट रत्नमय पुठे हैं, चांदी के लिखने के पत्र हैं, रिष्ट रत्नमय अक्षर हैं, सुवर्णमय धागा है, विविध प्रकार के मणि की ग्रन्थी है, वैडूर्य रत्नमय दवात है, रक्त सुवर्णमय सकल है, रिष्ट रत्नमय दवात का ढकन है, रिष्ट रत्नमय मसी (स्याही) है, वज्र रत्नमय लेखिनी है, यह शास्त्र धार्मिक है अर्थात् कुलधर्म के आचार उसमें लिखे हुवे हैं व्यवसाय सभा उपर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्र पर छत्र है उत्तम आकारवाली है ॥ १४६ ॥ उस व्यवसाय सभा से ईशानकून में नंदा पुष्करणी है इस का कथन जैसे द्रह का कहा वैसे जानना ॥१४७॥

अभिसेय सभाए उप्पिं अट्ठट्ठ मंगलए जाव उत्तमागारा सोलसविधेहिं रयणेहिं ॥ १४४ ॥ तीसेण अभिसेय सभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगामहं अलंकारिय सभा पण्णत्ता अभिसेयसभा वत्तव्वया भाणियव्वा जाव गोमाणसीओ मणिपेढियाओ जहा अभिसेयसभाए उप्पिं सीहासण अपरिवार, तस्सण विजयस्स देवस्स सुबहु अलंकारिए भंडसंनिक्खित्ते चिट्ठति, अलंकारिय उप्पिं मंगलगाज्झया जाव उत्तिमागारा ॥ १४५ ॥ तीसेण अलंकारिएसभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगामहं ववसायसभा पण्णत्ता अभिसेय सभा वत्तव्वा जाव सीहासण अपरिवार

अभिषेक सभा पर आठ २ मंगल कहे हैं यावत् उत्तम आकार वाली है सोलह प्रकार के रत्नों युक्त है ॥ १५४ ॥ उस अभिषेक सभा से ईशानकूनमें एक बडी अलंकार सभा है इसका सब कथन गोमाणसी का मणिपीठिका पर्यंत अभिषक सभा जैसे कहना उपर परिवार रहित सिंहासन है उसपर विजय देव के अलंकार के लिये वस्त्रादि भंड रखे हुवे हैं अलंकारिक सभा उपर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपर छत्र कहे हैं यावत् उत्तम आकारवाली है ॥ १५५ ॥ उस अलंकार सभा से ईशानकून में एक बडी व्य-वसाय सभा है इस का वर्णन परिवार रहित सिंहासन पर्यंत अभिषेक सभा जैसे कहना वहां विजय

चिंतिने पत्थिये मणोगएसकप्पे समुप्पज्झित्था किं मे पुव्विसेय किं मे पच्छासेय किं मे पुव्वकरणिज्ज किं मे पच्छाकरणिज्ज, किं मे पुव्विंवा पच्छावा हियाए सुहाए खमाए णीससाए अणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु एवं सपेहेति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगादेवा विजयस्स देवस्स इम एतारूव अब्भत्थिय चिंतिय पत्थिय मणोगय सकप्प समुप्पण्णे जाणित्ता जेणामेव से विजएदेवे तेणामेव उवागच्छित्ता विजय देव करतलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धावेंति जएण विजयेण वद्धावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पियाण

पर्याप्ति से प्राप्त होने पर ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुआ कि पहिले मुझे क्या मंगलकारी है, पीछे क्या मंगलकारी है, पहिले क्या करने योग्य है, पीछे क्या करने योग्य है, पहिले व पीछे क्या हित, सुख, क्षमा, निश्रय के लिये व अनुगामी होगा ऐसा वह विजय देवता विचार करने लगा, विजय देवको ऐसा सकल्प अध्यवसाय, चिंता, प्रार्थना व मनोगत सकल्प उत्पन्न हुवा जानकर उनके सामानिकदेव व आभ्यतर परिषदा के देव उन की पास आये और उनोंने विजय देव को हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन करके दोनों हाथ की अंजलि एकत्रकर जय विजय शब्द से बधाये, जय विजय शब्द से बधाकर ऐसा बोले आप के

महा मणिपेढे पण्णत्ते, दो जोयणाइ आयामविक्खमेण, जोयण बाहल्लेण सव्वरयता मये अच्छे जाव पडिरूव ॥ १४८ ॥ तेण कालेण तेण समएण विजयदेवे विजयाए रायहाणीए उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिते अगुलस्स असखेज्ज भागमित्तीये बोंदीये विजय देवत्ताये उववण्णे ॥ तएण से विजयदेवे अहुणोववण्ण मेत्ताय चेव समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति भाव गच्छति तजहा आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए, आणापाणपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए ॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावगयस्स समाणस्स इमे एतारूवे अब्भत्थिये

उस नदा पुष्करणीसे ईशानकूनमें एक बडी मणिपीठिका है यह दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥१४८॥ अब विजय देवका वर्णन करते हैं उसकाल उससमयमें विजय नामक देव विजया राज्यधानीकी उपपातसभामें देव शयन के देव दूष्य वस्त्रके नीचे अगुलके असख्यातवे भाग की अवगाहना के शरीर वाला विजय राज्यधानी के इन्द्रपने उत्पन्न हुआ वह विजय देव तत्काल का उत्पन्न हुवा पांच प्रकार की पर्याप्ति से पर्याप्ति भाव को प्राप्त हुवा इन पांच पर्याप्ति के नाम—आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोश्वास पर्याप्ति, व भाषा मन पर्याप्ति विजय देव को यावत्

जाव अणुगामियत्ता ते भविस्सति तिकट्टु महता २ जयजय सद्द पउजंति॥ ततेण से विजये देवे तेसिं सामाणिय परिसोववण्णगाण देवाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे जाव हियते, देवसयणिज्जाओ अब्भुट्ठेत्ता दिव्व देवदूसजुयल परिहेइ देवसणिज्जाओ पच्चोरुहति देवसयणिज्जाओ पच्चोरुहित्ता उववायसभाओ पुरत्थिमेण दारेण निग्गच्छति २ त्ता जेणेव हरये तेणेव उवागच्छति २ त्ता हरय अणुपदाहिण करेमाणे २ पुरत्थिमेण तारणाण अणुपविसति २ त्ता पुरत्थिमिल्लेण तिसोमाण पडिरूवएण पच्चोरुहति २ हरय उगाहति उगाहित्ता जलावगाहण करति जलावगाहण करित्ता जलमज्जण करेति जल्मज्जण करित्त जलकिड्डकरेति जलकिड्डं

मयोग किया यह विजय देव सामानिक परिषदावाले देवों की पास से एसा सुनकर हृष्ट तुष्ट हुवा, देव शयन में से उठकर दीव्य देव दूष्य युग्म [वस्त्र] परिधान किया देव शैय्या में से नीचे उतर कर उपपात सभा के पूर्व के द्वार से बाहिर नीकलकर जहां द्रह है वहां आया उस को प्रदक्षिणा करता हुवा पूर्व दिशा के तोरण से प्रवेश किया पूर्व दिशा के पावथिये से नीचे उतरकर द्रह के पानी में पडा वहां जल मजन किया, जलक्रीडा की, जलक्रीडा करके स्वच्छ बना उस द्रह में से नीकल कर जहां अभिषेक

विजयाए रायहाणीए सिद्धायतणंसि अट्ठसतं जिणपडिमाणं जिणुस्सेह पमाणमेत्ताणं सण्णिक्खित्तं चिट्ठति, सभाए सुधम्माए माणवए चेतियखंभे वयरामयेसु गोलवट्ट समुग्गएसु बहुओ जिणसकहाओ सण्णिक्खित्ताओ चिट्ठति, जाओणं देवाणुप्पियाणं अण्णेसिं च बहुणं विजय रायहाणि वत्थव्वाणं देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारयणिज्जाओ सम्माणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेतियं पज्जुवासणिज्जाओ एतण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विंपिसेयं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छावि सेयं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं करणिज्जं पच्छाकरणिज्जं एयण्णं देवाणुप्पिया पुव्विंवा

विजया राज्यधानी में सिद्धायतन में जिनशरीर के अवगाहना जितनी १०८ जिन प्रतिमा रही हुई है, और सुधर्मासभा के अंदर माणवक चैत्य में वज्ररत्नमय गोल डब्बे में जिन दाढा है ये आप का और अन्य बहुत विजय राज्यधानी के देव देवियों को अर्चनीय, पूजनीय, सत्कार सन्मान योग्य, कल्याणकारी, मंगलकारी, देव संबंधी, चैत्य समान पूजने योग्य है आपको यह पहिले भी कल्याणकारी है पीछे भी कल्याणकारी है, पहिले करने योग्य है, पीछे भी करने योग्य है आप का यह पहिले पीछे हित के लिये यावत् अनुगामी होगा यों कहकर बड़े २ जय २ शब्द का

आणाए विणएण वयण पडिसुणेति २ त्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमति २ त्ता वेउव्विय समुग्घाएण समोहणति २ त्ता असंखेज्जाइ जोयणाइ दंड णिसरति तंजहा- रयणाए जाव रिट्ठाण अहाबायरे पोग्गले परिसाडेंति २ अहासुहुमे पोग्गले परितायंति २ त्ता दोच्चापि विउव्विय समुग्घाएण समोहणंति दोच्चापि वेउव्विय समुग्घाए समोहणित्ता अट्ठसहस्स सोवण्णियाण कलसाण अट्ठसहस्स रुप्पमयाण कलसाण अट्ठसहस्स मणिमयाण कलसाण, अट्ठसहस्स सुवण्णरुप्पमयाण कलसाण, अट्ठ सहस्स सुवण्णमणिमयाण कलसाण अट्ठसहस्स रुप्पमणिमयाण कलसाण,

किया फीर ईशानकून में जाकर वैक्रय समुद्घात से असंख्यात योजन का दंड किया और रत्न यावत् रिष्ट रत्नमय शुभ पुद्गल ग्रहण किये यथा बादर पुद्गल दुर किये और सूक्ष्म ग्रहण किये, पुन दूसरी बार भी वैक्रय समुद्घात की, दूसरीबार वैक्रय समुद्घात करके १००८ सुवर्ण कलश, १००८ चांदी के कलश १००८ मणि के कलश, १००८ सुवर्ण व चांदी के कलश, १००८ सुवर्ण व मणि के कलश, १००८ चांदी व मणि के कलश, १००८ सुवर्ण चांदी व मणि के कलश १००८ मौक्तिक के कलश, १००८ भृंगारक (झारा) ऐसे ही १००८ आरीसे, १००८ थाल, १००८ पात्री, १००८ पुष्प चंगेरी यावत् पूजनी की चंगेरी

करित्ता आयत चोक्खे परमसूइभूए इरताओ पच्चुत्तरित्ता जेणामेव अभिसेयसभा तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता अभिसेयसभ पयाहिण करेमाणे पुरत्थिमिल्लेण दारेण अणुपविसइ २ त्ता जेणेव सीहासण तेणेव उवागच्छति २ त्ता सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगा देवा अभिओगिए देवे सद्दावेति २ त्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तुब्भे विजय देवस्स महत्थ महग्घ महारिह विपुल इदाभिसेय उवट्ठवेह ॥ १४९ ॥ ततेण ते अभिओगादेवा सामाणियपरिसोववण्णएहिं एव वुच्चममाणा हट्ठ जाव हियया करयल परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी देवाणुप्पिय ? तहत्ति

सभा की वहां आया उस की प्रदक्षिणा करके उस में पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया और सिंहासन की पास आकर उस पर पूर्वाभिमुख कर बैठा ॥ उस समय विजय देवता के सामानिक परिषदा वाले देवोंने आभियोगिक देवों को बुलाये और कहा कि अहो देवानुप्रिय ! तुम विजय देव के लिये महा अर्थ वाला महद्घ, महामूल्य वाला विस्तीर्ण इन्द्राभिषेक की तैयारी करो ॥ १४९ ॥ सामानिक परिषदा वाले देवों की पास से ऐसा सुनकर वे आभियोगिक देव हृष्ट तुष्ट हुए यावत् हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन किया मस्तक पर अंजली कर के ऐसा बोले 'यथातथ्य' यों विनय पूर्वक उन की आज्ञा का स्वीकार

"दिव्वाए देवगईए तिरिय मसखेज्जाण दीवसमुद्दाणमज्झमज्झेण वीइवयमाणा२ जेणेव खीरोदेसमुद्द, तेणेव उवागच्छाति तेणेव उवागच्छित्ता खीरादगगेण्हाति २ त्ता जाति तत्थ उप्पलाइ जाव सयसहस्सपत्ताइ गेण्हति गेण्हित्ता जेणेव पुक्खरोदे समुद्दे तेणेव उवागच्छाति उवागच्छित्ता, पुक्खरोदग गेण्हाति पुक्खरोदग गेण्हित्ता जाति तत्थ उप्पलाइ जाव सतसहस्सपत्ताति गेण्हाति गेण्हित्ता जेणेव समयखेत्ते जेणेव भरहेरवयाति वासाइ जेणेव मागध वरदाम पभासाइ तित्थाइ तेणेव उवागच्छति२त्ता तित्थोदग गेण्हाति, तित्थोदग गिण्हिता, तित्थमट्टिय गेण्हाति तित्थमट्टिय गेण्हित्ता जेणेव गगा सिंधु रत्ता रत्तवतीओ सलिलाओ तेणेव उवागच्छाति २ त्ता, सलिलोदग

ग्रहण किये वहां से मनुष्य क्षेत्र में भरत एरवत क्षेत्र के मागध, वरदाम व प्रभास जो तीर्थ हैं वहां आये, वहा से तीर्थोदक व तीर्थकी मृत्तिका ग्रहण की और वहा से गगा, सिंधु रक्ता व रक्तावती नदी थी वहां आये वहां उन सरिताओं का पानी लिया, और उन के दोनों किनारों की मृत्तिका भी ली वहां से चुल्लहिमवंत पर्वत व शिखरी पर्वत की पास आये वहां सब ऋतु के पुष्प, सब कषाय रस, सब पुष्प, सब गंध, सब माला, सब गुच्छा यावत सब औषधि व सरसव ग्रहण किये वहां से पद्मद्रह व पुंडरीक द्रहथे वहां आये उस में से पानी लिया और उत्पल यावत् लक्षपत्र कमल भी ग्रहण किये वहां से हेमवय

अट्ठसहस्स सुवण्णरुप्पमणिमयाण कलसाण अट्ठसहस्स भोमेज्ज कलसाण अट्ठसहस्स भिगाराण एव आयसगाण, थालाण, पातीण सुपतिट्ठकाण, चित्ताण, रयणकरंडगाण, पुप्फ चगेरीण जाव लोमहत्थ चगेरीण, पुप्फ पडलगाण जाव लोमहत्थ पडलगाण, अट्ठसहस्स सीहासणाण, छत्ताण चामराण, अवपडगाण वट्टकाण, भिप्पीण, पोरकाण, पीणगाण, तेलसमुग्गाण, अट्ठसहस्स धूवकडुच्छाण विउव्वति, तेसा माविए विउव्विएय कलसेय जाव धूवकडुच्छएय गेण्हति गेण्हइत्ता विजयाओ रायहाणीओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव उद्धत्ताए

१००८ पुष्प यावत् पूजनीके पटल, १००८ सिंहासन, १००८ छत्र, १००८ चामर १००८ तेल के गोल १००८ पुष्प यावत् पूजनीके पटल, १००८ सिंहासन, १००८ छत्र, १००८ चामर १००८ तेल के गोल हब्बे और १००८ धूप के कुडछ का वैक्रेय करे अब उन स्वाभाविक (शाश्वत) कलश व विकुर्वणा वाले कलश यावत् धूप के कुडछे ग्रहण कर विजया राज्यधानी में से नीकलकर उत्कृष्ट यावत् अद्भुत दीव्य देवगति से तीर्च्छी असंख्यात द्वीप समुद्र का उल्लंघन करते हुए जहां क्षीर समुद्र है वहां आये वहां आकर उस में से क्षीरोदक ग्रहण किया और वहां और उत्पल यावत् सहस्रपत्र थे उन्हे ग्रहण केये वहां से पुष्करोदधि समुद्र की पास आये और उस में से क्षीरोदक व उत्पल यावत् सहस्रपत्र

महाहिमवतरुप्पिवासहर पव्वया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता सव्वपुप्फे तचेव जेणेव महापउमद्दहा महापुडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छति २ त्ता जाइ तत्थ उप्पलाइ तचेव, जेणेव हरिवास रम्मगवासीति जेणेव हरिकाता हरिससलिला नरकाता नारिकांताओ तेणेव उवागच्छति २ त्ता सलिलोदग गण्हति २ त्ता तचेव, जेणव वियडावती गधावती वट्टवेयड्ढ पव्वया तेणव उवागच्छति २ त्ता सव्व पुप्फेय तचेव जेणव णिसढ णीलवत वासहर पव्वता तणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय तचेव, जेणेव तेगिंछिद्दहकेसरीदहा तेणव उवागच्छति २ त्ता दहोदग गेण्हति २ त्ता तचेव जेणेव पुव्वविदेह अवरविदेह वासाणि जेणेव सीयासीओयाओ महानईओ जहानईसु

पानी व तन की मृत्तिका ग्रहण की वहां से विकटापाति व गधापाति नामक वर्तुलाकार वैताढ्य पर्वत थे वहां आये वहां से सब पुष्प वगैरह लिये फीर वहां से निषध नीलवत वर्षधर पर्वत थे वहां आये वहां से सब पुष्प यावत् सरसव लिये वहां से तिगिच्छ द्रह व केसरी द्रह थे वहां आये उस में से पानी और उत्पल यावत् लक्षपत्रादि ग्रहण किये वहां से जहां पूर्व महाविदेह व पश्चिम महा विदेह क्षेत्र में सीता सीतोदा महानदियों थी वहां आये वहां का अधिकार अन्य नदियों जैसे कहना वहां से सब चक्रवर्ती विजय में जहां मागध, वरदाम व प्रभास ये तीन तीर्थों और जहां सब अतर नदियों है

गेण्हति२त्ता उभयो तटमट्टिय गेण्हति तटमट्टिय गेण्हित्ता जेणेव चुल्लहिमवंत सिहरिवास हरपव्वता तणेव उवागच्छति २ त्ता, सव्वतुवरेय सव्वपुप्फेय सव्व गंधय सव्वमल्लेय सव्वोसहिं सिद्धत्थएय गेण्हति २ त्ता जेणेव पउमद्दह पुंडरीयद्दह, तेणेव उवागच्छति २ त्ता दहोदग गेण्हति २ त्ता जाति तत्थ उप्पलाइं जाव सतसहस्सपत्ताइं गेण्हति ताइं गेण्हित्ता जेणेव हेमवय एरणवयाति वासाति जेणेव रोहिया रोहितंसा सुवण्णकूला रुप्पकूलाओ तेणेव उवागच्छति२त्ता सलिलोदग गेण्हति २ त्ता उभयो तडमट्टिय गिण्हति २ त्ता जेणेव सद्दावति मालवत परियागावट्टवेयड्ड पव्वता तेणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुयरे जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय गेण्हति २ त्ता जेणेव

एरणवय क्षेत्र में, जहां रोहिता रोहितांसासुवर्णकुला व रूप्यकूला नदी थी वहां आये उन में से पानी व उनके दोनों तट की मिट्टि ग्रहण की वहां से शब्दापाति व माल्यवन्त वर्तुलाकार वैताढ्य पर्वत जहां है वहां आये वहां सब ऋतु के पुष्प यावत् सब औषधि व सरसव ग्रहण कर महा हिमवंत व रूपि पर्वत पर आये वहां सब पुष्प वगैरह पूर्ववत् जानना वहां से महा पद्म द्रह व महा पुंडरिक द्रह थे वहां आये वहां से द्रह का पानी व पुष्पादि वगैरह लिये वहां से हरिवर्ष, रम्यक् वर्ष में हरीकांता, हरिसलिला, नरकंता व नारीकांता इन चार नदियों की पास गये, वहां से

गोसीसचदण दिव्वच सुमणदाम ददरमलय सुगधिगधिएयगधे गेण्हति २त्ता, एगतो मिलति २त्ता जवुद्दीवस्स पुरच्छिमिल्लेण दारेण णिगच्छति २त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए देव-गतीए तिरिय मसखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झ मज्झेण वीतीवयमाणा जेणेव विजया रायहाणी तेणेव उवागच्छति २त्ता विजय रायहाणिं अणुप्पयाहिण करेमाणा २ जेणेव अभि-सेयसभा जेणेव विजएदेवे तेणेव उवागच्छति २ त्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए मजुलिकट्टु जएण विजएण बद्धावेंति २ त्ता विजयस्स देवस्स त महत्थ महग्घ महरिह विपुल अभिसेय उवट्ठवेंति ॥ १५० ॥ ततेण विजय देव चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ, तिण्णिपरिसाओ, सत्तअणिया

पूर्वद्वारसे नीकलकर उस उत्कृष्ट यावत् दीव्य देवगतिसे तीरछे असख्यातद्वीप समुद्र उल्लघ कर विजया राज्यधानी के पास आये विजया राज्यधानीको प्रदक्षिणा करके जहां अभिषेक सभा व जहां विजयदेव था वहां आये दो हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन दिया और अजलि करके विजय देवता को वधाये इस तरह विजय देवता का महाअर्थ वाला महर्ध्य, व महा मूल्य वाला अभिषेक तैयार किया, ॥ १५० ॥ अब चार हजार सामानिक देव, परिवार सहित चार अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिकाधिपति, सोलह

जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव ... मागह वरदाम पभासाइ तित्थाइ जेणेव सव्व-
तरणदीओ सलिलोदग गेण्हाति २ त्ता तचेव जेणेव सव्ववक्खारपव्वता सव्वतुवरेय
तचेव जेणेव मंदरे पव्वए जेणेव भद्दसालवणे तेणेव उवागच्छ ति २ त्ता सव्वतुवरेय
जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय गण्हाति २त्ता जेणेव णंदणवणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता
सव्वतुवरेय जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय सरसच गोसीसचंदण गेण्हाति २ ता जेणेव
सोमणसवणे तेणेव उवागच्छाति २ त्ता सव्वतुवरेय जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय
सरस च गोसीस चंदण दिव्वं च सुमणदाम गेण्हाति २ त्ता जेणेव
पंडगवणे तेणेव उवागच्छाति २ त्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय सरस च

वहां आये उन में से पानी व मृत्तिका ग्रहण की वहां से सब वक्षस्कार पर्वत की पास आये उन में से
सब ऋतु के पुष्प यावत् सरसव ग्रहण किये वहांसे मेरू पर्वतपर जहां भद्रासालवन है वहां आये, इसमें सब
ऋतु के पुष्प यावत् मंगलिक वस्तु ग्रहण किये, वहां से नंदनवन में आये उस में से भी सब ऋतु के
पुष्प यावत् सरसव ग्रहण किये और श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन, व दीव्य पुष्पों की मालाओं ग्रहण की
वहां से पंडकवन में आये, उसमें से सब रस यावत् सब औषधि, सरस श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन, दीव्य पुष्प की
मालाओं, दर्दर व मलय से सुगंधित बनी हुई वस्त्र ग्रहण की और सब देवता एकत्रित मीलकर जम्बूद्वीप के

महयाबलेण महयासमुदएण, महतातुडिय जमगसमगपडुप्पवाइत रवेण सख पणव पडह भेरि झल्लरि खरमुही दुदुहि हुडुक्क निग्घोसणाइएण महतामहता इदाभिसेगेण अभिसिंचति ॥१५१॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स महता इदाभिसेकंसि वट्टमाणसि अत्थेगतियादेवा णच्चोदग णातिमट्टिय पविरल फुसित दिव्व सुरभिरयरेणुविणासण गधोदगवास वासति, अत्थगातियादेवा णिहतरय णट्ठरय भट्ठरय उवासतरय पसतरय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणि सब्भितरबाहिरय आसित्तसम्मज्जितोव-

ताल, भेरी, झलर मृदग, दुदुभि व गोमुख इत्यादि वादित्र से उद्घोषणा करते हुवे महान इन्द्राभिषेक विजय नामक देवका किया ॥१५१॥ जिस समय विजय देवता का महा अभिषेक होता था उस समय कितनेक देवता विजया राज्यधानी में बहुत पानी नहीं व बहुत मृत्तिका नहीं वैसा पानीके कनवाला मेघ वर्षाते थ, कितनेक दीव्य सुगधित व रजरेणु का विनाश करने वाला मद गधादिक की वर्षा करते थ, कितनेक देवता विजया राज्यधानी को रज रहित, नष्ट रज, प्रशांत रज, उपशांत रज वाली करते थे, अर्थात् राज्यधानी में से रज स्वच्छ करते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानी के अदर व बाहिर पानी का छिटकाव करते थे पूजते थे, लिपते थ इसतरह करके उनका मार्ग पवित्र पुष्प पुजयुक्त करते थ कितनेक देवता वहां माचापर मांचा इस तरह बांधते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानी को अनेक प्रकारके रगवाली विजय, वैजयती

सघमणिपाहिवती सोलसमप्परक्खेदवसाहस्सीओ अन्नय बहवे विजयरायहणिवत्थवगा वाणमतरदवाय देवीओय तहिं साभाविते उत्तरवेउव्वितेहियवर कमलपातिट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं चदणकयचच्चातेहिं आविद्धकंठे गुणेहिं पउमप्पलपिहाणेहिं करतलसुकुमाल परिग्गाहिएहिं अट्ठसहस्स सोवण्णियाण कलसाण रुप्पमयाण मणिमयाण जाव अट्ठसहस्स भोमज्जाण कलसाण सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फे-हिं जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलण सव्वसमुदएण सव्व-परिवारेणं सव्वायरेण सव्वविभूतीये सव्वविभूसाए सव्वसभमेण सव्वतोरोहेण सव्वणाड-एहिं सव्वपुप्फगधमल्लालकारेण सव्वदीव्वतुडियाणिणायेण महया इड्ढीए महयाजुत्तीए

हजार आत्म रक्षक देव और अन्य बहुत वाणव्यतर देव व देवियोंने स्वाभाविक व उत्तर वैक्रेय वाले, श्रेष्ट कमल में स्थापन किये हुए, सुगंधित श्रेष्ट पानी से परिपूर्ण, चदन से चर्चित, कण्ठ में सूत्र बंधा हुआ पद्म उत्पल के ढक्कन वाले, सुकोमल हस्ततल में ग्रहण किये हुए १००८ सुवर्ण कलश, १००८ चांदी के कलश यावत् १००८ मृत्तिका के कलश सब ऋतुके तुवर पुष्प यावत् सब औषधिसे सिद्धार्थक (सरसव)से सब ऋद्धि द्युति, बल, समुदय, आदर, विभूति, विभूषा, संभ्रम आरोह, नाटक, सब पुष्प, गंध, माला व अलंकार, सब त्रुटितका निनाद, महाऋद्धि महाद्युति महाबल, महा समुदय युक्त, शुभ देवोंने बजाये हुए वादिन्त्र शंख, पणव

सरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलित करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं कालाग-रुपवर कुंदुरुक्कतुरुक्कधूव डज्झत धूवमघमघत गंधद्धुताभिराम सुगंधवरगंध गंधियगंध वट्टिभूय करेंति, अप्पेगतियादेवा हिरण्णवास वासंति, अप्पेगतियादेवा सुवण्ण वासंवासति, अप्पेगतिया देवा रयणवास वासंति वइरवास वासंति, पुप्फवास, मल्लवास, गंधवास, चुण्णवास-वत्थवास आभरणवास वासंति अप्पेगतियादेवा हिरण्णविधिं भाएंति एव सुवण्णविधिं रयणविधिं वयरविधिं, मल्लविधिं, चुण्णविधिं गंधविधिं वत्थविधिं आभरणविधिं भाएंति अप्पेगतियादेवा चउव्विहं वातितं वादेंति तजहा—तत विततं घणं झुसिरं, अप्पेगतिया

करते थे, कितनेक रत्न की वर्षा करते थे, कितनेक पुष्प की माला, गंध, चूर्ण, वस्त्र व आभरण की वर्षा करते थे, कितनेक देवता हिरण्य विधि-हिरण्य रूप मांगलिक प्रकार करते थे, कितनेक सुवर्ण विधि, रत्न विधि, वज्र विधि, माल्य विधि, चूर्ण विधि, गंध विधि, वस्त्र विधि व आभरण विधि करते थे कितनेक देवता तत, वितत घण व झुसिर यह चार प्रकार के वादित्र बजाते थे, कितनेक देवता चार प्रकार के गीत गाते थे, तद्यथा १ उत्क्षिप्त सो प्रथम से आरंभ करना, २ प्रवर्तक प्रस्तावित गीत में प्रवर्तना, ३ मंदायित मूर्च्छना सहित गाना और ४ रोचितावसान यथोचित लक्षण से गाना कितनेक देवता चार प्रकार के अभिनय बतलाते हैं तद्यथा—१ दृष्टांतिक २ प्रातिश्रुतिक ३ सामंतविनोपातिक और ४ लोक मध्यावसान

लित्त सितसुइसमट्ठरत्थतरावणवीहीय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं मचातिमचकलिय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं णाणाविहरागरजित ठसित जय विजय वेजयंति पडाग ।तिपडागमडित करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं लाउल्लोइयमहिय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं गोसीससरस-रत्तचंदण दद्दरादिण्ण पचगुलितल करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं उवचिय चदणघडसुकउतोरण पडिदुवारदसभाग करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं आसत्तो सत्त विपुलवट्टवग्घारितमल्लदाम कलाव करेंति अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं पचवण्ण

नामक पताकापर पताका से मंडित करते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानीको गोमय प्रमुखसे लीपते थे व चंदुवा सहित करते थे, कितनेक देवता गोशीर्ष चंदन मंडित रक्त चंदन व दर्दर चंदन से पांच अंगुलीयुक्त छापे देते थे कितनेक देवता विजया राज्यधानी के प्रतिद्वार के देश भाग में चंदन चर्चित घडे का तोरण करते थे, कितनेक देवता ऊपर ऊंचे से नीचे तक लटके वैसी लम्बी विस्तीर्ण पुष्प की माला से विजया राज्यधानीको कलित करते थे कितनेक देवता पांचवर्ण के श्रेष्ठ सुगंधित पुष्पों की पुंजवाली राज्यधानी करते थे कितनेक देवता कृष्णागर उत्तम कुंदरुक, तुरुक जलाकर सुगंधसे मघमघायमान करते थे और श्रेष्ठ सुगंध से गंधित गंध गुटिकाभूत करते थे, कितनेक देवता चांदी की वर्षा करते थे, कितनेक सुवर्णकी वर्षा

सरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलित करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं कालागरुपवर कुदुरुक्कतुरुक्कधूव डज्झत धूवमघमघत गंधद्धुताभिराम सुगंधवरगंध गंधियगंधवट्टिभूय करेंति, अप्पगातेयादेवा हिरण्णवास वासंति, अप्पेगतियादेवा सुवण्ण वासंवासंति, अप्पेगतिया देवा रयणवास वासंति वइरवास वासंति, पुप्फवास, मल्लवास, गंधवास, चुण्णवास वत्थवास आभरणवास वासंति अप्पेगतियादेवा हिरण्णविधिं भाएंति एवं सुवण्ण विधिं रयणविधिं वयरविधिं, मल्लविधिं, चुण्णविधिं गंधविधिं वत्थविधिं आभरणविविभाएंति अप्पगातियादेवा चउविहं वातित वादेंति तंजहा—तत वितत घण झूसिर, अप्पेगतिया

करते थे, कितनेक रत्न की वर्षा करते थे कितनेक पुष्प की माला, गंध, चूर्ण, वस्त्र व आभरण की वर्षा करते थे, कितनेक देवता हिरण्य विधि-हिरण्य रूप मंगलिक प्रकार करते थे, कितनेक सुवर्ण विधि, रत्न विधि, वज्र विधि, माल्य विधि, चूर्ण विधि, गंध विधि, वस्त्र विधि व आभरण विधि करते थे कितनेक देवता तत, वितत घण व झूसिर यह चार प्रकार के वादिंत्र बजाते थे, कितनेक देवता चार प्रकार के गीत गाते थे, तद्यथा १ उत्क्षिप्त सो प्रथम से आरंभ करना, २ प्रवर्तक प्रस्ताविक गीत में प्रवर्तना, ३ मंदायित मूर्च्छना सहित गाना और ४ रोचितावसान यथोचित लक्षण से गाना कितनेक देवता चार प्रकार के अभिनय बतलाते हैं तद्यथा—१ दृष्टांतिक २ प्रातिश्रुतिक ३ सामंतविनीपातिक और ४ लोकमध्यावसान

देवा चउविहंगेय गायति तजहा—उक्खित्तय, पवत्तय, मदय, रोइ, वसाण ॥ अप्पे गतियादेवा चउव्विहं अभिणय अभिणयति तजहा—दिट्ठतिय, पाडतिय, सामतोव-णिवातिय, लोगमज्झावसाणिय ॥ अप्पगातिया देवा दुत नट्टविर्धि उवदसेति अप्पेगातिया देवा विलंबित, णट्टविर्धि, उवदसेर्ति, अप्पेगतियादेवा दूतविलंवितणाम णट्टविधि उवद-सेति, अप्पगातिया दया अंचिय णट्टविर्धि उवदसेति, रिभिय णट्टविर्धि उवदसति, अप्पेगतिया देवा अंचितरिभित णामदिव्व णट्टविर्धि उवदसेति,अप्पेगतियादेवा आरभड नट्टविर्धि उवदसेति, अप्पेगतियादेवा भसोल नट्टविहिं उवदसेति, अप्पेगतियादेवा

मानिक. कितनेक देवता द्रुत नामक नाटक बताते थे कितनेक देवता विलंबित नामक नाटक बताते थे, कितनेक देवता द्रुत विलंबित नाटक बताते थे, कितनेक देव अंचित नाटक बतलाते थे, कितनेक देव रिभित नाटक बतलाते थे कितनेक अंचित रिभित नाटक बतलाते थे, कितनेक आरभट नाटक बतलाते थे कितनेक भसोल नाटक बतलाते थे कितनेक आरभट भसोल नाटक बतलाते थे, कितनेक देवता उत्पात निपात, वर्ते, सकुचित, प्रसारित, गमनागमन, भ्रांत संभ्रांत नामक दीप्य नाटक बतलाते थे, कितनेक देवता शरीर पुष्ट बनाते थे, कितनेक देवता बूत्कार रूप बताते थे, कितनेक देवता तांडव नृत्य करते थे, कितनेक देवता लास्य रूप नृत्य करते थे, कितनेक देवता पुष्ट होते थे, बूत्कार रूप बनाते थे, तांडव नृत्य

आरभड भसोल णामदिव्व नट्टविधिं उवदसेतिं, अप्पेगतिया देवा उप्पायाणिवाय पवत्त सकुचिय पसारिय रयगरइय भत समत णाम दिव्व नट्टविधिं उवदसेति, अप्पेगतिया देवा पीणेंति, अप्पेगतिया देवा बुक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा तडवेंति, अप्पेगतिया देवा लासति अप्पेगतिया देवा आफोडेंति, अप्पे गतिया देवा वग्गोंति, अप्पेगतिया तिवति छिदाति अप्पगातियादेवा अप्फोडेंति, वग्गाति तिवति छिदाति, अप्पेगतियादेवा हयहेसिय करेंति, अप्पेगतिया

करते थे व लास्य रूप करते थे, कितनेक देवता आस्फोट करते थे, कितनेक देवता परस्पर सलग्न होते थे, कितनेक देवता त्रिपदी छेदते थे, और कितनेक देवता आस्फोट करना सलग्न होना व त्रिपदी छेदना ये तीनों करते हैं, कितनेक देवता अश्व जैसे हेषारव करते थे, कितनेक देवता हाथी जैसे गुलगुलाट करते थे, कितनेक देवता रथ जैसे घणघणाट शब्द करते थे, कितनेक देवता अश्व जैसे हेषारव, हाथी जैसे गुलगुलाट व रथ जैसे घणघणाट ये तीनों शब्द करते थे, कितनेक देवता ऊंचे उछलते थे, कितनेक देवता नीचे गीरते थे, कितनेक देवता कठोर शब्द करते थे, कितनेक देवता ऊंचे उछलना, नीचे गीरना व कठोर शब्द करना ये तीनों करते थे, कितनेक

हत्थिगुलगुलाइय करेंति, अप्पेगतियादेवा रहघणघणाइय करेंति, अप्पेगतिया देवा उच्छेलेंति, अप्पेगतियादेवा पच्छोलेंति, अप्पेगतियादेवा उक्कट्ठीओ करेंति, अप्पेगतिया देवा उच्छालेंति पच्छालेंति उक्कट्ठीओ करेंति, अप्पेगतियादेवा सीहणाद णदाति अप्पेगतिया देवा पाददद्दर करेंति, अप्पगतियादेवा भूमिचवेडदलयति, अप्पेगतियादेवा सीहणाद पाददद्दरयभूमिचवेड दलयाति, अप्पेगतियादेवा हक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा बुक्कारेंति अप्पेगतिया थक्कारेंति अप्पेगतियादेवा पुक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा वक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा नामाइ

सिंहनाद करते थे, कितनेक पांव से दर दर शब्द करते थे कितनेक भूमि चपटा करते थे कितनेक सिंहनाद, दादर शब्द व भूमि चपेटा ये तीनों साथ करते थे कितनेक देवता हकार शब्द करते थे कितनेक बुक्कार शब्द करते थे, कितनेक थकार शब्द करते थे कितनेक पूत्कार शब्द करते थे, कितनेक वकार शब्द करते थे, कितने नाम से बोलाते थे, कितनेक हकार, बुक्कार थकार, पूत्कार, वकार शब्द व नाम से बोलाना यों सब साथ करते थे, कितनेक ऊंचे उछलते थे, कितनेक नीचे गीरते थे, कितनेक तीर्च्छे गीरते थे, कितनेक ऊंचे उछलना, नीचे गीरना व तीर्च्छे गीरना यों तीनों करते थे, कितनेक तपते थे, कितनेक झलते थे व कितनेक मलपते थे, कितनेक तपना, झलना व मलपना ये तीनों करते थे, कितनेक

साहेंति, अप्पेगतियादेवा हक्कारेंति थक्कारेंति वुक्कारेंति नामाति साहेंति, अप्पेगतिया देवा उप्पतति, अप्पेगतियादेवा णिवयति अप्पेगतियादेवा परिवयति, अप्पेगतियादेवा उप्पयति परिवयति, अप्पेगइया देवा जलंति, अप्पेगतियादेवा तवति, अप्पेगतियादेवा पवति अप्पे-गइया देवाजलतितवतिपवति अप्पेगतिया देवा गज्जति, अप्पेगइया देवाविज्जयायति, अप्पे-गइया देवा वास वासति, अप्पेगइया देवा गज्जति विज्जयायति वासवासति, अप्पेगइया देवा सन्निवाय करेंति अप्पेगइया देवा वुक्कालिय करेंति, अप्पेगइया देवा कहकहेंति अप्पेगतिया देवा, दुहुदुह करेंति, अप्पेगतिया देवा दवसण्णिवाय देवउक्कलित देवकहं देवदुहदुहक करेंति अप्पेगतियादेवा वुज्जोय करेंति, अप्पेगतिया देवा विज्जुचार करेंति, अप्पेग-

गर्जना करते थे, कितनेक विद्युत करते थे, कितनेक वर्षा करते थे कितनेक गर्जना, विद्युत व वर्षा तीनों करते थे, कितनेक सन्निपात करते थे, कितनेक उत्कालिक करते थे, कितनेक कुह कहाट करते थे कितनेक दुह दुहा करते थे कितनेक सन्निपात उत्कालिक कुह कहाट व दुहदहाट करते थे कितनेक उद्योत करते थे कितनेक विद्युत् की तरह चमका करते थे कितनेक वस्त्र की वर्षा करते थे कितनेक देव उद्योत, विद्युत् तरह चमका व वस्त्र की वर्षा यों तीनों करके नाटक करते थे नाटक के

बत्तीस भेद कहे हैं इस का वर्णन रायप्रसेणी सूत्र में विस्तार पूर्वक है परन्तु यहां इसका किंचित कथन करते हैं १ आठ प्रकार के मंगलिकाकार नाटक—१ स्वस्तिक २ श्रीवत्स ३ नंदावर्त ४ वर्धमान ५ भद्रासन ६ कलश, ७ मत्स्य ८ दर्पन, २ आवर्त, प्रत्यावर्त, श्रेणि, प्रश्रेणि, स्वस्तिक, पुष्पमान, वर्धमान, मत्स्यांडक, जारमार, पुष्पावलि, पद्मपत्र, सागर तरंग, वासंति लता, पद्मलता, इन चित्रों के आलेखना अभिनय प्रकाररूपाकार है ऐसा दूसरा नाटक विधि, ३ ईहामृग, ऋषभ, तुरग, नर, मकर, विहग, व्याल, किन्नर, रुरु, सरभ, भ्रमर, कुंजर, वनलता, पद्मलता के विविध चित्र प्रत्यक्ष तीसरा नाटक विधि, ४एकचक्र दो चक्र,एक चक्रवाल, दो चक्रवाल, चक्रार्ध चक्रवाल ऐसा चौथा नाटक विधि५ चंद्रावलि प्रविभक्ति सूर्यावलि प्रविभक्ति, वलयावलि प्रविभक्ति, तारावलि प्रविभक्ति, मुक्तावलि प्रविभक्ति, रत्नावलि प्रविभक्ति, कनकावलि प्रविभक्ति, हंसावलि प्रविभक्ति, एकावलि प्रविभक्ति, यह पांचवा नाटक विधि ६ चंद्रोद्गम प्रविभक्ति, सूर्योद्गम प्रविभक्ति यों उद्गमन प्रविभक्ति नामक छठा नाटक विधि ७ चंद्रागमन प्रविभक्ति, सूर्यागमन प्रविभक्ति यों आगमन प्रविभक्ति नामक सातवा नाटक विधि, ८ चंद्रावरण प्रविभक्ति, सूर्यावरण प्रविभक्ति, यों आवरण नामक आठवा नाटक विधि ९ चंद्रास्तमन प्रविभक्ति, सूर्यास्तमन प्रविभक्ति यों अस्तमन प्रविभक्ति नामक नवबा नाटक विधि १० चंद्र मंडल प्रविभक्ति, सूर्य मंडल प्रविभक्ति, नाग मंडल प्रविभक्ति, यक्ष मंडल प्रविभक्ति, भूत मंडल प्रविभक्ति, राक्षस मंडल प्रविभक्ति, महोरग मंडल प्रविभक्ति, गंधर्व मंडल प्रविभक्ति, यह मंडल प्रविभक्ति नामक दशवा

नाटक विधि ११ अनुपम मल्ल प्रविभक्ति, सिंह मल्ल प्रविभक्ति, हय विलंबित, गज विलसित, हय विलसित, गज विलसित, मत्त हय विलसित, मत्त गज विलसित, मत्त हय विलंबित, मत्त गज विलंबित और द्रुत विलम्बित नामक इग्यारहवा नाटक विधि १२ शकट प्रविभक्ति, सागर प्रविभक्ति, नाग प्रविभक्ति, सागर नाग प्रविभक्ति नामक बारहवा नाटक विधि १३ नंदा प्रविभक्ति, चंपा प्रविभक्ति, नंदा चंपा प्रविभक्ति नामक तेरहवा नाटक विधि १४ मत्स्यांडक प्रविभक्ति, मकरांडक प्रविभक्ति, जार प्रविभक्ति, मार प्रविभक्ति, मत्स्यांडक, मकरांडक, जार मार प्रविभक्ति नामक चौदहवा नाटक विधि, १५ ककार, खकार, गकार, घकार व ङकार प्रविभक्ति नामक पन्नरहवा नाटक विधि १६ चकार, छकार, जकार, झकार व ञकार प्रविभक्ति नामक सोलहवा नाटक विधि १७ टकार, ठकार, डकार, ढकार व णकार नामक सतरहवा नाटक विधि १८ तकार, थकार, दकार, धकार, नकार प्रविभक्ति नामक अठारहवा नाटक विधि, १९ पकार, फकार, बकार, भकार व मकार प्रविभक्ति नामक उन्नीसवा नाटक विधि २० अशोक पल्लव प्रविभक्ति, आम्र पल्लव प्रविभक्ति, जम्बू पल्लव प्रविभक्ति और कोशांब पल्लव प्रविभक्ति नामक बीसवा नाटक विधि २१ पद्मलता प्रविभक्ति, नागलता प्रविभक्ति, अशोक लता प्रविभक्ति, चंपकलता प्रविभक्ति, चूतलता प्रविभक्ति वनलता प्रविभक्ति, वासंतिलता प्रविभक्ति, अतिमुक्तलता प्रविभक्ति, श्यामलता प्रविभक्ति यों लता प्रविभक्ति नामक इक्कीसवा नाटक विधि है २२ द्रुत नामक बावीसवा नाटक विधि २३ विलम्बित नामक तेवीसवा नाटक विधि २४ द्रुत विलम्बित नामक चौवीसवा नाटक विधि २५ अंचित नामक

गतियादेवा चेलुक्खेव करेंति, अप्पेगतियादेवा बुज्जाय विज्जुत्तार चेलुक्खेव करेंति, अप्पेगतियादेवा उप्पलहत्थगता जाव सहस्सपत्तहत्थगता घन्टहत्थगता कलसहत्थगता जाव धूवकडुच्छुय हत्थगया हट्ठतुट्ठा जाव हरिसवसविसप्पमाण हियया विजयाए रायहाणीए सव्वतो समता आधावति परिधावति ॥ १५२ ॥ ततेण

पच्चीसवा नाटक विधि २६ रिभित नामक छब्बीसवा नाटक विधि २७ अचिल रिभित नामक सत्तावीसवा नाटक विधि २८ आर्भट नामक अट्ठावीसवा नाटक विधि २९ भशोल नामक गुनतीसवा नाटक विधि ३० भरभट भशोल नामक तीसवा नाटक विधि ३१ उत्पात, निपात प्रसक्त, संकुचित, प्रसारित, रचित, सभ्रान्त नामक इकतीसवा नाटक विधि और ३२ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पूर्व भवका कथन करते हुए पहिले के मनुष्य भव, देव भव, चरम देव भव, चरम च्यवन, भरत क्षेत्र, अवसर्पिणी, तीर्थंकर जन्माभिषेक, चरम बालभाव, चरम यौवन, चरम काम भोग, चरम दीक्षा, चरम तप का आचरण चरम ज्ञान का उत्पन्न होना, चरम तीर्थ प्रवर्तना व चरम निर्वाण, इन सब के रूप प्रकाश करे यह बत्तीसवा नाटक विधि इस तरह बत्तीस प्रकार के नाटक कितनेक देव करते हैं कितनेक देव उत्पल कमल हाथ में लेकर यावत् सहस्र पत्र कमल हाथ में लेकर, कलश हाथ में लेकर, यावत् धुपारा हाथ में लेकर हृष्ट तुष्ट बने हुवे यावत् हर्ष से विकसित हृदयवाले बनकर विजया राज्यधानी में चारों तरफ फीरते थे ॥१५२॥

विजयदेव चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ जाव सोलस आयरक्खदेव साहस्सीओ, अण्णेवि बहवे विजयरायहाणिवत्थव्वा वाण-मतरादेवाय देवीओय तर्हि वरकमल पतिट्ठाणेहिं जाव अट्ठ सहस्सेण सोवणियाण कलसाण तचेव जाव अट्ठसहस्सेण भोमज्जाण कलसाण सव्वोदगेहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फेहिं जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएहिं सव्वड्ढिए जाव निग्घोसणायेण महता २ इदाभिसयेण अभिसिचति, महया २ इदाभिसेयेण अभिसिचित्ता पत्तेग २ सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी—जय २ नदा जय २ भद्दा जय २ नदा भद्द ते

चार हजार सामानिक देवता, चार परिवार सहित चार अग्रमहिषी यावत् सोलह हजार आत्म रक्षक देव और विजया राज्यधानी के अन्य बहुत देव व देवियोंने श्रेष्ठ कमल में रहे हुवे यावत् १००८ सुवर्ण कलश यावत् १००८ मृत्तिका के कलश के सब पानी, मृत्तिका, सब ऋतु के पुष्प यावत् सब वादिंत्र के शब्द से विजय देवता को इन्द्राभिषेक किया यदा इन्द्राभिषेक किये पीछे मस्तक पर आवर्तरूप अंजली करके प्रत्येक एसा आशिर्वचन बोलने लगे जयजय नदा, जयजय भद्र, जयजय नदा भद्र, तुम नहीं जिते हुवेका विजय करो। जिन पर जय किया है उन की प्रतिपालन करो, शत्रु पक्ष कि जिस का जय नहीं किया है

आणिय जिणाहि जियपालयाहि, अजिय जिणाहि जियरुत्तुपक्ख जित च पालहि मित्तपक्खं, जियमज्झ साहित दवाणिरुवसग्ग इंदोइव, दवाण, चंदोइव ताराण, चमरो इवअसराण, धरणोइव नागाण भरहो इव मणुयाण, बहूणिपलिओवमाणि बहुणिसा-गरावमाइं बहूणिपलिओवमसागरोवमाणि, चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव आयरक्खदेवसाहस्सीण विजयस्सदारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयरायहाणिवत्थव्वाण वाणमंतराण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव आणाईसर सेणावच्च कारेमाण पालेमाणे विहराहि तिकट्टु महता २ सद्देण जयेण जयसद्द पउजंति ॥ १५३ ॥ ततेण स विजयदेवे महया इदाभिसेण अभिसिंचे समाण

तस पर विजय करो, विजय किये हुवे मित्र पक्ष की प्रतिपालना करो, विजय किये हुवे देव सभा में उपसर्ग रहित रहो देव में इन्द्र समान, तारों में चंद्र समान, असुर में चमर समान, नाग में धरणेन्द्र समान, मनुष्य में भरत समान, बहुत पल्योपम बहुत सागरोपम, बहुत पल्योपम सागरोपम तक चार हजार सा-मानिक यावत् आत्म रक्षक देव विजयद्वार विजया राज्यधानी, और विजया राज्यधानीमें रहनेवाले अन्य बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों पर आज्ञा ईश्वरपना व सेनापतिपना करते हुए पालते हुवे यावत् विचरते रहो यों कहके जयाजयकारी शब्दों बोलने लगे ॥ १५३ ॥ विजय देव को प्रधान अभिषेक हुवे पीछे वह अपने

सीहासणाओ अब्भुट्ठइ २त्ता अभिसेयसभाओ पुरत्थिमेण दारेण पडिणिक्खमेति २त्ता जेणामेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छति २ त्ता अलंकारियसभं अणुप्पयाहिणी करेमाणे २ पुरत्थिमेण दारेण अणुपविसति २त्ता जेणेव सीहासण तेणेव उवागच्छति २त्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसणे॥ तनेण तस्स विजय देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगादेवा अभियोगेदेवे सद्दावेत २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! विजयस्स देवस्स अलंकारियं भंड उवणह ॥ ततेण अलंकारिय भंड जाव उवट्ठावेंति ततेण से विजएदेवे तप्पढमयाए पम्हलसुमालाए दिव्वाए सुरभीए

सिंहासन से उठा और अभिषेक सभा के पूर्वद्वार से नीकलकर अलंकारिक सभा तरफ गये उस की प्रदक्षिणा करके पूर्व के द्वार से उस में प्रवेश किया वहां सिंहासन की पास जाकर उस पर पूर्वाभिमुख से बैठा उस समय सामानिक व आभ्यंतर परिषदा वाले देवोंने आभियोगी देवों को बुलवाये और कहा कि अहो देवानुप्रिय! विजय देव के अलंकार के भंड (करंडिये) शीघ्रमेव ले आवो उनोंने अलंकारिक भंड लाकर रखदिये तब सब से पहिले विजय देवने रोम सहित सुकोमल दीव्य सुगंधी कापायित वस्त्र से अपने गात्रको पूछा पश्चात् गोशीर्ष चंदन से गात्रों का अनुलेपन किया, फीर नासिका के वायु से उडे

आणिय जिणाहि, जियपालयाहि, अजिय जिणाहि जियसत्तुपक्खं जित च पालहि मित्तपक्खं, जियमज्झ साहित दवाणिकवसग्गा इदोइव, दवाण, चदोइव ताराण, चमरो इवअसराण, धरणोइव नागाण भरहो इव मणुयाण, बहूणिपलिओवमाणि बहुणिसागरोवमाइ बहूणिपालिओवमसागरोवमाणि, चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव आयरक्खदेवसाहस्सीण विजयस्सदारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसिच बहूण विजयरायहाणिवत्थव्वाण वाणमतराण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव आणाईसर सेणावच्च कारमाण पालेमाणे विहराहि तिकट्टु महता २ सद्देण जयेण जयसद्द पउजंति ॥ १५२ ॥ ततेण से विजयदेवे महया इदाभिसेण अभिसिचे समाण

वस पर विजय करो, विजय किये हुवे मित्र पक्ष की प्रतिपालना करो, विजय किये हुवे देव सभा में उपसर्ग रहित रहो देव में इन्द्र समान, तारों में चद्र समान, असुर में चमर समान,नाग में धरणेन्द्र समान, मनुष्य में भरत समान, बहुत पल्योपम बहुत सागरोपम, बहुत पल्योपम सागरोपम तक चार हजार सामानिक यावत् आत्म रक्षक देव विजयद्वार विजया राज्यधानी,और विजया राज्यधानीमें रहनेवाले अन्य बहुत वाणव्यतर देव व देवियों पर आज्ञा ईश्वरपना व सेनापतिपना करते हुए पालते हुवे यावत् विचरते रहो यों कहकर जयविजयकारी शब्दों बोलने लगे ॥ १५२ ॥ विजय देव को महान अभिषेक हुवे पीछे वह अपने

कप्परुक्खयपि, अप्पाण अलकिय विभूसिय करिचा दद्दरमलय सुगधगाधितेहिं गधेहि गायाइ भुकूडेति २ चा दिव्वच सुमणदाम पिणिधाति, ततेण से विजये देवे केसालकारेण वत्थालकारण मल्लालकारेण आभरणालकारेण चउव्विहेण अलकारेण अलकित विभूसिए समाणे पडिपुण्णलकारेण सीहासणाओ अब्भूट्ठेति २ चा अलकार समाउ पुरत्थिमिल्लेण, दारेण पडिनिक्खमति २ चा जेणेव ववसाय सभा तेणव उवागच्छति २ चा ववसायसभ अणुप्पदाहिण करेमाणे २ पुरत्थिमिल्लण दारेण अणुप्पविसति २ चा जेणव सीहासण तेणेव उवागच्छाति २ चा सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुह सण्णिसण्ण ॥१५४॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स अभियोगियदेवा पोत्थयरयण उवणेंति॥ततेण से विजए

कल्प वृक्ष समान स्वतः को अलकृत विभूषित किया तत्पश्चात् दर्दर, व मलय नामक चदन की सुगध से अपने शरीर का सत्कार किया, सत्कार करके दीव्य मनोहर पुष्प माला पहिने, तत्पश्चात वह विजयदेव केशालकार, वस्त्रालकार, माल्यालकार, आभरणालकार यों चार प्रकार के अलकार से विभूषित बनकर प्रतिपूर्ण अलकार सहित सिंहासन से नीचे उतरा और अलकारिक सभा के पूर्वद्वार से नीकलकर व्यवसाय सभा के निकट गया वहां उस की प्रदक्षिणा करके पूर्वदिशा के द्वार से प्रवेश किया और जहां सिंहासन था वहां आया वहां सिंहासन पर पूर्वाभिमुख से बैठा ॥ १५४ ॥ वहां विजय देवता के आभि

गंधकासाईए गाताइ लूहेति २ त्ता सरसेण गोसीसचंदणेण गायाइ अणुलिंपइ२त्ता तआणतर च ण णासाणीसासवायवोज्झ चक्खुहर वण्णफरिसजुत्त हयलाला पेलवाति रेगधवल कणगखचितकम्म आकासफालिह सारसप्पह अहत दिव्व देवदूसजुयल णियसेइ२त्ता,हार पीणद्धेइ २ त्ता अद्धहार पिणद्धइ२ त्ता एव एकावलि पिणाधित्ता, एव एतेण अभिलावेण मुत्तावलि कणगावलि रयणावलि कडगाइ तुडियाइ अगयाइ केयूराइ, दसमुद्दित्ताणतकपि कडिसुत्तगधे कडिसुत्तकत्व मुरवि कठमुरवि पालवति कुडलाइ चूडामणिचित्तरयकड मउड पिणिधेइ मउड पिणिधित्ता,गाठम वेढिम पूरिम सघाइमेण चउव्विहेण मल्लेण कप्परुक्खयपि अप्पाण अलंकिय विभूसित करेति

वैसा चक्षु को मनोहर सब वर्ण व स्पर्श युक्त घोडे की लाल से भी अत्यत सुकमाल, श्वेत, सुवर्णमय तार सहित, आकाश अथवा स्फटिक रत्न जैसी प्रभावाले अखंडित दीव्य दूष्य वस्त्र का युगल पहने पहिना वे वस्त्र पहिन कर हार, अर्ध हार, एकावलि, मुक्तावलि, कनकावलि, रत्नावलि, हार, कड, त्रुटित, अंगद व केयूर पहिने, दश अंगुलियों में दश मुद्रिका, कटि मेखला, कठ में मंगलिक सूत्र, कुडल, और अनेक रत्न जडित चूडामणि नामक मुकुट पहना, ग्रथीम माला प्रमुख, वेष्टिम विंटे हुवे गेंद प्रमुख, पुरिम बांसकी सलाका डालकर बनाइ हुइ और संघातिम-जोडकर बनाइ हुइ ऐसी चार प्रकार की पुष्प माला से

जाइ तत्थउप्पलाइ पउमाइ जाव सतसहस्स पत्ताइ ताइ गिण्हाति २ त्ता णदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरेइ २ त्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थगमणाए, तएणतस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ जाव अण्णे बहवे वाण-मतराय देवादेवीओ अप्पगातिया उप्पलहत्थगता जाव सत्तपत्त सहस्सपत्तहत्थगया विजय देव पिट्ठितो अणुगच्छाति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स बहवे आभिआगेयादेवा देवीओय कलस हत्थगता जाव धूवकूडुछुय हत्थगता विजय देव पिठतो अणुगच्छाति ॥ ततेण से विजएदेवे चउहिं सामाणिय

में से नीकल कर सिद्धायतन की पास जाने लगा विजय देवताकी पीछे चार हजार सामानिक यावत् अन्य बहुत वाणव्यतरदेव व देवियों हाथ में उत्पल कमल शतपत्र कमल लेकर चले तत्पश्चात विजयदेव के बहुत आभियोगिकदेव व देवियों हाथ में कलश यावत् धूपादि लेकर उस पीछे चलने लगे अब विजय देव चार हजार सामानिक यावत् विजया राज्यधानीके अन्य बहुत वाणव्यतर देव व देवियोंकी साथ परिवरा हुआ सब वादिंत्र के शब्द से सिद्धायतन के पास गया वहां सिद्धायतन को प्रदक्षिणा देकर पूर्वद्वार से प्रवेश किया और जहां देवछंद रहा हुआ है वहां जिन प्रतिमा को देखते ही प्रणाम किया जिन प्रतिमा को मोर

देवे पोत्थयरयण गिण्हइ २त्ता पोत्थरयण मुयति २त्ता पोत्थयरयण विहाडेति २ त्ता पोत्थयरयण वाएइ २ त्ता धम्मियं ववसायपि गेण्हति२त्ता पोत्थरयण पडिनिक्खमति २ त्ता सीहासणातो अब्भुट्ठेति २ त्ता ववसायसमातो पुरत्थिमिल्लेण दारेण पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव णदा पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति २त्ता णदापुक्खरिण अणुप्पयाहिण कारमाणा पुरत्थिमिल्लेण तोरणेण अणुपविसति २ त्ता पुरत्थिमिल्लगति सेमाणपडिरूवेण पच्चोरुहति २ त्ता हत्थपाद पक्खालेति २ त्ता एगमहं सेत रजतामय विमलसलिल पुण्णमत्तगय महामुहाकिति, समाण भिंगार पगिण्हति २त्ता

वैमानिक देव पुस्तक रत्न लाये विजय देवताने पुस्तक रत्न हाथ में लिया, उसे छोडा, फीर उस खोलकर पुस्तक रत्न बांचा, अपने कुलधर्म के व्यवसाय योग्य पदार्थ ग्रहण किये फीर उसे नीचे रखकर सिंहासन से नीचे उतरा और व्यवसाय सभाके पूर्वद्वार से बाहिर नीकलकर नंदापुष्करणीके निकट गया वहां उसे प्रदक्षणा कर के पूर्व के तोरण से प्रवेश किया और पूर्व के त्रिसोपान (पक्तिये) से उस में उतरा वहां हस्त पाद का प्रक्षालन किया, एक बडा श्वेत चांदीमय, निर्मल पानी से परिपूर्ण हाथी के मुखाकार समान एक भृंगार (झारी) ग्रहण किया, और वहां जो उत्पल, पद्म यावत् सहस्रपत्र य उन को भी ग्रहण किये, फीर नंदा पुष्करणी

दिव्वाइ देवदूसजुयलाइ णियसेइ २ त्ता अग्गेहिं वरेहिय मल्लेहिय अच्चेहिय अच्चेहि त्ता पुप्फारुहण गधारुहण चुण्णारुहण आभरणारुहण करेति २ त्ता आसत्तो सत्त- विउल वट्टवग्घारित मल्लदाम कलाव करेति, असत्ते सत्तविउल वट्टवग्घारित मल्लदाम कलाव करेत्ता अच्छाहिं सण्हेहिं सएहिं रएतामएहिं अच्छरसतडुलेहिं जिणपडिमाण पुरतो अट्ठट्ठमगलए आलिहति तजहा—सोत्थिय सिरिवच्छे जाव दप्पण, अट्ठट्ठमगलगे आलेहित्ता कयग्गाहगाहित करयलपब्भट्ठ विप्पमुक्केण दसद्धवण्णेण कुसुमेण मुक्कपुप्फ पुजोवयार कलित करेति २ चदप्पभ वइर वेरुलिय विमल दड कचणमणिर

करने जैसे हाथ से ग्रहण करते हुवे नीचे गिरे हुवे पुष्पों को छोडकर पांच वर्ण के पुष्पों का पुंज किया, चंद्रप्रभा, वज्र व वैडूर्य रत्नमय विमल दंडवाला, कंचन मणि रत्न जैसा विविध प्रकारसे जडा हुवा और मनोहर कृष्णागर, कुंदरूक तुरुक्क के धूप से सुगंध वृष्टि करता हुवा वैडूर्य रत्नमय धूपका कडछा लेकर धूप दिया, धूप देकर विशुद्ध छंदादिक दोष रहित ग्रंथ युक्त महा अर्थवाले १०८ महा वृत्तवाले श्लोक से स्तुति की फीर सात आठ पांव पीछा जाकर बांया जानु खडा रखकर दहिणा जानु नीचे रखा तीन वार मस्तक धरणितल पर लगाया फीर किंचित् ऊंचा बनकर खडे, तुटित से स्तंभित भुजा ऊंची

साहस्सीहिं जाव अण्णेहिय बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय सार्द्धं सपरिवुडे सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए जाव निग्घोसणाइए रवेणं जेणेव सिद्धाययणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सिद्धायतणं अणुप्पयाहिणी करेमाणे २ पुरच्छिमिल्लेण दारेणं अणुपविसइ २ त्ता देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति २ त्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेति २ त्ता जिणपडिमाओ लोमहत्थएणं पमज्जति लोमहत्थएणं पमज्जित्ता सुरभिणा गंधोदएणं न्हाणेइ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणित्ता दिव्वाए सुरभीए गंधकासाईए गाताइं लूहिते लूहित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गाताइं अणुलिंपइ २ त्ता जिणपडिमाणं अहयाइं सेताइं

पीछ की पूंजनी से पूंजी, सुगंधित गंधोदक से प्रक्षालन किया, दीव्य सुगंधित गंध कापायिक वस्त्र से उन के गात्रों पूछे, गोशीर्ष चन्दन से गात्रों पर लेपन किया, जिन प्रतिमा को अखंडित श्वेत उज्वल देव दूष्य वस्त्र — पहिनाये, अग्रश्रेष्ठ प्रधान सुगंधित द्रव्य व पुष्प की माला से अर्चनाकर, पुष्प चढाये, उत्तम सुगंधी पर व चढाये, चूर्णवास चढाये, वस्त्र चढाये, आभरण चढाये, ऊंचे से पृथ्वी तल पर्यंत लम्बी हाती हुई पुष्प मालाओं का कलाप किया किंचित् श्वेत मुकुवाल चादीमय अत्यन्त निर्मल अक्षत (चांवल) से आठ २ मंगलिक का आलेखन किया, उनका १ स्वास्तिक श्रीवत्स यावत् दर्पण कमलपत्र प्रमाण

+ जिन प्रतिमा को वस्त्र पहिनाये हैं इसलिये वह तीर्थंकर की प्रतिमा नहीं है

तणस्स वहुमज्झदेसभाये तेणेव उवागच्छाति २ त्ता दिव्वाये उदगधाराए अब्भुक्खेति २ सरसेण गोसीस चंदणेण पचगुलितलेण मंडल आलिहेत्ता चच्च दलइत्ता कयग्गाहगाहित करतलपब्भट्ठ विप्पमुक्केण दसद्धवण्णेण कुसुमेण मुक्कपुप्फ पुजोवयार कलित २ धूव दलयति २ त्ता जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्लेणदारे तेणेव उवागच्छइ लोमहत्थय गण्हति दारविग्गयठ सालिभजिआओय वालरूवयेय लोमहत्थयेण पमज्जति २ दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ सरसेण गोसीसचदणेण पचगुलितलेण अणुलिंपाति चच्चये दलयति २ पुप्फारुहण जाव आभरणारुहण करेति २ आसत्तोसत्तविपुल जाव मल्लदाम कलाप करेति २ कयग्गाहगहिय जाव पुजोवयार कलित करेति २ त्ता

लेकर द्वारशाख, सालभिका और व्याल प्रमुख रूप को पूंजे, दीव्य पानी की धारा से उन का प्रक्षालन किया श्रेष्ठ गोशीर्ष चदन से पांचों अगुलियों के छापे से लेपन किया, अर्चना की, वहां पुष्प चढाये यावत् आभरण चढाये नीचे लम्बी लटकती हुई मालाओं का कलाप किया केशकलाप ग्रहण करने जैसे हाथ में से गीर गये हुवे पुष्पों का छोडकर पांच वर्णवाले पुष्पों का समुह किया और वहां धूप दिया फीर वहां से मुख मंडप के मध्य भाग में आया उस को मोरपींछ की पूजनी से स्वच्छ किया, दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन से पांच अंगुलीतल से मंडल का आलेखन किया, चंदन से चर्चा की, यावत धूप दिया फीर वहां से मुख मंडप के पश्चिम दिशा के द्वार के पास

यण भत्तिचित्त कालागरु पवर कुदरुक्क तुरुक्कधूवगन्धुमाणुविद्ध च धूमवट्टिं विणिमुयत वेरुलियमत कडुच्छुय पग्गहिय पयत्तेण धूव दाऊण जिणपडिमाण अट्ठसय विसुद्धगथ जुत्तेहिं महावित्तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं सथुणइ २ त्ता सत्तट्ठ पयाइ उसरति २ त्ता वाम जाणु अचति २ त्ता दाहिण जाणु धरणितलसिनिहट्टु धरणितलसि णिवाडति २ त्ता तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणियलसि णामेइ २ इसि पच्चुण्णमति २ कडयतुडिय थभियाओ भूयाओ पडिसाहराति करतलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थये अजलिकट्टु एव वयासी—णमोत्थुण अरहताण भगवताण जाव सिद्धिगइ णामधेय ठाण सपत्ताण, तिकट्टु वदित्ता णमसित्ता जेणेव सिद्धाय-

उठाए दोनों हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन किया, मस्तक से अजली करके ऐसा बोला अरिहंत भगवंत यावत् सिद्धगति को प्राप्त सिद्ध भगवान को मेरा नमस्कार होवे यों नमस्कार करके सिद्धायतन के मध्य भाग में आया वहां दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, वहां रस सहित गोशीर्ष चन्दन से पांच अंगुली के छापे देकर मंडल की आलेखना की यावत् पूजा की केशपाश ग्रहण करने जैसे हाथ में से पडे हुवे पुष्पों का त्याग कर शेष पांच वर्णवाले पुष्पों का पुंज किया और धूप दिया वहां से सिद्धायतन का दक्षिण दिशा का द्वार था वहां आया वहां मोर पीछ की पूंजनी हाथ में

लोमहत्थएण पमज्जइ २त्ता दिव्वाये उदगधाराये सरसगोसीस चदणेण पुप्फ रुहण जाव आसत्तो कयग्गाह धूव दलयति जेणेव मुहमडवस्स पुरच्छिमिल्ले दारे तचेव सव्व भाणियव्व जाव दारसव्व, भाणियव्व, जेणेव दाहिणिल्ले दारे तचेव पेच्छाघरमडवस्स बहुमज्झदेसभाए जेणेव वइरामये अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता अक्खाडग च मणिपाढिय च सीहासणच लोमहत्थगेण पमज्जइ २ त्ता दिव्वाये उदगधाराए अब्भुक्खे २ पुप्फारुहण जाव धूव दलयति २, जेणेव पेच्छाघरमडवपच्चत्थिमिल्लदारे दारच्चणिया, उत्तरिल्लाखभपति तहेव, पुरत्थिमिल्ले दारे दाहिणिल्लेदारे तहेव, जेणेव चेइय थूभे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता चेइयथूभ लोम-

मध्य भाग में वज्र रत्नमय अखाडे पर रही हुई मणिपीठिका का सिंहासन के पास आया उसकी मोरपींछ की पूंजनी से प्रमार्जन की, दिव्य उदक धारा से प्रक्षालन किया, पुष्प चढाये यावत् धूप किया फीर वहां से प्रेक्षाघर मण्डप के पश्चिम द्वार के पास आया यहां द्वार पूजा का सब कथन करना वहां से उत्तर दिशा का स्थंभ पंक्ति की पास आया वहां भी वैसा ही किया वहा से पूर्व दिशा के द्वार के पास आया यहां भी वैसा ही किया, वहां से दक्षिण दिशा के द्वार के पास आया वहां भी वैसे ही किया वहा से चैत्य स्तूप की पास आया वहां मोर पींछ की पूंजनी ग्रहण की मोर पींछ की पूंजनी से

धूवं दलयति २ जेणेव मुहमडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ बहुमज्झदेसभाये लोमहत्थेण पमज्जति २ त्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइति २ सरसेण गोसीस चदणेणं पचगुलितलेण मडलग आलिहति चच्चये दलयति २ कयग्गाहि जाव धूव दलयति २ जेणेव मुहमडवगस्स पच्चत्थिमिल्लेण दारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ दारचिग्गाउसयमालभ जियाओ यालरूवएय लोमहत्थेयेण पमज्जति २ दिव्वाए उदगधाराये अब्भुक्खेति २ सरसेण गोसीस चदणेण जाव चच्चेय दलयति जाव पुप्फारोहण आसत्तोसत्तकयग्गाह धूवदलयति २ जेणेव मुहमडवगस्स उत्तरिल्लाण खभपाति तणेव उवागच्छइ लोमहत्थग गिण्हति २ त्ता खभेय सालिभजियाउय

भाषा, वहां पूजनी ली और द्वार, बारसाख व पूतलियों को पूजनी से पूजी दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालना की, श्रेष्ठ गोशीर्ष चदन से चर्चना की यावत् पुष्पचढाये व धूप किया वहां से मुख मंडप के उत्तर दिशी के द्वार की स्तंभ पंक्ति की पास आया वहां हाथ में मोर पूजनी लेकर स्तंभ व शालाभंजिका की प्रमार्जना की, दीव्य उदक धारा से प्रक्षालन किया गोशीर्ष चन्दन से पांच अंगुलितल स मंडल का आलेखन किया वहां पुष्प चढाये यावत् धूप किया फीर वहां स मुखमंडप के पूर्व द्वार की स्तंभ पंक्ति की पास आया वहां पूर्वोक्त सब कथन करना, यावत् दक्षिण द्वार पर्यंत सब द्वार कहना फीर वहां से प्रेक्षाघर मंडप के बहुत

तोरणेय, सालिभंजियाओय वालरूवएय लोमहत्थएण पमज्जति २ दिव्वाए उदगधाराए सरसेण गोसीसचंदणेण अणुलिंपति २ पुप्फारुहण जाव धूव दलयति २ सिद्धायतण अणुप्पयाहिण करेमाणे जेणेव उत्तरिल्लाणदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ २त्ता तचेव महिंदज्झया चेतियरुक्खे चेतियथूभे पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जिणपडिमा उत्तरिल्ला पुरत्थिमिल्ला दक्खिणिल्ला पेच्छाघरमंडवस्सवि तहेव जहा दक्खिणिल्लस्स पच्च-त्थिमिल्लदारे जाव दक्खिणिल्लाण खंभपती मुहमंडवस्सवि तिण्हदारेण अच्चणिया भाणिऊण दक्खिणिल्लाण खंभपती उत्तरेदारे पुरच्छिमेदारे सेस तेणेव कमेण जाव

चंदन से विलेपन किया, पुष्पारोपण किया यावत् धूप किया यह सिद्धायतन के दक्षिण द्वार की पूजा हुई अब सिद्धायतन को प्रदक्षिणा करता हुआ उस के पीछे के भाग से उत्तर दिशा के द्वारवाली नंदा पुष्करणी की पास आया वहां अनुक्रम से महेन्द्र ध्वजा, चैत्य वृक्ष, चैत्य स्तूप, पश्चिम दिशा की मणि पीठिका, जिन प्रतिमा, उत्तर, पूर्व व दक्षिण दिशा की मणिपीठिका व प्रतिमा की पूजा की वहां से प्रेक्षाघर मंडप के पास गया उस का कथन दक्षिण दिशा के प्रेक्षाघर जैसे कहना वहां से पश्चिम दिशा के द्वार के पास गया यावत् दक्षिण दिशा की स्तंभपंक्ति, मुखमंडप के तीनों द्वार की अर्चना कहना यावत् दक्षिण दिशा के प्रेक्षा स्तंभपंक्ति की अर्चना की यों क्रमशः सब करते हुवे यावत्

हत्थएण पमज्जति २ दिव्वाए उदगरसेण पुप्फारुहण आमचोसत्त जाव धूव दलयति २ जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ २ जिण-पडिमाए आलोए पणाम करेति २ त्ता लोमहत्थग गेण्हाति २ त्ता तचेव सव्व ज च जिणपडिमाए जाव सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्ताण वदति नमसति, एव उत्तरि ल्लएवि एव पुरत्थिमिल्लाएवि दाहिणिल्लाएवि, जेणेव चेइयरुक्खे दारविही, जेणेव माणिपेढियाविही जणव महिंदज्झए, दारविही, जेणेव दाहिणिल्लाए नदापुक्खरिणि तेणेव उवागच्छइ २ लोमहत्थग गेण्हति २ चेइयाउयति सोमाण पडिरूवयेय,

चैत्य स्तूप की प्रमार्जना की दीव्य उदकरस से प्रक्षालन किया पुष्प चढाये यावत् धूप किया वहां से पश्चिम दिशा की मणिपीठिका के पास जहां जिन प्रतिमा थी वहां आया जिन प्रतिमा को देखते प्रणाम किया यावत् जिन प्रतिमा का जो अधिकार है वह सब यहां कहना यावत् सिद्ध गति में प्राप्त हुए अरिहंत को नमस्कार होवो यों वदना नमस्कार किया ऐसे ही उत्तर, पूर्व व दक्षिण की मणिपीठिका व जिन प्रतिमा का जानना फीर वहां से चैत्य वृक्ष का पास आया, वहां द्वार विधि जैसे पूजा की वहां से महेन्द्र ध्वजा की पास आया उस की भी वैसे ही पूजा की वहां से दक्षिण दिशा की नंदा पुष्क-रणी के पास आया वहां मोर पींछ का पूजनी ग्रहण की, वहां वेदिका, पांवाथिय, तोरण पुतली व व्याल रूपक इन सब की पूजनी से प्रमार्जना की, दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, श्रेष्ठ गोशीर्ष

विहाडेइ २ त्ता जिणसकहा लोमहत्थयेणं पमज्जति २ त्ता सुरभिणा गंधोदएण तिसत्तखुत्तो जिणसकहाओ पक्खालेति सरसेण गोसीस चंदणेण अणुलिंपइ २ त्ता अग्गेहिं वरेहिं मल्लेहिय अच्चणित्ता धूव दलयाति २ त्ता वइरामयेसु गोलवट्ट समुग्गयेसु पडिनिक्खमेति, वइरामएसु गोलवट्ट समुग्गयेसु पडिणिक्खमित्ता पुप्फारुहण जाव आभरणारुहण करइ माणवक चेतियखंभे लोमहत्थएण पमज्जति २ दिव्वाये उदगधाराए अब्भुक्खेति २ त्ता सरसेण गोसीस चंदणेण दलयाति २ पुप्फारुहण जाव आसत्तो सत्तकयग्गाधूव दलयाति २ जेणव सभाए सुधम्माए बहुमज्झदेसभाए तचेव जेणव सीहासणे

की, श्रेष्ठ गोशीष चंदन से लेपन किया श्रेष्ठ प्रधान गंध माला से अर्चना की और धूप किया, फीर वज्र रत्नमय गोल डब्बे में जिन दाढा रखदी और उस पर पुष्पारोपण यावत् आभरण का आरोपण किया माणवक चैत्य स्थंभ की प्रमार्जना की, दिव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन से लेपन किया, पुष्प का आरोपण यावत् धूप किया वहां से सुधर्मा सभा के मध्य भाग में आया वहां उस ही प्रकार अर्चना की यावत् जहां सिंहासन है वहां आया, वहां आकर अर्चना कर वैसे ही द्वार की अर्चना कर वहां से देव शैय्या के पास आया वहां से छोटी महेन्द्र ध्वजा के पास आया, वहां से

पुरत्थिमिल्ला णंदापुक्खरिणि जेणेव सभासुधम्मा तेणेव पहारेत्थ गमणाये॥ १५५ ॥ ततेण तस्स विजय देवस्स चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ एयप्पभिति जाव सव्वट्ठ-सिद्धेय जाव णाइयरवेण २ जणेव सभासुहम्मा तणव उवागच्छति २ त्ता सभ सुहम्म अणुप्पयाहिणी करेमाण २ पुरच्छिमिल्लेण दारेण अणुप्पविसति २ आलोए जिणसकहाण पणाम करेति जणेव मणिपेढिया जणेव मणिवय चेतियखभे जेणेव वइरामया घोलवट्टसमुग्गका तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता वइरामये गोलवट्ट समुग्गये लोमहत्थण पमज्जइ २ वइरामए गोलवट्ट समुग्गये

पूर्व में नंदा पुष्करणी के पास सुधर्मा सभा में आने के लिये उद्यत हुआ ॥ १५५ ॥ विजय देवता के चार हजार सामानिक यावत् सब ऋद्धि सहित यावत् वादित्र के शब्द से वह विजय देव सुधर्मा सभा की पास आया इस को प्रदक्षिणा करके पूर्व के द्वार से उस में प्रवेश किया वहां जिन दाढा को देखते ही प्रणाम किया वहां से जहां मणिपीठिका, जहां माणवक चैत्य स्थंभ व जहां वज्ररत्नमय गोल डब्बे थे वहां आया वहां पूजनी ग्रहण की वज्ररत्नमय गोल डब्बे की पूजनी से प्रमार्जना की, गोल डब्बे खोल दिये और जिन दाढा की पुंजनी से प्रमार्जना की, सुगंधी पानी से जिनदाढा की इक्कीस वार प्रक्षालना

अणुलिंपति २ त्ता अग्गेहिंवरहिं गंधेहिय मल्लेहिय अच्चेणेति मल्लेहिय अच्चणित्ता सीहासण लोमहत्थएण पमज्जति जाव धूव दलयति सेस तहेव नंदा जहा हरयस्स तहा जेणेव मणिपेढिया तेणेव उवागच्छइ २त्ता आभिओगिएदवे सद्दावेति २ त्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! विजयाए रायहाणीए सिंघाडगेसुय तिसुय चउक्केसुय चउम्मुहेसुय महापहे पासाएसुय पागारेसुय अट्टालयसुय चरियासुय गोपुरेसुय तोरणेसुय वावीसुय पुक्खरिणीसुय जाव विलवंति, गोमुय आरामेसुय उज्जाणसुय काणणसुय वणेसुय वणसंडसुय वणराईसुय अच्चणिय करेह करेत्ता, ममयेमाणत्तिय

तीन सभा में सिंहासन की अर्चना करना और ग्रह की पूजा नंदापुष्करणी जैसे करना वहां से व्यवसाय सभा में आया वहां पुस्तक रत्न मारपींछ की पुंजनी स पुजा दीव्य उदकधारा से प्रक्षालन किया श्रेष्ठ गोशीर्ष चन्दन से लेपन किया, श्रेष्ठ प्रधान गंध व माला से अर्चन किया फीर सिंहासन की पूजनी से प्रमार्जना की यावत् धूप क्रिया शेष सब पूर्ववत् जानना नंदा पुष्करणी जैसे द्रह का करना वहां से मणि पीठिका के पास जाकर आभियोगिक देव को बुलवाये और ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय! तुम विजया राजधानी में शृंगाटक, त्रिक, चौक, चतुर्मुख, महापथ, प्रासाद, प्राकार (कोट) अट्टालक, चरिका, (मार्ग) गोपुर, तोरण, बावडी, पुष्करणी, यावत् बिल, गोमुख, बगीचा, उद्यान, कानन, वन, वनखण्ड

तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव दारच्चणिता जेणेव देवसयणिज्जे तचेव जेणेव खुड्ड महिंदज्झये तचेव जेणेव पहरण कोसे चोप्पाल तणेव उवागच्छति २ त्ता पत्तय पहरणाइं लोमहत्थएण पमज्जति २ त्ता सरसेण गोसीसचंदणेण तहेव सव्व सेसवि दक्खिण दारवि आदि करेतु तहेव णयव्वजाव पुरत्थिमिल्लाणंदापुक्खरणी सव्वाण सभाण जहा सुधम्माए सभाए नहा अच्चणिया उववाय सभाए णवरिं देवसयणिज्जस्स अच्चणिया,सेसासु सीहासणेण अच्चणिया हरयस्स,जहा णंदाए पुक्खरिणीए अच्चणिया ववसायसभाए पोत्थरयण लोमहत्थ॰ दिव्वाए उदग धाराए सरसेण गोसीस चंदणेण

शस्त्र कोश चोठ शस्त्रागार कोष है वहां आया वहां प्रत्येक शस्त्र को मोरपीछे की पुंजनी से पूंछा, श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन से विलेपन किया, यों सब पूर्ववत् जानना सुधर्मासभा से नंदापुष्करणी पर्यंत ऐसे ही कहना सिद्धायतन जैसे दक्षिणद्वार मुख मंडप, चैत्य स्तूप, चार जिन प्रतिमा, चैत्यवृक्ष, माहेन्द्र ध्वजा, और नंदापुष्करणी की अर्चना की ऐसे ही सुधर्मासभा के उत्तरदिशा के द्वार से पूर्वोक्त कही इतनी वस्तु का पूजन किया ऐसे ही पूर्वदिशी का जानना सब सभा का सुधर्मा सभा जैसे कहना उपपात सभा का वैसे ही कहना परंतु इस में देव शय्या भी कहना और शेष

ततेण से विजये देवे चउहिं सामाणिय देवसाहस्सीहिं जाव सोलसेहिं आयरक्ख देवसाहस्सीहिं सव्विड्ढीए जाव णादितेण जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति २त्ता सभ सुहम्म पुरत्थिमेण दारेण पविसति अणुपविसित्ता जेणेव मणिपढिया तेणेव उवागच्छाति २ सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥ १५७ ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरत्थिमेण पत्तेय २ पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसियति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पुरत्थिमेण पत्तेय २ पुव्वणत्थे भद्दासणेसु णिसीयति॥ ततेण तस्स

चार हजार सामानिक यावत् सोलह हजार आत्मरक्षक देव की साथ सब ऋद्धि यावत् वादित्र के शब्द से जहां सुधर्मा सभा है वहां जाने लगा सुधर्मा सभा में पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया और मणिपीठिका के पास आकर सिंहासन पर पूर्वाभिमुख से बैठा ॥ १५८ ॥ तत्पश्चात् विजय देवता के चार हजार सामानिक देव अनुक्रम से आये, और ईशानकून में पूर्वोक्त भद्रासन पर बैठे तत्पश्चात् उस की चार अग्रमहिषी पूर्व दिशा में पहिले वर्णन किये हुवे भद्रासन पर बैठी, उस के पीछे आभ्यन्तर परिषदा के आठ हजार देव पृथक् २ अग्नि कोन में भद्रासन पर बैठे, दक्षिण दिशा में भद्रासन पर मध्य परिषदा के

खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥ ततेण ते आभिओगियादेवा विजयेण देवेण एवं वुत्ता समाणा जाव हट्ठतुट्ठा विणएण पडिसुणेंति विणएण पडिसुणेत्ता विजयाए रायहाणीए सिंघाडगेसु जाव अच्चणिय करेत्ता जेणेव विजये देवे तेणव उवागच्छति २ एयमाणिय पच्चप्पिणति ॥ १५६ ॥ ततेण विजयेदेवे तेसिण अभिओगियाण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ चित्तमाणंदिये जाव हियये जेणेव णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ त्ता पुरच्छिमिल्लेण तोरणाण जाव हत्थपाय पक्खालेत्ता आयते चोक्खेपरमसुइभूय णंदा पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरति २ त्ता जेणेव सभासुहम्मा तणेव पहारेत्थगमणाए ॥१५७॥

वनराजी में आकर उस की अर्चना करो, इतना करके मुझ मेरी आज्ञा पीछी दो विजय देवता से ऐसी बात सुनकर आभियोगिक देवता हृष्ट तुष्ट हुए उन के वचन विनय पूर्वक श्रवण किये, और विजया राज्यधानी में श्रृंगाटक यावत् वनराजी में अर्चना करके उनको उनकी आज्ञा पीछी दी ॥ १५६ ॥ आभियोगिक देवकी पास से ऐसा सुनकर वह विजय देवता हृष्ट तुष्ट व आनंदित हुआ, वहां से नंदा पुष्करणी के पास आकर पूर्व के तोरण से यावत् हाथ पांव का प्रक्षालन किया, वहां शुचिमय बनकर नंदा पुष्करणी में से नीकलकर सुधर्मा सभा की ओर जाने लगा, ॥ १५७ ॥ वह विजय देव

उप्पीलिय सरासण पट्टिया पीणद्धगेवेज्जबद्ध आविद्धविमलवर चिण्हपट्टा गहिया उहढप्पहरणि तिणयाइ तिसंधीणि वइरामय कोडिणि धणूइ अभिगिज्झपडियाइत कंडकलावा तंजहा-णीलपाणिणो, पीयपाणिणो, रत्तपाणिणो, चावपाणिणो, चारुपाणिणो चम्मपाणिणो, खग्गपाणिणो, दंडपाणिणो, पासपाणिणो, णील-पित रत्त चाव-चारु-चम्म खग्ग-दंड पास वरधरा आयरक्खगा, गुत्ता गुत्तपालिया, जुत्ता जुत्तपालिया, पत्तेय २ समयविउणट किंकर भूताविं चिट्ठति ॥ १५९ ॥ विजयस्सण भंते ! देवस्स केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एग पलिओवम ठिती पण्णत्ता ॥

ऐसा धनुष्य हाथ में लेकर संपूर्ण शर कलाप (भाथे) भरे हुवे हैं, कितनेक के हाथ में हरे वर्ण की छडी-वाले धनुष्य हैं, कितनेक के हाथ में पीले वर्णवाले धनुष्य हैं, कितनेक के पास लाल वर्णवाले धनुष्य हैं कितनेक के हाथ में मनोहर आयुध है, कितनेक के हाथ में चर्म के कोडे हैं, कितनेक के हाथ में खड्ग हैं, कितनेक के हाथ में दण्ड हैं, कितनेक के हाथ में पाश है, ऐसे ही नीले, पीले, लाल धनुष्यवाले, मनोहर आयुधवाले, चर्म, खड्ग, दंड, पाश धारन करनेवाले, अंग रक्षक, गुप्त रक्षा करनेवाले, सेवक के गुणों से युक्त, परिवार सहित पृथक् २ समान मात्रा से नमते हुए किंकरभूत बनकर रहते हैं ॥ १५९ ॥ अहो भगवन् ! विजय देव की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! विजयदेव की एक पल्योपम की स्थिति

विजयस्स देवस्सदाहिणपुरत्थिमेण अब्भिंतरियाए परिसाए अट्ठदेवसाहस्सीओ पत्तेयं २ जाव णिसीयंति एवं दक्खिणेण मज्झिमियाए परिसाए दसदेव साहस्सीओ जाव णिसीयंति दाहिण पच्चत्थिमेण बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पत्तेय २ जाव णिसीयंति ॥ ततेणं तस्स विजयस्स देवस्स पच्चत्थिमेण सत्त अणियाहिवई पत्तेय २ जाव णिसीयंति ॥ ततेणं तस्स विजयस्स देवस्स पुरत्थिमेण दाहिणेण पच्चत्थिमेण उत्तरेण सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ पत्तेय २ पुव्वणत्थेसु आसणेसु णिसीयंति तंजहा-पुरत्थिमेण चत्तारिसाहस्सीउ जाव उत्तरेण ॥ ततेणं आयरक्खा सण्णद्धबद्धवम्मिय कवया

दश हजार देव, नैऋत्यकून में बाह्य परिषदा के बारह हजार देव पृथक् २ सिंहासन पर बैठे, पश्चिम दिशा में उस के सात अनिकाधिपति पृथक् २ भद्रासन पर बैठे, सोलह हजार आत्मरक्षक पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर में पूर्व कथित भद्रासन पर बैठे तद्यथा—पूर्व दिशा में चार हजार, दक्षिण दिशा में चार हजार, पश्चिम दिशा में चार हजार व उत्तर दिशा में चार हजार इन का वर्णन करते हैं. वे आत्म रक्षक देव सन्नद्धबद्ध आयुध से सज्ज बने हुवे हैं, कवच धारन किये हुवे हैं, शरासन धनुष्य की पट्टी कसी की है, कंठ में आभरण धारण किये, विमल उत्तम सुभट के चिन्हपट उन के हाथ में हैं, उन्नत आयुध व प्रहरण ग्रहण किये हैं, तीन स्थान नीचे नमे हुवे हैं, तीन सन्धी हैं, उन की वज्रमय सन्धी हैं

दाहिणेणं जाव वेजयंते देवे ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! जंबूद्दीवस्स जयंतेणाम दारे पण्णत्ते, ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं पणयालीसं जोयण सहस्साइं जंबूद्दीवे पच्चत्थिमापरंते लवणसमुद्द पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेणं सीतोदाये महं नदीय उप्पिं एत्थणं जंबूद्दीवस्स जयंते नामदारे पण्णत्ते ॥ तच्चेव सोपमाण, जयंते देवे पच्चत्थिमेणं से रायहाणीए जाव महिड्डीए ॥ २ ॥ कहिणं भंते ! जंबूद्दीवस्स अपराजिए णामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स उत्तरेणं पणयालीस

भगवन् ! वैजयंत देव की वैजयंता राज्यधानी कहां कही है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप से असंख्यातवा जम्बूद्वीप नामक द्वीप में विजयंता राज्यधानी है इस का वर्णन विजया राज्यधानी जैसे जानना विजयंत नामक द्वार व विजयंता राज्यधानी का, विजयंत नामक देव का कथन विजय देव जैसे जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! जयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में ४५ हजार योजन जाने तब जम्बूद्वीप के पश्चिम के अंत में पश्चिम के लवण समुद्र से पूर्व में सीतोदा महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का जयंत नामक द्वार कहा है इस का सब वर्णन विजय जैसे जानना इस का जयंत नामक देव अधिपति है पश्चिम दिशा में राज्यधानी है यावत् महर्द्धिक है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का अपराजित नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ४५

विजयस्सणं भंते! देवस्स सामाणियाणं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता ॥ एवं महिड्ढीए एवंमहाजुत्तीये एवं महब्बले एवं महायसे एवं महासुक्खे एवं महाणुभागे विजयदेवे॥१६०॥ कहिणं भंते! जंबूद्दीवस्स दीवस्स वेजयंते णामदारे पण्णत्ते? गोयमा! जंबूद्दीवदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेणं पणयालीसं जोयणा सहस्साइं अबाहाये जंबूद्दीवदीवे दाहिणपेरंते लवणसमुद्दस्स दाहिणद्धस्स उत्तरेणं एत्थणं जंबूद्दीवस्स २ वेजयंते नामदारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सच्चेवसव्वा वत्तव्वया जावणिच्चे ॥ १ ॥ कहिणं भंते! रायहाणीये

कहां अहो भगवन्! विजय देवता के सामानिक देव की कितनी स्थिति कही है? अहो गौतम! एक पल्योपम की स्थिति कही विजय देवकी ऐसी महाऋद्धि, ऐसी महाद्युति, ऐसा बल, ऐसा महायश ऐसा महासुख व ऐसा महानुभाग कहा है यह विजय देवता का अधिकार संपूर्ण हुवा ॥१६०॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है? अहो गौतम! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अबाधा से आवे वहां दक्षिण दिशा के अंत में दक्षिण दिशा के लवण समुद्र से उत्तर में जम्बूद्वीप नामक द्वीप का वैजयंत नामक द्वार है वह आठ योजन का ऊंचा, चार योजन का चौडा है इस की वक्तव्यता सब विजय द्वार जैसी जानना यावत् नित्य है ॥ २ ॥ अहो

॥ ५ ॥ जंबुद्दीवस्सणं भंते ! दीवस्स पदेसा लवण समुद्द पुट्ठा ? हंता पुट्ठा, तेणं भंते ! किं जंबुद्दीवे २ लवणसमुद्दे ? गोयमा ! जंबूद्दीवेणं दीवे णो खलु ते लवणसमुद्दे ॥ लवण समुद्दस्स पदेसा जंबूदीवं दीवं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा, तेणं भंते किं लवणसमुद्दे जंबुद्दीवे दीवे ? गोयमा ! लवणाणं समुद्दे, णो खलु ते जंबूद्दीवे दीवे ॥ ६ ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे जीवा उद्दाइत्ता २ लवणसमुद्दे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगतिया पच्चायंति अत्थेगतिया णो पच्चायंति ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे

वर्णन हुवा ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के प्रदेश लवण समुद्र को क्या स्पर्शकर रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! स्पर्श कर रहे हुवे हैं अहो भगवन् ! वे प्रदेश क्या जम्बूद्वीप के हैं या लवण समुद्र के हैं ? अहो गौतम ! वे जम्बूद्वीप के हैं परंतु लवण समुद्र के नहीं हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के प्रदेश क्या जम्बूद्वीप को स्पर्श कर रहे हैं ? हां गौतम ! स्पर्शकर रहे हैं अहो भगवन् ! वे क्या लवण समुद्र के हैं या जम्बूद्वीप के हैं ? अहो गौतम ! वे लवण समुद्र के हैं परंतु जम्बूद्वीप के नहीं हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के एकेन्द्रियादिक जीव मरकर लवण समुद्र में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होवे हैं और कितनेक नहीं भी उत्पन्न होवे हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के जीव वहां से

जोयणसहस्स अबाहाए जम्बूद्दीवे उत्तरापरते लवणसमुद्दस्स उत्तरद्धस्स दाहिणेण एत्थण जम्बूद्दीवे २ अपराइए णामदारे पण्णत्ते तचेव पमाण रायहाणी उत्तरेण जाव अपराइए देवे चउण्ह अण्णमि जम्बूद्दीवे ॥ ४ ॥ जम्बूद्दीवस्सण भंते ! दारस्स दारस्सय एसण केवतिय अबाहाए अंतर पण्णत्ते ? गोयमा ! अउणासीतिं जोयण सहस्साइं बावणंच जोयणाइं देसूणंच अद्धं जोयणं दारस्स अबाहाए अंतरे पण्णत्ते

हजार योजन अबाधा से जावे तो वहां इस से उत्तर दिशा के अंत में उत्तरार्ध लवण समुद्र से दक्षिण में जम्बूद्वीप का अपराजित नामक द्वार कहा है इस का सब प्रमाण विजय द्वार जैसे कहना इस की राज्यधानी उत्तर में है इस का अपराजित देव है चारों राज्यधानी अन्य असंख्यातवे जम्बूद्वीप में है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार पर्यंत कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! गुन्यासी हजार साढे बावन योजन ७९०५२॥ योजन में कुच्छकम का एक द्वार से दूसरे द्वार पर्यंत अंतर कहा है जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२७ योजन ३ कोस, १२८ धनुष्य, व १३॥ अंगुल से कुच्छ अधिक है उस में से चारों द्वार की चौडाइ १६ योजन की व चारों द्वार के बारसाख दो योजन के यों सब मीलाकर १८ योजन पूर्वोक्त परिधि में से नीकालना, इस से ३१६२०९ योजन ३ कोस, १२८ धनुष्य, व १३ अंगुल रहे इस के चार भाग करना जिस से ७९०५२ योजन, १ कोस १५३२ धनुष्य ३ अंगुल, ३ यव, यरयूका, इतना एक द्वार से दूसरे द्वार का अंतर जानना यह जम्बूद्वीप के द्वार का

विक्खंभेण, तीसे जीवा उत्तरेण पातीण पडिणायये दुहओ वक्खार पव्वय पुट्ठा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्ले वक्खारपव्वए पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्ल वक्खार पव्वय पुट्ठा, तेवण्ण जोयणसहस्साति आयामेण, तीसे धणुपट्ठ दाहिणेण, सट्ठिजोयणसहस्साइं चत्तारियट्ठार सुत्तरे जोयणसते दुवालसयएक्कूणवीस तिभाए जोयणस्स परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ ८ ॥ उत्तरकुराएणं भंते ! कुराए केरिसए

नीलवंत पर्वत की पास चौडी है और पूर्व पश्चिम लम्बी है, दोनों वक्षस्कार पर्वत को स्पर्श कर रही है, पूर्व दिशा के अन्त से पूर्व दिशा के माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत को स्पर्शी हुई है और पश्चिम दिशा के अन्तसे पश्चिम दिशा का गंधमादन वक्षस्कार पर्वत को स्पर्शी हुइ है यह जिव्हा ५३००० योजन पूर्व पश्चिम लम्बी है, (मेरु पर्वत से पूर्व पश्चिम भद्रशाल वन २२००० योजन का लम्बा है इस से ४४००० योजन का भद्रशाल वन कहा उस में मेरु पर्वत के दश हजार योजन मीलाने से ५४००० योजन होवे उस में से ५००—५०० योजन के वक्षस्कार पर्वत के १००० योजन नीकालते शेष ५३००० योजन की जिव्हा कही) इस की धनुष्य पीठ का ६०४१८ १२/१९ योजन की है अर्थात् अर्ध परिधि है गंध मादन व माल्यवंत दोनों ३०२०९ ६/१९ योजन के लम्बे हैं, इस से दोनों के मीलकर ६०४१८ १२/१९ योजन हुए ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र का कैसा भाव कहा है ? अहो गौतम ! वहां बहुत सम

जोवा उद्दाहत्तार जम्बूदीवेदीवे पच्चायति ? गोयमा! अत्थेगतिया पच्चायति अत्थेगतिया-नो पच्चायति ॥ ७ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जम्बूदीवेदीवे ? गोयमा ! जम्बूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण नीलवंतस्स दाहिणेण मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेण गंधमायणस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेण एत्थण उत्तरकुराणामकुरा पण्णत्ता पाईण पडीणायता उदीण दाहिण विच्छिण्णा अद्धचंद संठाण संठिया, एक्कारस जोयण सहस्साति अट्ठबयाले जोयणसए दोण्णिय एकोणवीसति भागे जोयणस्स

मरकर जम्बूद्वीप में क्या उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न हैं कितनेक उत्पन्न नहीं होते हैं ॥७॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप ऐसा नाम क्यों किया ? अहो गौतम! जम्बुद्वीप नामकद्वीप में मेरु पर्वत से उत्तर में, नीलवंत पर्वत से दक्षिण में, माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत से पश्चिम में और गंधमादन वक्षस्कार पर्वत से पूर्व दिशा में उत्तरकुरु नामक कुरु क्षेत्र कहा हुवा है यह पूर्व पश्चिम लम्बा, उत्तर दक्षिण चौडा विस्तार वाला व अर्ध चंद्र के संस्थान वाला है ११८४२ २/१९ योजन का उत्तर दक्षिण में चौडा है (महाविदेह क्षेत्र की चौडाइ ३३६८४ ४/१९ है इस में से मेरु पर्वत की १०००० योजन की चौडाइ जावे २३६८४ ४/१९ योजन की चौडाइ रहे उस के दो भाग करने से ११८४२ २/१९ योजन की चौडाइ रहे उस की जीवा उत्तर में

तेयलीं सणिचारा ॥ १० ॥ कहिण भंते! उत्तरकुराए जमगा नाम दुवे पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! नीलवतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणण अट्ठचोत्तीस जोयणसते चत्तारिय सत्तभाग जोयणसहस्स अबाधाए, सीताये-महाणईए उभयोकूले एत्थण उत्तरकुराए कुराए जमगाणामदुव्वे पव्वता पण्णत्ता, एगमेगेण जोयणसहस्स उड्ढउच्चत्तेण अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइ उव्वेहेण मूले एक्कमेक जोयणसहस्स आयामविक्खभेण मज्झअद्धट्ठमाइ जोयण सताइ आयाम विक्खभेण, उवरिपचजोयण सयाइ आयामविक्खभेण मूलेतिण्णि जोयण सहस्साइ एक बावट्ठ जोयणसय किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण मज्झ दो जोयण सहस्साइ

के नाम १ पद्म गधा, २ मृग गधा ३ अममा ४ सखा ५ तेयलीय और ६ शनीचारी ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र में जमक नामक दो पर्वत कहाँ कहे हैं ? अहो गौतम ! नीलवत वर्षधर से दक्षिण दिशा में ८३४$\frac{४}{७}$ योजन अबाधा से जावे तो वहाँ सीता महानदी के दोनों किनारे उत्तरकुरु क्षेत्र में दो जमक पर्वत कहे हैं उन में से एक पूर्व किनारे पर व दूसरा पश्चिम किनारे पर है ये पर्वत एक हजार योजन के ऊंचे, अढाइसो योजन के जमीन में ऊंड हैं, मूल में एक हजार योजन के लम्बे चौडे, मध्य में साढे सातसो योजन के लम्बे चौडे और ऊपर पांचसो योजन के लम्बे चौडे हैं मूल

आगार भाव पडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामये आलिंग पुक्खरेतिवा जाव एव सरुअगदीवे वत्तव्वया जाव देवलोग परिगाहाण, तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! णवर इम णाणत्त छधणु सहस्समूसिया, दो छप्पन्ना पिट्ठकरडयासय, अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति, तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाइ पलिओवमस्स सखेज्जइ भागेण रूणगाइ जहन्नेण तिन्निपलिओवमाइ उक्कोसेण एक्कूणपण्णा रतिंदियाइ अणुपालणा, सेस जहाएगरूयाण ॥ १ ॥ उत्तर कुराण कुराए छविधा मणुस्सा अणुसज्जति तजहा - पम्हगधा मियगधा अममा सहा

रमणीय भूमि भाग कहा है, जैसे आलिंग पुष्कर वादिंत्र का तला वगैरह सब एकरुक द्वीप जैसी वक्तव्यता यहां जानना यावत् देव गति में जाने वाले वहां के मनुष्यों हैं विशेषता यह है कि यहां छ हजार धनुष्य अर्थात् तीन कोश की शरीर की अवगाहना है २५६ पसली है तीन दिन के अतर से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है, उनका आयुष्य जघन्य तीन पल्योपममें से पल्योपम का असख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पूरा तीन पल्योपम यहांपर युगल मनुष्य अपने अपत्य की प्रतिपालना ४९ दिन करते हैं शेष सब अधिकार एक-रुक नामक अतरद्वीप जैसे जानना ॥ १ ॥ उत्तरकुरु क्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन

तेयली सणिच्चारी ॥ १० ॥ कहिण भंते ! उत्तरकुराए जमगा नाम दुवे पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! नीलवंतरस वासहर पव्वयरस दाहिणणं अट्ठचोत्तीसं जोयणसते चत्तारिय सत्तभाग जोयणसहस्स अबाधाए, सीताये महाणईए उभयोकूले एत्थणं उत्तरकुराए कुराए जमगाणामदुवे पव्वता पण्णत्ता, एगमेगेणं जोयणसहस्स उड्ढउच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उव्वेहेणं मूले एकमेकं जोयणसहस्स आयामविक्खंभेणं मज्झेअद्धट्ठमाइं जोयण सताइं आयाम विक्खंभेणं, उवरिपंचजोयण सयाइं आयामविक्खंभेणं मूलेतिण्णि जोयण सहस्साइं एकं बावट्ठं जोयणसयं किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं मज्झे दो जोयण सहस्साइं

के नाम १ पद्म गधा, २ मृग गधा ३ अमपा ४ सस्वा ५ तेयलीय और ६ शनीचारी ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र में जमक नामक दो पर्वत कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! नीलवंत वर्षधर से दक्षिण दिशा में ८३४$\frac{4}{7}$ योजन अबाधा से जाव सो वहां सीता महानदी के दोनों किनारे उत्तरकुरु क्षेत्र में दो जमक पर्वत कहे हैं उन में से एक पूर्व किनारे पर व दूसरा पश्चिम किनारे पर है ये पर्वत एक हजार योजन के ऊंचे, अढाइसो योजन के जमीन में ऊंडे हैं, मूल में एक हजार योजन के लम्बे चौडे, मध्य में साढे सातसो योजन के लम्बे चौडे और उपर पांचसो योजन के लम्बे चौडे हैं मूल

आगार भाव पडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामये आलिंग पुक्खरेतिवा जाव एव सरुअगदीवे वत्तव्वया जाव देवलोग परिग्गाहाण, तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! णवर इम णाणत्त छधणु सहस्समूसिया, दो छप्पन्ना पिट्ठकरडयासय, अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति, तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाइ पलिओवमस्स सखेज्जइ भागेण रूणगाइ जहन्नेण तिन्निपलिओवमाइ उक्कोसेण एक्कूणपण्णा रतिंदियाइ अणुपालणा, सेस जहाएगरूयाण ॥ १ ॥ उत्तर कुराए कुराए छविधा मणुस्सा अणुसज्जति तजहा - पम्हगधा मियगधा अममा सहा

रमणीय भूमि भाग कहा है, जैसे आलिंग पुष्कर वादित्र का तला वगैरह सब एकरुक द्वीप जैसी वक्तव्यता यहां जानना यावत् देव गति में जाने वाले यहां के मनुष्यों हैं विशेषता यह है कि यहां छ हजार धनुष्य अर्थात तीन कोश की शरीर की अवगाहना है २५६ पसली है तीन दिन के अतर से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है, उनका आयुष्य जघन्य तीन पल्योपममें से पल्योपम का असख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पूरा तीन पल्योपम वहांपर युगल मनुष्य अपने अपत्य की प्रतिपालना ४९ दिन करते हैं शेष सब अधिकार एक-रुक नामक अतरद्वीप जैसे जानना ॥ १ ॥ उत्तरकुरु क्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन

यण च उड्ढ उच्चत्तेण एक्कतीस जोयणाइ कोस च विक्खभेण अब्भूग्गतमूसित वण्णओ भूमिभागओ उल्लोता, दो जोयणाइ मणिपेढियाओ उवरिसीहासणा सपरिवारा जाव जमगा चिट्ठति ॥ ११ ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चति जमगा पव्वया ? जमगा पव्वया गोयमा ! जमगेसुण पव्वतेसु तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहूखुड्डियाओ वावीओ जाव विलवतियाओ, तासुण खुड्डा खुड्डिया जाव विलपतियासु बहुइ उप्पलाइ जाव सतसहस्स पत्ताइ जमग प्पभाइ जमग वण्णाइ जमगा एत्थण दो देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसाति, तेण तत्थ पत्तेय २ चउण्ह सामाणिय

जानना दो योजन की मणिपीठिका है ऊपर परिवार सहित सिंहासन है यावत् जमक पर्वत रहे हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जमक ऐसा क्यों नाम रखा ! अहो गौतम ! जमक पर्वत में स्थान २ पर बहुत वापि यावत् बिलपंक्ति हैं उस में बहुत उत्पल यावत् लक्षपत्र जमक जैसी प्रभावाले सब जमक जैसे वर्णवाले रहते हैं और भी वहां जमक नामक दो महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं वे वहां चार हजार सामानिक यावत् जमक पर्वत व जमका राज्यधानी में रहनेवाले बहुत वाणव्यतर देव व देवियों का अधिपतिपना करते हुवे यावत् चन को पालते हुवे विचरते हैं अहो गौतम ! इसलिये

तिण्णिय बावत्तरे जोयणसते किंचित विसेसूण परिक्खेवेण पण्णत्ता, उप्पिं पण्णरस एक्कासीति जोयण सते किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेण पण्णत्ता, मूलेवित्थिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया, गोपुछ संठाण संठिता सव्व कणगामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा, पत्तेय २ पउमवेतिया परिक्खित्ता पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता वण्णओ दोण्णवि तेसिण जमग पव्वयाण उप्पिं बहुसम रमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते वण्णओ जाव आसयंति बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ पासाय वडेंसका पण्णत्ता, तेण पासायवडेंसका बावट्ठि जोयणाइं अद्धजो-

में तीन हजार एकसो बासठ योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है, मध्य में दो हजार बहत्तर योजन से कुछ अधिक की परिधि है, और ऊपर पन्नरहसो इकाशी योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, मध्यमें संकुचित व ऊपर पतले हैं गोपुछ संस्थान वाले हैं सब सुवर्णमय, स्वच्छ सुकुमाल यावत् प्रतिरूप है प्रत्येक पर्वतको पद्मवर वेदिका और वनखण्ड कहे हैं ये वर्णन योग्य हैं इन दोनों जमक पर्वत पर बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यह भी वर्णन योग्य है यावत् वहां देवों बैठते हैं उस भूमिभाग के मध्य में पृथक २ प्रासादावतंसक कहे हैं वे दशा योजन के ऊंचे, ३१। योजन के लम्बे चौडे हैं आकाश तल को अवलम्बन कर रहे होवे वैसे दीखाई देते हैं भूमिभाग पर छत बंधी हुई है वगैरह सब पूर्ववत्

पव्वयाण दाहिणेण अट्ठचोत्तीसे जोयण सये चत्तारिसत्तभाग जोयणस्स अबाधाए सीताए महाणईये बहुमज्झ देसभाए एत्थण उत्तरकुराए नीलवंतद्दहे नाम दहे पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायये पाइणपडीणविच्छिण्णे एग जोयणसहस्स आयामेण पचजोयण सयाति विक्खभेण दस जोयणाइ उव्वेहेण अच्छे सण्हे रययामए कूले चउक्कोणे समतीरे जाव पडिरूवे उभयोपासिं दोहियपउमवरवेइयाहिं दाहिंवणसंडेहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ नीलवंत दहस्सण तत्थ २ जाव बहवेति सोमाण पडिरूवका पण्णत्ता वण्णओ भाणियव्वो तोरणेति ॥ १४ ॥ नीलवंत

पर्वत से दक्षिण में ८३४ $\frac{4}{7}$ योजन के दूरी पर सीता महानदी के बीच में उत्तर कुरु का नीलवंत नामक द्रह कहा है यह उत्तर दक्षिण लम्बा व पूर्व पश्चिम चौडा है एक हजार योजन लम्बा पांच सो योजन चौडा व दश योजन ऊंडा है यह स्वच्छ श्लक्ष्ण है रजतमय किनारे हैं, चार कोणवाला, समान तीरवाला यावत् प्रतिरूप है दोनों बाजु दो पद्मवर वेदिका हैं, दो वनखण्ड हैं वे चारों तरफ घेराये हुवे हैं दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना उस नीलवंत द्रह को त्रिसोपान प्रतिरूप है उसका भी वर्णन पूर्ववत् जानना और तोरण भी है उस का वर्णन भी पूर्ववत जानना ॥ १४ ॥ नीलवंत

साहस्सीण जाव जमगाण पव्वयाण जमगाणय रायहाणीण अण्णेसिंच बहूण वाण-मतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरंति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जमग पव्वया २ अदुत्तरचण गोयमा ! जाव णिच्चा ॥ १२ ॥ कहिंण भंते ! जमगाण देवाण जमगाओ नाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जमगाण पव्वयाणं उत्तराणंतिं तिरिय मसखेज्ज दीव समुद्द वीतीवतित्ता अण्णमि जबूदीवे दीवे बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता एत्थण जमगाण देवाण जमिगाओणाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ, बारसजोयण सहस्साइ जहा विजयस्स जाव महिड्डिया जमगादेवा ॥ १३ ॥ कहिण भंते! उत्तरकुराएउत्तरकुराए नीलवतद्दहे नामद्दहे पण्णत्ते ? गोयमा! जमगाण

इन पर्वतों का नाम जमक रखा है अथवा अहो गौतम ! इन का शाश्वत नाम है ये भूतकाल में नहीं थे वैसा नहीं यावत् नित्य हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जमक देव की जमका राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! जमक पर्वत से उत्तर में असंख्यात द्वीप समुद्र गये पीछे अन्य जम्बूद्वीप नामक द्वीप आता है उस में बारह हजार योजन गये पीछे जमक देव की जमक नामक राज्यधानी कही है यह बारह हजार योजन की लम्बी चौडी वगैरह विजया राज्यधानी जैसे कहना उस में महर्द्धिक जमक देव रहते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र का नीलवंत द्रह कहां कहा है ? अहो गौतम ! जमक

वाहल्लेण सव्व कणगामई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ १६ ॥ तीसेण कण्णियाए उवरि बहुसमरमणिज्ज देसभाए पण्णत्त जाव मणीहिं तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमि भागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगेमहं भवणे पण्णत्ते कोसच आयामेण, अद्धकोसच विक्खंभेण, देसूण कोस उड्ढ उच्चत्तेण अणेगखंभसतसंनिविट्ठ, सभा वण्णओ ॥१७॥ तस्सण भवणस्स तिदिसिं तओदारा पण्णत्ता तंजहा पुरत्थिमेण दाहिणेण उत्तरेण, तेण दारा पंचधणुसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण अड्ढाइज्जाइ धणुसयाइ विक्खंभेण तावतियं चेव पवेसेण सेतावरकणग थूभियागा जाव वणमालाओ ॥ १८ ॥ तस्सण भवणस्स अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिंग पुक्खरेतिवा, जाव मणीण वण्णओ ॥ १९ ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स

की जाती है सब स्वच्छ, श्लक्ष्ण यावत् प्रतिरूप है ॥ १६ ॥ उस कर्णिका उपर बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है वह यावत् मणि से सुशोभित है उस भूमि भाग के मध्य में एक बडा भवन कहा है वह एक कोश का लम्बा आधा कोश का चौडा कुच्छकम एक कोश का ऊंचा अनेक स्थंभ वाला है इस का वर्णन सभा जैसे कहना ॥ १७ ॥ इस भवन के तीन दिशा में तीन द्वार हैं तद्यथा—पूर्व दक्षिण व उत्तर वे द्वार पांच सो धनुष्य के ऊंचे, अढाइसो धनुष्य के चौडे और उतने ही प्रवेश वाले है सुवर्णमय शिखर है यावत् वनमाला पर्यंत वर्णन कहना ॥ १८ ॥ उस भवन में बहुत रमणीय भूमिभाग है जैसे

दहस्सण दहस्स बहु मज्झदेसभाए एत्थण एगेमहं पउमे पण्णत्ते, जोयण आयाम विक्खंभेण तं तिगुणं सविसेस परिक्खेवेण अद्धजोयण बाहल्लेण, दस जोयणाइं उव्वेहेण दो कोसे ऊसिते जलतीतो सातिरेगाइं दस जोयणाइं सव्वग्गेण पण्णत्त ॥ १५ ॥ तस्सण पउमस्स अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा वइरामयामूला रिट्ठामये कंदे, वेरुलिया मये णाले, वरुलियामया बाहिरपत्ता, जम्बूणयमया अब्भितरपत्ता, तवणिज्जमया केसरा, कणगामई कण्णिया, नाणामणिमया पुक्खरत्थिभुया, साण कण्णिया अद्धजोयण आयाम विक्खंभेण तं तिगुणं सविसेस परिक्खेवेण, कोस

द्रह के मध्य भाग में एक पद्म कमल है वह एक योजन का लम्बा चौडा और उस से तीनगुनी से अधिक परिधि है, आधा योजन का जाडा है दश योजन ऊंडा है, जल उपर दो कोश का ऊंचा है और सब मीलकर साधिक दश योजन का है ॥ १५ ॥ इस पद्म का इस तरह वर्णन करते हैं वज्र रत्नमय मूल है अरिष्ट रत्नमय कंद है, वैडूर्य रत्नमय नाल है, वैडूर्य रत्नमय बाहिर के पत्र हैं जम्बूनद रत्नमय आभ्यंतर के पत्र हैं, तपनीय सुवर्णमय केशरा है कनकमय कर्णिका है, विविध मणिमय स्थूभिका है उस की कर्णिका आधा योजन की लम्बी चौडी है, इस से तीनगुनी से अधिक की परिधि है, एक कोश

परिक्खेवेण, अद्धकोसे बाहल्लेण सव्व कणगामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिण कण्णिया उप्पिं बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा जाव मणीण वण्णो गंधो फासो ॥ २० ॥ तस्सण पउमस्स अवरुत्तरेण उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण निलवंत दह कुमारस्स देवस्स चउण्ह सामाणिय साहस्सीणं, चत्तारि पउम साहस्सीओ पण्णत्ताओ एव सव्व परिवारो नवरि पउमाण भाणियव्वो, सेण पउमे अण्णेहिं तेहिं पउम-परिक्खेवेण सव्वतो समता सपरिक्खित्ते तजहा—अब्भितरएण मज्झिमएण बाहिरएण अब्भितरएण पउमपरिक्खेवे बत्तीस पउम सयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमएण पउम परिक्खेवो चत्तालीस पउमसय साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरएण पउमपरिक्खेवे अडयालीस पउमसय साहस्सीओ पण्णत्ताओ, एवामेव सपुव्वावरेण एगापउम कोडी

परिधि है, आधा कोस की जाडी है सब कनकमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है उन की कर्णिका पर रमणीक भूमिभाग है यावत् मणि का वर्ण, गंध रस व स्पर्श है ॥ २० ॥ उस पद्म कमल के वायव्य कोण उत्तर व ईशान कोण में नीलवंत द्रह कुमार देव के चार हजार सामानिक देव के चार हजार पद्म कहे हैं यों सब परिवार के कमल कहना अब यह पद्म अन्य तीन कमलकी परिधि से वींटा हुवा है आभ्यंतर परिधि मध्य परिधि व बाहिर परिधि अभ्यंतर परिधि में बत्तीस लाख कमल, मध्य परिधि में चालीस लाख कमल और बाहिर की परिधि में अडचालीस लाख

बहुमज्झदेसभाए एत्थण मणिपेढिया पण्णत्ता, पंच धणुसताइं आयामविक्खंभेण अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं बाहल्लेणं सव्व मणिमती॥तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एत्थणं एगेमहं दवसयणिज्जं पण्णत्ते, देव सयणिज्जस्स वण्णओ ॥ सेणं पउमे अण्णेणं अट्ठ सतेणं तदट्ठुच्च प्पमाणमेत्तेणं पउमाणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता तेणं पउमा अद्ध जोयणं आयाम विक्खंभेणं ततिगुणं स विसेस परिक्खेवेणं कोसं बाहल्लेणं दसजोयणाइं उव्वेहेणं कोसं ऊसिया जलंताओ सातिरेगाइं दसजोयणाइं सव्वेगेणं पण्णत्ताइं तेसिणं पउमाणं अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—वइरामयामूला जाव णाणाम-णिमया पुक्खलत्थिभया ॥ ताओणं कण्णियाओ कोसं आयामविक्खंभेणं ततिगुणस

वांकिन पुष्कर यावत् मणिका वर्णन जानना ॥ १९ ॥ उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में एक मणि पीठिका है वह पांच सो धनुष्य की लम्बी चौड़ी अढाइ सो धनुष्य की जाडी व सब मणिमयी है उस मणिपीठिका पर एक बड़ा देवशयन है वह देवशयन का वर्णन पूर्ववत् जानना उस पद्मकमल की चारतरफ १०८ कमल उस से आधी ऊंचाइ वाले को हुवे हैं, वे पद्म आधा योजन के लम्बे चौड़े हैं तीनगुनी से अधिक परिधि है, एक कोश के जाड़े हैं, दस योजन ऊंडे हैं, एक कोश पानी से ऊपर है, साधिक दश योजन के सब मीलाकर हैं इन का इस तरह वर्णन किया है वज्ररत्नमय मूल है यावत् विविध मणिरत्न मय पुष्कर स्थूभिका है उन की कर्णिका एक कोश की लम्बी चौड़ी है उस से तीन गुनी से अधिक

विक्खंभेणं उवरिं पण्णास जोयणाइं विक्खंभेणं, मूले तिण्णि सोले जोयणसए किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेणं, मज्झे दोण्णिसत्ततीसे जोयण सते किंचि विसेसाहिता परिक्खेवेणं, उवरिंएग अट्ठावन्न जोयणसत किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेणं, मूलेविच्छिण्णा मज्झसंखित्ता उप्पिं तणुया, गोपुच्छ संठाण संठिया सव्वकंचणमया अच्छा, पत्तेयं २ पउमवरवेतियाइं पत्तेयं २ वणसंड परिक्खित्ता ॥ तेसिणं कंचणग पव्वयाणं उप्पिं बहु समरमणिज्जे भूमिभागे जाव आसयंति, पत्तेयं २ पासायवडेंसगा सद्धा बावट्ठिं जोयणिया उड्ढं, एक्कतीस

ऊंचे हैं, मूल में एक सो योजन के चौडे हैं मध्य में पचत्तर योजन के चौडे हैं और ऊपर पचास योजन के चौडे हैं मूल में तीन सो सोलह योजन से अधिक परिधि है, मध्य में दो सो सैंतीस योजन से अधिक की परिधि है और ऊपर एक सो अट्ठावन योजन की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, मध्य में संकुचित व ऊपर पतले हैं गोपुछ संस्थानवाले हैं ये सब कंचनमय स्वच्छ हैं प्रत्येक को एक २ पद्मवर वेदिका व एक २ वनखण्ड हैं उन कंचनगिरि पर्वत पर बहुत रमणिय भूमिभाग है यावत् वहां देव बैठते हैं उन कांचनगिरि पर्वत में पृथक् २ प्रासादावतंसक हैं वे ६२॥ योजन के ऊंचे हैं ३१।

ओ वीसच पउमसत सहस्सा भवति तिमक्खाया ॥ २१ ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चति निलवतद्दहे ? निलवतद्दहे गोयमा ! निलवत दहेण तत्थ २ जाव उप्पलाति जाव सयसहस्स पत्ताइ निल्वतप्पभाति निलवत वण्णा भाति निलवत दह कुमारेय, एत्थसोचव गमो जाव णिलवत दह २ ॥ २२ ॥ निलवतण पुरात्थिम पच्चत्थिमण दस २ जोयणाति अवाहाएँ एत्थण दस दस कचणग पव्वता पण्णत्ता, तेण कचणग पव्वता एगमेग जोयणसत उड्ड उच्चत्तेण पणुवीस २ जोयणाति उव्वेहण, मूले एगमेग जोयणसत विक्खभेण मज्झे पण्णत्तारि जोयणाइ आयाम

कमल इन तीनों परिधि के एक क्रोड बीस लाख कमल होते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नीलवत द्रह ऐसा नाम क्यों रखा ? अहो गौतम ! यहां पद्मकमल यावत् लक्षपत्रकमल हैं, वे सब नीले वर्णवाले, नीली प्रभावाले व नीली कांतिवाले हैं यहां नीलवत द्रह कुमार नामक नाग कुमार देव रहता है इस का कथन पद्म देव जैसा जानना यावत् इस लिये नीलवत द्रह नाम दिया गया है ॥ २२ ॥ नीलवत पर्वतसे पूर्व पश्चिम में दश २ योजन के अंतर से अबाधापने दश २ कांचनगिरि पर्वत कहे हुवे हैं वे कांचनगिरि सब मीलकर २ पर्वत होते हैं वे कांचनगिरि पर्वत १०० योजन के ऊंचे हैं, पच्चीस योजन के

नामाए देवा सव्वेसिं पुरच्छिम पच्चत्थिमेण कंचणपव्वता दस २ पकप्पमाणा। उत्तरेण रायहाणी अण्णमि जंबूदीवे चंददहे एरावणदहे मालवंतदहे एवं एक्केको णेयव्वा॥ २५॥ कहिणं भंते ! उत्तर कुराए जंबू सुदंसणाये जंबूपीढे नाम पीढे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूदीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर पुरच्छिमेणं नीलवंतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणेण, मालवंतस्स वक्खार पव्वयस्स पच्चत्थिमेण गंधमादणस्स वक्खार पव्वयस्स पुरत्थिमेण सीयाए महा नदीए पुरत्थिमिल्लेकूले एत्थणं उत्तरकुराए जंबूपेढे नामपेढे पंचजोयण सयाइं आयाम विक्खंभेणं पण्णरस एक्कासीते जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण, बहुमज्झ-

य दो द्रह हुवे ऐसे ही चंद्र द्रह, एरावत द्रह व माल्यवन्त द्रह का वर्णन जानना इन के अधिपति देव व उन की राज्यधानी सब का कथन पूर्ववत् जानना ॥ २५॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र में जम्बू सुदर्शन वृक्ष का जम्बू पीठ नामक पीठ कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशानकून में नीलवंत वक्षस्कार पर्वत से दक्षिणदिशा में माल्यवंत, गंधदंताकार नामक वक्षस्कार पर्वत से पश्चिमदिशा में गंधमादन) गंधदंता वक्षस्कार पर्वत से पूर्वदिशा में, सीता महानदी के पूर्व किनारे पर उत्तरकुरु क्षेत्र में जम्बूपीठ नामक पीठ कहा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है पन्नरसो इक्कासी योजन से अधिक परिधि

जोयणाई कोस च विक्खभेण, मणिपेढिया दो जोयणिया सिंहासणा सपरिवारा ॥ २३ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ कंचणग पव्वया ? गोयमा ! कंचणग पव्वया तेसुण पव्वतेसु तत्थ २ वावीओ उप्पलाइं जाव कंचण वण्णाभाति, कंचणग जाव देवा महिड्डिया जाव विहरांति, उत्तरेण कंचणगाण कंचणिताओ रायहाणीओ अण्णमि जंबू तहेव सव्वं भाणियव्वं ॥ २४ ॥ कहिण भंते ! उत्तरकुराए उत्तरकुरुद्दहे नामद्दहे पण्णत्ते ? गोयमा ! नीलवतस्सद्दहस्स २ दाहिणेणं अट्ठचोत्ती से जोयणसए एवं चेव गमो णेयव्वो, जो नीलवतद्दहस्स सव्वेसिं सरिसके द्दहसरिस

योजन के चौड़े हैं उन में मणिपीठिका है वह दो योजन की लम्बी चौड़ी है यहां परिवार सहित सिंहासन है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! कांचनगिरि पर्वत ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! कांच-नगिरि पर्वत पर सब बावी-उत्पल वगैरह यावत् कांचन वर्ण भांति यावत् वहां कांचनग कुमार देव रहता है उत्तर दिशा में कांचनक कुमार देव की कंचनका राज्यधानी कही है वगैरह सब पूर्ववत् जानना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र में उत्तरकुरु द्रह कहां कहा है ? अहो गौतम ! नीलवंत द्रह से ८३४ $\frac{4}{7}$ योजन दूर पर उत्तरकुरुद्रह कहा है इस का सब कथन नीलवंत द्रह जैसे कहना द्रह के नाम द्रह जैसे कहना कंचनक पर्वत पूर्व पश्चिम किनारे पर कहना उत्तर दिशा में राज्यधानी है

ति आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणि मई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ २७ ॥ तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एत्थणं एगामहं जंबूसुदंसणा पण्णत्ता अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धजोयणं उव्वेहेणं, दो जोयणाइं खंधे अट्ठ जोयणं विक्खंभेणं, छजोयणाइं विडिमा बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणाइं विक्खंभेणं, सातिरेगाइं अट्ठजोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता, वइरामयामूला रययसुपतिट्ठिया विडिमा, एवं चेतियरुक्खस्स वण्णओ जाव सव्वाइं रिट्ठामय विउलकंधा वेरुलियरुइलखंधा, सुजायवरजायरूवपढमगविसालसाला, णाणामणिरयणविविह साहप्पसाहा वेरुलिय

यावत् प्रतिरूप है ॥ २७ ॥ उस मणि पीठिका पर एक बडा जम्बू सुदर्शन वृक्ष है वह आठ योजन का ऊंचा, आधा योजन का भूमि में ऊंडा, दो योजन का स्कंध, आठ योजन का चौडा छ योजन की शाखा है मध्य भाग में आठ योजन चौडा है और सब मीलकर वह साधिक आठ योजन का है इन के वज्र रत्नमय मूल है, चांदीमय सुप्रतिष्ठित अंकूर है अरिष्ट रत्नमय कंद, वैडूर्य रत्नमय मनोहर स्कंध वगैरह चैत्यवृक्ष के वर्णन जैसा जानना यावत् सुजात उत्तम चांदी की शाखा है, मणि रत्नमय विविध प्रकार की शाखा प्रशाखा है, वैडूर्य रत्नमय पत्र है, रक्त सुवर्णमय पत्र के बींट हैं, जम्बूनद रत्नमय

देसभाए बारसजोयणाइ बाहल्लेण, तदाण तरचण माताए -२ पदेस परिहाणीए सव्वेसु चरमंतेसु दोकोसेण बाहल्लेण पण्णत्ते, सव्वकंचणयामये अच्छे जाव पडिरूवे, सेण एगाए पउमवरवेइयाए एगेणय वणसंडेण सव्वतो समता सपरिक्खित्ते दुण्णओ दोण्हवि ॥ तस्सण जंबुपीढस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोमाणपडिरूवगा पण्णत्ता तहेव जाव तोरणा जाव छत्तातिछत्ता ॥ २६ ॥ तस्सण जंबूपढस्स उप्पिं बहुसमरम णिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिंगपुक्खरेतिवा जाव मणि॥तस्सण बहुसमर-मणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता अट्ठजोयणा

है मध्य में बारह योजन का जाडा है, तत्पश्चात थोडा २ कम होता हुवा चरमांत में दो कोश का जाडा है सब कंचनमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है इस को एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड चारों तरफ रहे हुवे हैं इन दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना उस जम्बूपीठ के चारों तरफ चार त्रिसोपान हैं वैसे ही है यावत् तोरण व छत्रपर छत्र कहना ॥ २६ ॥ उस जम्बूपीठ पर एक बडा समरमणीक भूमि है जैसे मृदङ्ग का तल यावत् मणिका स्पर्श उस रमणीय भूमि भाग के मध्य में एक मणि पीठिका कही है वह आठ योजन की लम्बी चौडी व मोटाइ चार योजन की जाडी कही है सब मणिमय स्वच्छ सुक्ष्म

मालाओ भूमिभागा उल्लोया मणिपेढिया पचधणुसइया देवसयणिज्जे भाणियव्व ॥२९॥ तत्थ जेसे दाहिणिल्ले साले से एगे मह पासायवडेंसये पण्णत्ते कोस उड्ढ उच्चत्तेण अद्धकोस आयामविक्खंभेण अब्भुग्गय मूसिया अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा उल्लोया ॥ तस्सण बहु समरमणिज्ज भूमिभागस्स बहु मज्झदेसभाए सीहासण सपरिवार भाणियव्व ॥ ३० ॥ तत्थण जे पच्चत्थिमिल्ले साल एत्थण एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते तचेव पमाण तहिंपि सीहासण सपरिवार ॥३१॥ तत्थण जेसे उत्तरिल्ले साले तत्थण एगेमह पासायवडेंसए पण्णत्ते तचेव पमाण तेहिंपिसीहासण सपरिवार तत्थण जेसे उत्तरिम विडिमरग साले एत्थण एगेमह सिद्धायतण पण्णत्ते कोस आयामेण अद्धकोस

यावत् माला पर्यंत वर्णन पूर्ववत् जानना भूमि भाग है, ऊपर छत है पांचसो धनुष्य की मणिपीठिका है और देव शयन है ॥ २९ ॥ जो दक्षिणदिशा में शाखा है उस पर एक प्रासादावतंसक है वह एक कोश का ऊंचा, आधा कोश का लम्बा चौडा व गगनतल को अवलम्बन करता होवे वैसा है अंदर बहुत रमणीय भूमिभाग है उस भूमिभाग के मध्य भाग में परिवार सहित सिंहासन है ॥३०॥ पश्चिम दिशा के सिंहासन पर एक प्रासादावतंसक है उस का प्रमाण उपरोक्त प्रासादावतंसक जैसे कहना परंतु परिवार रहित सिंहासन कहना ॥ ३१ ॥ जो उत्तर दिशा में शाखा है उस पर एक सिद्धायतन है वह एक कोश का लम्बा, आधा कोश का चौडा, कुच्छ कम देढ कोश का ऊंचा है उस में अनेक स्थंभ

पत्त, सुवण्णेज्ज पत्तविंटा, जम्बूणय रत्तमउयसुकुमालपवाल पल्लवंकुरधरा विचित्त, मणिरयण सुरहिकुसुम फलभारनमियसाला, सच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया अहियं मणाणिव्वुइकरा, पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा॥ २८ ॥ जम्बूएणं सुदंसणा ते चउदिसिं चत्तारि साला पण्णत्ता तंजहा-पुरत्थिमेणं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं, तत्थ जे से पुरत्थिमिल्ले साले एत्थणं एगेमहं भवणे पण्णत्ते-कोसं आयामेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभ सयसंनिविट्ठं तंचेव पमाणं पंचधणुसयाति उड्ढंउच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं विक्खंभेणं जाव वण्ण-

लाल मृदु सुकोमल प्रवाल अंकुर हैं विचित्र प्रकार के मणि रत्नमय सुगंधि पुष्प हैं, फल के भार से उस की शाखा नम्र बनी हुई है व छायावत कांतिवत, श्रीक, उद्योतवन, अत्यंत मन को सुखकारी, प्रसन्नकारी अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २८ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष के पूर्वादि चारोंदिशिमें चार शाखा हैं उन में से पूर्वदिशा की शाखापर एक भवन कहा है वह एक कोस का लम्बा, आधा कोस का चौडा, कुच्छकम एक कोस का ऊंचा व एक स्तंभ वाला है इस का वर्णन करना यावत् भवन के द्वार, पर्यंत कहना इस के द्वार पांचसो धनुष्य के ऊंचे हैं अढाइसो धनुष्य के चौडे हैं और भवने की मयन वाले हैं

अट्ठसएण जंबुण तदद्धुच्चत्तप्पमाण मेत्ताणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता ॥ ताओणं जंबुओ चत्तारि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण कोस उव्वेहेण जोयणखंधे, कोसविक्खंभेण तिन्निजोयणाइं विडिमा बहुमज्झदेसभाए चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण सातिरेगाइं चत्तारि जोयणाइं सव्वग्गेण वइरामयमूला सो चेव चेतियरुक्ख वण्णओ ॥ ३४ ॥ जंबुएणं सुदंसणाए अवरुत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थणं अणाढियस्स देवस्स चउण्ह सामाणिय साहस्सीणं चत्तारि जंबू साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ जंबूएणं सुदंसणाइं पुरत्थिमेणं एत्थणं अणाढियस्स देवस्स चउण्ह अग्गमहिसीणं चत्तारि जंबूओ पण्णत्ताओ एवं सपरिवारो सव्वो णेयव्वो ॥ जंबूणं जाव आयरक्खाणं सुदंसणातिहिं जोयणसइएहिं

इवाले १०८ जम्बू वृक्ष मूल से व्याप्त हैं ये चार योजन के ऊंचे हैं एक कोश के ऊंडे हैं, एक कोश का स्कंध है, वे एक कोश के चौड़े हैं तीन योजन की शाखा है, मध्य में चार योजन चौड़े हैं सर्वांग साधिक चार योजन के हैं उन का वज्ररत्नमय मूल है वगैरह चैत्य वृक्ष वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ ३४ ॥ जम्बू सुदर्शन से वायव्यकून, उत्तर दिशा व ईशा॰ कून में अनाधृत देवता के चार हजार सामानिक देवता के चार हजार सामानिक जम्बू हैं, जम्बू सुदर्शन से पूर्व दिशा में परिवार सहित चार अग्रम हिषियों के यावत् सोलह हजार आत्म रक्षक देव के जम्बूवृक्षों हैं,यों सब परिवार कहना. जम्बूवृक्ष के वन क

विक्खंभेण देसूण कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेग खंभसयसन्निविट्ठे वण्णओ, तिदिसिं तओदारा पंचधणुसया अड्ढाइज्जधणुसयं विक्खंभेणं, मणिपेढिया पंचधणुसइया देवच्छंदओ पंचधणुसय विक्खंभो सातिरेगं पंचधणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, तत्थणं देवच्छंदए अट्ठसयं जिणपडिमा जिणुस्सेहप्पमाणाणं, एवं सव्वासिद्धायतणवत्तव्वया भाणियव्वा जाव धूवकडुच्छुया, उत्तिमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवेए सहेव ॥ १२ ॥ जम्बूसुदंसणामूलं बारसहिं पउमवरवेइयाहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, ताओणं पउमवरवेदियाओ अद्धजोयण उड्ढं उच्चत्तेणं, पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं वण्णओ ॥ १३ ॥ जम्बूसुदंसणा अण्णेणं

रहे हुए हैं यह वर्णन योग्य है तीन दिशा में तीन द्वार कहे हैं वे द्वार पांच सो धनुष्य के ऊंचे अढाइ सो धनुष्य के चौड़े हैं उस में एक मणिपीठिका है वह पांच सो धनुष्य की लम्बी चौड़ी है, उस पर देव छंदक कहा है वह पांच सो धनुष्य का चौड़ा है, साधिक पांचसो धनुष्य का ऊंचा है, उस देव छंदक में १०८ जिन प्रतिमा हैं वे जिन प्रमाण ऊंची हैं इस तरह सिद्धायतन की सब वक्तव्यता पूर्ववत् जानना यावत् धूप कुडछे रहे हुवे हैं उसका ऊपरका भाग सोलह प्रकार के रत्नों से सुशोभित है ॥ १२ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष के मूल में बारह पद्मवर वेदिका चारों ओर रही हुई हैं वह आधा योजन की ऊंची पांचसो धनुष्य की चौड़ी वगैरह वर्णन युक्त है ॥ १३ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष को चारों तरफ आगी ऊंचा-

।नेपकाओ णीग्याओ जाव पडिरूवाओ वण्णओ भाणियव्वो जाव तोरण छत्ता ॥ तासिण णदापुक्खरिणीण बहुमज्झदेसभाए एत्थण पासापवडेंसक पण्णत्ते कोसप्पमाणे अद्धकोस विक्खभेण सो चेव से वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार, एव दाक्खिण पुरत्थि मण वि पण्णास जोयणा चत्तारि णदा पुक्खरिणीओ चत्तारि उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलुज्जला तचत्र पमाण तहेव पसायवडेंसको तप्पमाणो, एव दाक्खिण, पच्चत्थिमेणवि पण्णास जोयणा णवरिं भिंगा भिंगणिभा चेव अजणा कज्जलप्पभा चत्र, सेस तहेव॥ जबूण सुदसणा उत्तरपुरत्थिमे पढम वणसड पण्णास जोयणाइ उग्गाहित्ता

कडी, स्वच्छ, कोमल श्लक्ष्ण घठारी, मठारी, पंक व रज रहित, यावत् प्रतिरूप हैं इन का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् तोरण व छत्रपर छत्र हैं उन नंदा पुष्करणी के बीच में प्रासादावतंसक कहे हैं, [illegible] कोश के लम्बे, आधा कोश के चौडे, वगैरह वर्णन जानना यावत् परिवार सहित सिंहासन कहना ॥ दक्षिणपूर्व ईशानकौन में पचास योजन जाव वहां चार नंदा पुष्करणी कही हैं जिन के नाम—[illegible] गुल्मा, नलिना, उत्पला व उत्पल ज्वाला इन का प्रमाण पूर्ववत् जानना । ऐसे ही दक्षिण पश्चिम नैऋत्य कौन में पचास योजन जावें वहां चार नंदा पुष्करणी हैं जिन के नाम—भृगा, भृंगणिभा, [illegible]ना व कज्जल प्रभा, शेष सब पूर्ववत् जानना जम्बू सुदर्शन से पश्चिमउत्तर वायव्य कौन में पचास

वणसडेहिं सव्वतो समता संपरिक्खित्ता तंजहा पढमेणं दोच्चाण तच्चेण ॥३५॥ जंबूसुद सणाए पुरत्थिमेण पढम वणसंड,पन्नास जोयणाइ, उग्गाहित्ता 'एत्थण एगेमहं भवणे पण्णत्ते पुरत्थिमिल्ले भवणे सरिसे भाणियव्व जाव सयणिज्ज, एवं दाहिणेण 'पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं ॥३६॥ जंबूएण सुदंसणाए उत्तरपुरत्थिमेण पढम वणसंड पण्णास जोयणाइ उग्गाहित्ता एत्थणं चत्तारि णदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा पउमा पउमप्पभा चेव कुमुदा कुमुयप्पभा ॥ ताओणं णदापुक्खरिणीओ कोस आयामेण अद्धकोस विक्खंभेण पंचधणुसयाइ उव्वेहेणं अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ

योजन के तीन वनखण्ड चारों तरफ वेष्टित हैं प्रथम, द्वितीय व तृतीय ॥ ३५ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष से पूर्व के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे तब वहां एक बडा भवन कहा है, इस का वर्णन जैसे पूर्व दिशा में की जम्बू सुदर्शन वृक्ष की शाखा पर भवन का कहा वैसे ही जानना यावत् देव शैय्या पर्यंत कहना ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर का जानना ॥ ३६ ॥ जम्बू सुदर्शन से ईशानकून के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे वहां चार नंदा पुष्करणी कहीं हैं जिन के नाम—पद्मा, पद्मप्रभा, कुमुदा, व कुमुदप्रभा, ये नंदा पुष्करणियों एक कोश की लम्बी, आधा कोश की चौडी, पांच सो धनुष्य की

णिप्पकाओ णीरयाओ जाव पडिरूवाओ वण्णओ भाणियव्वो जाव तोरण छत्ता ॥ तासिण णदापुक्खरिणीण बहुमज्झदेसभाए एत्थण पासायवडेंसक पण्णत्ते कोसप्पमाणे अद्धकोस विक्खंभेण सो चेव से वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार, एव दक्खिण पुरत्थिमण वि पण्णास जोयणा चत्तारि णदा पुक्खरिणीओ चत्तारि उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलुज्जला तचेव पमाण तहेव पसायवडेंसको तप्पमाणो, एव दक्खिण, पच्चत्थिमेणवि पण्णास जोयणा णवरिं भिंगा भिंगणिभा चेव अजणा कज्जलप्पभा चेव, सेस तहेव॥ जबूए सुदसणा उत्तरपुरत्थिमे पढम वणसड पण्णास जोयणाइ उग्गाहित्ता

ऊंची, स्वच्छ, कोमल श्लक्ष्ण घठारी, मठारी, पंक व रज रहित, यावत् प्रतिरूप है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् तोरण व छत्रपर छत्र हैं उन नंदा पुष्करणी के बीच में प्रासादावतंसक कहे हैं, वे एक कोश के लम्बे, आधा कोश के चौडे, वगैरह वर्णन जानना यावत् परिवार सहित सिंहासन कहना ऐसे ही दक्षिणपूर्व ईशानकोन में पचास योजन जावे वहां चार नंदा पुष्करणी कही हैं जिन के नाम— उत्पल गुल्मा, नलिना, उत्पला व उत्पल ज्वाला इन का प्रमाण पूर्ववत् जानना ऐसे ही दक्षिण पश्चिम नैऋत्य कौण में पचास योजन जावें वहां चार नंदा पुष्करणी हैं जिन के नाम—मृगा, मृगाणिभा, अंजना व कज्जल प्रभा, शेष सब पूर्ववत् जानना जम्बू सुदर्शन से पश्चिमउत्तर वायव्य कौन में पचास

वणसडेहिं सव्वतो समता संपरिक्खित्ता तंजहा पढमेणं दोच्चेणं तच्चेण ॥ ३५ ॥ जंबूए सुद
सणाए पुरत्थिमेणं पढम वणसंड,पन्नास जोयणाइं उग्गाहित्ता 'एत्थणं एगेमह भवणे
पण्णत्ते पुरत्थिमिल्ले भवणे सरिसे भाणियव्व जाव सयणिज्ज, एवं दाहिणेण पच्चत्थिमेणं
उत्तरेण ॥ ३६ ॥ जंबूएण सुदंसणाए उत्तरपुरत्थिमेण पढम वणसंड पण्णास जोयणाइं
उग्गाहित्ता एत्थणं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा पउमा पउमप्पभा चेव
कुमुदा कुमुयप्पभा ॥ ताओणं णंदापुक्खरिणीओ कोस आयामेण अद्धकोस
विक्खंभेण पंचधणुसयाइं उव्वेहेण अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ

योजन के तीन वनखण्ड चारों तरफ वेष्टित हैं प्रथम, द्वितीय व तृतीय ॥ ३५ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष से पूर्व के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे तब वहां एक बडा भवन कहा है, इस का वर्णन जैसे पूर्व दिशा में की जम्बू सुदर्शन वृक्ष की शाखा पर भवन का कहा वैसे ही जानना यावत् देव शैय्या पर्यंत कहना ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर का जानना ॥ ३६ ॥ जम्बू सुदर्शन से ईशानकून के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे वहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं जिन के नाम—पद्मा, पद्मप्रभा, कुमुदा, व कुमुदप्रभा, ये नंदा पुष्करणियों एक कोश की लम्बी, आधा कोश की चौडी, पांच सो धनुष्य की

क्खेवेण,मूलेविछिन्ने मज्झे सखित्ते उप्पिं तणुए,गोपुच्छ संठाणसंठिते सव्व जम्बुणयामए अच्छे जाव पडिरूवे, सेण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसंडेण सव्वतो समता सपरिक्खित्ते,दोण्हवि वण्णओ,तस्सण कूडस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयति॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे एग सिद्धाय तण कोसप्पमाण सव्वा सिद्धयतणवत्तव्वया, जम्बूएण सुदसणाए पुरत्थिमस्स भवणस्स दाहिणण दाहिणपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेण एत्थण एगेमहं कूडे पण्णत्ते तचेव पमाण सिद्धायतणच ॥ जम्बूएण सुदसणाये दाहिणिल्लस्स भवणस्स पुरत्थिमेण

ऊपर पतले है, गोपुंछ संस्थानवाले हैं, सब जम्बूनन्दमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं, उन को एक २ पद्मवर वेदिका व एक २ वनखण्ड चारों ओर हैं दोनों वर्णन योग्य हैं उन कूट पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है, यावत् वहां देव बैठते हैं उस भूमिभाग के मध्य में एक सिद्धायतन कोश प्रमाण का है इस सिद्धायतन की वक्तव्यता कहना जम्बू सुदर्शन के पूर्व के भवन से दक्षिण में व दक्षिणपूर्व-अग्निकोण के प्रासादावतंसक से उत्तर में एक बडा कूट है इस का प्रमाण व वक्तव्यता पूर्ववत् जानना यों सिद्धायतन पर्यंत कहना जम्बू सुदर्शन के दक्षिण के भवन से पूर्व में और अग्निकोण के प्रासादावतंसक

एत्थणं चत्तारि णंदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा-सिरिकंता सिरिमहिया सिरिचंदा चेव तहय सिरिणिलया, तचेव प्पमाणं तहेव पासाय वडेंसओ ॥ २७ ॥ जंबूएणं सुदसणातो पुरत्थिमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमिल्लं पासाद वडेंसगस्स दाहिणेणं एत्थणं एगेमहं कूडे पण्णत्ते, अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले बारस जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं, मज्झे अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, उवरिं चत्तारि जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, मूले साइरेग सत्ततीस जोयणाइं परिक्खेवेणं मज्झे सातिरेगाइं पण्णुवीस जोयणाइं परिक्खेवेणं, उवरिं सातिरेगाइं बारस जोयणाइं परि-

योजन वाले यहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं, उन के नाम, श्रीकांता, श्रीमहिता, श्री चंद्रा व श्रीनिलया, उन का प्रमाण भी वैसे ही जानना, और बीच में एक २ प्रासादावतंसक जानना ॥ २७ ॥ जम्बू सुदर्शन के भवन से उत्तर में और ईशानकून के भवन से दक्षिण में एक बडा कूट कहा है, वह आठ योजन का ऊंचा है, मूल में बारह योजन का लम्बा चौडा है, मध्य में आठ योजन का लम्बा चौडा है ऊपर चार योजन का लम्बा चौडा है, मूल में साधिक सैंतीस योजन की परिधि है, मध्य में साधिक पचीस योजन की परिधि है, और ऊपर साधिक बारह योजन की परिधि है मूल में विस्तारवाला, मध्य में संकुचित व

पुरत्थिमेण उत्तरपुरत्थिमेल्लस्स पासायवडेंसगस्स ...
तचेव पमाण तहेव सिद्धायतणच॥३८॥जंबू सुदसणा अण्णेहिं बहुहिं, तिलएहिं लवएहिं
जाव रायरुक्खेहिं नदीरुक्खेहि जाव सव्वता समता सपरिक्खित्ता॥ जंबूएण सुदसणाए
उवरिं बहवे अट्ठट्ठ मगलगा पण्णत्ता तजहा सोत्थिय सिरिवच्छ,किण्हा चामर ज्झया
जाव छत्तातिछत्ता ॥ ३९ ॥ जंबूएण सुदसणाए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता तजहा-
सुदसणा, अमोहाय, सुप्पबुद्धा जसोहरा॥ विदेहा जंबू सोमणसा, णीतिया णिच्च मंडिया
॥ १ ॥ भद्दाय विसालाय सुजाया, सुमणात्रिय सुदसणाए, जंबूते नामधेज्जा दुवा-
लसा ॥ २ ॥ ३९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति जंबू सुदसणा ? गोयमा !

कूट का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् सिद्धायतन कहना ॥ ३८ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष की आसपास अन्य बहुत तिलक लवग यावत् नदी वृक्षों रहे हुवे हैं जम्बू सुदर्शन पर बहुत आठ २ मंगलिक हैं तद्यथा-स्वस्तिक श्रीवत्स, कृष्ण, चमर यावत् छत्रातिछत्र ॥ ३९ ॥ जम्बू-सुदर्शन के बारह नाम कहे हैं १ सुदर्शन, २ अमोघ, ३ सुप्रबुद्ध, ४ यशोधर ५ विदेह, ६ जम्बू ७ सोमनस ८ नियता ९ सुभद्रा, १० विशाला, ११ सुजाया, १२ सुदर्शन ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! सुदर्शन नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! जम्बू सुदर्शन पर जम्बूद्वीप का अधिपति अनादृत नामक महर्द्धिक यावत्

दाहिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेण एत्थण एगे कूडे ॥ जम्बुए दाहिणल्ल भवणस्स पच्चत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमिल्लपासा, पुरत्थिमेण एत्थेण एगे कुडे पण्णत्ते ॥ जम्बुतो पच्चत्थिमिल्लस्स भवणस्स, दाहिणेण, दाहिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेण एगे मह कूडे पण्णत्ते, एत्थ च्चेय पमाण सिद्धायतणच्च जम्बुए पच्चत्थि भवणस्स उत्तरेण उत्तरपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स दाहिणेण एत्थण एग कूडे पण्णत्ते तचेव ॥ जम्बुए उत्तरिल्लस्स भवणस्स पच्चत्थिमेण उत्तर पच्चत्थि पासायवडिंसगस्स पुरत्थिमेण एग मह कुडे पण्णत्ते तचेव जंबु उत्तर भवणस्स

पश्चिम में एक बडा कूट है जम्बू सुदर्शन के दक्षिण दिशा के भवन से पश्चिम में व नैऋत्यकौण के प्रासादावतंसक से पूर्व दिशा में एक बडा कूट है जम्बू सुदर्शन के पश्चिम के भवन से दक्षिण में व नैऋत्यकौन के प्रासादावतंसक से उत्तर में एक बडा कूट है जम्बू सुदर्शन के पश्चिम के भवन से उत्तर में व वायव्यकौन के प्रासादावतंसक से पूर्व में एक बडा कूट कहा है जम्बू के उत्तर दिशा के भवन से पश्चिम में व वायव्यकौण के प्रासादावतंसक से पूर्व में एक बडा कूट कहा है जम्बू सुदर्शन वृक्ष से उत्तर दिशा के भवन से पूर्व में व ईशानकौन के प्रासादावतंसक से पश्चिम में एक बडा कूट कहा है सब

दीवस्स सासते णामधेज्जे पण्णत्ते जण्णकायाथिणासी जाव णिच्चा॥ ४१॥ जम्बूद्दीवेण भंते! कति चंदा पभासिसुवा पभासतिवा पभासिस्सतिवा, कतिसूरिया तविंसुवा तवतिवा तविस्सातिवा, कतिणक्खता जोय जोएंसुवा जोयातिवा जोइस्सतिवा कतिमहग्गहा चार चरिंसुवा चरातिवा चारिस्सतिवा, केवातिताओ तारागण कोडाकोडीओ सोभेसुवा सोभतिवा सोभिस्सतिवा ? गोयमा ! जम्बूद्दीवेणदीवे दो चंदा पभासिसुवा ३, दो सूरिया तविंसुवा ३, छप्पण्ण णक्खत्ता जोगं जोएंसुवा ३, छावत्तर गहसत चारं चारिंसुवा ३, एगंच सतसहस्स तेत्तीस खलुभव सहस्साइं णवसया

नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है ॥ ४१ ॥ जम्बूद्वीप में कितने चद्रने प्रकाश किया कितने चंद्र प्रकाश करते हैं व कितने चंद्र प्रकाश करेंगे, कितने सूर्य तपे, कितने तपते हैं व कितने तपेंगे, कितने नक्षत्रों ने योग किया, कितने योग करते हैं व कितने योग करेंगे कितने ग्रह चले, कितने चलते हैं व कितने चलेंगे, कितने ताराओंने शोभा की, कितने तारा शोभा करते हैं व कितने तारा शोभा करेंगे ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप में दो चद्रने प्रकाश किया दो चंद्र प्रकाश करते हैं, दो चन्द्र प्रकाश करेंगे, दो सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, ५६ नक्षत्रने योग किया, करते हैं व योग करेंगे, १७६ ग्रह चार चरे, चार चरते हैं व चार चरेंगे, एक लाख तेत्तीस हजार पंचास क्रोडाक्रोड तारागण शोभित हुवे, शोभते व शोभेंगे यह

जंबू सुदसणाते जंबूदीवाहिवती अणाढिते नाम देवे महिड्ढिए जाव पलिओ-वम ठितीए परिवसति, सेण तत्थ चउण्हं सामाणिय साहस्सीण जाव जंबुदीवस्स जंबूसुदसणाए अणाढियाते रायहाणीए जाव विहरति ॥ ४० ॥ कहिण भंते ! अणाढियस्स देवस्स अणाढिया नाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण तिरि एव जहा विजयस्स देवस्स जाव समत्त रायहाणीए महिड्ढिए अदुत्तरंचेण गोयमा ! जंबूदीवे दीवे तत्थ २ देसे २ बहवे जंबु रुक्खा जंबूवणा जंबू वणसंडा णिच्चं कुसुमिया जाव सिरिए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति जंबू दीवे दीवे ॥ अदुत्तरचण गोयमा ! जंबूदीवस्स

पल्योपम की स्थिति वाला देव रहता है, वह चार हजार सामानिक यावत् जम्बूद्वीप का जम्बू सुदर्शन का अनादृत राजधानी का आधिपत्य पना करता हुआ यावत् विचरता है ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! अनादृत देवकी अनादृत राजधानी कहां कही है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर में तीर्च्छा वों तब अधिकार विजय देवकी विजया राजधानी जैसे कहना यावत् महर्धिक है अथवा अहो गौतम ! जम्बूद्वीप में स्थान २ पर जम्बू वृक्ष जम्बू वर्ण वाले जम्बू वनखण्ड सदैव फल फूल वाले यावत् सुशोभित हैं अहो गौतम ! इसलिये जम्बूद्वीप नाम कहा है अथवा जम्बूद्वीप का नाम शाश्वत है वह कदापि

सपरिक्खित्ताण चिट्ठइ, वण्णओ दोण्हवि, साण पउमवर वेइया अट्ठ जोयण उड्ढ उच्चत्तेण, पंचधणुसय विक्खभेण लवण समुद्द सामिया परिक्खेवेण सेस तहेव॥३॥तेणवणसंडे देसूणाइ जाव विहरति ॥४॥ लवणस्सणं भते ! समुद्दस्स कइदारा पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि दारा पण्णत्ता तजहा विजये, विजयते, जयते, अपराजिते ॥ जबूद्दीवे विजयाइ सरिसा ॥ कहिण भते ! लवण समुद्दस्स विजए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमापरते धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेण सीओदाए महानदीए उप्पि एत्थण लवण समुद्दस्स विजय नाम दारे पण्णत्ते अट्ठ

जानना पद्मवर वेदिका आधा योजनकी ऊंची, पांचसो धनुष्यकी चौडी और लवणसमुद्रके जितनी परिधि वाली रही हुई है, शेष वैसे ही कहना ॥ ३ ॥ वनखण्ड भी कुच्छ कम दो योजन का है यावत् विचरते है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के चार द्वार कहे हैं तद्यथा—विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ये जम्बुद्वीप के विजय सदृश हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के पूर्व दिशा के अंत में धातकी खण्ड द्वीप से पश्चिम में सीतोदा महा नदी ऊपर लवण समुद्र का विजय द्वार कहा है यह आठ

पण्णासा तारागण कोडीकोडीण सोभंसवा सोभंतिवा सोभिस्सातिवा ॥ ४२ ॥
जम्बुद्दीव णाम दीव लवणे नाम समुद्दे वलयागार संठाण संठिते सव्वओ समंता
संपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ॥ १ ॥ लवणेण भंते ! समुद्दे किं समचक्कवाल संठिये
विसम चक्कवाल संठिये ? गोयमा ! समचक्कवाल संठित नो विसम चक्कवाल
संठिए ॥२॥ लवणेण भंते ! समुद्दे केवतिय चक्कवाल विक्खंभेण केवतिय परिक्खेवेण
पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणेण समुद्दे दो जोयण सहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेण पण्णरस
जोयणं सयसहस्साइं एक्कासीइं सहस्साइं सेगाणचत्ताल सय चडयाल किंचि विसेसूण
परिक्खेवेण पण्णत्ते सेण एगाए पउमवर वेइयाए एगेणय वणसंडेण सव्वतो समंता

जम्बूद्वीप का अधिकार संपूर्ण हुवा ॥ ४२ ॥ अब लवण समुद्र का अधिकार कहते हैं जम्बूद्वीप के चारों तरफ लवण समुद्र वलय के आकार से रहा हुवा है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र क्या समचक्रवाल संस्थान वाला है या विषम चक्रवाल संस्थान वाला है ? अहो गौतम ! समचक्रवाल संस्थान वाला है परंतु विषम चक्रवाल वाला नहीं है, ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र चक्रवाल में कितना चौडा है और उस की परिधि कितनी है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र दो लाख योजन का चक्रवाल में चौडा है और पनरह लाख इकाशी हजार एक सो गुनपचास योजन में कुच्छ कम की परिधि है उस की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड चारों तरफ घेरा हुवा है इन दोनों का वर्णन पूर्ववत्

लवणा जहा विजयरायहाणीगमो, उड्ढ उच्चतहा ॥ लवणस्सण भंते ! समुद्दस्स दारस्सरय एसण कवइय अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिण्णि जोयणसय सहस्साइं पंचणउइं सहस्साइं दुण्णिय असीए जोयणसये कोसंच दारंतरे लवणे जाव अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ ७ ॥ लवणस्सण भंते समुद्दस्स पएसा धाईय सडं दीवं पुट्ठा तहेव जहा जंबूदीवे, धायइसंडेवि सोचेव गमो ॥ ८ ॥ लवणेण भंते ! समुद्द जीवा उद्दाइत्ता २ सोचेव विही एव धायइ संडेवि ॥ ९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ लवणे समुद्दे ? गोयमा ! लवणेण समुद्द

दिशा में जयंत का कहना अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अपराजित द्वार कहां कहा है ? वैसे ही राज्यधानी उत्तर में जानना और सब कथन पूर्ववत् कहना अहो भगवन् ! लवण समुद्र के द्वार २ का कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! तीन लाख पचानवे हजार दोसो अस्सी योजन व एक कोश का एक द्वार से दूसरे द्वार तक अंतर कहा है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र को धातकी खण्ड द्वीप स्पर्शा हुवा है ? यों जैसे जम्बूद्वीप लवण समुद्र का कहा वैसे ही कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के जीव वहां से मरकर धातकी खण्ड में उत्पन्न होते हैं ? यों जम्बूद्वीप जैसा इस का भी कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का

जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण, एवं तंचेव सव्वं जंबू द्दीवस्स विजयसारस जाव अट्ठट्ठ मंगलगा ॥ ४५ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ विजय दार ? विजयदारं जो अट्ठो जंबू द्दीवस्स॥४६॥ कहिण भंते! लवणगस्स विजयस्स विजयानाम रायहाणी ? गोयमा ! विजयस्स पुरत्थि तिरिमसखेज्ज अणम्मि लवणे धारस्स जंबूद्दीवग सरिसा वत्तव्वया जाव सम वेजयंतपि अप्पणिज्जेण गमेण लवणस्स दाहिणेण रायहाणी, एवं जयंतेवि, तस्सवि रायहाणि पच्चत्थिमेण ॥ कहिण भंते! लवण समुद्दस्स अवराईए तहेव रायहाणी उत्तरेण अवरायस्स देवस्स अण्णम्मि

योजन का ऊंचा, चार योजन का चौडा यों सब जम्बूद्वीप के विजय सदृश यावत् आठ २ मंगल कहे हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! विजय द्वार ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम ! जैसे जम्बूद्वीप के विजय द्वार का कथन किया वैसे ही यहां जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के विजय देव की विजया राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! विजयद्वार से पूर्व तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र का उल्लंघन करे वहां अन्य लवण समुद्र आता है उस में बारह हजार योजन अवगाहकर आवे वहां विजया राज्यधानी कही है इस का सब कथन जम्बूद्वीप की विजया राज्यधानी जैसे कहना ऐसे ही वैजयंत का कहना, ऐसे ही इस समान वैजयंती नामक-लवण समुद्र की राज्यधानी का कथन दक्षिण दिशा में कहना ऐसे ही पश्चिम

ताविंसुश्रा २ ।। चारमुचरे णक्खत्तसय जोएसुत्रा २ तिण्णि वावण्णा महग्गहसया चारिं चरिसुत्रा दुण्णिय सयसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा नवयसया तारागण कोडिकोडाण सोभिंसुवा २ ॥ ११ ॥ कम्हाण भंते! लवणसमुद्दे चाउद्दट्ठसमुद्दिट्ठा पुण्णमासिणीसु अतिरेगं २ वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! जंबुद्दीवस्सण दीवस्स चउदिसिं बाहिरल्लातो वेइयातो लवणसमुद्द पंचाणउतिं जोयणसहस्साति उग्गाहित्ताएत्थणचत्तारिं महाअलिंजर सठाण सठिया महति महालया महापायाला पण्णत्ता तजहा-वलयामुहे केतुवे जुवे, ईसरे ॥ तेण पाताला एगमेग जोयण सतसहस्स उव्वेहेण, मूले दसजोयण

करते हैं व प्रकाश करेंगे वैसे ही चार सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, ११२ नक्षत्रोंने चंद्रमादिक के साथ योग किया, करते हैं व करेंगे, तीन सो बावन ग्रह क्षेत्र में चार चले, चलते हैं व चलेंगे, दो लाख सडसठ हजार नवसो क्रोडा क्रोडा तार शोभे, शोभते हैं व शोभेंगे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का पानी चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या व पूर्णिमा को अत्यंत अधिक २ क्यों वृद्धिपाता है और क्यों कमी होता है ? अर्थात् भरती ओट क्यों होता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के चारोंदिशी में बाहिर की वेदिका के अंतसे लवण समुद्र में ९५ हजार २ योजन जावे वहां महा मॉलजर (कुंभ) के संस्थान वाले चार

उदये अविले रहले लवणे लिंदसारए कडुए अप्पेज्जे बहुण दुप्पय चउप्पय मियपसु पक्खिसरीसवाण णण्णत्थत जोणियाण सत्ताण उठिय, एत्थ लवणा हिवई देव महिड्ढीये॥ पलीओवमठीए सेण तत्थ सामाणिय जाव विहरइ, से तेणठेण गोयमा ! एव वुच्चति लवण समुद्दे २ अदुत्तरचण गोयमा ! लवण समुद्दे सासये जाव णिच्चे ॥१०॥ लवणेण भते ! समुद्दे कइचदा पभासिंवा पभासिंवा पभासिस्सतिवा, एव पचवण्हवि पुच्छा ? गोयमा ! लवणसमुद्दे चत्तारि चदा पभासिसुवा २ चत्तारि सुरिया

पानी लवण जैसा है, निर्मळ नहीं है, पंक कर्दम बहुत है, गोबर का रस जैसा है, खारा पानी है, तीक्ष्ण पानी है, कटुक रस है, पीने योग्य नहीं है, मृग, पशु, पक्षी, सरिसर्प इन को पीने योग्य नहीं है उस में उत्पन्न हुवा जीवों को उस पानी का आहार है, परतु दूसरे के लिये यह आहार नहीं है इस लिये इसका लवण समुद्र नाम कहा है और भी यहां लवणाधिपति महर्द्धिक यावत् पल्योपमकी स्थितिवाला देव रहता है वह सामानिक देव यावत् बहुत वाणव्यंतर देव व देवियोंका आधिपतिपना करता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये इस का नाम लवण समुद्र है अथवा लवण समुद्र शाश्वत यावत् नित्य है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में कितने चंद्रने प्रकाश किया, प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे ? यों सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व ताराओं की भी पृच्छा करना अहो गौतम ! लवण समुद्र में चार चंद्रने प्रकाश किया, प्रकाश

मज्झिल्लेतिभागे उवरिल्लेतिभागे तेण तिभागे तेत्तीस २ जोयण सहस्साति तिण्णिय तेत्तीसे जोयणसये जोयणति भागच बाहल्लेण, तत्थण जे से हेट्ठिल्लेभागे एत्थण वायकायते सचिट्ठति, तत्थण जे से मज्झिल्लेतिभागे एत्थण वाउयाएय आउयाएय सचिट्ठति तत्थण जे से उवरिल्लेभागे एत्थण आउयाते सचिट्ठति ॥ १२ ॥ अदुत्तरचण गोयमा ! लवणसमुद्दे तत्थ २ देसे २ बहवे खुड्डालिंजर सठाण सठिया खुड्डपायाला पण्णत्ता, तेण खुड्डा पायाला एगमेग जोयणसहस्स उव्वेहेण मूले एगमग जोयणसत विक्खंभेण, मज्झेएगपदेसिया सेढीए एगमेग जोयणसहस्स विक्खंभेणं, उप्पि मुहमूले एगमेग जोयणसत विक्खंभेण ॥ तेसिण खुड्डा

प्रभजन इन पाताल कलशों के तीन भाग किये हैं नीचे का भाग, मध्य का भाग व ऊपर का भाग एक २ भाग तेत्तीस हजार तीन सो तेत्तीस योजन व एक योजन के तीन भाग में का एक भाग का जाडा है उन में से नीचे के भाग में वायुकाय, बीच के भाग में वायुकाय व अपूकाय साथ और ऊपर के भाग में मात्र अपूकाय है ॥ १२ ॥ और भी अहो गौतम ! लवण समुद्र में बहुत छोटे आलिंजर के आकार वाले छोटे पाताल कलश हैं व एक हजार योजन के ऊंडे हैं मूल में एक एकसो योजन के चौडे हैं वहां से एक २ प्रदेश बढते २ मध्य में एक हजार योजन के चौडे है वहां से एक प्रदेश कम

सहस्सातिं विक्खंभेण, मज्झे एगपदेसियाए सेढिए एगमेग जोयणसहस्स विक्खभेण, उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विक्खभेण, तेसिण महापायालाण कुड्डा सव्वत्थ समा दसदस जोयणसय बाहाल्ला पण्णत्ता, सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा, तत्थण बहवे जीवा पोग्गलाय वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति सासयाण ते कुड्डा दव्वट्ठयाए वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया ॥ तत्थण चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसति तजहा काले महाकाले वलय पभजणे ॥ तेसिण महापायालाण ततोतिभागा पण्णत्ता तंजहा-हट्ठिल्लेतिभागे

पाताल कलश कहे हैं, जिन के नाम १ वडवामुख, २ केतुमुख ३ यूप और ४ ईश्वर ये पाताल कलश एक लाख योजन के मूल में ऊंडे हैं मूल में दश हजार योजन के चौडे हैं, वहां से एकक प्रदेश की श्रेणि से बढते २ मध्य बीच में एक लाख योजन के चौडे हैं वहां से प्रदेश कम होते २ ऊपर दश हजार योजन के चौडे हैं इन की ठीकरी सर्वत्र समान जाडपने में हैं, एक हजार योजन की जाडी है यह वज्ररत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है वहां बहुत जीव पुद्गल जाते हैं उत्पन्न होते हैं व चवते हैं यह ठीकरी द्रव्य से शाश्वती है, और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वती है वहां महर्द्धिक महा बलवंत यावत् पल्योपम की स्थितिवाले चार देव रहते हैं जिन के नाम—काल, महाकाल, वेलंब व

अट्ठय चुलसिया पातालसता भवति तिमक्खाया ॥ १२ ॥ तेसि महापातालाण खुड्डाग पातालाणय हिट्ठिम मज्झिलेय्यतिभागेसु बहवे उराला वाया ससेयति समुच्छंति पताति वेयति कपति खुज्झति घट्टति फदति तत भाव परिणमति, जेण उदयउच्चा-हिज्जति॥ जच्चाणं तेसिं खुड्डा पायालाण महापायालाण हेट्ठिल्ले मज्झिल्लेसु तिभागेसु बहवे उरालिय वाया संसेयति समुच्छति एयति वेयति कपति खुज्झति घट्टति फदति ततभाव परिणमति,तयाण से उदये उण्णाहिज्जति २, जयाण ते खुड्डा पायालाण महापायालाणय

सब मीलकर जम्बूद्वीप में सात हजार आठसो चौराशी पाताल कलश कहे हैं + ॥ १२ ॥ अब पाताल कलश के छोटे पाताल कलश में बीच का व नीचे का विभाग में ऊर्ध्वगमन स्वभाव वाले वायु काय उत्पन्न होते हैं मूर्च्छित होते हैं, हिलते हैं, चलते हैं, कंपित होते हैं, क्षुब्ध होते हैं व संघट होते हैं, परस्पर संघर्षण होते हैं, और उस भाव में परिणमते हैं तब पानी ऊंचा उछलता है, और जब वह कलश के

+ चारों बडे कलश के मध्य में अलग २ छोटे कलशों की नव लड हैं प्रथम लड में २१५, दूसरी में २१६ यों २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, और २२३ कलश की नवमी लड हैं इसी तरह चारों कलश की आसपास लड कहना यह सब सबके कलश सामिल करनें से पूर्वोक्त संख्या होती हैं

पायालाण कुडा सव्वत्थसमा दसजोयणाइ बाहल्लेण पण्णत्ताइ, सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तत्थण बहवे जीवाय पोग्गलाय जाव असासयावि पत्तेय २ अद्धपलिओवमठितियाहिं देवेताहिं परिग्गहिया ॥ तेसिण खुड्डग पायालाण ततोतिभागा पण्णत्ता तजहा हेट्ठिल्लभागे मज्झिल्लेभागे उवरिल्ले-भागे, तेणतिभागा तिण्णि २ तेतिस जोयणसत ते जोयणतिभाग च बाहल्लेण पण्णत्ता, तत्थण जे से हेट्ठिल्ले भागे एत्थण वाउयाए संचिट्ठति, मज्झिल्लेतिभागे वाउयाते आउयातेय उवरिल्ले आउयाए, एवामेव सव्वावरेण लवण समुद्दे सत्त पायाल सहस्सा

होते २ ऊपर के मुख स्थान एकसो योजन के चौडे हैं इन छोटे पाताल कलशकी ठिकरी सबम समान दश योजन की जाडी है सब वज्र रत्नमय स्वच्छ, यावत् प्रतिरूप हैं वहां बहुत जीव व पुद्गल आते हैं, उत्पन्न होते हैं चवते हैं वह ठीकरी द्रव्य से शाश्वती व वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वती है, वहां आधे पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन छोटे पाताल कलश के तीन विभाग किये हैं ऊपर का, मध्य का व नीचे का प्रत्येक भाग तीनसो तीतेसी योजन व एक योजन के तीन भाग मेंसे एकभाग का है इस में से सब से नीचे के भाग में वायु है, मध्य भाग में वायु व पानी है और ऊपर के भागमें पानी है

लवणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुक्खुत्तो अतिरेग २ वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! उदमतेसु पातालेसु वड्ढति आपूरंतेसु पातालेसु हायति से तेणट्ठेण गोयमा ! लवण सतीमाएसु दुक्खुत्तो अतिरग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १५ ॥ लवणसिहाण भते ! केवइय चक्कवाल विक्खंभेण केवइय अतिरग वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणसिहाण दसजोयणसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेण देसूण अद्धजोयण अतिरग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १६ ॥ लवणस्सण भते ! समुद्दस्स कतिनागसाह अतिरग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १६ ॥ लवणस्सण भते ! समुद्दस्स कतिनागसाहस्सीओ अब्भतरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ बाहिरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ अग्गोदयधारेंति ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स बायालीस नागसाहस्सीओ

अहो गौतम ! पाताल कलश से पानी वृद्धि पाके उंचा उछलता है, वह वायु से पुराता है, छोटे बडे पाताल कलश में हानि पाता है, इस से अहो गौतम ! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में पानी दो वक्त बढता है व हीन होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की शिखा कितनी चक्रवाल चौडाइ में है व कितनी बढती व कम होती है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की शिखा दश हजार योजन चक्रवाल चौडाइ में है और आधा योजन में कुच्छ कम की शिखा पर वेल बढती व कम होती है ॥१६॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र की आभ्यतर वेलको कितने हजार नागदेव धारते हैं और कितने नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते हैं और कितने नागदेव शिखापर का पानी धारकर रखते हैं ? अहो

हेट्ठिल्ले मज्झिल्लेसु तिभागेसु वहवे उराले जाव तंतभाव परिणमाति, तयाण से उदये नो उन्नाहिज्जइ २ अतरा वियण ते वाया उदीराति अंतरावियाण से उदये अण्णाहिज्जति ४ अतरावियण ते याधा नो उदीरेति अतराग्नियण से उदगेण उण्णाहिज्जति अतरावियण से उदगे णो उण्णाहिज्जाति एव खलु गायमा ! लवणेणं समुद्दे चउद्दस ट्ठमुद्दिट्ठ पुण्णमासिणीसु अतिरेग २ वड्डुतिवा हायतिवा॥ १४॥लवणेण भते!समुद्द तीसाए मुहुत्ताण कतिखुत्तो अतिरेग वड्डुतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणेणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुखुत्तो अतिरेग वड्डुतिवा हायतिवा ॥ से केणट्ठेण भते ! जाव

छोटे कलश के नीचे व बीच के विभाग वायु ऊर्ध्व गमन स्वभाववत नहीं होते हैं यावत् उस भाव में नहीं परिणमते हैं तब पानी ऊंचे उछलता नहीं है इस तरह अहोरात्रि में दो वक्त वायु उत्पन्न होता है तब पानी दो वक्त ऊंचा उछलता है इसी से अहोरात्रि में दो वक्त भरती ओट होता है जब पाताल कलश में वायु नहीं उत्पन्न होता है तब वहां का पानी नहीं उछलता है इससे अहो गौतम! लवण समुद्र में चतुर्दशी, अष्टमी अमावास्या व पूर्णिमा को पानी अधिक २ बढता है और घटता है ॥ १४ ॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में कितनी वक्त पानी बढता है व कमी होता है ? अहो गौतम! दोवार पानी बढता है व कमी होता है अहो भगवन्! ऐसा किस लिये कहा कि लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में दो वार पानी बढता है व हीन होता है ?

लवणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुखुत्तो अतिरेग २ वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! उड्ढमतेसु पातालेसु वड्ढति आपूरतेसु पातालेसु हायति स तेणट्ठण गोयमा ! लवण सतीमाएसु दुक्खुत्तो अतिरग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १५ ॥ लवणसिहाण भते ! केवइय चक्कवाल विक्खंभेण कवइय अतिरग वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणसिहाण दसजोयणसहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण देसूण अद्धजोयण अतिरग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १६ ॥ लवणस्सण भते ! समुद्दस्स कतिनागसाहस्सीओ अब्भतरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ बाहिरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ अग्गोदयधारेंति ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स बायालीस नागसाहस्सीओ

अहो गौतम ! पाताल कलश से पानी वृद्धि पाके उर्ध्व उछलता है वह वायु से पुराता है, छोटे बडे पाताल कलश में हानि पाता है, इस से अहो गौतम ! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में पानी दो वक्त बढता है व हीन होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की शिखा कितनी चक्रवाल चौडाइ में है व कितनी बढती व कम होती है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की शिखा दश हजार योजन चक्रवाल चौडाइ में है और आधा योजन में कुच्छ कम की शिखा पर वेल बढती व कम होती है ॥१६॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की आभ्यंतर वेलको कितने हजार नागदेव धारते हैं और कितने नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते हैं और कितने नागदेव शिखापर का पानी धारकर रखते हैं ? अहो

अब्भिंतरियवेलं धारेंति बावत्तरि णागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धारेंति, सट्ठिं नागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारेंति, एवामेव सपुव्वावरेण एगाणाम सयसाहस्सी बावत्तरिंच णागसहस्सा भवतीति मक्खाया ॥ १७ ॥ कतिणं भंते ! वेलंधरणागराया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि वेलंधरा णागराया पण्णत्ता तंजहा गोथूभे सिवए संखे मणोसिलए,॥एतेसिणं भंते ! चउण्हं वेलंधरा नागरायाणं कति आवास पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वता पण्णत्ता तंजहा गोत्थूभे दओभासे संखे दग-सीमये ॥१८॥कहिणं भंते!गोथुभस्स वेलंधर णागरायिस्स गोथूणाम आवसपव्वते

गौतम ! ४२ हजार नागदेव लवण समुद्र की आभ्यंतर वेल धारकर रखते हैं, ७२ हजार नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते हैं, और ६० हजार नागदेव अग्रोदक धारकर रखते हैं सब मीलकर एक लाख चम्मतरहजार नाग देव होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! वेलधर नागराज कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! वेलधर नागराज चार कहे हैं तद्यथा-गोस्तूभ शिव, शंख और मनोशिला अहो भगवन् ! इन वेलधर नागराजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ! अहो गौतम ! चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा-गोस्तुभ दगभास, शंख और दगसीमक ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! गोस्तुभ नागराजाका गोस्तुभ आवास पर्वत

पण्णत्ते? गोयमा! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पुरत्थिमेणं लवण समुद्द बायालीस जोयण सहस्साति उगाहित्ता एत्थणं गोथूभस्स वेलंधर णागरायिस्स गोथूभे णाम आवासपव्वते पण्णत्ते, सत्तरस इक्कवीसाइ जोयण सताइं उड्ढ उच्चत्तेणं चत्तारि तीसे जोयण सते कोसंच उव्वेहेणं मूलेदस बावीसे जोयणसते आयाम विक्खंभेणं मज्झंसत्त तेवीसे जोयण सते आयामविक्खंभेण, उवरिं चत्तारि चउवीसे जोयण सए आयामविक्खंभेण, मूले तिण्णि जोयण सहस्साइ दोण्णिय बत्तीसुत्तरे जोयण सए किंचिविसेसुणे परिक्खेवेणं मज्झ दो जोयण सहस्साइ दोण्णिय चुलसयति जोयण सते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं,

कहां कहा है ? अहो गौतम ! मेरुपर्वत से पूर्व में लवणसमुद्र से ४२ हजार योजन अवगाहकर जावे वहां गोस्तुभ वेलंधर नागराजा का गोस्तुभ नामक आवास पर्वत कहा है यह सत्तरह सो इक्कीस योजन का ऊंचा चारसो सवातीस योजन गहरा (पानी में) है मूल में एक हजार बावीस योजन का लम्बा चौडा (गोल) है बीच में सात सो तेवीस योजन का लम्बा चौडा [गोल] है और ऊपर चारसो चौवीस योजनका लम्बा चौडा [गोल] है मूलमें तीनहजार दोसो बत्तीस योजन में कुछ कम की परिधि है, बीच में दो हजार दोसो चौरासी योजन से कुच्छ कम की परिधि है और ऊपर एक

उवरिं एग जोयणसहस्स तिण्णिएगयाले जोयणसते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, मूले विच्छिण्णे, मझेसंखित्ते, उप्पिं तणुए, गोपुच्छ संठाण संठिते, सव्व कणगामये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ सेणं एगाए पउमवर वेदियाए एगेणय वणसंडेण सव्वतो समता संपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ ॥ गाथूभस्सणं आवास पव्वयस्स उवरिं बहुसम रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयंति ॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्जातो एत्थणं एगे महं पासायवडेंसए पण्णत्ते, बावट्ठिं जोयणद्धच उड्ढ उच्चत्तेण तंचेव पमाण अद्धं आयामविक्खंभेण वण्णओ जाव सीहासणं सपरिवार ॥ १९ ॥ से केणट्ठेणं भंते !

हजार तीनसो इकतालीस योजन से कुच्छ कम की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, बीच में संकुचित व ऊपर संकीर्ण है गोपुच्छ संस्थान वाला है सब कनकमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है उन की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना गोस्तूभ आवास पर्वत पर बहुत रमणीय भूमिभाग है यावत् वहां देवता बैठते हैं उस रमणिय भूमिभाग के बीच में एक बडा प्रासादावतंसक कहा है ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा कहा है यावत् परिवार सहित सिंहासन कहा है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! गोस्तूभ आवास पर्वत क्यों कहा ? अहो गौतम ! गोस्तूभ

एव वुच्चइ गोथूभे आवास पव्वते ? गोयमा ! गोथूम आवास पव्वते तत्थ२ देसे २ तहिं २ बहुओ खुड्डा खुड्डियाओ जाव गोथूभ वण्णाइ तहेव जाव गोथूभे, तत्थ देवे महिड्डिए जाव पलिओवमठितीये परिवसति, सेण तत्थ चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव गोथुभस्स आवास पव्वतस्स गोथूभाये रायहाणीए जाव विहरति ॥ से तेणट्ठेण जाव णिच्चे ॥ २० ॥ रायहाणि पुच्छा ? गोथूभस्स आवास पव्वयस्स पुरत्थिमेण तिरिय मसखेज्जे दीव समुद्दे वीतीवातिता अण्णमि लवण समुद्द तचेव

आवास पर्वत पर स्थान २ पर बहुत छोटी बडी बावडियों हैं यावत् गोस्तूम के वर्ण जैसे बहुत कमल हैं यों सब पूर्ववत् कहना यावत् वहां गोस्तूम नामक देवता रहता है वह महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाला है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् गोस्तूप आवास पर्वत व गोस्तूभा राज्यधानी का अधिपतिपना करता हुआ विचरता है इसलिये इस का नाम गोस्तूभ आवास पर्वत कहा है यावत् वह नित्य है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! गोस्तूम देव की गोस्तूभा राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! गोस्तूभ आवास पर्वत से पूर्व में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य लवण समुद्र में गोस्तूम देव की गोस्तूभा राज्यधानी कही है इन का प्रमाण

पमाण तहेव सव्व ॥ २१ ॥ कहिण भंते ! सिवगरस वेलंधर णागरायिस्स दगभा-
सेणाम आवासे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवेण दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेण
लवणसमुद्द बायालीस जोयण सहस्साति उगाहित्ता एत्थण सिवगरस वेलंधर
णागरायिस्स दगभासे नाम आवास पव्वते पण्णत्ते, तचेव पमाण ज गोथूभरस
णवरि सव्व अकामय अच्छे जाव पडिरूवे जाव अच्छा भाणियव्वो ॥ गोयमा !
दगभासेण आवास पव्वये लवण समुद्दे अट्ठ जोयाणिये खत्त उदय सव्वता समताओ
भासति उज्जोवेति तवेति पभासेति सिवय एत्थ देवे महिड्डिये जाव रायहाणी से

संगरह सब वक्तव्यता विजया राज्यधानी जैसे जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! शिव नामक वेलंधर
नाग राजा का दगभास पर्वत कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में
लवण समुद्र में बयालीस हजार योजन जावे वहां शिव नामक वेलंधर नाग राजा का दगभास आवास
पर्वत कहा है इस का सब कथन गोस्तूभ आवास पर्वत जैसे कहना विशेष में यह पर्वत सब अंक-
रत्नमय स्वच्छ यावत् सब अर्थ कहना अहो भगवन् ! दगभास आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम कहा ?
अहो गौतम ! दगभास आवास पर्वत लवण समुद्र के पानी में चारों ओर दीप्ति करता है, उद्योत करता
है, तपता है, कांति बढाता है और वहां शिव नामक महर्द्धिक देव रहता है, इस लिये इस का दगभास

दक्खिणेणं, सिविगादगभासस्स सेण तचेव ॥ २२ ॥ कहिणं भंते ! सखस्स वेलधर णागरायिस्स सखणाम आवास पव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूदीवे २ मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं बायालीसं जोयण एत्थणं सखस्स वेलधर सखेणाम आवास पव्वते तचेव पमाण नवर सव्वरयणामये अच्छे ॥ सेणं एगाए पउमवर वेदियाए एगेण वणसंडे जाव अट्ठो बहूउ खुड्डा खुड्डियाओ जाव बहुइ उप्पलाइं सखवण्णाइ सखप्पभाइं सखवण्णप्पभाइं सख तत्थ देवे महड्ढिए जाव रायहाणी

पर्वत नाम कहा इन की राजधानी दगभास पर्वत से दक्षिण दिशा में है शेष वैसे ही जानना ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! शंख नामक वेलधर नागराजा का शंख नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में लवण समुद्र में बीयालीस हजार योजन जावे वहां शंख नामक वेलधर नाग राजा का शंख नामक आवास पर्वत कहा है इस का प्रमाण गोस्तूभ जैसे जानना परन्तु यह सब रूपामय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है इस की आसपास एक २ पद्मवर वेदिका व वन खण्ड है अहो भगवन् ! शंख आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! वहां बहुत बाव-वावडियों प्रमुख में यावत् शंख जैसे वर्ण वाले बहुत कमल प्रमुख उत्पन्न होते हैं शंख जैसे लावण्य,

पच्चत्थिमेण सक्कस्स आवास पव्वयस्स सक्का रायहाणी तचेव पमाण ॥ २३ ॥ कहिण भंते ! मणोसिलकस्स वेलधर णागराइस्स उदगसीमयेणाम आवास पव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जम्बूदीवे २ मंदरस्स उत्तरे लवणसमुद्द बायालीस जोयण सहस्साई ओगाहित्ता एत्थण मणोसिलगस्स वेलधर णागरायिस्स उदयसीमय णाम आवासपव्वते पण्णत्ते तचेव पमाण णवर सव्वफालहामये अच्छ जाव अट्ठो, गोयमा ! दगसीमतेण आवास पव्वते सीतासीतायाण महाणदीण तत्थण तासोए पडिहम्मति से तेणट्ठेण जाव णिच्चे ॥ मणोसिलये तत्थ देवे महिड्डिए जाव सेण

कालिकत है यहां मनदेव महर्द्धिक यावत् रहता है इस की राज्यधानी पश्चिमदिशा में है इस का प्रमाण पूर्ववत् जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! मनोसीलक वेलधर नागराजा का दगसीमक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर दिशा में लवण समुद्र मे बीयालीस हजार योजन अवगाहकर जावे यहां मनोसीलक नाग राजा का उदकसील आवास पर्वत कहा है; इस का प्रमाण वैसे ही जानना विशेष में सब स्फटिक रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है इस का सब अर्थ पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! दगसीमक आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम! सीता सीतोदा मह नदियों का प्रवाह इस आवास पर्वत पर्यंत आता है और इस से लगकर पीछा समुद्र में मील जाता है इस से एसा

तत्थ चउण्ह सामाणिये जाव विहरति ॥ कहिण भंते ! मणोसिलगस्स वेलधर णागराइस्स मणोसिलाणाम रायहाणी ? गोयमा ! दगसीमस्स आवास पव्वयस्स उत्तरेण तिरिये असंखेज्ज जाव अण्णमि लवणे एत्थण मणोसिलाणाम रायहाणी पण्णत्ता, तच्चेव पमाण जाव मणोसिलए देवे कणगकेरयय फलिहमया वेलधरा णामावासा अणुवलधर राइण पव्वया होंति रयणमया ॥ १४ ॥ कतिण भंते ! अणुवेलधर णागरायाणो पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि अणुवेलधर णागरायाणो पण्णत्ता तजहा कक्कोडए कद्दमए कतिलासे अरुणप्पभे ॥ तेसिण भंते ! चउण्ह

कहा है यावत् नित्य है अहो भगवन् ! मनोसीलक वेलधर नाग राजा की मनोसीला राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! दगसीमक आवास पर्वत से उत्तर में तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य लवण समुद्र में मनोसीला नामक राज्यधानी कही है यावत् वहां मनोसीलक देव रहता है पहिला आवास पर्वत कनकमय है, दूसरा आवास पर्वत अंक रत्नमय, तीसरा आवास पर्वत चांदीमय और चौथा आवास पर्वत स्फटिक रत्नमय है ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! अनुवेलधर नाग राजा कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! अनुवेलधर नाग राजा चार कहे हैं तद्यथा—१ कर्कोटक, २ कर्दमक, ३ कैलास

अणुवेलधर णागराईण कइआवासपव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वया पण्णत्ता तजहा कक्कोडए कद्दमए कइलासे अरुणप्पभे ॥ २६ ॥ कहिण भंते ! कक्कोडगस्स अणुवेलधर णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण लवणसमुद्द बायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता एत्थण कक्कोडगस्स णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एकवीसाति जोयणसयाति तचेव पमाण ज गोथूभस्स, णवर सव्वरयणामए अच्छे जाव निरवसेस जाव सीहासण सपरिवार

और ४ अरुणप्रभ अहो भगवन् ! इन चार अनुवेलधर नाग राजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ? अहो गौतम ! इन के चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा १ कर्कोटक २ कर्दमक ३ कैलास और ४ अरुणप्रभ ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! कर्कोटक नामक अणुवेलधर नाग राजा का कर्कोटक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशान कौन में लवण समुद्र में ४२ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां कर्कोटक नाग राजा का कर्कोटक आवास पर्वत कहा है यह १७२१ योजन का ऊंचा है वगैरह जो गोस्तूभ पर्वत का परिमाण कहा वह सब इस का जानना विशेष में यह रत्नमय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है यावत् परिवार सहित सिंहासन जानना, इस का अर्थ—यहां बहुत छोटी बड़ी बावड़ियों में

अट्ठो से बहूइ उप्पलाइ, कक्कोडग पभाइ सेस तचेव णवर कक्कोडग पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण एवतचेव सव्व कद्दमसवि सो चेव गमआ अपरिसेसओ णवर दाहिण पुरत्थिमेण आवासो विज्जुप्पभा रायहाणी, दाहिणपुरत्थिमेण कइलासेवि एवचेव णवर दाहिण पच्चत्थिमेण कइलासवि रायहाणि, ताएचेव विदिसाए अरुणप्पभेवि अवरुत्तरेण रायहाणीवि, ताएचेव विदिसाए चत्तारिवि एगपमाणा सव्वरयणामयाय ॥२६॥ कहिण भते ! सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण लवण समुद बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता

उत्पल वगैरह होते हैं कर्कोटक जैसा प्रकाश है, शेष सब वैसेही कहना इसकी राज्यधानी ईशान कोनमें है कर्दमकका भी विशेषता रहित यह अभिलाप कहना परंतु यहां अग्नि कौण कहना इस की राज्यधानी विद्युत्प्रभा जानना कैलासका भी वैसेही जानना परतु यहां नैऋत्य कौण में कहना और इसी दिशामें इस की राज्यधानी कहना अरुणप्रभ का वैसे ही कहना परतु वायव्य कौण में कहना और इसही दिशा में राज्यधानी भी कहना चारों का प्रमाण समान जानना सब रत्नमय हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अधिपति सुस्थित देवका गौतम ! नामक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां लवण समुद्र का अधिपति

अणुवेलधर णागराईण कइआवासपव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वया पण्णत्ता तंजहा-कक्कोडए कद्दमए कइलासे अरुणप्पभे ॥ २६ ॥ कहिण्णं भंते ! कक्कोडगस्स अणुवेलधर णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं लवणसमुद्द बायालीस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं कक्कोडगस्स णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एकवीसाति जोयणसयाति तचेव पमाण जं गोथूमस्स, णवर सव्वरयणामए अच्छे जाव निरवसेस जाव सीहासणं सपरिवार

और ४ अरुणप्रभ अहो भगवन् ! इन चार अनुवेलधर नाग राजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ! अहो गौतम ! इन के चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा १ कर्कोटक २ कर्दमक ३ कैलास और ४ अरुणप्रभ ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! कर्कोटक नामक अणुवेलधर नाग राजा का कर्कोटक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ! अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशान कौन में लवण समुद्र में ४२ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां कर्कोटक नाग राजा का कर्कोटक आवास पर्वत कहा है यह १७२१ योजन का ऊंचा है वगैरह जो गोस्तूभ पर्वत का परिमाण कहा वह सब इस का जानना विशेष में यह रत्नमय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है यावत् परिवार सहित सिंहासन जानना. इस का अर्थ—यहां बहुत छोटे बडी वावडियों में

अट्ठो से बहूइ उप्पलाइ, कक्कोडग पभाइ सेस तचेव णवर कक्कोडग पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण एवतचेव सव्व कद्दमसवि सो चेव गमओ अपरिसेसओ णवर दाहिण पुरत्थिमेण आवासो विज्जुप्पभा रायहाणी, दाहिणपुरत्थिमेण कइलासेवि एवचव णवर दाहिण पच्चात्थिमेण कइलासवि रायहाणि, ताएचेव विदिसाए अरुणप्पभेवि अवरु त्तरेण रायहाणीवि, ताएचेव विदिसाए चत्तारिवि एगपमाणा सव्वरयणामयाय ॥२६॥ कहिण भंते ! सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चात्थिमेण लवण समुद्द बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता

उत्पल वगैरह होवे हैं कर्कोटक जैसा प्रकाश है, शेष सब वैसेही कहना इसकी राज्यधानी ईशान कोनमें है कर्दमकका भी विशेषता रहित यह अभिलाप कहना परतु यहां अग्नि कोण कहना इस की राज्यधानी विद्युत्प्रभा जानना कैलासका भी वैसेही जानना परतु यहां नैऋत्य कोण में कहना और इसी दिशामें इस की राज्यधानी कहना अरुणप्रभ का वैसे ही कहना परतु वायव्य कोण में कहना और इसही दिशा में राज्यधानी भी कहना चारों का प्रमाण समान जानना सब रत्नमय हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अधिपति सुस्थित देवका गौतम ! नामक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां लवण समुद्र का अधिपति

एएयण सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमा दीवे णाम दीवे पण्णत्ते, बारस जोयण सहस्साइं आयामविक्खंभेणं सत्ततीस जोयण सहस्साइं नवय अडयाले जोयणसये किंचिविसेसाहिये परिक्खेवेणं, जंबूदीव दीवंतेणं अद्धकूणणउति जोयणाइं चत्तालीसच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिए जलंताओ लवणसमुद्दतेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सेणं एगाए पउमवरवेदियाए एगेण वणसंडेण सव्वतो समता तहेव वण्णओ दोण्हवि ॥ गोयमदीवस्सणं दीवस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते सेजहा णामए आलिंग जाव आसयति ॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्ज

सुस्थित देवका गौतम द्वीप कहा है वह बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है ३७९४८ योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है जम्बूद्वीप तरफ ८८५ योजन व एक योजन के ९५ भाग में के ४० भाग पानी से ऊंचा है और लवण समुद्र की दिशी में पानी से दो कोस ऊंचा है इस के एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है इस का वर्णन सब पूर्ववत् कहना गौतमद्वीप के अंदर बहुत रमणीय भूमि भाग है जैसे मादलका तल वगैरह पूर्ववत् कहना, यावत् वहां बहुत देव बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में लवणाधिपति सुस्थित नामक देव का एक बडा आक्रीडावास नामक भूमि विहार कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१ योजन का चौडा है अनेक स्तंभवाला वगैरह सब वर्णन कहना

भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स एगे महं आकीलावासे णाम भोमेज्ज विहारे पण्णत्ते बावट्ठिं जोयणाति अद्धजोयणं च उड्ढ उच्चत्तेण, एकतीसं जोयणाइं कोसंच विक्खंभेण अणेगखंभसते सण्णिविट्ठ सव्वओभवण वण्णओ भाणियव्वो ॥ आकीलावासस्सणं भोमज्जविहारस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासो तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगे मणिपेढिया पण्णत्ता, सा मणिपेढिया दो जोयणाति आयाम विक्खंभेण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाते उवरिं एत्थण देवसयणिज्जे पण्णत्ते वण्णओ॥सेकेणट्ठेण भंते! एवं

आक्रीडावास भूमि विहारमें बहुत रमणीय भूमिभाग है यावत् मणि का स्पर्श है उस बहुत रमणीय भूमि भाग के मध्यमें एक मणिपीठिका कही है यह मणिपीठिका दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी शेष पूर्ववत् इस मणिपीठिका पर एक देवशयन कहा है इस का वर्णन पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! गौतमद्वीप ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम! गौतमद्वीप में बहुत उत्पल कमल यावत् गौतम जैसी प्रभा वाले हैं इस लिये ऐसा कहा है यावत् नित्य है अहो भगवन् ! लवणाधिपति सुस्थित नामक देवकी राज्यधानी कहां

वुच्चइ गोयम दीवे दीवे ? गोयमा ! गोयमदीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहूइं, उप्पलाइं जाव गोयमप्पभाई से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ कहिण भंते ! सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स, सुट्ठियाणाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! गोयम दीवस्स पच्चत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे जाव अण्णंमि लवणसमुद्दे बारस जोयण सहस्साति ओगाहित्ता एवं तहेव सव्वं जाव सुट्ठिए देवे २ ॥ २७ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवगाणं चंदाणं चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं बारस जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं

कही है ? अहो गौतम ! गौतम द्वीप से पश्चिम में तीच्छीं असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर आवे वहां दूसरे लवणसमुद्र में बारह योजन अवगाहकर आवे वहां सुस्थित देवकी राजधानी कही है वगैरह सब वर्णन पूर्ववत जानना यावत सुस्थित देव रहता है॥२७॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चंद्रका चंद्रद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाह कर आवे वहां जम्बूद्वीप के चंद्र का चंद्र नामक द्वीप कहा है, यह जम्बूद्वीप की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी से ऊंचा है लवण समुद्र की तरफ दो कोस का पानी से

जम्बुद्दीवगाण चंदाण चंददीवानाम दीवा पण्णत्ता, जम्बुद्दीवं तेण अद्धेकूणणउति जोयणाति चत्तालीसंच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिया जलंतातो लवणसमुद्दतेण जोयणाति दोकोसे ऊसिता जलंतातो बारस जोयण सहस्साति आयाम विक्खंभेण सेस तचेव जहा गोतमदीवस्स परिक्खेवो पउमवरवेइया पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता, दोण्हवि वण्णओ जाव जोइसिया देवा आसयति ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्ज भूमिभाग,ण बहुमज्झ देसभाए पासादवडेंसका बावट्ठि जोयणाइ, बहुमज्झदेसभागे मणिपेढयाओ दो जोयणाओ जाव

ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है शेष सब गौतम द्वीप जैसे वर्णन जानना इन को वनखण्ड व पद्मवर वेदिका घेरीहुइ है दोनों वर्णन योग्य है उस पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है यावत् ज्योतिषी देव वहां बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में प्रासादावतंसक कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा है उस के मध्य में एक मणिपीठिका है यावत परिवार सहित सिंहासन कहना इस का अर्थ की पृच्छा भी वैसे ही कहना अर्थात् इस का ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! वहां छोटी बडी बावडियों में बहुत कमल चंद्र समान वर्णवाले हैं, चंद्र समान कांतिवाले हैं, वहां चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाला रहता है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् चंद्र२ द्वीप व चंद्र राज्यधानी में रहनेवाले अन्य ज्योतिषी देव देवियों का अधिपति

पुच्चइ गोयम दीवे दीवे ? गोयमा ! गोयमदीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहूइं, उप्पलाई जाव गोयमप्पभाई से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ कहिणं भंते ! सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स, सुट्ठियाणाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ने, गोयम दीवस्स पच्चत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे जाव अण्णंमि लवणसमुद्दे बारस जोयण सहस्साति ओगाहित्ता एवं तहेव सव्वं जाव सुट्ठिएदेवे २ ॥ २७ ॥ कहिणं भंते ! जंबुद्दीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं बारस जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं

कही है ? अहो गौतम ! गौतम द्वीपक से पश्चिम में तीच्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघन जावे वहां दूसरे लवणसमुद्र में बारह योजन अवगाहकर जावे वहां सुस्थित देवकी राजधानी कही है वगैरह सब वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् सुस्थित देव रहता है॥२७॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप के चन्द्रका चंद्रद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाह कर जावे वहां जम्बूद्वीप के चन्द्र का चंद्र नामक द्वीप कहा है यह जम्बूद्वीप की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी से ऊपर है लवण समुद्र की तरफ दो कोस का पानी से

जबुद्दीवगाण चदाण चदद्दीवानाम दीवा पण्णत्ता, जबुद्दीवं तेण अद्धेकूणणउतिं जोयणाति चत्तालीसच पचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिया जलंतातो लवणसमुद्दतेण दोकोसे ऊसिता जलंतातो बारस जोयण सहस्साति आयाम विक्खभेण सेस तचेव जहा गोतमदीवस्स परिक्खेवो पउमवरवेइया पत्तेय २ वणसड परिक्खित्ता, दोण्णवि वण्णओ जाव जोइसिया देवा आसयति ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्ज भूमिभागण बहुमज्झ देसभाए पासायवडेंसका बावट्ठि जोयणाइ, बहुमज्झदेसभागे मणिपेढयाओ दो जायणाओ जाव

ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है शेष सब गौतम द्वीप जैसे वर्णन जानना इन को वनखण्ड व पद्मवर वेदिका घेरीहुइ है दोनों वर्णन योग्य है उस पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है यावत् ज्योतिषी देव वहां बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में प्रासादावतंसक कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा है उस के मध्य में एक मणिपीठिका है यावत परिवार सहित सिंहासन कहना इस का अर्थ की पृच्छा भी वैसे ही कहना अर्थात् इस का ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! वहां छोटी बडी बावडियों में बहुत कमल चद्र समान वर्णवाले हैं, चद्र समान कांतिवाले हैं, वहां चद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाला रहता है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् चद्र२ द्वीप व चंद्र राज्यधानी में रहनेवाले अन्य ज्योतिषी देव देवियों का अधिपति

सीहासणा सपरिवारा भाणियव्वा तहेव अट्ठो गोयमा! बहुसु खुड्डा खुड्डियाउ बहूइ उप्पलाइं चंद वण्णाभाइ चंदा इत्थ देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसंति तेण तत्थ पत्तेय २ चउण्हं सामाणिय साहस्सीण जाव चंददीवाण चंदाणय रायहाणीण अन्नेसिं बहूइ जोतिसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरति से तेणट्ठेण गोयमा! चंददीवा जाव णिच्चा ॥ कहिण भंते! जंबूदीवगाण चंदगाण चंदाणउ णाम रायहाणीउ पण्णत्ताओ? गोयमा! चंददीवाण पुरत्थिमेणं तिरियं जाव अण्णमि जंबूदीवे २ बारस जोयणसहस्साति उग्गाहित्ता तचेव पमाण जाव एव महिड्डिया चंदा देवा २ ॥ २८ ॥ कहिण भंते! जंबूदीवगाण सूराणं सूरदीवणाम दीवा

पना करता हुवा विचरता है अहो गौतम! इस लिये ऐसा नाम कहा है अथवा यह द्वीप अतीत काल में नहीं था ऐसा नहीं यावत् नित्य है अहो भगवन्! जम्बूद्वीप के चन्द्र की चन्द्रका नामक राज्यधानी कहां कही है? अहो गौतम! चंद्रद्वीप से पूर्व में तीच्छी असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य जम्बूद्वीप में बारह हजार योजन पर चंद्रका नामक राज्यधानी कही है इस का प्रमाण वैसे ही जानना यावत् महर्द्धिक चन्द्र देव है ॥ २८ ॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप के सूर्य का सूर द्वीप कहां कहा है?

पण्णत्ता ? गोयमा ! जबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण लवणसमुद्द बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता तचेव उच्चत्त आयाम विक्खंभेण परिक्खेवो वेदिया वणसडा भूमिभागा जाव आसयति पासायवडेंसगाण तचेव पमाण मणिपेढिया सीहासण सपरिवारा अट्ठो उप्पलाइं सूरप्पभाति सूराइयइत्थ देवा जाव रायहाणीओ, सकाण दीवाण पच्चत्थिमेण अण्णम्मि जबुद्दीवे २ सेस तचेव जाव सूरादीवा ॥२९॥ कहिण भते ! अब्भितरे लवणगाण चदाण चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता ? गोयमा !

अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे वहां सूर द्वीप कहा है इस की लम्बाइ चौडाइ ऊंचाइ यावत् सब वर्णन चंद्र द्वीप जैसे जानना इस को भी वेदिका वनखण्ड व भूमिभाग है यावत् वहां देव रहते हैं उस में प्रासादावतंसक है इस का प्रमाण भी पूर्वोक्त जैसे कहना इस में मणिपीठिका, सिंहासन वगैरह परिवार सहित कहना इस में सूर्य की कांति जैसे उत्पल वगैरह उत्पन्न होते हैं इस में सूर्य नामक ज्योतिषी का इन्द्र रहता है इस की राज्यधानी लवण समुद्र के सूर्य द्वीप से पश्चिम में अन्य जम्बूद्वीप में सूर्या नामक राज्यधानी है इस का सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में रहकर जम्बूद्वीप की दिशा में फीरनेवाले

सीहासणा सपरिवारा भाणियव्वा तहेव अट्ठो गोयमा! बहुसु खुड्डा खुड्डियाउ बहूइ उप्प-
लाइ चंदवण्णाभाइ चंदा इत्थ देवा महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति तेण
तत्थ पत्तेय २ चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव चंददीवाण चंदाणय रायहाणीण अन्नेसिं
बहूइ जोतिसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरति से तेणट्ठेण गोयमा!
चंददीवा जाव णिच्चा ॥ कहिण भंते! जंबूद्दीवगाण चंदगाण चंदाणउ णाम
रायहाणीउ पण्णत्ताओ? गोयमा! चंददीवाण पुरत्थिमेण्णं तिरिय जाव अण्णंमि
जंबूद्दीवे २ बारस जोयणसहस्साति उग्गाहित्ता तंचेव पमाण जाव एव महिड्डिया
चंदा देवा २ ॥ २८ ॥ कहिण भंते! जंबूद्दीवगाण सूराण सूरदीवणाम दीवा

पना करता हुवा विचरता है अहो गौतम! इस लिये ऐसा नाम कहा है अथवा यह द्वीप अतीत काल में
नहीं था ऐसा नहीं यावत् नित्य है अहो भगवन्! जम्बूद्वीप के चन्द्र की चन्द्रा नामक राज्यधानी कहां
कही है? अहो गौतम! चंद्रद्वीप से पूर्व में तीच्छी असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर आवे वहां अन्य
जम्बूद्वीप में बारह हजार योजन पर चंद्रका नामक राज्यधानी कही है इस का प्रमाण वैसे ही जानना
यावत् महर्द्धिक चंद्र देव है ॥ २८ ॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप के सूर्य का सूर द्वीप कहां कहा है?

उगाहित्ता एत्थणं बाहिरि लवणगाण चंदाण चंददीवा पण्णत्ता ॥ धायतिसंडदीव तेणं अद्धेकूणणओ जोयणाति चत्तालीस पचाणउतभाग जेयणस्स उसित्ता जलंतातो लवण समुद्द तेण दो कोस उसित्ता बारसजोयणसहस्स इं आयामविक्खंभेण पउमवरवेइया वणसंडे, बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा मणिपढिया सीहासणा सपरिवारा सोचेव अट्ठो रायहाणीओ ॥ साण दीवाण पुरत्थिमेण तिरियमसंख अण्णमि लवणसमुद्द तहेव सव्व ॥ ३१ ॥ कहिण भंते बाहिर लवणगाण सूराण सूरदीवा नामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! लवणसमुद्द पच्चात्थिमिल्लातो वेतियंताओ लवणसमुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयणसहस्साइ

योजन जावे वहां बाह्य लवण समुद्र के चंद्र का चंद्र द्वीप कहा है यह धातकी खण्ड के तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी पर है, और लवण समुद्र की तरफ दो कोश ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौड़ा है वहां पद्मवर वेदिका व वनखण्ड है बहुत रमणीय भूमिभाग है, मणिपीठिका, परिवार सहित सिंहासन है इसका अर्थ की पृच्छा ? उप द्वीप से पूर्व में तीच्छों असंख्यात द्वीप समुद्र में राज्यधानी है इसका सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥३१॥ अहो भगवन्! बाहिर के लवण समुद्र सूर्य का सूर्यद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की पश्चिम दिशा की, वेदिका से लवण समुद्र में पूर्व

जम्बूमंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं लवणसमुद्द बारस जोयणसहस्साइं उगाहित्ता एत्थणं अब्भिंतर लवणगाणं चंदाणं चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता जहा जंबुद्दीवगा चंदा तहा भाणियव्वा, णवरिं रायहाणीओ अण्णम्मि लवणे, सेसं तचेव ॥ एवं अब्भिंतर लवणगाणं सूराणवि लवणसमुद्द बारस जोयण सहस्साति तचेव सव्व रायहाणीओत्ति॥ ३०॥ कहिणं भंते! बाहिरि लावणगाणं चंदाणं चंददीवा णामं दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स पुरच्छिमिल्लातो वेदीयतातो लवणसमुद्द पच्चत्थिमेणं बारसजोयण सहस्साइं

अर्थात् लवण समुद्र के आभ्यंतर चंद्र के चंद्र द्वीप कहां हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे वहां अभ्यंतर लवण समुद्र के चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है जैसे जम्बूद्वीप के चंद्रद्वीप है वैसे ही कहना विशेष में अन्य लवण समुद्र में राजधानी कहना ऐसे ही लवण समुद्र में बारह हजार योजन पर आभ्यंतर लवण समुद्र के सूर्य का सूर्य द्वीप कहा है इस का सब अधिकार पूर्ववत् जानना ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! बाहिर के लवण समुद्र के चंद्र का चंद्र द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की पूर्व दिशा की वेदिका से लवण समुद्र में पश्चिम दिशा में बारह हजार

१ लवण समुद्र के शिखा बाहिर धातकी खण्ड की दिशा में फीरनेवाले

उगाहित्ता एत्थण बाहिरि लवणगाण चंदाण चंददीवा पण्णत्ता ॥ धायतिसंडदीव तेणं अद्धेकूणणउओ जोयणाति चत्तालीस पचाणउतभागे जे यणस्स उसित्ता जलंतातो लवण समुद्द तेण दो कोस उसित्ता बारसजोयणसहस्स इं आयामविक्खंभेण पउमवरवेइया वणसंडे, बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा सोचव अट्ठो रायहाणीओ ॥ साण दीवाण पुरत्थिमेण तिरियमसख अण्णमि लवणसमुद्द तहेव सव्व ॥ ३१ ॥ कहिण भंते! बाहिर लवणगाण सूराण सूरदीवा नामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! लवणसमुद्द पच्चात्थिमल्लातो वेतियन्ताओ लवणसमुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयणसहस्साइं

योजन जावे वहां बाह्य लवण समुद्र के चंद्र का चंद्र द्वीप कहा है यह धातकी खण्ड के तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी पर है, और लवण समुद्र से म फ दो कोश ऊचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौड़ा है वहां पद्मवर वेदिका व वनखण्ड है बहुत रमणीय भूमिभाग है, मणिपीठिका, परिवार सहित सिंहासन है इस का अर्थ की पृच्छा ? इस द्वीप से पूर्व में तीरछी असंख्यात द्वीप समुद्रमें राज्यधानी हैं इसका सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ ३१ ॥ अहो भगवन्! बाहिर के लवण समुद्र सूर्य का सूर्यद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की पश्चिम दिशा की वेदिका से लवण समुद्र में पूर्व

धायतिसंडदीवं तेणं भट्टेकूमडाति जोयणाति चत्ताळीस च पचाणाउति भागो जोयणस्स लवणसमुद्दं तेण दो कोसे ऊसिया सेस तहेव जाव रायहाणीओ सगाण दीवाणं पचत्थिमेण तिरिय मसखज्ज लवण चेव बारसजोयणा तहेव सव्व भाणियव्व ॥२२॥ कहिण भते! धायतिसडे दीवगाणं चदाण चददीवा णामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! धायतिसडस्स दीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेदियतातो कालोयण समुद्द बारसजोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थण धायतिसडदीवगाण चदाण चददीवा णामदीवा पण्णत्ता सव्वतो समता दाकोसा ऊसिता जलतातो बारसजोयण सहस्साइ

दिशा में बारह हजार योजन जावे तब वहां सूर्यद्वीप कहा है वह धातकी खण्ड की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग के ४० भाग जितना ऊंचा व लवण समुद्र से दो कोश का पानी से ऊंचा है शेष सब राज्यधानी पर्यंत वैसे ही कहना अपने द्वीप से पश्चिम में असंख्यात द्वीप समुद्र में अन्य लवण समुद्र में इस की राज्यधानी है ॥ २२ ॥ अहो भगवन्! धातकी खण्डद्वीप के चंद्र के चंद्रद्वीप कहां कहे हैं? अहो गौतम! धातकी खण्डद्वीप की पूर्व की वेदिका से कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां धातकी खण्ड के चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है वह चारों ओर पानी से दो कोश ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है वैसे पीछे कहा वैसे ही विष्कम, परिधि, भूमिभाग, प्रासादा

तहेव विक्खंभो परिक्खेवो भूमिभागो पासादवडेंसया मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा अठा तहेव रायहाणीओ ॥ सकाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि धायतिसंडदीवे सेस तहेव एवं धायतिसंडगावि सूरादीवावि णवरिं धायतिसंडस्स दीवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेइयाओ कालोयण समुद्द बारस जोयण तहेव सव्व जाव रायहाणीओ सूराण दीवाण पच्चत्थिमेण अण्णमि धायतिसंड दीवे सव्व तहेव ॥ २३ ॥ कहिणं भंते ! कालोयणगाण चंदाण चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! कालोयणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमि-

वतंसक, मणिपीठिका व परिवार सहित सिंहासन है अर्थ इस का वैसे ही कहना यावत् राज्यधानी की पृच्छा करना अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां धातकी खण्ड में चंद्रकी राज्यधानी कही है वर्णन पूर्ववत् जानना ऐसे ही धातकी खण्ड के सूर्यद्वीप का कहना परंतु पश्चिम दिशा की वेदिका से कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वगैरह सब वैसे ही कहना राज्यधानी सूर्यद्वीप से पश्चिम में जावे वहां अन्य धातकी खण्ड में है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के चंद्रका चंद्रद्वीप कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र की पूर्वदिशा की वेदिका से कालोद समुद्र में पश्चिम में बारह योजन जावे वहां कालोद चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है यह चारों ओर पानी से दो कोश का ऊंचा है

छातो वेतियताओ कोलायण समुद्द पच्चत्थिमेण बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण कालोयण चंदाण चंददीवा सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलतातो सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चंदा देवा, एवं सूराणवि णवर कालायण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयण सहस्साइं उगाहित्ता तहेव रायहाणीओसगाए दीवाणं पच्चत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात में अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पर्यंत जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में है, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य है उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में हैं, उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चदाणं पुक्खरवरदीवस्स पञ्चत्थिमिल्लातो वेतियताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उगाहित्ता चददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीआ तहेव एव सूराणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समद्द बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्दे चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्देसु सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जबुद्दीव लवण धायइ कालोद पुक्खरे वरुणे खीर घयखोयणदी

में चद्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में है द्वीप के चद्र सूर्य द्वीप उस से आगे के समुद्र में है और समुद्र के चद्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है इन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चद्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणि वरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नदीश्वरद्वीप, नदीश्वर

छातो वेतियताओ कोलायणं समुद्द पच्चत्थिमेण बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण कालोयण चदाण चददीवा, सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलतातो सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चदा देवा, एव सूराणवि णवर कालायण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरित्थमेण बारसजोयण सहस्साइं उगाहित्ता तहेव रायहाणीओसगाए दीवाणं पच्चत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असख्यात वे अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पूर्ववत जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परन्तु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परन्तु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चन्द्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चन्द्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में है, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चन्द्र सूर्य है उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में है। उस

सहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चात्थिमिल्लातो वेतियताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उगाहित्ता चददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूराणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समुद्द बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्द चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरएपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्दे सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जबुदीव लवण धायइ कालोए पुक्खरे वरुणे खीर घयखायणदी

में चद्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में है द्वीप के चंद्र सूर्य द्वीप उन से आगे के समुद्र में है और समुद्र के चद्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है, इन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी हैं, इन में चद्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणिवरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नन्दीश्वरद्वीप, नन्दीश्वर

च्छातो वेतियताओ कोलायण समुद्द पच्चत्थिमेण बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण कालोयण चंदाण चंददीवा सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलंतातो सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चंदा देवा, एवं सूराणवि णवर कालायण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयण सहस्साइं उगाहित्ता तहेव रायहाणीओसगाए दीवाणं पच्चत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात वें अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जाने वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पर्वत जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में है, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य है उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में है, उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चंदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उग्गाहित्ता चंददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूराणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समुद्द बारस जोयण सहस्साइ उग्गाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्दे चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरएपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्दे सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जबुदीव लवण धायइ कालोद पुक्खर वरुणे खीर घयखोयणदी

में चन्द्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चंद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में हैं द्वीप के चंद्र सूर्य द्वीप उस से आगे के समुद्र में हैं और समुद्र के चंद्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है, उन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चंद्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणिवरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नंदीश्वरद्वीप, नंदीश्वर

चंदाण चंदाओ णाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ त चेव सव्व एव सूराणवि णवर देवोदगस्स पच्चत्थिमिल्लातो वातियताओ देवोदग समुद्द पुरत्थिमेणं बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता रायहाणीउ सयाण २ पुरत्थिमेण समुद्द असखेज्जाइ जोयण सहस्साइ एव णागे जक्खे भूतेवि चउण्ह दीव समुद्दाण ॥ २५ ॥ कहिण भते ! सयभूरमणदीवगाण चदाण चददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! सयभूरमणस्सदीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेइयतातो सयभूरमणोदग समुद्द बारस जोयण सहस्साइ तहेव रायहाणितो सगाण २ दीवाण पुरत्थिमेण सयभूरमणोदग समुद्द असखज्जाइ

का सूर्य द्वीप कहा है और द्वीप से पूर्व के समुद्र में असंख्यात हजार योजन जावे वहां उनकी सूर्या नामक राज्यधानी कही है ऐसे ही नागद्वीप, नागसमुद्र, यक्षद्वीप, यक्षसमुद्र भूतद्वीप व भूतसमुद्र का जानना ये चारों द्वीप समुद्र समान जानना ॥२५॥ अहो भगवन् ! स्वयंभूरमण द्वीप के चंद्र का चंद्र द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! स्वयंभूरमण द्वीप की पूर्व की वेदिका से स्वयंभूरमणोदक समुद्र में बारह हजार इसी क्रमसे राज्यधानी पर्यंत कहना अपने द्वीपसे पूर्वमें स्वयंभूरमणोदक समुद्रमें असंख्यात हजार योजन जावे तब उसकी राज्यधानी कही है ऐसे ही सूर्य का जानना परंतु यहां स्वयंभूरमण समुद्रकी पश्चिम की

जोयण तहेव एव सूराणवि, सयभूरमणस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो रायहाणीओ सकाण २ दीवाण पच्चात्थिमेण सयभूरमणोदग समुद्द असखेज्जा सेस तहेव ॥ कहिंण भते! सयभूरमणसमुद्दकाण चदाण चददीवा पण्णत्ता? गोयमा! सयभूरमणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेइयतातो सयभूरमण समुद्द पच्चात्थिमेण बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता सेस तचेव, एव सूराणवि, सयभुरमणस्स पच्चात्थिमिल्लातो वेइयतातो रायहाणीउ सकाण २ दीवाण पुरत्थिमेण सयभूरमणोदग समुद्द असखेज्जाइ सेस तहेव ॥३६॥ अत्थिण भते ! लवणसमुद्दे वेलधरातिवा णागरायो अग्घातिवा सिहातिवा

वेदिका से जानना इन की भी राज्यधानी अपने द्वीप से पश्चिम में स्वयभूरमण समुद्र में असख्यात हजार योजन जावे वहां लग कहना अहो भगवन् ! स्वयभूरमण समुद्र के चद्र का चद्रद्वीप कहा है ? अहो गौतम ! स्वयभूरमण समुद्र की पूर्व की वेदिका से बारह हजार योजन स्वयभू रमणसमुद्र में जावे वहां चद्रद्वीप कहा है वगैरह शेष सब पूर्ववत् ऐसे ही सूर्य का कहना परतु यहां स्वयभूरमणसमुद्र की पश्चिम दिशा की वेदिका से जानना राज्यधानी अपने द्वीप से पूर्व में स्वयभूरमण समुद्र में असख्यात योजन जावे वहां शेष सब वैसे ही कहना यावत् वहां सूर्य देव रहते हैं ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् !

विज्झातिवा हास वुड्डीतिवा ? हंता अत्थि ॥ जहण भंते ! लवण समुद्दे अत्थि वेल धरातिवा णागरायातिवा अग्घा सिहा विज्झातिवा हासवड्डीतिवा तहाण बाहिरएसुवि समुद्देसु अत्थि वेलधराइवा णागरायातिवा अग्घातिवा सिहातिवा विज्झातिवा हासवुड्डीतिवा ? णो तिणट्ठे समट्ठे ॥२७॥ लवणेण भंते ! समुद्दे किं ऊसितोदगे कि पच्छडोदगे खुभियजले किं अखुभियजले ? गोयमा ! लवणेण समुद्दे ऊसितोदगे नो पत्थडोदगे, खुभिय-जले नो अखुभियजले ॥ जहाण भंते ! लवण समुद्दे ऊसितोदगे नो पत्थडोदगे

लवण समुद्र में वेलंधर, नाग राजा, अग्र, शिखा, नमण, ग्रास, वृद्धि वगैरह क्या है ? हां गौतम ! वैसे हैं अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र में वेलंधर, नागराजा, अग्र, शिखा, नमण, ग्रास, वृद्धि है वैसेही बाहिर के समुद्र में क्या वेलंधर, नागराजा, अग्र शिखा, नमण ग्रास व वृद्धि है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में क्या कुच्छ ऊंचा शिखर वाला पानी है अथवा विस्तारवंत है, क्या वायु से पानी क्षुब्ध होता है अथवा अक्षुब्ध है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का पानी ऊंचा शिखावाला है, परंतु प्रस्तारवंत नहीं है वायु से क्षुब्ध पानी है परंतु अक्षुब्ध नहीं है अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र का पानी ऊंचा शिखावंत है परंतु प्रस्तारवंत नहीं है, वायु से क्षुब्ध है परंतु

खुभियजले ना अक्खुभियजले तहाण बाहिरगा समुद्दा किं ऊसितोदगा नो पत्थडोदगा खुभियजला नो अक्खुभियजला ? गोयमा ! बाहिरगाण समुद्दाण नो उसितोदगा पत्थडोदगा, नो खुभियजला अक्खुभियजला, पुण्णा पुण्णपमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताये चिट्ठति ॥ ३८ ॥ अत्थिण भते ! लवण समुद्दे बहवे उराला बलाहका ससेयति समुच्छाति वास वासति ? हता अत्थि ॥ जहाण भते ! लवण समुद्दे बहवे उराला बलाहका ससेयति समुच्छाति वास वासति बाहिरएसु नो तिणट्ठे समट्ठे ॥ ३९ ॥ से केणट्ठेण भते ! एव

अक्षुब्ध नहीं है वैसे ही क्या बाहिर के असंख्यात समुद्र का पानी ऊंचा शिखरवन्त, प्रस्तारवत क्षुब्ध व अक्षुब्ध है ? अहो गौतम ! बाहिर के कालोद समुद्र प्रमुख का पानी ऊंचा शिखरवन्त नहीं है, परंतु प्रस्तारवन्त है वायु से क्षुब्ध नहीं है परंतु अक्षुब्ध शांत है क्यों कि इन में पाताल कलश नहीं हैं, ये पानी से परिपूर्ण भरे हुवे हैं पूर्ण प्रमाण भरे हैं, परिपूर्ण घट जैसे भरे हुवे हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में बहुत अप्कायरूप मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षते हैं ? हां गौतम ! वैसे ही उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं जैसे लवण समुद्र में बहुत मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं वैसे ही क्या बाहिर के समुद्र में मेघ उत्पन्न होवे व वर्षा करते हैं ? यह अर्थ समर्थ नहीं हैं ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! किस

वुचइ बाहिरगाण समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति? गोयमा! बाहिरएसुण समुद्द बहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति से तेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चति बाहिरगाण समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा जाव समभरघडत्ताए चिट्ठति ॥ ४० ॥ लवणेण भंते! केवतिय उव्वेह परिवड्डिए पण्णत्ते? गोयमा! लवणस्स समुद्दस्स उभउ पासिं पचाणउतिं २ पदेसे गता पएस उव्वेह परिवड्डिए पण्णत्ते पचाणउतिं २ वालग्गाइं गता वालग्ग उव्वेह परिवड्डिते पण्णत्ते, एव पचाणउति २ लिक्खगता लिक्ख उव्वेह

लिये ऐसा कहा कि बाहिर के समुद्र परिपूर्ण घडे जैसे भरे हुवे हैं अहो गौतम! बाहिर के समुद्र में बहुत अपूकाय के जीव मेघ-वृष्टि बिना उत्पन्न होते हैं व चवते हैं, इसलिये ऐसा कहा है कि बाहिर के समुद्र भरे हुवे हैं यावत् परिपूर्ण घट समान हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र की गहराइ में कितनी वृद्धि होती जाती है? अहो गौतम! लवण समुद्र के दो बाजुम (जम्बूद्वीप व धातकी खण्ड) अन्दर ९५ ९५ प्रदेश जावे तब एक प्रदेश ९५-९५ वालाग्र जावे तब एक वालाग्र गहराइ वृद्धि पाती है ऐसे ही ९५-९५ लिक्ष जावे तब एक लिक्ष, ऐसे ही यूका, यवमध्य, अंगुली, विहस्त, हाथ, कुक्षि धनुष्य, गाउ, योजन, सब योजन की

परिवड्ढिए जूया अवमज्झे अगुलि विहत्थिरयणी कुच्छि धणु उव्वेह परिवड्ढीए गाउय जोयण जोयणसय जोयण सहस्साइ गता जोयण सहस्स उव्वेह परिवड्ढिए पण्णत्ते ॥ ४१ ॥ लवणेण भते ! समुद्द केव तिय उस्सेह परिवड्ढिये पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्सण समुद्दस्स उभउपासिं पचाणउति २ पदसे गता सोलस पदेसे उस्सेध परिवुड्ढिते पण्णत्त ॥ लवणस्सण समुद्दस्स एतेणव कमेण जाव पचाणउति जोयण सहस्साइ गता सोलस जोयण सहस्साइति उस्सेह परिवुड्ढिते पण्णत्ते ॥ लवणस्सण भत ! समुद्दस्स के महालये गोतित्थे पण्णत्त ? गोयमा ! लवणस्सण समुद्दस्स उभयो पासिं पचाणउति २ जोयण सहस्साइ गोतित्थे पण्णत्ते ॥ लवणस्सण भते !

गहराइ जानना ९५ हजार योजन जावे तब एक हजार योजन की गहराइ मानना ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् लवण समुद्र की शिखा कितनी ऊंची है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के दोनों बाजु से ९५ ९५ प्रदेश अंदर जावे तब १६ प्रदेश शिखा ऊंची है, इसी क्रमसे ९५-९५ हजार योजन अंदर जावे तब १६ हजार योजन शिखा ऊंची है अहो भगवन् ! लवण समुद्र का कितना गोतीर्थ कहा है ? (गोतीर्थ सो पानी का चढाव उतार) अहो गौतम ! लवण समुद्र के दो बाजु ९५-९५ हजार योजन में गोतीर्थ है अहो भगवन् ! लवण समुद्र में गोतीर्थ रहित समपानी कितने क्षेत्र में है ? अहो गौतम ! दश हजार योजन के चक्रवाल

सिन्चमाण पण्णत्त कम्हाण भंते ! लवणसमुद्दे जंबुद्दीवं दीवं नो उवीलेति नो उप्पीलेइ नोचेव एक्कोदग करेइ ? गोयमा ! जबूदीवेण दीवे भरहएरवतेसुवासेसु अरहंत चक्कवट्टि बलदेवावासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणासमणीओ सावया सावियाओ मणुया पगतिभद्दया पगतिविणीया पगति उवसता, पगतिपयणुकोह माण माया लोभ मिउमद्दव सपन्ना अलीणा भद्दगा विणीता तेसिण पणिहाए लवणेसमुद्दे जबूदीवे नो वीलति नो उप्पलेति नाचेवण एक्कोदक करेति । गगा सिंधुरत्ता रत्तवईसु सलिलासु देवयाउ महिड्डियाए जाव पलिओवमठितीयाओ

जलमय क्यों नहीं बनाता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के भरत एरवत क्षेत्रमें अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव, जंघाचारण, विद्याचारण, विद्याधर, साधु, साध्वी श्रावक व श्राविका है और दूसरे भद्रिक व विनित प्रकृतिवाले, स्वभाव से ही क्रोध, मान, माया व लोभ पतले करने वाले, मृदता सपन्न, वैराग्य सपन्न संसार में अलिप्त ऐसे मनुष्यों की नेश्राय से जम्बूद्वीप में लवण समुद्र पानी नहीं डालता है, पीडा नहीं करता है व जलमय नहीं बनाता है और भी गंगा सिंधु, रक्ता व रक्तवती नदी के अधिष्ठायक देव महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले रहते हैं उन की नेश्राय से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है यावत् उसे जलमय नहीं बनाता है और भी चुल्लहिमवंत व शिखरी वर्षधर पर्वतमें महर्द्धिक देव रहते

जाव नो चेवण एक्कोदय करेंति ॥ परिवसति, तासिंण पणिहाय लवण समुद्द जाव नो चेवण एक्कोदय करेंति ॥ चुल्लहिमवंत सिहरिसु वासधरपव्वतेसु देवा महिड्डिया तेसिं पणिहाय हेमवयएरन्नवएसु वासेसु मणुया पगति भद्दगा रोहिता रोहितंससुवण्णकूलरुप्पकुलासु सलिलासु देवयाउ महिड्डियाओ तासिं पणिहाय सद्दावति वियडावातिवट्ट वेयड्ड पव्वतेसु देवा महिड्डिया जाव पलितोवमठितीया पण्णत्ता महाहिमवंत रुप्पीएसु वासहर पव्वएसु देवा महिड्डिया जाव पलिउवम ठितीयाय हारिवास रम्मगवासेसु मणुया पगतिभद्दगा, गधावातिमालवंत परितातेसु वट्टवेयड्ड पव्वतेसु देवा महिड्डिया णिसढ णिलवंतेसु वासहर पव्वएसु

उनकी नेश्राय से लवण समुद्र का पानी नहीं आता है, हेमवय एरणवय क्षेत्र के मनुष्य स्वभाव से भद्रिक विनीत है इन के प्रभाव से समुद्र का पानी नहीं आता है और भी रोहिता, रोहितंसा, सुवर्णकुला व रूप्यकुला इन चार नदियों के महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी नहीं आता है शब्दापाति विकटापाति वृत वैताढ्य पर्वत में महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है महा हिमवंत व रूपी पर्वत पर महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं उन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है हरिवर्ष व रम्यक् वर्ष क्षेत्र में युगलिये भद्रिक प्रकृति वाले,

देवा महिड्डिया सव्वाओ दहदेवयाओ भाणियव्वाओ, पउमद्दहाओ तेगिच्छकेसरिद्दहा वसाणसु देवीयाउ महिड्डिया तासि पणिहाय पुव्वविदेह अवरविदेहेसु वासेसु अरहंता चक्कवट्टि बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावगा सावियाओ मणुयापगइभद्दगा तासिं पणिहाय लवणे सीता सीतोदगासु सलिलासु देवता महिड्डिया देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया पगतिभद्दगा मंदरे पव्वत देवा महिड्डिया, जंबूए सुदंसणाए जंबुद्दीवाहिवइअणाढिए णाम देवेमहिड्डिए जाव पालओवमाठतीए परिवसति, तस्स पणिहाय लवणसमुद्दे णो उवीलेति जाव नोचेवणं एकोदग करेंति

व विनीत प्रकृति वाले रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है नरकांता नारीकंता, हरिकांता व हरिसलिला इन चार नदियों पर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है, गंधापाति व मालवंत नामक वृत्त वैताढ्य पर्वत में महर्द्धिक देव रहते हैं उनके प्रभाव से जम्बूद्वीप में लवण समुद्र का पानी नहीं आता है निषध व नीलवंत वर्षधर पर्वत पर महर्द्धिक देव रहते हैं उनके प्रभावसे लवणसमुद्रका पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है पद्मद्रह, महापद्मद्रह, पुंडरीकद्रह, महापुंडरीकद्रह, तीगिच्छद्रह केसरीद्रह, इन में श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी ये छ देवियों महर्द्धिक हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी

अदुत्तरंचण गोयमा ! लोगठिति लोगाणुभावे जन्नं लवणेसमुद्दे जंबूद्दीवं १

नो उवीलेति णो उप्पीलेइ नो चेवणं एकोदगं करेति ॥ ४५ ॥ इति मंदरोद्देसो

समत्तो ॥ लवणेणं समुद्दं धायइसंडे नामदीवे वट्टे वलयागार संठाण संठिए

सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति ॥ १ ॥ धायतिसंडेणं भंते ! किं

समचक्कवाल संठिए विसमचक्कवाल संठिए ? गोयमा ! समचक्कवाल संठिए नो

नहीं आता है सीता सीतोदा महा नदियों में महर्द्धिक देवियों रहती हैं, इन के प्रभाव से पानी नहीं
आता है देवकुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के युगलिये मनुष्य भद्रिक प्रकृतिवाले यावत् विनीत प्रकृतिवाले हैं, इन के
प्रभाव से पानी यहां नहीं आता है मेरु पर्वतपर महर्द्धिकदेव रहते हैं उनके प्रभाव से पानी नहीं आता है,
जम्बू सुदर्शन वृक्षपर जम्बूद्वीप का अधिपति अनाधृत नामक देव रहता है इसके प्रभाव से लवण समुद्र का
पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है, लवण समुद्र जम्बूद्वीप को पीड़ा नहीं करता है व जलमय नहीं बनाता है
अथवा अहो गौतम ! ऐसी लोकस्थिति लोकानुभाव है कि जिस से लवण समुद्र जम्बूद्वीप में पानी की
रेल नहीं लाता है, उस को पीड़ा नहीं करता है और जलमय नहीं बनाता है यह लवण समुद्र का अधिकार
संपूर्ण हुआ ॥ ४५ ॥ यह तीसरी प्रतिपत्ति में मंदर नामक उद्देशा संपूर्ण हुआ लवण समुद्र की चारों
ओर चलयों समान नामक द्वीप वर्तुल वलयाकार संस्थानवाला रहा हुआ है ॥ १ ॥ अहो भगवन् !

ओयणसते तिण्णिय कोसे धारस्सय २ आवाहाये अंतरे पण्णत्ते ॥ ६ ॥ धायइ सडस्सण भंते! दीवस्स पदेसा कालोयण समुद्द पुट्ठा ? हंता पुट्ठा ॥ तेण भंते ! किं धायइसंड दीवे कालोयणे समुद्दे ? गोयमा ! धायइसंडे णो खलु ते कालोयण समुद्दे, एवं कालोयणस्सवि ॥ धायइसंडदीवे जीवा उद्दाइत्ता २ कालोयणे समुद्दे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगइया पच्चायंति अत्थेगइया नो पच्चायंति, एवं कालोयणेवि, अत्थेगतिया पच्चायंति अत्थेगतिया नो पच्चायंति ॥ ७ ॥ से केणट्ठेण भंते !

योजन और तीन कोश का अंतर कहा है ॥६॥ अहो भगवन् धातकी खण्ड द्वीप के प्रदेश कालोद समुद्र को क्या स्पर्श कर रहे हैं ? हां गौतम ! स्पर्श कर रहे हैं अहो भगवन् ! वे धातकी खण्ड द्वीप के हैं या कालोद समुद्र के हैं ? अहो गौतम ! वे धातकीखंड द्वीप के हैं परंतु कालोद समुद्र के नहीं हैं अर्थात् वह भाग धातकी खण्ड का है परंतु कालोद समुद्र का नहीं है ऐसे ही कालोद समुद्र की पृच्छा करना अहो भगवन् ! धातकी खण्ड द्वीप के जीव मरकर कालोद समुद्र में क्या उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होते हैं और कितनेक नहीं उत्पन्न होते हैं ऐसे ही कालोदधि समुद्र के कितनेक जीव धातकी खण्ड में उत्पन्न होते हैं और कितनेक उत्पन्न नहीं होते हैं ॥७॥ अहो भगवन् ! धातकी

एवं वुच्चइ धायइसंडेदीवे २ ? गोयमा! धायइसंडेण दीवे तत्थ२ देसे२ तहिं२ बहवे धायरु रुक्खा धायइवणा धायइसंडा णिच्च कुसुमिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति धायइ महाधायइ रुक्खेसु, सुदसणे पियदसणे दुवेदेवा महिड्डिया जाव पलिओवम- ट्ठितीया परिवसति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ, अदुत्तरंचणं गोयमा ! जाव णिच्चा॥८॥धायइसंडेण भंते! दीवे केवति चंदा पहासिंसुवा? कति सूरिया तवइंसुवा३, कइमहग्गहाचार चरिंसुवा३, कइणक्खत्ताजोग जोयंसुवा३, कइतारागण कोडाकोडीओ

खण्डद्वीप ऐसा क्यों नाम दिया गया ? अहो गौतम ! धातकी खण्डद्वीप में स्थान २ पर बहुत धातकी वृक्ष, धातकी वन, धातकी वनखण्ड सदैव कुसुमित यावत् रहते हैं धातकी खण्ड के पूर्वार्ध में उत्तर कुरुक्षेत्र में धातकी वृक्ष है और पश्चिमार्ध उत्तर कुरुक्षेत्र में महा धातकी वृक्ष है यह जम्बू वृक्ष जैसे हैं यावत् शाश्वत हैं वहाँ सुदर्शन व प्रियदर्शन नामक दो महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं अहो गौतम ! इस से इस का नाम धातकी खण्डद्वीप कहा है और भी अहो गौतम! इसका नाम शाश्वत है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! धातकी खण्ड द्वीप में कितने चन्द्रने प्रकाश किया, प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे ? कितने सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, कितने महाग्रह चार चरे, चरते हैं व चरेंगे, कितने नक्षत्रने

साभसाभिमुवा ३ ? गोयमा ! बारस चदा पभासिंसुवा, एव चउवीस, ससिरविणो णक्खत्त सताय तिण्णि छत्तीसा, एगच सहस्स छप्पण धायइ सड अट्ठेव सय-सहस्सा तिण्णि सहस्साइ सत्तयसयाइ धायइसंडदीवे तारागण कोडाकोडीण सोभसुवा ३ ॥ ९ ॥ धायइसडेण दीव कालोदे नाम समुद्दे वट्टे वलयागार सठाण सठिते सव्वओ समता सपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ॥ कालोदेण भते! समुद्द किं समचक्कवाल सठाण सठिते विसमचक्कवाल सठाण सठिते? गोयमा! समचक्कवाल सठाण सठिते णो विसम चक्कवाल सठाण सठिते ॥ कालोदण भते! समुद्द केवतिय

योग किया, करते हैं व करेंगे, कितने कोडाकोडतारा शोभे, शोभते हैं व शोभेंगे ? अहो गौतम ! बारह चद्रने प्रकाश किया प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे बारह सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, यों सब मीलकर चंद्र सूर्य २४ हुए तीनसो छत्तीस नक्षत्र एक हजार छप्पन ग्रह, आठ लाख तीन हजार सातसो कोडा कोड तारा शोभित हुवे, शोभते हैं व शोभित होंगे ॥ ९ ॥ धातकी खण्डद्वीप की चारों ओर कालोद समुद्र वर्तुल वलयाकार संस्थान वाला रहा हुवा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र क्या समचक्रवाल संस्थान वाला है या विषम चक्रवाल संस्थान वाला है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र समचक्रवाल संस्थान वाला है परंतु विषम चक्रवाल संस्थान वाला नहीं है, अहो भगवन् ? कालोद

चक्कवाल विक्खभेणं केवतिय परिक्खेवेण पन्नत्ते ? गोयमा ! अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवाल विक्खभेण एक्काणउतिं जोयणसय सहस्साइं सत्तरिसहस्साइं छच्चपंचुत्तरे जोयणसये किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते, सेण एगाए पउमवरवेदियाए एगेण वणसंडेणय दोण्णवि वण्णओ ॥ १० ॥ कालोयणस्सण भंते ! समुद्दस्स कतिदारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा विजए विजयंते जयंते अपराजिए ॥ कहिण भंते ! कालोदस्स समुद्दस्स विजय णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदसमुद्दस्स पुरच्छिमपेरंत पुक्खरवरदीवड्ढ पुरच्छिमद्धस्स पच्चत्थिमेण सीतोदाए महानदीए उप्पिं एत्थण

समुद्र की कितनी चक्रवाल चौडाइ व चक्रवाल परिधि कही ? अहो गौतम ! उस की आठ लाख योजन की चक्रवाल चौडाइ कही और एकानवे लाख, सत्तरह हजार, छसो पचत्तर योजन से कुछ अधिक परिधि कही है, [सब आभ्यन्तरद्वीप समुद्रकी मीलकर परिधि जानना] इसकी चारों ओर वनखण्ड व एक पद्मवर वेदिका है दोनों वर्णन योग्य है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के चार द्वार हैं जिन के नाम विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का विजयद्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पूर्व पुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध से पश्चिम में सीतोदा महानदी ऊपर कालोद समुद्र का विजयद्वार कहा है यह आठ योजन का ऊंचा

कालोदस्स समुद्दस्स विजयएणामदारे पण्णत्ते, अट्ठ जोयण तचेव पमाण जावरायहाणीओ कहिण भंते ! कालोगस्स समुद्दस्स विजयंत णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोय समुद्दस्स दक्खिणा परंते पुक्खरवरदीव दक्खिणद्धस्स उत्तरे एत्थण कालोय समुद्दस्स विजयंत णामदारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! कालोय समुद्दस्स जयंत नामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पच्चत्थिमा पेरंते पुक्खरवरदीव पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेण सीताए महाणदीए उप्पिं जयंते नाम दारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! अपराजिए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदय समुद्दस्स उत्तरद्धा पेरंते पुक्खरवरदीवोत्तरद्धस्स

वगैरह जम्बूद्वीप के विजयद्वार जैसे प्रमाण वगैरह जानना यावत् राज्यधानी पर्यंत कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से दक्षिण दिशा के अंत में पुष्करवर द्वीप के दक्षिणार्ध से उत्तर में कालोद समुद्र का वैजयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का जयंत द्वार कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पश्चिम के अंत में पुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध से पूर्व सीता महा नदी पर जयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! अपराजित नाम द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से उत्तर के अंत में पुष्करवर द्वीप के उत्तरार्ध से दक्षिण में अपराजित द्वार कहा है शेष सब पैसे ही कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रत्येक

दाहिणओ एत्थण कालोयस्स समुद्दस्स अपराजिए नामंदारे पण्णत्ते सेस तंचेव ॥ कालो-दस्सण भंते ! समुद्दस्स दारस्सय२ एसण केवतिय अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! बावीस सय सहस्सा बाणउतिं खलुभवे सहस्साइं छच्चसया छयाला दारंतर तिण्णि कोसाये दारस्सय२ अबाहा अंतरे पण्णत्ते॥कालोदस्सण भंते ! समुद्दस्स पदेसा पुक्खर वरदीव तहेव,एव पुक्खरवरदीवस्सवि जीवा उद्दाइत्ता तहेव भाणियव्व॥११॥सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ कालोयणसमुद्दे ? कालोयणसमुद्द गोयमा ! कालोयणस्सण समुद्दस्स उदके आसल मासले पेसले मासरासिवण्णाभे पगतीए उदगरसेण पण्णत्ते ॥ काल

द्वार का परस्पर कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! बावीस लाख बाणवे हजार छ सो छियालीस (२२९२६४६) योजन तीन कोस का प्रत्येक द्वार पर अंतर कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रदेश पुष्करवर द्वीप के प्रदेशको स्पर्शकर रहे हैं क्या ? वगैरह सब पूर्ववत् जानना यावत् पुष्करवर द्वीप के जीव मरकर कालोद समुद्रमें कितनेक उत्पन्न होवे हैं यों सब कहना ॥११॥ अहो भगवन् ! कालोद ऐसा क्यों कहा ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र का पानी आस्वादनीय है, पुष्ट, वजनदार, मनोहर है इस का वर्ण काला है, सारेद के वर्ण जैसा है— स्वाभाविक पानी के रस समान है इस में काल व महा

कालोदस्स समुद्दस्स विजयएणामदारे पण्णत्ते, अट्ठ जोयण तंचेव पमाणं जावरायहाणीओ कहिण भंते ! कालोदस्स समुद्दस्स विजयंत णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोय समुद्दस्स दक्खिण परंते पुक्खरवरदीव दक्खिणद्धस्स उत्तरे एत्थण कालोय समुद्दस्स विजयंत णामदारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! कालोय समुद्दस्स जयंते नामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पच्चत्थिमा पेरंते पुक्खरवरदीव पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेण सीताए महाणदीए उप्पिं जयंते नाम दारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! अपराजिए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदय समुद्दस्स उत्तरद्धा पेरंते पुक्खरवरदीवोत्तरद्धस्स

वगैरह जम्बूद्वीप के विजयद्वार जैसे प्रमाण वगैरह जानना यावत् राजधानी पर्यंत कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से दक्षिण दिशा के अंत में पुष्करवर द्वीप के दक्षिणार्ध से उत्तर में कालोद समुद्र का वैजयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का जयंत द्वार कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पश्चिम के अंत में पुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध से पूर्व सीता महा नदी पर जयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! अपराजित नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से उत्तर के अंत में पुष्करवर द्वीप के उत्तरार्ध से दक्षिण में अपराजित द्वार कहा है यह सब वैसे ही कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रत्येक

वाल सठाण सठिते॥ पुक्खरवरेण भते ! दीवे केवइय चक्कवाल विक्खभेण, केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसजोयण सयसहस्साइ चक्कवाल विक्खभेण एगा जोयण कोडी बाणउति खलु सयसहस्सा अउणाणउतिं भवसहस्साइ अट्ठसया चउणउयाय परिरओ पुक्खरवरस्स, सण पउमवर वेदियाए एक्केणय वणसडेण दाण्हवि वण्णओ, ॥१५॥ पुक्खरवरस्सण भते ! कतिदारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारिदारा पण्णत्ता तजहा—विजये वेजयते जयते अपराजिते ॥ कहिण भते ! पुक्खरवरस्स दीवस्स विजये णामद्दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! पुक्खरवर दीव पुरच्छिमपेरते पुक्खरोद समुद्द पुरच्छिमद्धस्स पच्चच्छिमेण एत्थण पुक्खरवर दीवस्स विजयेणाम

सोलह लाख योजन चक्रवाल चौडाइवाला है एक क्रोड बाणवे लाख, नेवासी हजार, आठ सो चौरा-णवे योजन की परिधि है यह पुष्करवर द्वीप एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड से चारों ओर लपेटाया हुवा है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! चार द्वार कहे हैं तद्यथा—विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! पुष्करवर द्वीप से पूर्व के अंत में पुष्करोद समुद्र के पूर्वार्ध से पश्चिम में पुष्कर द्वीप का विजय द्वार कहा है यों चारों द्वार का

महाकालायएत्थे दुवे देवा महिड्ढिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसति, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ १३ ॥ कालोयणेण भते ! समुद्देकति चदा पभासिंसुवा ३, पुच्छा ? गोयमा ! कालोयणेण समुद्दे बायालीस चदा पभासिंसुवा ३, बायालीसच दिणगरादिता, कालोधिम्मि एते चरति सबध लेसगा णक्खत्ता सहस्स एगमग छावत्तर चसयमुणेयव्व छच्चसता छण्णउया महग्गहा तिण्णिय सहस्सा अठावीस कालोदहिमि बाराहसतसहस्साइं नवसय पण्णास तारागण कोडीकोडी सोभेंसुवा ३, ॥ १४ ॥ कालोयण समुद्द पुक्खरवरेणाम दीवे वट्टेवलियागार सठाण सठिते सव्वतो समता सपरिक्खित्ता तचेव जाव समचक्कवाल सठाण सट्ठिते णोविसम चक्क-

काल ऐसे दो महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं इस लिये कालोद नाम कहा है यावत् नित्य है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र में कितने चद्रने प्रकाश किया प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे वगैरह सब पृच्छा करना अहो गौतम ! कालोद समुद्र में ४२ चंद्र, ४२ सूर्य, ११७६ नक्षत्र, ३६९६ ग्रह व २८१२९५० क्रोडाक्रोड तारागण हैं ॥१४॥ कालोद समुद्रकी चारों ओर पुष्करवर द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है यावत् वह समचक्रवाल है परन्तु विषम चक्रवाल नहीं है। अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप कितना चक्रवाल चौडाइ में है, कितना चक्रवाल परिधि में है ? अहो गौतम !

परिवसाति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चति पुक्खरवरदीवे २ जाव णिच्चे ॥१८॥ पुक्खरवरेण भते! दीवे केवइया चदा पभासिंसुवा,एव पुच्छा? गोयमा! चोयाल चदसय चउयालचेव सूरियाणसय पुक्खरवरमिदीवे चरति,-एते पभासेचा, चत्तारि सहस्साइ वत्तीसचेवहोंति णक्खत्ता, छच्चसया वावत्तरमहग्गहा, बारस सहस्सा छण्णउइ सय सहस्सा चत्तालीस भवे सहस्साइ चत्तारिसया पुक्खरवरे तारागण कोडाकोडीण सोभसुवा ३, ॥ १९ ॥ पुक्खरवरदीवस्सण बहुमज्झदेसभाए, एत्थण माणुसुत्तारे नाम पव्वते पण्णत्ते, वट्टे वलयागार सठाण सठिते जेणेव पुक्खरवरदीव दुहा विभयमाणे २ चिट्ठति अब्भितर पुक्खरवरद्धच वाहिर पुक्खरवरद्धच,॥अब्भितर

लिये पुष्कर वरद्वीप कहा गया अथवा इस का नाम शाश्वत है ॥ १८ ॥ पुष्करवरद्वीप में कितने चद्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा? अहो गौतम, १४४ चद्र, १४४ सूर्य ४०३२ नक्षत्र, १२६७२ महाग्रह और ९६४४४०० कोडा कोड तारा यहां सोभते हैं यह पुष्करवरद्वीपका कथन हुवा ॥१९॥ पुष्करवर द्वीप के मध्य भाग में मानुषोत्तर पर्वत वर्तुल वलयाकार सस्थान वाला पुष्कर वरद्वीप के दो भाग करके रहा हुवा है जिन के नाम आभ्यतर पुष्करवरार्ध और बाह्य पुष्करवरार्ध अहो भगवन् ! आभ्यतर पुष्करार्ध कितने चक्रवाल चौडाइ में है और कितनी परिधि है ? अहो गौतम ! आठ हजार योजन चक्रवाल

दारे पण्णत्ते ? तचेव सव्वं, एव चत्तारिविदारा सीया सीयादा णात्थ भाणियव्वाओ॥ पुक्खरवरस्सण भंते! दीवस्स दारस्सय २ एसण केवतिय अबाहाए अतरे पण्णत्ते? गोयमा! अडयाल सय सहस्सा बावीस खलु भवे सहस्साइ अगुणुत्तराय चउरो दारतर ॥ १६॥ पुक्खरवरस्स पदेसा दोण्हवि पुट्ठा जीवा दोसुवि भाणियव्वा ॥ २७ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ पुक्खरवरदीवे ? गोयमा ! पुक्खरवरेण दीवे तत्थ २ देसे२ तहिं२ बहवे पउमरुक्खा पउमवणसडा णिच्च कुसुमिता जाव चिट्ठति, पउम महा पउमरुक्खेसु तत्थ पउम पोंडरियाणामं दुवे देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितिया

वर्णन करना यहां सीता सीतोदा नदी कहना नहीं। पुष्करवर-द्वीप के प्रत्येक द्वार का कितना२ अंतर कहा है? अहो गौतम ! ४८,२२,४६९ योजन जितना प्रत्येक द्वार का अंतर कहा है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पुष्कर वरद्वीप व पुष्कर वर समुद्र दोनों स्पर्श कर रहे हैं क्या ? वगैरह सब पूर्वोक्त प्रकार कहना दोनों जीवों मरकर दोनों में परस्पर उत्पन्न होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! पुष्कर वर ऐसा नाम क्यों कहा गया ? अहो गौतम ! पुष्कर वरद्वीप में बहुत पद्म वृक्ष व पद्म वनखण्ड कुसुमित यावत् रहते हैं पद्म व पद्मासन वृक्षपर पद्म व पुंडरीक नाम के महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं इस

तिण्णिसया छत्तीसा, छच्च सहस्सा महग्गहाणतु भवे, सोलाइ दुवेसहस्साइ, अडयाल सयसहस्सा ॥२॥ बावीस खलु भवे सहस्साइ दोविसया पुक्खरद्धे, तारागण कोडीकोडीण ॥ ३ ॥ सोभसुवा ३ ॥ २१ ॥ समयखेत्तेण भंते ! केवतिय आयाम विक्खंभेण केवतिय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीस जोयण सत सहस्साइ आयाम विक्खंभेण, एगा जोयण कोडी जाव अभिंतर पुक्खरद्ध परिरया से भाणियव्वा जाव अउद्दरण्ण ॥ २२ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चति मणुस्सखेत्ते ? गोयमा ! माणुसक्खेत्तेण तिविहा मणुस्सा परिवसंति तजहा—कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अतर दीवगा, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति माणुसक्खेत्ते २ ॥ अदुत्तरचण

पुष्करवर द्वीप में ७२ चन्द्र ७२ सूर्य, छ हजार तीन सो छत्तीस महा ग्रह, दो हजार सोलह नक्षत्र, अडतालीस लक्ष बावीस हजार दो सो क्रोडाक्रोड तारा हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! समय क्षेत्र कितना लम्बा चौडा व परिधि युक्त है ? अहो गौतम ! समय क्षेत्र ४५ लक्ष योजन का लम्बा चौडा है और [illegible] पुष्करार्ध जितनी परिधिवाला है अर्थात् १,४२,३०,२४९ योजन की परिधि है ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र क्यों कहा है ? अहो गौतम ! मनुष्य क्षेत्र में तीन प्रकार के मनुष्य रहते हैं तद्यथा-कर्म भूमक, अकर्म भूमक व अंतर द्वीपक अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा पाचत

पुक्खरवरद्धेण भंते ! केवतिय चक्कवालेण विक्खंभेण केवतिय परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठजोयण सय सहस्साति चक्कवाल-विक्खंभेण, कोडीसय लीसा तीस दोण्हसिया अगुणपण्णा पुक्खरवरद्ध परिरओ णय से मणुस्स खेत्तस्स परिरओ॥ से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ अब्भिंतर पुक्ख... पाब्भिंतर पुक्खरद्धे गोयमा! अब्भिंतर पुक्खरद्धेण माणुसुत्तरेण पव्वएण सव्वओ ... संपरिक्खित्ते से तेणट्ठेण गोयमा ! अब्भिंतर पुक्खरद्धे, अदुत्तरं चण जाव णिच्च २० ॥ अब्भिंतर पुक्खरद्धेण भंते! केवतिया चंदा पभासिंसु वा ३, एव पुच्छा जाव तारागण कोडा कोडीओ? गोयमा ! बावत्तरिं चंदा बावत्तरिमेव दिणयरा दित्ता पुक्खरवरद्दीवड्ढ चरति एए पभासेता॥१॥

योजन में है और एक क्रोड बयालीस लाख तीस हजार दो सो गुनपचास योजन की आभ्यंतर पुष्करार्ध की परिधि जानना इतनी ही मनुष्य क्षेत्र की परिधि जानना अहो भगवन् ! आभ्यंतर पुष्करार्ध ऐसा क्यों कहा ? अहो गौतम ! आभ्यंतर पुष्करवर द्वीप के चारों ओर मानुषोत्तर पर्वत रहा हुवा है इसलिये आभ्यंतर पुष्कर द्वीप कहा यावत् नित्य है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! आभ्यंतर पुष्कर द्वीप में कितने चंद्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा ! अहो गौतम ! आभ्यंतर

तारगग ज भणिय मणुस्साम्मि लोगम्मि॥चार कलबुया पुप्फ, सठिय जोइस चरति॥५॥ रविससि गहनक्खत्ता, एवइया आहिया मणुयलोए ॥ जेसिं नामागोत्त नपागया पणवेहिं॥६॥छावट्ठि पिडयाइ, चदाइच्चाण मणुयलोगम्मि ॥ दो चदा दोसूरा हवति एकक्कएपिडए ॥७॥ छावट्ठि २ पिडगाइ, नक्खत्ताण मणुयलोगमि छप्पन्न नक्खत्ताय, हुति इक्किकए पिडए ॥ ८ ॥ छावट्ठि पिडगाइ महग्गहाणतु मणुयलोयमि, छावत्तर गहसय होइउ एक्कक्कए पिडए ॥ ९ ॥ चत्तारिय पतीओ चदाइच्चाय मणुयलोगमि, छावट्ठीय२ होइ एक्केकियापती ॥ १० ॥ छप्पण पतीतो, णक्खत्ताणतु मणुयलोगमि॥

इतना तारा समुह कहा ॥ ४ ॥ मनुष्य लोक में जो ज्योतिषी देव के विमान हैं वे सब कदम्ब पुष्प के सस्य न चाले नीचे सकुचित व ऊपर विस्तारवत आधा कविठ जैसे आकारवाले हैं ॥ ५ ॥ सूर्य, चद्रमा ग्रह नक्षत्र व ताराओं जो मनुष्य लोकमें कहे इनका नाम व गोत्र प्रगटपने नहीं कह सकते हैं ॥६॥ इस मनुष्य लोक में चद्र व सूर्य के ६६ पिटक कहे हैं एक २ पिटक में दो चद्र दो सूर्य हैं ॥ ७ ॥ इस मनुष्य लोक में नक्षत्र के ६६ पिटक कहे हैं एक २ पिटक में छप्पन २ नक्षत्र हैं ॥ ८ ॥ मनुष्य लोक में महा ग्रह के ६६ पिटक हैं और एक २ पिटक में १७६ महा ग्रह हैं ॥ ९ ॥ चद्र व सूर्य की मिलकर चार पक्ति हैं एक २ पक्ति में ६६-६६ चद्र व सूर्य हैं ॥ १० ॥ मनुष्य लोक में नक्षत्र की ५६ पक्ति

गोयमा ! समयक्खित्ते सासये जाव निच्चे ॥ २३ ॥ मणुस्स खेत्तेण भंते! कइचंदा पभासेंसुवा १, कइसूरा तवइंसुवा २, गोयमा ! बत्तीस चंदसयं बत्तीस चेव सूरियाणसयं सयलं मणुस्सलोयं चरति एए पभासेंता ॥ १ ॥ एक्कारस सहस्सा, छप्पिय सोला महग्गहाणतु ॥ छच्चसया छण्णउया, णक्खत्ता तिण्णिय सहस्सा ॥२॥ अट्ठासीइ सत सहस्सा, चत्तालीस सहस्समणुयलोगम्मि, सत्तयसता अणुणा, तारागण कोडी कोडीण ॥ ३ ॥ सोमसवा ३ एसो तारापिंडो सव्वे समासेण मणुयलोगम्मि, बहिया पुणताराओ जिणेहिं भणिया असंखेज्जा ॥ ४ ॥ एवइयं

मनुष्य क्षेत्र है यावत् अहो गौतम ! मनुष्य क्षेत्र शाश्वत यावत् नित्य है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में कितने चन्द्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा ? अहो गौतम ! सब मनुष्य लोक में १३२ चंद्र व १३२ सूर्य हैं [२ जम्बूद्वीप, ४ लवण, समुद्र, १२ धातकी खण्ड, ४२ कालोद समुद्र व ७२ पुष्करार्ध द्वीपके यों सब मीलकर १३२ होते हैं] इग्यारह हजार छसो सोलह महाग्रह, तीन हजार छसो छन्नु नक्षत्र, अठयासी लाख चालीस हजार सातसो क्रोडा क्रोड तारागण हैं यह ज्योतिषी तिर्छे मनुष्य लोक में संक्षेप से जानना और बाहिर असंख्यात तारागण श्री तीर्थंकर भगवानने कहे हैं

भणुस्साणं ॥१६॥ तेसिं पविसताण, तावक्खेत्त तु वड्ढतेणियमा ॥ तेणेव कम्मेण पुणो, परिहायति णिक्खमताणं ॥ १७ ॥ तेसिं कलंबुया पुप्फसंठिता, होंति तावक्खेत्त-पहा, अतोसंकोडा बाहिं वित्थडा चंद सूराण ॥ १८ ॥ केण वड्ढति चंदो, परिहाणी केणहोति चंदस्स॥कालोवा जोण्हावा, केणणुभावेण चंदस्स ॥ १९ ॥ किण्हं राहुवि-माणं, णिच्च चंदेण होइ अविरहियं ॥ चउरंगुलमप्पत्तं, हेट्ठा चंदस्स तं चरति ॥२०॥ बावट्ठिं२ दिवसं,दिवसेतु सुक्कपक्खस्स॥जंपरिवड्ढ चंदो, खवेति तचेव कालेण ॥२१॥

दुःख के फल की प्राप्त होती है ॥ १६ ॥ चद्र सूर्यादिक बाह्य मडल से ज्यों ज्यों आभ्यतर मडल में प्रवेश करते हैं त्यों त्यों तापक्षेत्र बढता है, और दिन मान भी बढता है, और वेही चद्र सूर्य आभ्यतर मडल से नीकलते हैं त्यों त्यों ताप क्षेत्र कम होता है और रात्रिमान बढता है ॥ १७ ॥ सूर्यादिकका तापक्षेत्र कदंबवृक्ष के पुष्पके आकारका है अर्थात् गाडीके आकारवाला अंदर मेरु पर्वत पास सकुचित और बाहिर लवण समुद्रकी पास विस्तारवत है ॥१८॥ अहो भगवन्! किस कारनसे शुक्लपक्ष में चद्रमा वृद्धि होता है, व किस कारन से कृष्ण पक्ष में चद्रमा हीन होता है, और किस कारन से एक पक्ष कृष्ण व एक पक्ष शुक्ल कहा है? ॥१९॥ अहो गौतम! कृष्ण, अजन रत्नमय राहुका विमान चद्र विमान नीचे चार अगुल की दूरी पर चद्रमा साथ विरह रहित चलता है ॥ २० ॥ चद्र विमान के ६२ भाग करे वैसे

छावट्ठी छावट्ठीयं होइ एक्केकिया पंती ॥ ११ ॥ छावत्तर गहाण पतिसयं होइ मणुयलोगमि ॥ छावट्ठी छावट्ठी होइ एक्केकिया पंती ॥ १२ ॥ तेमेरु मणुपरियट्टंति, पयाहिणावत्त मंडलासव्वे, अणवट्ठितेहिं तेहिं, जोगेहिं चदसूरा गहगणाय ॥ १३ ॥ णक्खत्त तारागाण, अवट्ठिता मंडलमुणेयव्वा, तेविय पयाहिणावत्त मेवमेरु अणुचरति ॥ १४ ॥ रयणियर दिणयराण उड्ढेय अहेय संकमोनात्थि॥मंडल संकमण पुण अब्भतर बाहिर तिरिय ॥ १५ ॥ रयणियरदिणयराण णक्खत्ताण महग्गहाणय चार विसेसेण भवेसुह दुक्खचेव

है प्रत्येक पंक्ति में ६६-६६ नक्षत्र हैं ॥ ११ ॥ मनुष्य लोक में ग्रह की १७६ पंक्ति हैं प्रत्येक पंक्ति में ६६-६६ ग्रह हैं ॥ १२ ॥ उपरोक्त सब मंडल मेरु पर्वत के चारों ओर प्रदक्षिणा करते हैं अर्थात् उन में स्वभाव से ही गति करते हैं यहां चन्द्र सूर्य ग्रह अनवस्थित हैं क्यों की यथायोग्य मे अन्य मंडल में गमन करते हैं ॥ १३ ॥ और नक्षत्र व तारामंडल अवस्थित हैं अर्थात् उन मंडल में परिभ्रमण नहीं करते हैं पर भी मेरु की आसपास प्रदक्षिणा करते हैं ॥ १४ ॥ चन्द्र व सूर्य के ऊपर अथवा नीचे संक्रमण भाव नहीं है परंतु अपने मंडल में ही गति है अर्थात् आभ्यन्तर व बाहिर के मंडल में तीरच्छा गमन है ॥ १५ ॥ चंद्र, सूर्य ग्रह व नक्षत्र मे चारों की राशि भिन्नी है तब यहां मनुष्य लोक में मनु

दीव, चत्तारिय सायरे लवणतोये ॥ धायइ सडे दीवे, बारस चदायँ सूराय ॥ २७ ॥
धायइसडप्पभिई, उद्दिठातिगुणिता भवे चदा॥ आदिल्ल चदसहिता, अणतराणतरे-
खत्ते ॥ २८ ॥ रिक्खग्गह तारग्ग, दीवसमुद्दजदिच्छसेणाऊ ॥ तस्स ससीहितुगुणित
रिक्खग्गह तारगागतु ॥२८॥ बहिरियाओ माणुसनगस्स,चदसूरावट्टिता ॥ जोगा चदा
अभितीजुत्ता॥सुरापुण होंति पूसेहिं।३०। चदातो सूरस्सय,सूरा चदस्स अतर होंति॥पण्णास

चार चद्र,चार सूर्य होते हैं और इस से तीनगुने घातकी खण्डमें बारह चंद्र बारह सूर्य हैं॥२६॥ घातकी खण्ड के आग के द्वीप समुद्र के चद्र सूर्य को तीनगुना करके पहिले के द्वीप समुद्र के चद्र, सूर्य मीलाना जितना आवे उतनी आगेकी सख्या जानना दृष्टान्त—घातकी खण्ड द्वीप में बारह चद्र व बारह सूर्य हैं इन के तीनगुने करने से ३६ होते हैं उस में प्रथम जम्बूद्वीप के दो व लवण समुद्र के चार यों ६ चद्र सूर्य मीलानेसे सब ४२ चद्र व ४२ सूर्य होते हैं इसी तरह आगे भी जानना ॥ २७ ॥ जिस द्वीप समुद्र में नक्षत्र ग्रह व तारा जानने की इच्छा होवे उस द्वीप समुद्र के चद्र सूर्य की साथ उन के परिवार से गुना करना जैसे लवण समुद्र में चार चद्र हैं प्रत्येक चद्र के २८ नक्षत्र हैं इस से २८×४=११२ लवण समुद्र में नक्षत्र हुवे ॥२८॥ अब मनुष्य क्षेत्र बाहिर चद्र सूर्य का अतर कहते हैं, मानुषोत्तर पर्वत से बाहिर चद्रमा व सूर्य अवस्थित हैं

पण्णरसतिभागेणय, चदपण्णरसमेव आवरति ॥ पण्णरसविभागेणय, तेणेव कमेण वक्कमाति ॥ २२ ॥ एव वड्ढति चदा,परिहाणि एव होति चदस्स॥ कालोवा जोण्होवा, तणणुभावेण चदस्स ॥ २३ ॥ अतो मणुस्स खेत्ते, हवति चारोवगाय उववण्णा, पचविहा जोतिसिया चदासूरागह णक्खता॥ २४ ॥ तेणपर जे सेसा, चदाइच्चगहतार णक्खत्ता ॥ णत्थिगतीण विचारो, अवट्ठिता तेमुणेयव्वा ॥ २५ ॥ एगे जवुद्दीवे, दुगुणा लवणे चउगुणा होति॥लवणगायतिगुणिया ससिसूरा धायई सडे॥२६॥दो चदा इह

चार २ भाग शुक्ल पक्ष में खुल्ला करता है और ऐसा ही चार भाग कृष्ण पक्ष में राहु अच्छादित करता है अमावास्या के दिन दो भाग खुल्ले रहते हैं ॥ २१ ॥ चद्र विमान के पन्नरह भाग करे उस में से एक २ भाग प्रतिदिन कृष्ण पक्ष में ढके यों अमावास्या तक सब भाग ढक जावे और शुक्ल पक्ष में एक २ भाग खुल्लाकर दस यों पूर्णिमा में सब मुक्त हो जावे ॥२२॥ इस तरह शुक्ल पक्षमें चद्रमा बढता है व कृष्ण पक्ष में हीन होता है और कृष्ण पक्ष व शुक्ल पक्ष इसी तरह होते हैं॥ २३ ॥ मनुष्य क्षेत्र में चद्र, सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा ये पांच प्रकार के ज्योतिषी चलनेवाले हैं ॥ २४ ॥ इस से आगे के द्वीप में चद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा अवस्थित हैं इन की गति नहीं है ॥ २५ ॥ अब द्वीप समुद्र गत चद्र सूर्यादिक की संकलना जानने का कारन कहते हैं जम्बूद्वीप में दो चद्र दो सूर्य, इस से दुगुने लवण समुद्र में होने से

से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति माणुसुत्तरे पव्वते ? माणुसुत्तरे पव्वते गोयमा ! माणुसुत्तरस्सणं पव्वयस्स अंतो मणुया उप्पिं सुवण्णा बाहिं देवा, अदुत्तरंचणं गोयमा! माणुसुत्तरं पव्वयं मणुया ण कयाइ वितिवइंसुवा वीतिवयंतिवा वीतिवयस्संतिवा, णण्णत्थ चारणेहिंवा विज्जाहरेहिंवा देव कम्मुणावावि, से तेणट्ठेणं गोयमा ! अदुत्तरं जाव णिच्चे ॥ २६ ॥ जावंचणं माणुसुत्तरेपव्वए तावंचणं अस्सिं लोएति पवुच्चति, जावंचणं वासेतिवा वासधरातिवा तावंचणं अस्सिं लोएति पवुच्चति, जावंचणं गेहाइवा गेहावणातिवा तावंचणं अस्सिं लोगेति पवुच्चइ, जावंचणं गामाइवा जाव रायहाणीइवा तावंचणं अस्सिं लोएति पवुच्चइ, जावंचणं

है वे दोनों वर्णन योग्य हैं ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! मानुषोत्तर पर्वत ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! मानुषोत्तर पर्वत से अंदर मनुष्य हैं, ऊपर सुवर्ण कुमार देव व बाहिर देव हैं और मानुषोत्तर पर्वत से बाहिर मनुष्य अपनी शक्ति से गये नहीं हैं, जा सकते नहीं हैं, और जायेंगे भी नहीं, यावत् जंघा चारण, विद्या चारण अथवा देव के हरनकरने से मनुष्य बाहिर जाते हैं अथवा यह नित्य है इसलिये मानुषोत्तर पर्वत नाम कहा है ॥ २६ ॥ जहांलग मानुषोत्तर पर्वत है वहांलग यह मनुष्य लोक है, जहांलग भरतादि क्षेत्र व महाहिमवतादि वर्षधर पर्वत हैं वहांलग यह मनुष्य क्षेत्र है, जहांलग घर दुकान

बाहिर परिरयेण, एगा जोयण कोडी बयालीसच सतसहस्साइ छत्तीस सहस्साइ सत चोद्दसोलतर जोयण सते परिक्खेवेण, मज्झे गिरि परिरयेण, एगाजोयण कोडी बयालीस च सयसहस्साइ चोत्तीसच सहस्सा अट्ठय तेविसा जोयणसते परिक्खेवेण उवरिं गिरिपरिरयेण, एगा जोयण कोडी बयालीसच सयसहस्साइ बत्तीसच सहस्साइ णवय बत्तीसे जोयण सते परिक्खवेण, मूलविच्छिण्णे, मज्झ संखित्ते, उप्पिं तणुये, अतो सण्हे मज्झे उदग्गे बाहिं दरिसणिज्जे इसिमण्णे सीहणिस्साइ अवध जाव रासिं सठाण साठए सव्व जबूणयामते अच्छे सण्हे जाव पडिरूवे ॥ उभयो परिस दोहिं पउमवरवदियाहिं दोहिं वणसडेहिं,सव्वतो समता सपरिक्खित्ते,वण्णओ दोण्हवि॥२५॥

नीचे की परिधि १४२३६७१४ योजन की है बाहिर की बीच की परिधि १४२३४८२३ योजन की है और ऊपर की परिधि १४२३२९३२ योजन की है मूल में विस्तीर्ण, मध्य में संक्षिप्त व ऊपर संकुचित है अन्दर श्लक्ष्ण है मध्य में ऊंचा व बाहिर देखने योग्य है जैसे सिंह भाग के दो पांव लम्बाकर व पीछे के दो पांव संकुचितकर बैठता है वैसा है अर्था यव जैसा संस्थान वाला है, सब जम्बूनद रत्नमय स्वच्छ, श्लक्ष्ण यावत् प्रतिरूप है दोनों बाजु दो पद्मवर वेदिका व दो वनखण्ड चारों ओर वर्तुलाकार

से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चति माणुसुत्तरे पव्वते ? माणुसुत्तरे पव्वते गोयमा ! माणुसुत्तरस्सण पव्वयस्स अतो मणुया उप्पि सुवण्णा वाहिं देवा, अदुत्तरचण गोयमा! माणुसुत्तर पव्वय मणुया ण कयाइ वितिवइंसुवा वीतिवयतिवा वीतिवयस्सतिवा, णण्णत्थ चारणेहिंवा विज्जाहरेहिंवा देव कम्मुणावावि, से तेणट्ठेण गोयमा ! अदुत्तर जाव णिच्च ॥ २६ ॥ जावचण माणुसुत्तरेपव्वए तावचण अस्सि लोएति पवुच्चति, जावचण वासेतिवा वासधरातिवा तावचण अस्सि लोएति पवुच्चति, जावचण गेहाइवा गेहावणातिवा तावचण अस्सि लोगेति पवुच्चइ, जावचण गामाइवा जाव रायहाणीइवा तावचण अस्सि लोएति पवुच्चइ, जावचण

है ये दोनों वर्णन योग्य हैं ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! मानुषोत्तर पर्वत ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! मानुषोत्तर पर्वत से अदर मनुष्य हैं, ऊपर सुवर्ण कुमार देव व बाहिर देव हैं और मानुषोत्तर पर्वत से बाहिर मनुष्य अपनी शक्ति से गये नहीं हैं, जा सकते नहीं हैं, और जायेंगे भी नहीं, मात्र जघा चारण, विद्या चारण अथवा देव के हरनकरने से मनुष्य बाहिर जाते हैं अथवा यह नित्य है इसलिये मानुषोत्तर पर्वत नाम कहा है ॥ २६ ॥ जहांलग मानुषोत्तर पर्वत है वहांलग यह मनुष्य लोक है, जहांलग भरतादि क्षेत्र व महाहिमवतादि वर्षधर पर्वत हैं वहांलग यह मनुष्य क्षेत्र है, जहांलग घर दुकान

अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा पडिवासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावगा साविगाओ मणुया पगति भद्दगाविणीता ताव चाण अस्सिलोएति पवुच्चति जाव चेण समयातिवा आवलयातिवा आणापाणइवा थोवाइवा लवातिवा मुहुत्तातिवा, दिवसातिवा, अहोरत्तातिवा पक्खातिवा मासातिवा उडूतिवा अयणातिवा संवच्छरातिवा जुगाइवा वासातिवा वाससयातिवा, वाससहस्सातिवा, वाससयसहस्सातिवा, पुव्वगातिवा, पुव्वाइवा, तुडियगातिवा, एवं पुव्वे तुडिए अडडे अववे हुहुए उप्पले पउमे णलिए अत्थणिउरे अयुते नओए पउए चूलिया जाव सीसपहेलियगातिवा सीसपहेलियातिवा, पलिओवमेतिवा

वगैरह हैं वहांतक मनुष्य क्षेत्र है जहांतक ग्राम यावत् राज्यधानी है वहांतक यह मनुष्य लोक है जहांतक अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, जंघा चारण, विद्या चारण, विद्याधर साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका व भद्रिक प्रकृति वाले मनुष्य हैं वहां तक यह मनुष्य क्षेत्र है जहांतक समय, आवलिका श्वासोच्छ्वास, स्तोक, लव, मुहूर्त, दिवस, अहोरात्रि, पक्ष मास, ऋतु, अयन, संवत्सर युग, वर्ष, सो वर्ष, सहस्र वर्ष, लाख वर्ष, पूर्वांग, पूर्व, त्रुटितांग, त्रुटित ऐसे ही अडड, अवव, हूहूय, उत्पल पद्म, नलिन, अत्थिनिपुर, अयुत, नयुत, प्रयुत, चूलिका यावत् शीर्षप्रहेलिका, पल्योपम, सागरोपम,

सागरोवमेतिवा अवसप्पिणीतिवा उसप्पिणीतिवा, तावचण अस्सिलोएति पवुच्चति, जाव चण बादरे विज्जुकारे बायर थणियसद्द ताव चण अस्सि लोगेतिवुच्चति जाव चण बहवे उराले बलाहका संसेयति समुच्छति वासं वासति ताव चण अस्सिलोए, जाव चण बायरे तेउकाए ताव चण अस्सिलोए, जावचण आगरातिवा नदीओतिवा णिधीतिवा ताव चण अस्सिलोएति पवुच्चति, जाव चण अगडातिवा णदीतिवा ताव चण अस्सिलोए, जाव चण चंदोवरागाइतिवा, सूरोवरागाइतिवा चंदपरिएसातिवा, सूरपरिएसातिवा, पडिचंदातिवा, पडिसूरातिवा इंद धणूइवा उदगमच्छेइवा कप्पिहसिताणिवा ताव चणं अस्सिलोएति पवुच्चइ; जाव चण चंदस सूरिय गहगण णक्खत्ततारारूवेण

उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी हैं वहां लग मनुष्य लोक है जहां लग बादर विद्युत व बादर स्थनित शब्द है वहां लग यह लोक कहा है जहां लग बादर मेघ उत्पन्न होवे व मध्य होवे वहां लग यह मनुष्य लोक है जहां लग बादर तेउकाया है वहां लग यह मनुष्य लोक है, जहां लग आगर व निधि हैं वहां लग यह मनुष्य लोक है, जहां लग अगड नदी वगैरह हैं वहां लग यह मनुष्य लोक है जहां लग चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, चंद्र की चारों ओर कुण्डल, सूर्य की चारों ओर कुण्डल, प्रतिचंद्र, प्रतिसूर्य, इन्द्रधनुष्य, उदक मत्स्य, व कपि हसित हैं वहां लग यह मनुष्य लोक है जहां लग चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा का गमनागमन,

अभिगमण निगमण वुड्डि निवुड्डि अणवट्ठित संठाण संठिती आघेज्जति तावचण अरिसलोएति पवुचति ॥ २७ ॥ अतोण भंते ! मणुस्स खेत्तस्स जे चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्त तारा रूवाण तेण भंते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णा चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेण देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा नो चारठीतीया गतिसमावण्णगा, उड्ढमुह कलंबुया पुप्फसंठाण संठितेहिं, जोयण साहस्सितेहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिताहिं बाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं

वृद्धि, हानि, अनवस्थितपना, संस्थान की संस्थिति वगैरह हैं वहां लग यह मनुष्य क्षेत्र कहा है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में जो चंद्र सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा हैं वे क्या ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं, कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं, चार स्थितिवाले हैं, गति में रक्त हैं या गति समापन्न हैं? अहो गौतम ! व देव ऊर्ध्व गति के उत्पन्न नहीं हैं, कल्पोत्पन्न नहीं हैं मीरच्छे लोक में अपने स्थानिवी के विमान में उत्पन्न होवे हैं, चारोत्पन्न अर्थात् चलनेवाले हैं, स्थिरचारी नहीं हैं, गति में रक्त हैं, गति समापन्न हैं, ऊर्ध्व मुखवाले कदंब-पुष्प के संस्थानवाले हैं अनेक हजार योजन ताप क्षेत्र व बाहिर की

महता महता णट्टगीय वाइय ताति तलताल तुडिय घणमुइंग पडुप्पवाइतरवेण महया उक्किट्ठ सीहनायबोलकलयल सद्देण, विपुलाइ भोगभोगाइ भुंजमाणा अत्थ पव्वयराय पव्वइद पदाहिणावत्त मंडलायरमेरु अणुपरियट्टति ॥ २८ ॥ जयाण भंते ! तेसिं देवाण इंदे चयति से कहमिदाणी पकरेंति ? गोयमा ! चत्तारि पंचसामाणिया तओट्ठाण उवसंपज्जित्ताण विहरंति, जाव तत्थ अण्णे इंदे उववण्णे भवति ॥ २९ ॥ इंदट्ठाणेणं भंते ! केवतिय कालविरहते उववातण पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासा ॥ ३० ॥ बाहिरियाण भंते ! मणुस्स-

निकुंबत परिषदा सहित बडे २ नृत्य, गीत, वादित्र, तंत, ताल, तन्तल, त्रुटित, घन, शुसिर, व पटह के शब्द से बडे२ सिंहनाद जैसा कोलाहल करते हुवे विपुल भोगोपभोग भोगवते हुवे, स्वच्छ निर्मल मेरुपर्वतराज को प्रदक्षिणा करते हुवे मेरु की पर्यटणा करते रहते हैं॥२८॥ अहो भगवन्! जब उनका इन्द्र चवता है, तब वे इन्द्र बिना कैसे करते हैं? अहो गौतम! जहां लग अन्य इन्द्र उत्पन्न होवे नहीं वहां लग, वहां के चार पांच सामानिक देव इन्द्र का स्थान अंगीकार कर रहते हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन्! इन्द्र उत्पन्न होने का स्थान कितना काल तक विरहित रहता है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास विरहित रहता है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र के बाहिर के जो चंद्र सूर्य

अभिगमण निगमण वुड्ढि निवुड्ढि अणवट्ठित संठाण संठिता आयवज्झात तावचण अस्सिलोएति पवुचति ॥ २७ ॥ अतोण भंते ! मणुस्स खेत्तस्स जे चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्त तारा रूवाण तेण भंते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णा चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेण देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा नो चारठीतीया गोतिसमावण्णगा, उड्ढमुह कलंबुया पुप्फसंठाण संठितेहिं, जोयण साहस्सितेहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिताहिं बाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं

वृद्धि, हानि, अनवस्थितपना, संस्थान की संस्थिति वगैरह हैं यहां तक यह मनुष्य क्षेत्र कहा है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में जो चंद्र सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा हैं वे क्या ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं, कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं, चार स्थितिवाले हैं, गति में रक्त हैं या गति समापन्न हैं ! अहो गौतम ! वे देव ऊर्ध्व गति के उत्पन्न नहीं हैं, कल्पोत्पन्न नहीं हैं नीचे लोक में अपने स्थानियों के विमान में उत्पन्न होते हैं, चारोत्पन्न अर्थात् चलनेवाले हैं, स्थिरचारी नहीं हैं, गति में रक्त हैं, गति समापन्न हैं, ऊर्ध्व मुखवाले कदंब पुष्प के संस्थानवाले हैं अनेक हजार योजन ताप क्षेत्र व बाहिर की

अण्णाण समोवगाढाहिं लेस्साहिं, ते पदेसे सव्वतो समता ओभास उज्जोवेति, तवेति पभासेति ॥ ३१ ॥ जहेण भंते ! तेसिणं देवाण इंदे चयाति से कहमिदाणि पकरेति ? गोयमा ! जाव चत्तारि पंच सामाणिया तठाण उवसपज्जित्ताण विहरति जाव तत्थ अण्णेइदे उववण्णे भवति ॥ इंदट्ठाणेण भंते ! केवतिय काल विरहिए उववाएण ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासा॥३२॥ पुक्खरवरेण दीव पुक्खरोदे णाम समुद्दे वट्टे वलयागार सठाणे जाव सपरिक्खित्ताण चिट्ठति ॥ पुक्खरोदेण भंते ! समुद्दे केवतिय चक्कवाल विक्खभेण केवतिय परिक्खे-

लेश्या से स्थिर वैसे स्थित बने हुवे वे चंद्र सूर्य उन प्रदेशों को प्रकाशित करते हैं, उद्योत करते हैं, तपते हैं, प्रकाश करते हैं व प्रकर्ष से प्रकाश करते हैं ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! जब इन का इन्द्र चवता है तब इन्द्र विना वे क्या करते हैं ! अहो गौतम ! यावत् जहां लग इन्द्र होवे नहीं वहांलग चार पांच सामानिक उस स्थान को अंगीकारकर विचरते हैं अहो भगवन् ! इन्द्र स्थान का कितना विरह कहा है? अहो गौतम! जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास का विरह होता है ॥ ३२ ॥ पुष्करवरद्वीप की चारों ओर पुष्करवसे दीप समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है अहो भगवन् ! पुष्करोदधि समुद्र कितना चक्रवाल विष्कंभपने है, व कितनी परिधि है ! अहो गौतम ! संख्यात लाख योजन की चक्रवाल चौडाइ है और

खेत्तरस जे चंदिस सूरिय गहगण नक्खत्त तारारूवाण तेण भंते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेण देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा,नो चारोववण्णगा चाराठितीया,नो गतिरतिया नो गतिसमावण्णगा,पकिट्ठग सठाण संठितेहिं जोयण सयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सय साहस्साहिय बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं-महया २ णट्टगीय वाइतरवेण दिव्वाइ भोग भोगाइ भुंजमाणा विहरंति, जाव सुभलेस्सा, सीयलेस्सा मंदलेस्सा मंदयवलेस्सा चित्ततरलेस्सा कूडाइव ठाणठिता

ग्रह, नक्षत्र तारा रूप ज्योतिषी देव हैं वे ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं, कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं, चारस्थित हैं, गति में रक्त है या गति समापन्न हैं क्या ? अहो गौतम ! वे देव ऊर्ध्व उत्पन्न व कल्पोत्पन्न नहीं हैं परंतु अपने २ विमान में उत्पन्न होते हैं चलने वाले नहीं हैं परंतु स्थिर हैं, गति में रक्त व गति समापन्न नहीं हैं पकी हुई ईंट के संस्थान वाले हैं अनेक लाख योजन पर्यंत ताप क्षेत्र और लाखों गम बाहिर की विकुर्वित परिषदा सहित बडे २ नृत्य, गीत वादित्र के शब्द से दीव्य भोगोपभोग भोगते हुवे विचरते हैं यावत् शुभ लेश्या, शीतलेश्या, मंदलेश्यावंत हैं चित्रांतर लेश्यावंत व परस्पर अवगाहित

॥२४॥वरुण वर, दीव वरुणोदे णाम समुद्दे वट्टे वलयागारे जाव चिट्ठति समचक्कवाल विसंठिति तहेव सव्व भाणियव्वं, विक्खंभ परिक्खेवो संखेज्जाइं जोयण दारतरंच पउमवर वणसंडे पएसा जीवा• अट्ठे• ॥ से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चति वरुणोदे समुद्दे ? गोयमा ! वरुणदस्सणं समुद्दस्स उदये से जहा नामए चंदप्पभाइवा मणिसिलागाइवा वरसिंधु वरवारुणीइवा पत्तासवेइवा पुप्फासवेइवा चोयासवेइवा फलासवेइवा महुमेरएइवा जातिप्पसन्नाइवा खज्जूरसारेइवा मुद्दियासारेइवा कापिसाइणेइवा सुपक्कए खोयरसेइवा पभूतसंभारसंचिता पोसमास सतभिसय जोग ठविचा निरुवहत विसिट्ठ दिण्ण कालोवयारी सुधोता उक्कोसगमट्ठ

द्वीपके चारो ओर वारुणोदधिसमुद्र वर्तुल वलयाकार यावत् रहा हुवा है यह सम चक्रवाल संस्थानवाला है चौडाइ व परिधि संख्यात योजन की कहना द्वारांतर भी ऐसे ही कहना पद्मवर वेदिका, वनखण्ड, प्रदेश जीवोत्पत्ति वगैरह पूर्ववत् जानना, अहो भगवन्! वारुणोदधि नाम क्यों कहा है? अहो गौतम! वारु णोदधि का पानी जैसे चन्द्र प्रभा मदिरा, मणसिला का मदिरा, प्रधान सिंधु, उत्तम वारुणी (मद्य विशेष) पत्रका आसव, पुष्पका आसव, चूया वनस्पतिका आसव, फलका आसव, मधुमेरक, जातवंत रसका मदिरा, खजूर सार द्राक्ष सार, कापिशायन, अच्छी तरह पकाया हुवा सेंदी का रस समान मद्य, बहुत समार से बना हुवा, पोष मास में बनाने के योग्य सहित निरुपहत, बहुत उपचार से बनाए हुए सूरा, सुधा अमृत

परिक्खेवेणं पण्णत्ते, पउमवरवेइया वणसंडवण्णओ दारंतरंमे पदेसा जीवा तहेव सव्व सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ वारुणवरदीवे २ ? गोयमा ! वारुणवरेणं दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे खुड्डा खुड्डियाओ जाव बिलपंतियाओ अच्छाओ पत्तेयं २ पउमवरवेइया वणसंड परिक्खित्ता वारुणोदग पडिहत्थाओ पासादीयाओ ४, तासुणं खुड्डा खुड्डियासु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पाय पव्वया जाव खडहडगा सव्वफलिहामया अच्छा तहेव वरुणवरुणप्पभा ॥ एत्थ दो देवा महिड्डिया जाव परिव सति. से तेणट्ठेणं जावणिच्च, जोतिस सव्वं सखेजगुणं जाव तारागण कोड कोडीओ,

पद्मवर वेदिका, वनखण्ड है द्वार के अंतर प्रदेश जीवोत्पत्ति वगैरह सब पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! किसलिये वारुणवर नाम रखा ? अहो गौतम ! वरुणवर द्वीप में स्थान २ पर छोटी बडी वावडियों यावत् बिल पंक्तियों हैं वे स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं प्रत्येक को एक २ पद्मवर वेदिका वनखण्ड वेष्टित है वारुणोदक (मदिरा समान पानी) कर परिपूर्ण प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं उन छोटी बडी वावडियों यावत् बिल पंक्तियों में बहुत उत्पात पर्वत यावत् खडहडग हैं सब स्फटिक रत्नमय स्वच्छ व प्रणमभावाले हैं यहां वरुण व वरुणप्रभा नामक दो महर्द्धिक देव रहते हैं इस लिये इस का वरुणवर नाम कहा है अथवा यह शाश्वत नित्य है. ज्योतिषी सब संख्यातगुने जानना यावत् कोडाकोड ताराओं कहना ॥ १४ ॥ वारुणवर

वण्णेण उववेता गंधेणं उववेया रसेणं उववेया फासेणं उववेया भवेयारूवे सिया ?
णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! वारुणोदस्सण समुद्दस्स उदए इत्तो इट्ठतराए चेव जाव
अस्साएण पण्णत्ते, वारुणा वारुणिकता इत्थे दो देवा महड्डिया जाव परिवसति, से तेणट्ठेण
जाव णिच्चे, सव्व जोतिस संखेज्जकेण णातव्व ॥ ३५ ॥ वारुणोण्णएण समुद्द
खीरवरेणामदीवे वट्टे ज व चिट्ठति, सव्व सखेज्जग विक्खभे परिक्खेवेय जाव आट्ठा बहुओ
खुड्डा खुड्डिओ वावीओ जाव सरसर पंतियाओ खीरोदग पडिहत्थाओ पासादियाओ॥तासुण

कंदर्प बढाने वाली, सब इन्द्रिय गात्र को प्रल्हाद करने वाली, पुष्टकारी, मनोहर शुभवर्ण गंध रस व
स्पर्श युक्त सुरा होवे वैसा क्या पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस का पानी
इस से भी अत्यंत मनोहर यावत् स्वाद वाला है और भी यहां पर वारुणी व वारुणीकांत ऐसे दो देव
महर्द्धिक यावत् रहते हैं अहो गौतम ! इसलिये वारुणोदधि नाम रखा यावत् इस का नाम
नित्य शाश्वत है चन्द्रादिक ज्योतिषी सब संख्यात गुने अधिक जानना ॥ ३५ ॥ वरुणोदधि के चारों
ओर क्षीरोदक नामक द्वीप कहा है वह वर्तुलाकार समचतुस्र संस्थान वाला है संख्यात योजन का
चक्रवाल चौडा है व संख्यात योजन की परिधिवाला है यावत् अर्थ कहना वहां बहुत छोटी बडी

पिट्ठपुट्ठा मुसाइतवरकिमदिण्ण कद्दमाकोमपला अच्छा वरवारुणी अतिरसा जम्बूफलपिट्ठ वण्णा सुजाता इसी उट्ठा वलविणी अहिय महुर २ पेज्जइसीसरच्छ णेत्ता कोमल कवोल करणी जाव आसादिता विसीता अणिहुय सल्लाव करण हरिसपीति जणणी सतोस तिच्चो कहाव विभमविलास वेल्ल हल गमल करणी त्रिवण अहियसत्त जणणीय होति संगामदेसकाले कायर नरसमरथसरकरणी कहिणाण विउज्जुयति हियया ग मउयकरणीहोति उववेसितासमाणीगति खलावितेग्ग सथलेंमि विसभावुप्फालिया सरभग्ग मेप सहगारसुरभिरस दिवीया सुगधा आसायणिज्जा विसायणिज्जा, उप्पणेज्जा पीणाणिज्जा मयणिज्जा दप्पणिज्जा सव्विंदियगाय पल्हायाणिज्जा, आसला मासला पेसला

समान उत्कृष्ट से अष्ट प्रकार के पिष्ट से बनाई हुई, घृत से बनाइ हुइ कर्दम समान एलायची प्रमुख वस्तु से बनाई हुई कादी प्रभकारी निर्मल प्रधानवत् वारुणी मदी रस युक्त जाम्बू फल के पृष्ट भाग समान वर्णवाली, ओष्ट के अवलम्बन करनेवाली अर्थात्—छीप्रमेव नशा चढ ऐसी, अधिक मधुर पीने योग्य, किंचित् लाल चक्षु बनावे, कपोल स्वच्छ कोमल करनेवाली, हित करनेवाली, अनुपम कार्य रने वाली, हर्ष उत्पन्न करनेवाली, सताप, विभ्रम, विलास, करनेवाली, वल्लभ मन करनेवाली, विशेष अधिक सत्व उत्पन्न करनेवाली, रण संग्राम सूरत्व युक्त, हृदय कोमल बनानेवाली, उपचरित बनाई हुई सहकारके सुगंधित व आस्वादनीय, विशेष स्वाद योग्य, शरीर का वृद्धि करने वाली, पुष्टि करने वाली, कंदर्प बढाने वाली,

वण्णेण उववेता गंधेणं उववेया रसेणं उववेया फासेणं उववेया भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! वारुणोदस्सणं समुद्दस्स उदए इत्तो इट्ठतराए चेव जाव अस्साएणं पण्णत्ते, वारुणि वारुणिकंता इत्थ दो देवा महिड्डिया जाव परिवसंति, से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे, सव्वं जोतिसं संखेज्जकेणं णातव्वं ॥ ३५ ॥ वारुणोदण्णं समुद्दं खीरवरेणामदीवे वट्टे जाव चिट्ठति, सव्वं संखेज्जगं विक्खंभे परिक्खेवोय जाव अट्ठो बहुओ खुड्डा खुड्डियाओ वावीओ जाव सरसर पंतियाओ खीरोदग पडिहत्थाओ पासादियाओ॥तासुणं

कंदर्प बढाने वाली, सब इन्द्रिय गात्र को प्रल्हाद करने वाली, पुष्टकारी, मनोहर शुभवर्ण गंध रस व स्पर्श युक्त सुरा होवे वैसा क्या पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस का पानी इस से भी अत्यंत मनोहर यावत् स्वाद वाला है और भी यहां पर वारुणी व वारुणीकांत ऐसे दो देव महर्द्धिक यावत् रहते हैं अहो गौतम ! इसलिये वारुणोदधि नाम रखा यावत् इस का नाम नित्य शाश्वत है चंद्रादिक ज्योतिषी सब संख्यात गुने अधिक जानना ॥ ३५ ॥ वरुणोदधि के चारों ओर क्षीरोदक नामक द्वीप कहा है वह वर्तुलाकार समचतुस्र संस्थान वाला है संख्यात योजन का चक्रवाल चौडा है व संख्यात योजन की परिधिवाला है यावत् अर्थ कहना यहां बहुत छोटी बडी

पिट्ठपुट्ठा सुखाइतवरकिमदिण्ण कद्दमाकोमपन्ना अच्छा वरवारुणी अतिरसा जम्बूफलपिट्ठ वण्णा सुजाता इसी उट्ठा वलंविणी अहिय महुर २ पेज्जइसीसरच्च पेसा कोमल कवोल करणी जाव आसादिता विसीता अणिहुय सल्लाव करण हरिसपीति जणणी सतोस विव्वो कहाव विमभविलाप वेल्ल इल गमल करणी त्रिवण अहियसत्त जणणीय होति संगामदेसकाले कायर नरसमरपसरकरणी कढिणाण विउजुयाति हियया ग मउयकरणीहोति उववेसिताममाणीगति खलाघितेग्ग सयलैमि विसभावुप्फालिया सरभग पेय महगारसुरामिरस दिवीया सुगधा आसायणिज्जा विसायणिज्जा, उप्पणेज्जा पीणणिज्जा मयणिज्जा दप्पणिज्जा सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जा, आसला मासला पेसला

समान उत्कर्ष से अष्ट प्रकार के पिष्ट से बनाई हुई, मूल से बनाई हुई कर्दम समान पञ्चापची प्रमुख वस्तु से बनाई हुई कार्यों चमत्कारी निर्मल प्रभानवत् वारुणी अती रस युक्त जाम्बू फल के पृष्ट भाग समान वर्णवाली, ओष्ट के अवलम्बन करनेवाली अर्थात्—शीघ्रमेव नशा चढे ऐसी, अधिक मधुर पीने योग्य, किंचित् लाल चक्षु बनावे, कपाल स्थल कोमल करनेवाली, हित करनेवाली, अनुपम कार्य रने वाली, हर्ष उत्पन्न करनेवाली, उल्लाप, विभ्रम, विलास, करनेवाली, वल्लभ मन करनेवाली, विशेष अधिक सत्व उत्पन्न करनेवाली, रण संग्राम शूरत्व युक्त, हृदय कोमल बनानेवाली, उपकल्पित बनाई हुई सत्कार के सुगंधित व आस्वादनीय, विशेष स्वाद योग्य, शरीर का वृद्धि करने वाली, पुष्टि करने वाली, कंदर्प बढाने वाली,

सु उसही मारु पल्लु अज्जुन तरुण सरपत्ते कोमल अच्छीयतण पण्डग वरिच्छु वारिणीण लवगपत्त पुप्फ पल्लव, ककोलग सफलरुक्खा बहुसुगुच्छगुम्म कलितो एललट्ठी महुरपऊर पिप्पली फलीतवल्ली वर त्रिविर वारणीण अप्पोदगवीतसद्दर सममूभिभागानिज्झाए सुहेसिताण सुपोसति सुधाताण रोग परिवज्जिताण निरुवहतसरीराण कालप्पभवाण त्रितीयतचीय समपसूताण अजण वरगवेलय वलय जलधरत जच्च जण रिट्ठ भमर परहुत समप्पभाण गावीण कुडदोह-

पोंडग वनस्पति, श्रेय वारुणी, लवग वृक्ष के पत्र, पुष्प, फल, व कुपलवाले अंकुर, ककोल नामक फल वृक्ष, गुच्छ, गुल्म सहित इलायची की लकडी का रस, जेठीमध मधुरपीपरफल की वेल का रस और प्रधान वारुणि सुरा विशेष जैसा स्वाद योग्य होवे, और श्रेष्ठ भूमि में विचरनेवाली, अल्प उदक वाला कर्दम रहित श्रेष्ठ भूमि भाग में निर्भय से बैठने वाली, रोग रहित, निर्भय स्थान में रहने वाली, उपद्रव रहित, अखंड शरीरवत क्रीडा से सुख पूर्वक प्रसववाली, दो तीन वार प्रसूत हुई ऐसी, वर्ण में अंजन समान, महिष शृंग समान, जम्बू, अरिष्ट व भ्रमर समान काली गाय होवे और जिस का दुग्ध रहने का स्थान घडा कुडा समान होवे, उसका दुग्ध चार स्थानक से परिणमा हुवा होवे, ऐसी श्याम वर्णवाली गाय का दुग्ध

खुड्डीयाखुड्डीसु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पाए पव्वयगा सव्वरयणमया जाव पडिरूवा॥ पुंडरीय पुप्फदंता इत्थं दोदेवामहिड्डियाजाव परिवसति से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे जाव जोतिस सव्व संखेज्ज ॥ ३६ ॥ खीरवरेणं दीवं खीरोदणाम समुद्दे वट्टे वलियागार संठाण संठिए जाव परिक्खित्तार्णं चिट्ठति समचक्कवाल संठिते नो विसमचक्कवाल संठिते, संखेज्जाइं जोयणाइं सहस्साइं विक्खंभो परिक्खेवो तहेव सव्वं जाव अट्ठो, गोयमा ! खीरोयस्सणं समुद्दस्सउदग से जहा नामते

बावडीयों यावत् सरसर पंक्तियों में दुग्ध जैसा पानी भरा हुवा है उन बावडीयों में बहुत उत्पात पर्वत हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं यहां पुंडरीक व पुष्पदंत नामक महर्धिक दो देव रहते हैं इसलिये नित्य कहा है चंद्रादिक ज्योतिषी देव संख्याते कहे हैं ॥ ३६ ॥ क्षीरवर द्वीप के चारों ओर क्षीरोदधि नामक समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है सम चक्रवाल संस्थान वाला है परन्तु विषम चक्रवाल संस्थान वाला नहीं है संख्यात योजन का चक्रवाल चौडा व संख्यात योजन की परिधिवाला है वैसे ही सब कहना यावत् अहो भगवन् ! क्षीरोद ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! जैसे अर्जुन नाम वहन रस सहित, कोमल पत्र सहित, और अखंड तृणाग्र वाली औषधि का रस, हरितु देश विशेष,

खीरोद समुद्द घतवरे णाम दीवे वट्ट वलयाकार संठाण संठिए जाव परिक्खि- विसाण चिट्ठइ समचक्कवाल णो विसमचक्कवाले संखेज्ज विक्खंभ परिधि पदेसा जाव अट्ठो गोयमा ! घतवरेणाम दीव तत्थ २ देस २ नहिं बहवे खुड्डाखुड्डिया वावीओ जाव घतोदग पडहत्थाओ उप्पाय पव्वगा जाव खडखडगा सव्वकंच णमया अच्छा जाव पडिरूवा कणग कणगप्पभा इत्थ दो देवा महिड्डिया चंदा संखेज्जा ॥३८॥ घतवरेण दीव घतोदेणाम समुद्दे वट्टे वलयागार संठाण संठिते जाव चिट्ठति, समचक्कवाल संठाण संठिते तहेव दारा पदेसा जीवाय अट्ठो गोयमा! घयोदय-

समचक्रवाल है परन्तु विषम चक्रवाल नहीं है संख्यात योजन की चक्रवाल चौड़ाइ है और संख्यात योजन की परिधि है यावत् अर्थ कहा है घृतवर द्वीप में बहुत छोटी बडी बावडीयो में पानी घृत जैसा भरा हुवा है उन पर उत्पात पर्वत यावत् खडक रहे हुवे हैं वे सब कांचनमय यावत् प्रति रूप हैं यहां कनक व कनकप्रभा नामक दो महर्द्धिक देव रहते हैं, इस लिये घृतवर द्वीप नाम कहा है, चंद्रमादिक ज्योतिषी सब असंख्यात हैं ॥ ३८ ॥ घृतवर द्वीप के चारों ओर वर्तुल वलयाकार संस्थान वाला घृतोद समुद्र रहा है यह समचक्रवाल संस्थानवाला है वैसे ही द्वार प्रदेश, और जीव का जानना इस

खाण वद्धत्थी पच्छुत्ताण रूढाण मधुमासकाले सगाहिते होज्ज चाउरक्केत्तहोज्ज-तासि, खीर मधुरस विविगच्छ बहुदव्व सपयुते, पयत्त मंदग्गीसु कढिती आउत्तरखंद गुड मच्छंडितो वाउतेरसो चाउरत चाउरंतचक्कवट्टिस्स उवट्ठाविए आसादणिज्जे विसायणिज्जे पीणणिज्जे जाव सव्विंदियगातपल्हायणिज्जे जाव वण्णेण उववेए जाव फासेण भवेयारूवेसिया ? णोतिणट्ठे समट्ठे, खीरोदस्सण से उदगे एत्तो इट्ठतराएचेव जाव आसाएणं पण्णत्ते, विमल विमलप्पभाए इत्थदोदेवा महिड्डिया जाव परिवसति, से तेणट्ठेणं संखेज्जा चंदा जाव तारा ॥ ३७ ॥

मधुर रस सहित होवे उसे मंदाग्नि से पकाकर उसमें शक्कर, गुड, मिश्री डालकर चातुरंत चक्रवर्ती के लिये खाने योग्य खीर बनावे वह स्वाद योग्य, शरीर में पुष्टि करनेवाली यावत् सब गात्र को आनंदकारी होवे, सुवर्ण गंध यावत् स्पर्श युक्त होवे अहो भगवन् खीर समुद्र का पानी क्या ऐसा है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है क्षीरोद समुद्र का पानी इस से भी अत्यंत यावत् आस्वाद योग्य है यहां विमल और विमल प्रभ नामक दो महर्द्धिक देव यावत् रहते हैं इस कारन से क्षीरोद समुद्र ऐसा नाम कहा है इस में संख्यात ज्योतिषी हैं ॥ ३७ ॥ क्षीरोद समुद्र के चारों ओर घृतवर द्वीप वर्तुल वलयाकार है यह

घतोदेण समुद्द खोदवरेणाम दीवे वट्ट वलयागारे जाव चिट्ठति, तहेव जाव अट्ठो ॥ खोदवरेण दीव तथ २ दसे २ तहिं २ खुड्डा खुड्डीओ जाव खोदोदग पडहत्थाओ उप्पात पव्वतगा सव्ववेरुलियामया जाव पडिरूवा, सुप्पभा महाप्पभा इत्थदोदेवा महिड्डिया जाव परिवसति, सेतेणट्ठेण सव्व जोइस तहेव जाव तारा ॥ ४० ॥ खोदवरण दीव खोदोदेणाम समुद्दे वट्टेवलयागार जाव सखेज्जाइ जोयणसत परिक्खेवण जाव अट्ठो ॥ गोयमा ! खोउदस्सण समुदस्स उदये जहासे आसल मासल पसत्ये वीसत निद्ध सुकुमाल भूमिभागेसु छिन्नेसु कट्ठलट्ठ विसट्ठ निरुवहय

॥ ३९ ॥ घृतोद समुद्र के चारों ओर इक्षुरस नामक द्वीप वर्तुल वलयाकार कहा है यावत् अर्थ पर्यंत कहना अहो भगवन् ! इक्षुवर द्वीप नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! इक्षुवर द्वीप में स्थान २ पर छोटी बडी बावडियों यावत् इक्षुरस समान पानी भरा है, वहां उत्पात पर्वत हैं वे वैडूर्य रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं वहां सुप्रभ व महाप्रभ नामक दो महर्द्धिक देव रहते हैं इस से इक्षुवर द्वीप कहा है सब ज्योतिषी चन्द्रादिक संख्यात हैं ॥ ४० ॥ इक्षुवर द्वीप के चारों ओर इक्षुवर समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है, यावत् संख्यात योजन की परिधि है यावत् अहो भगवन् ! उस का इक्षुवर नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! मनोहर प्रशस्त, विश्रांत, स्निग्ध सुकुमाल भूमि भाग जहां होवे, वैसा देश में इक्ष स

रसण समुद्दस्स उदये जहा से जवगगफुल्लसल्लइ विमुकुल कणियार सरसवसुविसुद्ध कोरटदाम पिंडितरस्साभिद्द गुण तेय दीविय निरुमहत विसिट्ठ सुंदरतरस्ससुजाय दधिमथित तद्दिवस सगाहित णवणीय पदुघणाविय सुकढितउद्दावसज्जवीसादितस्स, अहिय पीवर सुरभिगध मणहर मधुर परिणाम दरसणिज्ज पच्छाणिमल्लसुहोव भोगस्स सरयकालम्मिहोज्ज गोघयवरस्समढ भवेतारूवेसिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे गोयमा ! घतोदयस्सण समुद्दस्स एतो इट्ठतरे जाव अस्साएणं पण्णत्ते कते सुकताय इत्य दो देवा महिड्डिया जाव परिवसंति सेस तहेव जाव तारागण कोडि कोडीओ ॥ ३१ ॥

का भय की पृच्छा करते हैं अहो भगवन् ! घृतवर समुद्र ऐसा नाम क्यों कहा ! अहो गौतम ! उसका पानी विकसित कणयर के पुष्प व कोरंट वृक्ष के पुष्पमाला समान श्वेत पिण्डवाला, स्निग्धपना का गुण सहित, ददीप्यमान, निरुपम, सुंदर ऐसा दधि का मन्थन करके मक्खन नीकाले, फीर उस तपाकर घृत बनावे, जो बहुत सुगंध युक्त, देखने योग्य, प्रशस्त, निर्मल, सुख से भोगने योग्य शरत्काल में गोघृतवत् होवे तब गौतम स्वामी पृच्छा करते है कि क्या घृतवर समुद्र का ऐसा पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है उस से भी अधिकतर आस्वादने योग्य है और भी वहां कांत सुकांत नामक दो देव रहते हैं अब सब वैसे ही जानना चंद्रादि ज्योतिषी संख्यात हैं यावत् संख्यात कोडाकोड ताराओं हैं

किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते, मूले विच्छिन्ना मज्झेसंखित्ता उप्पि तणुया, गोपुच्छ साठण, साठिया सव्व अजणमया अच्छा जाव पडिरूवा पत्तेय २ पउमवर वेइया परिक्खित्ता, पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता वण्णओ, तेसिणं अजण पव्वयाण उवरि पत्तेय २ बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा पण्णत्ता से जहा नामए आलिंग पुक्खरेतिवा जाव सयति॥ तेसिणं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ सिद्धायतणा, एगमेक्क जोयणसय आयामेण पण्णास जोयणाइं विक्खंभेण, बावत्तरि जोयणाति उड्ढ उच्चत्तेण, अणेगखंभ सयसंनिविट्ठाण वण्णओ, गोयमा !

वेदिका और वनखंड हैं वे दोनों वर्णन योग्य हैं उन अजनगिरी पर्वतपर बहुत समरमणिक भूमिभाग है जैसे आलिंग पुष्कर वगैरह यावत् वहां बैठते हैं उस बहुत रमणीय भूमिभाग के मध्य में पृथक सिद्धायतन कहे हैं वे एक सो २ योजन के लम्बे, पचास २ योजन के चौडे, बहत्तर योजन ऊंचे हैं सेकडों स्थंभ सहित हैं, उन का वर्णन जानना अहो गौतम ! उन सिद्धायतन के चार द्वार चार दिशी में कहे हुवे हैं जिन के नाम देवद्वार २ असुरद्वार ३ नागद्वार और ४ सुवर्ण द्वार उनपर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले चार देव रहते हैं जिन के नाम-देव, असुर, नाग और सुवर्ण वे द्वार सोलह

चत्तारि अजण पव्वया पण्णत्ता, तेण अजणग पव्वयगा चउरासिति जोयण सहस्साइ उड्ढ उच्चत्तेण एगमेग जोयण सहस्स उव्वेहेण मूले दस जोयण सहस्साइ, किंचिविसेसाहिए आयाम विक्खभेण, धरणियले दस जोयण सहस्साइ आयामविक्खभेण तताणतरचण माताए २ पदेस परिहायेमाणा २, उवरिं एगमेग जोयण सहस्स आयाम विक्खभेण, मूले एकतीस जोयण सहस्साइ छच्चतेवीस जोयणसते किंचिविससाहिए परिक्खेवेण धरणियले एकतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए देसूणा परिक्खेवेण सिहरितले तिण्णि जोयण सहस्साइ एगच बावट्ठ जोयण सत

चार दिशि में चार अंजन गिरि पर्वत कहे हैं वे अंजणगिरि पर्वत ८४ हजार योजन के ऊंचे, एक हजार योजन के गहरे, मूल में दश हजार योजन से अधिक लम्बे चौडे हैं, धरणितल में दश हजार योजन लम्बे चौडे हैं तदनतर एक २ प्रदेश कमहोते २ ऊपर एक हजार योजन लम्बे चौडे रहे हैं मूल में इकतीस हजार छसो तेवीस योजन से किंचित् अधिक परिधि है, धरणितल में एकतीस हजार छसो तेवीस योजन में कुछ कम परिधि है शिखरतल में तीन हजार एक सो बासठ योजन से कुछ कम परिधि है मूल में विस्तारवाले बीच में सकुचित व ऊपर पतले हैं गोपुच्छ संस्थानवाले स्वरूप है, प्रत्येक को एक पद्मवर

पण्णत्तो, तेण दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण, अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेण तावतियं चेव पवेसेण सेसं तचेव जाव वणमालाओ, एवं पिच्छाघर मडवावि तचेव पमाण, जे मुहमंडवाण दारावि तहेव णवरं बहुमज्झदेस भाये पेच्छाघरमडवाण अक्खाडगा, मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणप्पमाणातो सीहासणा अपरिवारा जाव दामा थूभावि "चउदिसिं तहेव णवरिं सोलस जोयणप्पमाणा, साइरेगाइं सोलसउच्चा,- सेसं तहेव जाव जिणपडिमाओ चेइरुक्खा तहेव चउद्दिसिं तचेव पमाण जहा विजयाए रायहाणीए, णवर मणिपे-

द्वार कहना प्रक्षागृह मंडप के मध्यभाग में अखाटक है उन के मध्य भाग में मणिपीठिका है वह आठ योजन के प्रमाण है उस पर परिवार रहित सिंहासन है यावत् दाम-माला है चारों दिशाओं स्तूप भी पूर्ववत् कहना परंतु वे स्तूप सोलह योजन प्रमाण हैं साधिक सोलह योजन के ऊंचे हैं शेष- सब वैसेही कहना- जिन प्रतिमा है, चारों दिशी में चैत्यवृक्ष हैं वगैरह सब विजया राज्यधानी जैसे कहना विशेष में मणिपीठिका सोलह हजार योजन की ऊंची हैं उन चैत्यवृक्ष के चारों दिशी में चार मणिपीठिकाओं हैं वे आठ योजन की चौडी चार योजन की जाडी है उस पर महेन्द्रध्वजा ६४ योजन

तेसिणं सिद्धायतणाणं पत्तेय २ चउदिसिं चत्तारि दारा पण्णत्ता तजहा—देवदारे, असुरदारे, णागदारे, सुवण्णदारे ॥ तत्थणं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसंति तजहा—देवे, असुर,णागे,सुवण्णे ॥ तेणंदारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं,तावतियं पवेसेणं सेतावरकणगथूभिआगवण्णओ सेसतचेव जाव वणमाला ॥ तेसिणं दाराणं चउदिसिं चत्तारिमुहमंडवा पण्णत्ता, तेणं मुहमंडवा एगमेगं जोयणं सयं आयामेणं, पण्णास जोयणाइं विक्खंभेणं, सातिरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं वण्णओ ॥ तेसिणं मुहमंडवाणं चउदिसिं चत्तारि चत्तारिदारा

योजन ऊंचे व आठ योजन चौडे है उन का प्रवेश भी आठ योजन का है वे श्वेत कनकमय वगैरह वर्णन योग्य यावत् लम्बी लटकती हुई वनमाला है उन द्वार की चार दिशी में चार मुख मंडप कहे हैं वे एक सो योजन के लम्बे पचास योजन के चौडे और साधिक सोलह योजन के ऊंचे यावत् वर्णन योग्य है. उन मुख मंडप की चार दिशी में चार द्वार कहे हैं वे द्वार सोलह योजन के ऊंचे आठ योजन के चौडे व उतने ही प्रवेश वाले हैं शेष सब वनमाला पर्यंत पूर्ववत् जानना ऐसेही प्रेक्षागृह मंडप का वर्णन जानना उस का प्रमाण वैसेही कहना जैसे मुख मंडप के द्वार कहे वैसेही प्रेक्षा गृह मंडप के

भागे मणिपेढिया सोलस जोयणाइं आयाम विक्खभेण अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेण ॥ तासिणं मणिपेढियाण उप्पिं देवच्छदगा सोलस जोयण आयाम विक्खभेण सातिरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण सव्वरयणमया अट्ठसय जिणपडिमाण सव्वो सोचेव गमो जहेव माणिमय सिद्धायणस्स तत्थण जेसिं पुरत्थिमिल्लेण अंजणपव्वते तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि नंदापुक्खरिणीओ पन्नत्ताओ तंजहा णदोत्तराय णदा आणदा णदिवद्धणा॥ताओ णदापुक्खरणीओ एगमेग जोयणसयसहस्स आयाम विक्खभेण दस जोयणाइं उव्वेहेण, अच्छाओ सण्हाओ जाव पडिरूवाओ पत्तेय २ पउमवरवेइया

सोलह योजन लम्बा चौडा कहा है और सधिक सोलह योजन ऊंचा है सब रत्नमय हैं यहां १०८ जिन प्रतिमा हैं इस का सब अधिकार वैमानिक सिद्धायतन का कहा वैसे ही कहना यहां जो पूर्व दिशा का अंजनक पर्वत है उस की चारों दिशा में चार नंदापुष्करणि हैं जिनके नाम, नंदोत्तरा, नंदा आनंदा और नंदीवर्धना यह नंदा पुष्करणियों एक लाख योजन की लम्बी चौडी है, दश योजन की ऊंची हैं, स्वच्छ श्लक्ष्ण है प्रत्येक को पद्मवर वेदिका और वनखण्ड हैं यहां यावत् त्रिसोपान प्रतिरूप को हैं, व तोरण हैं उस नंदा पुष्करणी के बीच में पृथक् २ दधि मुख पर्वत हैं ये दधि मुख पर्वत

सूत्र

ढियाओ सोलस जोयणप्पमाणाओ ॥ तेसिणं चेइयरुक्खाणं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढिओ अट्ठ जोयण आयाम विक्खंभेणं, चउजोयण बाहल्लाओ, महिंदज्झयाणं चउसट्ठि जोयणुच्चा जोयणउव्वेहो जोयणविक्खंभा सेसं तहेव, एवं चउद्दिसं चत्तारि नंदा पुक्खरणीओ णवरं खोयरसपडिपुण्णाओ, जोयण सयं आयामेणं, पन्नास जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं सेसं तहेव, मणोगुलिया गोमाणसीया अडयालीस२ सहस्साओ पुरच्छिमेणवि सोलससहस्सा, पच्चत्थिमेणवि सोलससहस्सा, दाहिणेणावि अट्ठ सहस्साओ, उत्तरणवि अट्ठ सहस्साओ, तहेव सेसं उल्लोया भूमिभागा, जाव बहुमज्झदेस भूमि

अर्थ

की ऊंची है एक योजन गहरी जमीन में व एक योजन की चौडी है शेष वैसे ही कहना, एसे चारों दिशा में चार नंद पुष्करणीयों हैं, इन में पानी इक्षुरस जैसा भरा है, ये एक सो योजन लम्बी है, पचास योजन चौडी है, दश योजन गहरी हैं शेष सब वैसे ही कहना. मणोगुलक और गोमाणसीका अडतालीस हजार हैं जिस में से सोलह हजार पूर्व में, सोलह हजार पश्चिम में, दक्षिणमें आठ और उत्तर में आठ हजार वैसे ही बहुत भूमिभाग यावत् उस के मध्यभाग में मणिपीठिका है, वह सोलह योजन की लम्बी चौडी व आठ योजन की जाडी है उन मणिपीठिका पर देव छंदक कहा है यह

सुवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव उप्पि अट्ठट्ठ मंगलया ॥ तत्थण जेसे दाहिणिल्लेण अजणपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि णदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा भद्दाय विसालाय कुमुयाय पुंडरिगिणी तचेव प्पमाण तहेव दहिमुह पव्वया तचेव पमाण जाव सिद्धायणे ॥ तत्थण जेसे पच्चत्थिमेण अजणपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारिणदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा णदिसेणाय अमोहाय गोत्थुभाय सुदसणा तचेव सव्व भाणियव्व जाव सिद्धाययण ॥ तत्थण जेसे उत्तरिल्ले अजणपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि नदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा विजया वेजयति

सब पर्वत यावत् सिद्धायतन वगैरह कथन कहना जो पश्चिम दिशा में अंजनक पर्वत है उस की चारों दिशि में चार नंदापुष्करणियों हैं जिन के नाम—नंदिसेना, अमोघा, गोस्तुभ व सुदर्शना इसका भी सिद्धायतन पर्यंत कथन पूर्ववत् जानना उत्तर दिशा में जो अंजनक पर्वत है, उन की चारों दिशि में चार नंदा पुष्करणियों कही हैं जिन के नाम—विजया, वैजयती, जयंती और अपराजिता इन में सिद्धायतन पर्यंत सब कथन पूर्ववत् जानना यहां बहुत भवनपति वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक देव चौतुर्मासिक

१ चतुर्मासिक पूर्णिमा व प्रतिपदा तीन हैं अषाढ महिने की, कार्तिक व फाल्गुन महिने की..

पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता तत्थ २ जाव तिसोमाण पडिरूवेगा, तोरणा, ॥ तासिण पुक्खरिणीण बहु मज्झदेसभाए पत्तेय २ दाहिमुहपव्वए पण्णत्ते ॥ तेण दहिमुह पव्वया चउसट्ठिं जोयण सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेण एग जोयण सहस्स उव्वेहेण सव्वत्थसमा पल्लगसठाण संठिता, दस जोयण सहस्साइं विक्खंभेण, इक्कतीस जोयण सहस्साइं छच्चतेवीस जोयणसए परिक्खेवेण पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, पत्तेय २ पउमवर वेतिया वणसंड वण्णओ, बहु समरमणिज्ज भूमिभागा जाव आसयति, सिद्धायतण तचेव पमाण त अजण पव्वए

चौसठ हजार योजन के ऊंचे हैं एक हजार योजन के जमीन में हैं, सब स्थान समपल्येक संस्थान वाले हैं दश हजार योजन के चौडे हैं इकतीस हजार छसो तेवीस योजन की परिधि है सब रत्नमय, स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है प्रत्येक की चारों ओर पद्मवर वेदिका व वनखण्ड हैं बहुत रमणीय भूमि भाग यावत् वहां देव बैठते हैं सिद्धायतन का प्रमाण वैसे ही जानना यों अंजनक पर्वत की वक्तव्यता कहना यावत् ऊपर आठ २ मंगल कहे हैं दक्षिण का अंजनक पर्वत है उस की चारों दिशि में चार नंदा पुष्करणीयों हैं जिन के नाम—भद्रा, विशाला, कुमुदा और पुंडरीकिणी इस का सब वर्णन पूर्ववत् जानना दधि

वलयागार संठाण संठिए जाव सव्व तहेव अट्ठो जहाक्खोदोदगस्स जाव सुमणस सोमणसाय इत्थ देवा महिड्ढीया जाव परिवसति सेस तहेव जाव तारग्ग ॥ ४२ ॥ नंदिसरोद समुद्द अरुणोनाम दीवे वट्टे वलयागार संठाण संठिए सपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ॥ अरुणेण भंते! दीवे किं समचक्कवाल संठिये, विसमचक्कवाल संठिए? गोयमा! समचक्कवाल संठिए नो विसम चक्कवाल संठिए केवइय चक्कवाल? गोयमा! संखेज्जाइ जोयण सहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण, संखेज्जाइ जोयण सहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ता,

संस्थानवाला कहा है इस का सब कथन पूर्ववत् कहना इक्षुवर समुद्र जैसे यहां का पानी इक्षुरस समान है यावत् सुमनस व सोमनस ये दो देव महर्द्धिक यावत् रहते हैं शेष सब वैसेही जानना यावत् संख्याते चंद्रमादिक ज्योतिषी हैं ॥ ४२ ॥ नंदीश्वर समुद्र आगे अरुण नामक नववा द्वीप वर्तुल वलयाकार संस्थान वाला है अहो भगवन्! अरुण द्वीप क्या सम चक्रवाल है या विषम चक्रवाल है? अहो गौतम! सम चक्रवाल संस्थानवाला है परंतु विषम चक्रवाल संस्थानवाला नहीं है अहो भगवन्! अरुण नामक द्वीप कितना चौडा है और उन की कितनी परिधि है? अहो गौतम! संख्यात लाख योजन चौडा है और संख्यात लाख योजन की परिधि है और भी पद्मवर

जयती अपराजिता, सेस तहेव जाव सिद्धाययणा सव्वो चेतियपरिवरण्णा णेयव्वा, तत्थण बहवे भवणवइ वाणमंतर जोइस वेमाणिया देवा चाउमासिय पडिवएसु संवच्छरेसुय अण्णेसु बहु जिणजम्मण निक्खमण णाणुप्पपात परिणिव्वाण मादिएसुय देवकज्जेयसुय देवसमुदएसुय देवसमतीसुय देवसमवाएसुय देवपउमणेसुय एगतओसहिया समुवागया समाणा पमुदित पकीलिया अट्ठाहियाओ महामहिमाओ करेमाणा पालेमाणा सुहंसुहेण विहरति कयस्सास हरिवाहणाय तत्थ दुवे देवा महिड्डीया जाव पलिउमाठितीया परिवसति से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्च जोतिस संखज्ज ॥ ४२ ॥ णंदी सरवरण्ण दीवे णंदिस्सरवरोदे णामं समुद्दे वट्टे

प्रतिपदा संवत्सर में और अन्य बहुत जिनभगवान के जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, और निर्वाण कल्याण इत्यादि दिनों में, देव कार्य, देव समुदाय, देव गोष्टि, देव संबंधी समवाय, और देव संबंधी जीत व्यवहार के प्रयोजन से देवता एकत्रित होते हैं वहां आनंद क्रीडा, अष्टान्हिका महामहोत्सव करते हुवे सुख पूर्वक विचरते हैं और भी कैलास व हरिवाहन नामक दो महर्द्धिक देव यावत् वहां रहते हैं अहो गौतम ! इस लिये नंदीश्वर द्वीप ऐसा नाम कहा यावत् यह नाम शाश्वत है ज्योतिषी चंद्रादिक सब संख्याते हैं यह नंदीश्वर द्वीप का कथन हुवा ॥ ४२ ॥ नंदीश्वर द्वीप के चारों ओर नंदीश्वर समुद्र वर्तुल वलयाकार

सव्व जाव अट्ठो खोदयोदगपडिहत्थओ उप्पाय पव्वयगा सव्व वइरामया अच्छा जाव पडिरूवा अरुणवर महाभद्दा इत्थ दो देवा महिड्डिया जाव परिवसंति॥ ४६॥एव अरुणवरो देवि समुद्दे जाव अरुणवर महाअरुणवरा एत्थ दो देवा, सेस तहेव अरुणवरोदण समुद्द अरुणवरोभासे नामं दीवे वट्टे जाव देवा अरुणवराभास भद्दा अरुणवरोयभास महाभद्दा महिड्डिया सेस तहेव ॥ ४८ ॥ एव अरुणवरोभासादेवि समुद्दं णवरिं देवा अरुणवरोभासवर अरुणवरो भास महावरा, एत्थ दो देवा महिड्डीया ॥ ४९ ॥ कुडलदीवे कुडलभद्दाय कुडलमहाभद्दाय एत्थ दो देवा ॥ ५० ॥

वैसेही सब कहना, यहां की सब वावडियों में पानी इक्षुरस समान है, उत्पात पर्वत हैं, सब वज्ररत्नमय है स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है, अरुणवरभद्र व अरुणवरमहाभद्र ऐसे दो देव रहते हैं ॥ ४६ ॥ ऐसेही अरुणोवर समुद्र का जानना यावत् यहां अरुणवर और महाअरुणवर ऐसे दो देव रहते हैं शेष वैसेही ॥ ४७ ॥ अरुणवर समुद्र के चारों ओर अरुणवरभास नामक द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है, यावत् अरुणवरभासभद्र और अरुणवरभासमहाभद्र ऐसे दो देव ऋद्धिक हैं, ॥ ४८ ॥ ऐसेही अरुणवर भास समुद्र का जानना, परंतु यहां अरुणवर भासवर और अरुणवर भासमहावर नामक दो देव महर्धिक रहते हैं, ॥ ४९ ॥ इस से अनन्तर बारहवा कुडल द्वीप है इस में कुडलभद्र व कुडल महाभद्र

पउमवर वणसंडा दारा दारतराय तहेव, संखिज्जाइं जोयण सहस्साइं दारतर जाव अट्ठो- वावीओ खोतोदग पडिहत्थाओ उप्पाय पव्वयका सव्ववइरामया अच्छा जावपडिरूवा असोग वीयसोगा एत्थ दुवेदेवा महिड्डिया जाव परिवसति, से तेणट्ठेण जाव संखेज्जग सव्व ॥४४॥ अरुणदीव अरुणोदे नाम समुद्दे तस्सवि तहेव परिक्खवो अट्ठेक्खोदो दग णवरिं सुभद्द सुमणभद्दा एत्थ दोदेवा महिड्डिया सेसं तहेव ॥४५॥ अरुणोदग समुद्द अरुण वरनामे दीवे वट्टेवलयागार सठाण सठिए सेस तहेव संखेज्जग

वादिका वनखण्ड द्वारांतर वैसेही कहना प्रत्यक द्वार में संख्यात लाख योजन का अंतर है यावत् अर्थ करते हैं उस में बावडियों प्रमुख हैं, इक्षुरस समान पानी भरा है वहां उत्पात पर्वत हैं, सब वज्ररत्नमय है अशोक और विनशोक नामक दो महर्धिक देव यहां रहते हैं इसलिये अरुणद्वीप कहा है सब ज्योतिषी संख्याते हैं ॥ ४४ ॥ अरुण द्वीप के चारों ओर अरुणोद नामक समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है उस की चौड़ाई संख्यात लाख योजन है परिधि भी संख्यात लाख योजन की है अर्थ की पृच्छा ? यहां पानी समुद्र के पानी जैसा है इस का सब कथन इक्षुरस समुद्र जैसा जानना परंतु यहां सुमण व सुमणभद्र ऐसे दो महर्द्धिक देव रहते हैं शेष वैसेही कहना, ॥ ४५ ॥ अरुणोदक समुद्र को अरुणवर द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है संख्यात योजन का लम्बा चौड़ा है

रिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा! समचक्कवाल नो विसमचक्कवाल दोदे समुद्दे संखेज्जाइं सव्वत्थमणोरमाय इत्थ देवा सेस तहेव जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण दा[illegible] लक्खाइं जा।तसंपि सव्व संखेज्ज भाणियव्व अट्ठोवि तहेव, खोदोधस्स णवर सुमणसामाणसाय पत्थ दो देवा महिड्ढीया तहेव रुयगाओ आढत असंखिज्ज विक्खभ परिक्खेवो, दारतरच्च जोइसय सव्व असंखेज्ज भाणियव्व ॥ ५७ ॥ रुयगोदण समुद्द रुयगवरे णाम दीवेवट्टे, रुयगवरभद्द,

अहो गौतम ! सम चक्रवाल है परतु विषम चक्रवाल नहीं है अहो भगवन् ! यह कितना चक्रवाल चौडा है ? अहो गौतम ! संख्यात योजन का चौडा है यहां सर्वार्थ और मनोरम ऐसे दो महर्धिक देव रहते हैं ॥ ५६ ॥ रुचकोद समुद्र का इक्षुवर समुद्र जैसे कहना यह संख्यात योजन का लम्बा चौडा है संख्यात योजन की परिधि है, प्रत्येक द्वार का अंतर भी संख्यात योजन का है, सब ज्योतिषी भी संख्यात हैं अर्थ इक्षुवर समुद्र जैसे कहना यहां सोमनस व सुमानस ऐसे दो देवता रहते हैं वैसे ही कहना यों रुचक समुद्र पर्यंत सब संख्याते हैं इससे आगे सब असंख्यात है द्वीप समुद्र की चौडाइ परिधि, द्वार का अंतर, ज्योतिषी सब असंख्याते हैं ॥५७॥ रुचकवर द्वीप के चारों ओर रुचकवरभद्र नामक द्वीप कहा है यहां रुचकवरभद्र व रुचकवर महाभद्र नामक देव हैं तदनंतर रुचकवर समुद्र कहा है यहां रुचकवर

कुंडलोदे समुद्दे चक्खुसुह चक्खुकताय इत्थ दो देवा महिड्डिया,॥ ५१ ॥कुंडलवरदीवे कुंडलवरभद्दा कुंडलवरमहाभद्दा एत्थदो देवा महिड्डिया ॥ ५२ ॥ कुंडलवरोदे समुद्दे कुंडलवर कुंडल महावरा एत्थ दो देवा महिड्डीया ॥ ५३ ॥ कुंडलवरोभासे दीव कुंडलवरोभासभद्दे कुंडलवरोभासमहाभद्दा यत्थ दो देवा, ॥ ५४ ॥ कुंडलवरोभासोदे समुद्दे कुंडलवराभासवर कुंडलवरोभासमहावरा, इत्थ दो देवा महिड्डिया जाव पलिओवमाठितीया परिवसति ॥ ५५ ॥ कुंडलवरो भास समुद्दं रुयगे नाम दीवे वट्टे वलया जाव चिट्ठति॥किं समचक्कवाल विसमचक्कवाल?

नामक दो देव रहते हैं ॥५०॥ बारहवा कुंडलोद समुद्र है वहां चक्षुशुभ व चक्षुकांत नामक दो महर्धिक देव रहते है ॥५१॥ तेरहवा कुंडलवरभद्र द्वीप वहां कुंडलवरभद्र और कुंडलवर महाभद्र नामक दो महर्धिक देव रहते हैं ॥५२॥तत्पश्चात कुंडलवर समुद्र हैं इसमें कुंडलवर व कुंडलमहावर नामक दो महर्धिक देव रहते हैं, ॥ ५३ ॥ कुंडलवराभास चौदहवा द्वीप है वहां कुंडलवराभासभद्र व कुंडलवराभासमहाभद्र ऐसे दो महर्धिक देव रहते हैं तत्पश्चात् कुंडलवराभास समुद्र है वहां कुंडलवराभासवर व कुंडलवरा भास महावर नामक दो देव महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले रहते हैं ॥ ५५ ॥ कुंडलवराभास समुद्र के चारों ओर रुचक द्वीप वलयाकार यावत् रहा हुवा है, अहो भगवन् ! वह क्या सम चक्रवाल है या विषम चक्रवाल है ?

समुद्द,हारवर भासवर,हारवरावभास महावरा एत्थ दो देवा एव ॥ सव्वे तिपडोयाराणेयव्वा जाव सूरवरो भासोदे समुद्दे दीवे भद्दनामा वरनामा होंति उदहीसु जाव पच्छिम भावच खोतवरादि, सयभूरमणपज्जतेसु वावीओ खोतोदग पडिहत्थाओ पव्वयगाय सव्व वइरामय,देवदीवे दो देवा महिड्डीया देव भद्दा महाभद्दा एत्थ दो देवा, देव समुद्दे देववर देव महावराय एत्थ जाव सयभूरमणे सयभूरमणभद्द सयभूरमणमहाभद्दा एत्थ दो देवा महिड्डिया सयभूरमणेण्णदीव सयभूरमणोद नाम समुद्दे तहेव वट्टे वलयागार जाव

वैसे द्वीप या समुद्र का नाम लगाना इक्षुवर द्वीप से स्वयभूरमण द्वीप पर्यंत सब द्वीप में पुष्करणियों हैं सब में इक्षुरस समान पानी है सब में उत्पात पर्वत हैं वे सब वज्र रत्नमय हैं सूर्यवराभास समुद्र से आगे देव द्वीप है यहां देवभद्र और देव महाभद्र ऐसे दो देव रहते हैं उस से आगे देवोदधि समुद्र है यहां देववर व देव महावर नामक दो महर्धिक देव हैं इस से आगे नाग द्वीप नाग नाम समुद्र, यक्षद्वीप यक्षसमुद्र,भूतद्वीप,भूतसमुद्र,स्वयभूरमण द्वीप स्वयमरणसमुद्र है इससे आगे द्वीपसमुद्र नहीं है परन्तु मात्र अलोक है स्वयभूरमणद्वीप में स्वयभूरमण भद्र और स्वयंभूरमण महाभद्र देव है स्वयभूरमण द्वीप की चारों ओर स्वयभूरमण समुद्र वर्तुल वलयाकार है असंख्यात योजन का लम्बा चौडा है असंख्यात योजन की परिधि है अहो भगवन् ! स्वयभूरमण समुद्र ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! स्वयभू

रुयगवरमहाभद्दाय इत्थ दो देवा महिड्डिया रुयगवरोदे समुद्द रुयगवरा रुयगमहावरा, इत्थ दोदेवा महिड्डिया रुयगवरोभासे दीवे रुयगवरोभास भद्दे, रुयगवरोभासमहाभद्देय इत्थ दो देवा- रुयगवरोभासोदे समुद्दे रुयगवरो भासवर, रुयगवरोभासमहावरा इत्थ दो देवा ॥ हारदीवे हारभद्द हारमहाभद्दा इत्थ दो देवा ॥ हारोदे समुद्दे हारवरमहावरा यत्थ दो देवा ॥ हारवरदीवे हारवरभद्द हारवरमहाभद्दा हारवरोदे हारवर, हारमहावरा, हारवरवरोभासेदीवे हारवरवरोभासभद्द हारवरवरोभास महाभद्दा, हारवरवरोभासोदे

रुचक महावर नाम दो देव हैं तदनंतर रुचक वरावभास द्वीप है यहां रुचकवराभास भद्र और रुचक वरावभास महाभद्र देव हैं तत्पश्चात् रुचकवरावभास समुद्र है यहां रुचक वरावभासवर और रुचक वरावभास महावर ऐसे दो देव हैं तत्पश्चात् हार द्वीप है यहां हारभद्र व हार महा भद्र देव हैं, तत्पश्चात् हार समुद्र है यहां हारवर व हारमहावर देव हैं तत्पश्चात् हारवर द्वीप है यहां हारवर भद्र व हारवरमहाभद्र देव हैं तत्पश्चात् हारवर समुद्र है इस में हारवर व हार महावर दो देव हैं तत्पश्चात् हारवरावभास द्वीप है, यहां हारवरावभासभद्र व हारवरावभासमहा भद्र देव हैं, तत्पश्चात् हारवरावभास समुद्र है यहां हारवरावभासवर और हारवरावभास महावर देव हैं ये सब द्वीप समुद्र के तीन नाम जानना यावत् सूर्यावरावभास पर्यंत कहना द्वीप में भद्र व महाभद्र और समुद्र में वर व महावरदेव है सब के

देवोदे समुद्दे पण्णत्ते एव णागे जक्खे भूतेसयभूरमणे दीवे एगे सयभूरमणेसमुद्दे णाम-
धेज्ज पण्णत्ते ॥ ५९ ॥ लवणस्सणं भंते ! समुद्दस्स उदए केरिसए अस्साएणं
पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्स उदए आइले रइल कंदे लवणे कडुए अपेज्ज बहूणं
दुपय चउप्पय मिग पसु पक्खि सरिसवाणं णण्णत्थणं, तज्जोणियाणं सत्ताणं ॥
कालोयस्सणं भंते ! समुद्दस्स उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! आसले
मासले पसले काले मासरासिवण्णाभे पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ते॥पुक्खरोदस्सणं भंते !

नाम का एक ही द्वीप है, देवोदधि नाम का एक ही समुद्र है, ऐसे ही नाग द्वीप, नाग समुद्र, यक्ष द्वीप, यक्ष समुद्र, भूतद्वीप, भूत समुद्र, स्वयंभूरमण द्वीप, स्वयंभूरमण समुद्र के नाम के एक २ ही द्वीप समुद्र हैं ॥५९॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का पानी मलिन, गोमूत्र जैसा, लवण जैसा, कटुक, खार युक्त, अपेय, और उस ही पानी में उत्पन्न होनेवाले मत्स्य कच्छादि सिवाय अन्य पशु पक्षी परिसर्प वगैरह को पीने योग्य नहीं है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! सुखकारी, व मनोहर है वर्ण से श्याम वर्णवाला, माष (उडिद) की राशि जैसा है, और स्वाभाविक पानी जैसा स्वाद है अहो भगवन् ! पुष्करोद समुद्र का कैसा पानी है ? अहो गौतम ! स्वच्छ निर्मल, जातिवंत, हलका व स्फटिक समान श्वेत है, और

असंखेज्जाइं जोयण सतसहस्साइं परिक्खेवेण जाव अट्ठो ॥ गोयमा ! सयभूरमणोदे उदये अच्छे पच्छे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे पगतीए उदगरसेण पण्णत्ते, सयभूरमणवर सयंभूरमणमहावरा, एत्थ दोदेवा महिड्ढीया, सेस तहेव जाव असंखेज्जाओ तारागण कोडीओ सोभिसुवा ३ ॥ ५८ ॥ केवतियाण भंते ! जंबुद्दीवे नामधेज्जेहिं पण्णत्ते? गोयमा! असंखेज्जा जंबूदीवा दीवा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ॥केवतियाण भंते! लवणसमुद्दा पण्णत्ता? गोयमा! असंखेज्जा लवणसमुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता॥एवधायति सडवि एव जाव असंखेज्जा सूरदीवा नामधेज्जेहिं पण्णत्ते, एगे देवेदीवे पण्णत्ते एगे

रमण समुद्र का पानी निर्मल, स्वच्छ, पथ्य, निरोगी, मानिर्वत, हलका स्फटिक वर्ण जैसा, और स्वाभाविक पानी के स्वाद वाला है वहां स्वयंभूरमणवर और स्वयंभूरमणमहावर ऐसे दो महर्धिक देव रहते हैं शेष सब वैसे ही पूर्ववत् जानना वहां असंख्यात क्रोडा क्रोडी ताराने शोभा की, शोभा करते हैं व शोभा करेंगे ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के नामवाले कितने द्वीप कहे हैं? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के नाम के असंख्यात द्वीप कहे हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के नाम के कितने द्वीप कहे हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के नाम के असंख्यात द्वीप कहे हैं ऐसे ही धातकी खण्ड नाम के असंख्यात द्वीप यावत् सूर्यवराभास नाम के असंख्यात द्वीप कहे हैं परंतु देव द्वीप

णो तिणट्ठे समट्ठे वारुणोदए एत्तो इट्ठतराएचेव जाव आसाएण पण्णत्ते ॥ खीरोदस्सण भंते ! उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहा नमए रन्नो चाउरंत चक्कवट्टिस्स चतुरक्क गोखीरे पयत्तमंदग्गिसु कढित आउत्तखंडमच्छंडितोववेते वण्णेण उववेते जाव फासेण उववेए भवतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! खीरोयस्स एत्तो इट्ठ जाव अस्साएण पण्णत्ते॥घतोदस्सण जहा नामए सारतिक्खस्स गोघयवरस्स मंडेसल्लइ किण्णियार पुप्फवण्णाभे सुकढित उदार सज्झवीसंदिते वण्णेण उववेते जाव फासेण उववेते

सार स्थान परिणमित गौ का दुग्ध को मंद अग्नि से पकावे, उस में उत्तम गुड सक्कर वगैरह डालकर चतुरंत चक्रवर्ती के लिये भाग योग्य बनावे यावत् वह वर्ण यावत् स्पर्शयुक्त होवे अहो भगवन् ! क्या क्षीरोद समुद्र का पानी एसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से अधिक स्वादवाला क्षीरोद समुद्र का पानी है अहो भगवन् ! घृतोद समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! जैसे सल्लकी अथवा कणवर के पुष्प समान श्वेत अच्छा तरह उष्ण किया हुवा स्वच्छ गौ घृत वर्ण यावत् स्पर्शयुक्त होवे तब गौतम स्वामी पृच्छा करते हैं क्या एसा घृतोद समुद्र का पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी अधिक स्वादवाला घृतोद समुद्र का पानी है अहो भगवन् ! इक्षुरस समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? जैसे जातिवंत, पक्व होने से हरताल जैसे पीले

समुद्दस्स उदए केरिसए आसाएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अच्छे पच्छे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ते ॥ खीरोदस्सणं भंते ! समुद्दस्स उदए केरिसए आसाएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहा णामए पत्तासवेतिवा चोयासवेतिवा खज्जूरसारेतिवा मुद्दियसारेतिवा सुपिक्कखोयरसेतिवा, मेरएतिवा काविसायणेतिवा चंदप्पभातिवा मणोसिलागातिवा वरसीधूतिवा वरवारुणीतिवा अट्ठपिट्ठ परिनिट्ठियातिवा जंबूफल कालियावण्णा वरपसण्णा उक्कोसमदप्पत्ता ईसिं उट्ठावलंबिणी ईसिं तंबच्छिकरणी, ईसिं वोच्छेयकडुई आसेला मासला पेसला वण्णेणं उववेता जाव

स्वाभाविक पानी समान स्वादवाला है अहो भगवन् ! वारुणोद समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! जैसे पत्र का आसव, पुष्प का आसव, खर्जुर का आसव, द्राक्षासव, पका हुवा इक्षु का रस, मेरक मद्यजाति, कापिसायन, चंद्र प्रभा मदिरा विशेष, मण.शीला का मदिरा, वरप्रधान सिंधु, उत्तम वारुणी, मदिरा, आठवार पिष्ट परिणत मदिरा, जम्बूफल समान कृष्ण वर्ण वाली मदिरा कृष्ण रसवंत, ओष्ट से पाने से किंचित् विलंब होवे, पढने से चक्षुओं लाल होवे, आस्वाद योग्य, पुष्टकारी, मनोहर वर्ण युक्त यावत् संस्कार युक्त है अहो भगवन् ! वारुणोद समुद्र का पानी क्या ऐसा स्वाद वाला है ? अहो गौतम यह अर्थ समर्थ नहीं है वारुणोदधि समुद्र का पानी इस से भी अत्यंत इष्टकार यावत् स्वादवंत है अहो भगवन् ! क्षीरोद समुद्र का पानी कैसा स्वाद वाला है ? अहो गौतम ! जैसे

गोयमा ! चत्तारिसमुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता तजहा—लवणे, वरुणोदे, खीरोदे घठदे ॥ कतिण भते ! समुद्दा पगतीए उदगरसेण पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ समुद्दा पगतीए उदगरसेण पण्णत्ता ? तजहा—कालोयण पुक्खरोदे सयभूरमणे ॥ अवसेसा समुद्दा ? अवसेसा समुद्दा उरसण खोयरसाए पण्णत्ता समणाउसो!॥६१॥कइण भते! समुद्दा बहु मच्छ कच्छभाइण्णा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पण्णत्ता ? तजहा— लवणे कालोयणे सयभूरमणे अवसेसा समुद्दा अप्प कच्छमच्छ माइण्णा पण्णत्ता लवणेण भते ! समुद्दे कतिमच्छजाति कुलकोडिजोणी पमुह सतसहस्सा पण्णत्ता ?

पृथक २ स्वादवाला है ? अहो गौतम ! चार समुद्र का पानी पृथक २ स्वादवाला है जिन के नाम-लवणसमुद्र, वारुणोदधि, क्षीरोदधि और घृतोदधि, अहो भगवन् ! कितने समुद्र का पानी स्वाभाविक पानी जैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! तीन समुद्र का पानी स्वभाविक पानी जैसा स्वादवाला है जिनके नाम-कालोदधि, पुष्करोदधि, और स्वयभूरमणसमुद्र अहो आयुष्यवंत श्रमणो ! शेष सब समुद्र का पानी प्राय: इक्षुरस समान ही है ॥ ६१ ॥ अहो भगवन् ! बहुत मत्स्य कच्छ वाले कितने समुद्र हैं ? अहो गौतम ! ऐसे तीन समुद्र है जिन के नाम—लवण, कालोद और स्वयंभूरमण, शेष सब समुद्र अल्प कच्छ, मत्स्य वाले हैं अहो भगवन् !

भंवतारूवासिया ? नो तिणट्ठे समट्ठे एंतो इट्ठतराए ॥ खोदोदगस्स से जहा नामए उच्छुण जवाण पुडवाण हरियाण विंजराण भेरुड उच्छूणवा कालपोराणतिभागणिव्वा डियवाडाण घलवगणरजत परिमागालियमित्तो जेयरसे होज्जा वत्थपूते चाउ जातिग सुवासिते अइपत्थ लहुए वण्णेण उववेते जाव भंवतारूवेसिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, एतो इट्ठतराए ॥ एव ससगणात्रि समुद्दाण थद्धो जाव सयभूरमणस्सवि णवरिं अच्छे जहा पुक्खरोदस्स ॥ ६० ॥ कतिण भंते ! समुद्दा पत्तेगरसा पण्णत्ता ?

इक्षु के टुकडे होवे उस का ऊपर व नीचे का भाग काटकर मध्य भाग को यस्पंत वेलों से चलाने के यंत्र से रस नीकाले, उसे कपडे मे छानकर तृण रहित बनावे, पुनः उस में दालचिनी एलायची केसर कर्पूर वगैरह डालकर सुवासित बनावे अत्यंत पथ्यकारी निरोगी हलका और वर्ण यावत् स्पर्श से युक्त होवे तब गौतम स्वामी पृच्छा करते है कि क्या ऐसा पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, इस से भी अत्यंत इष्ट है यों एव समुद्र का पानी इक्षु समान जानना यावत् घृतोदधि समुद्र पर्यंत कहना अहो भगवन् ! स्वयंभूरमण समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! स्वयंभूरमण समुद्र का पानी स्वच्छ जातिवंत निर्मल पुष्करोदधि जैसा है ॥ ६० ॥ अहो भगवन् ! कितने समुद्र का पानी

जोयण सयाइ उक्कोसेण, सयभूरमणे जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग उक्कोसेण दस जोयण सयाइ ॥ ६३ ॥ केवतियाण भंते ! दीव समुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइया लोगे सुभा नामा सुभा वण्णा जाव सुभाफासा एवतिया दीव समुद्दा णामधेज्जेहिं पण्णत्ता ॥ ६४ ॥ दीव समुद्दाण भंते ! केवतिया उद्धार समएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइया अड्ढाइज्जाइ उद्धार सागरोवमाण उद्धार समया एवतिया दीव समुद्दा उद्धार समएण पण्णत्ता ॥ ६५ ॥ दीव समुद्दाण भंते ! किं पुढवि परिणामा आउपरिणामा जीव परिणामा पोग्गल परिणामा ? गोयमा ! पुढवि परिणामावि

स्वयंभूरमण समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन की ॥ ६३ ॥ अहो भगवन् कितने नाम वाले द्वीप समुद्र हैं ? अहो गौतम ! लोकमें जितने शुभ नाम, शुभ वर्ण शुभगंध शुभरस शुभ स्पर्श वाली वस्तु के नाम हैं उतने नामवाले द्वीप समुद्र हैं ॥ ६४ ॥ अहो भगवन् ! द्वीपसमुद्र कितने अद्धा समय जितने हैं ? अहो गौतम ! उद्धार अढाइ सागरोपम के जितने समय होवे उतने द्वीप समुद्र हैं ॥ ६५ ॥ अहो भगवन् ! द्वीप समुद्र क्या पृथ्वी परिणाम हैं, अप् परिणाम हैं, जीव परिणाम और पुद्गल परिणाम हैं ? अहो गौतम ! सब द्वीप समुद्र

गोयमा ! सत्तमच्छ जाति कुलकोडि जोणिपमुह सत सहस्सा पण्णत्ता ॥ कालोयरोण भंते! समुद्द कतिमच्छजाति पण्णत्ता? गोयमा! नवमच्छजाति कुलकोडीजोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता॥सयभूरमणेण भंते !समुद्द कतिमच्छजाति कुलकोडी पण्णत्ता? गोयमा ! अद्धतेरस मच्छजाति कुलकोडी जोणी पमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ॥ ६२ ॥ लवणेण भंते समुद्दे मच्छाण के महालया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग, उक्कोसेण पंच जोयण सयाइ एवं कालोयणे सत्त

लवण समुद्र में मत्स्य की कितने लाख कुल कोटि कही हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र में सात लाख कुल कोटी कही है अहो भगवन् ' कालोद समुद्र में मत्स्य की कितने लाख कुल कोड कही हैं?अहो गौतम! नव लाख कुल कोटी कही। अहो भगवन्'स्वयंभूरमण समुद्र में कितने लाख मत्स्य की कुल कोटि कही है? अहो गौतम ! साढे बारह लाख कुल कोटि कही ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांचसो योजन की अहो भगवन् ! कालोदधि समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही है? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग-उत्कृष्ट सात सो योजन की अहो भगवन्!

गोयमा ! सत्तमच्छ जाति कुलकोडि जोणिपमुह सत सहस्सा पण्णत्ता ॥ कालो-यणेण भते! समुद्द कतिमच्छजाति पण्णत्ता? गोयमा! नवमच्छजाति कुलकोडीजोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता॥सयभूरमणेण भते !समुद्द कतिमच्छजाति कुलकोडी पण्णत्ता? गोयमा ! अद्धतेरस मच्छजाति कुलकोडी जोणी पमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ॥ ६२ ॥ लवणेण भतासमुद्दे मच्छाण के महालया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जतिभाग, उक्कोसेण पच्च जोयण सयाइ एव कालोयणे सत्त

लवण समुद्र में मत्स्य की कितने लाख कुल कोटि कही हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र में सात लाख कुल कोटी कही है अहो भगवन् कालोद समुद्र में मच्छ की कितने लाख कुल कोट कही है? अहो गौतम! नव लाख कुल कोटी कही अहो भगवन्! स्वयंभूरमण समुद्र में कितने लाख मत्स्य की कुल कोटि कही है? अहो गौतम ! साडी बारह लाख कुल कोटि कही ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में मत्स्य के शरीर के कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांचसो योजन की अहो भगवन् ! कालोदधि समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही है? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात सो योजन की अहो भगवन्!

परिणामेणं एव वार्कखदिय त्रिसएहिंवि सुरूवपरिणामे, दुरूवपरिणामेय एव सुब्भिगंध परि-णामेय, दुब्भिगंध परिणामेय॥एव सुरस परिणामेय, दुरस परिणामेय एव सुफासपरिणा-मेव दुफासपरिणामेय ॥ २॥ सेणूण भंते! उच्चावएसु सद्द परिणामेसु, उच्चावएसु रूवपरिणा-मेसु, एव गंध रस-फास-परिणामेसु परिणममाणा पोग्गला परिणमतिति वत्तव्वंसिया? हंता गोयमा! उच्चावएसु सद्दपरिणामेसु परिणममाणा पोग्गला परिणमति वत्तव्वंसिया ॥३॥ सेणूण भंते ! सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति, दुब्भिसद्दावा पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमति ? हंता गोयमा ! सुब्भिसद्दा दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति दुब्भिसद्दा सुब्भिसद्दत्ताए परिणमति ॥ से णूण भंते ! सुरूवा पोग्गला

ऐसे ही गंध के दो भेद सुरभिगंध परिणाम व दुरभिगंध परिणाम रस परिणाम के दो भेद-सुरस परिणाम व दुरस परिणाम ऐसे ही शुभ स्पर्श परिणाम व दुष्ट स्पर्श परिणाम ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! उत्तम अधम शब्द परिणाम, उत्तम अधम रूप परिणाम, ऐसे ही गंध परिणाम, रसपरिणाम व स्पर्श परिणाम में परिणमते हुए पुद्गल परिणमते हैं ऐसा क्या कहना ? हां गौतम ! उत्तम अधम शब्द परिणाम में यावत् परिणमने वाले पुद्गल परिणमते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! शुभशब्द के पुद्गल दुष्ट शब्दपने क्या परिणमते हैं अथवा दुष्ट शब्द के पुद्गल शुभशब्द पने क्या परिणमते हैं ? हां गौतम ! शुभ शब्द के

आठपरिणामावि जीवपरिणामावि पोग्गल परिणामावि ॥ ६३ ॥ दीव समुद्दाण भंते ! सव्वपाणा सव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता पुढवि काइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणतखुत्तो ॥ इतिदीव समुद्दा उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६७ ॥ कतिविहेणं भंते ! इंदियविसये पोग्गल परिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदिय विसए पोग्गल परिणामे पण्णत्ते तंजहा—सोइंदिय विसये जाव फासिंदिय विसए ॥ १ ॥ सोइंदिय विसएणं भंते ! पोग्गल परिणामे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा—सुब्भिसद्द परिणामेय दुब्भिसद्द

पृथ्वी परिणाम, अप परिणाम, जीव परिणाम व पुद्गल परिणाम इन चारों परिणाम मय है ॥६६॥ अहो भगवन्! द्वीप समुद्र में सब प्राण, भूत, जीव व सत्व क्या पृथ्वीकायापने यावत् त्रसकायापने परिणमे? हां गौतम! एक वार अथवा अनंत वार यों द्वीप समुद्र का उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ६७ ॥ अहो भगवन्! इन्द्रिय विषय रूप पुद्गल परिणाम के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! इन्द्रिय विषय के पुद्गल परिणाम के पांच भेद कहे हैं, जिन के नाम—श्रोतेन्द्रिय का विषय यावत् स्पर्शेन्द्रिय का विषय. ॥१॥ अहो भगवन्! श्रोतेन्द्रिय विषय का पुद्गल परिणाम के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! इस के दो भेद कहे हैं उपया-सुरभिशब्द परिणाम और दुरभिशब्द परिणाम यह ही चक्षु इन्द्रिय विषय के दो भेद शुभरूप व दुष्ट रूप परिणाम

पोग्गलेखिविता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गिण्हित्तए ? हंता पभू ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवेणं महिड्डीए जाव गिण्हित्ता ? गोयमा ! पुग्गले खिविते समाणे पुव्वामेव सिग्घगती भवित्ता, तओ पच्छा मंदगती भवति, देवेणं महिड्डीए जाव महाणुभागे पुव्वावि पच्छावि सीहे सीहगइ चेव तुरिए तुरियगई चेव, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जाव तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गिण्हित्तए ॥५॥ देवेणं भंते! महिड्डीए जाव महाणुभागे बाहिरए पुग्गले अपरियाइत्ताए पुव्वामेव बालं अछेत्ता अभित्ता पभू गंठित्तए !

पहिले पाषाणादि पुद्गल डाल और जम्बूद्वीप की प्रदक्षिणा कर उसे पुन ग्रहण करने में क्या समर्थ है ? हां गौतम! वह समर्थ है अहो भगवन् ! ऐसा क्यों कहा कि महर्धिक देव पाषाणादि डालकर यावत् लेने को समर्थ है ? अहो गौतम ! जिस पुद्गल का प्रक्षेप किया जाता है उसकी प्रथम शीघ्र गति होती है और पीछे से मंद गति होती और महर्द्धिक यावत् महानुभाग उनको पहिले पीछे शीघ्र त्वरित गति होती है, इसलिये ऐसा कहा है यावत् जम्बूद्वीपको परिवर्तना करके उस पुद्गलको ग्रहण कर सकता है ॥५॥ अहो भगवन्! महर्द्धिवाला देव यावत् महानुभागवाला देवता बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये बिना ही पहिले से बाल का छेदन भेदन किये बिना ग्रहण करने में क्या समर्थ है ? अहो गौतम

दुरूवत्ताए परिणमंति दुरूवा पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! एवं सुब्भिगंधा पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति दुब्भिगंधा पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! एवं सुरसा दुरसत्ताए दुरसा सुरसत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! एवं सुफासा दुफासत्ताए दुफासा सुफासत्ताए ? हंता गोयमा ! ॥ तचेव भंते ! सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति दुब्भिसद्दा सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! एवं सुरूवा दुरूवा एवं गंधावि रसावि फासावि तचेव सुफासा दुफासा दुफासासुफासत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! जाव परिणमंति ॥ ४ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डिए जाव महाणुभावे पुव्वामेव

पुद्गल दुष्ट शब्दपने परिणमते है और दुष्ट शब्द के पुद्गल शुभ शब्दपने परिणमते हैं अहो भगवन् ! सुरूप के पुद्गल क्या दुष्ट रूपपने परिणमते हैं अथवा दुष्ट रूप के पुद्गल सुरूप पने क्या परिणमते हैं ? हां गौतम ! ऐसे ही सुरभि गंध के पुद्गल दुरभिगंध पने परिणमते हैं और दुरभिगंध के पुद्गल सुरभिगंध पने परिणमते हैं सुरस के पुद्गल दुष्ट रसपने परिणमते हैं और दुष्ट रस के पुद्गल सुरसपने परिणमते हैं और शुभ स्पर्श के पुद्गल दुष्ट स्पर्श पने और दुष्ट स्पर्श के पुद्गल शुभस्पर्श पने परिणमते हैं इस तरह शब्द रूप, गंध रस व स्पर्श का वर्णन हुआ ॥ ५ ॥ अहो गौतम ! कोई महर्द्धिक यावत् महानुभाव देव

अमेचा पमूदीही कारेत्तएवा हस्सीकरेत्तएवा? मोतिणट्ठे समट्ठे ॥ एव चचारिविगमा॥ पढमर्बियमगेसु अपरियाइत्ता एगतरियग अछेचा अमेचा सेस तहेव तचेवण सधि छउमत्थ ण जाणति णपासति एव सुहमचण दीही करेज्जवा हस्सी करेज्जवा॥१॥ अत्थिण भते ! चदिम सूरियाण हेट्ठिपि तारारूवा अणुपि तुल्लावि समपि तारारूवा, अणुपि तुल्लावि उप्पिपि तारारूवा अणुपि तुल्लावि ? हता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चति अत्थिण चदिम सूरियाण जाव उप्पिपि तुल्लावि ? गोयमा !

गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ऐसे ही चारगमा कहना पहिले दूसरे में ग्रहण किये विना और तीसरे चौथ भाग में छेदन भेदन रहित कहना सभी भी छद्मस्थ जानने देखने समर्थ नहीं है, क्यों की दीर्घ और ह्रस्व करने की विधि बहुत ही सूक्ष्म है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! चन्द्र सूर्य के विमान नीचे जो तारा सूर्य ज्योतिषी देव हैं वे क्या क्रांति से हीन अथवा तुल्य है चंद्र सूर्य के समविभाग में तारा रूप हैं वे क्या क्रांति से हीन व तुल्य है, और चद्र सूर्य ऊपर तारा हैं व क्या क्रांति में हीन व तुल्य हैं ? अहो गौतम ! वे तारा क्रांति में हीन व तुल्य हैं अहो भगवन् ! किस कारन से चंद्र सूर्य के नीचे जो तारा रूप विमान हैं व क्रांति में हीन और तुल्य हैं यावत् उपर के तारा क्रांति में हीन व तुल्य हैं ? अहो गौतम ! जैसे २

णो तिणट्ठे समट्ठे॥देवेण भंते! महिड्डीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पुव्वामेव बाल छित्ताभित्ता पभू गण्ठित्तए? णो तिणट्ठे समट्ठे॥देवेण भंते! महिड्डीए बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पुव्वामेव बाल अछित्ता अभित्ता पभू गण्ठित्तए? णो तिणट्ठे समट्ठे॥ देवेण भंते! महिड्डीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पुव्वामेव बाल छेत्ता भेत्ता पभू गण्ठित्तए? हंतापभू॥ तचेवणं सिद्धिं छउमत्थे णजाणति न पासति,एव सुहगचण गढ्ढा॥देवेण भंते! महिड्डीए पुव्वामेव बाल अछेत्ता

यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! महर्धिक यावत् महानुभाग देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये बिना बाल के पहिले से छेदन भेद कर ग्रहण करने में क्या समर्थ है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर बालको पहिले से ही छेदन भेदन किये बिना ही ग्रहण करने में समर्थ है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! महर्धिक यावत् महानुभाग वाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर और बाल को पहिले से ही छेदन भेदन कर क्या उसे ग्रहण करने में समर्थ है? हां गौतम! वह समर्थ है इसको छद्मस्थ नहीं जान सकते हैं नहीं देख सकते हैं क्योंकी वह बहुत सूक्ष्म होती है अहो भगवन्! महर्द्धिक यावत् महानुभाग वाले देव पहिले से ही बालका छेदन भेदन किये बिना ही दीर्घ अथवा ह्रस्व करने में क्या समर्थ है? अहो

मिल्लाओ चरिमंताउ केवतिय अवाहए जोतिस चारचरंति ? गोयमा ! एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अवाहाए जोतिसए चार चरोति ॥ एव दक्खिणिल्लाओ पच्चत्थिमिल्लाओ उत्तरिल्लओ एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयण जाव चार चराति ॥ ९ ॥ लोगंताती भंते ! केवतिय अबाहाए जोतिसए पन्नत्ते ? गोयमा ! एक्कारसेहिं एक्कारएहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोतिसे पन्नत्त ॥ १० ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो केवतिय अबहाए सव्वहट्ठिल्ले तारारूवेचार चराति केवतिय अबाहाए सूरिएविमाणे चार चराति केवतिय अबहाए चदविमाणे चार चराति केवइयं अबाहाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चार चरइ ? गोयमा ! इमीसेण

चाल चलते हैं ! अहो गौतम ! मेरु पर्वत से ११२१ योजन के अन्तर से ज्योतिषी चलते हैं, ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर दिशा का जानना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! लोकान्त से लोक में कितने दूर ज्योतिषी रहे हैं ? अहो गौतम ! ११११ योजन पर ज्योतिषी है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमि भाग से कितने दूर ऊपर सब से नीचे के तारे चाल चलते हैं, कितनी दूर पर सूर्य का विमान चलता है कितनी दूर पर चंद्र का विमान चलता है और कितनी दूर पर ऊपर के तारों के विमान चलते हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमि भाग से ७९०

जहा जहाण तेसिं देवाण तवनियम बंभचेरवासाइं उक्कडाइं उस्सियाइं भवंति तहातहाण तेसिं देवाण एवं पण्णायति तंजहा अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा सेतेणट्ठेण गोयमा ! अत्थिणं चंदिमसूरियाणं जाव उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ॥ ७ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! चंदिम सूरियस्स केवतिओ णक्खत्त परिवारो पण्णत्तो ? केवतिओ महग्गह परिवारो पण्णत्तो, केवतिओ तारागण कोडा कोडीओ परिवारो पण्णत्तो ? गोयमा ! एग मेगस्सणं चंदिम सूरियस्स अट्ठासीतिगहा अट्ठावीसंच होइ णक्खत्ता एग ससीपरिवारो पण्णत्तो, एगो तारागण छावट्ठिसहस्साइं णवचेवसयाइं पंचसत्तराइं एगससी परिवारो तारागण कोडा कोडीण ॥ ८ ॥ जंबुद्दीवेणं भंते ! मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थि

तारा रूप विमान के अधिष्ठाता देवोंने पूर्व भव में तप, नियम, ब्रह्मचर्य प्रमुख उत्कृष्ट किया जैसे वे देवता कांति आदिगुणों से हीन व तुल्य होते हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा है कि चंद्र सूर्य के नीचे तारा यावत् ऊपर के तारा कांति आदिगुणों से हीन व तुल्य है ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! एक चंद्रमा के कितना नक्षत्रों का परिवार, कितने ग्रह का परिवार व कितने ताराओं का परिवार है? अहो गौतम! एक चंद्र सूर्य का अठासी ग्रह अठावीस नक्षत्र और छासठ हजार नवसो पचत्तर कोडा कोडी तारा का परिवार है ॥८॥ अहो भगवन् जम्बुद्वीप के मेरु से सूर्य के परिमाण से ज्योतिषी कितने अन्तर पर रहकर

तोण भंते ! केवइए अवाहाए चंदविमाणे चार चरइ, केवइय सव्व उवरिल्ले तारारूवे चार चरइ ? गोयमा ! सूरविमाणातोण असीएहिं जोयणेहिं अवाहाए चंदविमाणे चार चरंति, जोयणसए अबाधाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चार चरंति ॥ चंदविमाणाओण भंते ! केवतिय अबाधाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चार चरंति ? गोयमा ! चंदविमाणातोण वीसाए जोयणेहिं अबाधाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चार चरंति, एवामेव से पुव्वावरेण दसुत्तरसत जोयण बाहल्ले तिरिय मसंखेज्जे जोतिस विसए पण्णत्ते ॥ ११ ॥ जंबूद्दीवेण भंते ! कयरे नक्खत्ते सव्वब्भतरिल्ले तारारूवे चार चरंति, कयरे नक्खत्ते सव्व बाहिरिल्ले

दूर ऊपर चंद्रका विमान है और कितनी दूरपर ऊपर के तारारूप विमान हैं ? अहो गौतम ! सूर्य विमान से चंद्र विमान ८० योजन ऊपर है और १०० योजन ऊपर तारा रूप विमान हैं अहो भगवन् ! चंद्र विमान से तारा कितने दूरपर हैं ? अहो गौतम ! चंद्र विमान से ऊपर बीस योजन तारारूप हैं यों सब मीलकर ११० योजन में तीरछे असंख्यात योजन पर्यंत ज्योतिषी के विमान कहे हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में कौनसा नक्षत्र सब के अभ्यंतर तारारूप में चाल चलता है, कौनसा नक्षत्र सब से बाहिर तारारूप में चाल चलता है कौनसा नक्षत्र सब से ऊपर तारारूप चाल चलता है और

रयणप्पभाए पुढवीए बहु समरमणिज्ज भूमिभागाओ सत्तहिं णउएहिं जोयण सतेहिं अवाहाए सव्वहेट्ठिल्ले तारारूवे चार चरति अट्ठहिं जोयण सतेहिं अवाहाए सूरविमाण चार चरइ, अट्ठहिं असीएहिं जोयण सएहिं अवाहाए चदविमाण चारचरइ नवहिं जोयण सएहिं अबाधाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चार चरति॥ सव्वहिट्ठिल्लाओण भंते ! तारारूवातो केवतिय अवाहाए सूरविमाण चार चरइ, केवतिय आवाहाए चदविमाणे चार चरइ, केवतिय अवाहाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति ? गोयमा ! सव्वहेट्ठिल्लातोण दसहिं जोयणेहिं सूरविमाणे चार चरति, णउएहिं जोयणेहिं अबाधाए चदविमाणे चार चरति, दसुत्तरे जोयणसए अवाहाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चार चरति ॥ सूरविमाण

योजन ऊंचे सब ज्योतिषी के नीचे तारा मंडल चलता है, ८०० योजन ऊंचे सूर्य विमान चलता है, ८८० योजन ऊंचा चन्द्र विमान चलता है, ९०० योजन ऊंचा ऊपर के तारा रूप विमान चलते हैं अहो भगवन् ! सब से नीचे के तारारूप विमान से कितने दूर पर सूर्य का विमान चलता है, कितने दूर पर चंद्र का विमान चलता है और कितना दूर पर ऊपर के तारा रूप मंडल है ? अहो गौतम ! सब से नीचे के तारा रूप विमान से १० योजन ऊपर सूर्य का विमान चलता है, ९० योजन ऊपर चंद्र का विमान चलता है और ११० योजन ऊंचे ऊपर के तारा विमान चलते हैं अहो भगवन् सूर्य विमान से कितनी

चदविमाणाण भंते ! केवतिय आयाम विक्खंभेण केवइय परिक्खेवेण केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! छप्पन्नएगसट्ठिभागे जोयणस्स आयाम विक्खंभेण, त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, अट्ठावीस एगसट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण पण्णत्ते॥ सूरविमाणस्स सच्चेव पुच्छा ? गोयमा ! अडयालीस एगसट्ठिभागे जोयणस्स आयाम विक्खंभेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, चउव्वीस एगसट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण पण्णत्ते, एवं गहविमाणेवि अद्ध जोयण आयाम विक्खंभेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, कोस बाहल्लेण पण्णत्ते, ताराविमाणेणं कोस आयाम विक्ख-

॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! चद्र विमान कितना लम्बा चौडा व कितना परिधिवाला व कितना जाडा है ? अहो गौतम ! एक योजन के ६१ भाग में से ५६ भाग का लम्बा चौडा है, इस से तीन गुनी से अधिक परिधि है और एक योजन के एकसठिये अट्ठाइस भाग का जाडा है सूर्य विमान की पृच्छा? अहो गौतम ! एक योजन के एकसठिये अडतालीस भाग का लम्बा चौडा है इससे कुछ अधिक तीन गुनी परिधि है और एक साठये २८ भागका जाडा है ग्रह विमान आधा योजन का लम्बा चौडा है तीन गुनी से अधिक परिधि है, और एक कोस जाडा है तारा विमान एक कोश का लम्बा चौडा है

चारं चरंति, कयरे नक्खत्ते सव्व उवरिल्लं चार चरंति, कयरे णक्खत्ते सव्व हेट्ठिल्ले तारारूवे चार चरंति ? गोयमा! जम्बूद्दीवे अभिइ णक्खत्ते सव्वब्भिंतरिल्ले तारारूवे चार चरंति, मूल णक्खत्ते सव्व बाहिरिल्ल तारारूवे चार चरंति, साती णक्खत्ते सव्वुप्परिल्ल जाव चरंति, भरणी णक्खत्त सव्व हेट्ठिल्ल तारारूवे चार चरंति ॥१२॥ चंदविमाणेण भंत ! किं संठित ? गोयमा ! अद्ध कविट्ठ संठाण संठित, सव्व फालि-तामये अब्भूगतमूसितप्पहसिते वण्णओ, एव सूरविमाणावि, एव गहविमाणावि, नक्खत्त विमाणावि, ताराविमाणावि, सव्वे अद्ध कविट्ठ संठाण संठिते ॥ १३ ॥

कौनसा नक्षत्र सब से नीचे के तारारूप में चाल चलता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप में अभिजित नक्षत्र सब से अभ्यंतर तारारूप में चाल चलता है मूल नक्षत्र सब से बाहिर के तारारूप में चाल चलता है स्वाति नक्षत्र सब से उपर यावत् चाल चलता है और भरणि नक्षत्र सब से नीचे के तारारूप में चाल चलता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमान का क्या संस्थान कहा हुवा है ? अहो गौतम ! आधा कपिठ फल के संस्थान है सब स्फटिक रत्नमय है अभ्युद्गत कांतिवाला वगैरह वर्णन सब पूर्ववत् जानना ऐसे ही सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा विमान का जानना ये सब अर्ध कपिठ के संस्थान वाले

ञ्चितगतीण ऊसियसुणिमियसुजाय अफोडियाणगुलाण वयरामय णक्खाण वयरामय दताण वयरामयदाढाण तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज तालुयाण तवणिज्ज जोतगसुजोचि याण कामगमाण पीतिगमाण मणोगमाण मणोरमाण मणोहराण अमियगतीण अमिय बलवीरियपुरिसक्कार परक्कमाण महय अफाडितसीहनाइय बोल कलयलरवण महुरेण मणहरेणय पूरेता अबरादिसाओय सोभयता चचारिदेव साहस्सीउ सीहरूव धारिण देवाण पुरिच्छिमिल्लं बाहं परिवहाति ॥ ५ ॥ चदविमाणस्सण दक्खिणेण सेयाण

ष्ठन की गति गर्भवत्र है, ऊंचे से नीची डालनी हुई उस की पुच्छा है, वज्र रत्नमय नख हैं, वज्र रत्नमय दाढा है, रक्त सुवर्णमय जिव्हा और तालु है, रक्त सुवर्णमय ओतर से जोते हुवे हैं, इच्छानुसार चलने वाले प्रीतिकारी गमन वाले, मन जैसे शीघ्र गति वाले, मनोरम गति वाले, मनोहर गति वाले, अमित गति, बल, वीर्य, पुरुषाकार व पराक्रम वाले हैं वह २ आस्फोटित सिंह नाद कलकल और मनोहर शब्द से आकाश को पूरते हुवे, दशोंदिशि को शोभित बनाते हुवे चार हजार देव पूर्व दिशा की बाहा उठाकर चलते हैं ॥ ८ ॥ चद्रमा के दक्षिण दिशा में चार हजार देव हस्ती के रूप से विमान उठते हैं वे हस्ती श्वेत शुभकांति वाले शंख दल समान विमल निर्मल दधि पिण्ड, गोक्षीर, समुद्र

भेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, पंचधणुसयाइ बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ १४ ॥ चंदविमाणेणं भंते! कतिदेव साहस्सीओ परिवहंति? गोयमा! सोलस देव साहस्सीओ परिवहंति, चंदविमाणस्सणं पुरत्थिमेणं सेयाणं सुभगाणं सप्पभाणं संखतलविमलनिम्मल दधिघण गोखीर फेण रययणिगर पगासाणं थिर लट्ठ पउट्ट पीवर सुसिलिट्ठ सुतिक्ख-दाढा विडंबियमुहाणं रत्तुप्पल पत्तमउय सूमाल तालु जीहाणं, पसत्थ सलट्ठ वेरुलिय भिसंत कक्कडक्खाणं विसाल पीवरोरु पडिपुण्णविउल खंधाणं मिउविसत्तय पसत्थ सुकुमाल सुहुम लक्खण विच्छिण्ण केसरसडोव सोभिताणं चंकमिय ललियपुलिय धवलग-

कुछ अधिक तीन गुनी परिधि है, और ५०० धनुष्य का जाडा है ॥ १४ ॥ अहो भगवन्! चंद्र विमानको कितने हजार देव उठाते हैं? अहो गौतम! सोलह हजार देव चंद्र विमान को उठाते हैं जिन में से चार हजार देव पूर्व दिशा में सिंहरूप धारन कर उठाते हैं उनका वर्णन करते हैं वे सिंह सुभग प्रभावाले शंख तल जैसे विमल, निर्मल समुद्र, गोदुग्ध, समुद्रका फेन, चंद्र जैसा श्वेत हैं स्थीर स्पष्ट अतीव पुष्ट स्निग्ध व गोल तीक्ष्ण दाढा सहित मुखवाले हैं उन की जिव्हा और तालु रक्त कमल जैसा सुकोमल है उन के नख प्रशस्त वैडूर्यरत्नमय और कर्कश तीक्ष्ण हैं, विस्तीर्ण और पुष्ट उरु स्कंध हैं, मतिपूर्ण विपुल स्कंध हैं, मृदु, विशद प्रशस्त, सूक्ष्म लक्षणयुक्त व विस्तार वाली केसरा का आटोप है, चंक्रमीता, ललिता, पुलिता, गति और धावन से

वट्टरामयातिक्खलट्ठअंकुस कुंभजुयलंतरोडियाणं तवणिज्जसुबद्ध कच्छदप्पि
यबलुद्धुराण जंबूणयाविमलघणमंडलवयरामय लालाललियताल णाणा मणिरयण
घंटपासग रययामय रज्जुबद्धलंबिय घंटाजुयल महुर समणहराण अल्लीणपमाणजुत्त
वट्टियसुजाय लक्खण पसत्थ रमणिज्ज वालगत्त परिपुंछणाण उवचिय पडिपुण्ण
कुम्मचलणलहुविक्कमाण अंकामयणक्खाण तवणिज्जतालुयाण तवणिज्ज जीहाण
तवणिज्ज जोत्तग जोतियाण कामगमाण पीतिगमाण मणोगमाण मणोहराण अमिय
गईण अमियबलवीरियपुरिसक्कार परक्कमाण महयागंभीर गुलगुलाइयरवेण महुरेण

तिलक से परिमंडित हैं उन की गरदन में अनेक प्रकार के मणिरत्नमय घण्टाएं युक्तलिये आभूषण हैं वैडूर्य रत्नमय दण्ड वाला निर्मल वज्ररत्नमय तीक्ष्ण लष्ट अंकुश कुम्भस्थल पर रखा है रक्त सुवर्णमय कम्मर का बंध है जम्बूनद रत्नमय निर्मल निबिड मंडल है वज्ररत्नमय लोल हैं अनेक मणिरत्नमय घंटा व पासा हैं, चांदी की रस्सी से बंध बंधे हुवे हैं उन घंटा युगल के शब्द से मनोहर दीखते हैं छप रहित प्रमाणोपेत गोल अच्छे लक्षण वाली प्रशस्त रक्त सुवर्णमय जिव्हा व तालू है रक्त सुवर्णमय जोत से जोते हुवे हैं, उन का गमन इच्छानुसार, प्रीतिकारी, मन के अनुसार, व मनोहर है अपरिमित गति, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रमवंत, हैं बडे गंभीर गुलगुलाट और

सुभगाण सुप्पभाण समतल विमल णिम्मल दधिघण गोक्खीरफेण रयाणियर प्पकासाण वयरामयकुंभजुयल सुट्ठित पीवरवर वइरसोडावित क्खित्त सुरत्त-पउमप्पकासअब्भुण्णवमुहाण तवाणिज्ज विसाल चवल चलंत चवल कण्ण विमलउज्जुलाण मधुवण्ण भिसंत णिद्धपिंगलपत्तल तिण्णमाणि रयणलो-यणाण अब्भुगतमउलमल्लिया धवल सरिस संठित णिव्वणदढ कसिण फालियामय सुजाय दंत मुसलोवसोभिताण कंचणकोसपविट्ठ दंतग्ग विमल मणिय रयणरुइलपेरंत चित्तरूवग्ग विराइयाण तवणिज्जविसाल तिलग पमुह परिमंडिताण णाणामणिरयण मुलिये गेवेज्जबद्धगलयवरभूसाण वेरुलिय विचित्त दंडनिम्मल

फेन और चांदी समान प्रकाश वाले हैं वज्ररत्नमय कुंभस्थल के युगल में पुष्ट वज्ररत्नमय सूंडादंड से देदीप्यमान रक्त पद्म समान मुख है रक्त सुवर्णमय विस्तार वाले अति चपल नेत्र हैं, मधुर वर्ण से देदीप्यमान स्निग्धपीलता हुवा पीला छायादि दोष रहित काले पीले व श्वेत वर्ण वाले माणिरत्न मय नेत्र हैं अति ऊंचे कोमल मालतिपुष्प जैसे धवल, छिद्र रहित दृढ देदीप्यमान स्फटिक रत्नमय मातिरंव दो मसल दंतमूशल हैं उन दंतमूशल के अग्रभाग में सुवर्णवलय भरे हुवे हैं [illegible] मणिरत्न से मनोहर दांत के अग्र भाग विविध रूप से विराजित हैं रक्त सुवर्णमय विशाल

पीवरसुसठितकडीण उलमपलम लक्खण पसत्थ रमणिज्ज बालगडाणं समखुर वालिधराण समलिहितातिक्खग्ग गुप्पसिंगाण तणुसुहुम सुजाताणिद्ध लोमच्छविधराण उवचित मसल विसाल पडिपुण्ण खधपमुहसुदराण वेरुलिय भिसत कडक्खसु णिरिक्खणीण जुत्तप्पमाण पधाण पसत्थ रमणिज्ज गग्गरगल, सोभिताण घग्घरग सुबद्धकठ मडियाण,माणामणि कणगरयण घटिये वेयत्थग सुकय रातिय मालियाणवरघटा गलगललिय सोभत सस्सिरीयाण पउमुप्पल सगल सुरभिमाला विभूसियाणं वइरखुराण विविह विक्खुराण फलियकामयदताण, तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज तालुयाण तवणिज्ज

मतिपूर्ण विपुल विस्तार वाले कपोल हैं, किंचित् नम्न ओष्ट हैं, घण निचित श्रष्ट लक्षण युक्त चक्रामित, ललित पक्रवाली चपल गाति है, पुष्ट गोल संस्थित कटिभाग है, अवलम्ब मलच ऐसे लक्षण युक्त प्रशस्त रमणिक पुछ है, समखुर हैं, समान व तीक्ष्ण शृंग हैं, पतली सूक्ष्म सातिवत स्निग्ध रोमराजी है, पुष्ट मांसल विशाल मतिपूर्ण वैडूर्य रत्नमय देदीप्यमान कटाक्षवाला उन का निरीक्षण है, प्रमाणोपेत प्रधान प्रशस्त रमणिक गलकंबल है, घुघरवाले कण्ठ में धारन किया है, अनेक मणिरत्नोंवाला कण्ठ आभूषण से बनाइ हुई वरमाला धारन की है प्रधान घण्ट से सुशोभित सश्रीक हैं पद्मवर उत्पल कमल की सुगंधमाला से विभूषित हैं, उन के खूर वज्ररत्नमय हैं, स्फटिक रत्नमय दांत हैं, रक्त सुवर्णमय जिव्हा

देवाण दक्खिणिल्ल बाह परिवहति ॥ ६ ॥ चंदविमाणस्स पच्चत्थिमेण सेयाण सुभगाण सप्पभाण चकमिय ललिय पुलित चवल चवल ककुह सीलाण सण्णय पासाण सगयपासाण सुजायपासाण मियमाइत पीणरतिपासाण झसविहग सुजातकुच्छीणं पसत्थ णिद्धमध गलित भिसत पिंगलनक्खाण विसाले पीवरोरुय पडि पुण्णविपुलखधाण वट्ट पडिपुण्णविपुल कण्णकडियाण, इसि आणयवसणो वट्टाण घणणिचित सुबद्धलक्खणुण्णत चकमितललित चलचवल गव्वितगतीण वदिय

मधुर मनोहर शब्द से आकाश पूर्ण और दशों दिशी को शोभित करते हुए चार हजार देव हाथी के रूप से दक्षिण दिशा की बाहा उठाते हैं ॥ ६ ॥ चंद्र विमान से पश्चिम दिशा में चार हजार देव वृषभ के रूप से विमान उठाते हैं वे वृषभ श्वेत, सुभग कान्ति वाले हैं चल के पासे (पसली) चक्रमित, कंपित व पुलित गति से हलन चलन वाले स्वरूप से सुशोभित हैं पीछे हुवे हैं, सुजात हैं प्रमाणोपेत और आनंदकारी हैं मत्स्य अथवा पक्षी जैसी चल की कुक्षि है मत्स्य मधुसमान पीली देदीप्यमान मोक्ष चक्षु है चल के विस्तीर्ण स्वरूप है गोल

घारण तिवइ गईण सिक्खितगतीण सण्णतपासाण सगयपासाण सुजाय पासाण मितमाइतपीणरइयपासाण असविहगसुजात कुच्छीण पीणपीवर वट्टित सुसंठित कडीण उलंब पलंब लक्खण पसत्थ रमणिज्ज वालगंडाण तणुसुहुम सुजाय णिद्धलोमच्छविधराण मिउविसय पसत्थ सुहुम लक्खण विकिण्ण केसरवालिघराण ललियलास गालवाड वरभूसणाण मुहमंडगोपुच्छ चमर थासग परिमंडिय कडीण तवणिज्ज खुराण तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज जोतग सुजोतियाण, कामगमाण पीतिगमाण मणागमाण मणोहराण अमितगतीण अमिय बलवीरिय पुरिसक्कार परक्कमेण महया

पसली नम्र, सुजात, परिमित, पुष्ट हैं मत्स्य अथवा पक्षी जैसी कुक्षि है उस का व पुष्ट कटिभाग गोल है, अवलम्ब ऐसे लक्षणोंवाला पुच्छ हैं पतली स्निग्ध सूक्ष्म सुजात रोमराजी है, मृदु सुकुमाल विशाल सूक्ष्म और लक्षणोपेत स्कंध के केश (केशवाली) है, ललित लासक नामक उत्तम आभूषण के धारक हैं, सुखकारी गाय पुच्छ के चामर और थोपग आभरण विशेष से उन का कटि प्रदेश परिवारित है रक्त सुवर्णमय खुर है, रक्त सुवर्णमय जिव्हा और तालु है रक्त सुवर्णमय जोत से बांधे हुए हैं इच्छानुसार उन का गमन हैं और भी उन का गमन प्रीतिकारी और मन को अनुसरता हुआ है अमित गति बल, वीर्य पुरुषाकार और पराक्रम है ये बड़े २ हेषारव अथवा किलकिलाट महा

जोत्ता सुज्जातियाण कामगमाण पीतिगमाण मणोगमाणं मणोहराण अमियगतीण अमियबलवीरिय पुरिसक्कार परक्कमाण महया गंभीरगज्जिय रवेण महुरेण महया मणहरेण पूरेत्ता अंबरंदिसाओय सोभयंता चत्तारि देव साहस्सीओ वसहरूवधारिण देवाण पच्चत्थिमिल्ल बाह परिवहंति ॥ ७ ॥ चंदविमाणस्सण उत्तरेण सेताणं सुभगाणं सुप्पभाण जच्चाण वरमल्लिहायणाण हरिमेलामउल मल्लियच्छीण घणणिचित सुबद्ध लक्खणुण्णत चंकमितललित पुलिय चल चवल चंचल गतीण, लंघण वग्गण धावण

और वाम्रू हैं, रक्त सुवर्णमय जोत से जोते हुए हैं, इच्छानुसार प्रीतिकारी मनानुकूल व मनोहर चन का गमन है, अमित गति, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम युक्त हैं, बडे गंभीर शब्द से गर्जारव करते हुवे मधुर मनोहर शब्द से आकाश पूरते हुवे दशोदिशी में शोभा करते हुए चार हजार देव वृषभ के रूप से पश्चिम दिशी की बाहा उठाकर चलते हैं ॥ ७ ॥ चन्द्र विमान से उत्तर में चार हजार देव अश्व के रूप से विमान उठाकर चलते हैं, उन का वर्णन करते हैं वे श्वेत, उज्वल, सुभग, जातिवंत हैं, तरुण हरिमेला (वनस्पति विशेष) मल्लिका वनस्पति उन समान उज्वल उन के नेत्रों हैं, निबिड मांसल जैसे उन्नत चंक्रमित ललित पुलित चपल चपल गति है, उल्लंघना, कूदना, दौडना, धणिवध, चलना, त्रिपदी छेदना ऐसी गति है उन की

तुरगरूवधारीण देवाण उत्तरिल्लं वाह परिवहति ॥ १० ॥ एव णक्खत्त विमाण स्सवि पुच्छा ? गोयमा ! चत्तार देव साहस्सीओ परिवहति तजहा-सीहरूव धारीण देवाण एगा देव साहस्सी, पुरच्छिमिल्ल वाह एव चउद्दिसिंपि, एव तारगाणवि णवरिं दो देव साहस्सीउ परिवहति तजहा-सीहरूव धारीण देवाण पचदेवसया पुरच्छिमिल्ल वाह परिवहति, एव चउद्दिसिंपि ॥ ११ ॥ एतेसिण भते ! चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्त ताररूवाण कयरे कयरेहिंतो सिग्घगतीवा मदगतीवा ? गोयमा ! चद हिंतो सूरा सिग्घगती, सूरहिंतो गहा सिग्घगती, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगति, णक्खत्ते हिंतो तारासिग्घगती, सव्वप्पगती चदा, सव्वासिग्घगतीओ तारारूवे ॥ ११ ॥ एएसिण

दो हजार देव उत्तर दिशा में अश्व रूप से हैं ॥ १० ॥ ऐसे ही नक्षत्र विमान की पृच्छा कहना नक्षत्र विमानको चार हजार देव उठाते हैं, जिनमें से सिंह रूप से एक हजार देव पूर्व दिशा में, यावत् एक हजार देव उत्तर दिशा में अश्व रूप से हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! चद्र सूर्य ग्रह, नक्षत्र और ताराओं में से किस की गति मद है और किस की गति शीघ्र है ? अहो गौतम ! चद्र से सूर्य की गति शीघ्र है, सूर्य से ग्रह की गति शीघ्र है, ग्रह से नक्षत्र की गति शीघ्र है, और नक्षत्र से तारा की शीघ्र है सब से मद गति चद्र की है और सब से शीघ्र गति तारा की है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र

हयहेसिय किलकिलाइय रवेण महुरेणय मणहरेणय पूरिंता अंबरदिसाओय सोभयंता चत्तारि देव साहस्सीओ हयरूवधारीण देवाण उत्तरिल्लं बाहं परिवहंति, ॥ ८ ॥ एवं सूरविमाणस्सवि पुच्छा ? गोयमा ! सोलस देव साहस्सीओ परिवहंति ॥ ४ ॥ पुव्वकमेण, ॥ १ ॥ एवं गहविमाणाणं भंते ! कतिदेव साहस्सीओ परिवहंति ? गोयमा ! अट्ठदेव साहस्सीओ परिवहंति तंजहा सीहरूवधारीण दो देव साहस्सीओ पुरच्छिमिल्लं वाहं परिवहंति, दाहिणेणं गयरूव धारीण दो देव साहस्सीउदाहिणिल्लं वाहं दो देव साहस्सीओ वसभरूवधारीण, देवाण पच्चत्थिमिल्लं वाहंपरिवहंति दो देव साहस्सीओ

मधुर, मनोहर शब्द से आकाश पूरते हुवे चार हजार देव अश्वरूप से उत्तर दिशाके चंद्र विमान को धारण करते हैं ॥ ८ ॥ ऐसे ही सूर्य विमान की पृच्छा करना ? अहो गौतम ! सोलह हजार देव सूर्य विमान उठाते हैं इस का क्रम भी पूर्वानुसार जानना अर्थात् चार हजार देव पूर्व में सिंहरूप से हैं दक्षिण दिशामें चार हजार देव हाथी के रूप से, पश्चिम दिशा में चार हजार देव वृषभ रूप से और उत्तर दिशा में चार हजार देव अश्व रूप से हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! ग्रह विमान को कितने हजार देव उठाते हैं ? अहो गौतम ! आठ हजार देव ग्रह विमान उठाते हैं जिस में से दो हजार देव पूर्व में सिंह रूप से, दो हजार देव दक्षिण में हस्ती रूप से दो हजार देव पश्चिम में वृषभ रूप से और

उक्कोसेण दोगाउयाइ, ताराख्वे जाव अतरे पण्णत्ते ॥ ३ ॥ चदस्सणं भते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कतिअग्गमाहिसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! चत्तारि अग्गमहिसीउ पण्णत्ताओ तजहा—चदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभकरा ॥ तत्थण एगमेगाए देवीए चत्तारि २ देवीए चत्तारि २ देवी साहस्सीओ परिवारो पण्णत्तो

आश्रो को अन्तर है वह जघन्य२६६ योजन उत्कृष्ट १२२४२ योजन का अतर है और निर्व्याघात आश्री जघन्य ५०० धनुष्य उत्कृष्ट दो गाउ का अंतर है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्रमा को कितनी अग्र महिषियों कही है ? अहो गौतम ! चार अग्रमहिषियों कही है जिन के नाम—चंद्रप्रभा, दोषिनाभा, आर्चिमाली और प्रभंकरा एक देवि को चार २ हजार देवी का

---

१ निषध नीलवंत पर्वत ४०० योजन ऊंचे हैं उपर ५०० योजन ऊंचे कूट हैं वे मूल में ५०० योजन लम्बे चौडे हैं मध्य में ३७५ योजन और उपर २५० योजन लम्बे चौडे हैं कूटके दोनों आठ २ योजन दूर तारामंडल चलता है इस से २५०+१६= २६६ योजन का अंतर रहा.

२ दस हजार योजन का मेरु पर्वत चौडा है, इन के दोनों पस ११२१ योजन दूर तारा मंडल चलता है इस तरह तीनों के योजन मील कर १२२४२ योजन के अंतर हुवा

भंते ! चंदिम सूरिय जाव तारारूवाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पड्ढीयावा महिड्ढीयावा ? गोयमा ! तारारूवेहिंतो णक्खत्ता महिड्ढिया, णक्खत्तेहिंतो गहामहिड्ढीया, गहेहिंतो सूरामहिड्ढीया, सूरेहिंतो चंदामहिड्ढीया ॥ सव्वप्पड्ढिया तारा सव्वमहिड्ढीया चंदा ॥ १२ ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे तारारूवस्सय २ एसणं केवतिय अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे अंतर पण्णत्ते तंजहा-वाघातमेय निव्वाघातमेय, तत्थणं जेसे वाघातिमे से जहण्णेणं दोण्णिछावट्ठे जोयणसये उक्कोसेणं बारस जोयण सहस्साइं दोण्णिय बायाले जोयणसए तारारूवस्सय २ आबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ तत्थणं जेसे णिव्वाघातिमे से जहण्णेणं पंचधणुसयाइं

सूर्य यावत् तारा में से कौन २ अल्प ऋद्धि वाले हैं और कौन २ महा ऋद्धि वाले हैं ? अहो गौतम ! तारा से नक्षत्र महा ऋद्धि वाले हैं, नक्षत्र से ग्रह महा ऋद्धि वाले हैं, ग्रह से सूर्य महा ऋद्धि वाले हैं और सूर्य से चंद्र महा ऋद्धि वाले हैं सब से अल्प ऋद्धि वाले तारा हैं और महर्धिक चंद्र हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में तारा २ में परस्पर कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! अंतर के दो भेद कहे हैं तद्यथा व्याघात आश्री और निर्व्याघात आश्री उस में के व्याघात

समुग्गएसु बहुयाओ जिणस कहाओ चिट्ठति, जाओण चंदस्स जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णा अण्णेसिंच बहूण जोतिसियाण देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ तासिण पणिहाय नापभू चंद जोइसराया चंदवडेंसए विमाणे सभाए सुम्माएचंद सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ॥ अदुत्तरचण गोयमा ! पभू चद जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चंदसि सीहासणसि चउर्हि सामाणिय साहस्सीहिं जाव सोलसहिं आयरक्ख देव साहस्सीहिं अन्नेहिय बहूहिं जोतिसिएहिं देवेहिय देवीहिय सद्धि सपरिवुडे

समर्थ नहीं है ? अहो गौतम ! चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा को चद्रावतंसक विमान में सुधर्मा सभा में माणवक चैत्य है वज्ररत्नमय गोल डब्बे हैं जिन में जिनदाढा है ये जिनदाढा ज्योतिषी के इन्द्र व ज्योतिषी के राजा चंद्र यावत् अन्य ज्योतिषी देव व देवियोंको अर्चनीय पूजनीय हैं यावत् सेवा करने योग्य हैं इस से अहो गौतम ! चद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा के चन्द्र विमानकी सुधर्मा सभामें चंद्र सिंहासन पर रहा त्रुटित सरूपासवाली देवियों साथ भोग भोगनेमें समर्थ नहीं है परतु वह चद्रावतसक विमान में सुधर्मा सभा में चद्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक यावत्

पभूण ततो पुणमेगा देवी अन्नाइं चत्तारि २ देवी साहस्साइं परिवार विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेण सोलस देवी साहसीओ पण्णत्ताओ सेत्त तुडिए ॥ १४ ॥ पभूण भंते ! चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदसिसीहासणंसि तुडिएण सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नो पभू चंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदसि सीहासणंसि तुडिएण सद्धिं विपुल भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? गोयमा ! चंदस्सण जोतिसिंदस्स जोइसरण्णो चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए माणवगंसि चेतियखंभंसि वइरामतेसु गोलवट्ट

परिवार है यों सोलह हजार देवी जानना और प्रत्येक अग्रमहिषी चार २ हजार रूप की विकुर्वना करने में समर्थ होवे यों सब मीलकर देवियों का सोलह हजार का परिवार हुवा यह त्रुटित सम्पूर्ण हुई ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्रावतंसक विमान में सुधर्मा सभा में चंद्र सिंहासन पर त्रुटित साथ दिव्य भोगोपभोग भोगते हुवे विचरने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् यह भोग भोगने में समर्थ नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से चंद्र नाम के ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्रावतंसक विमान में यावत् त्रुटित साथ भोग भोगने में

जयती, अपराजिता, तेसिंपि तहेव ॥ १५ ॥ चदविमाणेण भंते ! देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? एव जहा ठिती पदे तहा भाणियव्वा जाव ताराण ॥ १६ ॥ एतेसिण भंते ! चंदिम सूरिय गह नक्खत्ततारारूवाण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! चंदिमसूरियाए तेण दोण्णवि तुल्ला सव्वत्थोवा, संखेज्जगुणा णक्खत्ता, संखेज्जगुणागहा, संखेज्जगुणाओ तारगाओ ॥ जोइस उद्देसओ सम्मत्तो ॥ २ ॥ * * * * * * *

कहिण भंते ! वेमाणियाण देवाण विमाणा पण्णत्ता ? कहिण भंते ! विमा-

की चार अग्रमहिषी कहना उपथा-विजया, वैजयंति जयंती और अपराजिता ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमानवासी देव की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जैसे स्थान पद में स्थिति कही वैसेही कहना यावत् तारा की जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! इन चंद्र सूर्य, ग्रह नक्षत्र और ताराओं में कौन किससे अल्प बहुत तुल्य और विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! चंद्र और सूर्य परस्पर तुल्य और सब से थोडे हैं, इस से नक्षत्र संख्यात गुने, इस से ग्रह संख्यात गुने और इस से तारा संख्यात गुने अधिक हैं, यों ज्योतिषी का उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २ ॥ :: :: :: :: :: ::

अहो भगवन् ! वैमानिक देव के विमान कहां कहे हैं ? और वैमानिक देव कहां रहते हैं ? अहो

महया हय णट्ट गीय वाइय तंतीतल ताल तुडिय घणमुइंग पडुप्पवाइय रवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए, केवलपरियार तुडिएण सद्धिं भोग भोगाइ घोसाढिए (बुद्धीए) नो चेवण मेहुणवत्तिय ॥ १४ ॥ सूरस्सण भंते ! जातिसिंदस्स जोतिसरन्नो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा सूरिप्पभा, आतयाभा, अच्चिमालि, पभंकरा ॥ एवं अवसेस जहा चंदस्स णवरिं सूरवडेंसकेविमाणे सूरंसि सीहासणंसि तहेव सव्वेसिं विगहाईण चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा- विजया, वेजयती,

सामानिक हजार आत्मरक्षक और अन्य बहुत ज्योतिषी देव व देवियों के साथ परवरा हुआ बडे नृत्य गीत, वादित्र, तंती, तल, ताल, त्रुटित, घण, मृदंग के शब्द से दिव्य भोगोपभोगता हुआ विचरता है देवियों के रूप को मात्र दृष्टि से देखे परंतु मैथुन वार्ता करे नहीं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! सूर्य नामक ज्योतिषी के इन्द्र व ज्योतिषी के राजा को कितनी अग्रमहिषी कही ? अहो गौतम !, चार अग्रमहिषी कही जिनके नाम सूर्य प्रभा, आर्ता प्रभा, अर्चीमालीनी और प्रभंकरा शेष अधिकार सब चन्द्रवत् जानना परंतु इतना विशेष कि सूर्यावतंसक विमान और सूर्य सिंहासन कहना. वैसे ही सब ग्रहादिक ज्योतिषी

बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए चोद्दसदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए सोलसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ एव देवीणवि पुच्छा ? गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो अब्भितरिसाए परिसाए सत्त देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए छच्चदेवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए पचदेवीसया पण्णत्ता ॥ २ ॥ सक्कस्सण भतेदेविंदस्स देवरन्नो अब्भितरियाए परिसाए देवाण केवइय कालठिइ पण्णत्ता, एव मज्झिमियाए, बाहिरियाएवि ? गोयमा ! सक्कस्सण देविंदस्स देवरन्नो देवाण अब्भितरियाए परिसाए देवाण पचपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, मज्झि-

आभ्यतर परिषदा में बारह हजार देव, मध्य की परिषदा में चौदह हजारदेव, और बाहिर की परिषदा में सोलह हजार देव कहे हैं अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र की आभ्यतर परिषदा में कितनी देवी, मध्य परिषदा में कितनी देवी और बाहिर की परिषदा में कितनी देवी कही हैं ? अहो गौतम! आभ्यतर परिषदा में सातसो देवी, बीच की परिषदा में छ सो देवी और बाहिर की परिषदा में पांच सो देवी कही हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र की अभ्यंतर परिषदा में देवो की कितनी स्थिति कही, बीचकी परिषदा के देवोंकी कितनी स्थितिकही और बाहिर परिषदा के देवों की कितनी

णियादेवा परिवसति ! जहा ट्ठाणपदे तहा सव्व भाणियव्व, णवरं परिसाओ भाणियव्वाओ जाव सक्के अण्णेसिंच बहुण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय जाव विहरति ॥ १ ॥ सक्कस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा—समिता चंडा जाया, अब्भितरिया समिता, मज्झिमियाचंडा, बाहिरिया जाया ॥ २ ॥ सक्कस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरिया परिसाए कतिदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ? मज्झिमियाए बाहिरियाए तहेव पुच्छा ? गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरियाए परिसाए

गौतम ! जैसे स्थानपद में वर्णन किया वैसा ही यहां सब कहना विशेष में यहां तीन परिषदा जानना यावत् शक्र देवेन्द्र और अन्य बहुत सौधर्म विमानवासी देव और देवियों का अधिपतिपना करता हुवा यावत् विचरता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र की कितनी परिषदा है ? अहो गौतम ! तीन परिषदा कही हैं जिन के नाम—समिता, चंडा और जाया आभ्यंतर की समिता, मध्य की चंडा और बाहिर की जाया ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र की आभ्यंतर परिषदा में कितने देव रहते हैं, मध्य परिषदा में कितने देव कहे हैं और बाहिर की परिषदा में कितने देव कहे हैं ? अहो गौतम ! शक्रदेवेन्द्र की

परिसाए दसदेवमाहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए चोद्दस देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ॥ देवीण पुच्छा? गोयमा! अब्भिंतरियाए परिसाए णव देवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए अट्ठ देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए सत्त देवीसया पण्णत्ता ॥ देवाण ठिती पुच्छा? गोयमा! अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण सत्तपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए छपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता बाहिरियाए पचपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥ देवीण पुच्छा? गोयमा! अब्भिंतरियाए परिसाए पचपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए

में दश हजार देव, बीच की परिषदा में बारह हजार देव और बाहिर की परिषदा में चौदह हजार देव हैं देवी की पृच्छा? अहो गौतम! आभ्यंतर परिषदा में नव सो देवी, मध्य परिषदा में आठ सो देवी और बाहिर की परिषदा में सात सो देवी हैं देवों की स्थिति की पृच्छा? आभ्यंतर परिषदा के देवों की सात पल्योपम की, मध्य परिषदा के देवों की, छ पल्योपम और बाहिर के परिषदा के देवों की पांच पल्योपम की स्थिति कही है देवियों की स्थिति की पृच्छा? आभ्यंतर परिषदा की पांच पल्योपमकी मध्य परिषदा की चार

मियाए परिसाए देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाएदेवाण तिण्णपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥ अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण तिन्नि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए दोण्णि पलिउवमाइ ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए एग पलिओवम ठिती पण्णत्ता, अट्ठो सोचेव जहा भवणवासीण कहिण भंते ! ईसाणगाणं देवाण विमाणा पण्णत्ता ? तहेव सव्व जाव ईसाणेइत्थ देवे जाव विहरति ॥ ४ ॥ ईसाणस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तउपरिसाओ पण्णत्ताओ तजहा समिता चंडा जाया, तहेव सव्व, णवरिं अब्भिंतरियाए

स्थिति कही ! अहो गौतम ! शक्र देवेन्द्र के अभ्यंतर परिषदा के देवोंकी पांच पल्योपमकी मध्य परिषदा के देवों की चार पल्योपम की और बाहिरकी परिषदा के देवों तीन पल्योपमकी स्थिति है आभ्यंतर परिषदा के देवी की तीन पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी को दो पल्योपम और बाहिर की परिषदा की देवी की एक पल्योपम की स्थिति है बाकी भवनवासी देवों की परिषदा के देव जैसा ही जानना, ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! ईशान देवेन्द्र देव राजाकी कितनी परिषदा हैं ? अहो गौतम ! तीन परिषदा कही जिन के नाम-समिता, चण्डा और जाया इस का कथन सब पूर्वोक्त जैसे जानना विशेष में आभ्यंतर परिषदा

ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, अट्ठामोचेव ॥ एवं माहिंदस्स तहेव जाव तत्थ परिसाए छदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए अट्ठदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए दसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिती देवाण, अब्भिंतरियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं, सत्तपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं, छप्पलिओवमाइं बाहिरियाए परिसाए अद्ध. पंचमाइं सागरोवमाइं पंचपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, तहेव सव्वेसिं इंदाणठाणगमेण विमाणा

देव और बाहिर की परिषदा में दश हजार देव हैं स्थिति-आभ्यंतर परिषदा में साढे चार सागरोपम सात पल्योपम, मध्य परिषदा में साढे चार सागरोपम छ पल्योपम, और बाहिर की परिषदा में साढे चार सागरोपम पांच पल्योपम की स्थिति है इसी तरह इन्द्रों स्थानपद से जानना यहां क्रम से परिषदा कहते हैं प्रथम इन्द्र की तीन परिषदा-आभ्यंतर में चार हजार देव, मध्य में छ हजार देव और बाहिर की परिषदा में आठ हजार देव हैं आभ्यंतर परिषदा के देवों की स्थिति साढे आठ सागरोपम और पांच पल्योपम मध्य परिषदा में साढे आठ सागरोपम चार पल्योपम और बाहिरकी परिषदा में साढे आठ

तिण्णिपलिओवमाइं ठितीपण्णत्ता अट्ठो तहेव भाणियव्वो ॥ १५ ॥ सणकुमाराणं पुच्छा ? तहेव ठाणपदगमेणं जाव सणकुमारस्स तओ परिसाओ समितादि तहेव, णवरिं अब्भितरियाए परिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ अब्भितरियाए परिसाए देवाणं ठिती अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं, पंचपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए अद्धपंचाइं सागरोवमाइं चत्तारि पलिओवमाइं

पल्योपमकी और बाहिरकी परिषदाकी देवीयों की तीन पल्योपमकी स्थिति कही है कार्य सब भवनपति जैसे कहना ॥१५॥ सनत्कुमार की पृच्छा? इसका सब कथन स्थानपदसे जानना यावत् समितादि तीन परिषदा कहना विशेष में आभ्यतर परिषदा में आठ हजार देव, मध्य परिषदा में दस हजार देव और बाहिर की परिषदामें बारह हजार देव हैं (यहां देवियों नहीं है) आभ्यतर परिषदाके देवकी साडेचार सागरोपम और पांच पल्योपम की स्थिति है, बीचकी परिषदाकी साडे चार सागरोपम और चार पल्योपमकी कही है और बाहिर की परिषदा के साढे चार सागरोपम और तीन पल्योपम की स्थिति कही है कार्य पूर्ववत् जानना ऐसे ही माहेन्द्र देवेन्द्र का कहना यावत् यहां आभ्यतर परिषदामें छ हजार देव, मध्य परिषदामें आठ हजार

वमाइ सत्तपलिओवमाइ ठिती, मज्झिमियाए परिसाए बारससागरोवमाइ छच्च पलिओवमाइ ठिती बाहिरियाए परिसाए बारससागरोवमाइ पंचपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता अट्ठो सोचेव ॥ महासुक्क पुच्छा ? गोयमा ! जाव अब्भिंतरियाए एग देव साहस्सीओ मज्झिमियाए परिसाए दो देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए चत्तारि देव साहस्सीओ ॥ ठिती अब्भिंतरियाए परिसाए अद्धसोलससागरोवमाइ पंचपलिओवमाइ, मज्झिमियाए अद्धसोलससागरोवमाइ चत्तारि पलिओवमाइ बाहिरियाए अद्धसोलससागरोवमाइं तिण्णि पलिओवमाइ अट्ठो सोचेव ॥ सहस्सारेपुच्छा ? जाव अब्भिंतरियाए परिसाए पंचदेवसया, मज्झिमियाए परिसाए एगादेवसाहस्सीओ,

है स्थिति आभ्यंतर परिषदा में १५॥ सागरोपम पांच पल्योपम, मध्य परिषदा में १५॥ सागरोपम चार पल्योपम और बाहिर की परिषदा में १५॥ सागरोपम तीन पल्योपम की है कार्य पूर्ववत् सहस्रार की तीन परिषदा आभ्यंतर में पांच सो देव, मध्य में एक हजार और बाहिर में दो हजार स्थिति अभ्यंतर की १७॥ सागरोपम सात पल्योपम, बीच की १७॥ सागरोपम छ पल्योपम और बाहिर की १७॥ सागरोपम पांच पल्योपम की है आणत प्राणत इन दोनों का एक ही इन्द्र होने से इन की तीन परिषदा

णेतव्वा, ततो पच्छा परिसाओ पत्तेय२ वुच्चाति॥ बंभस्सवि तओ परिसाओ पण्णत्ताओ अब्भितरियाए परिसाए चत्तारि देव साहस्सीओ, मज्झिमियाए परिसाए छदेव साहस्सीओ, बाहिरियाए अट्ठदेव साहस्सीओ ॥ देवाण ठिती अब्भितरियाए परिसाए अद्धणवमाइं सागरोवमाइं पचपलिओवमाइं, मज्झिमियाए परिसाए अद्धणवमाइं सागरोवमाइं, चत्तारि पलिओवमाइं, बाहिरियाए अद्धनवमाइं सागरोवमाइं, तिण्णि पलिओवमाइं अट्ठोसो चेव ॥ लतगस्सवि' जाव तओ परिसाओ जाव अब्भितरियाए दो देव साहस्सीओ मज्झिमियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए छदेवे साह-स्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिती भाणियव्वा अब्भितरियाए परिसाए देवाण बारस सागरो-

सागरोपम तीन पल्योपम की स्थिति है कार्य पूर्ववत् लंतक देवेंद्र की तीन परिषदा आभ्यतर में दो हजार देव, मध्य में चार हजार देव और बाहिर की परिषदा में छ हजार देव हैं आभ्यतर परिषदामें देवों की स्थिति बारह सागरोपम सात पल्योपम, बीचकी परिषदामें बारह सागरोपम छ पल्योपम और बाहिरकी परिषदा की बारह सागरोपम पांच पल्योपम की है कार्य पूर्ववत् महा शुक्र की तीन परिषदा आभ्यतर परिषदा में एक हजार देव, मध्य परिषदा में दो हजार देव और बाहिर की परिषदा में चार हजार देव

देवाण तहेव अब्भुइ परिवारे जाव विहरति॥अब्भयस्सण देविंदस्स तओ परिसाओ प०
अब्भिंतर परिसाए देवाण पणुवीस सय, मज्झिमियाए अड्डाइज्जसया, बाहिर
परिसाए पचसया ॥ अब्भितराय एक्कवीस सागरोवमाइ सपलिओवमा, मज्झिमियाए
एक्कवीस सागरोवमाइ छपलिओवमा, बाहिराए एक्कवीस सागरोवमाइ पचपलिओवमाइ
ठिई पण्णत्ता ॥ कहिण भते ! हिट्ठिम गेविज्जाण देवाण विमाणा पण्णत्ता ?
कहिण भते ! हिट्ठिम गेवेज्जगा देवा परिवसति? जहेव ठाणपए तहेव, एव मज्झिम
गेविज्जगा उवरिम गेविज्जगा, अणुत्तराय जाव अहमिंदा नाम ते देवा पण्णत्ता
समणाउसो ! ॥ पढमो वेमाणियउद्देसउ सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ० ०

बाहिर की परिषदा में ५०० देव हैं आभ्यतर परिषदा में २१ सागरोपम सात पल्योपम मध्य परिषदा
में २१ सागरोपम छ पल्योपम और बाहिर की परिषदा में २१ सागरोपम पांच पल्योपम की स्थिति कही है
अहो भगवन् ! नीचे के ग्रैवेयक के स्थान कहाँ कहे हैं ? और वे कहाँ रहते हैं ? अहो गौतम ! जैसे
स्थानपद में कहा वैसे ही जानना ऐसे ही मध्य ग्रैवेयक, उपर की ग्रैवेयक और अनुत्तर विमानका जानना
यावत् अहमेन्द्र पर्यंत कहना यह वैमानिक का प्रथम उद्देशा हुआ ॥ ४ ॥ १ ॥

बाहिरियाए दो देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिती अब्भिंतरियाए अट्ठारस सागरोवमाइं, सत्तपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता एव मज्झिमियाए अट्ठारस सागरोवमाइं छपलिओवमाइं, बाहिरियाए अट्ठारस सागरोवमाइं, पचपलिओवमाइं अट्ठो सोचेव ॥ आणयपाणयस्सवि पुच्छा जाव तओ परिसाओ, णवरिं अब्भिंतरियाए अड्ढाइज्जा देवसया, मज्झिमियाए पच देवसया, बाहिरियाए एगादेव साहस्सीओ ॥ठिती अब्भिंतरियाए एगूणवीस सागरोवमाइं, पच पलिओवमाइं, मज्झिमियाए परिसाए एगूणवीस सागरोवमाइं चत्तारि पलिओवमाइं, बाहिरियाए परिसाए एगूणवीस सागरोवमाइं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ ठिती अट्ठो सोचेव ॥कहिण भंते ! आरणच्चुयए

आभ्यतर में २५० देव, बीच की परिषदा में ५०० और बाहिर की परिषदा में १००० देव हैं आभ्यतर परिषदा में स्थिति गुनीससागरोपम और पांच पल्योपम, मध्य परिषदा में गुनीस सागरोपम चार पल्योपम और बाहिर की परिषदा में उन्नीस सागरोपम तीन पल्योपम की स्थिति कही कार्य पूर्ववत जानना अहो भगवन् ! आरण अच्युत का इन्द्र कहां रहता है ? यावत् विचरता है इस की तीन परिषदा कही है आभ्यतर परिषदा में १२५ देव, बीच की परिषदा में २५० और

अणुत्तरोववाइया पुच्छा? गोयमा! उवासतर पइट्ठिया पण्णत्ता ॥१॥ सोहम्मीसाण कप्पेसु-विमाण पुढवी केवइय बाहल्लेण पण्णत्ता? गोयमा ! सत्तावीस जोयणसयाइ बाहल्लेण, एव पुच्छा? सणकुमार माहिंदेसु छव्वीस जोयणसयाइ, बंभलतएसु पणवीस, महासुक्क सहस्सारेसु चउवीस, आणयपाणय आरणच्चुएसु तेवीस सयाइ, गेविज्जविमाण पुढवी बावीस, अणुत्तरविमाण पुढवी एक्कवीस जोयणसयाइ बाहल्लेण ॥ २ ॥ सोहम्मीसाणसुण भंते! कप्पेसु विमाणे केवतिय उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता? गोयमा! पच जोयण सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, सणकुमारमाहिंदेसु छ जोयणसयाइ, बंभलतएसु सत्तजोयण सयाइ

गौतम ! आकाशास्ति काया के आधार मे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान की पृथ्वी का कितना जाडपन है ? अहो गौतम! २७०० योजनकी विमान की नीव का जाडपना है, आगमी पृच्छा करना सनत्कुमार माहेन्द्र में २६०० योजनकी विमानकी नीवका जाडपन है, ब्रह्म और लतक देवलोक में २५०० योजनका विमानकी नीवका जाडपन है, महाशुक्र और सहस्रार में २४०० योजनका जाडपना है आणत प्राणत आरण और अच्युत में २३०० योजन का विमानकी नीवका जाडपना है, ग्रैवेयक विमानमें २२०० योजन का पृथ्वी का जाडपना है और पांच अनुत्तर विमान की पृथ्वी का २१०० योजन का जाडपना है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने ऊंचे हैं ? अहो गौतम !

सोहम्मीसाणेसुण कप्पेसु विमाणे पुढवी किं पइट्ठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! घणोदधि पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ सणकुमारे माहिंदे कप्पेसु विमाणे पुढवी किं पइट्ठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! घणवाय पइट्ठिया पण्णत्ता । बंभलोएणं भंते ! कप्पे विमाण पुढवी पुच्छा ? गोयमा ! घणवाय पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ लंतगेणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! तदुभय पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ महासुक्क सहस्सारेसुवि तदुभय पइट्ठिया आणय जाव अच्चुएसुणं भंते ! कप्पेसु पुच्छा ? गोयमा ! उवासंतर पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ गेविज्जविमाण पुढवीण पुच्छा ? गोयमा ! उवासंतर पइट्ठिया पण्णत्ता

अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान की पृथ्वी किस आधार से रही है ? अहो गौतम ! घनोदधि के आधार से पृथ्वी रही है ? अहो भगवन् ! सनत्कुमार माहेन्द्र देवलोक में पृथ्वी किस आधार से रही है ? अहो गौतम ! घनवात के आधार से रही है अहो भगवन् ! ब्रह्म देवलोक में विमान की पृथ्वी किस आधार से रही है ? अहो गौतम ! घनवात के आधार से रही है लंतक की पृच्छा, अहो गौतम ! दोनों के आधार से रही है महाशुक्र और सहस्रार में घनोदधि और घनवात इन दोनों के आधार से रही है आनत से अच्युत देवलोक में विमान आकाशास्तिकाया के आधार से हैं ग्रैवेयक की पृच्छा ! अहो गौतम ! आकाशास्ति काया के आधार से है अनुत्तर विमान की पृच्छा ? अहो

॥ ४ ॥ सोहम्मीसाणेसुण भंते ! कप्पेसु विमाणा केवतियं आयामविक्खंभेण केवतिय परिक्खेवेण पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा संखेज्जवित्थडाय असंखेज्जवित्थडाय जहा नरगा तहा अनुत्तरोववाइया संखेज्जवित्थडाय असंखे ज्जवित्थडाय तत्थण जेते संखेज्जवित्थडे से जंबुद्दीवप्पमाणा, तत्थ जेते असंखेज्ज वित्थडा असंखेज्जाइ जोयण सयाइ जाव परिक्खवेण पण्णत्ता ॥ ५ ॥ सोहम्मीसा णेसुण भंते ! विमाणा कतिवण्णा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचवण्णा पण्णत्ता तंजहा— किण्ह नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किला ॥ सणकुमार माहिंदेसु चउवण्णा नीला

और श्याम ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने लम्बे चौडे हैं और कितनी परिधिवाले है ? अहो गौतम ! व विमान दो प्रकार के है संख्यात योजन के विस्तारवाले और असंख्यात योजन के विस्तारवाले, यों नरक का कहा वैसे ही यहां जानना यावत् अनुत्तरोपपातिक संख्यात योजन के विस्तार-वाले हैं इन में जो संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं वे जम्बूद्वीप प्रमाण हैं, और असंख्यात योजन के विस्तारवाले यावत् असंख्यात योजन की परिधि कही है ॥५॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने वर्णवाले हैं ? अहो गौतम ! पांच वर्णवाले कहे हैं जिन के नाम—कृष्ण, नील, लोहित, हालिद्र और शुक्ल सनत्कुमार और माहेन्द्र में चार वर्णवाले विमान हैं जिन के नाम—नील, लोहित, हालिद्र

महासुक्कसहस्सारसु अट्ठ,आणय पाणय आरणअच्चुएसुनव जोयणसयाइ॥गेवेज्जविमाणाण भंते ! केवइय उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ? गोयमा! दस जोयणसयाइ अणुत्तरविमाणाण एक्कारस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण ॥ २ ॥ सोहम्मीसाणेसुण भंते! कप्पेसु विमाणा किं संठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—आवलियाए बाहिराय ॥ तत्थणं जेते आवलिय पविट्ठा ते तिविहा पण्णत्ता तंजहा—वट्टा तंसा चउरंसा ॥ तत्थण जे ते आवलिय बाहिरा तेण णाणा संठाण संठिता पण्णत्ता, एवं जाव गवेज्जविमाणा ॥ अणुत्तरोववातिय विमाणा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—वट्टाय तंसाय

५०० योजन ऊंचे हैं, ऐसेही सनत्कुमार और माहेन्द्रमें ६०० योजन ऊंचे हैं, ब्रह्म और लांतकमें ७०० योजन ऊंचे, महाशुक्र और सहस्रारमें ८०० योजन ऊंचे, आणत, प्राणत, आरण और अच्युतमें ९०० योजन ऊंचे, नव ग्रैवेयक में विमान १००० योजन ऊंचे हैं, और अनुत्तर विमान ११०० योजनकी ऊंचाइवाले हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में जो विमान हैं, वे किस संस्थानवाले हैं ? अहो गौतम ! विमानके दो भद आवलिका प्रविष्ट सो श्रेणिबद्ध और आवलिका बाहिर सो पुष्पावकीर्ण इनमें जो आवलिका प्रविष्ट हैं, वे वर्तुल,त्र्यंस और चतुरंस,यों तीन प्रकारके हैं, और जो आवलिका बाहिर हैं वे विविध प्रकार के संस्थानवाले हैं यों ग्रैवेयक विमान पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक में विमान दो प्रकार के हैं वर्तुल

इट्ठतरगा चेव जाव गधण पण्णत्ता, जाव अणुत्तर विमाणा॥ सोहम्मीसाणेसु विमाणा करिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए आईणेतिवा रूवेइवा तहेव सव्वो फासो भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववातिया विमाणे ॥ ८ ॥ साहम्मीसाणेसुण भंते ! विमाणा के महालिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अयण्ण जंबद्दीवे२ सव्वद्दीव समुद्दाण सोचेवगमो जाव छम्मासे वीईवएज्जा जाव अत्थेगइया विमाणावासा वीइवएज्जा अत्थेगइया विमाणावासा नो वीइवएज्जा जाव अणुत्तरो-

अनुत्तर विमान पर्यंत कहना ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान का कैसा स्पर्श कहा है ? अहो गौतम ! जैसे मृगचर्म रुइ वगैरह सब स्पर्श का वर्णन करना यावत् अनुत्तरोपपातिक पर्यंत जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! सब द्वीप समुद्र में यह जम्बूद्वीप एक लाख योजन का लम्बा चौडा है इस की परिधि ३१६२२७ योजन से कुछ अधिक है कोई देवता तीन चिमटि बजावे उतने में इक्कीस वार इस की पर्यटना कर आवे ऐसी दीव्य शीघ्रगति से छमास पर्यंत परिभ्रमण करेतो भी कितनेक विमानो को उल्लंघ सकता है और कितनेक विमानों का उल्लंघ नहीं सकता है यों अनुत्तरोपपातिक विमान पर्यंत कहना।

जाव सुक्किला ॥ एवं बंभलोग लंतएसु तिवण्णा लोहिया जाव सुक्किला ॥ महासुक्क सहस्सारेसु दुवण्णा हालिद्दाय सुक्किलाय ॥ आणत पाणत आरण अच्चुतेसु सुक्किला, एवं गेविज्जविमाणेसुवि अणुत्तरोववाइय विमाणे परम सुक्किला वण्णेणं पण्णत्ता ॥६॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु विमाणा केरिसयाए पभाए पण्णत्ता ? गोयमा ! णिच्चालोया णिच्चुज्जोया सयपभाए पण्णत्ता जाव अणुत्तरोववाइया विमाणा णिच्चालोया णिच्चुज्जोया सयपभाए पण्णत्ता ॥ ७ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु विमाणा केरिसया गंधेणं पण्णत्ता ? से जहा नामए कोट्ठ पुडाणवा एवं जाव एत्तो

और शुक्ल ब्रह्मलोक और लंतक में रक्त पीत और श्वेत यों तीन वर्णवाले विमान हैं महा शुक्र सहस्रार में पीत श्वेत ऐसे दो वर्णवाले विमान हैं आणत, प्राणत, आरण, अच्युत, ग्रैवेयक विमान में शुक्ल वर्ण वाले हैं और अनुत्तरोपपातिक विमान परम शुक्ल वर्णवाले कहे हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कैसी प्रभावाले हैं ? अहो गौतम ! वे सदैव प्रकाशवंत, उद्योतवंत हैं और अपनी प्रभा सहित हैं यों अनुत्तर विमान पर्यंत कहना वे भी सदैव प्रकाशवंत हैं, सदैव उद्योतवंत हैं और अपनी प्रभा सहित हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कैसी गंधवाले हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोष्ठ पुडा वगैरह सब वर्णन पूर्ववत् जानना इससे भी अधिक इष्टतर यावत् गंधवाले कहे यों

दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखेज्जवा असखेज्जवा उववज्जाति, एव जाव सहस्सारो॥आण यादि गेवेज्जा अणुत्तराय एक्कावा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखेज्जावा उववज्जति॥ १२ ॥ सोधम्मीसाणेसुण भते ! देवा समये २ अवहीरमाणा २ केवतिय कालेण अवहिरिया सिया ? गोयमा ! तेण असखेज्जा समय २ अवहीरमाणा २ असखेज्जाहिं उस्सप्पिणी उसप्पिणीहिं अवहीरति नोचवण अवहिरिया जाव सहस्सारो ॥ आणतादिगेसु चउसुवि गेवेज्जसुय समये २ जाव केवतिकालेण अवहीरिया सिया ? गोयमा ! तेण असखेज्जा समये २ अवहीरमाणा २ असखेज्जखेत्त पलियस्स सुहुमस्स असखेज्जेण

में कितने देव उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट सख्यात असख्यात उत्पन्न होते हैं यों सहस्रार पर्यंत कहना आणत से अनुत्तरोपपातिक तक एक दो तीन यावत् सख्यात उत्पन्न होते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में से देवता को समय २ में अपहरते कितने समय में अपहरण होवे ? अहो गौतम ! वे देव असख्यात हैं प्रतिसमय एक २ अपहरन करते असख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी बीत जाय तो भी अपहरण नहीं होता है यों सहस्रार पर्यंत कहना आनतादि चार देवलोक, नव ग्रैवेयक में यावत् कितने काल में अपहरन होवे ? अहो गौतम ! वे असख्यात देव हैं

पवाइय विमाणा अत्थेगतिया विमाणा वीइवएज्जा अत्थेगतिया नो वीईवएज्जा ॥९॥ सोहम्मीसाणेसुण भंते ! विमाणा किंमया पण्णत्ता? गोयमा ! सव्वरयणामया पण्णत्ता, तत्थण बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति सासयाण ते विमाणे दव्वट्ठयाए जाव फासपज्जवेहिं असासया जाव अणुत्तरोववाया विमाणा ॥१०॥ सोहम्मीसाणेसुण देवा कओहिंतो उववज्जंति उववातो नेयव्वा जहा वक्कंतीए,तिरिएसुमणुएसु एव पंचेंदियेसु समुच्छिमवज्जेसु उववाय वक्कंतीगमेणजाव अणुत्तरा ॥११॥ सोहम्मीसाणेसु देवा एगसमएण केवतिया उववज्जंति? गोयमा!जहण्णेण एक्कोवा

इसमें कितनेक का उल्लंघन कर सकते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं अर्थात् चार अनुत्तर विमान असंख्यात योजन के हैं और सर्वार्थ सिद्ध विमान एक लक्ष योजन का है ॥९॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान किसके हैं ? अहो गौतम ! सब वज्ररत्नमय हैं वहां बहुत जीव और पुद्गल आते हैं उत्पन्न होते हैं और चवते हैं वे द्रव्यसे शाश्वत हैं और वर्ण पर्यायसे यावत् स्पर्श पर्यायसे अशाश्वत हैं या अनुत्तर विमान पर्यंत जानना ॥१०॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशान देवलोक में जीव कहां से आकर उत्पन्न होते हैं! अहो गौतम! समूर्छिम वर्जकर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं यों सहस्रार देवलोक पर्यंत जानना यहांसे आगे मात्र मनुष्य उत्पन्न होते हैं ॥११॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशानदेवलोक में एकसमय

असखेज्जति भागे उक्कोसेणं जोयण सतसहस्स, एव एक्कोक्का ओसारित्ताण जाव अनुत्तराण एक्कारयणी, गेविज्जअणुत्तरेण एगा भवधार णिज्जसरीरये, उत्तर वेउव्वियो नत्थि ॥ १४ ॥ सोधम्मीसाणेसु देवाण सरीरगा किं संघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्ह संघयणीण असंघयणी पण्णत्ता, नवट्ठी नेवच्छिरा णेवण्हारु णवसंघयण मत्थि जे पोग्गला इट्ठा कता जाव तेसिं संघातत्ताए परिणमति जाव अणुत्तरोववातिया ॥१५॥ सोधम्मीसाणसु देवाण सरीरगा किंसठिया पण्णत्ता ? गोयमा! दुविहा सरीरा पण्णत्ता तंजहा—भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्वियाय, तत्थण जेते भवधारणिज्जा ते समचउरस सठाण

हाथ की, महाशुक्र सहस्रार में चार हाथ की, आणत प्राणत आरण व अच्युत ये चार देवलोक में तीन हाथ की, नव ग्रैवेयक में दो हाथ की और पांच अनुत्तर विमान में एक हाथ की शरीर की अवगाहना है नव ग्रैवेयक और पाच अनुत्तर विमान में उत्तर वैक्रेय शरीर नहीं करते हैं ॥१४॥ अहो भगवन्' सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर कौनसे संघयणवाले हैं ? अहो गौतम! छ संघयण में से एक भी संघयण नहीं है क्योंकि उनका हड्डी, शिरा, नस नहीं है परंतु जो इष्ट कांत यावत् मनोज्ञ पुद्गल हैं वे संघयणपने परिणमते हैं यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत जानना ॥१५॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर का संस्थान कैसा कहा है ? अहो गौतम ! उन के शरीर के दो भेद भवधारणीय और उत्तर वैक्रेय उन में जो भवधारणीय है

कालेण अवहीरंति नोचेवण अवहीरियासिया ॥ अणुत्तरोववाइया पुच्छा ? तेण अस-खेज्जा समये २ अवहीरमाणा २ पलिओवम असंखेज्जति भागमेत्ते अवहीरंति नोचेवण अवहीरियासिया ॥ १३ ॥ सोहधम्मीसाणेसुण भंते ! कप्पेसु देवाण के महल्लिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता तंजहा भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय ॥ तत्थण जे से भवधारणिज्जे से जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जति भागे, उक्कोसेण सत्तरयणीओ ॥तत्थण जे से उत्तर वेउव्विए से जहण्णेण अंगुलस्स

वहां से प्रतिसमय एक २ अवहरते २ सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम के असंख्यातवे भाग तक अपहरन करे परंतु अपहरन होवे नहीं अनुत्तरोपपातिक की पृच्छा? अहो गौतम! वे असंख्यात हैं प्रत्येक समय में एक अपहरन करते हुवे पल्योपम के असंख्यात वे भाग तक अपहरन करे परंतु अपहरन होवे नहीं ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशान देवलोक में देवताओं के शरीर की कितनी अवगाहना कही है? अहो गौतम! अवगाहना के दो भेद हैं तद्यथा—भवधारणीय और उत्तर वैक्रय इस में भवधारणीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात हाथ, उत्तर वैक्रय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक लाख योजनकी,' यों एक एक हाथ कम करते अनुत्तरोपपातिक विमानमें एक हाथ की अवगाहना जानना अर्थात् सनत्कुमार माहेन्द्र में छ हाथ की, ब्रह्म और लांतक में पांच

साणेसुण भते ! कप्पेसु देवाण सरीरगा केरिसया गंधेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए कोट्ठापुडाणवा तहेव सव्व जाव मणामतरा चेव गंधेण पण्णत्ता जाव अणुत्तरोववातिया॥१८॥सोधम्मीसाण देवाण सरीरगा केरिसया फासेण गोयमा! थिरमउय णिद्ध सुकुमाल छवीय फासेण पण्णत्ता, एवं जाव अणुत्तरोववातिया ॥१९॥ सोहम्मीसाण देवाण केरिसगा पुग्गला उस्सासत्ताए परिणमति ? गोयमा ! जे पोग्गला इट्ठा कता जाव एतेसिं उस्सासत्ताए परिणमति जाव अणुत्तरोववातिया, एव जाव आहारत्ताएवि जाव अणुत्तरोववातिया ॥ २० ॥ सोधम्मीसाणे देवाण कतिलेसाओ

सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर की गंध कैसी कही ? अहो गौतम ! जैसे कोष्टपुट यावत् मनामतर गंध कही यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर का कैसा स्पर्श है ? अहो गौतम ! उन के शरीर स्थिर मृदु सुकोमल व स्निग्ध सुकोमल स्पर्शवंत हैं, यावत् अनुत्तर विमान के देव पर्यंत कहना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक के देव कैसे पुद्गल उच्छ्वासपने ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! जो पुद्गल इष्टकांत यावत् उच्छ्वासपने परिणमते हैं यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ऐसे ही आहार कालिये पुद्गल ग्रहण करते हैं यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों को

संठिया पण्णत्ता ॥ तत्थण जे ते उत्तर वेउव्विया ते णाणासंठाण संठिया पण्णत्ता जाव अच्चुए कप्पे, गेवेज्जणुत्तराण भवधारणिज्जा ते समचउरससंठाण संठिता पण्णत्ता, उत्तर वेउव्विया णत्थि ॥ १६ ॥ सोधम्मीसाणेसु देवा केरिसया वण्णेण पण्णत्ता ? गोयमा! कणगत्तरत्त भावेण पण्णत्ता, सणकुमार माहिंदसुण पउमपम्हा गोरा वण्णेणं पण्णत्ता ॥ बंभलोगेण भंते! पुच्छा गोयमा! अल्लमधुरागवण्णाभा वण्णेण पण्णत्ता ॥ लंतण्ण भंते ! पुच्छा, गोयमा ! सुक्कला वण्णेण पण्णत्ता, एवं जाव गेवेज्जा ॥ अणुत्तरोववातिया परम सुक्किला वण्णेण पण्णत्ता ॥ १७ ॥ सोधम्मी

य सम चतुस्र संस्थानवाले हैं और जो उत्तर वैक्रेय हैं वे विविध प्रकार के संस्थानवाले हैं यों अच्युत विमान पर्यंत कहना ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान में मात्र भवधारणीय शरीर है इन का संस्थान सम चतुस्र है उत्तर वैक्रेय वहां नहीं है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर का वर्ण कैसा कहा ? अहो गौतम ! तप्त सुवर्ण समान रक्त वर्ण है सनत्कुमार माहेन्द्र में पद्म कमलकी केसरा समान गौर वर्ण है, ब्रह्मदेवलोक में देवताका वर्ण आद्रमधुक वनस्पति समान पीलाहै, लंतकादि से ग्रैवेयक पर्यंतमात्र एक शुक्लवर्णही है और अनुत्तरोपपातिक देवोंका शरीर परम शुक्लवर्ण वाले हैं ॥१७॥ अहो भगवन् !

णाण। नियमा ॥ २३ ॥ तिविहे जोगे, दुविहेउवओगे सव्वेसिं जाव अणुत्तरोववाई ॥२४॥सोधम्मीसाणाण देवा ओहिणा केवतिय खेत्त जाणति पासति ? गोयमा! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति भाग उक्कासेण अहे जाव रयणप्पमा पुढवी, उड्डु जाव साइ विमाणाइ, तिरिय जाव असखेज्जा दीवसमुद्दा एव (गाहा) सुक्कीसाणा पढम, दोच्च, सणकुमार माहिंदा, तच्चच बभ लतग, सुक्क सहस्सारगा चउत्थी ॥ १ ॥ आणय पाणय देवा, पाससि पचामिं पुढविं, तचव आरणच्चुय उहीनाणा पासति छट्ठिं॥२॥ हेट्ठिम मज्झिमगेवेज्जा, सत्तमिं च उवरिल्ला, साभिन्नलोग नालिं, पासति अणुत्तरा

की नियमा यों अनुत्तर विमान पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक की पृच्छा ? अहो गौतम! तीन ज्ञान हैं ॥२३॥ तीन योग, दो उपयोग अनुत्तरोपपातिक पर्यंत सब में कहना ॥ २४ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक में देवों अवधिज्ञान से कितना जानते व देखते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट नीचे यावत् रत्नप्रभा पृथ्वी पर्यंत, ऊर्ध्व अपने २ विमान पर्यंत और तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र पर्यंत इस तरह सौधर्म और ईशानवाले देव प्रथम नरक, सनत्कुमार माहेन्द्रवाले दूसरी नरक, ब्रह्मलोक लंतकवाले तीसरी नरक, महाशुक्र और सहस्रारवाले चौथी नरक, आणत प्राणतवाले पांचवी नरकी, आरण अच्युतवाले भी पांचवी नरक, नीचे और मध्य की ग्रैवेयकवाले छट्ठी नरक, ऊपर की ग्रैवेयकवाले

पण्णत्ताओ ? गोयमा ! एगा तेउलेस्सा पण्णत्ता सणकुमार माहिंदेसु एगा पम्हलेसा, एव बभलोगे विपम्हा सेसेसु एक्का सुक्कलेसा, अणुत्तरोववातियाण एक्का परमसुक्कलेसा ॥ २१ ॥ सोधम्मीसाणे देवा किं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! तिण्णि जाव अच्चुतो गवेज्जादेवा सम्मादिट्ठीवि मिच्छदिट्ठीवि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ॥ अणुत्तरोववातिया सम्मदिट्ठी णो मिच्छदिट्ठी नो समामिच्छदिट्ठी ॥ २२ ॥ सोधम्मीसाणे किं णाणी अण्णाणी ? गोयमा ! दोवि तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा णियमा जाव गेवेज्जा ॥ अणुत्तरोववाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! अणुत्तरोववाइया णाणी नो अण्णाणी, तिण्णि

कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! एक तेजो लेश्या सनत्कुमार माहेन्द्र में एक पद्म लेश्या ब्रह्मलोक में भी एक पद्मलेश्या और आगे सब में शुक्ल लेश्या और अनुत्तरोपपातिक देव में एक परम शुक्ल लेश्या है ॥ २१ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक के देव क्या समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि व समामिथ्यादृष्टि है ? अहो गौतम ! तीनों दृष्टि हैं यों अच्युत पर्यंत जानना ग्रैवेयक देव समदृष्टि और मिथ्यादृष्टि है परंतु समामिथ्या दृष्टि नहीं है, अनुत्तरोपपातिक देव एकांत समदृष्टि हैं परंतु मिथ्य दृष्टि और समामिथ्या दृष्टि नहीं हैं ॥ २२ ॥ अहो भगवन् सौधर्म ईशान देवलोक में देवतों क्या ज्ञानी है अज्ञानी है, ? अहो गौतम ! दोनो है तीन ज्ञान व तीन अज्ञान

णाणा नियमा ॥ २३ ॥ तिविहे जोगे, दुविहेउवओगे सव्वेसिं जाव अणुत्तरोववाई ॥२४॥सोधम्मीसाणाण देवा ओहिणा केवतिय खेत्त जाणंति पासंति ? गोयमा! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जति भाग उक्कोसेण अहे जाव रयणप्पभा पुढवी, उड्ढ जाव साइं विमाणाइं, तिरियं जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा एव (गाहा) सक्कीसाणा पढमं, दोच्चं, सणकुमार माहिंदा, तच्चंच बंभ लंतग, सुक्क सहस्सारगा चउत्थी ॥ १ ॥ आणय पाणय देवा, पासंति पंचमिं पुढविं, तच्चेव आरणच्चुय उहीनाणा पासंति छट्ठिं॥२॥ हेट्ठिम मज्झिमगेवेज्जा, सत्तमिं च उवरिल्ला, संभिन्नलोग नालिं, पासंति अणुत्तरा

की नियमा यों अनुत्तर विमान पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक की पृच्छा ? अहो गौतम! तीन ज्ञान हैं ॥२३॥ तीन योग, दो उपयोग अनुत्तरोपपातिक पर्यंत सब में कहना ॥ २४ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक में देवों अवधिज्ञान से कितना जानते व देखते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट नीचे यावत् रत्नप्रभा पृथ्वी पर्यंत, ऊर्ध्व अपने २ विमान पर्यंत और तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र पर्यंत इस तरह सौधर्म और ईशानवाले देव प्रथम नरक, सनत्कुमार माहेन्द्रवाले दूसरी नरक, ब्रह्मलोक लंतकवाले तीसरी नरक, महाशुक्र और सहस्रारवाले चौथी नरक, आणत प्राणतवाले पांचवी नरकी, आरण अच्युतवाले भी पांचवी नरक, नीचे और मध्य की ग्रैवेयकवाले छट्ठी नरक, ऊपर की ग्रैवेयकवाले

पण्णत्ताओ ? गोयमा ! एगा तेउलेस्सा पण्णत्ता सणकुमार माहिंदेसु एगा पम्हलेसा, एवं बंभलोगे विपम्हा सेसेसु एक्का सुक्कलेसा, अणुत्तरोववातियाण एक्का परमसुक्कलेसा ॥ २१ ॥ सोधम्मीसाणे देवा किं सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! तिण्णि जाव अच्चुतो गवेज्जा देवा सम्मदिट्ठीवि मिच्छदिट्ठीवि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ॥ अणुत्तरोववातिया सम्मदिट्ठी णो मिच्छदिट्ठी नो समामिच्छदिट्ठी ॥ २२ ॥ सोधम्मीसाणे किं णाणी अण्णाणी ? गोयमा ! दोवि तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा णियमा जाव गेवेज्जा ॥ अणुत्तरोववाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! अणुत्तरोववाइया णाणी नो अण्णाणी, तिण्णि

कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! एक तेजो लेश्या सनत्कुमार माहेन्द्र में एक पद्म लेश्या ब्रह्मलोक में भी एक पद्मलेश्या और आगे सब में शुक्ल लेश्या और अनुत्तरोपपातिक देव में एक परम शुक्ल लेश्या है ॥ २१ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक के देव क्या समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि व समामिथ्यादृष्टि है ? अहो गौतम ! तीनो दृष्टि हैं यों अच्युत पर्यंत जानना ग्रैवेयक देव समदृष्टि और मिथ्यादृष्टि है परंतु समामिथ्या दृष्टि नहीं है, अनुत्तरोपपातिक देव एकांत समदृष्टि हैं परंतु मिथ्य दृष्टि और समामिथ्या दृष्टि नहीं हैं ॥ २२ ॥ अहो भगवन् सौधर्म ईशानदेव लोक में देवता क्या ज्ञानी है अज्ञानी है, ? अहो गौतम ! दोनो है तीन ज्ञान व तीन अज्ञान

णाणा नियमा ॥ २३ ॥ तिविहे जोगे, दुविहेउवओगे सव्वेसिं जाव अणुत्तरोववाई ॥२४॥सोधम्मीसाणाण देवा ओहिणा केवतिय खेत्त जाणति पासति ? गोयमा! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति भाग उक्कोसेण अहे जाव रयणप्पभा पुढवी, उड्ढ जाव साइ विमाणाइ, तिरिय जाव असखेज्जा दीवसमुद्दा एव (गाहा) सुक्कीसाणा पढम, दोच्च, सणकुमार माहिंदा, तच्चच बभ लतग, सुक्क सहस्सारगा चउत्थी ॥ १ ॥ आणय पाणय देवा, पासति पचमिं पुढविं, तच्चेव आरणच्चुय उहीनाणा पासति छट्ठि॥२॥ हेट्ठिम मज्झिमगेवेज्जा, सत्तमिं च उवरिल्ला, सामिन्नलोग नालिं, पासति अणुत्तरा

की नियमा यों अनुत्तर विमान पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक की पृच्छा ? अहो गौतम! तीन ज्ञान हैं ॥२३॥ तीन योग, दो उपयोग अनुत्तरोपपातिक पर्यंत सब में कहना ॥ २४ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक में देवों अवधिज्ञान से कितना जानते व देखते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट नीचे यावत रत्नप्रभा पृथ्वी पर्यंत, ऊर्ध्व अपने २ विमान पर्यंत और तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र पर्यंत इस तरह सौधर्म और ईशानवाले देव प्रथम नरक, सनत्कुमार माहेन्द्रवाले दूसरी नरक, ब्रह्मलोक लंतकवाले तीसरी नरक, महाशुक्र और सहस्रारवाले चौथी नरक, आणत प्राणतवाले पांचवी नरकी, आरण अच्युतवाले भी पांचवी नरक, नीचे और मध्य की ग्रैवेयकवाले छट्ठी नरक, ऊपर की ग्रैवेयकवाले

देवा ॥३॥ २५ ॥ सोधम्मीसाणेसुणं भते ! देवाण कति समुग्घाता पण्णत्ता? गोयमा! पच समुग्घाता पण्णत्ता तजहा—वेदणा समुग्घाते, कसाय समुग्घाते, मारणति समुग्घाते, वेउव्विय समुग्घाते तेयसमुग्घाते, एव जाव अच्चुओ गेवेज्जअणुत्तराण आदिल्ला तिण्णि समुग्घाया पण्णत्ता ॥ २६ ॥ सोधम्मीसाणदेवा केरिसय खुहपिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! णत्थिखुहंपिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरति जाव अणुत्तरोववातिया ॥२७॥ सोधम्मीसाण देवा किं एगत्त पभू विउव्वित्तए पहुत्त पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एगत्तपि पभू विउव्वित्तए पहुत्तपि पभू विउव्वित्तए,

भावार्थ नरक और अनुत्तर विमानवाले कुच्छ कम समस्त लोक नाल देखते हैं ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों को कितनी समुद्घात कही है ? अहो गौतम ! पांच समुद्घात कही है तद्यथा—वेदना, कषाय, मारणांतिक, वैक्रेय और तेजस ऐसे ही अच्युत पर्यंत कहना ग्रैवेयक और अनुत्तर वैमानिक में तीन समुद्घात है वेदनीय कषाय और मारणांतिक ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक के देवता कैसी क्षुधा पिपासा अनुभवते हुवे विचरते हैं ? अहो गौतम ! वहां क्षुधा पिपासा नहीं है यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवता एक ही रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है अथवा अनेक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ हैं ?

एगत्त विउव्वेमाणे एगिंदिय रूवंवा जाव पचेंदियरूवंवा, पहुत्त विउव्वेमाणा एगिंदिय रूवाणिवा जाव पचेंदिय रूवाणिवा। ताइ संखेज्जाइ असंखेज्जाइपि सरिसाइ असरिसाइपि सबद्धाइ असंबद्धाइपि रूवाइ विउव्विसिवा विउव्वंतिवा विउव्विस्संतिवा, अप्पणो जहिच्छियाइ कज्जाइ करेंति जाव अच्चुओ ॥ गेवेज्ज णुत्तरोववाइया देवा किं एगत्तपि पभू विउव्वित्तए पहुत्तपि पभू विउव्वित्तए? गोयमा! एगत्तपि पहुत्तपि णो चेवण संपत्तीए विउव्विंसुवा विउव्विंतिवा विउव्विस्संतिवा ॥ २८ ॥ सोधम्मीसाण देवाण केरि-

अहो गौतम! एक रूपकी भी और पृथक् रूपकी भी विकुर्वणा करनमें समर्थ हैं एक रूप करते हुवे एकेन्द्रिय का रूप यावत् पचेन्द्रिय का रूप बनावे और बहुत रूप में एकेन्द्रिय के रूप यावत् पचेन्द्रिय के रूप बनावे उनोंन संख्यात, असंख्यात, सदृश, असदृश, सबद्ध, असबद्ध रूप की विकुर्वणा की, विकुर्वणा करते हैं और विकुर्वणा करेंगे स्वय जैसी इच्छा करते हैं वैसा कार्य करते हैं यों अच्युत पर्यंत कहना ग्रैवेयक और अनुत्तरोपपातिक देव में क्या एक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है अथवा अनेक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है? अहो गौतम! एक रूप और अनेक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ तो हैं परंतु उनोंने उन की विकुर्वणा की नहीं, करते नहीं और करेंगे भी नहीं ॥२८॥ अहो

देवा ॥३॥ २५ ॥ सोधम्मीसाणेसुणं भंते ! देवाण कति समुग्घाता पण्णत्ता? गोयमा! पंच समुग्घाता पण्णत्ता तंजहा—वेदणा समुग्घाते, कसाय समुग्घाते, मारणंति समुग्घाते, वेउव्विय समुग्घाते तेयसमुग्घाते, एवं जाव अच्चुओ गेवेज्जअणुत्तराणं आदिल्ला तिण्णि समुग्घाया पण्णत्ता ॥ २६ ॥ सोधम्मीसाणदेवा केरिसय खुहपिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? गोयमा ! णत्थिखुहंपिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरंति जाव अणुत्तरोववातिया ॥२७॥ सोधम्मीसाण देवा किं एगत्त पभू विउव्वित्तए पहुत्त पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एगत्तपि पभू विउव्वित्तए पहुत्तपि पभू विउव्वित्तए,

मासवी नरक और अनुत्तर विमानवाले कुच्छ कम समस्त लोक नाल देखते हैं ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों को कितनी समुद्घात कही है ? अहो गौतम ! पांच समुद्घात कही है यथा—वेदना, कषाय, मारणांतिक, वैक्रेय और तेजस ऐसे ही अच्युत पर्यंत कहना ग्रैवेयक और अनुत्तर वैमानिक में तीन समुद्घात है वेदनीय कषाय और मारणांतिक ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक के देवता कैसी क्षुधा पिपासा अनुभवते हुवे विचरते हैं ? अहो गौतम ! वहां क्षुधा पिपासा नहीं है यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कह । ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवता एक ही रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है अथवा अनेक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है ?

एगत्त विउव्वेमाणे एगिंदिय रूवेवा जाव पचेंदियरूवेवा, पहुत्त विउव्वेमाणा एगिंदिय रूवाणिवा जाव पचेंदिय रूवाणिवा। ताइ सखेज्जाइ असंखेज्जाइपि सरिसाइ असरिसाइपि सबद्धाइ असबद्धाइपि रूवाइ विउव्विंसिवा विउव्वतिवा विउव्विस्सातिवा, अप्पणो जहिट्ठि याइ कज्जाइ करेति जाव अच्चुओ ॥ गेवेज्ज णुत्तरोववाइया देवा किं एगत्तपि पभू विउव्वित्तए पहुत्तपि पभू विउव्वित्तए? गोयमा! एगत्तपि पहुत्तपि णो चेवण सपत्तीए विउव्विंसुवा विउव्विंतिवा विउव्विस्सातिवा ॥ २८ ॥ सोधम्मीसाण देवाण केरि-

अहो गौतम ! एक रूपकी भी और पृथक् रूपकी भी विकुर्वणा करनमें समर्थ हैं एक रूप करते हुवे एकेन्द्रिय का रूप यावत् पंचेन्द्रिय का रूप बनावे और बहुत रूप में एकेन्द्रिय के रूप यावत् पचेन्द्रिय के रूप बनावे उनोंने सरूपाव, असरूपाव, सदृश, असदृश, सबद्ध, असबद्ध रूप की विकुर्वणा की, विकुर्वणा करते हैं और विकुर्वणा करेंगे स्वय जैसी इच्छा करते हैं वैसा कार्य करते हैं यों अच्युत पर्यंत कहना ग्रैवेयक और अनुत्तरोपपातिक देव में क्या एक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है अथवा अनेक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है ? अहो गौतम ! एक रूप और अनेक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ तो हैं परतु उनोंने उन की विकुर्वणा की नहीं, करते नहीं और करेंगे भी नहीं ॥२८॥ अहो

सयं सायासोक्ख पच्चणुब्भवमाणा विहरति? गोयमा ! मणुण्णसद्दा जाव मण्णुणा फासा जाव गेवेज्जा ॥अणुत्तरोववाइया अणुत्तरासद्दा जाव फासा ॥ २९ ॥ सोधम्मीसाण देवाण केरिसगा इड्ढी पण्णत्ता ? गोयमा ! माहिड्ढीया महज्जुईया जाव महाणुभागा इड्ढी पण्णत्ता जाव अच्चुउ ॥ गेवेज्ज अणुत्तराय सव्वे माहिड्ढीया जाव सव्वे महाणुभावा अणिंदा जाव अहमिंदाणाम ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥३०॥ सोधम्मीसाण देवा केरिसया विभूसाए पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा विउव्विय सरीराय, अविउव्विय सरीराय ॥ तत्थण जे ते वेउव्विय सरीरा ते हारवि-

भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक के देवता कैसा सुख का अनुभव करते हैं ? अहो गौतम ! मनोज्ञ शब्द यावत् मनोज्ञ स्पर्श का अनुभव करते हैं यावत् ग्रैवेयक पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक में अनुत्तर शब्द यावत् अनुत्तर स्पर्श का अनुभव करते हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में कैसी ऋद्धि कही है ? अहो गौतम ! वे महर्द्धिक, महा द्युतिवाले यावत् महानुभाग हैं यों अच्युत पर्यंत कहना ग्रैवेयक अनुत्तर विमानवाले देव महर्द्धिक यावत् महानुभाग इन्द्र रहित अहमेन्द्र हैं ॥३०॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक के देवकी कैसी विभूषा कही है ? अहो गौतम ! वे दो प्रकार के हैं तद्यथा-वैक्रेय शरीरवाले और वैक्रय बिनाके शरीरवाले इनमें जो वैक्रय शरीरवाले हैं वे हारसे विराजित वक्षस्थलवाले यावत् दशों-

राइय वच्छा जाव दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा जाव पडिरूवा ॥ तत्थणं जे ते अविउव्वियसरीरा तेण आभरण वसण रहिता पगतिच्छा विभूसाए पण्णत्ता॥ सोधम्मीसाणेसु ण भंते ! कप्पेसु देवीओ केरिसयाओ विभूसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा विउव्विय सरीराओय अविउव्विय सरीराओय ॥ तत्थण जाव विउव्विय सरीराओ ताओण सुवण्णसद्दाओ सुवण्णसद्दाइ वत्थाइ पवर परिहीताओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमणिडालाओ सिंगारागारचारुं वेसाओ, संगय जाव पासातीयाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तत्थण जाओ अविउव्विय सरीराओ

दिशि में उद्योत करते हुए, प्रकाश करते हुवे रहते हैं यावत् प्रतिरूप हैं और जो वैक्रेय रहित शरीरवाले हैं वे आभरण वस्त्र रहित स्वाभाविक विभूषावाले हैं अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवी कैसी विभूषावाली कही हैं ? अहो गौतम ! उन के दो भेद कहे हैं वैक्रेय शरीरवाली और वैक्रय रहित शरीरवाली जो वैक्रेय शरीरवाली हैं वे झांझर प्रमुख आभूषण सहित, शब्दयुक्त सुवर्णमय घुघरी सहित हैं, प्रवर उत्तम वस्त्र पहिने हुवे हैं, चंद्र समान मुख है, चंद्र समान विलासवाली हैं, अर्ध चंद्र समान ललाट है इंगितादि और आकार से मनोहर वेश वाली हैं संगत प्रमुख यावत् प्रतिरूप हैं और जो वैक्रेय बिना भवधारणीय शरीर वाली देवांगना हैं वे आभरण वस्त्र रहित स्वाभाविक शरीर की शोभा

ताओण आभरण वसण रहियाओ पगतित्थाओ विभूमाए पण्णत्ताओ, सेसेसु देवा देवीओ णत्थि जाव अच्चुता गेविज्जा देवा केरिसिया विभूसाए ? गोयमा ! आभरणवसणरहिया य देवि णत्थि भाणियव्व पगतित्था विभूसाए पण्णत्ता एवं अणुत्तरोववाइयावि ॥३१॥ सोहम्मीसाणेसु देवा केरिसए कामभोग पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! इट्ठासद्दा इट्ठा रूवा जाव फासा एव जाव गेवेज्जा ॥ अणुत्तरो-ववातियाण अणुत्तरासद्दा जाव अणुत्तराफासा ॥ ठिती सव्वेसिं भाणियव्वा ॥ देवाणवि अणतर चय चइत्ता जे जहिं गच्छंतित भाणियव्व ॥ ३२ ॥ सोधम्मी

वाली है शेष देवलोक में देवियों नहीं है इस से इन का कथन आगे नहीं किया है और अच्युत देव लोक पर्यंत देवो के शरीर की विभूषाका कथन सौधर्म ईशान देवलोक के देवों जैसा जानना अहो भगवन् ! ग्रैवेयक देवो के शरीर की विभूषा कैसी है ? अहो गौतम ! आभरण वस्त्र रहित हैं वहां देवी नहीं हैं स्वभाव से ही विभूषा वाले शरीर हैं ऐसे ही अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ॥ ३१ ॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों कैसा कामभोग का अनुभव करते हैं ? अहो गौतम ! इष्ट शब्द इष्ट रूप यावत् स्पर्श का अनुभव करते हैं ऐसे ही ग्रैवेयक पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक में अनुत्तर शब्द यावत् अनुत्तर स्पर्शका अनुभव करते हैं स्थिति सबकी कहना देवो वहांसे चवकर अन्यस्थान जाते हैं वह भी कहना ॥३२॥

साणेसुण भते ! कप्पेसु सव्वेपाणा सव्वेभूया जाव सव्वेसत्ता पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण सयण जाण महोवगरणत्तयाए उववन्नपुव्वा ? हता गोयमा ! असइ अदुवा अणतखुत्तो ॥ सेसेसु कप्पेसु एव चेव, णवर णो चेवण देवित्ताए जाव गेविज्जगा, अणुत्तरोववातिएसुवि एव चेव णो

स्थिति	बारादेवलोक की												नवग्रैवेयक की									अ० विमान	
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१से४	५
जघन्य	१ २०	१ प०	२ सा	२ सा	७ सा	१०	१४	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३३
उत्कृष्ट	२ सा	२ सा	७ सा	७	१० सा	१४	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३३	३३

अहो भगवन् ! सब प्राण भूत जीव और सत्व सौधर्म ईशान देवलोक में पृथ्वी काया पने यावत् वनस्पति काया पने, देवपने, देवीपने आसन, शयन यावत् महोपकरण पने क्या पहिले उत्पन्न हुए ? हां गौतम ! एक वार अथवा अनंत वार उत्पन्न हुए शेष देवलोक में वैसे ही कहना परंतु वहां देवीपने उत्पन्न नहीं हुए यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक में वैसे ही कहना परंतु वहां देवता पने

ताओण आभरण वसण रहियाओ पगतित्थाओ विभूमाए पण्णत्ताओ, सेसेसु देवा देवीओ णत्थि जाव अच्चुता गेविज्जा देवा केरिसिया विभूसाए ? गोयमा ! आभरणवसणरहिया य देवि णत्थि भाणियव्व पगतित्था विभूसाए पण्णत्ता एवं अणुत्तरोववाइयावि ॥ ३१ ॥ सोहम्मीसाणसु देवा केरिसए कामभोग पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! इट्ठासद्दा इट्ठा रूवा जाव फासा एव जाव गेवेज्जा ॥ अणुत्तरोववातियाण अणुत्तरासद्दा जाव अणुत्तराफासा ॥ ठिती सव्वेसिं भाणियव्वा ॥ देवाणवि अणतर चय चइत्ता जे जहिं गच्छतित भाणियव्व ॥ ३२ ॥ सोधम्मी

वाली है शेष देवलोक में देवियों नहीं है इस से इन का कथन आगे नहीं किया है और अच्युत देव लोक पर्यंत देवों के शरीर की विभूषा का कथन सौधर्म ईशान देवलोक के देवों जैसा जानना अहो भगवन्! ग्रैवेयक देवों के शरीर की विभूषा कैसी है ? अहो गौतम ! आभरण रहित हैं वहां देवी नहीं हैं स्वभाव से ही विभूषा वाले शरीर हैं ऐसे ही अनुत्तरोप [illegible] पर्यंत कहना ॥ ३१ ॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों कैसा कामभोग का अनुभव करते हैं ? अहो गौतम! इष्ट शब्द इष्ट रूप यावत् स्पर्श का अनुभव करते हैं ऐसे ही ग्रैवेयक पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक में अनुत्तर शब्द यावत् अनुत्तर स्पर्श का अनुभव करते हैं स्थिति सब की कहना देवों वहां से चवकर अन्यस्थान जाते हैं वह भी कहना ॥ ३२ ॥

पुहुत्त मब्भहियाइ ॥ २ ॥ नेरइय मणुस्स देवाण अतर जह अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइकालो ॥ तिरिक्ख जोणियस्स अतर जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण सागरोवमसय पहुत्त साइरेग ॥ ३ ॥ एतेसिण भते ! नेरइयाण जाव देवाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा, नरइया असखेज्जगुणा, देवा असखेज्जगुणा, तिरिया अणतगुणा ॥ सेत्त चउव्विहा ससार समावन्नगा जीवा पन्नत्ता ॥ बीओवेमाणिय उद्देसो सम्मत्तो ॥ इति ततीया पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ ४ ॥ * * *

तीन पल्योपम प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक ॥ २ ॥ नरक, मनुष्य और देवों का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल तिर्यंच का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम से कुछ अधिक ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन नैरयिक यावत् देव में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य इस से नारकी असख्यातगुने, इस से देव असख्यातगुने, और इस से तिर्यंच अनतगुने ॥ यह चार प्रकार के ससारी जीव कहे हैं यह वैमानिक का उद्देशा सपूर्ण हुवा और तीसरी प्रतिपत्ति भी सम्पूर्ण हुई ॥ ६३ ॥ * *

चेत्रण देवत्ता सेत देवा ॥ इतिदेवुद्देसो ॥ ( ) ( ) ( )
नेरइयस्सण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ, एव सव्वेसिं पुच्छा॥तिरिक्ख जोणियाण जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ॥ एव मणुस्साणवि ॥ देवाण जहा नेरइयाण ॥ १ ॥ देवे नेरइयाण जचेव ठिति सच्चेव संचिट्ठणा ॥ तिरिक्खजेणियस्स जहं अंतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो मणुस्सण भंते !मणुस्सेति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ, पुव्वकोडि

नहीं उत्पन्न हुए यह देव उद्देशा संपूर्ण हुवा ० ० ० ० ०

अहो भगवन् ! नैरयिक की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंच की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम मनुष्य की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम देवों की स्थिति नारकी जैसे कहना ॥ १ ॥ नारकी देव की जैसी स्थिति कही वैसे ही उन की संचिट्ठणा जानना तिर्यंच योनिकी संस्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल अहो भगवन् ! मनुष्य मनुष्यपने कितना काल पर्यंत रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट

पुहुत्त मब्भहियाइ ॥ २ ॥ नेरइय मणुस्स देवाण अतर जह अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइकालो ॥ तिरिक्ख जोणियस्स अतर जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण सागरोवमसय पहुत्त साइरेग ॥ ३ ॥ एतेसिण भते ! नेरइयाण जाव देवाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा, नरइया असखेज्जगुणा, देवा असखेज्जगुणा, तिरिया अणतगुणा ॥ सेत्त चउव्विहा ससार समावन्नगा जीवा पन्नत्ता ॥ बीओवेमाणिय उद्देसो सम्मत्तो ॥ इति ततीया पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ ४ ॥ * * *

तीन पल्योपम प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक ॥ २ ॥ नरक, मनुष्य और देवों का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल तिर्यंच का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सा सागरोपम से कुछ अधिक ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन नैरायिक यावत् देव में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य इस से नारकी असख्यातगुने, इस से देव असख्यातगुने, और इस से तिर्यंच अनतगुने ॥ यह चार प्रकार के ससारी जीव कहे हैं यह वैमानिक का उद्देशा सपूर्ण हुवा और तीसरी प्रतिपत्ति भी सम्पूर्ण हुई ॥ ३ ॥ * *

चेत्रण देवत्ता सेत देवा ॥ इतिदेवुद्देसो ॥ ( ) ( ) ( )

नेरइयस्सण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ, एव सव्वेसिं पुच्छा॥तिरिक्ख जोणियाण जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ॥ एव मणुस्साणवि ॥ देवाण जहा नेरइयाण ॥ १ ॥ ऐवं नेरइयाणं जचेव ठिति सचेव संचिट्ठणा ॥ तिरिक्खजोणियस्स जह अंतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो मणुस्सण भंते !मणुस्सेति कालतो केवाचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ, पुव्वकोडि

नहीं उत्पन्न हुए यह देव उद्देशा संपूर्ण हुआ ० ० ० ० ०

अहो भगवन् ! नैरयिक की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंच की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम मनुष्य की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम देवों की स्थिति नारकी जैसे कहना ॥ १ ॥ नारकी देव की जैसी स्थिति कही वैसे ही उन की संचिट्ठना जानना तिर्यंच योनिकी संस्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल अहो भगवन् ! मनुष्य मनुष्यपने कितना काल पर्यंत रहे ! अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट

पुहुत्त मब्भहियाइं ॥ २ ॥ नेरइय मणुस्स देवाण अतर जह अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइकालो ॥ तिरिक्ख जोणियस्स अतर जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण सागरोवमसय पहुत्त सातिरेग ॥ ३ ॥ एतेसिण भते ! नेरइयाण जाव देवाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा, नेरइया असखेज्जगुणा, देवा असखेज्जगुणा, तिरिया अणतगुणा ॥ सेत्त चउव्विहा ससार समावन्नगा जीवा पन्नत्ता ॥ बीओवेमाणिय उद्देसो सम्मत्तो ॥ इति ततीया पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ ४ ॥ * * *

तीन पल्योपम प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक ॥ २ ॥ नरक, मनुष्य और देवों का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल तिर्यंच का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम से कुछ अधिक ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन नैरायिक यावत् देव में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य इस से नारकी असख्यातगुने, इस से देव असख्यातगुने, और इस से तिर्यंच अनतगुने ॥ यह चार प्रकार के ससारी जीव कहे हैं यह वैमानिक का उद्देशा सपूर्ण हुवा और तीसरी प्रतिपत्ति भी सम्पूर्ण हुई ॥ ६३ ॥ * *

॥ चतुर्थी प्रतिपत्तिः ॥

तत्थण जे ते एवमाहंसु पंचविहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, ते एव माहंसु तंजहा एगिंदिया, बेंदिया, तेंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया॥ १ ॥ से किंत एगिंदिया ? एगिंदिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय,एवं जाव पंचिंदिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ २ ॥ एगिंदियस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वास सहस्साइं, बेंइदियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारससंवच्छराणि, एवं तेइंदियस्स एगुणपण्ण

अब जो पांच प्रकारके जीवकी प्ररूपणा करते हैं वह इसतरह है तद्यथा १ एकेन्द्रिय, २ द्वीन्द्रिय, ३ त्रीन्द्रिय, ४ चतुरेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय॥१॥प्रश्न एकेन्द्रियके कितने भेद कहे हैं? उत्तर एकेन्द्रियके दो भेद कहे हैं तद्यथा पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे ही पंचेन्द्रिय पर्यंत जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! एकेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बाइस हजार वर्ष द्वीन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष, त्रीन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ४९ रात्रि-दिन, चतुरेन्द्रिय की जघन्य

राइंदियाण, चउरिंदियस्स छम्मासा, पंचिंदियस्स जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ॥ ३ ॥ अपज्जत्तएगिंदियस्सण भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेणावि अतोमुहुत्त सव्वेसि अपज्जत्तगाण जाव पचिंदिया ॥ पज्जत्त एगिंदियस्सण भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ एव उक्कोसियावि ठिती अतोमुहुत्तूण सव्वेसि पज्जत्तगाण कायव्वा ॥ ४ ॥ एगिंदिएण भते ! एगिंदियत्ति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वाणस्सतिकालो ॥ बेइंदिएण भते ! बेइंदियत्ति कालओ केवचिर

अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट छ मास पंचेन्द्रियकी जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम ॥३॥ अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय अपर्याप्त की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की, ऐसे ही सब अपर्याप्त का जानना यों पंचेन्द्रिय पर्यंत कहना अहो भगवन् ! पर्याप्त एकेन्द्रिय की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष में अंतर्मुहूर्त कम ऐसे ही सब की उत्कृष्ट स्थिति जो कही उस में अंतर्मुहूर्त कम जानना ॥४॥ अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय एकेन्द्रियपने रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति काल जितना रहे अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय

होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सखेज्जकाल, एव जाव चउरिंदिए सखेज्जकाल ॥ पचिंदिएण भते ! पचेंदियत्ति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवमसहस्स सातिरेग ॥ अपज्जत्ता एगिंदियाण भते ! अपज्जत्ता केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त, एव जाव पंचिंदिया ॥ पज्जत्त एगिंदिएण भते ! कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सखेज्जाइ वाससहस्साइ, एव बेइंदिएवि णवर सखेज्जाइ वासाइ, तेइंदिएण सखेज्जा राइंदिया, चउरिंदिएण सखेज्जामासा, पज्जत्त पचेंदिय

बेइन्द्रियपने रहे तो कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात काल तक रहे ऐसे ही तेइन्द्रिय और चतुरेन्द्रिय का जानना अहो भगवन् ! पचेन्द्रिय, पचेन्द्रियपने रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतमुहूर्त उत्कृष्ट साधिक एक हजार सागरोपम अहो भगवन् ! अपर्याप्त एकेन्द्रिय अपर्याप्त एकेन्द्रियपने रहे तो कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अंतर्मुहूर्त ऐसे ही पंचेन्द्रिय पर्यंत कहना अहो भगवन् ! पर्याप्त एकेन्द्रिय पर्याप्त एकेन्द्रिय पने रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष पर्याप्त बेइन्द्रिय का भी वैसे ही जानना, परंतु संख्यात वर्ष जानना तेइन्द्रिय संख्यात

सागरोवमसय पुहुत्त सातिरेग ॥ ५ ॥ एगिंदियस्सण भंते ! केवतिय काल अतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दो सागरोवम सहस्साइ सखेज्ज-वासमब्भहियाइ ॥ बेइंदियस्सण भते ! केवतिय काल अतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइ कालो, एव तेइंदियस्स, चउरिंदियस्स पंचिंदियस्स अपज्जत्तगाण एव चेव, पज्जत्तगाणवि एव चेव ॥ ६ ॥ एएसिण भंते ! एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण पचेंदियाण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया, चउरिंदिया

रात्रि दिन, पर्याप्त चतुरेन्द्रिय सख्यात मास और पर्याप्त पचेन्द्रिय प्रत्येक सो सागरोपम से कुछ अधिक ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय का कितना अतर कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो हजार सागरोपम और सख्यात हजार वर्ष अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय का कितना अतर है ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनत काल वनस्पतिकाया जितना ऐसे ही त्रीइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पचेन्द्रिय का जानना पर्याप्त व अपर्याप्त का औधिक जैसे जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! इन एकेन्द्रिय, द्वीइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय और पचेन्द्रिय में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे पचेन्द्रिय, उस से चतुरेन्द्रिय

विसेसाहिया तेंदिया विसेसाहिया, वेइंदिया विसेसाहिया, एगिंदिया अणतगुण ॥ एव अपज्जत्तगाण पुच्छा ? गोयमा ! सव्वथोवा पचेंदिया अपज्जत्तगा, चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया वेंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिय अपज्जत्तगा अणतगुणा ॥ एव पज्जत्तगाण पुच्छा ? गोयमा ! सव्वथोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, पचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बइंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिय पज्जत्तगा, विसेसाहिया, एगिंदिय पज्जत्तगा अनतगुणा, सइंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया ॥ ७ ॥ एतसिण भते सइंदियाण

विशेषाधिक, उस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, उस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक, उस से एकेन्द्रिय अनन्तगुने ऐसे ही अपर्याप्त की पृच्छा करना अहो गौतम ! सब से थोडे पचेन्द्रिय के अपर्याप्त इस से चतुरेन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से तेइन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से द्वीइन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से एकेन्द्रिय के अपर्याप्त अनतगुने अहो भगवन् ! इन पर्याप्त एकेन्द्रिय यावत् पचेन्द्रिय में कौन २ विशेष हैं ? अहो गौतम ! सबसे थोडे चतुरेन्द्रिय के पर्याप्त इस से पचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक इस से द्वीइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से त्रीन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से एकेन्द्रिय के पर्याप्त अनतगुने ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सइन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य

पज्जत्तगा अपज्जत्तगाणय कयर २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्तगा, सइंदिया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा ॥ एवं एगिंदियावि ॥ एतेसिण भंते ! बेइंदियाण पज्जत्ता अपज्जत्तगाण कयरे२ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तगा, बेइंदिया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ॥ एवं तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥ ८ ॥ एएसिण भंते ! सइंदियाण एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण पंचिंदियाण पज्जत्तगा अपज्जत्तगाणय कयर २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा, पंचिंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया,

व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे सइन्द्रिय अपर्याप्त इस से सइन्द्रिय के पर्याप्त सख्यातगुने ऐसे ही एकेन्द्रिय का जानना अहो भगवन् ! द्वीइन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे द्वीन्द्रिय पर्याप्त इस से द्वीन्द्रिय के अपर्याप्त असख्यातगुने ऐसे ही त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय और पचेन्द्रिय का जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! इन सइन्द्रिय ! एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय और पचेन्द्रिय के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे चतुरेन्द्रिय पर्याप्त, इस से पचेन्द्रिय पर्याप्त विशे

तेइंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया,पचिंदिय अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा,चउरिंदिय अपज्जत्तगा विसेसाहिया तेइंदिय अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिय अपज्जत्तगा विसेसाहिया,एगिंदिय अपज्जत्ता अणंतगुणा,सइंदिय अपज्जत्तगा विसेसाहिया,एगिंदिय पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सइंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया ॥सेत्तं पंचविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ पंचविहा पडिवत्ती सम्मत्ता॥ ४ ॥ * * * * *

पाधिक,इससे द्वीन्द्रिय पर्याप्त विशेषाधिक,इससे तेइन्द्रिय पर्याप्त विशेषाधिक ,इससे पंचेन्द्रिय पर्याप्त असंख्यातगुने इससे चतुरेन्द्रिय अपर्याप्त विशेषाधिक हैं इससे तेइन्द्रिय अपर्याप्त विशेषाधिक हैं,इससे द्वीन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक हैं, इस से एकेन्द्रिय अपर्याप्त अनंतगुना, इस से सइन्द्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक इस से एकेन्द्रिय के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सइन्द्रिय पर्याप्त विशेषाधिक, यह पांच प्रकार के संसार समापन्न जीव कहे हैं यह पांच प्रकार के जीवों की चतुर्थ प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥ ४ ॥

॥ पंचमी प्रतिप्रत्ति ॥

तत्थण जे ते एव माहंसु छव्विहा ससार समावण्णगा जीवा, ते एव माहंसु तजहा—पुढविक्काइया, आउक्काइया, तउक्काइया, वाउक्काइया, वणस्सतिकाइया, तसकाइया ॥१॥ सेकिंत पढविकाइया ?पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता तजहा—सुहुम पुढविक्काइया बादर पुढविक्काइया ॥ सुहुम पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता, तजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, एव चउक्कएण भेएण नायव्वा, आउ तउ वाउ वणप्फइकाइया णेयव्वा ॥ सेकिं त तसकाइया ? तसकाइया दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ २ ॥ पुढविकाइयस्सण भते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेण

जो छ प्रकार के जीव का कथन करते हैं वे इस तरह प्ररूपते हैं तद्यथा १ पृथ्वी कायिक २ अपकायिक ३ तेउकायिक ४ वायुकायिक, ५ वनस्पतिकायिक और ६ त्रसकायिक ॥१॥ पृथ्वीकाय के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया के दो भेद कहे हैं-सूक्ष्म पृथ्वी काया और बादर पृथ्वी काया सूक्ष्म के दो दो भेद-पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे ही बादर पृथ्वी काया के पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे दो २ भेद अप्, तेउ, वायु व वनस्पति कायके जानना अहो भगवन् त्रस काया के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! त्रस काया के दो भेद पर्याप्त और अपर्याप्त ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम !

अतोमुहुत्त उक्कोसेण बावीस वास सहस्साइ, एव सव्वेसिं ठिती णेयव्वा ॥ तस काइयस्स जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ, अपज्जत्तगाण सव्वेसिं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त, पज्जत्तगाण सव्वेसिं उक्कोसियावि ठिती अतोमुहुत्तूणा कायव्वा ॥ ३ ॥ पुढविकाइयाण भते ! पुढविकाइएति कालउकेवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल, जाव असखेज्ज-लोगा, एव जाव वाउक्काइयाण ॥ वणस्सतिकाइयाण अणत काल, जाव आवलियाए असखिज्जति भागो ॥ तसकाइयाण भते ! तसकाएति कालउकेवचिर होति ?

पृथ्वी काया की स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बाइस हजार वर्ष यों सब की स्थिति कहना यावत त्रस काया का जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तत्तीस सागरोपम सब अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त और पर्याप्त की उत्कृष्ट स्थिति समुच्चय जैसी कहना परंतु अतर्मुहूर्त कम कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया पृथ्वी कायापने कितना काल पर्यंत रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असख्यात काल रहे यावत असख्यात लोक के प्रदेश ऐसे ही वायु काया पर्यंत कहना वनस्पतिकाया वनस्पतिपने अनत काल यावत् आवलिका के असख्यात भाग [illegible] अहो भगवन् ! त्रस काया त्रस कायापने

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दो सागरोवम सहस्साइ सखेज्जा वासब्भ-हियाइ, अपज्जत्तगाण छण्हवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त वास सहस्सा, (गाहा)पुढवि दगाणिले तरुण पज्जत्ते, तेउराइंदि सखा तससकाय सागरसय पुहुत्त मब्भहिय॥१॥ पज्जत्तगाण सव्वेसि एव॥४॥ पुढवि काइयस्सण भते! केवतिय काल अतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सतिकालो, एव आउ-तेउवाउ काइय तसकाइयाणवि । वणस्सइकाइयस्स पुढवि कालो एव अपज्जत्तगा-

कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो हजार सागरोपम और सख्यात हजार वर्ष अधिक सब के अपर्याप्त की भवस्थिति जघन्य उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त पृथ्वी, अप्, वायु, और वनस्पति के पर्याप्त की काया स्थिति सख्यात हजार वर्ष की पर्याप्त तेउ काया की सख्यात अहोरात्रि की, पर्याप्त त्रस काया की प्रत्येक सो सागर मे अधिक ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया का अतर कितना कहा ? अर्थात् पृथ्वी काया पुन पृथ्वी कायापने उत्पन्न होवे तो कितने काल में होवे ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल ऐसे ही अप्काया, तेउकाया, वायुकाया और त्रसकाया का जानना वनस्पति काया का अतर पृथ्वी काया के काल जितना जानना ऐसे ही अपर्याप्त का कहना

णवि वणस्सतिकालो,॥वणस्सइ काइयाण पुढविकालो, पज्जत्तगाणवि एव चेव वणस्स-तिकालो, पज्जत्ताण वणस्सतीण पुढवि कालो ॥ ५ ॥ अप्पाबहुय—सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखिज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया, विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया वणस्सइकाइया अणतगुणा ॥एव अपज्जत्तगावि पज्जत्तगावि ॥ ६ ॥ एतेसिण भते ! पुढविकाइयाण पज्जत्तगा अपज्जत्तगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाईया अपज्जत्तगा पुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तगा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥

अर्थात् अपर्याप्त पृथ्वी, अप्, तेउ, वायु और त्रसकायाका वनस्पति के काल जितना और अपर्याप्त वनस्पति काया का पृथ्वी काया के काल जितना जानना ऐसे ही पर्याप्त का कहना ॥५॥ अब अल्पाबहुत्व कहते हैं, सब में थोडी त्रस काया इन से तेउकाया असख्यातगुने, इन से पृथ्वी काया विशेषाधिक, इन से अप्काया विशेषाधिक इन से वायुकाया विशेषाधिक इन से वनस्पति काया अनतगुनी इसी तरह पर्याप्त अपर्याप्त दोनोंकी अल्पाबहुत्व जानना ॥६॥ अहो भगवन् ! इन पृथ्वीकाया पर्याप्त अपर्याप्तमें कौन किस से अल्पबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सबसे थोडे अपर्याप्त पृथ्वीकाया इससे पर्याप्त पृथ्वीकाया सख्यातगुने

जाव वणस्सतिकाइयावि ॥ सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ॥ ७ ॥ एतेसिणं भंते ! पुढविकाइयाणं जाव तसकाइयाणं पज्जत्तगा अपज्जत्तागाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपजत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढवि पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउ पज्जत्तगा विसेसाहिया,

सब से थोडे अप्काय अपर्याप्त इस से पर्याप्त अप्काय संख्यातगुने, यों वनस्पति काया पर्यंत कहना त्रस काय में सब में थोडे पर्याप्त त्रसकाय इस से अपर्याप्त त्रसकाय असंख्यात गुने ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! इन पृथ्वीकाय यावत् त्रसकाय के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे त्रसकाया के पर्याप्त, इस से त्रसकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने, इस से तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यात गुने, इस से पृथ्वी काया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से अप्काया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से वायुकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से तेउकाया के पर्याप्त संख्यातगुने, इस से

वाउ पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणप्फइ काइया अपज्जत्तगा अणतगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सतिकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया ॥ ८ ॥ सुहुमस्स भते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त,उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त, एव जाव सुहुमनिओयस्स, एव अपज्जत्तगाण पज्जत्तगाणवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त, सुहुमण भते ! सुहुमति कालतो केवचिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्जति काल जाव असखेज्जालोया, सव्वेसिं पुढवि कालो जाव सुहुम निओयस्स पुढवि

पृथ्वीकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से अप्काया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से वनस्पति काया के अपर्याप्त अनंतगुन, इस से सकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से वनस्पति काया के पर्याप्त संख्यातगुने, इस से सकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सूक्ष्म जीवों की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की ऐसे ही सूक्ष्म अप, तेउ, वायु, वनस्पति और सूक्ष्म निगोद की जानना ऐसे ही पर्याप्त व अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त जानना अहो भगवन् ! सूक्ष्म सूक्ष्मपने कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल यावत् असंख्यात लोक यों सब पृथ्वी का जानना ऐसे ही सूक्ष्म निगोद पर्यंत करना

कालो अपज्जत्तगाण सव्वेसिं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त पज्जत्तगाणवि सव्वेसिं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त ॥ सुहुमस्सण भते ! केवतिय काल अतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल कालओ असखेज्जातो उसप्पिणि आसप्पिणीओ अगुलस्स असखेज्जति भागो एव सुहुमवणस्सति काइयस्सवि, सुहुमनिउयस्सवि जाव असखेज्जति भागो, पुढवि-काइयाण वणस्सतिकालो, एव अपज्जत्तगाण पज्जत्तगाणवि एव ॥ अप्पाबहुग—सव्व-त्थावा सुहुम तेउकाइया सुहुम पुढविकाइया विसेसाहिया, सुहुमआउवाउ विसेसाहिया,

एसे ही सब अपर्याप्तकी भवस्थिति जघन्य उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त जानना और ऐसे ही सब पर्याप्तकी भवस्थिति भी जघन्य उत्कृष्ट अतमुहूर्त जानना अहो भगवन ! सूक्ष्म का कितना अतर कहा है ? अर्थात् सूक्ष्म में से नीकले पीछे पुन सूक्ष्म कब होता है ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असख्यात काल, कालसे असख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी, अगुल के असख्यातवे भाग के प्रदेश जितने ऐसे ही सूक्ष्म वनस्पतिकाया पृथ्वी काया का वनस्पति काल जितना अनत काल का अतर जानना ऐसे ही अप् तेउ और वायु काया का अतर अनत काल का जानना जैसे समुच्चय आश्री कहा वैसे ही अपर्याप्त व पर्याप्त का

वाउ पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणप्फइ काइया अपज्जत्तगा अणतगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सतिकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया ॥ ८ ॥ सुहुमस्स भते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त,उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त, एव जाव सुहुमनिओयस्स, एव अपज्जत्तगाण पज्जत्तगाणवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त, सुहुमण भते ! सुहुमति कालतो केवचिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्जति काल जाव असखेज्जालोया, सव्वेसिं पुढवि कालो जाव सुहुम निओयस्स पुढवि

पृथ्वीकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से अप्काया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से वनस्पति काया के अपर्याप्त अनन्तगुन, इस से सकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से वनस्पति काया के पर्याप्त संख्यातगुने, इस से सकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सूक्ष्म जीवों की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की ऐसे ही सूक्ष्म अप, तेउ, वायु, वनस्पति और सूक्ष्म निगोद की जानना ऐसे ही पर्याप्त व अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त जानना अहो भगवन् ! सूक्ष्म सूक्ष्मपने कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल यावत् असंख्यात लोक यों सब पृथ्वी का जानना ऐसे ही सूक्ष्म निगोद पर्यंत कहना

कालो अपज्जत्तगाण सव्वेसिं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त पज्जत्तगाणवि सव्वेसिं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त ॥ सुहुमस्सण भते ! केवतिय काल अतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल कालओ असखेज्जातो उसप्पिणि ओसप्पिणीओ अगुलस्स असखेज्जति भागो एव सुहुमवणस्सति काइयस्सवि, सुहुमनिउयस्सवि जाव असखेज्जति भागो, पुढवि-काइयाण वणस्सतिकालो, एव अपज्जत्तगाण पज्जत्तगाणवि एव ॥ अप्पाबहुग—सव्व-त्थोवा सुहुम तेउकाइया सुहुम पुढविकाइया विसेसाहिया, सुहुमआउवाउ विसेसाहिया,

एसे ही सब अपर्याप्तकी भवस्थिति जघन्य उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त जानना और ऐसे ही सब पर्याप्तकी भवस्थिति भी जघन्य उत्कृष्ट अतमुहूर्त जानना अहो भगवन ! सूक्ष्म का कितना अतर कहा है ? अर्थात् सूक्ष्म में से नीकले पीछे पुन सूक्ष्म कब होता है ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असख्यात काल, कालसे असख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी, अगुल के असख्यातवे भाग के प्रदेश जितने ऐसे ही सूक्ष्म वनस्पतिकाया पृथ्वी काया का वनस्पति काल जितना अनत काल का अतर जानना ऐसे ही अप् तेउ और वायु काया का अतर अनत काल का जानना जैसे समुचय आश्री कहा वैसे ही अपर्याप्त व पर्याप्त का

सुहुमनिउया असखेज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अणतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया, एव अपज्जत्तगाणवि सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया, पज्जत्तगाणवि एव चव, ॥ एतेसिण भते ! सुहुमाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सहुमा अपज्जत्तगा, सुहुमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, एव जाव सुहुम निउगा एतेसिण भते ! सुहुमाण सुहुम पुढविक्काइयाण जाव सुहुणिओयाणय पज्जत्ता अपज्जत्ताणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउक्काइया अपज्जत्तगा, सुहुम पुढविक्काइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम आउक्काइया

कहना अल्पाबहुत्व सब से थोडे सूक्ष्म तेउकाया, इन से सूक्ष्म पृथ्वी काया विशेषाधिक, इस से अप्काया विशेषाधिक, इस से वायुकाया विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म निगोद असख्यातगुने, इस से सूक्ष्म वनस्पति काया अनंतगुने, इस से सूक्ष्म विशेषाधिक ऐसे ही अपर्याप्त की अल्पाबहुत्व कहना और वैसे ही पर्याप्त की अल्पाबहुत्व कहना अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्पाबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म के अपर्याप्त, इनसे सूक्ष्म के पर्याप्त सख्यातगुने यों सूक्ष्म निगोद पर्यंत कहना अहो भगवन् ! सूक्ष्म पृथ्वी काया यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्पाबहुत्व यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म

अपज्जत्ता विसेसाहिया, सुहुमवाउ अपज्जत्ता विसेसाहिया, सुहुमतेउक्काइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, सुहुम पुढविक्काइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउ पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमवायु पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिउया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुना, सुहुमनिगोया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा सुहुमवणस्सति काइया अपज्जत्तगा अणतगुणा, सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया, सुहुमवणस्सति काइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा सुहुमा पज्जत्ता विसेसाहिया ॥१॥ बायरस्सण भंते! केवइय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं

तेउकाया के अपर्याप्त, इस से सूक्ष्म पृथ्वी काया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म अप्काया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वायुकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक इस से सूक्ष्म तेउकाया के पर्याप्त संख्यातगुने, इस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म अप्काया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त संख्यातगुने, इस से सूक्ष्म वनस्पति काया के अपर्याप्त अनंतगुने, इस से सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वनस्पति काया के पर्याप्त संख्यातगुने इस से सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! बादर की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य

सुहुमनिउया असंखेज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया, एव अपज्जत्तगाणवि सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया, पज्जत्तगाणवि एव चेव, ॥ एतेसिणं भंते ! सुहुमाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा, सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, एवं जाव सुहुम निउगा एतेसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुम पुढविक्काइयाणं जाव सुहुमणिओयाणय पज्जत्ता अपज्जत्ताणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउक्काइया अपज्जत्तगा, सुहुम पुढविक्काइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम आउक्काइया

कहना अल्पाबहुत्व सब से थोडे सूक्ष्म तेउकाया, इन से सूक्ष्म पृथ्वी काया विशेषाधिक, इस से अप्काया विशेषाधिक, इस से वायुकाया विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म निगोद असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म वनस्पति काया अनंतगुने, इस से सूक्ष्म विशेषाधिक ऐसे ही अपर्याप्त की अल्पाबहुत्व कहना और वैसे ही पर्याप्त की अल्पाबहुत्व कहना अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्पाबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म के अपर्याप्त, इससे सूक्ष्म के पर्याप्त संख्यातगुने यों सूक्ष्म निगोद पर्यंत कहना अहो भगवन् ! सूक्ष्म पृथ्वी काया यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्पाबहुत्व यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे सूक्ष्म

बायरत्ति कालओ केवचिर होइ? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल, असखेज्जा उसप्पिणिउसप्पिणीउ कालउ खेत्तउ अगुलस्स असखेज्जति भागो, बायर पुढवि काइयआउ वाउतेऊपत्तेग सरीर बातरवणस्सति काइयस्त णिओयस्स बायर णिओयस्सय जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीउ सखातीयीओ समाओ अगुलभागो तहा असखेज्जाउ, अणुबधो सेसए वोच्छ ॥ उसप्पिणि, ओसप्पिणीओ आढाइज्जे पोग्गलाण परियट्टा, चउदधि सहस्सा खलु साहिया होति तसकाए॥? अंतो

अप्काया, तेउकाया, वायुकाया, प्रत्येक शरीरी बादरवनस्पति काया और बादर निगोद इन की काया स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ७० क्रोडाक्रोड सागरोपम काल से अगुल के असख्यातवे भाग क्षेत्र प्रदेश जितनी असख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी पर्यंत औधिक बादर और बादर वनस्पति में है क्षेत्र का अनुबंध कहता हू शेष बादर पृथ्वी, अप् तेउ, वायु प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया और बादर निगोद इन छे की साढे तीन अवसर्पिण और सूक्ष्म व बादर दोनों मीलकर निगोद में अढाइ पुद्गल परावर्त रहे बादर त्रस काया की काय स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो हजार सागरोपम से कुछ अधिक अहो भगवन्! सब अपर्याप्त की काया स्थिति कितनी कही? अहो

अंतो मुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता, एवं बायर तसकाइयस्सवि बायर पुढवि जहा पुढविकाइयस्स बायर आउ सत्तवास सहस्साइं, बायर तेउस्स तिण्णिराति दिय, बादर वाउस्स तिण्णि वाससहस्साइं, बायर वणस्सइ दसवास सहस्साइं, एवं पत्तेय सरीरस्सवि णिउयस्स जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त, एवं बायरणिओस्सवि अपज्जत्तगाण सव्वेसिं अंतो मुहुत्तं, पज्जत्तगाण उक्कोसिया ठिती, अंतोमुहुत्तूणा कायव्वा सव्वेसिं॥ बादरस्सणं भंते!

अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम ऐसे ही बादर त्रस काया की स्थिति जानना बादर पृथ्वी काया की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की, बादर अप्काया की सात हजार वर्ष की, बादर तेउकाया की तीन अहो रात्रि बादर वायुकाया की तीन हजार वर्ष की, बादर वनस्पति काया की दश हजार वर्ष की ऐसे ही प्रत्येक वनस्पति काया की जानना निगोद की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त ऐसे ही बादर निगोद का जानना, सब बादर अपर्याप्त की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त जानना सब पर्याप्त की जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अपनी २ स्थिति में अंतर्मुहूर्त कम अहो भगवन् ! बादर की कायस्थिति कितनी कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल काल से असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी क्षेत्र से अंगुल के असंख्यातवे भाग प्रदेश जितनी अवसर्पिणी उत्सर्पिणी जानना बादर पृथ्वीकाया,

आरसप्पिणीउए बायर निउए कालमसखेज्जतर सेसाण वणस्सइकालो ॥ १ ॥
अप्पाबहु सव्वत्थोवा बायरतसकाइया बायर तेउकाइया असखेज्जगुणा, पत्तेय
सरीरब दरवणस्सतिकाइया असखेज्जगुणा, ब यरनिउया असखेज्जगुणा, बायरपुढवि
असखेज्जगुणा, आउवाउ असखेज्जगुणा, बायर वणस्सतिकाइया अणतगुणा,
ब यरा विसेसाहिया, एव अपज्जत्तगाणवि ॥ पज्जत्तगाण सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया
ब दरतसकाइया असखेज्जगुणा, पत्तेय सरीरब यरा असखेज्जगुणा, सेसा तहेव जाव

बादर तेउकाया असख्यात गुने, इस स प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया असख्यात गुने, इस से बादर निगोद असख्यात गुने, इस से बादर पृथ्वीकाया असख्यात गुने, इस से बादर अपूकाया असख्यातगुने, इस से बादर वायुकाया असख्यातगुने, इस से बादर वनस्पति काया अनतगुनी, इस से बादर विशेषाधिक, ऐसे ही अपर्याप्त का जानना पर्याप्त में सब स थोडे बादर तेउकाया, इस से बादर त्रस काया असख्यातगुने, इस से प्रत्यक शरीरी बादर वनस्पतिकाया असख्यातगुने, इस से बादर निगोद असख्यातगुने, इस से बादर पृथ्वी काया असख्यातगुने, इस से बादर अपूकाया असख्यातगुने, इस स बादर वायुकाया असख्यातगुने, इस से बादर वनस्पति काया अनतगुने, इस से बादर विशेषाधिक इन बादर के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्पबहुत्व य वत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से

मुहुत्त कालो होइ अपज्जत्तगाण सव्वेसिं, पज्जत्त बायरस्स बायर तसकायस्सवि ॥ २ ॥ एतेसिणं ठिई सागरोवमसत पुहुत्त साइरेग तउसखेज्जा रातिंदिय, दुविहणिउए मुहुत्तमद्धतु सेसाण सखेज्जा वासमहस्साओ सव्वेसिं पज्जत्तगाण अतर बायर वणस्सति काइयस्स णियास्स बायरणिउयस्स, एतेसिं चउण्हवि पुढविकालो जाव असखेज्जालोया, सेसाण वणस्सतिकालो ॥ एव पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणवि अतर उहेय बायरतरु उस्साप्पिणी

गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अंतमुहूर्त बादर के पर्याप्त और त्रस काया के पर्याप्त की कायास्थितिप्रत्येक सो सागरोपम से अधिक जानना पर्याप्त तेउकाया सख्यात अहोरात्र रहे दोनों प्रकार के निगोद की कायास्थिति अतर्मुहूर्त शेष पृथ्वी, अप्, वायु और प्रत्येक वनस्पति के पर्याप्त की काया स्थिति सख्यात हजार वर्ष की है अहो भगवन् ! बादर जीव का कितना अतर कहा ? अर्थात् कितने काल में पुन बादरपना प्राप्त करे ? अहो गौतम ! बादर जीव, बादरवनस्पति, प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति, और बादर निगोद का पृथ्वीकाल का अंतर कहा यावत् असख्यात लोक के आकाश प्रदेश जितनी अवसर्पिणी उत्सर्पिणी शेष पृथ्वी, अप्, तेउ, वायु और त्रस इन का अतर वनस्पति काल जितना होवे एसे ही पर्याप्त और अपर्याप्त का अतर जानना अल्पाबहुत्व सब से थोडे बादर त्रस काया, इस से

असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बादर वणस्सति काईया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर णिओदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर पुढवि आउ वाउ अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर वणस्सइ काइया पज्जत्तगा अणंतगुणा बायर पज्जत्ता विसेसाहिया बादर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरअपज्जत्तगा विसेसाहिया, बायरा विसेसाहिया ॥ १० ॥ एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण जाव सुहुमनिगायाण बायराण बायरपुढविकाइया जाव बायरतसकाइयाण कयरे २ हिंतो

इस से बादर निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर पृथ्वी काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से अपकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर वायुकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर वनस्पति काया के पर्याप्त अनंतगुने इस से बादर के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से बादर वनस्पति काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने इस से बादर के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से समुच्चय बादर विशेषाधिक ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म, सूक्ष्म पृथ्वी काया यावत् सूक्ष्म निगोद, बादर बादर पृथ्वी काया यावत् त्रसकाया इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर त्रसकाया, इस से बादर तेउकाया असंख्यातगुना इस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया असंख्यातगुना, इस से बादर निगोद असंख्यातगुना इस से बादर पृथ्वीकाया

बादरा विसेसाहिया ॥ एतेसिण भंते ! बायराण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरपज्जत्तगा बायरअपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा एवं सव्वे जाव बायर तसकाइया ॥ एएसिण भंते ! बायराण बायरपुढविकाइयाण जाव बायरतसकाइयाणवि पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे२हिंतो जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा बायरतेउकाइया पज्जत्तगा बायरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बायर तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ काइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर निओया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढवि आउ वाउ पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर तेउ अपज्जत्तगा

पीछे बादर पर्याप्त इससे अपर्याप्त असंख्यातगुने ऐसे ही त्रसकाया पर्यंत कहना अहो भगवन्! इन बादर बादर पृथ्वीकाया यावत् त्रसकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किससे अल्पबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक है! अहो गौतम! सब से थोडे बादर तेउकाया के पर्याप्त, इससे बादर त्रस काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, बादर त्रस काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने इससे प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इससे बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर पृथ्वीकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर अप्काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर वायुकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से प्रत्येक शरीर बादर वनस्पति काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने,

असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बादर वणस्सति काईया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर णिओदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर पुढवि आउ वाउ अपज्जत्तगा असंखेज्ज-गुणा, बायर वणस्सइ काइया पज्जत्तगा अणंतगुणा बायर पज्जत्ता विसेसाहिया बादर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायरअपज्जत्तगा विसेसाहिया, बायरा विसेसाहिया ॥ १० ॥ एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण जाव सुहुमनिगायाण बायराण बायरपुढविकाइया जाव बायरतसकाइयाण कयरे २ हिंतो

इस से बादर निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर पृथ्वी काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से अप्काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर वायुकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर वनस्पति काया के पर्याप्त अनंतगुने इस से बादर के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से बादर वनस्पति काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से समुच्चय बादर विशेषाधिक ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म, सूक्ष्म पृथ्वी काया यावत् सूक्ष्म निगोद, बादर बादर पृथ्वी काया यावत् त्रसकाया इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर त्रसकाया, इस से बादर तेउकाया असंख्यातगुना इस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया असंख्यातगुना, इस से बादर निगोद असंख्यातगुना इस से बादर पृथ्वीकाया

बादरा विससाहिया ॥ एतेसिण भंते ! बायराण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरपज्जत्तगा बायरअपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा एवं सव्वे जाव बायर तसकाइया ॥ एएसिण भंते ! बायराण बायरपुढविकाइयाण जाव बायरतसकाइयाणवि पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा बायरतेउकाइया पज्जत्तगा बायरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ काइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर निओया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढवि आउ वाउ पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर तेउ अपज्जत्तगा

थोडे बादर पर्याप्त इससे अपर्याप्त असंख्यातगुने ऐसे ही त्रसकाया पर्यंत कहना अहो भगवन्! इन बादर बादर पृथ्वीकाया यावत् त्रसकाया के पर्याप्त अपर्याप्त में से कौन किस से अल्पबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे बादर तेउकाया के पर्याप्त, इससे बादर त्रस काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, बादर त्रस काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने इससे प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इससे बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर पृथ्वीकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर अप् काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर वायुकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से प्रत्येक शरीर बादर वनस्पति काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने,

असखेज्जगुणा, परोय सरीर बादर वणस्साति काईया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, बायर णिओदा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, बायर पुढवि आउ वाउ अपज्जत्तगा असखेज्ज-गुणा, बायर वणस्सइ काइया पज्जत्तगा अणतगुणा बायर पज्जत्ता विसेसाहिया बादर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, बायरअपज्जत्तगा विसेसाहिया, बायरा विसेसाहिया ॥ १० ॥ एएसिण भते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण जाव सुहुमनिगायाण बायराण बायरपुढविकाइया जाव बायरतसकाइयाण कयरे २ हिंतो

इस से बादर निगोद के अपर्याप्त असख्यातगुने, इस से बादर पृथ्वी काया के अपर्याप्त असख्यातगुने, इस मे अप्काया के अपर्याप्त असख्यातगुने, इस मे बादर वायुकाया के अपर्याप्त असख्यातगुने, इस से बादर वनस्पति काया के पर्याप्त अनंतगुने इस से बादर के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से बादर वनस्पति काया के अपर्याप्त असख्यातगुने, इस से बादर के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से समुच्चय बादर विशेषाधिक ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म, सूक्ष्म पृथ्वी काया यावत् सूक्ष्म निगोद, बादर बादर पृथ्वी काया यावत् त्रसकाया इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर त्रसकाया, इस से बादर तेउकाया असख्यातगुना इस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया असख्यातगुना, इस से बादर निगोद असख्यातगुना इस से बादर पृथ्वीकाया

बादरा विसेसाहिया ॥ एतेसिण भन ! बायराण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरपज्जत्तगा बायरअपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा एव सव्वे जाव बायर तसकाइया ॥ एएसिण भते ! बायराण बायरपुढविकाइयाण जाव बायरतसकाइयाणवि पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे२ हिंतो जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा बायरतेउकाइया पज्जत्तगा बायरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बाहर तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ काइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर निओया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढवि आउ वाउ पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर तेउ अपज्जत्तगा

थोडे बादर पर्याप्त इससे अपर्याप्त असंख्यातगुने ऐसे ही त्रसकाया पर्यंत कहना अहो भगवन्! इन बादर बादर पृथ्वीकाया यावत् त्रसकायाके पर्याप्त अपर्याप्तमें से कौन किससे अल्पबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे बादर तेउकायाके पर्याप्त,इससे बादर त्रस कायाके पर्याप्त असंख्यातगुने, बादर त्रस कायाके अपर्याप्त असंख्यातगुने इससे प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इससे बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर पृथ्वीकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर अप् काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर वायुकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से प्रत्येक शरीर बादर वनस्पति काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने,

बायरातेउक्काइया पज्जत्ता, बायरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर सेस तहेव जाव सुहुमपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ ११ ॥ एएसिण भंते ! सुहुमाण बायराणय पज्जत्ताण अपज्जत्ताणय कयरे२जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरा पज्जत्ता, बायरा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, एवं सुहुम पुढवि, बायर पुढवि जाव सुहुम निउया बायर निउया णवरिं पत्तेय सरीर बायर वणस्सति काइया सव्वत्थोवा पज्जत्ता अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा,

असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म तेउकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म अपकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वनस्पति काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! सूक्ष्म बादर के पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर के पर्याप्त इस से बादर के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म के पर्याप्त संख्यातगुने ऐसे ही सूक्ष्म व बादर पृथ्वीकाया का जानना यावत् सूक्ष्म निगोद पर्यंत कहना विशेष में प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया में सब से थोडे पर्याप्त इस से अपर्याप्त असंख्यातगुने कहना ऐसे ही बादर त्रसकाया का जानना अब सब के पर्याप्त अपर्याप्त की

जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरतसकाइया, बायर तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा तहेव जाव बायर वाउकाइया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेऊकाइया असंखेज्जगुणा सुहुमपढवि काइया विसेसाहिया, सुहुम आउ विसेसाहिया, सुहुमवाउ विसेसाहिया सुहुमनिउया असंखेज्जगुणा, बायरवणस्सतिकाइया अणंतगुणा बायराविसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा सुहुमविसेसाहिया, एव अपज्जत्तगावि पज्जत्तगावि पज्जत्तए णवर सव्वत्थोवा

असंख्यातगुना इससे बादर अपूकाया असंख्यातगुना इससे बादर वायुकाया असंख्यातगुना, इससे सूक्ष्म तेउकाया असंख्यातगुना, इस से सूक्ष्म पृथ्वीकाया विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म अपूकाया विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वायुकाय विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म निगोद असंख्यातगुने, इस से बादर वनस्पतिकाया अनंत गुने, इस से बादर विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म विशेषाधिक, ऐसे ही अपर्याप्त की अल्पाबहुत्व जानना अब पर्याप्त की अल्पा बहुत्व कहते हैं सब से थोडे बादर तेउकाया के पर्याप्त, बादर त्रसकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर पृथ्वी काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर अपूकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर वायुकाया के पर्याप्त

आउ वाउ काइया अपज्जत्तगा, असंखेज्जगुणा, सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुम पुढवि आउ वाउ पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुम पुढवि आउवाउ पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम निगोया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुम निगोया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, बायर वणस्सति काइया पज्जत्तगा अणन्तगुणा, बायर पज्जत्तगा विसेसाहिया, बायर वणस्सति काइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा, बायर अपज्जत्ता विसेसाहिया, बायरा

बादर वायुकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म पृथ्वी काया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म अप् काया के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वायुकाया के अपर्याप्त विशेषाधिक इस से सूक्ष्म तेउकाया के पर्याप्त संख्यातगुने, इस से सूक्ष्म पृथ्वी काया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म अप् काया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वायुकाया के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त संख्यातगुने, इस से बादर वनस्पतिकाया के पर्याप्त अनन्तगुने इस से बादर के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से बादर वनस्पतिकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर के अपर्याप्त विशेषाधिक,

एव बादर तसकाइयावि, सव्वेसिं पज्जत्ता अपज्जत्तगाण कयरे हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया पज्जत्तगा, बायर तसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, तेचेव अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बायर वणस्सति काइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बायर निगोया पज्जत्ता असंखेज्जगुणा, बायर पुढवि असंखेज्जगुणा, बायर आउ वाउ पज्जत्ता असंखेज्जगुणा, बायर तेउकाइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा, पत्तेय सरीर बादर वणस्सइ काइया असंखेज्जगुणा, बायर निगोया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा, बायर पुढवि

मेलो अल्पाबहुत्व कहते हैं सब से थोडे बादर तेउकाया के पर्याप्त, बादर त्रसकाया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर त्रसकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति काया के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर पृथ्वी काया के पर्याप्त असंख्यातगुने इस से बादर अप्काय के पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर वायु कायके पर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर तेउकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर पृथ्वीकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से बादर अप्काया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से

अपज्जत्तगाय ॥ बायरनिउया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-अपज्जत्तगाय ॥ निउद जीवाण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा सुहुम निओद जीवाय बायरनिओद जीवाय ॥ सुहुम निओदजीवा दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, बायरनिओदजीवा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ १३ ॥ निओदाणं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा असंखेज्जा नो अणंता एवं पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि ॥ सुहुमनिउदाणं भंते! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा असंखेज्जा

निगोद के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे ही बादर निगोद के भी पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं अहो भगवन् ! निगोद जीव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! इन के दो भेद कहे हैं तद्यथा—सूक्ष्म निगोद व बादर निगोद सूक्ष्म निगोद जीव के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे ही बादर निगोद जीव के भी दो भेद कहे हैं—पर्याप्त और अपर्याप्त ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! निगोद द्रव्य आश्री क्या संख्यात, असंख्यात या अनंत हैं ? अहो गौतम ! निगोद संख्यात व अनंत नहीं है परंतु असंख्यात हैं ऐसे ही पर्याप्त व अपर्याप्त निगोद का जानना अहो भगवन् ! सूक्ष्म निगोद द्रव्य आश्री क्या संख्यात, असंख्यात या अनंत हैं ? अहो गौतम ! संख्यात और अनंत

विसेसाहिया सुहुम वणस्सइ काइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया सुहुम वणस्सतिकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा विसेसाहिया ॥ १२ ॥ कतिविहेणं भंते ! णिउया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा–णिओयाय णिउदजीवाय ॥ णिओयाणं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सुहुमणिउयाय बादरनिओयाय ॥ सुहुम निउयाणं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय

इस से समुच्चय बादर विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के पर्याप्त संख्यातगुने, इस से सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से समुच्चय सूक्ष्म विशेषाधिक ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! निगोद के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम ! निगोद के दो भेद कहे हैं ! तद्यथा–निगोद सो जीव आश्रिय और निगोद जीव सो तेजस कार्माण वाले जीव आश्रिय इन में से यहां निगोद का प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! निगोद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! निगोद के दो भेद कहे हैं तद्यथा—सूक्ष्म निगोद और बादर निगोद अहो भगवन् ! सूक्ष्म निगोद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! सूक्ष्म

अपज्जत्तगाय ॥ बायरनिउया दुविहा पण्णत्ता तजहा अपज्जत्तगाय ॥ निउद जीवाण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा सुहुम निओद जीवाय बायरनिओद जीवाय ॥ सुहुम निओदजीवा दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, बायरनिओदजीवा दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ १२ ॥ निओदाण भते ! दव्वट्ठयाए किं सखेज्जा असखेज्जा अणता ? गोयमा ! नो सखेज्जा असखेज्जा नो अणता एव पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि ॥ सुहुमनिउदाण भते! दव्वट्ठयाए किं सखेज्जा असखेज्जा अणता ? गोयमा ! नो सखेज्जा असखेज्जा

निगोद के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे ही बादर निगोद के भी पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं अहो भगवन् ! निगोद जीव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! इन के दो भेद कहे हैं तद्यथा—सूक्ष्म निगोद व बादर निगोद सूक्ष्म निगोद जीव के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे ही बादर निगोद जीव के भी दो भेद कहे हैं—पर्याप्त और अपर्याप्त ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! निगोद द्रव्य आश्री क्या संख्यात, असंख्यात या अनंत हैं ? अहो गौतम ! निगोद संख्यात व अनंत नहीं है परंतु असंख्यात हैं ऐसे ही पर्याप्त व अपर्याप्त निगोद का जानना अहो भगवन् ! सूक्ष्म निगोद द्रव्य आश्री क्या संख्यात, असंख्यात या अनंत है ? अहो गौतम ! संख्यात और अनंत

विसेसाहिया सुहुम वणस्सइ काइया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया सुहुम वणस्सतिकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया,सुहुमा विसेसाहिया ॥ १२ ॥ कतिविहेणं भंते ! णिउया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—णिओयाय णिउदजीवाय ॥ णिओयाणं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सुहुमणिउयाय बादरनिओयाय ॥ सुहुम निउयाणं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तगाय

इस से समुच्चय बादर विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक, इस से सूक्ष्म वनस्पतिकाया के पर्याप्त संख्यातगुने, इस से सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक, इस से समुच्चय सूक्ष्म विशेषाधिक ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! निगोद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! निगोद के दो भेद कहे हैं ? तद्यथा—निगोद सो जीव आश्रिय और निगोद जीव सो तेजस कार्माण वाले जीव आश्रिय इन में से यहां निगोद का प्रश्न करते हैं अहो भगवन्! निगोद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! निगोद के दो भेद कहे हैं तद्यथा—सूक्ष्म निगोद और बादर निगोद अहो भगवन् ! सूक्ष्म निगोद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! सूक्ष्म

अपज्जत्तगावि, एवं सुहुमनिउयावि पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि,पएसट्टयाए सव्वे अणता एवं बायरनिओयावि पज्जत्तयावि अपज्जत्तयावि,पदेसट्ठयाए सव्वे अणता, एवं निओद जीवावि नवविहा पदेसट्ठयाए सव्वे अणता ॥ १६ ॥ एएसिणं भंते ! निउयाण सुहुमाण बायराण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाण दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायरनिउया पज्जत्तगा दव्वट्ठयाए बादरनिगोदा अपज्जत्तगा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमनिउया अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमनिउद पज्जत्तगा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा

भेद प्रदेश आश्रिय अनंत कहे वैसे ही निगोद जीव के नव भेद प्रदेश आश्रिय अनंत जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! इन निगोद के सूक्ष्म बादर पर्याप्त व अपर्याप्त द्रव्य, प्रदेश व द्रव्य प्रदेश आश्रिय कौन किससे अल्प तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे द्रव्य आश्रिय बादर निगोद के पर्याप्त, इस से द्रव्य से बादर निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त असंख्यातगुने इस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त संख्यातगुने जैसे द्रव्य आश्रिय अल्पाबहुत्व कही वैसे ही प्रदेश आश्रिय अल्पाबहुत्व जानना अब द्रव्य व प्रदेश आश्रिय अल्पाबहुत्व साथ कहते हैं सब से थोडे द्रव्य से बादर

णो अणता, एव पज्जत्तगावि, अपज्जत्तगावि एव बायरावि पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि नो सखेज्जा असखेज्जा नो अणता ॥ १४ ॥ निओयजीवाण भते ! दव्वट्ठयाए किं सखेज्जा असखेज्जा अणता ? गोयमा ! णो सखेज्जा णो असखेज्जा णो अणता एव पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि ॥ एव सुहुमनिओय जीवावि पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि, एव बायरनिओय जीवावि पज्जत्तगावि अपज्जत्तगावि ॥१५॥ निओयाण भते! पदेसट्ठयाए किं सखेज्जा पुच्छा ? गोयमा! णो सखेज्जा णो असखेज्जा अणता, एव पज्जत्तगावि

नहीं है परंतु असख्यात हैं ऐसे ही पर्याप्त व अपर्याप्त का जानना जैसे सूक्ष्म का कहा वैसे ही बादर का जानना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! निगोद जीव द्रव्य से क्या सख्यात, असख्यात अथवा अनत हैं ? अहो गौतम ! सख्यात, असख्यात नहीं है परंतु अनत हैं ऐसे ही सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त, अपर्याप्त और बादर निगोद जीव के पर्याप्त, अपर्याप्त का जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! निगोद प्रदेश आश्री क्या सख्यात हैं वगैरह पृच्छा? अहो गौतम ! सख्यात असख्यात नहीं है परंतु अनत हैं ऐसे ही पर्याप्त व अपर्याप्त का जानना ऐसे ही सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त व अपर्याप्त सब प्रदेश आश्रिय अनत हैं ऐसे ही बादर निगोद के पर्याप्त, अपर्याप्त का भी प्रदेश आश्रिय अनत जानना, जैसे निगोद के

बायराण पज्जत्तगाण, अपज्जत्तगाण निउयजीवाण सुहुमाण बायराण पज्जत्तगाण अपज्जत्त गाण दव्वट्ठयाए सट्ठयाए दव्वट्ठ पएसट्ठयाए कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बायर निओया पज्जत्ता दव्वट्ठयाए बायर निगोदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सहुम निगोदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संख-ज्जगुणा, सुहुमनिओएहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बादरनिओदा जीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, बायर निगोद जीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुमनिओयाजीवा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखज्जगुणा, सुहुमनिओया जीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा बायरनिउद जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए बायर

प्रदेश, व द्रव्य प्रदेश आश्री कौन किस से अल्प बहुत्व तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे बादर निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्री, इस से बादर निगोद के अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद के अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्री संख्यातगुने, इस से बादर निगोद जीव के पर्याप्त द्रव्य आश्री अनंतगुने, इस से बादर निगोद जीव के अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुने इस से सूक्ष्म निगोद जीव के अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त द्रव्य आश्री संख्यातगुने अब प्रदेश आश्री कहते हैं सब से

एवं पदेसट्ठयाएवि, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा बादर निओया पज्जत्तआ दव्वट्ठयाए जाव सुहुमनिओदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुमनिउएहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बायरनिगोदा पज्जत्ता पएसट्ठयाए अणंतगुणा बायराणिओदा अपज्जत्तगा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा जाव सुहुमनिउए पज्जत्तए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा एवं निउय जीवावि णवरिं संकमए जाव सुहुमनिओए जीवेहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बायरनिओया जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा सेसं तहेव जाव सुहुम निउय जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा ॥ १७ ॥ एतेसिणं भंते ! सुहुमाणं निगोदाणं

निगोद के पर्याप्त यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त द्रव्य से संख्यातगुने, सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त से बादर निगोद के पर्याप्त प्रदेश आश्रिय अनंतगुने, इस से बादर निगोद के अपर्याप्त प्रदेश आश्रिय असंख्यातगुने, यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त प्रदेश आश्रिय संख्यातगुने ऐसे ही निगोद जीव की अल्पाबहुत्व करना परंतु अल्पाबहुत्व में द्रव्य आश्रिय सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त से बादर निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्रिय असंख्यातगुने, शेष सब वैसे ही यावत् सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्रिय संख्यातगुने ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! इन सूक्ष्म निगोद बादर निगोद के पर्याप्त अपर्याप्त में द्रव्य,

जीवा पज्जत्तगा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा सुहुम निओय जीवेहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बायर निओय जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सेसं तहेव जाव सुहुम निउया पज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा ॥ सेत्त छव्विहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ पंचमा पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ ५ ॥ * * *

संख्यातगुने, इस से बादर निगोद जीव के पर्याप्त द्रव्य आश्री अनंतगुन, शेष सब पूर्ववत् यावत् सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त द्रव्य आश्री संख्यातगुने, इस से बादर निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने शेष सब वैसे ही यावत् सूक्ष्म निगोद पर्याप्त प्रदेश आश्री संख्यातगुने यह छ प्रकार के संसार समापन्न जीव कहे यह पांचवी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥ ५ ॥ ० ०

सिओदा जीवा अपज्जत्त पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा सुहुम निउय जीवा अपज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुम निओद जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुम निगोद जीवेहिंतो पज्जत्तएहिंतो पदेसट्ठयाए बायर निउया पज्जत्ता पदेसट्ठयाए अणंतगुणा बायर निउया अपज्जत्ताए पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा जाव सुहुम निओया पज्जत्ताए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा ॥ दव्वट्ठपदेसट्ठयाए-सव्वत्थोवा बायर निओगा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए बायर निओदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा जाव सुहुम निगोदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुमनिओएहिंतो दव्वट्ठयाएहिंतो बायर निओयजीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, सेसा तहेव जाव सुहुमनिओद

थोडे बादर निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्री, इस से बादर निगोद जीव के अपर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद जीव के अपर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्री संख्यातगुने, इस से बादर निगोद के पर्याप्त प्रदेश आश्री अनंतगुने, बादर निगोद के अपर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने, यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त प्रदेश आश्री, संख्यातगुने अब द्रव्य व प्रदेश आश्री कहते हैं सब से थोडे बादर निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्री, इस से बादर निगोद के अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुने, यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्री

जीवा पज्जत्तगा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा सुहुम निओय जीवेहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बायर निओय जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सेस तहेव जाव सुहुम निउया पज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा ॥ सेत्त छव्विहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ पंचमा पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ ५ ॥ * * *

संख्यातगुने, इस से बादर निगोद जीव के पर्याप्त द्रव्य आश्री अनंतगुन, शेप सब पूर्ववत् यावत् सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त द्रव्य आश्री संख्यातगुने, इस से बादर निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने शेप सब वैसे ही यावत् सूक्ष्म निगोद पर्याप्त प्रदेश आश्री संख्यातगुने यह छ प्रकार के संसार समापन्न जीव कहे यह पांचवी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥ ५ ॥ ० ०

णिओदा जीवा अपज्जत्त पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा सुहुम निउय जीवा अपज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सुहुम निओद जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुम निगोद जीवेहिंतो पज्जत्तिएहिंतो पदेसट्ठयाए बायर निउया पज्जत्ता पदेसट्ठयाए अणंतगुणा बायर निउया अपज्जत्ताए पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा जाव सुहुम निओया पज्जत्ताए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा ॥ दव्वट्ठपदसट्ठयाए—सव्वत्थोवा बायर निओगा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए बायर निओदा अपज्जत्ता दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा जाव सुहुम निगोदा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, सुहुमनिओएहिंतो दव्वट्ठयाएहिंतो बायर निओदजीवा पज्जत्ता दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, सेसा तहेव जाव सुहुमनिओद

थोडे बादर निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्री, इस से बादर निगोद जीव के अपर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद जीव के अपर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने, इस से सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्री संख्यातगुने, इस से बादर निगोद के पर्याप्त प्रदेश आश्री अनंतगुने, बादर निगोद के अपर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने, यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त प्रदेश आश्री संख्यातगुने अब द्रव्य व प्रदेश आश्री कहते हैं सब से थोडे बादर निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्री, इस से बादर निगोद के अपर्याप्त द्रव्य आश्री असंख्यातगुने, यावत् सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त द्रव्य आश्री

जीवा पज्जत्तगा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा सुहुम निओय जीवेहिंतो पज्जत्तएहिंतो दव्वट्ठयाए बायर निओय जीवा पज्जत्ता पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, सेस तहेव जाव सुहुम निउया पज्जत्ता पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा ॥ सेत्त छव्विहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ पंचमा पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ ५ ॥ * * *

संख्यातगुने, इस से बादर निगोद जीव के पर्याप्त द्रव्य आश्री अनंतगुने, शेष सब पूर्ववत् यावत् सूक्ष्म निगोद जीव के पर्याप्त द्रव्य आश्री संख्यातगुने, इस से बादर निगोद जीव के पर्याप्त प्रदेश आश्री असंख्यातगुने शेष सब वैसे ही यावत् सूक्ष्म निगोद पर्याप्त प्रदेश आश्री संख्यातगुने यह छ प्रकार के संसार समापन्न जीव कहे यह पांचवी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥ ५ ॥ ० ०

॥ षष्ठी प्रतिपत्ति ॥

तत्थण जेते एवमाहंसु सत्तविहा संसार समावण्णगा,जीवा ते एवमाहंसु तंजहा-नेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ, देवा, देवीओ ॥ १ ॥ नेरइयस्स ठिती जहण्णेणं दसवास सहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ तिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं ॥ एवं तिरिक्खजोणिणीवि ॥ मणुस्सावि मणुस्सीवि ॥ देवाणं ठिती जहा नेरइयाणं ॥ देवीणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पणपण्णपलिओवमाणि ॥२॥ नेरइयदेव देवीणं जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणा ॥ तिरिक्खजोणिएणं भंते ! तिरिक्खजोणिएति कालओ

जो सात प्रकार के जीव कहते हैं वे इस तरह कहते हैं १ नैरयिक, २ तिर्यंच, ३ तिर्यंचणी, ४ मनुष्य, ५ मनुष्यणी ६ देव और ७ देवी ॥ १ ॥ नैरयिक की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंचकी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम,ऐसेही तिर्यंचणी, और ऐसेही मनुष्य व मनुष्यणी की स्थिति जानना देव की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और देवी की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ५५ पल्योपम की जानना ॥ २ ॥ संचिट्ठणा नारकी देवता और देवी की संचिठणा स्थिति जितनी जानना- अहो भगवन् ! तिर्यंच तिर्यंच में कितना काल

केवचिर होंति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सतिकालो, तिरिक्ख-जोणिणीण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिउवमाइ, पुव्वकोडी पहुत्त मब्भहियाइ, एव मणुस्सस्स मणुस्सीएवि ॥ ३ ॥ नेरइयस्स अतर जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सतिकालो, एव सव्वाण तिरिक्खजोणियवज्जाण तिरिक्खजोणियाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसे० सागरो सतपुहुत्त सातिरेगा, अप्पाबहुय सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ, मणुस्सा असखेज्जगुणा, नरइया असखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिणीओ असखेज्जगुणाओ, देवा असखेज्जगुणा, देवीउ सखेज्जगुणाओ, तिरिक्खजोणियाअणतगुणा॥ सेत्त सत्तविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता॥ छट्ठा पडिवत्ती सम्मत्ता॥ ६॥ •

रहे ! अहो गौतम ! अनत काल वनस्पति जितना तिर्यंचणी जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक ऐसे ही मनुष्य और मनुष्यणी का जानना ॥ ३ ॥ नारकी का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल ऐसे ही तिर्यंच सिवाय सब का जानना तिर्यंच का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम में कुच्छ अधिक, अल्पाबहुत्व सब से थोडी मनुष्यणी, इस से मनुष्य असख्यातगुने, इस से नारकी असख्यातगुने इस से तिर्यंचणी असख्यातगुनी, इस से देव असख्यातगुने, इस से देवांगना सख्यातगुनी, इस से तिर्यंच अनतगुने यह सात प्रकार के ससारी जीव कहे हैं यह छट्ठी प्रतिपत्ति सपूर्ण हुई ॥ ६ ॥

॥ सप्तमी प्रतिपत्ति ॥

तत्थणं जे ते एव माहंसु अट्ठविहा संसारसमावण्णगा जीवा, ते एव माहंसु तंजहा पढमसमय नेरइया, अपढमसमय नेरइया, पढमसमय तिरिक्खजोणिया, अपढमसमय तिरिक्खजोणिया, पढमसमय मणुस्सा, अपढमसमय मणुस्सा, पढमसमयदेवा, अपढमसमयदेवा ॥ १ ॥ पढमसमय णेरइयस्सणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! पढमसमय णेरइयस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणवि एक्कं समयं, अपढमसमय नेरइयस्स जहण्णेणं दसवाससहस्साइं समयऊणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयऊणाइं, पढमसमय तिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं एक्कं

जो आठ प्रकार के संसारी जीव कहते हैं उन का कथन इस तरह है—१ प्रथम समय के नैरयिक अप्रथम समय के नैरयिक, प्रथम समय के तिर्यंच, अप्रथम समय के तिर्यंच, प्रथम समय के मनुष्य अप्रथम समय के मनुष्य, प्रथम समय के देव और अप्रथम समय के देव ॥ १ ॥ प्रथम समय के नैरयिक की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट एक समय, अप्रथम समय के नैरयिक की जघन्य एक समय कम दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक समय कम तेत्तीस सागरोपम प्रथम समय के तिर्यंच की स्थिति

समय उक्कोसेणवि एक्क समय, अपढम समय तिरिक्ख जोणियस्स जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहणेण समयऊण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ समयऊणाति, एव मणुस्सावि जहा तिरिक्खजोणियाण, देवाण जहा नेरइयाण, ठिती सच्चेव संचिट्ठणा दुविहेणवि ॥ पढम समय तिरिक्ख जोणिएण भते ! कालओ केवचिर होति ? गोयमा ! जहण्णण एक्क समय उक्कोसेण एक्क समय, अपढम समय तिरिक्ख जोणियस्स जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयऊण उक्कोसेण वणस्सतिकालो। पढम समय मणुस्साण जहण्णेण एक्कसमय उक्कोसेण एग समय, अपढम

जघन्य उत्कृष्ट एक समय, अप्रथम समय, तिर्यंच की जघन्य एक समय, कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट एक समय कम तीन पल्योपम ऐसे ही मनुष्य की स्थिति जानना देवता की नैरयिक जैसे कहना नारकी और देवता दोनों की कायस्थिति अपनी २ स्थिति जैसे जानना अहो भगवन्! प्रथम समय के तिर्यंच की कायस्थिति कितनी कही? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट एक समय की कायस्थिति जानना अप्रथम समय तिर्यंच की कायस्थिति जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव की उत्कृष्ट वनस्पति काल जितनी प्रथम समय मनुष्य की कायस्थिति जघन्य

१ एक स छोटा २५६ आवलिका का एक क्षुल्लक भव होता है २ यहां प्रथम का समय कम जानना

समय मणुस्साण जहण्णेण खुड्डागं भवग्गहण समयऊण उक्कोसेण तिण्णि पलिउवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइ ॥ २ ॥ अतर पढम-समय नेरइयस्स जहण्णेण दस वास सहस्साइ अतो मुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण वणस्सतिकालो, अपढम समय जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो पढम समय तिरिक्ख जोणियस्स जहण्णेण दो खुड्डाग भवग्गहणाइ समयऊणाइ उक्कोसेण वणस्सतिकालो, अपढम समय तिरिक्ख जोणियस्स जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेण सागरोवमसतपुहुत्त सातिरेग ॥ पढम समय मणुस्साण जहण्णेण दो खुड्डा भवग्गहणाइ समयऊणाइ उक्कोसेण वणस्सइ कालो अपढम

उत्कृष्ट एक समय अप्रथम समय मनुष्य की कायस्थिति जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट तीन पल्योपम और क्रोड़ प्रत्येक क्रोड़ पूर्व अधिक ॥ २ ॥ प्रथम समय के नारकी का अंतर जघन्य दश + हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अप्रथम समय नारकी का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल, प्रथम समय तिर्यंच का अंतर जघन्य एक समय कम दो क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पतिकाल अप्रथम समय तिर्यंच का जघन्य एक समय अधिक क्षुल्लक भव उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम

× दश हजार वर्ष तो अप्रथम समय नरक का आयुष्य भोगव कर तिर्यंच का आयुष्य अन्तर्मुहूर्त कर पुनःनरक में उत्पन्न होवे जिसका समय आगे भी ऐसे ही सर्व स्थान समझना

समय मणुस्स जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं उक्कोसेणं वणस्सति कालो, देवाण जहा नेरइयाण दसवास सहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेण वणस्सति कालो, अपढम समय जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं वणस्सति कालो ॥ ३ ॥ अप्पाबहु—एतेसिण भंते ! पढम समय णेरइयाणं जाव पढम समय देवाण कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयमणुस्सा पढमसमय णेरइया असंखेज्जगुणा, पढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, पढमसमय तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा ॥ अपढमसमय नेरइयाण जाव अपढमसमय देवाणं एव चेव अप्पाबहु

प्रथम समय मनुष्यका अंतर जघन्य एकसमय कम दो छल्लक भवका उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, अप्रथम समय मनुष्यका अंतर जघन्य एकसमय अधिक क्षुल्लक भवका उत्कृष्ट वनस्पति काल देवोंका अंतर नारकी जैसे कहना अर्थात् प्रथम समयके देवका अंतर जघन्य दशहजारवर्ष और अंतर मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट वनस्पतिकाल जितना अप्रथम समयदेव का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पतिकाल जितना॥३॥अहो भगवन्! इन प्रथम समय नेरयिक यावत् प्रथम समय देव में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम सब से थोड़े प्रथम समय मनुष्य इन से प्रथम समय नेरयिक असंख्यात गुने, इन से प्रथम समय देव असंख्यात

समय मणुस्साण जहण्णेण खुड्डागं भवग्गहण समयऊण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइं ॥ २ ॥ अतर पढम-समय नेरइयस्स जहण्णेणं दस वास सहस्साइं अंतो मुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण वणस्सतिकालो, अपढम समय जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो पढम समय तिरिक्ख जोणियस्स जहण्णेण दो खुड्डाग भवग्गहणाइं समयऊणाइं उक्कोसेण वणस्सतिकालो, अपढम समय तिरिक्ख जोणियस्स जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेण सागरोवमसतपुहुत्त सातिरेग ॥ पढम समय मणुस्साण जहण्णेण दो खुड्डा भवग्गहणाइं समयऊणाइं उक्कोसेण वणस्सइ कालो अपढम

उत्कृष्ट एक समय अप्रथम समय मनुष्य की कायस्थिति जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट तीन पल्योपम और क्रोड पूर्व अधिक ॥ २ ॥ प्रथम समय के नारकी का अंतर जघन्य दश + हजार वर्ष और अंतर्मुहूर्त अधिक उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अप्रथम समय नारकी का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल, प्रथम समय तिर्यंच का अंतर जघन्य एक समय कम दो क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पतिकाल अप्रथम समय तिर्यंच का जघन्य एक समय अधिक क्षुल्लक भव उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम

× दश हजार वर्ष तो अप्रथम समय नरक का आयुष्य भोगव कर तिर्यंच का आयुष्य अन्तर्मुहूर्त कर पुनः नरक में उत्पन्न होवे जिसका समय आगे भी ऐसे ही सर्व स्थान समझना

अष्टम प्रतिपत्ति का संक्षिप्त यंत्र

अष्टविध जीव	प्रथम समय नरक	अप्रथम समय नरक	प्रथम समय तिर्यंच	अप्रथम समय तिर्यंच	प्रथम समय मनुष्य	अप्रथम समय मनुष्य	प्रथम समय देव	अप्रथम समय देव
स्थिति जघन्य	१ समय	सहस्र वर्ष समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	दश सहस्र वर्ष समय कम
स्थिति उत्कृष्ट	१ समय	३३ सागर समय कम	१ समय	३ पल्य समय कम	१ समय	३ पल्य समय कम	१ समय	३३ सागर समय कम
कायास्थिति जघन्य	१ समय	दश हजार वर्ष समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	दश हजार वर्ष समय कम
कायास्थिति उत्कृष्ट	१ समय	३३ सागर समय कम	१ समय	वनस्पति काल अनंत	१ समय	पृथक्त्व पूर्व को ३ पल्य अधिक	१ समय	३३ सागार समय कम
अंतर जघन्य	दश हजार वर्ष अंतर मुहूर्ताधिक	अंतर्मुहूर्त	क्षुल्लकभव समय कम	क्षुल्लक भव समय कम	१ क्षुल्लकभव समयाधिक	क्षुल्लकभव समयाधिक	दश हजार वर्ष अंतर्मुहूर्ताधिक	अंतर्मुहूर्त

णवरिं अपढमसमय तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा॥एतेसिं पढमसमय नेरइयाणं अपढम समयं नेरइयाणं कयरे २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढम समय णेरइया अपढम समय णेरइया असंखेज्जगुणा, एवं सव्वेणय सव्वत्थोवा। पढम समय णेरइयाणं जाव अपढम समय देवाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा पढम समय मणुस्सा, अपढम समय मणुस्सा असंखेज्जगुणा, पढम समय णेरइया असंखेज्जगुणा पढम समय देवा असंखेज्जगुणा पढम समय तिरिक्ख-जोणिया असंखेज्जगुणा, अपढम समय णेरइया असंखेज्जगुणा अपढम समय देवा

गुने, इस से प्रथम समय तिर्यंच असंख्यात गुने इसी तरह अप्रथम समय नैरयिक यावत् अप्रथम समयदेव की अल्पाबहुत्व कहना परंतु इसमें अप्रथम समय तिर्यंच अनंतगुने कहना अहो भगवन्! प्रथम समय नैरयिक व अप्रथम समय नैरयिक में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय नैरयिक इस से अप्रथम समय नैरयिक असंख्यातगुने यों सब में कहना प्रथम समय के नैरयिक यावत् अप्रथम समय के देव में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय मनुष्य, इससे अप्रथमसमय मनुष्य असंख्यातगुने, इससे प्रथमसमय नारकी असंख्यातगुने,

सप्तम प्रतिपत्ति का संक्षिप्त यंत्र

सप्तविध जीव	प्रथम समय नरक	अप्रथम समय नरक	प्रथम समय तिर्यंच	अप्रथम समय तिर्यंच	प्रथम समय मनुष्य	अप्रथम समय मनुष्य	प्रथम समय देव	अप्रथम समय देव
स्थिति जघन्य	१ समय	सहस्र वर्ष समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	दश सहस्र वर्ष समय कम
स्थिति उत्कृष्ट	१ समय	३३ सागर समय कम	१ समय	३ पल्य समय कम	१ समय	३ पल्य समय कम	१ समय	३३ सागर समय कम
कायास्थिति जघन्य	१ समय	दशहजार वर्षसमयकम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	दश हजार वर्ष समय कम
कायास्थिति उत्कृष्ट	१ समय	३३ सागर समय कम	१ समय	वनस्पति काल अनंत	१ समय	पृथक्त्व पूर्व को ३ पल्य अधिक	१ समय	३३ सागर समय कम
अंतर जघन्य	दश हजार वर्ष अंतर मुहूर्ताधिक	अंतर्मुहूर्त	क्षुल्लकभव समय कम	क्षुल्लक भव समय कम	२ क्षुल्लकभव समयाधिक	क्षुल्लकभव समयाधिक	दश हजार वर्ष अंतर्मु-	अंतर्मुहूर्त

पज्जत्ते अपढमसमय तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा॥ एतेसिं पढमसमय नेरइयाण अपढम समय नेरइयाणं कयरे २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढम समय णेरइया अपढम समय णेरइया असंखेज्जगुणा, एवं सव्वेणय सव्वत्थोवा। पढम समय णेरइयाण जाव अपढम समय देवाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा पढम समय मणुस्सा, अपढम समय मणुस्सा असंखेज्जगुणा, पढम समय णेरइया असंखेज्जगुणा पढम समय देवा असंखेज्जगुणा पढम समय तिरिक्ख-जोणिया असंखेज्जगुणा, अपढम समय णेरइया असंखेज्जगुणा अपढम समय देवा

गुने, इस से प्रथम समय तिर्यंच असंख्यात गुने इसी तरह अप्रथम समय नैरयिक यावत् अप्रथम समयदेव की अल्पाबहुत्व करना परंतु इसमें अप्रथम समय तिर्यंच संख्यातगुने करना अहो भगवन्! प्रथम समय नैरयिक व अप्रथम समय नैरयिक में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय नैरयिक इस से अप्रथम समय नैरयिक असंख्यातगुने यों सब में करना प्रथम समय के नैरयिक यावत् अप्रथम समय के देव में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय मनुष्य, इससे अप्रथमसमय मनुष्य असंख्यातगुने, इससे प्रथमसमय नारकी असंख्यातगुने,

सप्तम प्रतिपत्ति का संक्षिप्त यंत्र

अष्टविध जीव	प्रथम समय नरक	अप्रथम समय नरक	प्रथम समय तिर्यंच	अप्रथम समय तिर्यंच	प्रथम समय मनुष्य	अप्रथम समय मनुष्य	प्रथम समय देव	अप्रथम समय देव
स्थिति जघन्य	१ समय	सहस्र वर्ष समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	दश सहस्र वर्ष समय कम
स्थिति उत्कृष्ट	१ समय	३३ सागर समय कम	१ समय	३ पल्य समय कम	१ समय	३ पल्य समय कम	१ समय	३३ सागर समय कम
कायास्थिति जघन्य	१ समय	दशहजार वर्षसमयकम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम	१ समय	दश हजार वर्ष समय कम
कायास्थिति उत्कृष्ट	१ समय	३३ सागर समय कम	१ समय	वनस्पति काल अनंत	१ समय	पृथक्त्व पूर्व को ३ पल्य अधिक	१ समय	३३ सागार समय कम
अंतर जघन्य	दश हजार वर्ष अंतर मुहूर्ताधिक	अंतर्मुहूर्त	क्षुल्लकभव समय कम	क्षुल्लक भव समय कम	२ क्षुल्लकभव समयाधिक	क्षुल्लकभव समयाधिक	दश हजार वर्ष अंतर्मुहूर्ताधिक	अंतर्मुहूर्त

शरीर स्वरूप	वनस्पति काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल	सागरोपम शत पृथक्त्व	वनस्पति काल जितना	वनस्पति काल	वनस्पति काल	वनस्पति काल
अल्पा बहुत्व	३ असं ख्यातगुना	६ असंख्या गुना	९ अस ख्यात गुना	८ अनत गुना	१ सबसे थोडे	२ अस- ख्यातगुना	४ असं- ख्यात गुना	७ असं- ख्यात गुना

असंखज्जगुणा, अपदम समय तिरिक्खजोणिया अणतगुणा, सेत्त अट्ठविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ सत्तमी पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ ७ ॥ * *

इस से प्रथम समय नैरयिक असंख्यातगुने, इस से अप्रथम समय देव असंख्यातगुने, इस से अप्रथम समय तिर्यंच अनतगुने यों आठ प्रकार के जीव की प्ररूपणा हुइ यह सातवी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुइ ॥७॥

॥ अष्टमी प्रतिपत्ति ॥

तत्थणं जे ते एव माहसु णवविहा संसार समावण्णगा जीवा, ते एव माहसु तंजहा पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया वाउकाइया, वणस्सतिकाइया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचेंदिया॥ ठिती सव्वेसिं भाणियव्वा ॥ पुढविकायाण संचिट्ठणा पुढवि कालो जाव वाउकाइयाण, वणस्सति काइयाण वणस्सति कालो, बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया संखेज्ज कालं पचेंदियाण सागरोवम सहस्स सातिरेगं॥अंतर सव्वेसिं

जो, नव प्रकार के संसारी जीव कहते हैं वे इस तरह कहते हैं जिन के नाम—१ पृथ्वीकाया, २ अप् काया, ३ तेउकाया, ४ वायुकाया, ५ वनस्पति काया, ६ द्वीन्द्रिय ७ त्रीन्द्रिय, ८ चतुरेन्द्रिय और ९ पंचेन्द्रिय इन सब की पृथक् २ स्थिति पूर्ववत् जानना पृथ्वीकाया की काया स्थिति पृथ्वी काल जितनी यों अप् तेउ और वायु की जानना वनस्पति काया की अनंत काल की द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय की संख्यात काल की और पंचेन्द्रिय की साधिक एक हजार सागरोपम की वनस्पति काया सिवाय अन्य का अंतर अनंत काल का और वनस्पति काया का असंख्यात काल का अन्तर जानना अल्पाबहुत्व सब से थोडे

अणत काल, वणस्सति काइयाण असंखेज्ज काल ॥ अप्पाबहुण सव्वत्थोवा पंचेंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया तेउकाइया असंखेज्ज-गुना, पुढवि—आऊ—वाउ—विसेसाहिया, वणस्सति काइया अणतगुणा ॥ सेत णवविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता ॥ अट्ठमी पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ ८ ॥ *

पचेन्द्रिय, इस से चतुरेन्द्रिय विशेषाधिक, इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से तेउकाया असख्यातगुने, इस से पृथ्वी काया विशेषाधिक, इस से अप्काया विशेषाधिक, इस से वायु काया विशेषाधिक, इस से वनस्पति काया अनतगुने यह नव प्रकार के संसारी जीव कहे यह आठवी प्रतिपत्ति सपूर्ण हुई ॥ ८ ॥ + +

॥ नवमी प्रतिपत्तिः ॥

तत्थण जे ते एवमाहसु दसविहा ससार समावण्णगा जीवा ते एवमाहसु तजहा— पढम समय एगिंदिया अपढम समय एगिंदिया, पढम समय बेइंदिया, अपढम समय बेइंदिया, पढम समय तेइंदिया, अपढम समय तेइंदिया, पढम समय चउरिंदिया, अपढम समय चउरिंदिया, पढम समय पचेंदिया, अपढम समय पचेंदिया ॥ १ ॥ पढम समय एगिंदियस्सण भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कसमय उक्कोसेणावि एक्कसमय, अपढम समय एगिंदियस्स जहण्णण खुड्डाग भवग्गहण समऊण उक्कोसेण बावीस वास सहस्साइ समयऊणाइ, एव

जो दश प्रकार के ससारी जीव कहते हैं वे इस प्रकार कहते हैं ? प्रथम समय एकेन्द्रिय, २ अप्रथम समय एकेन्द्रिय, ३ प्रथम समय द्वीन्द्रिय, ४ अप्रथम समय द्वीन्द्रिय, ५ प्रथम समय त्रीन्द्रिय, ६ अप्रथम समय त्रीन्द्रिय ७ प्रथम समय चतुरेन्द्रिय, ८ अप्रथम समय चतुरेन्द्रिय, ९ प्रथम समय पचेन्द्रिय, १० अप्रथम समय पचेन्द्रिय ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! प्रथम समयिक एकेन्द्रिय की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ? जघन्य उत्कृष्ट एक समय अप्रथम समय एकेन्द्रिय की जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट एक समय कम

एगिंदिया, अपढम समय एगिंदिया अणतगुणा सेसाण सव्वत्थोवा पढमसमायेगा अपढमसमय असखेज्जगुणा ॥ एतेसिण भते ! पढमसमय एगिंदिया जाव अपढमसमय पचेंदियाण कयरे २ हिंतो अप्पावा वहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गायमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय पचेंदिया, पढमसमय चउरिंदिया विसेसाहिया, एव हेट्ठामुही जाव एगिंदिया विसेसाहिया, अपढमसमय पचेंदिया असखेज्जगुणा, अपढमसमय चउरिंदिया विसेसाहिया, जाव अपढमसमय एगिंदिया अणतगुणा ॥ सेत्त दसविहा

सब से थोडे प्रथम समय के एकेन्द्रिय, इस से अप्रथम समय के एकेन्द्रिय अनत गुने शेष सब में सब से थोडे प्रथम समय वाले, इस से अप्रथम समय वाले असख्यातगुने कहना अहो भगवन् ! इन प्रथम समय एकेन्द्रिय यावत् अप्रथम समय पचेन्द्रिय में कौन किस से अल्पाबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक हैं? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय पचेन्द्रिय, इस से चतुरेन्द्रिय विशेषाधिक इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से एकेन्द्रिय विशेषाधिक, इस से अप्रथम समय के पचेन्द्रिय असख्यातगुने, इस से प्रथम समय के चतुरेन्द्रिय विशेषाधिक, इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक और इस से एकेन्द्रिय अनतगुने यह दश प्रकार के

नवमी प्रति पत्ति	प्रथम समय एकेंद्रिय	अप्रथम समय एकेंद्रिय	प्रथम समय बेंद्रिय	अप्रथम समय बेंद्रिय	प्रथम समय तेंद्रिय	अप्रथम समय तेंद्रिय	प्रथम समय चौ०	अप्रथम समय चौ०	प्रथम समय प०	अप्रथम समय पचेन्द्रिय
स्थिति जघन्य	१ समय	क्षुल्लक भवसमय कम	१ समय	क्षु स भवसमय कम	१ समय	क्षु भ समय कम	१ समय	क्षु॰ भ॰ समय कम	१ समय	३३ सागर समय कम
स्थिति उत्कृष्ट	१ समय	२२ ह व समय कम	१ समय	१२ वर्ष समय कम	१ समय	४९ दि समय कम	१ समय	६ मा० समय कम	१ समय	३३ सागर समय कम
काय स्थिति जघन्य	१ समय	क्षुल्लक भ स कम	१ समय	क्षु भ समय कम	१ समय	क्षु भ समय कम	१ समय	क्षु भ. समय कम	१ समय	क्षुल्लक भव समय कम
काय स्थिति उत्कृष्ट	१ समय	अनन्त काल	१ समय	सं० काल	१ समय	सं० काल	१ समय	सं० काल	१ समय	२ हजार सागर साधिक
अन्तर जघन्य	२ क्षु भ स कम	क्षुल्लक भ स कम	दो क्षु भ स. कम	क्षु भ समय अ	दो क्षु भ स कम	क्षु भ समय अ	दो क्षु० भ०प० कम	क्षु भ समय कम	दो क्षु. भ स कम	क्षुल्लक भव समय कम

सादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतर असिद्धस्सण भंते ! केवतियं कालं अंतर होति ? गोयमा ! अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतर ॥ ३ ॥ एतेसिणं भंते ! सिद्धाणं असिद्धाणय कयरे २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा असिद्धा अणंतगुणा ॥ ४ ॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा-सइंदियाचेव अणिंदियाचेव ॥ सइंदिएणं भंते ! कालओ केवचिरं होति? गोयमा! सइंदिए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-अणादिएवा अपज्जवसिए अणादिएवा अपज्जवसिए, अणादिएवा सपज्जवसिए॥ अणिंदिए सादिए अपज्जवसिए दोण्हवि

अहो भगवन् ! सिद्ध का अंतर कितना है? अहो गौतम! वे सादिक अपर्यवसित हैं इससे इनका अंतर नहीं है अहो भगवन् ! असिद्ध का कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! ये अनादि अपर्यवसित और अनादि सपर्यवसित हैं, इस से इन का अंतर नहीं है ॥३॥ अहो भगवन् ! इन सिद्ध और असिद्ध में कौन किस से अल्पाबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे सिद्ध इस से असिद्ध अनंतगुने ॥ ४ ॥ अथवा दो प्रकार के सब जीव कहे हैं सइन्द्रिय व अनिन्द्रिय अहो भगवन् ! सइन्द्रिय की कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! सइन्द्रिय के दो भेद कहे हैं, अनादि अपर्यवसित (अभव्य) अनादि सपर्यवसित (भव्य) अनिन्द्रिय, सादि अपर्यवसित है दोनों का अंतर नहीं है अल्पाबहुत्व में सब से थोडे अनिन्द्रिय

अतर णत्थि, सव्वत्थोवा आओइया, सइाइया अणंत गुणा ॥ ३ ॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा—सकाइयाचेव, अकाइयाचेव ॥सजोगीचेव अजोगीचेव, तहेव सलेसाचेव अलेसाचेव, ससरीरीचेव असरीरीचेव ॥ संचिठा अतर अप्पाबहुय जहा सकाइयाणं ॥ ४ ॥ अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तंजहा सवेदगाचेव अवेदगा चेव ॥ सवेदएणं भंते ! सवेदएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सवेदए तिविहे पण्णत्ते तंजहा-अणादियेवा अपज्जवसिए, अणादिएवा सपज्जवासिए, साइएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थणं जे से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं अणंतकालं, जाव खेत्तओ अवड्ढ पोग्गल

इस से सइन्द्रिय अनन्तगुने ॥ ५ ॥ अथवा सब जीव दो प्रकार के कहे हैं सकायिक और अकायिक ऐसे ही सब जीव के दो भेद सयोगी, अयोगी, सलेशी, अलेशी, सशरीरी, अशरीरी, संचिट्ठणा, अंतर और अल्पबहुत सकायिक और अकायिक जैसे जानना ॥ ६ ॥ अथवा सब जीव दो प्रकार के कहे हैं सवेदी और अवेदी सवेदी सवेदापने कितना काल तक रहते हैं ? अहो गौतम ! सवेदी के तीन भेद अनादि अपर्यवसित, अनादि सपर्यवसित और सादि सपर्यवसित जो सादि सपर्यवसित है वह जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल [कितना काल] देश ऊणा अर्ध पुद्गलपरावर्त अहो भगवन् !

परियट्ट देसूण ॥ अवेदएणं भंते ! अवेदएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! अवेदए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सातिएवा अपज्जवसिए, सातिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थण जे से सादिये सपज्जवसिए से जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ सवेदगस्सणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ अवेदगस्सणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढं पोग्गल

अवेदी अवेदीपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! अवेदी के दो भेद सादि अपर्यवसित और सादि सपर्यवसित इन में सादि सपर्यवसित की स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अहो भगवन् ! सवेदी का अंतर कितना कहा ? अहो गौतम ! अनादि अपर्यवसित का अंतर नहीं है अनादि सपर्यवसित का भी अंतर नहीं है परंतु सादि अपर्यवसित का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अहो भगवन् ! अवेदी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित का अंतर नहीं है सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् अर्ध पुद्गल परावर्त में कुच्छ कम

परियट्ट देसूण॥अप्पाबहुग—सव्वत्थोवा अवेदगा सवेदगा अणतगुणा ॥एव सकसाती चेव अकसाति चेव,जहा सवेयाय तहेव भाणियव्वे ॥७॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा—सलेसाय अलेसाय जहा असिद्धा सिद्धा, सव्वत्थोवा अलेसा, सलेसा अणत गुणा ॥८॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा—नाणीचेव अन्नाणीचेव ॥ नाणीण भते ! कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! णाणी दुविहे पण्णत्त तजहा—सादिएवा अपज्जवसिए सादिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थण, जेसे सादिए सपज्जवसिए

अल्पाबहुत्व में सब से थोडे अवेदी इस से सवेदी अनन्तगुने सवेदी जैसे सकषायी और अकषायी जीव का कहना ॥ ७ ॥ अथवा सब जीव के दो भेद सलेशी और अलेशी सलेशी तेरहवे गुणस्थान पर्यंत हैं और चौदहवे गुणस्थानवाले अलेशी हैं इन का कथन सिद्ध असिद्ध जैसे कहना यावत् सब से थोडे अलेशी इस से सलेशी अनन्तगुने ॥ ८ ॥ अथवा सब जीव के दो भेद कहे हैं तद्यथा—ज्ञानी और अज्ञानी अहो भगवन् ! ज्ञानी कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! ज्ञानी के दो भेद—सादि अपर्यवसित सो केवल ज्ञानी और सादि सपर्यवसित यह मति आदि चार ज्ञानवाले इन की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम से अधिक क्षयोपशम सम्यक्त्वी मति श्रुत ज्ञान में इतना काल रहे अहो भगवन् ! अज्ञानी अज्ञानीपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जैसा सवेदी का कहा वैसा

परियह देसूण ॥ अवेदएणं भंते ! अवेदए त्ति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! अवेदए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-अणादीए वा अपज्जवसिए, सातिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थण जे से सादिये सपज्जवसिए से जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण अंतोमुहुत्तं ॥ सवेदगस्सणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ अवेदगस्सणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! सादीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढ पोग्गल

अवेदी अवेदीपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! अवेदी के दो भेद सादि अपर्यवसित और सादि सपर्यवसित इन में सादि सपर्यवसित की स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अहो भगवन् ! सवेदी का अंतर कितना कहा ? अहो गौतम ! अनादि अपर्यवसित का अंतर नहीं है अनादि सपर्यवसित का भी अंतर नहीं है परंतु सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अहो भगवन् ! अवेदी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित का अंतर नहीं है सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् अर्ध पुद्गल परावर्त में कुच्छ कम

परियट्ट देसूण॥अप्पाबहुग—सव्वत्थोवा अवेदगा सवेदगा अणतगुणा ॥एव सकसाती चेव अकसाती चेव,जहा सवेयाय तहेव भाणियव्वे ॥७॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा—सलेसाय अलेसाय जहा असिद्धा सिद्धा, सव्वत्थोवा अलेसा, सलेसा अणत गुणा ॥८॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा—नाणीचेव अन्नाणीचेव ॥ नाणीण भते ! कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! णाणी दुविहे पण्णत्ते तजहा—सादिएवा अपज्जवसिए सादिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थण, जेसे सादिए सपज्जवसिए

अल्पाबहुत्व में सब से थोडे अवेदी इस से सवेदी अनन्तगुने सवेदी जैसे सकषायी और अकषायी जीव का कहना ॥ ७ ॥ अथवा सब जीव के दो भेद सलेशी और अलेशी सलेशी तेरहवे गुणस्थान पर्यंत हैं और चौदहवे गुणस्थानवाले अलेशी हैं इन का कथन सिद्ध असिद्ध जैसे कहना यावत् सब से थोडे अलेशी इस से सलेशी अनन्तगुने ॥ ८ ॥ अथवा सब जीव के दो भेद कहे हैं तद्यथा—ज्ञानी और अज्ञानी अहो भगवन् ! ज्ञानी कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! ज्ञानी के दो भेद—सादि अपर्यवसित सो केवल ज्ञानी और सादि सपर्यवसित यह मति आदि चार ज्ञानवाले इन की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम से अधिक क्षयोपशम सम्यक्त्वी मति श्रुत ज्ञान में इतना काल रहे अहो भगवन् ! अज्ञानी अज्ञानीपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जैसा सवेदी का कहा वैसा

से जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइं, सातिरेगाइं ॥ अण्णाणी जहा सवेदए, णाणिस्स अतर जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण अणतकाल अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूण, अन्नाणिस्स दोण्हवि आदिल्लाण णत्थि अतर ॥ सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण छावट्ठिं, सागरोवमाइं सातिरेकाइं ॥ अप्पाबहु सव्वत्थोवा नाणी, अण्णाणी अणतगुणा ॥९॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा—आहारगा चेव अणाहारगा चेव,

इस का जानना अर्थात् इन के तीन भेद कहना अनादि अपर्यवसित सो अभव्य, अनादि सपर्यवसित सो भव्य, और सादि सपर्यवसित इस की स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनत काल देश से अर्ध पुद्गल परावर्तन अहो भगवन् ! ज्ञानी का कितना अतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनत काल अर्ध पुद्गल परावर्त में कुछ कम जानना अज्ञानी के के दो भांगे का अतर नहीं है और सादि सपर्यवसित का अतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम से कुछ अधिक अल्पाबहुत्व सब से थोडे ज्ञानी इस से अज्ञानी अनतगुने ॥ ९ ॥ सब जीव के दो भेद कहे हैं आहारक और अनाहारक अहो भगवन् ! आहारक कितना काल पर्यंत रहे ? अहो गौतम ! आहारक के दो

आहारएण भंते ! जीवा केवचिर होइ? गोयमा ! आहारए दुविहे पण्णत्ते तंजहा छउमत्थ आहारए, केवलि आहारए ॥ छउमत्थ आहारएण भंते ! जीवे केवचिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण दुसमय ऊण, उक्कोसेण असंखेज्ज काल जाव कालओ,खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जति भाग ॥ केवलि आहारएण भंते ! केवलि आहारए कालओ केवचिर होइ ? गोयमा जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण देसूण पुव्वकोडी ॥ अणाहारएण भंते ! अणाहारते कालओ केवचिर होइ ? गोयमा! अणाहारए दुविहे पण्णत्ते तंजहा छउमत्थ अणाहारएय, केवलि अणाहारए॥छउमत्थ अणाहारएण भंते!जाव केवचिर होति?गोयमा!जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण दो समया ॥

छद्मस्थ आहारक और केवली आहारक अहो भगवन् ! छद्मस्थ आहारक कितना काल तक रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य दो समय कम क्षुल्लक भव (प्रथम के दो समय अनाहारक था सो) उत्कृष्ट असंख्यात काल असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी, क्षेत्र से अंगुल के असंख्यातवे भाग जितने प्रदेश जितनी अवसर्पिणी उत्सर्पिणी इतना काल तक विग्रह गति करे नहीं जिस से आहारक होवे अहो भगवन् ! केवली आहारक कितने काल तक रहते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त अंतकृत केवली आश्रीय, उत्कृष्ट कुच्छ कम क्रोड पूर्व अहो भगवन् ! अनाहारक अनाहारकपने कितना काल तक रहे ?

अप्प बहुयावा तुल्लावा?गोयमा!सव्वत्थोवा अणाहारगा आहारगा असंखेज्जगुणा ॥१०॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा भासगाय अभासगाय ॥ भासएण भंते! भासएति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त ॥ अभासएण भंते! अभासतेति कालओ केवचिर होइ ?गोयमा! अभासए दुविहा पण्णत्त तंजहा-सादिएवा अपज्जवासिते, सादिएवा सपज्जवसिते ॥ तत्थणं जे ते साइए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं, अणंताओ उसप्पिणीओ अवसप्पणीओ वणस्सति कालो॥भासगस्सणं भंते!केवतिय काल अंतरं?

असंख्यात काल यावत् अंगुल के असंख्यात भाग प्रदेश जितनी अवसर्पिणी उत्सर्पिणी सिद्ध केवली अनाहारक का सादि अपर्यवसित का अंतर नहीं है सयोगी भवस्थ केवली अनाहारक का अंतर जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त और अयोगी भवस्थ केवली अनाहारक का अंतर नहीं है क्यों कि चौदहवे गुणस्थान से ही मोक्ष होता है अहो भगवन्! इन आहारक अनाहारक में कौन किस से अल्पबहुत्व है ? अहो गौतम ! सब से थोडे अनाहारक जीव इस से आहारक असंख्यातगुने ॥ १० ॥ अथवा सब जीव के दो भेद भाषक और अभाषक, अहो भगवन् ! भाषक भाषकपने कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त अहो भगवन् ! अभाषक अभाषकपने कितना काल तक रहे ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण अणत काल, वणस्सतिकालो ॥ अभासगस्त सातीयस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर ॥ सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥ अप्पाबहु सव्वत्थोवा भासगा अभासगा अणतगुणा ॥११॥ अहवा दुविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा-ससरीरीय असरीरीय असरीरीजहा सिद्धा ॥ सव्वत्थोवा असरीरी, ससरीरी अणतगुणा ॥१२॥ अहवा दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तजहा—चरिमा चेव अचरिमा चेव ॥ चरिमाणं भते ! चरिमएत्ति कालतो केवचिर होति ? गोयमा ! चरिमे अणादिए सपज्जवसिए॥

अहो गौतम ! अभाषक के दो भेद सादि अपर्यवसित सो सिद्ध और सादि सपर्यवसित सो एकेन्द्रिय है यह जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनत काल अनत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी यावत् वनस्पति काल कहना अहो भगवन् ! भाषक का अतर कितना कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनत काल वनस्पति काल जितना अभाषक में सादि अपर्यवसित का अतर नहीं है सादि सपर्यवसित का अतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त॥ अल्पाबहुत्व सब से थोडे भाषक इस से अभाषक अनतगुने ॥ ११ ॥ अथवा सब जीव के दो भेद सशरीरी और अशरीरी, इन का सिद्ध असिद्ध जैसे कहना अल्पाबहुत्व में सब से थोडे अशरीरी इस से सशरीरी अनतगुने ॥ १२ ॥ अथवा सब जीव के चरिम और अचरिम ऐसे

अचरिमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—अणादिए वा अपज्जवसिए, सादिए वा अपज्जवसिए॥ दोण्हवि णत्थि अंतर॥ अप्पाबहु-सव्वत्थोवा अचरिमा, चरिमा अणंतगुणा॥ १३॥ अहवा दुविहे सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा सागारोवउत्ताय अणागारोवउत्ताय, दोण्हवि संचिट्ठणावि अंतरंपि जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अंतोमुहुत्त ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥ सेत्त दुविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ॥ दुविहो जीवो सम्मत्तो ॥ १० ॥ * * * * * *

तत्थ जे ते एव माहसु तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, ते एव माहसु तंजहा सम्मदिट्ठी,

दो भेद कहे हैं अहो भगवन् ! चरिम चरिमपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! अनादि सपर्यवसित है अचरिम के दो भेद अनादि अपर्यवसित और अनादि सपर्यवसित दोनों का अंतर नहीं है अल्पाबहुत्व में सबसे थोडे अचरिम इससे चरिम अनंतगुने ॥१३॥ अथवा सब जीव के दो भेद कहे हैं साकारोपयुक्त व अनाकारोपयुक्त दोनों की संस्थिति और अंतर जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त अल्पाबहुत्व सब से थोडे अनाकारोपयोगयुक्त इस से साकारोपयोगयुक्त संख्यातगुने यों दो प्रकार के सब जीव का कथन हुआ ॥१०॥ अब तीन प्रकार के जीवों की वक्तव्यता करते हैं, सब जीव तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा सम्यक्‌दृ

मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ॥ सम्मदिट्ठीणं भंते ! कालओ केव
सम्मदिट्ठी दुविहे पण्णत्ते तजहा-सादिएवा अपज्जवसिए साइएवा सपज्जवसिए ॥
तत्थ जे से सादिएवा सपज्जवसिए,से जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ
सातिरेगाइ॥मिच्छादिट्ठी तिविहे पण्णत्ते, तजहा अणादिएवा अपज्जवसिएवा,अणादिएवा
सपज्जवसिए, साइएवा सपज्जवसिए॥तत्थ जे से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेण अतो
मुहुत्त उक्कोसेण अणत काल जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्ट देसूण॥सम्मामिच्छादिट्ठी जह-
ण्णेणवि अतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त ॥ सम्मदिट्ठिस्स अतर सादियस्स अपज्ज

मिथ्यादृष्टि और सम मिथ्यादृष्टि अहो भगवन् ! सम्यग् दृष्टि सम्यग् दृष्टिपने रहे सो कितना काल
तक रहे ? अहो गौतम ! सम्यग् दृष्टि के दो भेद कहे हैं सादिअपर्यवसित अर्थात् सम्यक्त्व की
प्राप्ति हुई परंतु उस का अंत होवे नहीं सो क्षायक सम्यक्त्व और सादिसपर्यवसित अर्थात् सम्यक्त्व की
प्राप्ति होकर सम्यक्त्व से पतित होवे सो क्षयोपशम सम्यक्त्व, इस से सादिसपर्यवसित सम्यक्त्व की
स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट छासठ सागरोपम से कुच्छ अधिक है, यहां दो भव अनुत्तर विमानवासी
देव के और दो भव बीच के मनुष्य के करे तत्पश्चात् अवश्यमेव पतित होवे मिथ्यादृष्टि के तीन भेद
कहे हैं अनादिअपर्यवसित सो अभव्य अनादि सपर्यवसित भव्य और सादि सपर्यवसित पडवाइ

वसियरस णत्थिअतर, साईयरस सपज्जवासियरस जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण अणतकाल जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्ट देसूण मिच्छादिट्ठिरस अणादियरस अपज्ज-वसियरस णत्थि अतर, अणादियस्स सपज्जवासियरस णत्थि अतर, साइयरस सपज्जवसियरस जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइ सातिरेगाइ, सम्मामिच्छदिट्ठिस्स जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण अणतकाल जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्ट देसूण ॥ अप्पाबहु सव्वत्थोवा सम्मामिच्छादिट्ठी सम्मदिट्ठी अणतगुणा, मिच्छदिट्ठी अणतगुणा ॥ १ ॥ अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तजहा-परित्ता अपरित्ता

सम्यग्दृष्टि इस में सादि सपर्यवसित की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनत काल यावत् देश ऊणा अर्ध पुद्गल परावर्त समामिथ्यादृष्टि की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त समदृष्टि का अतर सादि अपर्यवसित का अन्तर नहीं है क्यों कि सदैव रहता है सादि सपर्यवसित का अतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनत काल यावत् देश ऊणा अर्ध पुद्गल परावर्त मिथ्यादृष्टि अनादि अपर्यवसित और अनादि सपर्यवसित दोनो का अतर नहीं है और सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक ६६ सागरोपम, समामिथ्यादृष्टि का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनत काल यावत् कुछ कम अर्ध पुद्गल परावर्त

नापरित्ता ना अपरित्ता ॥ परित्तेण भते ! परित्तेत्ति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! परित्ते दुविहे पण्णत्ते तजहा काय परित्तेय, ससार परित्तेय ॥ काय परित्तेण भते ! काय परित्तेति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल, जाव असखेज्ज लोगा ॥ ससार परित्तेण भते ! ससार परित्तेति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अत मुहुत्त उक्कोसेण अणत काल जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्ट देसूण ॥ अपरित्तेण भते ! अपरित्तेति काल कव चिरहोइ गोयमा ! अपरित्ते दुविहे पण्णत्ते तजहा—काय अप-

अल्पाबहुत्व-सब से थोडे समामिथ्यादृष्टि, इस से समदृष्टि अनतगुने इस से मिथ्यादृष्टि अनतगुने ॥ १ ॥ अथवा तीन प्रकारके सब जीव कहे हैं तथया परित्त अपरित्त और नोपरित्त नो अपरित्त अहो भगवन्! परित्त कितने काल तक रहता है ? अहो गौतम ! परित्त के दो भेद काया परित्त (अनत काया छोडकर प्रत्येक काया में आये हैं वे) और ससार परित्त सो ससार को उत्तीर्ण हुए अहो भगवन्! काया परित्तकायापरित्तने कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असख्यात काल, यावत् असख्यात लोक, अहो भगवन् ! ससार परित्त में कितना काल तक रहता है ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनत काल यावत अर्ध पुद्गल परावर्त में कुच्छ कम, अहो

वसियस्स णत्थिअंतर, साइयस्स सपज्जवासियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अणंतकाल जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्ट देसूण मिच्छादिट्ठिस्स अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतर, अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतर, साइयस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइं, सम्मामिच्छदिट्ठिस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अणंतकाल जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्ट देसूण ॥ अप्पाबहु सव्वत्थोवा सम्मामिच्छदिट्ठी सम्मदिट्ठी अणंतगुणा, मिच्छदिट्ठी अणंतगुणा॥१॥ अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तंजहा-परित्ता अपरित्ता

सम्यग्दृष्टि इस में सादि सपर्यवसित की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् देश ऊणा अर्ध पुद्गल परावर्त सममिथ्यादृष्टि की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त समदृष्टि का अंतर सादि अपर्यवसित का अन्तर नहीं है क्यों कि सदैव रहता है सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् देश ऊणा अर्ध पुद्गल परावर्त मिथ्यादृष्टि अनादि अपर्यवसित और अनादि सपर्यवसित दोनो का अंतर नहीं है और सादि सपर्यवसितका अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक ६६ सागरोपम, सममिथ्यादृष्टि का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् कुछ कम अर्ध पुद्गल परावर्त

परित्ता नो अपरित्ता अनंतगुणा, अपरित्ता अणंतगुणा ॥ २ ॥ अहवा तिविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा, नो पज्जत्तगा नो अपज्जत्तगा ॥ पज्जत्तएण भंते! पज्जत्तएत्ति कालओ केवचिर होइ? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवमसयपुहुत्त साइरेग, अपज्जत्तगेण भंते! अपज्जत्तए कालओ केवचिर होइ? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अंतोमुहुत्त ॥ नो पज्जत्तए नो अपज्जत्तए सादिए अपज्जवसिए ॥ पज्जत्तगस्स अंतर जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त ॥ अपज्जत्तगस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सयपुहुत्त सातिरेग, तइयस्स णत्थि अंतर॥अप्पाबहु—सव्वत्थोवा नो पज्जत्तगा नो अपज्जत्तगा, अपज्जत्तगा

इस से अपरित्त अनंतगुने ॥ २ ॥ भी और तीन प्रकार के सब जीव कहे हैं, पर्याप्त, अपर्याप्त और नो पर्याप्त नो अपर्याप्त अहो भगवन्! पर्याप्त पर्याप्तपने कितना काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम से कुच्छ अधिक अहो भगवन्! अपर्याप्त अपर्याप्तपने कितना काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त (सिद्ध) का सादि अपर्यवसित है पर्याप्त का अंतर जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अपर्याप्त का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सो सागरोपम, और नो पर्याप्त नो अपर्याप्त का अंतर नहीं है, अल्पाबहुत्व—अहो सब से थोडे नो पर्याप्त

रित्तेय ससार अपरित्ते॥काय अपरित्ते जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण अणत काल,वणस्सतिकालो ससार अपरित्ते दुविहे प० तजहा—अणादीएवा अपज्जवसिए,अणादीएवा सपज्जवसिए॥नो परित्त नो अपरित्त सादिएवा अपज्जवसिए ॥ कायपरित्तस्स अतर जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ ससार परित्तस्स णत्थि अतर ॥ काय अपरित्तस्स जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्जकाल, पुढविकालो॥ससार अपरित्तस्स अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर अणादियस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अतर, णो परित्ता णो अपरित्तास्सवि णत्थि अतर ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा परित्ता, नो

भगवन्! अपरित्त अपरित्तपने कितना काल तक रहे ? अहो गौतम!इसके दो भेद कहे हैं, तद्यथा—काया अपरित्त और संसार अपरित्त काया अपरित्त में जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनतकाल, वनस्पतिवत् और ससार अपरित्त के दो भेद अनादि अपर्यवसित, और अनादि सपर्यवसित नो परित्त नो अपरित्त में सादि अपर्यवसित है, काया परित्तका अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पतिकाल जितना ससार परित्तका अतर नहीं है काया अपरित्तका अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असख्यात काल-पृथ्वीकाल जितना,संसार अपरित्त के अनादि अपर्यवसित का अतर नहीं है और अनादि सपर्यवसित का अतर भी नहीं है, नो परित्त नो अपरित्त का भी अतर नहीं है, अल्पाबहुत्व सब से थोडे परित्त इस से नो परित्त नो अपरित्त अनतगुने

॥४॥ अहवा तिविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा-सण्णी, असण्णी, णो सण्णी णो असण्णी ॥ सण्णीणं भंते ! कालओ केवच्चिरं होई ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसय पुहुत्तं सातिरेगं,असन्नी जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सति कालो, नोसण्णी नो असण्णी, साईए अपज्जवसिए॥ सण्णिस्स अंतरं जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो, असण्णीस्स अंतरं जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं, तातियस्स णत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा सण्णी, नोसण्णीनोअसण्णी अणंतगुणा, असण्णी अणंतगुणा, ॥ ५ ॥

सूक्ष्म अनन्तगुने ॥ ४ ॥ अथवा तीन प्रकार के सब जीव कहे हैं तद्यथा—सञ्ज्ञी, असञ्ज्ञी, नो सञ्ज्ञी नो असञ्ज्ञी, अहो भगवन् ! सञ्ज्ञी कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सो सागरोपम, असञ्ज्ञी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति जितना, नो सञ्ज्ञी नो असञ्ज्ञी का सादि अपर्यवसित, सञ्ज्ञी का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, असञ्ज्ञी का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सो सागरोपम, और नो सञ्ज्ञी नो असञ्ज्ञी का अंतर नहीं है, अल्पाबहुत्व-सब से थोडे सञ्ज्ञी इस से नो सञ्ज्ञी नो असञ्ज्ञी अनन्तगुने, इस से असञ्ज्ञी अनन्तगुने ॥ ५ ॥ अथवा तीन प्रकार के सब जीव कहे हैं, भव सिद्धिक, अभवसिद्धिक और नो

अणंतगुणा, पज्जत्तगा संखेज्जगुणा ॥ ३ ॥ अहवा तिविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा—सुहुमा, बायरा, नो सुहुमा नो बायरा ॥ सुहुमेणं भंते ! सुहुमेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, पुढविओ कालो ॥ बायरा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, असंखेज्जाओ, उसप्पिणी कालउ, खेत्तउ अंगुलस्स असंखेज्जइ भागा नोसुहुमा नो बायरा साइए अपज्जवसिए॥ सुहुमस्स अंतरं बायरकालो, बायरस्स अंतरं सुहुमकालो, ततियस्स णत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा नो सुहुम नो बायरा, बायरा अणंतगुणा, सुहुमा असंखज्जगुणा ॥

नो अपर्याप्त, इस से अपर्याप्त अनंतगुने, इस से पर्याप्त संख्यातगुने ॥ ३ ॥ अथवा तीन प्रकार के सब जीव कहे हैं, तद्यथा—सूक्ष्म, बादर और नोसूक्ष्मनोबादर, अहो भगवन् ! सूक्ष्म सूक्ष्मपने कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल पृथ्वी काल जितना, बादर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल, असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी, क्षेत्र से अंगुल के असंख्यातवे भाग जितने प्रदेश की अवसर्पिणी उत्सर्पिणी, नो सूक्ष्म नो बादर में सादि अपर्यवसित, सूक्ष्म का अंतर बादर की कायास्थिति जितना, बादर का काल सूक्ष्म की काया स्थिति जितना, और नो सूक्ष्म नो बादर का अंतर नहीं है, अल्पाबहुत्व—सब से थोडे नो सूक्ष्म नो बादर, इस से बादर अनंतगुने, इस से

थावरा ॥ तसेण भते ! तसेत्ति कालओ केवचिर होई ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दो सागरोवम सहस्साइ साइरेगाइ, थावरस्स सचिट्ठणा वणस्सतिकालो, नो तसा नो थावरा सातीए अपज्जवसीए ॥ तसस्स अतर वणस्सतिकालो, थावरस्स अतर तसकालो, नोतसनोथावरस्स, णत्थि अतर ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा तसा, णो तसा णो थावरा अणतगुणा, थावरा अणतगुणा, ॥ सेत्त तिविहा सव्व जीव पण्णत्ता ॥ * ॥ तत्थ जे त एव माहसु चउव्विहा सव्व जीवा पण्णत्ता, ते एव माहसु तजहा— मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी, अजोगी ॥ मणजोगीण भते ! मणजोगिति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण अतो मुहुत, एव

जघन्य अतमुहूर्त उत्कृष्ट साधिक दो हजार सागरोपम स्थावर की स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितनी, नो त्रस नो स्थावर सादि अपर्यवसित त्रस का अतर वनस्पति काल जितना, स्थावर का अतर त्रस के काल जितना और नो त्रस नो स्थावर का अतर नहीं है अल्पाबहुत्व—सब से थोडे त्रस इस से नो त्रस नो स्थावर अनतगुने, इस से स्थावर अनतगुने यों तीन प्रकार के सब जीव कहे इति ॥( )॥

अब जो चार प्रकार के सब जीव कहते हैं वे इस प्रकार कहते हैं तद्यथा मन योगी, वचन योगी, काया योगी और अयोगी अहो भगवन् ! मन योगी मन योगीपने कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य

अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तंजहा भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया नो भवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया ॥ भवसिद्धिएणं भंते ! भवसिद्धिति कालओ केवचिरं होई ? गोयमा! भवसिद्धिये अणादीए सपज्जवसिए, अभवसिद्धिए अणाइए अपज्जवसिए, नोभवसिद्धिय नोअभवसिद्धिय सादीए अपज्जवसिए ॥ भवसिद्धियस्स णत्थि अंतरं, एवं अभवसिद्धियस्सवि, ततियस्स णत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया, नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया अणंतगुणा, भवसिद्धिया अणंतगुणा ॥ ६ ॥ अहवा तिविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा—तसा थावरा णोतसाणो-

भव सिद्धिक नो अभवसिद्धिक, अहो भगवन् ! भव सिद्धिक भवसिद्धिकपने कितना काल रहे? अहो गौतम! अनादि सपर्यवसित है क्योंकि सिद्ध हो जाते हैं, अभवसिद्धिक भी अनादि अपर्यवसित हैं और नो भव-सिद्धिक नो अभवसिद्धिक सादि अपर्यवसित हैं, इन तीनों का अंतर नहीं है अर्थात् यह अपनी अवस्था को त्यागकर पुनः उस अवस्था को प्राप्त नहीं करते हैं अल्प बहुत्व-सबसे थोडे अभवसिद्धिक, इससे नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिक अनंतगुने, इस से भवसिद्धिक अनंतगुने ॥६॥ और भी सब जीव तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—त्रस, स्थावर, नो त्रस नो स्थावर अहो भगवन् ! त्रस त्रसपने कितना काल रहे ? अहो गौतम!

गोयमा ! पलियसय १ दसुत्तर २, अट्ठारस ३, चोद्दस ४, पलित पुहुत्त, समउ जहण्ण ॥ पुरिस वेदस्स जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सयपुहुत सातिरग ॥ णपुसग वेदस्स जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण अणतकाल वणस्सतिकालो ॥ अवेयते दुविहे पण्णत्ता तजहा—सातिएवा, अपज्जवसिए, सातिएवा सपज्जवसिए॥तत्थण ज ते सातिए सपज्जवसिए से जहण्णेण एक्कसमय उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥ इत्थिवेदस्स अतर जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वणस्सइ कालो, पुरिस्स वेदस्स जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण वणस्सतिकालो

रह ! अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट १०० पल्य प्रथम देव लोककी अपरिग्रही देवीकी आपेक्षा, ११० पल्योपम, दूसरे देव लोककी अपरिगृही देवीकी आपेक्षा, पल्योपम, १८ दूसरे देव लोक की परिग्रही देवीकी आपेक्षा, १४ पल्योपम प्रथमदेव लोककी परिग्रही देवीकी आपेक्षा, और प्रत्येक पल्योपम मनुष्य तिर्यंच की अपेक्षा ॥ पुरुषवेदी का काल जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सो सागरोपम नपुसक वेद का जघन्य एक समय उत्कृष्ट अनत काल वनस्पति काल जितना अवेदी के दो भेद कहे हैं सादि अपर्यवसित और सादि सपर्यवसित इस में सादि सपर्यवसित का काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त स्त्री वेदी का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल पुरुष वेद का

वयजोगीवि, काया जोगी जहण्णेण अतोमुहुत उक्कोसेण वणस्सइ कालो, अजोगी सातीए अपज्जवसिए ॥ मणजोगीस्स अतर जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सतिकालो, तहेव वयजोगिस्सवि, कायजोगीस्स—जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त, अजोगीस्स णत्थि अतर ॥ अप्पाबहु—सव्वत्थोवा मणजोगी, वइजोगी असखेज्जगुणा, अजोगी अणतगुणा, कायजोगी अणतगुणा ॥ १ ॥ अहवा चउव्विहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा—इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा, णपुसकवेयगा, अवेयगा ॥ इत्थि वेयण भते ! इत्थिवेयति काल केवचिर होई ?

एक समय उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त ऐसे ही वचन योगी का जानना काया योगी का जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति जितना काल जानना अयोगी सादि अपर्यवसित है मन योगी का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना, तैसे ही वचन योगी का जानना काया योगी का अतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अत-र्मुहूर्त, अयोगी का अतर नहीं है अल्पाबहुत्व—सब से थोडे मन योगी, इस से वचन योगी असख्यात-गुन, इस से अयोगी अनतगुने, इस से काया योगी अनतगुने ॥ १ ॥ अथवा सब जीव के चार भेद कहे हैं, तद्यथा—स्त्री वेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी और अवेदी अहो भगवन्! स्त्री वेदी स्त्रीवेदीपने कितने काल

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो अचक्खुदंसणस्स दुविहस्स णत्थि अंतरं, ओहिदंसणस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो, केवलदंसणस्स णत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहुयं—सव्वत्थोवा ओहिदंसणी, चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंसणी अणंतगुणा, अचक्खुदंसणी अणंतगुणा ॥ ३ ॥ अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता तंजहा-संजया, असंजया, संजयासंजया, नो संजया नो असंजया णो संजयासंजया ॥ संजएणं भंते ! संजयेतिकालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, असंजये जहा अण्णाणी, संजयासंजए

एक समय उत्कृष्ट ६६ सागरोपम से कुछ अधिक और केवल दर्शनी सादि अपर्यवसित है, चक्षु दर्शनी का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल, अचक्षुदर्शन के दोनों भेद का अंतर नहीं है अवधि दर्शनी का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल, केवल दर्शनी का अंतर नहीं है अब अल्पाबहुत्व कहते हैं सब से थोडे अवधि दर्शनी, इस से चक्षु दर्शनी असंख्यातगुने, इस से केवल दर्शनी अनंतगुने, इस से अचक्षुदर्शनी अनंतगुने ॥ ३ ॥ अथवा चार प्रकार के सब जीव कहे हैं संयति, असंयति, संयतासंयति और नोसंयति नोअसंयति नोसंयतासंयति॰ अहो भगवन् ! संयति संयतिपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक

नपुंसगवेदस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवम सय पुहुत्तं सातिरेगं, अवेदगो जहा हेठा ॥ अप्पाबहुयं-सव्वत्थोवा पुरिसवेदगा, इत्थिवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा, णपुंसगवेदगा अणंतगुणा ॥ २ ॥ अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता तंजहा-चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी, ओहिदंसणी केवलीदंसणी ॥ चक्खुदंसणीणं भंते ! चक्खुदंसणतिकालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं, अचक्खुदंसणी दुविहे पण्णत्ते तंजहा- अणातीएवा अपज्जवसिए, अणादीएवा सपज्जवसिए ओहिदंसणस्स एक्कसमयं उक्कोसेणं दो छावट्ठीओ सागरोवमाणं सातिरेगाओ, केवलदंसणी साईए अपज्जवसिए, ॥ चक्खुदंसणिस्स अंतरं

सो सागरोपम अवेदी के दो भेद सादि अपर्यवसित और सादि सपर्यवसित इस में से सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् अर्ध पुद्गल परावर्त ॥ अल्पा बहुत्व सब से थोडे पुरुष वेदी, स्त्री वेदी संख्यातगुने, अवेदी अनंतगुने और नपुंसकवेदी अनंतगुने ॥२॥ अथवा सब जीव के चार भेद कहे हैं चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी, अवधीदर्शनी और केवल दर्शनी अहो भगवन्! चक्षुदर्शनी चक्षुदर्शनी पने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक हजार सागरोपम से कुच्छ अधिक अचक्षुदर्शनी के दो भेद अनादि अपर्यवसित, और अनादि सपर्यवसित अवधि दर्शन की स्थिति जघन्य

तत्थ जे ते एव माहसु पचविहा सव्व जीवा पण्णत्ता ते एव माहंसु तजहा-नेरइया, तिरिक्ख जोणिया, मणुस्सा, देवा, सिद्धा ॥ सचिट्ठणतरा जहाहिट्ठा भणिया ॥ अप्पाबहु सव्वत्थोवा मणुस्सा, नेरइया असखेज्जगुणा, देवा असखेज्जगुणा, सिद्धा अणतगुणा, तिरिया अणत गुणा ॥ १ ॥ अहवा पचविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा कोह कसाई, माणकसाई, मायाकसाई, लोभकसाई, अकसाई ॥ कोहकसाई माणकसाई मायाकसाईण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त॥ लोभकसाइस्स जहण्णेण एक्कसमय

अब जो पांच प्रकार के सब जीव कहते हैं वे इस तरह कहते हैं, तद्यथा—नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य, देव और सिद्ध, इन की सस्थिति जैसे पहिले कही वैसे ही कहना अर्थात् नैरयिक की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंच और मनुष्य की जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और देव की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की है सिद्ध सादि अपर्यवसित है वैसे ही अतर भी पहिले कहा उस अनुसार जानना अल्पाबहुत्व सब से थोडे मनुष्य, इस से नारकी असख्यातगुने, इस से देव असख्यातगुने, इस से सिद्ध अनतगुने, इस से तिर्यंच अनतगुने, ॥ १ ॥ अथवा पांच प्रकार के सब जीव कहे हैं क्रोध कषायी

जहण्णेण अंतं मुहुत्तं उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, नो संजय नो असंजय नो संजया संजये सातिए अपज्जवसिए, संजयस्स संजयासंजयस्स दोण्हवि अंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण अणंतं कालं जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्टं देसूणं, असंजयस्स आदि दुवे णत्थि अंतरं, सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेण एक्कसमयं उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ चउत्थस्स णत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहु-सव्वत्थोवा संजया, संजया संजया असंखेज्जगुणा, नो संजया नो असंजया नो संजय संजया अणंतगुणा, असंजया अणंतगुणा ॥ सेतं चउव्विहा सव्व जीवा पन्नत्ता ॥ * ॥ *

समय उत्कृष्ट कुच्छ कम क्रोडपूर्व, असंयति का अज्ञानी जैसे कहना संयतासंयति का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्वक्रोड नोसंयति नोअसंयति नोसंयतासंयति का सादि अपर्यवसित संयति और संयता संयति का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् अर्ध पुद्गल परावर्त में कुच्छ कम असंयति के प्रथम दो भांगे का अंतर नहीं है और सादि सपर्यवसित का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछकम पूर्व क्रोड, चौथा का अंतर नहीं है अल्पाबहुत्व सब से थोडा संयति, इस से संयतासंयति असंख्यात गुना, नो संयति नोअसंयति ना संयता संयति अनंतगुना, इस से असंयति अनंतगुना यों चार प्रकारके सब जीवको

बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचेंदिया, अणिंदिया ॥ संचिट्ठणतरा जहा हेट्ठा ॥ अप्पाबहुय—सव्वत्थोवा पचेंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया, अणिंदिया अणतगुणा, एगिंदिया अणतगुणा ॥ अहवा छव्विहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा ओरालिय सरीरी, वेउव्विय सरीरी, आहारग सरीरी, तेयग सरीरी, कम्मग सरीरी, असरीरी ॥ ओरालिय सरीरीण भते ! कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण दुसमे ऊण, उक्कोसेण असखिज्ज काल जाव अगुलस्स असखेज्जइ भाग, वेउव्विय सरीरी जहण्णेण एक्क

पचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय इन की स्थिति पूर्ववत् और अतर भी पूर्ववत् है अल्पाबहुत्व-सब से थोडे, पचेन्द्रिय इस से चतुरेन्द्रिय विशेषाधिक इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से अनेन्द्रिय अनतगुने, इस से एकेन्द्रिय अनतगुने अथवा छ प्रकार के सब जीव कहे हैं औदारिक शरीरी, वैक्रेय शरीरी, आहारक शरीरी, तेजस शरीरी, कार्माण शरीरी और अशरीरी अहो भगवन् ! औदारिक शरीरी कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य दो समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट असख्यात काल यावत् अगुल के असख्यातवे भाग आकाश प्रदेश जितनी अवसर्पिणी उत्सर्पिणी वैक्रेय शरीरी जघन्य एक समय उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और अतर्मुहूर्त अधिक, आहारक शरीरी जघन्य उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त

उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं॥अकसाई दुविहा जहा हेट्ठा,कोहकसाई माणकसाई मायाकसाईणं भंते ! अंतर कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कसमयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं, लोभकसायिस्स अंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं अकसाई तहेव जहा हेट्ठा ॥ अप्पाबहु सव्वत्थोवा अकसाई, माणकसाई तहेव अणंतगुणा, कोह माया लोभे विसेसाहिया मुणेयव्वा॥ सेत्तं पंचविहा सव्व जीवा पण्णत्ता ॥ तत्थ जे ते एव माहंसु छव्विहा सव्व जीवा पण्णत्ता ते एवं माहंसु तंजहा-एगिंदिया,

मान कषायी, माया कषायी, लोभ कषायी और अकषायी, क्रोध, मान और माया कषायी की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त लोभ कषायी जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त अकषायी के दो भेद पूर्ववत् क्रोध मान व माया कषायी का अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त लोभ कषायी का अंतर जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त और अकषायी का पूर्ववत् जानना, अल्पाबहुत्व सब से थोडे अकषायी इस से मान कषायी अनंतगुन, इस से क्रोध कषायी विशेषाधिक, इस से माया कषायी विशेषाधिक, इस से लोभ कषायी विशेषाधिक यह पांच प्रकार के जीव की प्ररूपणा हुई ॥ ० ०

जो छ प्रकार के जीव की प्ररूपणा करते हैं वह इस तरह है एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय,

उरालिय सरीरी असंखेज्जगुणा, असरीरी अणतगुणा, तेया कम्मा सरीरीदोवि तुल्ला अणतगुणा ॥ सेत्त छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता ॥ ॥
तत्थ ज ते एव माहसु सत्तविहा सव्व जीवा पण्णत्ता ते एव माहसु तजहा पुढवि काइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणस्सइ काइया, तसकाइया, अकाइया सचिट्ठ अतर जहा हेट्ठा, अप्पाबहु—सव्वत्थोवा तसकाइया, तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया, अकाइया अणतगुणा, वणस्सइकाइया अणतगुणा ॥ १ ॥ अहवा सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तजहा कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा

तेजस कार्माण शरीरी दोनों परस्पर तुल्य अनतगुने यह छ प्रकार के सब जीव कहे ॥ इति ॥

अब जो सात प्रकार के सब जीव कहते हैं वे इस तरह हैं तद्यथा पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेउकायिक, वायुकायिक, वनस्पति कायिक, त्रसकायिक, और अकायिक इन की सस्थिति और पूर्ववत् जानना अल्पा बहुत्व सब मे थोडे त्रसकायिक, इस से तेउकायिक असख्यातगुने, इस से पृथ्वी कायिक विशेषाधिक, इस से अप् कायिक विशेषाधिक, इस स वायुकायिक विशेषाधिक इस मे अकायिक अनतगुने इस स वनस्पति कायिक अनत गुन ॥१॥ अथवा सात प्रकारके सब जीव कहे हैं तद्यथा कृष्ण लेशी, नील लेशी, कापोत लेशी, तेजो लेशी, पद्म

समय उक्कोसेण तेत्तीस सागरावमाइं, अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, आहारग सरीरी जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त, तेयसरीरी दुविहे पण्णत्ते तंजहा- अणादिए अपज्जवसिए, अणाइएवा सपज्जवसिए ॥ एवं कम्मगसरीरीवि, असरीरी सादिए अपज्जवसिए ॥ अंतरे ओरालियसरीरस्स जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, वेउव्वियसरीरी जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं वणस्सतिकालो, आहारगसरीरस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढं पोग्गल परियट्टं देसूणं, तेयग कम्मगसरीरस्सय दुविहा णत्थि अंतरं ॥ अप्पाबहु सव्वत्थोवा आहारगसरीरी, वेउव्वियसरीरी असंखेज्जगुणा,

तेजस शरीरी के दो भेद अनादि अपर्यवसित अभव्य आश्री और अनादि सपर्यवसित भव्य आश्री ऐसे ही कार्माण शरीरीकी भावना अशरीरी सादि अपर्यवसित है अंतर औदारिक शरीरका अंतर जघन्य एक समय उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और अंतर्मुहूर्त अधिक, वैक्रय शरीरी का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति जितना आहारक शरीरी का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् कुच्छ कम अर्ध पुद्गल परावर्त, तेजस और कार्माण का अंतर नहीं है अल्पाबहुत्व सब से थोडे आहारक शरीरी, इस से वैक्रय शरीरी असंख्यातगुने, इस से औदारिक शरीरी असंख्यातगुने, इस से अशरीरी अनंतगुने, और इस से

मज्झाहियाइ, सुक्कलेसेण भते ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्त मब्भहियाइ अलेसेण भते ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ कण्हलेसेण भते! अतर कालओ केवचिर होति ? गोयमा! जहण्णेण अतामुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्त मब्भहियाइ, एव नीललेसस्सवि काउलेसस्सवि ॥ तउलेसस्सण भते ! अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो, एव पम्हलेसस्सवि, सुक्कलेसस्सवि, दोण्हवि एँव मतर ॥ अलेसस्सण भते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! सादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर ॥ एतेसिण भते ! जीवाण

अंतर्मुहूर्त अधिक अलेशी सादि अपर्यवसित है अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या का अतर कितना कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और अंतर्मुहूर्त अधिक, ऐसे ही नील लेश्या और कापोत लेश्या का जानना तेजो लेश्या का अतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल ऐसे ही पद्म और शुक्ल लेश्या का जानना अलेशी का अतर नहीं है अहो भगवन् ! इन कृष्ण लेशी यावत् अलेशी में कौन किस से अल्पबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे शुक्ल लेश्या-

सुक्कलेसा, अलेसा ॥ कण्हलेसाणं भंते ! कण्हलेसेति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं णीललेसेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जति भागमब्भहियाइं, काउलेसेणं भंते ? जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिसागरोवमाइं, पलिउवमस्स असंखेज्जति भागमब्भहियाइं ॥ तेउलेसेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दोण्णिसागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग मब्भहियाइं पम्हलेसेणं भंते ! गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्त

लेशी, शुक्ल लेशी और अलेशी अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या कृष्ण लेश्यापने कितना रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और अंतर्मुहूर्त अधिक, नील लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, कापोत लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, तेजो लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक पद्म लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम अंतर्मुहूर्त अधिक शुक्ल लेश्या की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीस सागरोपम और

मब्भहियाइ, सुक्कलेसेण भते ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्त मब्भहियाइ अलेसेण भते ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ कण्हलेसेण भते! अतर कालओ केवचिर होति ? गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्त मब्भहियाइ, एव नीललेसस्सवि काउलेसस्सीव ॥ तेउलेसस्सण भते ! अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो, एव पम्हलेसस्सवि, सुक्कलेसस्सवि, दोण्हवि एवं मतर ॥ अलेसस्सण भते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! सादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर ॥ एतेसिण भते ! जीवाण

अंतर्मुहूर्त अधिक अलेशी सादि अपर्यवसित है अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या का अतर कितना कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और अंतर्मुहूर्त अधिक, ऐसे ही नील लेश्या और कापोत लेश्या का जानना तेजो लेश्या का अतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल ऐसे ही पद्म और शुक्ल लेश्या का जानना अलेशी को अतर नहीं है अहो भगवन् ! इन कृष्ण लेशी यावत् अलेशी में कौन किस से अल्पबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे शुक्ल लेश्या-

सुक्कलसा, अलसा ॥ कण्हलेसाण भते ! कण्हलेसेति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्त मब्भहियाइ, णीललेसेण भते ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दससागरोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जति भागमब्भहियाइ, काउलेसेण भते ? जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिसागरोवमाइ, पलिउवमस्स असखेज्जति भागमब्भहियाइ ॥ तेउलेसेण भते ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दोण्णिसागरोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जतिभाग मब्भहिया पम्हलेसेण भते ! गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दससागरोवमाइ अतोमुहुत्त

लेशी, शुक्ल लेशी और अलेशी अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या कृष्ण लेश्यापने कितना रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और अतर्मुहूर्त अधिक, नील लेश्या की जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम और पल्योपम का असंख्यातवा भाग अधिक, कापोत लेश्या की जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन सागरोपम और पल्योपम का असख्यातवा भाग अधिक, तेजो लेश्या की जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो सागरोपम और पल्योपम का असख्यातवा भाग अधिक पद्म लेश्या की जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम अतर्मुहूर्त अधिक शुक्ल लेश्या की जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीस सागरोपम और

दसवाससहस्साइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ॥ तिरिक्खजोणिएण भंते ! तिरिक्खजोणीति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणप्फतिकालो, ॥ तिरिक्खजोणिणीण भंते ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ पुव्वकोडि पहुत्त मब्भहियाइ, एव मणुस्स, देवे जहा नेरतिए, देवीण भंते! जहण्णेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण पणपन्न पलिओवमाइ ॥ सिद्धेण भंते ! सिद्धेति ? गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥ नरइयस्सण भंते ! अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणप्फइकालो ॥ तिरिक्खजोणियस्सण भंते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा !

उत्कृष्ट वनस्पति काल जितनी तिर्यंचणी की स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और पूर्व क्रोड अधिक ऐसे ही मनुष्य और मनुष्यनी का जानना देव की नारकी जैसे कहना देवीकी स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ५५ पल्योपम की और सिद्ध सादि अपर्यवसित जानना अहो भगवन् ! नारकी का कितना अतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति जितना तिर्यंच का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनेक सो सागरोपम से कुच्छ अधिक तिर्यंचणी का अतर

कण्हलेसाण नील काउ तेउ पम्हसुक्क अलेस्साणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुक्कलेसा, पम्हलेसा संखेज्जगुणा, तेउलेसा संखेज्जगुणा, अलेसा अणतगुणा, काउलेसा अणतगुणा नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया सेत सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ॥ ( ) ॥ ( )

तत्थण जेते एव माहसु अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तेण एव माहसु तजहा— णरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणिणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ देवा देवीओ सिद्धा ॥ णेरइएण भते ! णेरइयत्ति कालतो केवचिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण

वाले, इस से पद्म लेश्यावाले संख्यातगुने, तेजो लेश्यावाले संख्यातगुने, इस से अलेशी अनंतगुने, इस से कापोत लेशी अनंतगुने, इस से नील लेशी विशेषाधिक और इस से कृष्ण लेशी विशेषाधिक यों सात प्रकार के सब जीव के भेद हुए ( ) ( ) ( )

जो ऐसा कहते हैं कि आठ प्रकार के सब जीव हैं वे इस प्रकार कहते हैं तद्यथा—नैरयिक तिर्यंच, तिर्यंचणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देव, देवी और सिद्ध अहो भगवन् ! नैरयिक की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंच की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त

सव्व जीवा पण्णत्ता तंजहा आभिनिबोहियणाणी, सुयणाणी, उहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी मइ अण्णाणी सुय अण्णाणी विभगणाणी ॥ अभिणिबोहिय णाणीण भंते ! आभणिबोहिय णाणीत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतमुहुत्त उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ साइरेगाइ, एवंसुअणाणीवि ॥ उहिनाणीणं भंते ! ओहिणाणीति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एकसमयं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइं मणपज्जवणाणीणं भंते ! मणपज्जवणाणी कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं एगसमय उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, केवलणाणीणं भंते ! केवलणाणीति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ मतिअण्णाणीणं

और इस से तिर्यंच अनंतगुने ॥ १ ॥ अथवा सब जीव के आठ भेद कहे हैं तद्यथा—आभिनियोधिक ज्ञानी, श्रुत ज्ञानी, अवधि ज्ञानी, मन पर्यव ज्ञानी, केवल ज्ञानी, मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी और विभंग ज्ञानी अहो भगवन् ! आभिनिबोधिक ज्ञानी की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम से कुछ अधिक ऐसे ही श्रुत ज्ञानी की स्थिति कहना अवधि ज्ञानी की जघन्य एक समय उत्कृष्ट साधिक ६६ सागरोपम, मन:पर्यव ज्ञानी की जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम क्रोड पूर्व केवल ज्ञानी सादि अपर्यवसित है मति अज्ञानी के तीन भेद अनादि अपर्यवसित, अनादि

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण सागरोवम सयपहुत्तं सातिरेगं, तिरिक्खजोणिणीणं भंते ! अंतरं कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणप्फइ कालो, एवं मणुस्सस्सवि, मणुस्सीएवि, देवस्सवि, देवीओवि॥ सिद्धस्सणं भंते ! अंतरं ? सादिस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं॥ एतेसिणं भंते! नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं, तिरिक्ख जोणिणीणं, मणुस्साणं, मणुस्सीणं, देवाणं, देवीणं, सिद्धाणय, कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सीओ, मणुस्सा असंखेज्जगुणा, नेरइया असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणाओ देवा असंखेज्जगुणा, देवीओ संखेज्ज गुणीओ सिद्धा अणंतगुणा, तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥ १ ॥ अहवा अट्ठविहा

जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल ऐसे ही मनुष्य, मनुष्यणी, देव और देवी को जानना सिद्ध का सादि अपर्यवसित भांगा है उस का अंतर नहीं है अहो भगवन् ! इन नैरयिक, तिर्यंच, तिर्यंचणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देव, देवी और सिद्ध इन में कौन किस से अल्पबहुत्व, तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडी मनुष्यणी इस से मनुष्य असंख्यातगुने, इस से नैरयिक असंख्यातगुने, इस से तिर्यंचणी असंख्यातगुनी, इस से देव असंख्यातगुने, इससे देवी संख्यातगुनी, इस से सिद्ध अनंतगुने और

मणपज्जवणाणिस्सवि, केवलणाणिस्सण भंते ! अंतरं? सादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतर ॥ मतिअण्णाणिस्सण भंते ! अंतरं? गोयमा! अणादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं अणाइयस्स सपज्जवसियस्स णत्थि अंतरं, सादियस्स सपज्जवसियस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइं, एवं सुयणाणिस्सवि, विभंगणाणिस्सण भंते ! अंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणप्फइकालो॥ एतेसिण भंते ! जीवाण आभिणिबोहियणाणि सुयणाणीण ओहिणाणीण मणपज्जवणाणीण केवलणाणीणं मति अणाणि सुतअण्णाणि, विभंगणाणीणय कयरे २ जाव विसेसाहिया? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवणाणी ओहिणाणी असंखेज्जगुणा, आभिणि-

अंतर नहीं है मति अज्ञानी के अनादि अपर्यवसित अनादि सपर्यवसित का अंतर नहीं है और सादि सपर्यवसित का अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम से कुच्छ अधिक ऐसे ही श्रुत अज्ञानी का जानना विभंग ज्ञानी का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना ॥ अहो भगवन्! इन आभिनिबोधिक ज्ञानी श्रुत ज्ञानी, अवधि ज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी, केवल ज्ञानी, मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी और विभंग ज्ञानी इन में कौन किस से अल्पबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे मनःपर्यव ज्ञानी, इस से अवधि ज्ञानी असंख्यातगुने इस से आभिनिबोधिक ज्ञानी और श्रुत ज्ञानी दोनों परस्पर

भंते ! मतिअण्णाणीति कालओ केवचिर होइ' ? गोयमा ! मतिअण्णाणी तिविहे पण्णत्ते तंजहा—अणादिएवा अपज्जवसिए, अणादिएवा सपज्जवसिए साइएवा सपज्जवसिए॥ तत्थण जे से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अणंतकाल जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्टं देसूण सुयणाणी एव चेव, विभंगणाणीण भंते ! विभंगणाणीति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइ ॥ आभिणिबोहियणाणिस्सण भंते ! अंतरं कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अणंतकाल जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्टं देसूण, एव सुयणाणिस्सवि, उहिणाणिस्सवि,

सपर्यवसित और सादि सपर्यवसित इस में सादि सपर्यवसित की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् देश ऊणा अर्ध पुद्गल परावर्त ऐसे ही श्रुत अज्ञानी का जानना विभंग ज्ञानी की स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम और देश ऊणा क्रोड पूर्व अधिक अहो भगवन् ! आभिनिबोधिक ज्ञानी का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् अर्ध पुद्गल परावर्तमें कुछकम, ऐसे ही श्रुत ज्ञानीका जानना ऐसे ही अवधि ज्ञानी और मनःपर्यव ज्ञानी का अंतर जानना केवल ज्ञानी का सादि अपर्यवसित भांगा ऐसा है इस का

एव तेइदिएवि, चउरिंदिएवि, ॥ नेरइएण भते ! नेरइएति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दसवास सहस्साइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ, पंचिदिय तिरिक्खजोणिएण भत ! पचिंदिय तिरिक्ख जोणिएति काल केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइ, एव मणूसेवि, देवा जहा नेरइया ॥ सिद्धाण भते ! सिद्धेति ? सादिय अपज्जवसिए ॥ एगिंदियस्सण भते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दो सागरोवमसहस्साइ सखेज्जवास मब्भहियाइ, बेइदियस्सण भते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण

भगवन् ! नैरयिक नैरयिकपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंच पचेन्द्रिय तिर्यंच पचेन्द्रियपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक ऐसे ही मनुष्य का जानना देव का नैरयिक जैसे कहना सिद्ध का सादि अपर्यवसित जानना अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय का कितना अतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो हजार सागरोपम और संख्यात वर्ष अधिक अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय का कितना अतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना ऐसे ही

वोहियणाणी सुयणाणी दोवितुल्ला विसेसाहिया, विभगणाणी असखेज्जगुणा, केवलणाणी अणतगुणा, मतिअण्णाणी सुयअण्णाणि दोवि तुल्ला अणतगुणा ॥ सेत्त अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ॥ * ॥ * * *

तत्थण जे ते एव माहसु णवविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तेण एव माहस तजहा एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, णेरतिया, पचेंदियतिरिक्खजोणिया मणूसा, देवा सिद्धा ॥ एगिंदिएण भते ! एगिंदिएति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ बेइंदिएण भते ! बेइंदिएति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल,

तुल्य विशेषाधिक, इस से विभग ज्ञानी असख्यातगुने, इस से केवल ज्ञानी अनतगुने, और इस से मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी परस्पर तुल्य अनतगुने इस तरह आठ प्रकार के सब जीव की प्ररूपणा हुई ॥ ०

अब नव प्रकार के सब जीव कहते हैं वे ऐसे कहते हैं, तद्यथा एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य, देव और सिद्ध! अहो भगवन्! एकेन्द्रिय एकेन्द्रियपन कितना काल रहे! अहो गौतम! जघन्य अतमुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल अहो भगवन्! बेइन्द्रिय बेइन्द्रियपने रहेतो कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अतमुहूर्त उत्कृष्ट असख्यात काल ऐसे ही त्रीन्द्रिय और चतुरेन्द्रिय का जानना अहो

एव तेइंदिएवि, चउरिंदिएवि, ॥ नेरइएण भते ! नेरइएति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दसवास सहस्साइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ, पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएण भते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएति काल केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइ, एव मणूसेवि, देवा जहा नेरइया ॥ सिद्धाण भते ! सिद्धेति ? साइय अपज्जवसिए ॥ एगिंदियस्सण भते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दो सागरोवमसहस्साइ सखेज्जवास मब्भहियाइ, बेइंदियस्सण भते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण

भगवन् ! नैरयिक नैरयिकपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंच पंचेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रियपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक ऐसे ही मनुष्य का जानना देव का नैरयिक जैसे कहना सिद्ध का सादि अपर्यवसित जानना अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो हजार सागरोपम और संख्यात वर्ष अधिक अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना ऐसे ही

अतो मुहुत्त उक्कोसेण वणप्फइकालो, एव तेइन्दियस्सवि, चउरिंदियस्सवि, णेरइयस्सवि पचेंदिय तिरिक्खजोणियस्सवि, मणूस्सवि देवस्सवि, सव्वेसिं अतर भाणियव्व ॥ सिद्धस्सण भत ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! सादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर ॥ एतेसिण भंते ! एगिंदियाण बेइदियाण तेइदियाण चउरिंदियाण नेरतियाण, पचेंदिय तिरिक्ख जोणियाण, मणूसाण, देवाण, सिद्धाण, कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणूसा, णेरइया असखेज्जगुणा, देवा असखेज्जगुणा, पचेंदिय तिरिक्खजोणिया असखेज्जगुणा, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइन्दिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया, सिद्धा अणत

त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, नैरयिक, तिर्यंच पचेन्द्रिय, मनुष्य, देव यों सब का अतर जानना अहो भगवन् ! सिद्ध का कितना अतर कहा है ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित होने से अतर नहीं है अहो भगवन् ! इन एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, नैरयिक, तिर्यंच पचेन्द्रिय, मनुष्य, देव और सिद्ध इन में कौन किस से अल्पबहुत्व तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य इन से नैरयिक असंख्यातगुने, इस से देव असख्यातगुने, इस से तिर्यंच पचेन्द्रिय असख्यातगुने, इस से चतुरेन्द्रिय विशेषाधिक, इस से त्रीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक, इस से सिद्ध अनतगुने,

गुणा, एगिंदिया अनत गुणा ॥ अहवा णवविहा सव्व जीवा पण्णत्ता तजहा-पढम समय नेरइया, अपढम समय नेरइया, पढम समय तिरिक्ख जोणिया, अपढम समय तिरिक्खजोणिया, पढम समय मणूसा, अपढम समय मणूसा, पढम समय देवा, अपढम समय देवा, सिद्धा ॥ पढम समय नेरइएण भते! नरइएति कालओ केवचिर होइ? गोयमा! जहण्णेण एक्कसमय उक्कोसणवि एक्कसमय, अपढम समय नरइयस्सण भते? जहणेण दसवास सहस्साइ, समयऊणाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ समयऊणाइ, पढम समय तिरिक्ख जोणियस्सण भते! कालओ केवचिर होइ? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण एग समय, अपढमसमय तिरिक्खजोणियस्सण भत! कालओ केवचिर होइ? गोयमा! जहण्णेण

इस से एकेन्द्रिय अनतगुने अथवा सब जीव के नव भेद कहे हैं तद्यथा—प्रथम समय नैरयिक, अप्रथम समय नैरयिक, प्रथम समय के तिर्यंच, अप्रथम समय के तिर्यंच, प्रथम समय के मनुष्य, अप्रथम समय के मनुष्य, प्रथम समय के देव, अप्रथम समय के देव और सिद्ध अब स्थिति कहते हैं, प्रथम समय के नैरयिक की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट एक समय अप्रथम समय नैरयिक की स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष में एक समय कम, उत्कृष्ट एक समय कम तेत्तीस सागरोपम प्रथम समय तिर्यंच की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट एक समय, अप्रथम समय के तिर्यंच की स्थिति जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति

खुड्डाग भवग्गहण एग समयऊण, उक्कोसेण वणप्फइकालो, पढम समय मणूसस्सण भंते ! मणूसेति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण वि एग समय, अपढमसमय मणूसेण भंते ! कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णण खुड्डाग भवग्गहण समयऊण उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइ ॥ देवे जहा णेरइए ॥ सिद्धेण भंते ! सिद्धेति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ पढम समय णेरइयस्सण भंते ! अंतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णण दसवास सहस्साइ अंतोमुहुत्त मब्भहियाइ, उक्कोसेण वणप्फतिकालो ॥ अपढम समय णेरइयस्सण भंते ! अंतर जहण्णेण अंतो

काल जितना प्रथम समय के मनुष्य की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट एक समय, अप्रथम समय के मनुष्य की जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट तीन पल्योपम और प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक देव की नारकी जैसे कहना, अहो भगवन् ! सिद्ध सिद्धपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित रहे अहो भगवन् ! प्रथम समय नैरयिक का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष और अन्तर्मुहूर्त अधिक, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अप्रथम समय नैरयिकका अंतर जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना प्रथम समय के तिर्यंचका कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समयकम

मुहुत्त उक्कोसेण वणप्फतिकालो ॥ पढम समय तिरिक्ख जोणियस्सण भते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दो खुड्डागभवग्गहणाइ समयऊणाइ उक्कोसण वणप्फतिकालो, अपढम समय तिरिक्ख जोणियस्सण भते ! अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण खुड्डागभवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेण सागरोवम सयपुहुत्त सातिरेग ॥ पढम समय मणुसस्स जहा पढम समय तिरिक्ख जोणियस्स ॥ अपढमसमय मणूसस्सण भते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेण वणप्फतिकालो ॥

दो क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल जितनी अप्रथम समय के तिर्यंच का कितना अतर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय अधिक क्षुल्लक भव उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम से कुच्छ अधिक प्रथम समय के मनुष्य का अतर प्रथम समय के तिर्यंच जैसा जानना अप्रथम समय के मनुष्य का अंतर जघन्य एक समय अधिक क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल, जितना प्रथम समय के देव का प्रथम समय के नेरयिक जैसे जानना और अप्रथम समय के देव का अप्रथम समय के नेरयिक जैसे जानना सिद्ध सादि अप र्यवसित होने से अतर नहीं है अहो भगवन् ! इन प्रथम समय के नेरयिक, यावत् प्रथम समय के देव इन में कौन

खुड्डाग भवग्गहण एग समयऊण, उक्कोसेण वणप्फइकालो, पढम समय मणूसस्सण भंते ! मणूसेति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण वि एग समय, अपढमसमय मणूसेण भंते ! कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयऊण उक्कोसण तिण्णिपलिओवमाइ पुव्वकोडि पहुत्त मब्भहियाइ ॥ एवे जहा णेरइए ॥ सिद्धेण भंते ! सिद्धेति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ पढम समय णेरइयस्सण भंते ! अंतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दसवास सहस्साइ अंतोमुहुत्त मब्भहियाइ, उक्कोसेण वणप्फतिकालो ॥ अपढम समय णेरइयस्सण भंते ! अंतर जहण्णेण अंतो

काल जितना प्रथम समय के मनुष्य की स्थिति जघन्य उत्कृष्ट एक समय, अप्रथम समय के मनुष्य की जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट तीन पल्योपम और प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक देव की नारकी जैसे कहना, अहो भगवन् ! सिद्ध सिद्धपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित रहे अहो भगवन् ! प्रथम समय नैरयिक का कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष और अन्तर्मुहूर्त अधिक, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अप्रथम समय नैरयिकका अंतर जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना प्रथम समय के तिर्यंचका कितना अंतर कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समयकम

मुहुत्त उक्कोसेण वणप्फतिकालो ॥ पढम समय तिरिक्ख जोणियस्सण भते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दो खुड्डागभवग्गहणाइ समयऊणाइ उक्कोसेण वणप्फतिकालो, अपढम समय तिरिक्ख जोणियस्सण भते ! अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण खुड्डागभवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेण सागरोवम सयपुहुत्त सातिरेग ॥ पढम समय मणुसस्स जहा पढम समय तिरिक्ख जोणियस्स ॥ अपढमसमय मणूसस्सण भते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयाहिय, उक्कोसेण वणप्फतिकालो ॥

दो क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल जितनी अप्रथम समय के तिर्यंच का कितना अतर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय अधिक क्षुल्लक भव उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम से कुच्छ अधिक प्रथम समय के मनुष्य का अतर प्रथम समय के तिर्यंच जैसा जानना अप्रथम समय के मनुष्य का अतर जघन्य एक समय अधिक क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल, जितना प्रथम समय के देव का प्रथम समय के नेरयिक जैसे जानना और अप्रथम समय के देव का अप्रथम समय के नेरयिक जैसे जानना सिद्ध सादि अपर्यवसित होने से अतर नहीं है अहो भगवन् ! इन प्रथम समय के नेरयिक, यावत् प्रथम समय के देव इन में कौन

पढम समयदेवस्स जहा पढम समयणेरतियस्स अपढम समय देवस्स जहा अपढम समय णेरइयस्स ॥ सिद्धाण भंते ! अतर ? सादियस्स अपज्जवासियस्स णात्थि अतर ॥ एतेसिण भते ! पढम समय नेरइयाण पढम समय तिरिक्खजोणियाणं, पढम समय मणूसाण, पढम समय देवाण, कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय मणूसा, पढमसय णेरतिया असखेज्जगुणा, पढमसमयदेवा असखेज्जगुणा, पढमसमय तिरिक्खजोणिया असखेज्जगुणा ॥ एतेसिण भते ! अपढमसमय णेरतियाण अपढमसमय तिरिक्खजो-

किस से कमी तुल्य व विशेषाधिक हैं? अहो गौतम! सब से थोडे प्रथम समय के मनुष्य इस से प्रथम समय के नेरयिक असख्यातगुने, इस से प्रथम समय के देव असंख्यातगुने, इस से प्रथम समय के तिर्यंच असख्यातगुने अहो भगवन् अप्रथम समय के नेरयिक, अप्रथम समय के तिर्यंच, मनुष्य और देव इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे अप्रथम समय के मनुष्य, इस से अप्रथम समय के नेरयिक असख्यातगुने, इस से अप्रथम समय के देव असख्यातगुने, इस से अप्रथम समय के तिर्यंच अनत गुने अहो भगवन् ! इन प्रथम समय नेरयिक और अप्रथम नेरयिक में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य

णियाण अपढमसमय मणूसाण, अपढमसमय देवाण कयरे २ जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अपढमसमय मणूसा, अपढमसम णेरतिया असखेज्जगुणा, अपढमसमयदेवा असखेज्जगुणा, अपढमसमय तिरिक्खजोणिया अणतगुणा॥एएसिण भते ! पढमसमय नरइयाण अपढमसमय णेरइयाण, कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय नेरइया अपढमसम णेरइया असखेज्जगुणा एएसिण भते ! पढमसमय तिरिक्खजोणियाण अपढमसमय तिरिक्खजोणियाण कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय तिरिक्खजोणिया अपढमसमय तिरिक्खजोणिया अणतगुणा, ॥ मणुयदेवाण अप्पाबहु—जहा णेरइयाण॥

व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के नेरयिक, इस से अप्रथम समय के नेरयिक असंख्यातगुने अहो भगवन् ! प्रथम समय के तिर्यंच और अप्रथम समय के तिर्यंच में कौन किस से अल्प बहुत यावत विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के तिर्यंच इस से अप्रथम समय के तिर्यंच अनंतगुने मनुष्य और देवका नारकी जैसे कहना अहो भगवन् ! प्रथम समय नेरयिक, अप्रथम समय नेरयिक, प्रथम समय तिर्यंच, अप्रथम समय तिर्यंच, प्रथम समय के मनुष्य, अप्रथम समय के मनुष्य, प्रथम समय के देव अप्रथम समय के देव, और सिद्ध इन में कौन किस से

एतेसिणं भंते ! पढमसमय नेरातियाण अपढमसमय णेरातियाण, पढमसमय तिरिक्खजोणियाण अपढमसमय तिरिक्खजोणियाण पढमसमय मणूसाण अपढमसमय मणूसाण, पढमसमयदेवाण अपढमसमयदेवाण सिद्धाण कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा सव्वत्थोवा पढमसमयमणूसा अपढमसमय मणुसा असंखेज्जगुणा, पढमसमय णरतिया असंखेज्जगुणा, पढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, पढमसमय तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, अपढमसमय नेरइया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, सिद्धा अणंतगुणा अपढमसमय तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥ सेत्तं णवविहा सव्व जीवा पण्णत्ता ॥ ( ) ॥ ( )

अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के मनुष्य, इस से अप्रथम समय के मनुष्य असंख्यातगुने, इस से प्रथम समय के नैरयिक असंख्यातगुने, इस से प्रथम समय के देव असंख्यातगुने, इस से प्रथम समय के तिर्यंच असंख्यातगुने, इस से अप्रथम समय के नैरयिक असंख्यातगुने, इस से अप्रथम समय के देव असंख्यातगुने, इस से सिद्ध अनंतगुने, और इस से अप्रथम समय के तिर्यंच अनंतगुने, यों नव प्रकार के सब जीव का कथन हुआ ॥ ( ) ( ) ( )

तत्थण जेते एवमाहंसु दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तेण एव माहंसु तंजहा— पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया, वणप्फतिकाइया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचेइंदिया, अणिंदिया ॥ पुढवि काइएणं भंते ! पुढवि काइएति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण असंखेज्जकाल, असंखेज्जा उसप्पिणि उसप्पिणीए कालतो, खेत्तो असंखेज्जालोए, एव आउ वाउकाइए ॥वणप्फइकाइएण भंते! वणप्फइकाइएत्ति कालओ केवचिर होइ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वणप्फति कालो ॥ बेइंदिएण भंते ! बेइंदिएति कालओ केवचिरं होइ ? गोमया ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण संखेज्जंति

अब दश प्रकार के सब जीव कहते है, पृथ्वी काया, अपकाया, तेउ काया, वायुकाया, वनस्पतिकाया, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय,,और अनेन्द्रिय अहो भगवन्! पृथ्वीकाय पृथ्वीकायापने कितना काल रहे ! अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट असंख्यात काल असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश ऐसे ही अप्काय, तेउकाय, और वायुकाया का जानना वनस्पतिकाया की पृच्छा ! अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल द्वीन्द्रिय द्वीन्द्रियपने संख्यात काल रहे, ऐसे ही त्रीन्द्रिय और चतुरेन्द्रिय का जानना पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रिय पने कितना काल रहे ? अहो गौतम !

काल, एव तेइंदियवि, एव चउरिंदियेवि ॥ पचेंदिएण भते ! पचेंदियेति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सागरोवमसहस्स सातिरेग, अणिदिएण भते ! अणिदिएति ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ पुढविकाइयस्सणं भते ! अतरकालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वणप्फइकालो, एव आउ-तेऊ-वाउकाइयस्स ॥ वणप्फतिकाइयस्सण भते ! अतर कालतो जाव पुढविकाइयस्स सचिट्ठणा ॥ वेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय, पचेंदियाण एतेसिं चउण्हवि अतर जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणप्फतिकालो,

जघन्य अतर्मूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम और अनेन्द्रिय सादि अपर्यवसित है अहो भगवन् ! पृथ्वी कायाका कितना अंतर है ? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल ऐसे ही अप् तेउ, और वायुकायाका जानना वनस्पति कायाका अंतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पृथ्वी काया की सचिठना जितना द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरेन्द्रिय और पचेन्द्रिय इन चारों का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, अनिन्द्रिय का सादि अपर्यवसित भागा होने से अतर नहीं है अहो भगवन् ! इन पृथ्वीकाया अपकाया, तेउकाया, वाउकाया, वनस्पतिकाया द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय पचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय

अणिंदियस्सणं भंते! अंतर कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! सादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अंतर ॥ एतेसिणं भंते! पुढविकाइयाणं आउ-तेउ वाउ-वणप्फति बइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पचेंदियाणं अणिंदियाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा पचेंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया, तेउक्काइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया, अणिंदिया अणतगुणा, वणप्फतिकाइया अणंतगुणा ॥ अहवा दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तंजहा-पढमसमयणेरतिया अपढमसमयणेरतिया, पढमसमय तिरिक्खजोणिया, अपढम समयतिरिक्खजोणिया, पढमसमयमणूसा

इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे पंचेन्द्रिय, इस से चौरिन्द्रिय विशेषाधिक, इस से त्रिइन्द्रिय विशेषाधिक, इस से द्वीन्द्रिय विशेषाधिक इस से तेउकाया असंख्यातगुणा, इस से पृथ्वीकाया विशेषाधिक, इस से अपकाया विशेषाधिक, इस से वायुकाया विशेषाधिक, इस से अनिन्द्रिय अनंतगुने, इस से वनस्पति काया अनंतगुने ॥ १ ॥ अथवा दश प्रकार के सब जीव कहे हैं प्रथम समय के नैरयिक अप्रथम समय के नैरयिक, प्रथम समय के तिर्यंच, अप्रथम समय के तिर्यंच, प्रथम समय के मनुष्य, अप्रथम समय के मनुष्य, प्रथम समय के देव,

अपढम समयमणुस्सा, पढमसमयदेवा, अपढमसमयदेवा, पढमसमयसिद्धा अपढम-समयसिद्धा ॥ पढमसमय नेरतियाण भंते ! पढमसमयनेरइय कालओ केवचिर होइ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेण एक्कंसमय, अपढम समय नेरइयाण भंते ! अपढम समय नेरइयति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दसवास सहस्साइ समयऊणाइ, उक्कोसेण तत्तीस सागरोवमाइ समयऊणाइ ॥ पढम समय तिरिक्खजोणिएण भंते ! पढम समय तिरिक्खजोणियति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण एक्क समय, अपढम समय तिरिक्ख जोणिएण भंते ! अपढम समय तिरिक्ख जोणिएति कालओ केवचिर

अप्रथम समय के देव, प्रथम समय के सिद्ध और अप्रथम समय के सिद्ध अहो भगवन् ! प्रथम समय के नैरयिक की कितनी भव स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट एक समय अहो भगवन् ! अप्रथम समय के नैरयिक अप्रथम समय के नैरयिकपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय कम दश हजार वर्ष, उत्कृष्ट एक समय कम तेत्तीस सागरोपम अहो भगवन् ! प्रथम समय के तिर्यंच प्रथम समय के तिर्यंचपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट एक समय अप्रथम समय के तिर्यंच अप्रथम समय के तिर्यंचपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय कम

होइ ? गोयमा ! जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयऊण उक्कोसेण वणप्फइकालो ॥ पढम समय मणूसेण भंते ! पढम समय मणूसेति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण उक्कोसेण एक्क समय, अपढम समय मणुस्सेण भंते! अपढम समय मणूसेति कालओ केवचिर होइ? गोयमा! जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण समयऊण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडी पुहुत्त मब्भहियाइ॥ देवे जहा नेरइए ॥ पढमसमय सिद्धेण भंते! पढम समय सिद्धेति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण एक्क समय, अपढम समय सिद्धेण भंते ? सादिये अपज्जवसिए ॥ पढम समय नेरतियाण भंते ! अंतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दस

क्षुल्लक भव, उत्कृष्ट वनस्पति काल अहो भगवन् ! प्रथम समय के मनुष्य प्रथम समय के मनुष्यपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट एक समय रहे अप्रथम समय के मनुष्य अप्रथम समय के मनुष्यपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट तीन पल्योपम और प्रत्येक पूर्व क्रोड अधिक देव का नैरयिक जैसे जानना प्रथम समय के सिद्ध प्रथम समय के सिद्धपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट एक समय अप्रथम समय के सिद्ध में सादि अपर्यवसित भांग होता है अहो भगवन् ! प्रथम समय के नैरयिक का कितना अंतर होवे ? अहो गौतम !

वास सहस्साइं अतोमुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेण वणस्सति कालो, अपढम समय णेरतियाण भंते ! अतर कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण वणप्फइकालो ॥ पढम समय तिरिक्खजोणियाण भंते ! अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहणाइ, उक्कोसेण वणप्फइकालो, अपढम समय तिरिक्ख जोणियस्सण भंते ? अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा! जहण्णेण दो खुड्डाग भवग्गहणाइं समयाहिय, उक्कोसेण सागरोवम सय पुहुत्त सातिरेग ॥ पढम समय मणुसस्सण भंते ! अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा! जहण्णेण दो खुड्डाग भवग्गहण समयऊणाइ, उक्कोसेण वणप्फतिकालो, अपढमसमय

जघन्य दश हजार वर्ष और अतर्मुहूर्त अधिक, उत्कृष्ट वनस्पति काल अप्रथम समय नेरयिक का अतर जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल प्रथम समय तिर्यंच का अतर जघन्य एक समय कम क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल अप्रथम समय तिर्यंच का अतर जघन्य एक समय अधिक दो क्षुल्लक भव उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम अहो भगवन् ! प्रथम समय के मनुष्य का अतर कितना होता है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय कम दो क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल अप्रथम समय के मनुष्य का अतर जघन्य एक समय अधिक क्षुल्लक भव उत्कृष्ट वनस्पति काल देव का अतर नेरयिक जैसे जानना

मणूसस्सण भते ! अतर जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहणं समयाहिय उक्कोसेण वणप्फतिकालो ॥ देवस्सण अतर जहा नेरइयस्स ॥ पढमसमयसिद्धस्सण भते ! अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! नत्थि अतर, अपढम समय सिद्धस्सण भते ! अतर कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! सादियस्स अपज्जवसियस्स णत्थि अतर एतेसिण भते ! पढम समय णेरइयाण, पढम समय तिरिक्ख जोणियाण, पढम समय मणुस्साण, पढम समय देवाण, पढम समय सिद्धाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढम समय सिद्धा, पढम समय मणुस्सा असखेज्जगुणा, पढम समय णेरइया असखेज्जगुणा, पढम समय देवा असखेज्जगुणा,

प्रथम समय और अप्रथम समय सिद्ध का अतर नहीं है अहो भगवन् ! प्रथम समय नैरयिक, प्रथम समय के तिर्यंच, प्रथम समय के मनुष्य, प्रथम समय के देव और प्रथम समय के सिद्ध इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के सिद्ध, इस से प्रथम समय के मनुष्य असख्यातगुने, इस से नैरयिक असख्यातगुने इस से देव असख्यातगुने, इस से प्रथम समय के तिर्यंच असख्यातगुने अहो भगवन् ! अप्रथम समय नैरयिक, अप्रथम समय तिर्यंच, अप्रथम समय मनुष्य अप्रथम समय देव और अप्रथम समय के सिद्ध में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब

पढम समय तिरिक्ख जोणिया असंखेज्जगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! अपढम समय णेरइयाणं अपढम समय तिरिक्ख जोणियाणं जाव अपढम समय सिद्धाणय कयरे२ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अपढम समय मणूसा, अपढम समय णेरइया असंखेज्जगुणा अपढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, अपढमसमयासिद्धा अणंतगुणा, अपढमसमय तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! पढमसमय णेरतियाणं अपढमसमय णेरइयाणं कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय णेरइया, अपढमसमय नेरतिया असंखेज्जगुणा

से थोडे अप्रथम समय मनुष्य इस से नेरयिक असंख्यातगुणा, इस से देव असंख्यातगुणा, इस से सिद्ध अनंतगुणा और इस से अप्रथम समय के तिर्यंच अनंतगुणा अहो भगवन् ! प्रथम समय के नेरयिक और अप्रथम समय के नेरयिक इन मे कौन अधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के नेरयिक इस से अप्रथम समय के नेरयिक असंख्यातगुने अहो भगवन् ! इन प्रथम समय के तिर्यंच और अप्रथम समय के तिर्यंच में कौन कम ज्यादा है? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के तिर्यंच इस से अप्रथम समय के तिर्यंच अनंतगुने अहो भगवन् ! प्रथम समय और

एतेसिण भंते ! पढमसमय तिरिक्खजोणियाण अपढमसमय तिरिक्खजोणियाण कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय तिरिक्खजोणिया अपढमसमय तिरिक्खजोणिया अणतगुणा ॥ एतेसिण भंते ! पढमसमय मणूसाण अपढमसमय मणूसाण कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमय मणूसा अपढमसमयमणूसा असंखेज्जगुणा ॥ जहा मणूसा तहा देवावि ॥ एतेसिण भंते ! पढमसमय सिद्धाण अपढमसमय सिद्धाण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयसिद्धा अपढम-

अप्रथम समय के मनुष्य में कौन कम ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के मनुष्य, इस से अप्रथम समय के मनुष्य असंख्यातगुने अहो भगवन् ! प्रथम समय के और अप्रथम समय के देव में कौन कम ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के देव, इससे अप्रथम समय के देव असंख्यातगुने अहो भगवन् ! प्रथम और अप्रथम समय के सिद्ध में कौन कम ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के सिद्ध इस से अप्रथम समय के सिद्ध अनंतगुने अहो भगवन् ! इन प्रथम समय के नैरयिक अप्रथम समय के नैरयिक, प्रथम समय के तिर्यंच, अप्रथम समय के तिर्यंच, प्रथम समय के मनुष्य, अप्र-

समयसिद्धा अणंतगुणा ॥ एएसिणं भंते ! पढमसमय नेरइयाणं अपढम समय नेरइयाणं पढमसमय तिरिक्खजोणियाणं अपढमसमय तिरिक्खजोणियाणं पढमसमय मणूसाणं अपढमसमय मणूसाणं पढमसमय देवाणं अपढमसमयदेवाणं पढमसमय सिद्धाणं अपढमसमयसिद्धाण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पढमसमयसिद्धा, पढमसमय मणूसा असंखिज्जगुणा, अपढम समय मणूस्सा असंखिज्जगुणा पढम समय णेरइया असंखिज्जगुणा पढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा, पढमसमय तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, अपढसमय नेरइया असंखेज्जगुणा, अपढमसमयदेवा असंखेज्जगुणा अपढमसमयसिद्धा

थम समय के मनुष्य, प्रथम समय के देव, अप्रथम समय के देव, प्रथम समय के सिद्ध और अप्रथम समय के सिद्ध इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे प्रथम समय के सिद्ध इस से प्रथम समय के मनुष्य असंख्यातगुने, इस से अप्रथम समय के मनुष्य असंख्यातगुने, इस से प्रथम समय के नैरयिक असंख्यातगुने, इस से प्रथम समय के देव असंख्यातगुने, इस से प्रथम समय के तिर्यंच असंख्यातगुने, इस से अप्रथम समय के नैरयिक असंख्यातगुने, इस से अप्रथम समय के देव असंख्यातगुने, इस से अप्रथम समय के

अणतगुणा अपढमसमय तिरिक्खजोणिया अणतगुणा ॥ सेत्त दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता ॥ सेत्त सव्वजीवाभिगमे ॥ जीवाभिगम सम्मत्त ॥ १४ ॥ * * *

सिद्ध अनतगुने, इस से अप्रथम समय के तिर्यंच अनतगुने यों दश प्रकार के सब जीव कहे यों सब जीव का कथन हुवा यह सब जीवाभिगम का अधिकार हुवा जीवाभिगम सूत्र सपूर्ण हुवा।

इति चतुर्दश
॥ जीवाभिगम सूत्रं समाप्तं ॥

वीर संवत २४४५ असाढ सुदी ११ वार गुरु